। श्रीराधा वसन्त विहारिणे नमः ॥

अथ ध्यानम्

मिथो गलन्यस्त करौ सुरूपौ । प्रेम्णा विभक्तौ व्रज भूमि भूषणौ ॥
भक्ति प्रियौ वल्लव वंशनाथौ । नमामि नित्यं वृषभानुजाऽच्युतौ ॥ १ ॥

अर्थ—परस्पर गलबाहीं दिये हुये, सुन्दर स्वरूप प्रेम करके अविभक्त (संयुक्त) व्रजभूमि के भूषण भक्तिप्रिय, गोपवंश के नाथ ऐसे श्रीयुगलवर राधाकृष्ण को नित्य नमस्कार है ॥ १ ॥

राधाकृष्णौ वीततृष्णौ । प्रेमपूतौ सदायुतौ ॥
वन्देऽपारौ सत्याधारौ । वृन्दावन विहारिणौ ॥ २ ॥

अर्थ—विगत तृष्ण, प्रेम पवित्र, नित्य सम्बद्ध अपार, सत्या धार, वृन्दावन-विहारी, ऐसे श्रीराधा कृष्ण को वन्दना करता हूँ ॥ २ ॥

मुरली युत मञ्जु पाणि पद्मम् । ललित स्मित सुप्रसाद सद्मम् ॥
धृत पीत पटत्विड्रून रुक्मम् । प्रणमामि मुहु व्रजेश सूनुम् ॥ ३ ॥

अर्थ—मुरली युक्त है कोमल कर कमल जिनके, सुन्दर हास्य करके प्रसन्नता के धाम, धारण किये हुये पीताम्बर की कान्ति मे स्वर्ण को तुच्छ करने वाले, ऐसे श्रीनँदनंदन को बार बार नमस्कार करता हूं ॥ ३ ॥

राधाभिषङ्गिन् करुणा कुलाङ्गिन् । महानुभागिन् जय नृत्य रङ्गिन् ॥
गोपानुषङ्गिन् ललित त्रिभङ्गिन् । नेत्रैर्मृगापाङ्ग मदाभिभङ्गिन् ॥ ४ ॥

अर्थ—श्रीकीरतिनन्दनी के परम संगी, करुणा से आकुल अंग वाले, गोपों का अनुषंगी (मित्र) सुन्दर त्रिभंग वाले निज नेत्रों की शोभा से हिरण के कटाक्षमद को भंजन करने वाले महानुभागी (प्रभावशाली) हे नटनागर ! तेरी जय जयकार हो ॥४॥

॥ इति ध्यानम् ॥

कृष्ण नाम 'सहस्रकम् । वसन्त रामविप्रेण ॥
निर्मितं परया भक्त्या । श्रीकृष्ण प्रीति हेतवे ॥ १ ॥

अर्थ—यह श्रीकृष्ण सहस्रनाम (सिन्ध हैदराबाद निवासी) महाराज श्रीवसन्त-रामने श्रीकृष्ण प्रेम के कारण परम प्रीति मे निर्माण किया है ।

॥ श्रीकृष्ण सहस्रनाम प्रारम्भः ॥

१

श्रीकृष्ण कृष्ण छविसुन्दर कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण छविमन्दिर कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण घनविग्रह कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण जननिग्रह कृष्ण कृष्ण ॥

२

श्रीकृष्ण कृष्ण रतिसागर कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण मतिनागर कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण कलभाषण कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण शुभलक्षण कृष्ण कृष्ण ॥

३

श्रीकृष्ण कृष्ण तिलकाङ्कित कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण अकलङ्कित कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण कनकाम्बर कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण रुधिरस्फर कृष्ण कृष्ण ॥

४

श्रीकृष्ण कृष्ण मृदुलोचन कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण भवमोचन कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण मुनिमानस कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण करुणारस कृष्ण कृष्ण ॥

५

श्रीकृष्ण कृष्ण रतिसाधक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण शुभसाधक कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण मुरलीकर कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण तुलसीधर कृष्ण कृष्ण ॥

६

श्रीकृष्ण कृष्ण रतिगोपज कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण दनमोपज कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण चपलागति कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण विमलामति कृष्ण कृष्ण ।

७

श्रीकृष्ण कृष्ण रतिदायक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण मतिनायक कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण मनमोहन कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण मदरोहन कृष्ण कृष्ण ॥

८

श्रीकृष्ण कृष्ण फणिभूषित कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण मणिदूषित कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण पुरुषोत्तम कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण सुरसत्तम कृष्ण कृष्ण ॥

९

श्रीकृष्ण कृष्ण मृदुकुन्तल कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण करनिर्मल कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण सुरदुर्लभ कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण जनवल्लभ कृष्ण कृष्ण ॥

१०

श्रीकृष्ण कृष्ण भुवपर्वन कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण दनदूर्न कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण पदकेतन कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण पदर्चन कृष्ण कृष्ण ॥

११

श्रीकृष्ण कृष्ण अभयङ्कर कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण जनशङ्कर कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण शिखिशेखर कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण मणिशेखर कृष्ण कृष्ण ॥

१२

श्रीकृष्ण कृष्ण सुखितव्रज कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण मृदुपङ्कज कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण करुणार्णव कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण मुदितार्णव कृष्ण कृष्ण ॥

१३

श्रीकृष्ण कृष्ण रसिकप्रिय कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण रविजाप्रिय कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण वदन्ताम्बर कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण सुमनोहर कृष्ण कृष्ण ॥

१४

श्रीकृष्ण कृष्ण वनमालिक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण सुललाटिक कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण धृतकुण्डल कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण शुचिमण्डल कृष्ण कृष्ण ॥

१५

श्रीकृष्ण कृष्ण शिशुरक्षक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण दवभक्षक कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण वरुणार्चित कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण नृपचेष्टित कृष्ण कृष्ण ॥

१६

श्रीकृष्ण कृष्ण दशमूर्तिक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण शुभकीर्तिक कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण हतपूतन कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण रुचिनूतन कृष्ण कृष्ण ॥

१७

श्रीकृष्ण कृष्ण हृदयङ्गम कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण निगमागम कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण मधुरं रव कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण शरणंभव कृष्ण कृष्ण ॥

१८

श्रीकृष्ण कृष्ण गतिदायक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण दृढसायक कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण सुखदर्शन कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण रतिवर्द्धन कृष्ण कृष्ण ।

१९

श्रीकृष्ण कृष्ण विधिपूजित कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण निधिपूरित कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण हतरोपज कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण हतदोपज कृष्ण कृष्ण ॥

२०

श्रीकृष्ण कृष्ण मदभञ्जन कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण सुररञ्जन कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण नटनागर कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण सुगुणाकर कृष्ण कृष्ण ॥

२१

श्रीकृष्ण कृष्ण सुमभूषित कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण मदवीक्षित कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण सुविलक्षण कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण सुविचक्षण कृष्ण कृष्ण ॥

२२

श्रीकृष्ण कृष्ण जितवासव कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण जितदानव कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण भुजविक्रम कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण विगतक्लम कृष्ण कृष्ण ॥

२३

श्रीकृष्ण कृष्ण शमविमर्द कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण दमनिग्रह कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण कलिदारण कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण खरमारण कृष्ण कृष्ण ॥

२४

श्रीकृष्ण कृष्ण हसितानन कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण मुदितानन कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण करुणाकर कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण यमुनाघर कृष्ण कृष्ण ॥

२५

श्रीकृष्ण कृष्ण करकङ्कण कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण कमलेक्षण कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण धृतवंशिक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण वलितत्रिक कृष्ण कृष्ण ॥

२६

श्रीकृष्ण कृष्ण शरणादर कृष्ण कृष्ण
श्रीकृष्ण कृष्ण कमलाधर कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण ललिताप्रिय कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण विमलाप्रिय कृष्ण कृष्ण ॥

२७

श्रीकृष्ण कृष्ण सुरभिस्तुत कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण सुदृढव्रत कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण कुलमण्डन कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण भयभञ्जन कृष्ण कृष्ण ॥

२८

श्रीकृष्ण कृष्ण तृणध्वंसक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण शकटान्तक कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण तरुमोदद कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण सकलार्थद कृष्ण कृष्ण ॥

२९

श्रीकृष्ण कृष्ण हतधेनुक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण हतकेशिक कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण विजितेन्द्रिय कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण करुणाश्रय कृष्ण कृष्ण ॥

३०

श्रीकृष्ण कृष्ण कृतरासक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण खलशासक कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण चपलानन कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण जनमोहन कृष्ण कृष्ण ।

३१

श्रीकृष्ण कृष्ण दृगचञ्चल कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण गतिनिश्चल कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण निरुपद्रव कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण निरुपमय कृष्ण कृष्ण ॥

३२

श्रीकृष्ण कृष्ण शुचिदायक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण गतिदायक कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण शरणावन कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण करुणावन कृष्ण कृष्ण ॥

३३

श्रीकृष्ण कृष्ण सुरसंस्तुत कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण सुजगन्नुत कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण शिववत्सल कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण छविनिर्मल कृष्ण कृष्ण ॥

३४

श्रीकृष्ण कृष्ण मतिजित्वर कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण मृदुशेखर कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण सुदुरामद कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण विजयप्रद कृष्ण कृष्ण ॥

३५

श्रीकृष्ण कृष्ण रिपुमोदन कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण सुहृदर्जुन कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण स्वरक्षक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण लवशिक्षक कृष्ण कृष्ण ॥

३६

श्रीकृष्ण कृष्ण विनतावन कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण मुदितावन कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण कलगायक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण गणनायक कृष्ण कृष्ण ॥

३७

श्रीकृष्ण कृष्ण विरहाकुल कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण सुमहाबल कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण सुकृतार्णव कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण शमनार्णव कृष्ण कृष्ण ॥

३८

श्रीकृष्ण कृष्ण विपिनाश्रय कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण सकलाश्रय कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण रसिकेश्वर कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण विबुधेश्वर कृष्ण कृष्ण ॥

३९

श्रीकृष्ण कृष्ण धृतमालिक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण भवपालक कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण शिववन्दित कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण मुनिवन्दित कृष्ण कृष्ण ॥

४०

श्रीकृष्ण कृष्ण जगदङ्कुर कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण सुधुरन्धर कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण भवबाधक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण शुभसाधक कृष्ण कृष्ण ॥

४१

श्रीकृष्ण कृष्ण अघपावन कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण मुनिभावन कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण धृतरश्मिक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण धृततोत्रक कृष्ण कृष्ण ॥

४२

श्रीकृष्ण कृष्ण दनुजान्तक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण कलुषान्तक कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण रजकान्तक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण यवनान्तक कृष्ण कृष्ण ॥

४३

श्रीकृष्ण कृष्ण मथुरेश्वर कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण भुवनेश्वर कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण जननीप्रिय कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण सुजनप्रिय कृष्ण कृष्ण ॥

४४

श्रीकृष्ण कृष्ण हितयुक्तिक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण पितृभक्तिक कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण रतिनन्दक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण मतिनन्दक कृष्ण कृष्ण ॥

४५

श्रीकृष्ण कृष्ण सुखकारक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण भवतारक कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण यदुनन्दन कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण मुरमर्दन कृष्ण कृष्ण ॥

४६

श्रीकृष्ण कृष्ण जितमारक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण हतमुष्टिक कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण पितृमोचण कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण शठभीषण कृष्ण कृष्ण ॥

४७

श्रीकृष्ण कृष्ण यमनारुढ कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण सुयदूद्धद कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण शिशुपान्तक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण नरकान्तक कृष्ण कृष्ण ॥

४८

श्रीकृष्ण कृष्ण विदुरप्रिय कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण जनकप्रिय कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण कटिनन्दक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण सुखकन्दक कृष्ण कृष्ण ॥

४९

श्रीकृष्ण कृष्ण मदनात्मज कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण वसुदेवज कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण भवपोशक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण भवशोषक कृष्ण कृष्ण ॥

५०

श्रीकृष्ण कृष्ण यकमुक्तिद कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण शिवयुक्तिद कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण धृतमौक्तिक कृष्ण कृष्ण
श्रीकृष्ण कृष्ण दृढशक्तिक कृष्ण कृष्ण ।

५१

श्रीकृष्ण कृष्ण जिनवाङ्मय कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण जगतीमय कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण वृषभावुक कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण वृषनाशक कृष्ण कृष्ण ।

५२

श्रीकृष्ण कृष्ण जनभक्तिद कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण शिवभुक्तिद कृष्ण कृष्ण ॥
श्रीकृष्ण कृष्ण परमेश्वर कृष्ण कृष्ण ।
श्रीकृष्ण कृष्ण कुसुमाकर कृष्ण कृष्ण ॥

इति कृष्ण सहस्रनाम समाप्त

श्रीकृष्णस्य सहस्रनाम पठनं कुर्यान्नरो यः सदा । भक्त्या संल्लभते सुखं निरवधि प्रेत्यात्र विष्णोः पदम् ॥ तस्मान्नाधिक मुच्यते शिवकरं नास्त्येव चैतत्समम् । मत्त्वा भक्तजना लसन्तु सततं प्रेमप्रकृष्टेऽध्वनि ॥ १ ॥

❋ अर्थ ❋

इस श्रीकृष्ण सहस्रनामका जो जन भक्तियुक्त नित्य पाठ करे वह इस लोक में सुख पावै, और अंतमें दुर्लभ विष्णु धामको प्राप्त करता है, इसी कारण श्रीकृष्णनाम स्मरण से अधिक कल्याण करने वाला परम इसके समान और कोई अन्य साधन नहीं है, ऐसा मानकर भक्त जन सुन्दर प्रेमके मार्ग में निरन्तर शोभा पाते हैं ॥ १ ॥

नाम्नामकारि वहुता निज सर्व शक्ति स्तत्रार्पित नियमितः स्मरणेकालः । एतादृशी तव कृपा भगवन् ममापि दुर्दैव मीदृश मिहा जनितानुरागः ॥ १ ॥

शिक्षामृतम् श्लोक २

श्रीभगवन चैतन्य महाप्रभुका श्री मुख वाक्य है कि भगवान श्रीकृष्ण प्रभुनें अपनी निज सर्व शक्ति अपने नाममें समर्पित करदी है, और उस परभी यह अनुग्रह है उसके स्मरण का न कोई नियत समय है न नियत विधि है, जी चाहे जहाँ और जैसे श्री कृष्णनाम लो । कलियुगमें श्रीकृष्णकी मूर्ति केवल एक श्रीकृष्ण नाम है, श्रीकृष्ण नाम सेवा (श्रीनाम संकीर्तन) से ही श्रीकृष्ण प्राप्ति होती है, इसही कारण से कलियुग में श्रीकृष्ण प्राप्ति का केवल एक सुगम उपाय श्रीकृष्ण नाम संकीर्तन है, ऐसी परम वात्सल्यता होते हुये पर भी दुर्भाग्य ऐसा है कि फिर भी श्रीकृष्ण नाम में अनुराग उत्पन्न नहीं होता ॥ १ ॥

पुस्तक मिलने के पते :—

(१)

राधेश्याम एण्ड कम्पनी,
विश्रान्त बाज़ार,
मथुरा ।

(२)

ओटनदास एण्ड सन्स,
क्लौथ मरचेन्ट्स,
पुराना शहर, वृन्दावन,
(मथुरा)

(३)

श्यामस्नेही — श्यामाशरण,
श्रीराधावल्लभ जी का घेरा,
वृन्दावन (मथुरा)

(४)

बाबू प्रभुदयाल मीतल,
अग्रवाल इलैक्ट्रिक प्रेस,
छत्ता बाज़ार, मथुरा ।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक शहर में प्रत्येक बुकसेलर के यहाँ मिलेगा ।

कसी भी बुकसेलर को ग्राहक होना हो, तो नीचे लिखे पते पर पत्र व्यवहार करें —

श्यामस्नेही — श्यामाशरण,
अकतराई गली, हैदराबाद,
(सिन्ध)

धन्यवाद !

श्रीवृन्दावनस्थ सर्वजन सुहृदय श्रीमद्भागवत के गूढ़ तत्त्वज्ञ तथा सरस मधुर मनोहर भावपूर्ण वक्ता, मेरे प्रेष्ठ मित्र श्रीयुत पं० कृष्णवल्लभ शर्मा उपाध्यायजी ने समग्र श्रीकृष्णायन के संशोधन का परिश्रम किया है, अतएव श्रीमान् पंडितजी का चिरकृतज्ञ रहूँगा और शुद्धान्तःकरण से सहर्ष धन्यवाद देता हूँ।

निम्नलिखित सद्धर्मैकपरायण परमोदार दानवीर सज्जनवृन्द को शुद्धान्तःकरण से धन्यवाद देता हूँ कि जिन महोदयों ने अपने सुपरिश्रम द्वारा सदुपार्जित द्रव्य को ऐसे सदुपयोग में व्यय किया है। यद्यपि संसार में धनाढ्य तथा व्ययशीलों की कमी नहीं है, तथापि ऐसे सर्वहितसाधक सत्कार्य में व्यय करना ही उनकी दूरदर्शिता एवम् सज्जनता का परिचायक है।

५००) फतूमल हुन्दराज, हैदराबाद (सिन्ध)
५००) गागूमल छतोमल, हैदराबाद (सिन्ध)
२५०) सीताबाई ने अपने पूज्य पति महाराज परसरामजी के चिर स्मरणार्थ, भूमक
२५०) वराणबाई ने अपने पूज्य पति ठाकुरदासजी के चिर स्मरणार्थ, हैदराबाद (सिन्ध)
२५०) छतीबाई ने अपने पूज्य पति ठाकुरदासजी के चिर स्मरणार्थ, करांची
२५०) सेवाराम ताराचन्द, हैदराबाद (सिन्ध)
१००) जगतराय बुधरमल, अमरोट सक्खर (सिन्ध)
१००) गोकुलदासजी ने निज पूज्य पिता झामनदासजी तग्योमल के चिर स्मरणार्थ, नवाबशाह
१००) मुंडलीबाई ने निज पूज्य पति नेणूमलजी के चिर स्मरणार्थ, हैदराबाद (सिन्ध)
११५) नथुरमल सेउमल, हैदराबाद (सिन्ध)
१००) टोपणदास टहलराम, हैदराबाद (सिन्ध)
१००) बलराम-कृष्ण श्यामस्नेही, हैदराबाद (सिन्ध)

इनके अतिरिक्त और भी जिन सज्जनों ने यथाशक्ति सेवा की है, उन्हें भी धन्यवाद है।

प्रस्तुत ग्रन्थरत्न मुद्रण कराने का प्रथम उत्साह सिन्ध-सक्खर जिलान्तर गत अमरोट ग्राम निवासियों का रहा और ३००) सबने मिल कर के दिया, अतएव वे विशेष धन्यवाद के पात्र हैं; जिनमें से १००) की सेवा करने वाले का नाम ऊपर दिया गया है।

श्यामस्नेही—श्यामाशरण.

गुजरात बड़ौदा निवासी–

श्रीमद्भागवत तत्त्व-रसज्ञ, प्रसिद्ध विद्वद्वर्य

श्रीयुत पं० नरहरिलाल के दो अक्षर

ग्रन्थ माटे अभिप्राय

" ग्रन्थकार पोते जणावे छे ते प्रमाणे अवश्य श्री गोपीश्वरीना आज्ञा थी अने कृपा प्रसादथीज आ ग्रन्थ थएल छे, ए निःसन्देह छे; ग्रन्थ प्रासादिक छे, ग्रन्थ मां व्यासना पौराणिक कृष्ण चरित्रो जेवा के ब्रह्मवैवर्त पुराण श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, पद्मपुराण-पाताल खण्ड एमनों समावेश थयो छे, श्रीगर्गसंहितानुं तो अपूर्व दोहन करेलूं छे, अने शुक परिचित सम्यादिनी जणाए नारद बहुलाश्व सम्वाद अने गर्ग शौनक सम्वाद जे दाखल थयो छे ते गर्ग संहितानुं अनुकरण लागे छे। ·

भाषानी सरलता, अर्थनुं गाम्भीर्य, शब्दोनुं वैचित्र्य, पद लालित्य अने सर्वत्र व्यापेलुं माधुर्य आ सर्वगुण ग्रन्थकारना हृदयनी भक्ति थी एटला मोहक थया छे के सहृदय भक्त वाचक तो ग्रन्थनुं अनेक वार पारायण कर्या विना सन्तुष्ट थायज नहीं ।

ग्रन्थकारे निर्माण करेलो आ कृष्ण भण्डार हिन्दी वाचको आगल निःस्वार्थ बुद्धिथी रजू करनार श्रीमान् श्यामस्नेही-श्यामाशरणजीनो जेटलो आभार मानीए एटलो ओछो छे ।

आपनों—

नरहरिलाल

श्रीकृष्ण मन्दिर, ज्युबली बाग पासे ।

११-१२-३६

श्रीकृष्णायन की आरती

जय श्रीकृष्णायन प्रभो, जय श्रीकृष्णायन ।
गुप्त स्वरूप अनूप विराजे – नितही भक्त हिये ।
अब श्रीवसन्त वदन तें – दर्शन प्रकट दिये ॥ टेक ॥
पञ्चानन चतुरानन देवा – सनकादिक व्यासा ।
नारद शारद ऋषि मुनि – गावत युत प्यासा ॥ १ ॥
चारिहुँ वेद पुराण अठारहँ – षट् शास्त्रन सारा ।
भक्तन को तन मन धन – सब जन आधारा ॥ २ ॥
परम मधुर अमृत नित पीवै – जो जन जग माहीं ।
सो निश्चय भव तरही – पहुचे प्रभु पाहीं ॥ ३ ॥
कलि जीवन के कारन – प्रकट रूप कीनों ।
विना आप गति नाहीं – यह निश्चय चीनों ॥ ४ ॥
श्यामसनेही सर्वस – तुम हो रस रूपा ।
आप कृपा मो हिय में – नित बस व्रजभूपा ॥ ५ ॥

श्रीश्याम स्नेही लक्षण ।

श्याम नाममें दृढ़ अनुरागी ❀ अपर सकलतें परम विरागी ।
श्याम स्वरूप हिये निज ध्यावे ❀ शुद्धभावसों श्याम रिझावै ॥
गावै नित्य श्यामकी लीला ❀ याहि रंगमें रहै रँगीला ।
श्याम धाम निज तीर्थ पछानै ❀ सकल धाममय ताकौ जानै ॥
इन चतुरनमें चित्त रमावै ❀ सो श्री श्यामसनेहि कहावै ।
वैष्णव सेवामें मन राखै ❀ वैष्णव सत्संगति अभिलाखै ॥
सबके गुनको गाहक होवै ❀ ममता मैल हृदयको धोवै ।
मिल सन्तनसों प्रभु गुन गावै ❀ साज बाज लै इष्ट रिझावै ॥
तजकें मान प्रेम युत नाचै ❀ बिना श्याम कहुँ कबहु न राचै ।
श्याम रु श्यामसनेहिन सेवा ❀ निज सर्वस्व लखै सुख लेवा ॥

दो०—सो श्रीश्याम सनेहि है, सुनिये श्याम सनेहि ।
सन्त वेद गुरु सबनको, यहि सिधांत लख लेहि ॥ १ ॥
श्यामा सोई श्याम हैं, श्याम सु श्यामा रूप ।
श्याम सनेही इम लखै, उत्तम भाव अनूप ॥ २ ॥
श्यामाश्याम सु एक हैं, एक प्रान द्वै देह ।
श्याम सनेहिनको सदा, करनौं युगल सनेह ॥ ३ ॥

श्रीयमुना जल परम पुनीता ❀ सेवै नित धर हिये प्रतीता ।
श्रीतुलसी पूजन नित करही ❀ युत परिक्रम प्रभुगुन उच्चरही ॥
तिलक ललाट चन्द्रिका धारै ❀ ता नीचै इक बिन्दि सँवारै ।
कंठ धरै तुलसीकी माला ❀ तुलसी स्रक सुमरै नँदलाला ॥
या रहनीको जो दृढ़ नेही ❀ सो कहियै श्रीश्यामसनेही ।
प्रभु प्रसाद बिन कछु नहिं पावै ❀ जलहु पिवै प्रभु ध्यान लगावै ॥
शुष्क संगको दूरहि त्यागै ❀ रसिकनसों मिल रसमें पागै ।
रह इकंत वा सरिता तीरा ❀ ब्रह्मचर्य पालै मतिधीरा ॥

रहे जितेन्द्रिय मन न डुलावै ❀ एक श्यामसों नेह दृढ़ावै ।
नित नवभाव सुलाड़ लड़ावै ❀ सो श्रीश्याम सनेहि कहावै ॥

दो०—अन्तरङ्ग बहिरङ्गमें, लखै सनेही श्याम ।
भीतर बाहर विश्वके, लखै सु श्यामाश्याम ॥ ४ ॥

ब्राह्म महूरतमें नित जागै ❀ सद्गुरु युगल ध्यानमें लागै ।
पुनः छाड़ सेजा कर कर्मा ❀ लगै : रहत जे तनके धर्मा ॥
करै कृष्ण कीर्तन कल कंठा ❀ धार हिये निज अति उत्कंठा ।
श्यामाश्याम रटन युत प्रेमा ❀ करहीं श्यामस्नेहि नित नेमा ॥
नित नव भाव श्याम उर लावैं ❀ गुरु करुणाको धन्य मनावैं ।
कृष्ण सहस्रनाम कृष्णायन ❀ करैं पाठ नित नेम परायन ॥
या विधि नित्य करहिं युत भावा ❀ ते श्रीश्यामसनेहि कहावा ।
श्याम आस विश्वास दृढ़ाई ❀ यथा लाभ सन्तुष्ट रहाई ॥
स्वारथ परमारथ सब श्यामा ❀ श्याम बिना सबतें निष्कामा ।
श्याम नाम किहँ मुख सुन लेही ❀ तनु पुलकित है श्यामसनेही ॥

दो०—श्याम रु श्यामसनेहि बिन, श्याम सनेहिन नाहिं ।
बाह्य अभ्यन्तर चर अचर, लखैं श्याम सब माहिं ॥ ५ ॥
श्याम सनेही श्यामसों, श्यामासों तिम श्याम ।
ताते श्यामाश्यामसों, करहिं प्रीति वसु याम ॥ ६ ॥

जाग्रत स्वप्न सुषोपति तुरिया ❀ देखै श्याम स्वरूप मधुरिया ।
देख देख तन मन धन वारै ❀ प्रति पल नवद्युति भानु अपारे ॥
सुरत श्यामसों छिन नहिं टारै ❀ अष्टयाम सेवा चित धारै ।
श्यामसनेही सब दिशि देखे ❀ इष्ट परात्पर श्यामहि पेखै ॥
जहाँ तहाँ जावै पुन आवै ❀ श्यामाश्याम अपन मुख गावै ।
जब बोलै तब श्यामसनेही ❀ श्याम सुरस पा रहै विदेही ॥
एक श्याम अनुदिन संधाना ❀ श्याम रसामृत कर नित पाना ।

श्यामस्नेह निधिमें लवलीना ❀ करे आपने मनको मीना ॥
श्याम लगनमें रह रंग भीना ❀ सो श्रीश्यामसनेहि प्रवीना ।
श्यामहिं गावै श्यामहिं ध्यावै ❀ श्यामहिको नव लाड़ लड़ावै ॥

दो०—लोक और परलोकमें, देखै श्यामा श्याम ।
श्यामसनेहिन को नहीं, अपर काहुसे काम ॥ ७ ॥

सद्गुरु मंत्र अचल विश्वासी ❀ सद्गुरु वचनन सुदृश उपासी ।
मानुष तन गुरुको नहिं मानै ❀ निश्चय ईश्वर रूप पछानै ॥
रंचक अपि अन्तर नहिं राखै ❀ कपट त्याग गुरु प्रति वच भाखै ।
चरण शरण धारै दृढ़ टेका ❀ सेवै सद्गुरु सहित विवेका ॥
गुरु सेवाको अधिकी जानै ❀ बिन सेवा किम गुरुहिं पछानै ।
वशीकरण यह मंत्र विचारा ❀ श्यामसनेही कर निरधारा ॥
बिन सद्गुरु हो काज न कोई ❀ गुरुकी कृपा सुलभ सब होई ।
गुरु करुणातें प्रतिपल निरखे ❀ श्याम स्वरूप हिये निज हरखे ॥
गुरु करुणा तम पटल विदारै ❀ तन मनकी सब मैल निवारै ।
झलमल जोति लखै चहुँ ओरा ❀ तामैं निरखै नवल किशोरा ॥

दो०—ताते सब विधि श्रीगुरुहिं, सेवै श्याम सनेहि ।
लहै नित्य कुँज केलि सुख, है सबते पर१ एहि ॥ ८ ॥

धन्य धन्य जो श्यामसनेही ❀ जिननें करी सफल निज देही ।
एक श्यामसों नेह लगायौ ❀ जग वस्तूसे चित्त हटायौ ॥
श्याम मिलन अति चटपटि रहही ❀ यह गति श्यामसनेहिन अहही ।
श्यामसनेही नेह तरंगा ❀ उछरत रहत सुलहत उमंगा ॥
श्यामसनेही बिन नहिं पावैं ❀ श्यामनेह जो संत लखावैं ।
श्यामसनेही जिहँ कुल माहीं ❀ भयौ प्रकट ते अपि तर जाहीं ॥
शत पीढ़ी तारै कुलकेरी ❀ अस संतन कह्यऊ स्फुट टेरी ।
श्याम मोक्ष दें नेह न देहीं ❀ देंहि नेह तौ तिन सुधि लेहीं ॥

योगक्षेम तिनको ते करहीं ॐ नेहिन इक पल नहिं परिहरहीं।
स्नेहिन हित धारैं बहु रूपा ॐ बहु विधि लीला रचैं अनूपा ॥

दो०—ताते नीरस मोक्षको, श्यामस्नेहि न चाहि।
श्यामस्नेहको चाहिकैं, श्यामसनेहि कहाहिं ॥ ८ ॥

सो०—सकल रसनमें भूप, परम शुद्ध माधुर्य जो।
है अति गोप्य अनूप, यहि उपासना मुख्य है ॥ ९ ॥

दो०—नित्य विहारिन राधिका, नित्य विहारी श्याम।
करत केलि रसमांयि ललित, रसिकन हित रस धाम ॥ १० ॥
स्नेहरूप श्रीयुगल वर, स्नेह रूप सखि वृंद।
स्नेह रूप वृन्दाविपिन, स्नेहरूप रवि चंद ॥ ११ ॥
स्नेहरूप बहु द्रुमनपै, स्नेह स्वरूप विहंग।
स्नेह रूप जहँ बाग बहु, स्नेहरूप रस रंग ॥ १२ ॥
स्नेहरूप वायू बहै, शीत सुगंधित धीर।
स्नेह रूप सरिता सरस, स्नेहरूप तिन तीर ॥ १३ ॥
स्नेह रूप तहँ कुंज बहु, स्नेह रूप बहु लाल।
स्नेहरूप भुविमें जटित, स्नेह रूप छवि लाल ॥ १४ ॥
स्नेह स्वरूप निकुंज तहँ, सकल मध्य मनहार।
विहरत तहँ दम्पति मुदित, रसिकन प्राणाधार ॥ १५ ॥
सप्तस्वर सब सखि रुचिर, गावत रिझवत दोउ।
प्रति पल बल बल जात हैं, तिन चेरी चित होउ ॥ १६ ॥
चेरी गति हेरी तहाँ, पावत वहि रस सार।
नेरी हो देरी नहीं, श्रीगुरु कृपा अधार ॥ १७ ॥
श्रीगुरु करुणातें लहत, कृपा राधिका जीव।
विना लड़ैतीकी कृपा, कबहु न पावे पीव ॥ १८ ॥
गुरु करुणासों देत हैं, अन्तरंग यह भेद।
श्यामसनेहिनको मिलत, जाहि न जानत वेद ॥ १९ ॥
देवर्षी सनकादि मुनि, श्रीशुक शंकर देव।
सखि स्वरूप यह गूप रस, पावत अनुभव एव ॥ २० ॥

इति श्रीश्यामस्नेही लक्षण समाप्त।

* श्रीराधा वसन्त विहारिणे नमः *

* भूमिका *

प्रिय पाठक महोदय वृन्द !

सच्चिद्घन त्रैलोक्यानन्द वर्द्धन व्रजजन जीवन श्रीवृन्दावनधन श्रीमन्नन्दनन्दन पदारविन्दों को प्रणति पुरस्सर कोटिशः धन्यवाद है कि जिनकी निरुपम अनुकम्पा से अस्मदादिकों को मनुष्य शरीर प्राप्त हुआ है; निस्सन्देह सुदुर्लभ मानविक देह सुलभ प्राप्त होना उन्हीं व्रजजन सुख पुञ्ज मञ्जु निकुञ्ज विहारी जी के ही असीम अनुग्रह का फल है. श्री भागवत में स्पष्ट है कि—" नृदेहमाद्यं सुलभं सुदुर्लभं " अर्थात् मनुष्य देह प्राप्त ही सुदुर्लभ वस्तु सुलभ हुई है, किन्तु खेद का विषय है कि ऐसे सुदुर्लभ मनुष्य देह को प्रायः सदुपयोग नहीं होता, यद्यपि कोई द्रव्योपार्जन का प्रयत्न करते हैं, कोई पुत्रादिकों के लालन में लालायित हैं, कोई राज्य प्राप्ति के स्वप्न देखते हैं अथवा कोई आमुत्रिक स्वर्गीय सुख अप्सरा विमानादि के भोगों में उत्कण्ठित रहते हैं. और क्षणिक स्वर्गीय सुख प्राप्ति के लिये तन, मन, धन, जन से अनेकानेक प्रयत्न करतेहैं; किन्तु सच्छास्त्रीय सिद्धान्तानुसार उपरोक्त रूव परिश्रम क्षुद्र ही है. प्रयत्न तो उसही के लिये करना बुद्धिमत्ता है. जैसी श्रीमद्भागवत में आज्ञा है. " तस्यैव हेतोः प्रयतेतकोविदो न लभ्यते यद्भ्रमतामुपर्य्यधः । तल्लभ्यते दुःखव-दन्यतस्सुखं कालेन सर्वत्र गम्भीररंहसा ॥ अर्थात् कोविद (बुद्धिमान) उसही के लिये प्रयास करे जो कि ऊपर के भूलोकादि सातों लोकों में और नीचे के तलादि सातों लोकों में घूमने पर भी न मिले और प्रापञ्चिक सुख तो जीव जिस तरह विनाही यत्न किये पाता है. अर्थात् दुख के लिये कोई भी यत्न नहीं करता. प्रत्युत उसके निवारणार्थ ही आयास करता है. तथापि दुख भोगना ही पड़ताहै; इसी तरह सुख भी विनाही यत्न किये अवश्य ही मिलता है. इसका मुख्य कारण गंभीर वेगवाला सर्वत्र व्यापक काल ही है, जिस तरह अकस्मात् काल से ही दुःख प्राप्त होता है, उसी तरह अकस्मात् काल ही से सुख प्राप्त होना है ।

(२) अतएव विचारशील पाठक वृन्द ! प्रापञ्चिक सुख मात्र के लिये प्रयत्न करना सर्वथा व्यर्थ है और उस ही के लिये प्रयत्न करना बुद्धिमानी है, जो घूमने से कहीं भी नहीं मिले. अब विचारणीय विषय यह है कि वह कौन सी वस्तु है जो चतुर्दश लोकों में खोजने पर भी नहीं प्राप्त होवे और जिस वस्तु के ऊपर स्वर्गीय सुख क्या पारमेष्ठ्य सिंहासन तक भी न्योछावर किया जाता है । वह वस्तु तत्त्ववित् महानुभावों ने यह निश्चय की है कि

" आत्यन्तिक दुःख निवृत्ति पूर्वक परात्परानन्द प्राप्ति " आत्यन्तिक दुख उसे कहते हैं, जो ब्रह्मा पर्यन्त भी जिससे भयभीत हैं, और परात्परानन्द उसे कहते हैं, जो सदा सर्वदा एक रस रहै अर्थात् कराल काल जिसमें कदापि विक्षेप न डाल सके; ऐसी एक मात्र वस्तु वही आनन्दकन्द श्रीकृष्णचन्द पदारविन्दों की प्राप्ति है. श्रीमद्भागवत में स्पष्ट है, यथा--मर्त्यो मृत्यु व्यालभीतः पलायन् सर्वांल्लोकान्निर्भयंनाध्यगच्छत् ॥ त्वत्पादाब्जंप्राप्य यदृच्छयाद्य स्वस्थश्शेते मृत्युरस्मादपैति ॥ अर्थात् मृत्युरूपी सर्प से डर कर मनुष्य भागता हुआ सब लोकों में गया, किन्तु कहीं भी उसको निर्भय स्थान नहीं मिलता. हे आद्य ! आपकी कृपा से आपही के चरणारविन्दों को प्राप्त कर स्वस्थ सोता है, क्यों कि मृत्यु यहां से दूर भागती है ।

(३) अब विचारणीय विषय यह है कि उपरोक्त परमाभिलाषा (श्रीभगवच्चरणारविंद प्राप्ति) अनायास पूर्तिका सर्वोत्तम सर्वसाध्य सुन्दर उपाय क्या है ? यद्यपि योग-यज्ञ-जप-तप व्रतानुष्ठान अन्यान्य भी ज्ञान-कर्म-उपासना विषयक अनेकानेक उपाय हैं, किंतु खेद का विषय है कि कुटिल कराल कलिकाल व्याल ग्रसित जनों के लिये उपरोक्त उपाय समुदाय प्रायः सब ही दुष्कर और दुर्घट है, कारण कलियुगी मनुष्यों से सत्युगादिकों को तरह न अर्बो खर्बों का द्रव्य व्यय करके राजसूय अश्वमेधादिक यज्ञ ही साध्य हैं न सहस्रों वर्ष निरम्बु व्रत ही कर सके हैं. इत्यादि ।

कलियुगी मनुष्यों के विषय में श्रीमद्भागवत में स्पष्ट है कि " मन्दा सुमन्द मतयः मन्दभाग्याह्युपद्रुता " अर्थात् खोटे और अतिशय मन्द बुद्धि वाले और मंदभागी ,फिर भी रात दिन रोगों में ग्रसित. ये कलिकाल के जीवों की दशा है फिर कलियुगी जीवों की आयु श्रीमद्भागवत में पचास वर्ष परमायु मानी है यथा-" विंशत्रिंशद्वर्षाणि परमायुकलौनृणाम्" इन पचास वर्षों में भी पचीस वर्ष तो प्रायः सोने में व्यतीत हो जाते हैं, शेष पचीस वर्ष में शैशव, वार्द्धक्य, पठन-पाठन, द्रव्योपार्जन, गार्हस्थ्य कृत्य, प्रमाद, आलस्य, रोगादिक हैं. अब विचारिये कितना समय इसको सुकृत के लिये अवशिष्ट रहता है, तात्पर्य यह कि कलियुगी मनुष्यों के लिये कोई सुगम-सरल-सुन्दर और सर्वोत्तम उपाय ही उपादेय है. ऐसा उपाय एक मात्र श्रीभगवद्गुणानुवाद ही है. कारण कि समस्त संसार में तीन ही प्रकार के मनुष्य हैं. मुक्त, मुमुक्षु, कामी । मुक्त वही जिनकी विषयवासना निवृत्त होगई है, अर्थात् नारद सनकादिक सदृश, मुमुक्षु वह जो इस संसार रोग से छूटने की तीव्रेच्छा रखते हैं, कामी वह कहलाते हैं जिनकी इन्द्रियों की तृप्ति में ही प्रीति होती है. किन्तु श्रीभगवद्गुणानुवाद उपरोक्त तीनों प्रकार के मनुष्यों के लिये उपादेय और परमादरणीय है, जैसा कि श्रीमद्-भागवत में स्पष्ट है ॥ " निवृत्त तर्षैरुपगीयमानाद्भवौषधाच्छ्रोत्र मनोभिरामात् ॥ क उत्तम श्लोक गुणानुवादात्पुमान्विरज्येतविना पशुघ्नात् ॥ अर्थात् निवृत्त होगई है तृष्णा जिनकी ऐसे नारदादिक ऋषि जिन भगवद्गुणानुवादों को अतिशय गायन करते हैं । यद्यपि मुक्त जनों के लिये कोई कर्तव्य शेष नहीं रहता, किन्तु श्रीमन्नारद जी का तो हरिगुन गाना और वीणा बजाना ही अहर्निश परम कर्तव्य है, अतएव मुक्तजनों के लिये भगवद्गुणानुवाद परमा-दरणीय वस्तु सिद्ध हुई और मोक्ष चाहने वालों के लिये तो स्पष्ट ही है " भवौषधात् "

अर्थात् सर्वथा असाध्य जटिल संसार रोग की सुन्दर, सुलभ, स्वादिष्ट और अव्यर्थ महौषधि है. अब तीसरे कामी जनों के लिये भी आदरणीय वस्तु है. कारन कि " श्रोत्रमनोभिरामात्" अर्थात् श्रोत्र, इन्द्रिय और मन इनको परम आनन्द देने वाले श्रीभगवद्गुणानुवाद ही होते हैं। अब ऐसा कौनसा मनुष्य रहा जो भगवद्गुणानुवादों का आदर न करै. भगवद्गुणानुवाद विमुख जनों के लिये स्पष्ट अक्षर ये हैं कि " विना पशुघ्नात् " अर्थात् कसाई के विना अथवा आत्मघाती के विना और कौन मनुष्य है, जो श्रीभगवद्गुणानुवादों से आनन्दित न हो। प्रायः सभी सच्छास्त्रों में भगवद्गुणानुवादों का माहात्म्य विस्तरशः वर्णित है, श्रीभगवद्गुणानुवादों के रसज्ञजन मोक्ष पर्यन्त को तुच्छ समझते हैं॥ यथा नैव दिव्य सुख भोगमर्थये नापवर्गमपि नाथकामये॥ यान्तु कर्ण विवरं दिने दिने कृष्ण केलि चरितामृतानिमे॥ अर्थात् कविरत्न महानुभाव अपने प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हे नाथ ! न मैं दिव्य सुख भोगों की इच्छा करता हूं, और न मैं मोक्ष भी चाहता हूँ। मैं तो केवल यही चाहता हूँ कि प्रति दिन मेरे कानों में कृष्णकेलि कथामृत जाते रहैं, एवं महानुभाव श्रीयादवेन्द्र पुरी का मत है कि "नन्द नन्दन कैशोर लीलामृत महाम्बुधौ। निमग्नानां किमस्माकं निर्वाण लवणाम्भसा" अर्थात्—किशोर अवस्था अन्तरगत श्रीनन्दनन्दन की लीलारूप अमृत के महासागर में आनन्द का गोता लगाने वाले हम लोगों को मोक्षरूप खारे समुद्र से क्या मतलब, "इस छोटी सी भूमिका में भगवद्गुणानुवादों का महात्म्य कहाँ तक वर्णन किया जा सकता है। निष्कर्ष यह है कि कलियुगी जीवों को सर्वथा सुगम सर्व साध्य सुन्दर उपाय केवल भगवद्गुणानुवादों का श्रवण-कीर्त्तन ही है। यद्यपि श्रीमद्भागवत, वेद, पुराण, इतिहास, काव्यों में श्रीभगवद्गुणानुवाद समीचीनतया विस्तरशः वर्णित है। यथा—"वेदे रामायणे चैव पुराणे भारते तथा।" आदावन्ते च मध्ये च हरिः सर्वत्र गीयते " किन्तु उपरोक्त शास्त्रों में भगवद्गुणानुवादों का आस्वादन संस्कृतज्ञ विद्वान् ही कर सकते हैं। साधारण भाषा मात्र में व्युत्पत्ति रखने वालों को भी श्रीसूरसागर आदि भाषा के भी अनेकानेक भगवद्गुणानुवादों के आदर्श ग्रंथ विद्यमान हैं। तथापि भाषा में श्रीगोस्वामी तुलसीदास कृत रामायण ने जन साधारण का जितना उपकार किया है, और जितना प्रचार तथा प्रभाव है, उतना दूसरे भाषा ग्रन्थ का प्रायः नहीं, किन्तु श्रीरामायण का प्रचार और प्रभाव श्रीरामोपासकों को जितना सुखद और संतोष जनक है, उतना इष्ट निष्ठादि सद्गुणों के कारण श्रीकृष्ण उपासकों को नहीं। श्रीतुलसीकृत रामायण के दृष्टिगोचर होते ही श्रीकृष्णचन्द्र चरणारविन्द चञ्चरीक मार्मिक रसज्ञों के विशुद्धान्तःकरण में तत्क्षण यह वासना स्फूर्ति होती है कि ठीक इसी प्रकार कोई श्रीकृष्णायन ग्रन्थ भी हो, दूर्वादल श्याम परमाभिराम दशरथ राजकुमार श्रीराम ने अपने एकान्तिक भक्त चातकों को जैसे श्रीगोस्वामी तुलसीदासरूप सजल-जलद द्वारा श्रीरामायणरूप अमृतमयी वर्षा से सन्तुष्ट किये, ठीक उसी तरह आनन्द-कन्द श्रीवृन्दावनचन्द्र व्रजजनानन्द श्रीकृष्णचन्द्र ने अपने अनन्य रसिक चकोरोंको अपने निज जन महानुभाव श्रीवसन्तरामरूप राकाशशि द्वारा श्रीकृष्णायनरूप सुचारु चन्द्रिका से संतुष्ट किये। उक्त महानुभाव का शुभ जन्म सिंधु देशीय हैदराबाद के समीप "अजन"नामक ग्राम में हुआ।

यद्यपि काव्य रस मर्मज्ञ जनों को तथा केवल शब्द चातुरी उपमालङ्कार यमकानुप्रास पिंगलादि परिपाटी मात्र पै दृष्टि रखने वालों को श्री कृष्णायन से सर्वथा मनोरंजन न हो अथवा किंचित मात्र भी न हो, तथापि भगवद्भाव भावुक रस विशेष भावना चतुर जन अवश्य ही श्रीकृष्णायन से परमानन्द प्राप्ति करेंगे, अतएव श्रीजीव गोस्वामीपाद के सिद्धान्त को सामने रखते हुए हमको यथेष्ट सन्तोष है। सिद्धान्त यह है कि विदग्ध माधव नामक नाटक में पारिपार्श्वक से सूत्र धार ने यह शंका की कि नीरस जनों की विमुखता से मैं उदास होता हूं, कारण नीरस जनों को हमारे नाटक में आनन्द नहीं आवेगा। इसके उत्तर में पारिपार्श्वक ने कहा कि " उदासतां नाम रसानभिज्ञाः कृतौ तवामी रसिकाः स्फुरन्ति ॥ क्रमेलकैः काम मुपेक्षितेऽपिपिकाः सुखयन्ति परंरसाले" अर्थात् रसानभिज्ञ जनों को उदास होने दीजिये, किन्तु आपके इस सुकार्य में रसिकजन अतिशय आनन्दित होंगे, यथा ऊँटों ने आम सरीखे सुन्दर सुस्वादु फल की उपेक्षा भी करदी तो क्या, किन्तु आम के रसास्वादी पिक (कोकिल) उस आमका आस्वादन कर परम आनन्दित होते ही हैं, पुनः श्रीमद्भागवत में देवर्षिवर्य श्रीमन्नारदजी का सिद्धान्त है कि " तद्वाग्विसर्गो जनताघविप्लवो यस्मिन्प्रति श्लोक मवद्धवत्यपि ॥ नामान्यनन्तस्य यशोङ्कितानि यच्छृण्वन्ति गायन्ति गृणन्ति साधव " अर्थात् वह वाग्विसर्ग (गद्यपद्यात्मक काव्य) जनता के पापराशी का विध्वंस करने वाला होता है, जो श्रीभगवन्नाम से सुशोभित हो और चाहें उसमें काव्य परिपाटी के अनुसार कितने ही दुर्गुण हों और उसका प्रति श्लोक अर्थात् प्रति पद भी बे ढंगा क्यों न हो, किन्तु साधुजन सज्जन उन्हें प्रेम पूर्वक सुनते हैं, गाते हैं, आदर करते हैं, अतएव भगवत भाव भावुक सज्जन महानुभावों से सविनय निवेदन है कि केवल तुच्छ वाक चातुरी मात्रपर दृष्टि देते हुये श्रीकृष्णायन की असमोर्द्ध माधुरी से वंचित न रहें। शुभम्।

विनीत निवेदक—
श्यामस्नेही-श्यामाशरण

श्री कृष्णायन प्रादुर्भाव।

आपको यह उत्कंठा निरन्तर रहती रही कि श्रीभगभवत भागवतों के परम पुनीत चरित्रों का वर्णन करना, तदनुसार सिन्धु देश की भाषा में आपने अनेक पद्यों की रचना की। तथा ब्रज भाषा में भी छोटे-छोटे ग्रंथ रचे जिन में भक्ति, ज्ञान, योग, वैराग्य, आदि विषय वर्णित हैं। आपको श्रीकृष्ण पदारविन्दानुराग तो सहजही बाल्यावस्था से रहा; किन्तु श्रीयुगल प्रेम में प्रवेश धाम पधारने से प्रायः चार वर्ष पूर्व प्रत्यक्ष हुआ, तब आपकी और भी यह परमोत्कंठा बढ़ती रही, कि प्रिया-प्रियतम श्रीराधा-कृष्ण के रसस्वरूप परम अनूप चरित्रों को गाय कर अवशिष्ट समय को श्रीयुगल लीलामृतानन्द मनन, योजन, निर्वाचन, लेखनादि परात्परानन्द में व्यतीत करूँ।

आपके हृद्गत सर्वोपयोगी सर्वोत्कृष्ट संकल्प जान परमैकान्तिक श्रीयुगलोपासना मार्मिक तत्त्वज्ञ अन्तरङ्गा श्रीगोपीश्वरी स्वरूप आशुतोष श्रीशङ्कर ने स्वप्नादेश किया, कि "प्रिया प्रीतमजू के गुन गाउ और श्रीकृष्णायन नाम धराउ" ऐसा स्वप्न देख तदनन्तर सावधान हो विचारने लगे कि श्रीवृषभानुनन्दनी और श्रीनन्द-नन्दन के गुन गायन करना तो सहज है, अर्थात् दो चार लीला के पद बनाकर गाये तो गुन गाये क्योंकि पूर्ण रूप से तो कोई भी नहीं गाय सक्ता, आकाश में मशक और खगराज निज-निज शक्त्यानुसार उड़ते ही हैं; किन्तु श्रीकृष्णायन नाम धरौ; यह बात कठिन क्या असम्भव ही है, कारण कि मुझ में व्याकरण, काव्य, कोष, छन्दालङ्कार, पिङ्गलादि का बोध रंचक मात्र भी नहीं, और तादृश भक्तिबल भी नहीं कि जिससे श्रीकृष्णायन रचना का महान कार्य सम्पादन हो सके; इत्यादि विघ्न भय के कारन ग्रंथारम्भ नहीं किया। आठवें दिन सायंकाल को एक योगी महानुभाव (जिनका स्वरूप आपने इसी द्वार के प्रारम्भ ही में वर्णन किया है) आये जिनका परम अलौकिक प्रभावशाली अनिर्वचनीय स्वरूप का दर्शन कर अङ्कित चित्र सदृश चकित रह गये। उपरोक्त अलौकिक महानुभाव ने आज्ञा की कि आपको जो एक सप्ताह पूर्व स्वप्नादेश हुआ उसके न पालन होने में क्या कारन ? आपने उन के दर्शनानन्द में निमग्न होते हुए हाथ जोड़ कर स्वप्नान्तर समय के विचारों का निवेदन किया। महानुभाव ने आज्ञा की कि तुम्हारे विचार सब निर्मूल हैं। स्वप्नादेश भी अपनी आज्ञा को साङ्गोपाङ्ग पूर्ति कराने में समर्थ है, अतएव आदेश पालन करो। योगी महानुभाव ऐसे आज्ञा देकर एक ओर पधारे, तत्पश्चात् आप विचारने लगे कि ये अलौकिक महानुभाव कौन थे ? मेरे स्वप्न का परिज्ञान इनको कैसे हुआ !

अहा ! कैसा मनोहर सुन्दर दिव्य अलौकिक स्वरूप मानों मूर्तिमान प्रेम ही था, इत्यादि विचार करते। भावना में निमग्न होने पर निश्चय हुआ कि यह तो निश्चय परमाभीष्ट देव श्रीगुरुदेव भक्तवत्सल श्रीशङ्कर ही मुझे सावधान करने तथा संशय को हरने असीम अनुग्रह करके पधारे थे (श्रीशिवजी का योगीवेष में दर्शन और श्रीकृष्णायन प्रारम्भ का समय "श्रावणी पूर्णिमा शनिवार सं० १९७०" था) प्रायः आपका रात्रि के १० से १२ बजे तक श्रीकृष्णायन लिखने का नियम था।

यद्यपि काव्य रस मर्मज्ञ जनों को तथा केवल शब्द चातुरी -उपमालङ्कार यमकानुप्रास पिंगलादि परिपाटी मात्र पै दृष्टि रखने वालों को श्री कृष्णायन से सर्वथा मनोरंजन न हो अथवा किंचित मात्र भी न हो, तथापि भगवद्भाव भावुक रस विशेष भावना चतुर जन अवश्य ही श्रीकृष्णायन से परमानन्द प्राप्ति करेंगे, अतएव श्रीजीव गोस्वामीपाद के सिद्धान्त को सामने रखते हुए हमको यथेष्ट सन्तोष है। सिद्धान्त यह है कि विदग्ध माधव नामक नाटक में पारिपार्श्वक से सूत्र धार ने यह शंका की कि नीरस जनों की विमुखता से मैं उदास होता हूं, कारण नीरस जनों को हमारे नाटक में आनन्द नहीं आवेगा। इसके उत्तर में पारिपार्श्वक ने कहा कि " उदासतां नाम रसानभिज्ञाः कृतौ तवामी रसिकाः स्फुरन्ति ॥ क्रमेलकैः काम मुपेक्षितेऽपिपिकाः सुखंयान्ति परंरसाले" अर्थात् रसानभिज्ञ जनों को उदास होने दीजिये, किन्तु आपके इस सुकार्य में रसिकजन अतिशय आनन्दित होंगे, यथा ऊँटों ने आम सरीखे सुन्दर सुस्वादु फल की उपेक्षा भी करदी तो क्या, किन्तु आम के रसास्वादी पिक (कोकिल) उस आमका आस्वादन कर परम आनन्दित होते ही हैं, पुनः श्रीमद्भागवत में देवर्षिवर्य श्रीमन्नारदजी का सिद्धान्त है कि " तद्वाग्विसर्गो जनताघविप्लवोः यस्मिन्प्रति श्लोक मबद्धवत्यपि ॥ नामान्यनन्तस्य यशोङ्कितानि यच्छृण्वन्ति गायन्ति गृणन्ति साधवः " अर्थात् वह वाग्विसर्ग (गद्यपद्यात्मक काव्य) जनता के पापराशी का विध्वंस करने वाला होता है, जो श्रीभगवन्नाम से सुशोभित हो और चाहे उसमें काव्य परिपाटी के अनुसार कितने ही दुर्गुण हों और उसका प्रति श्लोक अर्थात् प्रति पद भी बे ढंगा क्यों न हो, किन्तु साधुजन सज्जन उन्हें प्रेम पूर्वक सुनते हैं, गाते हैं, आदर करते हैं, अतएव भगवत भाव भावुक सज्जन महानुभावों से सविनय निवेदन है कि केवल तुच्छ वाक चातुरी मात्रपर दृष्टि देते हुये श्रीकृष्णायन की असमोर्द्ध माधुरी से वंचित न रहें। शुभम्।

विनीत निवेदक—

श्यामस्नेही-श्यामाशरण

॥ श्रीराधावसन्त विहारिणे नमः ॥

संक्षिप्त जीवनिका

प्रिय महाशय सज्जन वृन्द !

अनुपम, अलौलिक, सरस ग्रन्थका अवलोकन कर पाठक वृन्दके चित्तमें तुरन्तही तरंग उठती है कि अहा जिन महानुभावकी ऐसी सुमनोहर और भावगर्भित वाणी रससानी है, उनके सुचरित्र अवश्य वैसेही अनुपम, अलौकिक, सरस और मनोहर होंगे, उन उत्कण्ठित चित वालोंके लियेही श्रीग्रन्थकार महानुभावजीके सुचरित्रोंको लेखनीनें यहां लिखने की अवश्य आवश्यकता आनी और श्रीकृष्णायन ग्रंथ रचयिता महानुभावजीकी जीवनिका भी परम सरस, मधुर, प्राय सब जीवोंको सदुपदेशक, रोचक, गूढ़तत्व दर्शक, सुमनोहर है ।

सिन्धु देशान्तर्गत हैदराबाद वृहन्नगरके समीप "अजन" नामक ग्राम में सारस्वत वंशोद्भव दैवीगुणगणायन सन्त सेवा परायन हरिभक्त महाराज लखीरामजीकी परम पतिव्रता पत्नी भानुमतीजीके उदरसे विक्रम सं० १६२६ उन्नीस सौ उन्तीस फाल्गुन शुक्ला एकादशी रविवार मध्यान्ह दो वजे महात्माजीका प्रादुर्भाव हुआ, आपकी शोभा और परम अनूप सर्वांग सुडोलता को देखकर माता-पिता आदि तथा अगर ग्राम निवासी परम हर्षको प्राप्त हुये, श्रीमहाराज लखीरामजीके शुभ सदन में पुत्र जन्मोत्सव वृहद्रूप में था ही, किन्तु ग्राम में पतिग्रह उत्सवका दृश्य परममोदप्रद दृष्टिपथमें आ रहा था, आपकी शिशु अवस्था सबको आश्चर्यप्रद और परम आनन्ददायिनी थी, शिशु वय में जब आप रोते तौ अन्य साधनों (खिलौने आदिक) से शान्त नहीं होते, जब हरिनाम उच्चार करते तब शीघ्रही चुप हो जाते, ऐसे ही आप उस शिशु अवस्थामें जब बोलने लगे तौ विशेषेण श्रीभगवन्नामही उच्चारण करते, ऐसी दशा देख ग्राम तथा ग्रहवासी आपको बार बार हरिनामोच्चार कराकर प्रसन्न करते, जब आप वयस्य बालकों से मिलकर खेलने लगे, तबभी आप भगवल्लीला सम्बन्धी खेल खेलते,और हरिनाम ध्वनी स्वयं करते,औरोंको कराते, इस प्रकार बाल्यावस्थाकी चर्या देखकर प्रायः सबके हृदय में यही निश्चय होता था कि कोई महान्पुरुष हमारे ग्राममें प्रगट हुआ है, कारण कि प्राकृत बालकोंके समान इस बालमें कोई चिन्ह नहीं दीखता, और इनका सुमनोहर स्वरूप, मधुर भाषण, तथा विलक्षण चरित्र सबको परम हर्षित करते हुये चित्तको आकर्षण करते हैं, है भी सत्य ऐसेही "होनहार विरवानके होत चीकने पात" आपके जननी जनक श्रीप्रभुभक्त होनेके कारण ग्रहमें श्रीठाकुरसेवा करते समय आपको बड़े लाड़ से बुलाय कर बैठाते और सिखलाते, "हाथ जोड़ो, दण्डवत करो" इत्यादि तथा ब्राह्म मुहूर्त में स्वयं उठकर श्रीकृष्णकीर्तन करते, तबभी निज समीप बैठाय कर कृष्णपद गवाते (यह प्रसंग तौ श्रीमुखसे श्रीकृष्णायनके प्रथम द्वार, प्रथम सोपानके मंगलाचरणमें वर्णन किया है,) इस प्रकार आपने बाल्यावस्था व्यतीत की।

श्री कृष्ण लीलामृत सार सागरं, गोपीश्वरी शिष्किरं भवौषधम् ।
यश्चाह कृष्णायन ग्रन्थ मद्भुतं, तं श्री वसन्तं प्रणमामि सर्वदा ॥१॥
श्री राधिका कान्त निकुञ्ज मण्डले, गोपीश्वरी यूथ सदा जुगस्तुयः ।
सेवा परोनित्य सखी वपुर्दधन्, तं श्री वसन्तं प्रणमामि सर्वदा ॥ २ ॥

किशोर अवस्था प्राप्त होने पर प्रायः आपका शुभ निवास हैदराबाद (सिन्धु) में हुआ, और वहां विद्याध्ययन प्रारम्भ किया, पश्चात् पुरोहिती कार्य करते हुये यन्त्र, मन्त्र, तन्त्रादि रसायन प्रभृत्ति में प्रवृत होकर अनेक विचित्र घटनाओंका प्रत्यक्षानुभव किया, किन्तु आप सत्य पथसे किंचिन्मात्र भी च्युत नहीं हुये।

आपका शुभ विवाह हैदराबाद (सिंध) में सं० १६५० उन्नीस सौ पचास में हुआ, तत्पश्चात शीघ्रही एक दिन आप श्रीभक्तमालका पाठ कर रहे थे, तौ उसमें परम भागवतोंकी वार्तायें जोकि दुःखरूप असार संसार से वैराग्य करानेवाली और श्रीप्रभुप्रेम उपजाने वाली हैं, उन्हें वांचते वांचते आपके हृदय में तरंग उठें कि अहो इन भक्तजनोंने श्रीहरिको कैसे वश कर लिया, और कैसा अकथ अलौकिक परम आनन्द पाया, अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक, ब्रह्मादिकोंके ध्यानमें क्वचित ही आवैं, उन श्रीहरि ने इनके वश होकर इनकेही इच्छानुसार अनेक लीला की हैं, और प्रति पल इन्हींके संरक्षण में तत्पर रहे, क्या मुझपै ऐसी कृपा न होगी ? कृपा कैसेहो, मैं तो श्रीभगवद्भक्तिसे विमुख होकर यन्त्र मन्त्रादि साधनोंमें तत्पर हूँ, तथा सांसारिक विषयभोगोंको भोगनेकी इच्छावाला हूँ, श्रीभगवदनुग्रह तो मुझपैभी है, किन्तु मैं उसको न जान कर भवपथमें भटक रहा हूँ, प्रथम मनुष्य कलेवर सो भी भारतवर्ष में फिर वर्णोत्तम विप्रकुल, हरिभक्त भवन में जन्म, शरीर निरामय, बुद्धि तीव्र (जिस कार्य को सिद्ध करना चाहता हूँ मानों प्रथमही सिद्ध किया हुआ है) उत्तम प्रारब्ध इत्यादि एकएक सुदुर्लभ हैं, ये सब समुच्चय मुझे प्राप्त हैं, तौ क्या श्रीकृष्णानुकम्पा नहीं ? अवश्य है, धिक्कार है मुझको मैं उस परम करुणामय श्रीकृष्णानुकम्पाको विस्मरण कर मृगतृष्णारूप सांसारिक सुखों की अभिलाषा कर रहा हूँ, अस्तु, इस अवसर पर यह सत्य विचार भी उन्हीं की करुणा से हृदय में उठ रहे हैं; "अब गई सो गई" आगेके लिये सुचेत होना चाहिये, ऐसा निश्चय कर बड़े भाइयों को कहा कि अब यह पुरोहिती कार्य सम्हारैं मुझे अवसर नहीं, अर्थात् मैं अब विपिन में वास कर श्रीप्रभु परायण हूँगा, तब भाइयों ने विविध प्रकार से समुझायके रोकना चाहा, परन्तु अब रुके कौन, अन्त में कहा कि आप निज पत्नी को संगमें ले जाइये, हम उसको घर में रखकर उसके कष्टको नहीं देख सकेंगे, इस पर आपने कहा कि तौ वह "पीहर जा वसे" फिर भाइयों ने कहा कि आपही उसको वहां पहुँचा आइये। ऐसे सुनकर आपने घरमें जाकर निज पत्नीसे कहा कि चल तोहिं तेरे पीहर ले चलूं, क्योंकि मैं अब दुःखोंके मार्गमें जाना चाहता हूँ, और तू यदि पतिव्रता है तौ पति की आज्ञा शिरोधार्य करना तेरा परम कर्तव्य है, यदि तू हठ करैगी कि मुझे संग ले चलौ तौ मेरे भजन में बाधक होगी। श्रीमाताजी तो प्रथमही आपके विचारों को सुनकर दुःखावेशमें दुखित थीं, किन्तु अब श्रीमुख से वज्र से भी कठिन वचन सुनकर श्रीमाताजीका कोमल हृदय विदीर्ण हो गया, नयनाश्रु वहाती हुई श्रीमाताजी ने कहा कि हे स्वामिन् प्रथम जो आपने आदेश किया कि मैं अब दुःखोंके मार्गमें जा० इत्यादि इससे स्पष्टही सूचन हुआ कि मुझे सुखस्थानपै विठाय जाते हो, किन्तु मैं सत्य हृदय से शपथ पूर्वक निवेदन करती हूँ कि मेरे लिये आपके परोक्षमें यावत्सुख परमदुःखमय और आपके अपरोक्षमें यावत् दुःख परमसुखमयहैं औरआज्ञा करी कि पति आज्ञा पतिव्रता स्त्री को शिरोधार्य है, सो सत्यही है, और मैं भी सत्य हृदय से

किशोर अवस्था प्राप्त होने पर प्रायः आपका शुभ निवास हैदराबाद (सिन्धु) में हुआ, और वहां विद्याध्ययन प्रारम्भ किया, पश्चात् पुरोहिती कार्य करते हुये यन्त्र, मन्त्र, तन्त्रादि रसायन प्रभृत्ति में प्रवृत होकर अनेक विचित्र घटनाओंका प्रत्यक्षानुभव किया, किन्तु आप सत्य पथसे किंचिन्मात्र भी च्युत नहीं हुये।

आपका शुभ विवाह हैदराबाद (सिंध) में सं० १६५० उन्नीस सौ पचास में हुआ, तत्पश्चात शीघ्रही एक दिन आप श्रीभक्तमालका पाठ कर रहे थे, तो उसमें परम भागवतोंकी वार्ताएं जोकि दुःखरूप असार संसार से वैराग्य करानेवाली और श्रीप्रभुप्रेम उपजाने वाली हैं, उन्हें वांचते वांचते आपके हृदय में तरंग उठें कि अहो इन भक्तजनोंने श्रीहरिको कैसे वश कर लिया, और कैसा अकथ अलौकिक परम आनन्द पाया, अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक, ब्रह्मादिकोंके ध्यानमें क्वचित ही आवें, उन श्रीहरि ने इनके वश होकर इनकेही इच्छानुसार अनेक लीला की हैं, और प्रति पल इन्हींके संरक्षण में तत्पर रहैं, क्या मुझपै ऐसी कृपा न होगी? कृपा कैसेहो, मैं तो श्रीभगवद्भक्तिसे विमुख होकर यन्त्र मन्त्रादि साधनोंमें तत्पर हूँ, तथा सांसारिक विषयभोगोंको भोगनेकी इच्छावाला हूँ, श्रीभगवदनुग्रह तो मुझपैमी है, किन्तु मैं उसको न जान कर भवपथमें भटक रहा हूँ, प्रथम मनुष्य कलेवर सो भी भारतवर्ष में फिर वर्णोत्तम विप्रकुल, हरिभक्त भवन में जन्म, शरीर निरामय, बुद्धि तीव्र (जिस कार्य को सिद्ध करना चाहता हूँ मानों प्रथमही सिद्ध किया हुआ है) उत्तम प्रारब्ध इत्यादि एकएक सुदुर्लभ हैं, ये सब समुच्चय मुझे प्राप्त हैं, तो क्या श्रीकृष्णानुकम्पा नहीं? अवश्य है, धिक्कार है मुझको मैं उस परम करुणामय श्रीकृष्णानुकम्पाको विस्मरण कर मृगतृष्णारूप सांसारिक सुखों की अभिलाषा कर रहा हूँ, अस्तु, इस अवसर पर यह सत्य विचार भी उन्हीं की करुणा से हृदय में उठ रहे हैं; "अब गई सो गई" आगेके लिये सुचेत होना चाहिये, ऐसा निश्चय कर वड़े भाइयों को कहा कि अब यह पुरोहिती कार्य सम्हारें मुझे अवसर नहीं, अर्थात् मैं अब विपिन में वास कर श्रीप्रभु परायण हूँगा, तब भाइयों ने विविध प्रकार से समुझायके रोकना चाहा, परन्तु अब रुके कौन, अन्त में कहा कि आप निज पत्नी को संगमें ले जाइये, हम उसको घर में रखकर उसके कष्टको नहीं देख सकेंगे, इस पर आपने कहा कि तो वह "पीहर जा वसै" फिर भाइयों ने कहा कि आपही उसको वहां पहुँचा आइये। ऐसे सुनकर आपने घरमें जाकर निज पत्नीसे कहा कि चल तोहिं तेरे पीहर ले चलूं, क्योंकि मैं अब दुःखोंके मार्गमें जाना चाहता हूँ, और तू यदि पतिव्रता है तो पति की आज्ञा शिरोधार्य करना तेरा परम कर्तव्य है, यदि तू हठ करेगी कि मुझे संग ले चलो तो मेरे भजन में बाधक होगी। श्रीमाताजी तो प्रथमही आपके विचारों को सुनकर दुःखावेशमें दुखित थीं, किन्तु अब श्रीमुख से वज्र से भी कठिन वचन सुनकर श्रीमाताजीका कोमल हृदय विदीर्ण हो गया, नयनाश्रु वहाती हुई श्रीमाताजी ने कहा कि हे स्वामिन् प्रथम जो आपने आदेश किया कि मैं अब दुःखोंके मार्गमें जा० इत्यादि इससे स्पष्टही सूचन हुआ कि मुझे सुखस्थानपै विठाय जाते हो, किन्तु मैं सत्य हृदय से शपथ पूर्वक निवेदन करती हूँ कि मेरे लिये आपके परोक्षमें यावत्सुख परमदुःखमय और आपके अपरोक्षमें यावत् दुःख परमसुखमयहैं औरआज्ञा करी कि पति आज्ञा पतिव्रता स्त्री को शिरोधार्य है, सो सत्यही है, और मैं भी सत्य हृदय से

आपकी आज्ञा पालन करूंगी, किन्तु यह भी कह देती हूँ कि ये मेरे प्राण आपके संग विवश होकर चलेंगे, मैं इनको रोकने में असमर्थ हो जाऊंगी, और आपने कहा कि तू भजन में बाधक होगी, इस विषय में साभिमान कहती हूं कि बाधक नहीं सहायक हूंगी, यदि आपकी मुझपै सुदृष्टि बनी रही तो। श्रीमाताजी के भाव गर्भित वचनों को सुनकर आप निरुत्तर होगये, और आज्ञा करी कि संग चल।

सायंकाल के समय घर से कोई भी वस्तु संग में न लेकर दम्पति वन की ओर चले, उस अवसर आपका स्वरूप क्या था मानों तीव्र वैराग्य और भगवद्भजन की उत्कण्ठा मूर्तिमान होकर अरण्य की ओर जा रही है। भाई प्रभृतिन के चित्त में यही चिन्तवन रहा कि-सबीक कहां जायगा, थोड़ी देर में दोनों लौट आवेंगे, किन्तु उनको कौन लौटावें, जिनका हृदय सर्व समर्थ श्रीकृष्ण करुणामय ने निज ओर कर्षण करना चाहा है, और वे ही प्रभु उनके योगक्षेम का भार सहर्ष उठाते हैं। जब हैदराबादकी सीमा उल्लंघन कर आगे को बढ़े, त्योंही एक प्रेमीजन जो पूर्व परिचित था, सो मिला, उसने अति आग्रह पूर्वक युगल मूर्ति को निज स्थान पै विराजमान किया, आपने रात्रि निवास कर प्रातःकाल श्रीमाताजी से कहा कि मेरा भजन यहां भी सिद्ध नहीं होगा, यद्यपि यह स्थान स्वतंत्र और वस्ती से एक ओर है, इस लिये मैं ऐकान्तिक स्थान वन में खोजने को जाता हूं, ऐसे कह कर अरण्य की ओर चले, तौ कारा फुरद्दा (कारी पुल) के निकट फुलैली नामक नहर के तट पै बनी बनाई कुटी दृष्टि आई और मन को भाई [वह कुटी आजकल "हीराबाद" नामक नई वस्ती बसने के ओर और भी नई वस्ती बस जाने के कारण वस्ती के सन्निकट है] उस कुटी पै रात्रि को अंदाज २॥–३ बजे जाते, दिन भर निवास कर फिर रात्रि को ९ बजे अंदाज घर में लौटके आते, शरीर निर्वाह के लिये श्रीमाताजी को कहा कि जो कोई सीधा सामिग्री लावै, उससे एक दिन के लिये लेना, शेष लौटाय देना, उसमें भी योग्यायोग्य का विचार करना। हृषिकेश तौ प्रभु हैं ही, उनकी प्रेरणा से निर्वाह सुख पूर्वक होता रहा। एक दिन एक मजूरनि सामिग्री लाई, श्रीमाताजी ने पूछा कि कौन के घर का है? उसने कहा कि मुझे पता नहीं, एक बालक जो बाहिर खड़ा है, वो मुझको लिवाय लाया है, यों कह कर कहा कि मैं उस बालक से पूछती हूं, ऐसे कहती हुई गई सो अब तक लौटती है, वह कौन थी? इसका समाधान भावुक सज्जन अपने सुहृदय से आपही करें। उस दिन श्रीमाताजी ने उस सीधे से पाक नहीं बनाया, जब आप पधारे सब वृतान्त निवेदन किया, आप सुनकर क्षणिक ध्यानावस्थित होकर कहा भले रसोई त्यार करौ।

अन्तःकरण में मल विक्षेप और आवर्ण इनके निवृत्यर्थ कर्म उपासन और ज्ञान ये तीन साधन वेदविहित हैं (योग इन्हीं के अन्तरगत माना है) आपने क्रमानुसार करके यथेष्ट परमानन्द पद पाया और सर्व साधारण जन को स्पष्ट लखाया कि क्रम बिना यथेष्ट लाभ होना असम्भव है। यह प्रसंग अति विस्तृत,सदुपदेश जनक, और आवश्यकीय है, किन्तु विस्तार भय से यहां रुकावट हो रही है। इस अवसर में आपने जो तपश्चर्या मन इन्द्रियों के निरोधार्थ की है, वह अकथनीय है, अष्टप्रहरमें प्रसाद पाने का तो नियम ही था, किन्तु सो भी रूखा-सूखा केवल क्षुधानिवृत्यर्थ और साधन में निर्विघ्नतार्थ ही आपका अति अल्प आहार था। जैसे कबीरजी के वचन–"कबीर भूख है कूकरी-करत भजन में

भग। याको टुकड़ा डाल कर-सुमरण करौ निसंग ॥" कुछ काल तो आपने एक दिन प्रसाद न पाकर दूसरे दिन पाना, फिर दो दिन नहीं तीसरे दिन, ऐसे क्रमशः छै दिन नहीं सातवें दिन प्रसाद पाना, और संगही सग मन इन्द्रियों पै पूर्ण सावधानता रखनी कि चंचल होकर विक्षेप न करें तथा यथेष्ट साधन में पगी रहें, तैसे ही शीत, उष्णादि सहन भी आपका अद्वितीय था। यद्यपि आप आन्हिक विधि से कर्म परायण रहते रहे और योग के विविध प्रकार के साधन जैसे कि प्रथम षट्क्रिया वस्तीनेती आदि और हठयोग, लययोग, सहजयोग, राजयोग, खेचरी भूचरी आदि मुद्राएँ धारण कर ज्योति साक्षात्कार आदि अलौकिक चमत्कृतियों का प्रत्यक्षानुभव किया और वेदांत सिद्धान्तानुसार विवेक, वैराग्य, शमदमादि साधनों द्वारा स्वस्वरूपानन्द की निमग्नता प्राप्त की, तथापि आपकी आन्तरीय स्थिति श्रीभगवन्नाम संकीर्तन और स्मर्ण में ही रही। इस प्रकार ऐकान्तिक साधन परायणता के अवसान काल में जो परम आनन्द पद पाया, उसी में आरूढ रह कर दृढ़ाया। नियम है कि "भक्ति करै पाताल में- प्रकट होय आकास। रज्जब तीनों लोक में- छिपै न हरिको दास॥" दो चार प्रेमी सज्जन उस कुटी के उरे चींटीन को चून बूरे से मिला डालने जाते रहे, और सुनते भी रहे कि अमुक स्थल पै एक महात्मा जी विराजते हैं। ऐसे श्रवण कर उत्कण्ठा होती कि दर्शनानन्द और सतसगानन्द प्राप्त करें। ऐसे चिरकाल वीत गया, किन्तु वहाँ पहुचने नहीं पाये, इसका कारण गुप्त है, सो यह कि आपको उस अवसर ऐकान्तिक आनन्द प्राप्त करना था, इस लिये आपका सर्व प्रकारेण योगक्षेम सर्वान्तरयामी श्री प्रभु को करना ही था, तौ उन परम कृपानिधान श्रीहरि ने उन प्रेमी जनों के मन में उस समय ऐसा ही कोई प्रवल सकल्पोदय कर देते, जिस करके वहाँ जाने न पावें। अन्त में जब आप जिस परम अलौकिक अद्वितीय सरस आनन्द प्राप्त्यर्थ निवृत्ति परायण होकर श्री प्रभुभजन के तत्पर हुये श्रीप्रभु कृपया वह मनोरथ आपका सिद्ध हुआ और साथ ही आपको आज्ञा हुई कि अब क्लिष्ट साधनों को त्याग के सहज स्मरण ध्यानादि में अनुराग कर और अपर जीवों को अधिकार अनुसार उपदेश द्वारा उनका श्रेय कर आज्ञानुसार आप सहजवृति पै रहै और वे प्रेमी भक्तजन भी आय पहुचे दर्शन व वचनामृत पानकर परम सन्तोषित हुये। उस दिनसे प्रेमी पुरुषों का आना आरम्भ हुआ और उन्होंने सविनय प्रार्थना की कि हे प्रभो! अस्मदादि जीव जो कलि करके ग्रस्त हैं, उनपर आप जैसे सत्पुरुष ही अनुग्रह करते हैं, विना आपके हमारी निश्चय दुर्गति है, आपने सहज ही उन प्रार्थक प्रेमीन की प्रार्थना स्वीकार कर ली। उन प्रेमीजनों ने वस्ती में एक स्थान पै विराजमान किया (तथापि आप उस कुटी पै नित्य ही प्रातः और सायङ्काल ऐकान्तिक आनन्दानुभव करने पधारते) वस्ती में जब आपने कथा कीर्तन रूप परम अमृत उदारवृत्ति से वर्षाना प्रारम्भ किया, तब से सहस्रों नर नारीन की भीड़ आपके सत्सङ्ग में होने लगी। आप की कथा में या वतसच्छास्त्रीय सिद्धान्तानुसार कर्म, धर्म, योग, ज्ञान और उपासना आदि प्रसङ्ग विस्तृत रूप से वर्णन होते, तथापि मुख्यत्वेन श्रीभगवद्भक्ति का विषय ही वर्णन करना आपका सहज स्वभाव था। जिस विषय को उठाते उसका अनेक शास्त्रों के प्रमाण इतिहास, दृष्टान्त, सिद्धान्त, युक्ति• युक्त और निजानुभव से ऐसा यथावत चित्र वनाय देते, जो हरेक के चित्त में वो चित्र सहज जम जाता। जिसने एक वेर आकर आपकी माधुरी मनहर मूर्ति का दर्शन पाकर आपके सरस मधुरभाव गर्भित

कथामृत का पान किया, उसका चित्त आपकी ओर आकर्षित हुआ और उसके हृदय में अनेक सुसंस्कार उदय हुये। इतना ही नहीं, किन्तु उसके हृदय में उन वचनों को धारण करने की तीव्रोत्कण्ठा होती और धारण कर ऐहिक पारलौकिक सुख का अधिकारी होता, साथ ही उसको यह निश्चय होता कि मैंने चिरकाल सत्संग किया है। ऐसे कितने ही जीव मांस मदिरा को छोड़ कर वैष्णव हुये, कितने मूर्ति पूजा, पितृ श्राद्धादि कर्म और कितने ही तीर्थों के तत्त्व को पूर्णतया जान सश्रद्धा उनमें प्रवृत्त हुये कितने ही ब्रह्मचर्य नीचानुसन्धान धैर्य, क्षमा आदि दैवी गुण धारण करने में समर्थ हुये कितने ही हरि विमुख जीव प्रभु सन्मुख हुये कितने ही सन्त सेवा परायण हुए, कितने ही योग ज्ञानादि साधनों में प्रवृत्त हुये इसी प्रकार स्त्रीवृन्द पतिव्रत धर्म मिश्रित भगवद्भजनादि सत्य धर्म में प्रवृत्त हुईं। यह बात ऐसे महानुभाव के विषय में आश्चर्यप्रद नहीं, कारण कि नियम है, जो वचन स्वयं धारण करके दूसरे को उपदेश करता है, उसके वचन दूसरे पै अवश्य असरकारक होते हैं, किन्तु उसमें भी यदि निस्वार्थताहो। दोनों बात आप में पूर्णतया विद्यमान थीं, इस लिये सहज ही आपके वचनों ने जीवों के हृदय में अपना पूर्ण प्रभाव प्रकटाया, फिर आपका कीर्तन का चमत्कार अलौकिक था, जिस समय आप गाते उस समय स्नेहाश्रु टपकते और सुनने वाले स्नेहावेशमें आजाते, वज्र हृदय भी मोम समान द्रवीभूत होते तात्कालीन उत्तरदाता तो आप एक ही थे, जिस प्रकार की शंकाकी और उत्तर मिला, सो भी कैसा कि उस शंका के साथ और भी अनेक शंकाएँ निवृत्त हो जातीं. इसलिये कैई नास्तिक आस्तिक होगये। हैदराबाद (सिंध) में श्रीमद्भागवत सप्ताह परायण का सन्मान आपने ऐसा बढ़ाया, जो अकथनीय है। अभिप्राय यह कि सर्व प्रकारेण सनातन धर्म के तो सुदृढ़ स्तम्भ रूप थे, यद्यपि प्रवृत्ति बहुत बढ़ गई, तथापि आप अपनो निवृत्ति काल की स्थिति से किंचिन्मात्र भी च्युत नहीं हुये यह आपका सिद्धान्त रहा कि कनक–कामनी–प्रभुता इन तीन विषयों से जो न ठगाया उसने श्री प्रभुको सहज ही पाया। इस सिद्धान्त पै आप प्रवृत्ति काल में भी पूर्णतया सुदृढ़ रहे। कनक (द्रव्यादि पदार्थों का लोभ)के विषय में आपका नियम रहा कि द्रव्यादि पदार्थ संग्रह नहीं करना। यद्यपि द्रव्य सरिता प्रवाहवत् आता था, किंतु संग्रह नहीं किया कोई भी याचक किसी भी प्रकार की कामना धरके आता, तो पूर्ण मनोरथ होकर जाता, कामिनी का विषय स्वस्त्री में भी केवल प्रजार्थ माना सो भी प्रवृत्ति काल में आपने गृहस्थ धर्म को स्वीकार किया। जिस दिन पुत्र जन्म हुआ, उसी दिन आपने निज मन से वानप्रस्त धर्म को धारण कर लिया। यद्यपि उस बालक ने छोटी अवस्था में इस असार संसार को त्याग दिया, किंतु आपने उस वानप्रस्थ धर्म का अन्त तक निर्वाह किया। प्रभुता (बड़ाई) के विषय में भी आपका यह सहज सभाव था कि दीन, गरीब अनाथ, रोगी कोई भी जाति का हो, उसका सर्व प्रकार से संरक्षण करते ऐसेनके लिये तो प्राण रूप थे तथा साधु ब्राह्मणों को सब प्रकार से सन्मान देते थे। इन तीन विषयों के परिहारार्थ इनके स्थान पै क्रमशः संतोष शील (ब्रह्मचर्य) निर्मानता को धारण करनेका अचल ध्यान रखते। यह तीनों गुण जहाँ जहाँ चरितार्थ हुये हैं, वे प्रसंग बहुत बड़े हैं, इसलिये यहाँ उद्धृत नहीं किये, किंतु इतना लिखे बिना लेखनी नहीं रुक सक्ती कि सन्तोषशील निर्मानता के मानों सरूप ही थे। ऐसी ही करुणा, क्षमा, धैर्य, उपकार उदारतादि दैवी गुण तो आपके रोम रोम में बसे हुये थे। ये सब जहां जहां चरितार्थ हुये हैं, वे प्रसंग बृहद् हैं, इस लिये यहां उल्लेख नहीं किये, ऐसेही आपने सिंध के शिकारपुर सक्खर

बड़े नगर तथा छोटे ग्रामोंमें भी सद्धर्म और भगवद्भक्ति का प्रचारकर जीवोंको कृतार्थ किया, इस प्रकार प्रवृत्ति में निष्काम वृत्ति से रहकर अनेक जीवों को श्रीभगवत् सन्मुख किया, तत्पश्चात कराल कलि काल की दुर्घटनाओं को देख कर निज इच्छानुसार जीवों का श्रेय न देख कर पूर्व कालीन सर्वथा ऐकान्तिक आनन्दक स्मरण कर और एक गुप्त हेतु (जो आगे प्रकट होजायगा) को विचार कर प्रवृत्ति से निवृत हुये। इस समय आपको प्रवृत्ति त्याग में बृहत्श्रम करना पड़ा, कारण कि जिन जिन जीवों पै आपने अनुग्रह किया था वे आप बिना निज को अनाथ जान आपके निकट रोय रोय के पुकारते और उनको धैर्य पूर्वक समझा बुझा कर अन्त में कहते कि जिसने आपके ऊपर अनुग्रह किया था वो अब नहीं रहा, अब तो जैसे आप श्रीप्रभु प्राप्त्यर्थ श्रीहरिभक्त महानुभावों के खोज में हैं, तैसे ही मैं भी हूं, इस प्रकार उत्तर दे टालते रहते तथापि प्रथम जैसी सर्वथा निवृत्तिनहीं भई, कोई न कोई आय ही जाते तथा आपका सुयश प्रदेशों में भी पहुँचा हुआ था, तो वह प्रेमीजन दर्शनानन्द व सत्संगानन्दार्थ आते थे, तो उनको कौन रोक सके (इस अवसर में गृह फुलैली रोड पै और कुटी फुलैली के तीर पै आगा के ठंडे में) किन्तु आप ऐसे सुदृढ़ नियम से रहने लगे कि कि अकस्मात् ही दूसरों को दर्शन तक का सुअवसर प्राप्त हो, कभी कभी आप कुटी में भी अहर्निशि निवास करते रहे। गुण ग्राहकता तो आप में असीम थी (यह बात श्रीकृष्णायन प्रथम द्वार-प्रथम सोपान में श्रीमुख वचनों से भी स्पष्ट है) आरम्भ ही से यह सहज स्वभाव था कि कोई महात्मा जी का सुयश सुनते, तो स्वयं सत्संगानन्द प्राप्त्यर्थ जाते, तैसे ही आपका सुयश सुन कर अच्छे अच्छे महत्पुरुष सन्त पधारते, आप उन महानुभावों को निज से भी अधिक सन्मान देकर वचन विलास का अलभ्य लाभ प्राप्त कराते, तथापि यह उत्कण्ठा सदैव बनी रहती कि कोई अलौकिक श्रीप्रभु के पूर्ण कृपापात्र महानुभाव के दर्शन और कृपा प्राप्त हो यह उत्कण्ठा बढ़ती बढ़ती तीव्र तरता को पहुँची शरीर रूप हो गया, उदासीनता बढ़ गई, मैं इस अवस्था का वर्णन करने में अशक्त हूँ, तथापि यहाँ आवश्यकता जान दिग्दर्शन कराना उचित समझता हूँ (इन दिनों आप कुटी में निवास करते रहे) अब अन्तिम (अर्थात् जिस हेतु विरह हो रहा था उसके मिलने वाला) दिन प्रातःकाल से ही आपके नेत्रों में विरहाश्रुधारा, परमोदासीनता आदि चिन्ह प्रगट होरहे थे। उसी चिन्तवन में आहारकी तो क्या चली पानी तक की नहीं सूझी। कोई कोई समय हाय परम कृपामयी श्रीगोपीश्वरी अब दर्शन दीजिये अब कृपा कीजिये, ऐसे अनेक महा विरह वन्त शब्द मुखारविन्दसे कभी समझ में आवे कभी नहीं भी आवे, इस प्रकार से निकलते रहे। ऐसी दशा में दिनभर व्यतीत हुआ सायंकाल बीता, रात्री आई- आपने कमरे के किवाड़ बन्द कर लिये। दूसरे दिन प्रातःकाल कपाट खोलकर बाहिर पधारे उस समय का आह्लाद और प्रफुल्लित वदनारविंद मेरे नेत्रों के सामने यद्यपि पूर्ण रूप से दीख रहे हैं, लिख नहीं सकता कि कितना आह्लाद था, तत्पश्चात मैंने दीन भाव से अति नम्र हो आग्रह पूर्वक आपसे विनयान्वित होकर कहा हे दीनवत्सल प्रभो ! शिष्य को श्रीगुरुदेव कृपा करके बिना प्रश्न किये भी गुप्त भेद बताते हैं, मैं तो शुद्ध भाव से पूछता हूँ कि इतने दिन आपको विरह अवस्था क्यों, कल की अवस्था ने तो मुझे भी मानो विरही बना दिया था और वह असह्य हो गया था और आज अमित आह्लाद क्यों,

आपने अपना ज्ञान अनुग्रह करके सब गुप्त भेद प्रकट किया, वह विस्तृत रूप से इस स्थान पै प्रकट करने की आवश्यकता न मानकर केवल इतना ही प्रकट करता हूँ कि श्रीराधाकृष्ण की प्यारी सखी गोपीश्वरी ने आपको अपना जान प्रिय प्यारी की आज्ञा मान आपको अपनाय के गुप्त रहस्य लखाया (श्रीगोपीश्वरीजी का स्वरूपज्ञान विशेष रूप से स्वयं श्रीमुख से श्रीकृष्णायन के प्रथम द्वार, चतुर्थ सोपान में वर्णन किया है) प्रथम तो केवल श्रीकृष्ण प्रेम रहा, अब युगल श्रीराधाकृष्ण के स्नेह का समुद्र उमड़ा, किन्तु साथ ही इन दिनों में इस बात पै पूर्ण दृष्टि रखते कि यद्यपि सब साधनों में स्नेह जैसा कोई भी साधन नहीं; किन्तु ऐसे स्नेह से भी उस स्नेह का छिपाना अत्यन्त बलवत्तर है, सो निज स्नेह का छिपाने का पूर्ण ध्यान रखते, किन्तु छिपे कैसे "चहै छिपाना प्रेम को, करकर कोटि उपाय। तद्यपि ज़ालिम जानिये, नयनन झलके आय॥" कभी कभी नाम ध्वनि करते करते नेत्राश्रु टपकाते, विदेह हो जाते, अब श्रीराधाकृष्ण के लीला गान की तीव्रेच्छा उत्पन्न हुई। थोड़े ही दिनों में आपको स्वप्नादेश हुआ। यह प्रसंग भूमिका में दिखाया है, इसलिये यहां आवश्यकता न जान कर नहीं लिखा। चैत्र रामनवमी रविवार सं० १९७४ में श्रीकृष्णायन समाप्त किया और चैत्र शुक्ल त्रयोदशी गुरुवार दिन के ११ बजे श्रीधाम प्रयाण किया। धाम प्रयाण की गाथा अतिशय भावगर्भित है, किन्तु साथ ही विरहजन्य दुःखोद्भव कारक भी है और लेख भी विस्तार भाव को प्राप्त होगा, इसलिये हस्तगत लेखनी यहां ही ठहर गई।

॥ इत्यलं सुज्ञवृन्देषु ॥

लिखी जीवनी निज मती, अजन गाँव के माँहि।
पढ़ैं, विचारैं, उर धरैं, श्यामसनेही ताँहि॥

निवेदक—

श्यामस्नेही श्यामाशरण।

श्रीकृष्णायन महात्म्य

सवैयाष्टक !

श्रीकृष्णायन ग्रन्थ अनूपम है श्रुति सम्मत कोमल बानी।
व्यास मुनी मतके अनुसार तथा सब शास्त्रन को मत आनी॥
श्रीयुत स्वामि बसंत प्रकास कियो हरिदासन को हित जानी।
जे इसको पढ़िहैं सुनिहैं नित ते जन गोविंद के प्रिय प्रानी॥ १॥
श्री कृष्णायन को जु महत्त्व उचारन में सकुचात है बानी।
शेष गनेश प्रजेश गिरा करि जो न समस्त सु जात बखानी॥
जो इसको रुचि से पढ़िहैं तिनके कलुपान की जात निशानी।
ते जन गोविंद के प्रिय हैं वर देत तिनैं सुप्रिया महारानी॥२॥
श्रीकृष्णायनको जु पढ़ैं तिनको विषयानते होत गिलानी।
श्रीरसिकेश्वरकी भगती अनुपायनि होय हिये सुखदानी॥
ऐसो को पाप धरापर है इसके जु सुनै नहिं होत है हानी।
गोविंद के वह पूरण प्रेम में होत है मग्न स्वरूप से ज्ञानी॥
श्रीकृष्णायन को जु पढैं नित कृष्ण परायन होत अकामी।
तापै कृपा करिहैं नँदनंदन जो परिपूरण अन्तरयामी॥
गोपदसों सु तरैं भवसागर होत नहीं तिनकी मति वामी।
गोविंद अन्तर बाहिर दीखत भेद बिना तिनको जग स्वामी॥
श्रीकृष्णायन को पढ़ते नित सादर श्रीमुख शंभु भवानी।
नारद व्यास मुनीश्वर श्रीशुक आन ऋषीश्वर जे गुरु ज्ञानी॥
सो अब संत बसंत जु के मुख पंकज से प्रकटी नर बानी।
गोविंद ताहिं मिलै यह ग्रन्थ अहे जन जो भव पूरब दानी॥५॥

श्रीकृष्णायन है फल अमृत जे रस याहि को पीवत प्रानी ।
ते जनमें न मरैं भवमें कबहू तिनके प्रति होत न हानी ॥
श्रीनँदनंदन की भगती प्रकटै हृदि में भुविमें सनमानी ।
गोविंद ताहिं नमो तिनही तिनकी महिमा नहिं जात बखानी ॥६॥
श्रीकृष्णायनके नवद्वार निहारत मोर मती विकसानी ।
जो इनमें विहरै तिनके सम मोद न पावत ब्रह्म विज्ञानी ॥
राधिकाकृष्ण[१] गोलोक[२] वृन्दावन[३] जो गिरि[४] गोपि[५] मधूपुरि[६] भानी॥
द्वारावती[७] बलदाऊ[८] विज्ञान[९] इनैं रटि होत हैं पातक हानी॥७॥
श्रीकृष्णायन के ज्ञ रसज्ञ वही सब तज्ञन के मन भावै ।
याते तजै अन पंथनको यहि ग्रंथ विषे श्रद्धा उर लावै ॥
गोविंद याम सनेहिनको सु अतीव यही मधुरामृत प्यावै ।
जीवत सो सुख संपति संयुत अंत प्रभू पद माहिं समावै॥८॥

दोहा—

कृष्णायन सुनकें त्वरित, हर्यो गयो मन मोर ।
गोविंद जस मन मोर को, हरत जलद घन घोर ॥१॥
संवत ग्रह सागर निधी, निसिनायक रविवार ।
शुभ माधव गोविंद यह, अष्टक रच्यो विचार ॥२॥

इति श्रीकृष्णायन महात्म्य रियासत बिलासपुर निवासी रायकवि गोविंदानन्द कृत
सवैयाष्टक समाप्त ।

श्री कृष्णायन महात्म्य

कवित्त पञ्चक ।

ललित महान रसिकान के मनो हैं प्रान,
संतन सुजानन को सुतरु समान है ।
ज्ञान भक्ति वर्नन में कृष्णाजी के चर्णन में,
चित दृढ़ कर्नन में ऐसो नाहिं आन है ॥
भव निधि तारन में धर्महु के धारन में,
किल्विष प्रहारन में परम शक्तिमान है ।
गोविंद ऐसो कृष्णायन रसायन ऐतो सन्त,
श्रीवसन्तजी को धर्यो धरापै निशान है ॥१॥
रसिकन के रंजन को संसै विभंजन को,
शोक मोह गंजन को मानो शिव आन है ।
मन्दता निवारन को चंदता विस्तारन को,
द्वंदता निकारन को शूरता महान है ॥
कहत गुविंद श्रेय करता में शक्र सम,
वक्ता सुधारन में कृष्णा सों सुजान है ।
श्रीमत वसंत कृत जानौ कृष्णायन अहै,
तानो मनो भूतल पै सुयश वितान है ॥२॥
अब श्रीकृष्णायन की विधिको प्रकार कहूं,
जाते होत सद्य सिद्धि कारज विशेष है ॥
शरद वसन्त में अनन्त फल होत सुने,
नवदिन माहीं करै पूरण अशेष है ।
मंगल के हेत शुभ मंडप बनाय तहँ,
कलश धराय के मनाय के गणेश है ॥

* श्रीराधावल्लभविहारिणेनमः *

श्रीवसन्त कृष्णायन

का

प्रथम श्रीराधाकृष्ण द्वार

जिसमें

सोपान (१) मङ्गलाचरण मातृपित्रादि, गुरु, भक्त, ब्रह्मकुल, साधु सत्संगी वन्दन (२) ब्रजमण्डल वन्दन (३) द्वारिका वन्दन (४) गोपीश्वरी वन्दन, सनत्कुमार संहितोद्धृत गोपीश्वरी प्रसंग, ललिता श्रीराधा सम्वाद, गोपीश्वरी प्राकट्य कथा (५) शिवाशिव वन्दन, राधाकृष्ण तत्त्व, प्रभाव एवं नाम महात्म्य (६) राधाकृष्णनामार्थ महात्म्य (७) कृष्ण प्रभुता एवं परात्परत्व (८) कृष्णतत्व (९) भक्ति भक्त गुणरूप (१०) पञ्चब्रह्म स्वरूप, ब्रह्म प्राप्ति साधन, लोमश कथा, ज्ञान कर्म से भक्ति श्रेष्ठ, नवधा भक्ति, शुष्क ज्ञान, अष्टांगयोग, भक्त दशा, सेवा महात्म्य, अजापाल इतिहास, भक्ति साधन, साधनान्तराय निवारण, प्रार्थना प्रकार एवं प्रार्थना महिमा, प्रेम प्रशंसा, भक्ति तत्व फल स्तुति, इत्यादि विषय वर्णित हैं।

रचयिता—

श्रीगोपीश्वरीस्वरूप सदाशिवानुग्रहानुरक्त, श्रीश्यामसनेही-सृनि संस्थापक सिन्ध हैदराबाद निवासी

श्रीयुत वसन्तरामजी महाराज।

प्रकाशक—

श्यामसनेही श्यामाशरण

अकतराई गली, हैदराबाद (सिन्ध)

सम्वत् १९९२ वि०।

मंडप बनाय के सिंहासन धराय के,
सुगुरुन बिठाय गाथा सुनिये हमेश है ॥३॥
प्रात उठि ब्राह्मी महूर्त में प्रात कृत्य,
संध्या आदि नित्य कृत्य करके अशेष है।
तब प्रारम्भ करै श्रीकृष्णायन को,
घड़ी दो विश्रामें मध्य आवै जो दिनेश है ॥
कहत गोविंद अलसावे ना श्रवण समै,
तब उठ जावै दिन याम जब शेष है।
एकबार खावै भली भांति समुझावै गुरु,
ऐसी भांति श्रोता सुनै कथा को हमेश है ॥४॥
पुनरष्टोत्तर सहस्र मन्त्र से होम करै,
पायस घृतादि खंड तुलसी दलान से।
तद्दशांस तर्पण दशांस ताते मार्जन त्यों,
तद्दशांस भोजन जीमावैं ब्राह्मणान से ॥
श्रद्धा युत दक्षिणा दिवावै पद शीश नावै,
वाचकहिं तुष्ट करै अति सनमान से।
निरअभिमान ह्वै कल्यान काज आत्महू के,
भक्ति वरदान मांगे कृष्ण ब्रज प्रान से ॥५॥

दोहा—

यहि विधि कृष्णायन पढ़ै, श्रद्धा अति उरधार।
प्रेम लक्षणा भक्ति तिहँ, देत युगल सरकार ॥१॥
यह कवित्त पंचक पढ़ै, कृष्णायन के अंत।
ताके मन के दोष सब, हरैं कृष्ण श्री कंत ॥२॥

इति श्री कृष्णायन महात्म्य रियासत विलासपुर निवासी राय कवि गोविन्दानन्द कृत कवित्त पञ्चक समाप्त।

* श्रीराधारमणविहारिणेनमः *

श्रीवसन्त कृष्णायन

का

प्रथम श्रीराधाकृष्ण द्वार

जिसमें

सोपान (१) मङ्गलाचरण मातृपित्रादि, गुरु, भक्त, ब्रह्मकुल, साधु सत्संगी वन्दन (२) ब्रजमण्डल वन्दन (३) द्वारिका वन्दन (४) गोपीश्वरी वन्दन, सनत्कुमार संहितोद्धृत गोपीश्वरी प्रसंग, ललिता श्रीराधा सम्वाद, गोपीश्वरी प्राकट्य कथा (५) शिवाशिव वन्दन, राधा-कृष्ण तत्त्व, प्रभाव एवं नाम महात्म्य (६) राधाकृष्ण नामार्थ महात्म्य (७) कृष्ण प्रभुता एवं परात्परत्व (८) कृष्ण तत्व (९) भक्ति भक्त गुणरूप (१०) पञ्चब्रह्म स्वरूप, ब्रह्म प्राप्ति साधन, लोमश कथा, ज्ञान कर्म से भक्ति श्रेष्ठ, नवधा भक्ति, शुष्क ज्ञान, अष्टांगयोग, भक्त दशा, सेवा महात्म्य, अजापाल इतिहास, भक्ति साधन, साधनान्तराय निवारण, प्रार्थना प्रकार एवं प्रार्थना महिमा, प्रेम प्रशंसा, भक्ति तत्व फल स्तुति, इत्यादि विषय वर्णित हैं ।

रचयिता—

श्रीगोपीश्वरीस्वरूप सदाशिवानुग्रहानुरक्त, श्रीश्यामस्नेही-स्मृति संस्थापक सिन्ध हैदराबाद निवासी

श्रीयुत वसन्तरामजी महाराज ।

प्रकाशक—

श्यामस्नेही श्यामाशरण

अकतराई गली, हैदराबाद (सिन्ध)

सम्वत् १९९२ वि० ।

मंडप बनाय के सिंहासन धराय के,
सुगुरुन बिठाय गाथा सुनिये हमेश है ॥३॥
प्रात उठि ब्राह्मी महूर्त में प्रात कृत्य,
संध्या आदि नित्य कृत्य करके अशेष है।
तब प्रारम्भ करै श्रीकृष्णायन को,
घड़ी दो विश्रामें मध्य आवै जो दिनेश है॥
कहत गोविंद अलसावै ना श्रवण समै,
तब उठ जावैं दिन याम जब शेष है।
एकबार खावै भली भांति समुझावै गुरु,
ऐसी भांति श्रोता सुनै कथा को हमेश है ॥४॥
पुनरष्टोत्तर सहस्र मन्त्र से होम करै,
पायस घृतादि खंड तुलसी दलान से।
तद्दशांस तर्पण दशांस ताते मार्जन त्यों,
तद्दशांस भोजन जीमावैं ब्राह्मणान से ॥
श्रद्धा युत दक्षिणा दिवावै पद शीश नावै,
वाचकहिं तुष्ट करै अति सनमान से।
निरअभिमान ह्वै कल्यान काज आत्महू के,
भक्ति वरदान मांगे कृष्ण ब्रज प्रान से ॥५॥

दोहा—

यहि विधि कृष्णायन पढ़ै, श्रद्धा अति उरधार।
प्रेम लक्षणा भक्ति तिहँ, देत युगल सरकार ॥१॥
यह कवित्त पंचक पढ़ै, कृष्णायन के अंत।
ताके मन के दोष सब, हरें कृष्ण श्री कंत ॥२॥

इति श्री कृष्णायन महात्म्य रियासत बिलासपुर निवासी राय कवि गोविन्दानन्द कृत कवित्त पञ्चक समाप्त।

* श्रीराधावसन्तविहारिणेनमः *

श्रीवसन्त कृष्णायन

का

प्रथम श्रीराधाकृष्ण द्वार

जिसमें

सोपान (१) मङ्गलाचरण मातृपित्रादि, गुरु, भक्त, ब्रह्मकुल, साधु सत्संगी वन्दन (२) व्रजमण्डल वन्दन (३) द्वारिका वन्दन (४) गोपीश्वरी वन्दन, सनत्कुमार संहितोद्धृत गोपीश्वरी प्रसंग, ललिता श्रीराधा सम्वाद, गोपीश्वरी प्राकट्य कथा (५) शिवाशिव वन्दन, राधा-कृष्ण तत्व, प्रभाव एवं नाम महात्म्य (६) राधाकृष्ण नामार्थ महात्म्य (७) कृष्ण प्रभुता एवं परात्परत्व (८) कृष्ण तत्व (९) भक्ति भक्त गुणरूप (१०) परब्रह्म स्वरूप, ब्रह्म प्राप्ति साधन, लोमश कथा, ज्ञान कर्म से भक्ति श्रेष्ठ, नवधा भक्ति, शुष्क ज्ञान, अष्टांगयोग, भक्त दशा, सेवा महात्म्य, अजापाल इतिहास, भक्ति साधन, साधनान्तराय निवारण, प्रार्थना प्रकार एवं प्रार्थना महिमा, प्रेम प्रशंसा, भक्ति तत्व फल स्तुति, इत्यादि विषय वर्णित हैं ।

रचयिता—

श्रीगोपीश्वरीस्वरूप सदाशिवानुग्रहानुरक्त, श्रीश्यामस्नेही-सृनि संस्थापक सिन्ध हैदराबाद निवासी

श्रीयुत वसन्तरामजी महाराज ।

प्रकाशक—

श्यामस्नेही श्यामाशरण

अकतराई गली, हैदराबाद (सिन्ध)

सम्वत् १९९२ वि० ।

नाम-धुनि

जय जय नीलवरण घनश्याम ।
जय जय भक्तन पूरण काम ॥
जय जय सुन्दर श्यामाश्याम ।
जय जय श्रीवृन्दावन धाम ॥
जय जय गोवर्द्धन धारी ।
जय जय सुरपति मदहारी ॥
जय जय मुरलीधर घनश्याम ।
जय जय भक्तन पूरण काम ॥
जय जय माधव दीनदयाल ।
जय जय मोहन यशुमतिलाल ॥
जय जय मुनिजन मनहारी ।
जय जय सन्तन सुखकारी ॥
जय जय श्रीगोविन्द गोपाल ।
जय जय गौवन के रक्षपाल ॥
जय जय राधावल्लभलाल ।
जय जय रसिकन के प्रतिपाल ॥
जय जय राधारमण रसाल ।
जय जय नन्दराय के लाल ॥

* दोहा *

वृन्दावन में राजहीं, गौर श्याम सुखधाम।
दम्पति छवि पर वारिये, कोटि कोटि रति काम॥

॥ श्रीराधावसन्तविहारिणेनमः ॥

अथ

* श्रीवसन्तकृष्णायन प्रारम्भ *

॥ प्रथम श्रीराधाकृष्णद्वार ॥

प्रथम सोपान

मंगलाचरण

भाले श्रीर्यस्य दीर्घे सुनयन अरुणे मूर्ध्नि कापर्द शोभा ।
प्रोत्फुल्लाम्भोज वक्त्रो मुखरित वदनो यस्य कण्ठे सुमाला ॥
भ्राजद्व्याघ्राम्बरो यः स्फटिक मणिनिभो भूति भूषा त्रिशूली ।
तं नौमि श्रीमहेशं रसिकवर कथां प्रेरितो येन गातुम् ॥ १ ॥

जिनके ललाट में तिलक है, विशाल और अरुण सुन्दर नेत्र हैं, शिरपै जटाजूट की शोभा है, प्रफुलित कमल समान वदन है, नामोच्चार मुखारविन्द है, कंठ में सुन्दर माला सुशोभित है, जिनका व्याघ्राम्बर शोभायमान है, स्फटिक मणि के सदृश देहकांति है, भस्म से अलंकृत देह है, त्रिशूल हाथ में धारन किया हुआ है, ऐसे श्री (योगीरूप) महादेव को नमस्कार करता हूँ कि, जिनने रसिकवर (श्रीराधाकृष्ण) के कथा का गान करने के लिये प्रेरणा किया ॥ १ ॥

भक्तिर्भक्तश्च भगवान् गुरुश्चेमे समाख्यया ।
भिन्ना न वस्तुतो येषां नमनाद्विघ्न नाशनम् ॥ २ ॥

भक्ति, भक्त, भगवन्त और गुरू ऐसे चार नाम से भिन्न भिन्न हैं, किन्तु वस्तुत एकही हैं और इनको नमस्कार करने से विघ्नों के नाश होइ हैं ॥ २ ॥

श्री वृन्दावने भानुजा तट भुवि स्वैरं चरन्तं मुदा ।
सौदामिन्यभिरामयाति प्रियया श्रीराधयालङ्कृतम् ॥
नव्याम्भोधर सुन्दरं हरिततां यातं जगन्मोहनम् ।
श्रीकृष्णं रसरूप प्रेम निचयं वन्दे व्रजेन्द्रात्मजम् ॥ ३ ॥

श्री वृन्दावन में यमुना तट की भूमि पै बिजुरी से भी मनोहर और अतिशय प्रियतमा श्रीराधिकाजी करकें शोभायमान (गरबाहीं दिये हुये) इच्छा पूर्वक आनन्द से विचरने भये और नवीन मेघ सरीखे सुन्दर श्याम (अतएव श्रीप्रियाजी की पीतवर्णमयि श्री अंग की कांती श्यामसुन्दर श्री विग्रह के ऊपरें पड़ने से) हरितता को प्राप्त भये और जगत भर के मोहन करने वाले रसरूप तथा प्रेम के निधि (खज़ाने) ऐसे श्री व्रजराज कुमार श्रीकृष्ण को वन्दन करूँ हूँ ॥ ३ ॥

श्री वृन्दावन धाम्नि यामुन तटे वंशीवटान्तिस्थिताम् ।
राधा माधवयोर्निकुञ्जसदने सेवा परां सर्वदा ॥
भक्तानुग्रह तत्परां सखिजनै संसेव्यमानां मुदा ।
वन्देहं रसिकाग्रणीं प्रिय सखीं गोपीश्वरीं सुन्दरीम् ॥ ४ ॥

श्री वृन्दावन धाम में यमुना के तट वंशी वट के निकट विराजमान और निकुञ्ज सदन में श्रीराधामाधव के सदा सेवा में परायन भक्तों के ऊपर अनुग्रह करने में तत्पर और उनकी अनुगामिनी सखी जन करकें सानंद सेवित ऐसी रसिकों में अग्रणी और प्रिया प्रियतम की प्यारी सखी जो गोपीश्वरी हैं, उन्हें मैं वन्दन करूँ हूँ ॥ ४ ॥

नानाविधि पुराणेभ्यश्चोद्धृतं किञ्चिदन्यतः ।
कृष्णायनेहि यत्प्रोक्तं प्रेम भक्ति विवृद्धये ॥ ५ ॥
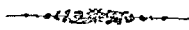
दो॰ प्रथमहिं प्रणमत सुखद अति, प्रकृति पुरुष पितु मात।
वंश परस्पर सवन अपि, अत्रि अनुसुया जात ॥१॥
जिनके गृह मैं तीन वपु, ब्रह्मा विष्णु महेश।
शशि[1] दुर्वासा दत्त[2] हो, भये प्रकट देवेश ॥२॥
तिहँ मुनी अत्री मूलते, प्रकट्यो गोत्र हमार।
तिन सव के पद वन्दहूँ, जिनते वंशोद्धार ॥३॥

प्रथम गुरू पितु मात जु गायउ ❀ पंच तत्त्व तन जिनतें पायउ।
जिनकी कृपा दृष्टि वपु येहीं ❀ पालन पोषन भो सुखते हीं ॥
तिन उपकार नस कहुँ उतारी ❀ यदि शत[3] वर्ष सेव तिन धारी।
प्रति उपकार न तिन मैं करिहौं ❀ अयुतवर्ष[4] लगयदि तन धरिहौं ॥
तिहँ पितु वाल अवस्था तेहीं ❀ निजगृह ठाकुर पूजा मेहीं।
मोहिं विठाय आप सिखरावैं ❀ ठाकुर पूजा माहिं लगावैं ॥
यैाम[5] रात्रि रह उठ पितु मोरा ❀ हरि कीर्तन मंन देत न थोरा।
मोहिं जग य भजन हरि करते ❀ यह उपकार जु मोपै धरते ॥
अति आभार पिता का सोऊ ❀ सहस्र जन्म सेवा तिन होऊ।
तद्यपि उर्ऋणि[6] होत मैं नाहीं ❀ यह सम्मति[7] मोमन दृढ़ आहीं ॥

दो॰ तिहँ प्रणाम मैं करहुँ नित, तन भुविधर अष्टंग।
जिहँ के करन प्रणामते, होय अविद्या भंग ॥४॥
अस पितुसम मम मातु भी, कीर्तन कृष्ण सिखाय।
तिन दोउन वर मातु पितु, नमहुँ माथ भुविलाय ॥५॥
पुन प्रणाम मैं करत हूं, नारिन सह वड भाइ।
पालन किय पितुमातु सम, अरु किय भजन सहाइ ॥६॥

---

१ चन्द्रमा २ दत्तात्रेय ३ सौ ४ दश सहस्र ५ प्रहर ६ कर्ज रहित ७ राय

अब वन्दौं गुरु पाद युग, नर नारायण रूप।
ध्यान ज्ञान प्रद मोक्ष प्रद, भक्ति विद्यप्रद भूप ॥७॥

गुरु पद पंकज रज उर धारौं ❀ जिहँ प्रताप तम पटल विदारौं।
प्रकटे ज्ञान भान हिय माहीं ❀ सूजहिं कृष्ण चरित पुन ताहीं॥
पुन पुन वन्दौं तेहि परागा ❀ धार हिये निज अति अनुरागा।
नमहुँ सदा तिन गुरुजन को ही ❀ विद्या गुण सीखे जिन सो ही॥
सार वचन जग जिनते पाये ❀ ते मम शिव समान गुरुराये।
जिनके दूषण भूषण जाना ❀ जिहँ जानत मम भो कल्याना॥
पुन तिन गुन ग्राहक मैं भयऊ ❀ ता कारन मन मुदिता लयऊ।
इहु निष्कर्ष प्रकट जग जानै ❀ जे जन जिनके गुनको मानै॥
अरु सुमरै गुण जिहँको जोई ❀ तिहँको तिहँ खिन आनँद होई।
जो दूषन मन अपर विचारै ❀ ताको क्रोध अनल नित जारै॥

दो०ताहित गुण देखे सुने, जिहँ मुख जिहँ जन पाहिं॥
ते गुरु रूप वसन्त सब, वन्दौं तिन पद माहिं॥८॥

सरति प्रणाम करहुँ मुनि भक्ता ❀ वर्तमान गत जे हरि रक्ता।
कियेउ जिन श्रुति स्मृति पुराना ❀ टीका कविता वार्तिक नाना॥
भवतारन हित ते नर रूपा ❀ वास्तव नारायण सम भूपा।
जिन उपकार हेतु तनु धारी ❀ जिनके ग्रंथ सेतु भवँवारी॥
पढ़ौ जु मैं तिन की शुभ वानी ❀ वन्दौं तिन बुधजन गुरु मानी।
पुन प्रणमहुँ अवनी शिर नाई ❀ संत समाज सकल सुखदाई॥
जिनके कथा कीरतन तेही ❀ द्रुत हो बुधजन श्याम सनेही।
जिनकी कथा श्रवण नर करते ❀ पद पद सुनत ब्रह्म सुख परते॥
जिनके कथा कीरतन माहीं ❀ वैकुंठादिक सुख सब आहीं।

१ अज्ञान २ पड़वा ३ रज ४ सिद्धांत ५ अग्नी ६ पूर्व भये हुये ७ संसार समुद्र में ८ शीघ्र

कथा कीरतन को सुख ऐसो ❀ चार पदारथ सुख नहिं तैसो ॥

दो०अस सत्संग समाज को, संतत करहुँ प्रणाम।
जिहँते सब संशय मिटत, मिलत दर्श श्रीश्याम ॥९॥

अब मैं नमहुं ब्रह्मकुल ही को ❀ पुत्र वधू परिकर[1] युत नीको।
जो ईश्वर तनु है भूदेवा[2] ❀ श्रीमुख कह पुन किय तिन सेवा ॥
पूरब कर तप पुण्य जु आयउ ❀ भारत भुवि ब्राह्मण तनु पायउ।
मूरख हो अथवा विद्वाना ❀ कम करे अथवा नहिं ज्ञाना ॥
तदपि ब्रह्म संतान रहाई ❀ तीन वर्ण को पूज्य कहाई।
अब जिनके विद्या नहिं कमा ❀ नहिं हरि भक्ति ज्ञान नहिं धर्मा ॥
जे द्विज[3] अस बहु जन्म नसावैं ❀ ते पुन अन्त जाय पछतावैं।
तद्यपि पूर्व पुण्य लख तिनको ❀ वन्दौं सह श्रद्धा मैं विनको ॥
विद्या पढ़ तप योग जु करहीं ❀ ते त्रयलोक पूज्य द्विज बरहीं।
आप तरे तारैं जग आना[4] ❀ तिन द्विजवरन नमहुँ ममप्राना ॥

दो०नमहुँ साधुजन मात्र को, जे जग संत कहाय।
जे गुरु हो पूजावहीं, अथवा भेष बनाय ॥१०॥

तिनमें साधनयुत जे अहहीं ❀ कर प्रभु भजन परम पद लहहीं।
ते सब पूज्य अहैं त्रयलोका ❀ अपर तरावन हित हैं नौका ॥
जे अब भक्ति न सुकृत करहीं ❀ पूर्व खेप खोइ अवनि[5] विचरहीं।
पाप पुण्य शंका जिन नाहीं ❀ भेष प्रताप पुजावत आहीं ॥
भव भोगन भोगन रुचि जिनकी ❀ पछतावेगी किल[6] मति तिनकी।
तद्यपि तिनको करहुँ प्रणामा ❀ पूर्व भक्ति कर धर वर नामा ॥
तथा नमहुँ मैं जे सतसंगी ❀ बड़भागी ते हरि रँग रंगी।
जिन कर भजन कृष्ण को पायो ❀ निज तन सह निज कुलहु तरायो॥

१ परिवार २ ब्राह्मण ३ ब्राह्मण ४ दूसरों के ५ पृथ्वी ६ निश्चय।

तस पुन अर्ध भजन जिन कीना ❀ योग भ्रष्ट ते पुनि हरि लीना ।
जिनइकादिन इकघड़ि कियभक्ती ❀ तिन पद नमहुँ धार अनुरक्ती ॥

दो०अरु अस जग में कोटि हैं, देखन के नर देह ।
नहिं सत्संग न हरि भजन,नहिं नयननमें नेह ॥११॥

जिन कबहू दुर्लभ तनु पाई ❀ किय सत्संग न हरि गुन गाई ।
निज तारन हित श्रम ना कीना ❀ नर तन व्यर्थ खोय तिन दीना ॥
यदा अपर को कर सतसंगा ❀ तिनको रोक करहिं रस भंगा ।
ईश्वर सतगुरु संत न मानैं ❀ पुनि तिनकी निंदा मुख ठानैं ॥
ज्वर आवै भोजन रुचि जावै ❀ तिम तिन श्री प्रभु भक्ति न भावै ।
अस प्रकार जे जन जग माहीं ❀ कह श्रुति सन्त भार वत आहीं ॥
तद्यपि तिनको करहुँ प्रणामा ❀ अस अभिप्राय लाय उर धामा ।
श्रीप्रभु विमुख पाप पै प्रीती ❀ ते नर सह बहु दुख अस नीती ॥
दुःख विपाक[1] विरति[2] उपजावै ❀ तब हरि भक्ती तिन मन आवै ।
कर हरि राग[3] भाग बड़ पाई ❀ ताहित तिन्हैं नमहुं शिर नाई ॥

दो०अब सब प्रति पुन नमन कर, याचत युगकर[4] जोर ।
युगल सुयश बड़ उदधि[5] सम,गावन मति२थोर ॥१२॥
सो०पूरण कीजे आस, दास जान सुखरास सब ।
कीजै नाहिं निरास, बसंत यही मो विनय अब ॥१॥

॥ इति श्री कृष्णायने श्रीराधाकृष्णद्वारे प्रथम सोपान समाप्त ॥

वन्दहु ब्रजमण्डल चौरासी ❀ जहँ नित केलि करैं रसरासी ।
तामें मथुरा गोकुल दाऊ ❀ तथा कामवन नमहुँ सुभाऊ ॥

१ फल २ वैराग्य ३ प्रेम ४ दो हाथ ५ समुद्र

जहँ विविध विध क्रीड़ा करहीं ❀ राम श्याम भवें-भवें दुख हरहीं ।
वन्दौं गोवर्द्धन गिरिराया ❀ सतत श्याम उर अतिशय भाया ॥
धेनु चरावन मिस कर लीला ❀ लेहिं परम सुख सुख प्रद शीला ।
वन्दहुँ राधाकुण्ड अघारी ❀ न्हावत पावत पर फल चारी ॥
धरहुँ हृदय तिहँ ध्यान पुनीता ❀ वन्दौं पुन पुन भाव विनीता ।
वन्दौं नन्दगाम सुख धामा ❀ कर क्रीड़ा जहँ नित घनश्यामा ॥
वन्दौं श्रीरावल वरसाना ❀ परम रम्य कर कलिमल हाना ।
थल विहार श्रीलाड़िलि जीको ❀ कर कर्षण मन मोहन जीको ॥

दो०वृन्दावन महिमा अकथ, को कवि कह सक ताहिं ।
नित्य अखंडित युगल वर, राजत हैं जिहँ माहिं ॥१३॥

सो०सब विध कर अघ ध्वंस, हंससुता सोहत सरस ॥
नहिं समर्थ अहिवंस, अस प्रशंसा कहन को ॥२॥
धर उर अति अनुराग, पुन पुन सबको वन्दहौं ॥
व्रज वसवेको भाग, इन अनुग्रह मम हो सतत ॥३॥

अब मैं पुन वन्दौं युत नेहा ❀ श्री वृन्दावन रसनिधि गेहा ।
सब बन वर शोभा अति नीकी ❀ निश्चय तपत बुझावत जीकी ॥
विहरत जहँ नित द्वौ रसरूपा ❀ श्यामा श्याम मनोज्ञ अनूपा ।
करत रास रस परम रसीले ❀ सखि परिकर मिल धृत शुभशीले ॥
नित्य विहार मग्न द्वौ रहहीं ❀ रसिक निरख उर आनंद लहहीं ।
वन्दौं वृन्दावन थल जेते ❀ अहें अमित मैं भाखहुँ केते ॥
सब मन हरनी सबकी सोहन ❀ किम नहिं हो जहँ राधा मोहन ।

१ संसार २ उत्पन्न होने वाले ३ निरन्तर ४ पापन को शत्रु ५ श्री यमुना जी ६ नागवंश (शेषजी) ७ सुन्दर ।

जहां सहज रसिकन को संगा ❁ सहज समाज गान रस रंगा ॥
सहज नाम धुनि श्रवणन आवै ❁ सहज रास रस दरसन पावै ।
सहज दरस श्री विग्रह नीको ❁ सहज दरस श्री यमुनाजी को ॥

दो० सहज धामको वास पुन, सहजहि महा प्रसाद ।
सहज दृष्टि श्री युगल की, ताते सहज प्रसाद ॥१४॥

सो० यदि पाकर नर देह, नहिं वृन्दावन दरस किय ॥
नहिं पुन युगल सनेह, वसन्त जन्म अजन्म तिहँ ॥४॥

व्रजमण्डल भुविमण्डल माहीं ❁ महा प्रलय में अपि थिर आहीं ।
वहु पुराण में प्रस्फुट गाई ❁ निज गोलोक अवनि दरसाई ॥
परम दिव्य व्रजरूप वखाना ❁ जड़ जंगम सव दिव्य महाना ।
कर वर तप व्रजवासहिं पावै ❁ बिन तप व्रज में कौन सिधावै ॥
व्रज महिमा सक शेष न गाई ❁ जिहँ प्रशंस प्रभु आप लखाई ।
है विस्तृत वहु ग्रन्थन माहीं ❁ यदि चाहौ देखहु तुम ताहीं ॥
व्रज को भेद सोउ जन जानै ❁ जाको श्रीहरि अपनो मानै ।
संसृति दुख ध्वंसन यदि चाहै ❁ कर व्रजवास विनीत उमाहै ॥
व्रज तनु तज लह श्रीप्रभु धामा ❁ जो परात्पर जहँ श्री श्यामा ।
सव ते पर वह धाम लखायो ❁ शुद्ध सुरसमय रसिकन गायो ॥

दो० जहँ राजत श्री युगलवर, छवि शृंगार स्वरूप ॥
प्राकृति की गति रंच नहिं, चिन्मयि सोह अनूप॥१५॥

सो० ताहित व्रज को वास, शिव विधि आदिक सुर चहत ॥
देखहु करत निवास, गोपेश्वर के नाम शिव ॥५॥

१ कृपा २ जन्म-मरन ३ नाश करन ४ उत्साह से ।

अतिशय पावन कर ब्रजमंडल ❀ राधाकृष्ण विहार सुमंगल ।
योग विराग भक्ति को दाता ❀ पुण्य प्रदेश परम प्रख्याता ॥
नित्य युगल वर प्रीति बढ़ावन ❀ है निसेनि गौलोक चढ़ावन ।
काम क्रोध आदिक बहु चोरा ❀ तिन हित नृप दे दंड अथोरा ॥
कलिमल ध्वंसक गंग समाना ❀ हिमकर सम हन ताप महाना ।
अहे धाम महिमा जस धामी ❀ सकल प्रशंसित तिनमें नामी ॥
अहे धाम धामी प्रकटावन ❀ चतुर भक्त हित है अति पावन ।
ताहित चतुर मनुज बस धामा ❀ चतुर चतुर लह चतुर ललामा ॥
बिना धाम धामी किम पावै ❀ भटक भटक विरथा मर जावै ।
यद्यपि सर्वस्थल बस सोऊ ❀ तद्यपि मुख्यस्थल इक होऊ ॥

दो० हृदयस्थल हरि कहत जस, कहा अन्य थल नाहिं ?
नखतें शिख लग व्यापि सो, मुख्यस्थल उर माहिं॥१८॥

सो० विचरत सबही ठौर, जैसे खग मृग मनुज सब ॥
पै तिन गृह कहुँ और, जहाँ बसत नित युत कुटुंब॥८॥

वन्दौं युगल नाम सम नैना, ❀ जिन बिन मनुज अंध दुख ऐना ।
नर नारायण सम सुखदाई ❀ मात तात वत करन भलाई ॥
रवि शशि सम ध्वंसक तमरासी ❀ राधा कृष्ण नाम रसरासी ।
हृदय सरित पूरक सुख वारी ❀ सावन भादौं सम शुभकारी ॥
जिम दम्पतिसों सकल विहारा ❀ युगल नाम तिम मुद दातारा ।
जापक कृति कारक दिन रैना ❀ सबको सब सुखदायक ऐना ॥
युगल नाम सम युगल स्वरूपा ❀ इच्छित फलप्रद परम अनूपा ।
संत समाज वृक्ष वर माहीं ❀ युगल नाम शुचि द्वै फल आहीं ॥

१ जल २ स्त्री पुरुष ३ कार्य ।

जहां सहज रसिकन को संगा ❀ सहज समाज गान रस रंगा ॥
सहज नाम धुनि श्रवणन आवे ❀ सहज रास रस दरसन पावे ।
सहज दरस श्री विग्रह नीको ❀ सहज दरस श्री यमुनाजी को ॥

दो० सहज धामको वास पुन, सहजहि महा प्रसाद ।
सहज दृष्टि श्री युगल की, ताते सहज प्रसाद ॥१४॥

सो० यदि पाकर नर देह, नहिं वृन्दावन दरस किय ॥
नहिं पुन युगल सनेह, वसन्त जन्म अजन्म तिहँ ॥४॥

व्रजमण्डल भुविमण्डल माहीं ❀ महा प्रलय में अपि थिर आहीं ।
बहु पुराण में प्रस्फुट गाई ❀ निज गोलोक अवनि दरसाई ॥
परम दिव्य व्रजरूप बखाना ❀ जड़ जंगम सब दिव्य महा
कर वर तप व्रजवासहिं पावे ❀ विन तप व्रज में कौन
व्रज महिमा सक शेप न गाई ❀ जिहँ प्रशंस प्रभु
है विस्तृत बहु ग्रन्थन माहीं ❀ यदि चाहो दे
व्रज को भेद सोउ जन जाने ❀ जाको श्रीहरि
संसृति दुख ध्वंसन यदि चाहे ❀ कर व्रजवास विन
व्रज तनु तज लह श्रीप्रभु धामा ❀ जो परात्पर जहँ श्री
सब ते पर वह धाम लखायो ❀ शुद्ध सुरसमय रसिकन

दो० जहँ राजत श्री युगलवर, छवि शृंगार स्वरू
प्राकृति की गति रंच नहिं, चिन्मयि सोह अनू

सो० ताहित व्रज को वास, शिव विधि आदिक सुर
देखहु करत निवास, ...

१ कृपा २ जन्म-मरन ३ नाश करन ४ उत्साह से ।

अब प्रथमहिं वसुदेव मनाऊँ ❀ सहित देवकी पद शिर नाऊँ।
इन सम बड़भागी को आना ❀ जिन हित ब्रह्म देह प्रकटाना ॥
श्रीयशुमति ब्रजपति युग चरना ❀ वन्दौं सकल सुमंगल करना।
स्वयं परात्पर लाड़ लड़ायौ ❀ शिव विधि दुर्लभ सुख नित पायौ॥
सो सुख लखि जिन भाग्य बड़ाई ❀ शिव शारद सक शेष न गाई।
श्रीमति कीरति पद जलजाता ❀ वन्दन करहुं राधिका माता ॥
प्रिया पिता वृषभान मनाऊँ ❀ तिन युग पद रज शिर धर नाऊँ।
जिनके भवन राधिका रानी ❀ रासेश्वरी स्वयं प्रकटानी ॥
श्रीमति राधा कीर्ति दुलारी ❀ वन्दौं पद अम्बुज उर धारी।
आल्हादिनि स्वामिनि प्रभु प्यारी ❀ संकुल कलुष विभंजन हारी ॥

दो॰ ध्यान करत जाके मिटत, भव भय रोग असाध।
कृष्ण सहज वश ताहि के, जो सनेह आराध ॥१६॥

सो॰ राधा पूरति साँध, बाधा हरति अगाध यदि।
वसंत तिहं आराध, जो नित सुख की चाह चित ॥६॥

अब वन्दौं श्रीयुगल किशोरा ❀ दोउ परस्पर चन्द्र चकोरा।
दोऊ रूपराशि छवि धामा ❀ आल्हादिनि आनंद शुभ नामा
दोऊ प्रीति रीति वश रहहीं ❀ दोऊ एक एक दो कहहीं।
वन्दौं गोपि वृन्द ब्रजकेरी ❀ प्रेम ध्वजा जिन सब कह टेरी ॥
विधि जिन पद पंकज रज धारी ❀ शिवादि सुर जावैं बलिहारी।
स्वयं स्वामि गोलोक निवासी ❀ है वश करत केलि रसरासी ॥
जिन चरित्र सुनतहि अघ खोवें ❀ सबल निबल आकर्षित होवें।

---

१ दूसरा २ कमल ३ कमल ४ सम्पूर्ण ५ दुःख ६ मनोरथ ७ ब्रह्मा ८ लीला।

जिय यादव रक्षक वल हरिसे ❀ महत प्रवल कामादिक अरि सें।
विधुंवत ताप पाप कर नासू ❀ पतितन पावन सुरसंरि भासू॥

दो॰सुकृत सुमंदिर कलशवर, सब साधन नर भूप।
भक्त कुमुद शशि मोदकर, युगल नाम रस रूप॥१७॥

सो॰अहै चक्र कर नास, दानव दल कलि कलुपको।
मर्दक मोह मवास, वीर नाम श्री युगल को॥७॥

जिम द्वै कर तारी सुन भागै ❀ उरगादिक जिन उर डर लागै।
तिम श्री युगल नाम हिय धारे ❀ पाप पुञ्ज खग प्रभृति उड़ारे॥
पुन जिम युग्म हाथ कर ताली ❀ हो सांवध नर सुस्तिहिं टाली।
तिम उत्साहद सावध कर्ता ❀ युगल नाम सब विधि दुख हर्ता॥
तनु कृत क्रिया दानकृत कारी ❀ युगकर सम उदार अति भारी।
युगल उपासक को पारायण ❀ जस द्वौ कृष्णायन रामायण॥
नाम प्रशंस सकै को गाई ❀ शेप शारदा रटत सदाई।
युगल नाम एकहु कह कोऊ ❀ ता सम सुकृति न इह भुवि होऊ॥
युगल नाम वर नामन कहाऊ ❀ कोटि नाम सम फलप्रद रहाऊ।
युगल नाम विन सुख यदि चाहे ❀ पाय न रंच ताप त्रय दाहे॥

दो॰मोर परम हितकारि है, युगल नाम को जाप।
वसंत विन भगवन्त जप, जातु नाहिं हन ताप॥१८॥

सो॰ताते निज उरधार, पुन पुन वन्दन करत हूँ।
जिहँ अनुग्रह ह्वै पार, अनायास भवसिंधु से॥८॥

१ चन्द्रसमान २ गद्दा ३ लश्कर ४ पाप ५ आदिक ६ दों ७ सावधान ८ कदापि ९ बिना श्रम।

अब प्रथमहिं वसुदेव मनाऊँ ❁ सहित देवकी पद शिर नाऊँ।
इन सम बड़भागी को आना ❁ जिन हित ब्रह्म देह प्रकटाना॥
श्रीयशुमति व्रजपति युग चरना ❁ वन्दौं सकल सुमंगल करना।
स्वयं परात्पर लाड़ लड़ायौ ❁ शिव विधि दुर्लभ सुख नित पायौ॥
सो सुख लखि जिन भाग्य बड़ाई ❁ शिव शारद सक शेष न गाई।
श्रीमति कीरति पद जलजाता ❁ वन्दन करहुं राधिका माता॥
प्रिया पिता वृषभान मनाऊँ ❁ तिन युग पद रज शिर धर नाऊँ।
जिनके भवन राधिका रानी ❁ रासेश्वरी स्वयं प्रकटानी॥
श्रीमति राधा कीर्ति दुलारी ❁ वन्दौं पद अम्बुज उर धारी।
आल्हादिनि स्वामिनि प्रभु प्यारी ❁ संकुल कलुष विभंजन हारी॥

दो॰ ध्यान करत जाके मिटत, भव भय रोग असाध।
कृष्ण सहज वश ताहि के, जो सनेह आराध॥१८॥

सो॰ राधा पूरति साध, बाधा हरति अगाध यदि।
वसंत तिहं आराध, जो नित सुख की चाह चित॥६॥

अब वन्दौं श्रीयुगल किशोरा ❁ दोउ परस्पर चन्द्र चकोरा।
दोऊ रूपराशि छवि धामा ❁ आल्हादिनि आनंद शुभ नामा
दोऊ प्रीति रीति वश रहहीं ❁ दोऊ एक एक दो कहहीं।
वन्दौं गोपि वृन्द व्रजकेरी ❁ प्रेम ध्वजा जिन सब कह टेरी॥
विधि जिन पद पंकज रज धारी ❁ शिवादि सुर जावैं बलिहारी।
स्वयं स्वामि गोलोक निवासी ❁ है वश करत केलि रससासी॥
जिन चरित्र सुनतहि अघ खोवें ❁ सबल निबल आकर्पित होवें।

१ दूसरा २ कमल ३ कमल ४ सम्पूर्ण ५ दुःख ६ मनोरथ ७ ब्रह्मा ८ लीला।

प्रेम पुञ्ज जिन चरित उदारा ❀ भव सम्भव दुख मेटन हारा ॥
यदि चाहे को पावहुँ प्रेमा ❀ गावे गोपिन चरित सनेमा ।
जिनको नाम उचारे कोऊ ❀ उद्धव प्रेमांकुर उर होऊ ॥

दो॰ गोपिन महिमा को कहे, अहै अकत्थ अपार ।
शारद श्रुति शिव शेष विधि, गाय गाय गै हार ॥२०॥

सो॰ पुनि प्रणवौं ब्रजगोपि, पद पंकज रज धार उर ।
जिन प्रसाद नहिं कोपि, बसन्त बाधक हो सकत ॥१०॥

वन्दौं ब्रज के गोप कुमारा ❀ कृष्ण सखा जिन चरित उदारा ।
जिन मिल विचरत कुमर कन्हाई ❀ सुख लेवत देवत हुलसाई ॥
नेह विवश क्रीड़त नंदलाला ❀ आप हार जितवें तिन बाला ।
अंड अनंत स्वामि श्रुति गावै ❀ सो जिनको बहु भांति रिझावै ॥
तिन सुभाग्य सक को कवि गाई ❀ जहँ चतुरानन मति बौराई ।
लख अस भाग्य करत सुर आसी ❀ भाखत धन्य-धन्य ब्रजवासी ॥
वन्दौं तिन पद पद्म परागा ❀ प्रद अनुराग सहित अनुरागा ।
वन्दौं धेनु वृन्द ब्रजकेरी ❀ वत्सन युत अति सुखप्रद हेरी ॥
जाको देव ईश नहिं पावैं ❀ सो जिनको ले विपिन चरावैं ।
प्रमुदित जिनके नाम उचारे ❀ धौरी धूमरि श्यामा प्यारे ॥

दो॰ जिनहिं देखि आनंद लह, जिन रज अंग लगाय ॥
तिन गोवन महिमा कहन, नहिं समर्थ अहिराय ॥२१॥

सो॰ धर्यो नाम गोपाल, ता कारन नंदलाल को ॥
करहु धेनु प्रतिपाल, कृपा चहौ यदि कृष्ण की ॥११॥

वन्दौं अपर गोप गोपाला ❀ जिन नित हैं दर्शन नंदलाला ।
करत केलि बहु विधि मन भाई ❀ देख-देख सब सुर विस्माई ॥
करैं आस ब्रजवासहिं पावैं ❀ जय-जय कह ब्रजवासि मनावैं ।
धन्य-धन्य इन सम भुवि को है ❀ जिन परि पूरण तम लिय मोहै ॥
ब्रजवासिन सुभाग्य की गाथा ❀ भाखत सकुचत सुर सुरनाथा ।
अब सब प्रति पुन वंदन मोरी ❀ सविनय प्रार्थन करत निहोरी ॥
गावहुँ गुन गन दम्पति केरा ❀ अस सुबुद्धि देवहु लख चेरा ।
श्री रविनन्दंनि दरस पुनीता ❀ करत ताहिं नहिं यमपुर भीता ॥
श्रीप्रभु प्रिया सकल सुखकारी ❀ वन्दौं सविनय पद उर धारी ।
कलिमल सकल नसावन हारी ❀ युगल प्रीति प्रद जिहँ वपु वारी ॥

दो॰ वंशीवट कालिन्दि तट, उपवन अमित सुहाय ।
अतिशय रमणिय रेत जिहँ, लख श्रीहरि मन भाय ।२२।
सो॰ मिल वयसन गोपाल, जहँ जहँ धेनु चराय मुदं ।
किय पुन रास रसाल, प्रिया संग मिल सखिन जहँ ।१२।

तहँ तहँ वन्दन मोरि विनीता ❀ तिहँ थल रज उर धरहुँ पुनीता ।
श्रीमथुरापुरि के नर नारी ❀ तस बस गोकुलादि रति धारी ॥
पाद पद्म तिन करहुँ प्रणामा ❀ जिनको दरस कृष्ण बलरामा ।
श्रीवनादि वन कूप तड़ागा ❀ गिरि वापी वन्दहुं युत रागा ॥
जिन सबंध श्रीप्रभु से भयऊ ❀ लह्यऊ सुख पुन तिन प्रति दयऊ ।
वन्दौं इन सबको युत नेहा ❀ जन्म-जन्म फल लिय तिन एहा ॥
तृण तरु महि रज कीट पतंगा ❀ जेते जड़ जंगम ब्रज संगा ।

१ श्रीराधाकृष्ण २ श्रीयमुना ३ भय ४ श्रीयमुना जल ५ प्रसन्न होकर ६ पृथ्वी ।

तिन सबको पुहुमी[१] शिर नाई ❀ बार बार वन्दौं विगसाई[२] ॥
सब ब्रज जन पद रज शिर धारों ❀ कर[३] संपुट कर विनय उचारों ।
पूरहु मो मनकी अभिलासा ❀ करहु कृपा लख अपनों दासा ॥

दो॰ आप भरोस प्रताप यह, वड़ कारज शिर लीन ।
चरित अगाध जु युगल के, तिन गावन मन कीन ॥२३॥

सो॰ गये जहां अति थाक, शिव विरञ्चि आदिक विबुध[५] ।
तहँ वसन्त मम वाक, स्वतः मौन गति प्राप्त भइ ।१३।

केवल आप भरोस महाना ❀ चाहों सुखद युगल गुन गाना ।
भवतारक नहिं सूझत आना ❀ उर शुद्धी हू यहितें जाना ॥
ता हित सब संतन मिल गायौ ❀ गाय गाय गुन प्रभुको पायौ ।
विन गुन गायें उपज न प्रीती ❀ प्रीति विना किम होय प्रतीती ॥
विन प्रतीति प्रभुकों किम पावै ❀ प्रभु प्राप्ती विन जन्म गँवावै ।
जन्म गये चक्कर चौरासी ❀ नाना यौनि भ्रमै दुखरासी ॥
भ्रमत-भ्रमत वहुते दुख पावै ❀ श्रीप्रभु कृपा मनुज तनु आवै ।
पुन तहँ श्रीहरि प्राप्ति न कीनी ❀ भटकन यौनि अनेकन लीनी ॥
या विधि भटकत जीव अनंता ❀ चौरासी चक्कर नहिं अंता ।
भोगत नरक दुःख अति भारी ❀ यम के त्रास सहे मन मारी ॥

दो॰ जन्म-मरण दुख अकथ अति, सुमर होय रोमांच ।
पावत श्री प्रभु विमुख जन, संत वेद वच सांच ॥२४॥

१ पृथ्वी २ प्रसन्न होकर ३ हाथ ४ जोरि ५ देववृन्द ।

काक तालिके न्याय जिम, कृपा करहु जब आप।
लह वसंत नर जन्म तब, करै गर्भ अस जाप ॥२५॥

सो०दुख विलोक शत जांत, हाय हाय कर रोय अति।
लखे तात नहिं मांत, बिना शरण श्रीकृष्ण रति ॥१४॥

तब सविनय अतिशय हो दीना ❀ करैं प्रार्थना नित्य नवीना।
हे प्रभु आप विमुख मैं भयऊ ❀ ताते भटक योनि दुख लह्यऊ ॥
कबहू जलचर थलचर कबहू ❀ नभचर प्रभृति जन्म जग सबहू।
पाय कष्ट भोगे अति भारी ❀ पाहि-पाहि प्रणतारतिहारी ॥
नरक दुःख भोगे मैं जेऊ ❀ मोमें कहन शक्ति नहिं तेऊ।
पाप पुञ्ज फल नीकें पायउ ❀ अब तो शरण रावँरी आयउ ॥
सब विधि अधम नीच अपराधी ❀ आप कृपा की युक्ति न साधी।
दास दोष उर नाहिं धराजे ❀ आप कृपानिधि कृपाहि कीजे ॥
पतितन पावन आपहि एकू ❀ ता तज लेहुँ कौन की टेकू।
इह दुख मुक्त करहु अब स्वामी ❀ करहुँ भजन तुम्हरो सुख धामी ॥

दो०इह प्रकार नर गर्भ में, वार वार पछतात।
गर्भ दुःख ते मुक्त हो. लेत जन्म कुशलात ॥२६॥
तहाँ आप करुणा लहे, श्री गोविंद गुन माहिं।
सरति भक्ति अविचल जबै, तब सब दुख नस जाहिं॥२७॥

सो०अस लख संतन वृन्द, गाये गुन गोपाल के।
कीन ध्वंस सब द्वंद, लह्यो अचल प्रभु धामको॥१५॥

---

१ जन्म के २ प्रेम ३ रक्षा कर ४ शरण आये के दुःख हरने वाले ५ आपकी शरण ६ आपके

तातें जो प्रभु गुन नहिं गावै ❀ नित्य अचल सुख कबहु न पावै।
अस सद्गुरु शिक्षा उर प्रीती ❀ आप अनुग्रह माथ प्रतीती॥
गावन चहौं युगल वर केरे ❀ अघनासक गुन गन श्रुति टेरे।
विरचन कृष्णायन मति मोरी ❀ सुन विहँसहिं बुध जन दें खोरी॥
कविता कला न रंचक जानौं ❀ छन्द प्रकार न इक पहिचानौं।
साहित्य साज न लव मो पाहीं ❀ शब्द[1] शास्त्र लव जानहुँ नाहीं॥
रंचक अपि विद्या वल नाहीं ❀ पुन मति मूढ विषय रति आहीं।
तद्यपि मम यह महत ढिठाई ❀ चढि कि पिपीलि[2] मेरु शिर जाई॥
आप कृपा जा जन पर होई ❀ ताहि न दुर्लभ इह भुवि कोई।
पंगु चढ़ै बड़ गिरि पै जाई ❀ बधिर[3] सुनै यदि परे[4] वच[5] गाई॥

दो०गूँगो भाखै सकल श्रुति, देख चकित सब लोक।
संतन श्रद्धा वृद्धि हो, या विधि कृपा विलोक॥२७॥

सो०कृष्ण चरित सम नाहिं, कलि उद्धारन सकल जन।
ते कृष्णायन माहिं, सह विस्तर वर्णन करहुँ॥१६॥
यद्यपि अति मतिमंद, लव न शक्ति कविता रचन।
आप कृपा सम चंद, भणित सुधा स्रव मम वदन॥१७॥

॥ इति श्रीवसन्तकृष्णायने राधाकृष्णद्वारे द्वितीय सोपान समाप्त॥

वन्दौं प्रथमें द्वारापुरि को ❀ सम वैकुंठ सुप्रिय श्रीहरिको।
वन्दौं गोमति संगम जोऊ ❀ ध्वंसक अघ पापिन कर सोऊ॥
वन्दौं चक्रतीर्थ अघहारी ❀ जिहँ दर्शन लह मनसा[6] भारी।
वन्दौं सुखकर शंखोद्धारा ❀ हनत उपद्रव सकल अपारा॥
वन्दौं रेवत गिरि गिरिस्वामी ❀ ब्रह्म हत्यादिक नाशक नामी।

१ व्याकरण २ चींटी ३ बहिरा ४ दूरसे ५ टपके ६ इच्छा।

सिद्धाश्रम महिमा अति भारी ❀ वन्दौं सरुचि ध्यान उर धारी ॥
जहँ न्हावन नर कर युत नेहा ❀ प्रभु दर्शन लह अघ सब खेहा ।
इत्यादिक थल पुण्य प्रदेशा ❀ वन्दौं धार ध्यान उर देशा ॥
धन्य-धन्य द्वारापुरि आहीं ❀ संतत बसत युगल प्रभु जाहीं ।
चतुर धाम पुरि सप्त जु रह्यऊ ❀ तहँ द्वारिका मुख्य पद कह्यऊ ॥

दो॰ जहँ परिकर युत युगल प्रभु, कर मोत्तद वर केलि ।
बसंत को कवि कह सकै, तिहँ प्रशंस मव मेलि॥२८॥

वन्दौं यदुकुल परम पुनीता ❀ प्रकटे जहँ गो वाणि अतीता ।
वन्दौं रोहिणि सीप सुहाई ❀ उपज्यो मुक्त कृष्ण बड़ भाई ॥
वसुसुर की अष्टादश रानी ❀ वन्दौं श्रुति समान तिन मानी ।
भय प्रकट गद आदिक जेते ❀ अर्थ समान मान मन तेते ॥
वन्दौं दाउ चरण मुद मूला ❀ हरण शरण की गति प्रतिकूला ।
कुन्द इन्दु सम सोह शरीरा ❀ पारद कांति लजित जिहँ तीरा ॥
धरणि धर्म आधार महाना ❀ ज्ञान विज्ञान पुरान विधाना ।
कृष्ण प्रियंकर अग्रज भाई ❀ संत समाज सतत सुखदाई ॥
शशिसम यदुकुल नखतन माहीं ❀ अहि खल खंडन खगपति आहीं ।
द्वारावति रत्तक हैं ऐसे ❀ राखत पलक नयन को जैसे ॥

दो॰ दिनमणि विजय प्रकाश कर, ध्वंसक खल तम राम ।
नाग नगर पद्मिनि दलन, मारुत अहिपति भास॥२९॥

सुर संपति हित सजन विधाता ❀ दीन मीन जल राशि सुहाता ।

---

१ पवित्र २ श्रीराम श्याम ३ इन्द्रियवृन्द ४ मोती ५ वसुदेव ६ शंख ७ चंद्रमा ८ पारा ९ निकट १० बड़ा ११ तारागण १२ सर्प १३ गरुड़ १४ सूर्य १५ हस्तिनापुर १६ कमलिनी १७ पवन ।

परि पूरण तम श्री वलदाऊ ❀ जिहँ तनु सब अहि तेज समाऊ ॥
जय वलभद्र अभद्र विनासी ❀ परम भद्र प्रद सब सुखरासी ।
वन्दौं सविनय जय-जय भाखी ❀ देहु सुबुद्धि उदार सुराखी ॥
वन्दौं उग्रसेन यदु भूपा ❀ अपन भक्ति वश किय प्रभु रूपा ।
सम अनुचर हरि आज्ञाकारी ❀ तिहँ सुभाग्य कह कौन उचारी ॥
वन्दौं उद्धव अक्रूर दोऊ ❀ सब विधि प्रभु को प्रियतम होऊ ।
साजन भाजन ज्ञान विज्ञाना ❀ भक्ति विराग मूल रति ठाना ॥
चित चिंतत नित युगल स्वरूपा ❀ इन सम किहँके भाग्य अनूपा ।
वन्दौं रुक्मिणि श्री साक्षाता ❀ विश्वअखिल मन वांच्छित दाता ॥

दो०वन्दौं सतभामा सुपद, तस कालिन्दी केर ।
जाम्बवती सत्या चरन, वन्दौं सुखप्रद हेर ॥३०॥

मित्राविंद लक्ष्मणा रु भद्रा ❀ इन पद वन्दौं दायक भद्रा ।
शत षोड़श सहस्र प्रभु रानी ❀ वन्दौं तिन पद रुचिप्रद मानी ॥
वन्दौं श्रीरेवति पद कंजू[1] ❀ कृष्णाग्रज सुमोद प्रद मंजू[2] ।
वहुर सकल सति यदुकुलकेरी ❀ वन्दौं धन्य-धन्य सुरि[3] टेरी ॥
अब वन्दौं प्रद्युम्न सुवीरा ❀ धर्म--धुरन्धर पर्म गँभीरा ।
पितुसम सब विधि योग्य स्वरूपा ❀ मानहु द्वितीय देह सुरभूपा ॥
श्रीअनिरुद्धहिं करहुँ प्रणामा ❀ मदन लाड़लो शुभ गुण धामा ।
विजय पताक कटक[4] यदु केरी ❀ शूर भयद[5] जन प्रद सुख ढेरी ॥
वन्दौं पुत्र पौत्र यदुनाथा ❀ सपरिवार अवनी धर माथा ।
औरहु यदुवंशी जे आहीं ❀ वंदन करहुँ सबन पद माहीं ॥

१ कमल २ कोमल ३ देवांगना ४ सेना ५ भय देने वाले ।

दो०कुमुद द्वारिका वासि सब, राकापति प्रभु माहिं।
सुदृढ़ सुलग्न निमग्न नित,वन्दौं तिन पद ताहिं॥३१॥

खग मृग आदि द्वारिकावासी ❀ जड़ जंगम सब श्याम उपासी।
वन्दौं तिन सबको युत नेहा ❀ धन्य-धन्य जिन हरिपुर गेहा॥
महिमा श्रीप्रभुधाम महाना ❀ भुवि वैकुंठ अवनि प्रकटाना।
तिहँ प्रशंस कोविद किम भाखे ❀ जाको सुर सुरपति अभिलाखे॥
सुरपति प्रभृति प्रशंस उचारी ❀ भये थकित अतिशय चुपधारी।
जाके दर्शन अघ सब नासें ❀ हरिको धाम पाय सहुलासें॥
संसृति दुख तिहँ जाय न नेरा ❀ श्रद्धायुत तहँ कीन बसेरा।
पुन अब सब प्रति करहुँ प्रणामा ❀ लख अनुचर पूरहु मम कामा॥
कृष्णायन गावन मति मोरी ❀ किहँ प्रकार नहिं बल मति थोरी।
युगल सुयश गावहुँ यहि माहीं ❀ तारक अनाथास भव आहीं॥

दो०आप कृपा बल पूर्ण हो, दुर्घट इच्छा मोर।
यह भरोस मम उर विषे, पुन-पुन कहत निहोर॥३२॥

सो०ताते मम अभिलास, करो पूर्ण हर विघ्न गण।
आप अनुग्रह रास, तहां कृपणता होय नहिं॥१८॥

सत्य सिद्ध नित अविचल धामा ❀ जहां न गति दुष्कृति युत कामा।
जहँ दिक्पति सुरपति गति नाहीं ❀ गति निरपेक्षिनकी जिहँ माहीं॥
ते पावत वह इकरस धामा ❀ भजहिं कृष्ण सब विधि निष्कामा।
जाहिं पाय संसृति नहिं पावे ❀ चतुर मुक्ति में सहज समावे॥

१ शशि २ इन्द्रादि ३ पाप ४ दास ५ बिना श्रम ६ पापी पुरुष की ७ दिशाओं के स्वामी कुबेरादि ८ निष्काम जीवन की।

बिन श्रीकृष्ण भक्ति नर कोऊ ❀ लोक वेद मत कर कृति जोऊ।
ते बंधन कारक हैं जाहीं ❀ माया बहुविधि बाधक ताहीं॥
भक्ति न उपजे बिन गुन गाये ❀ गुन गाये प्रभु प्रेम बढ़ाये।
हैं साक्षात प्रकट प्रभु आपू ❀ लीला ललित करत गत पापू॥
केवल एक हेतु तहँ आहीं ❀ चतुर वस्तु प्रकटैं जग माहीं।
गाय-गाय जिहँ भव तर जावैं ❀ काहि न अघस्वरूपि नर गावैं॥

दो०कलि ब्रह्म ज्ञान न योग हो, नहिं हो सुदृढ़ विराग।
कर्म धर्म नहिं मर्म लहि, सुगम भक्ति अनुराग॥३३॥

सो अनुराग लहे नर सोऊ ❀ श्री प्रभु सुयश गाय मुद होऊ।
नाम रूप लीला अरु धामा ❀ चतुर भक्ति वर्द्धक वसुयामा
ताते यदि चाहत चित प्रेमा ❀ इन चतुरन सेवहु युत नेमा।
कलि में साधन अपर न होवै ❀ वृथा भटक दुर्लभ तन खोवै॥
यहि निष्कर्ष कहत सब संता ❀ बिन प्रभु भक्ति न भवकर अंता।
पावै वह भक्ती नर तबही ❀ आप कृपा पावै वो जबही॥
लीजै मान निहोरा थोरा ❀ कीजे पूर्ण मनोरथ मोरा।
नाम रूप लीला अरु धामा ❀ तिन प्रकटावन चरित ललामा॥
श्रीकृष्णायन में हैं जाते ❀ देहु सुबुद्धि कृपाकर ताते।
गावहुँ कृष्णायन रुचिकारी ❀ करहु पूर्ण हो सब मन हारी॥

दो० करहु पूर्ण अभिलाष अब, यही विनय मन आहिं।
आप कृपा बिन हो न इति, दृढ़ प्रतीत मन माहिं॥३४॥

सो० बनत न साधन आन, ताते इह साधन लियो।
गुरु मुख वचन प्रमान, जान ताहिको दृढ़ कियो॥१६॥

करुणा करहु वसन्त, ता कारण निर्विघ्न विधि ।
हो समाप्त सब तन्त,सन्त प्राणप्रिय नेह सिधि॥२०॥

* इति श्रीवसन्तकृष्णायने प्रथम राधाकृष्ण द्वारे तृतीय सोपान समाप्त *

वन्दौं श्रीसद्गुरु शिव नामा ❀ परम कृपालु अचल सुख धामा ।
गोपीश्वरि संज्ञा जिहँ आहीं ❀ चिन्मय श्रीनिकुंज के माहीं ॥
प्रथमै श्री गोपीश्वरि केरी ❀ कहौं कथा मैं प्रस्फुट टेरी ।
सनत्कुमार संहिता माहीं ❀ गुप्त प्रकट करि कही सु ताहीं ॥
सबते पर चिन्मय श्री धामा ❀ शुद्ध नेह निधि परम ललामा ।
नित्य एक रस अचल स्वरूपा ❀ परम शुद्ध माधुर्य अनूपा ॥
रंच न प्रविश प्रकृति को जामैं ❀ तब तत्कार्य जाइँ किम तामैं ।
जिहँ गति देव ईश नहिं जानैं ❀ रसिक गुरुन करुणा पहिचानैं ॥
अस निकुंज धामके माहीं ❀ राजैं सतत युगल वर ताहीं ।
राधा कृष्ण नाम रस धामा ❀ अतिशय शुद्ध सबंध ललामा ॥

दो॰ एक समय तल्पस्थिता, सोइ प्रिया सुकुमारि ।
चरण चाँपि ललिता करै, उर प्रसन्नता धारि ॥३५॥

सो॰ ताहि समय के माहिं, अति दयाद्र ललिता सखी ।
अस उपजी मन ताहिं, अहैं जीव माया विवश॥२१॥

शर्म रंच अपि ते न विलोकैं ❀ तप्त सदा शोकानलओकैं ।
नित नूतन दुख पावैं तेऊ ❀ दुख को सुख मानत हैं जेऊ ॥
होय उपाउ सत्य सुख पावैं ❀ मेटि व्यथा सब निज पुरि आवैं ।

---

१ शय्या २ कृपा में भींजी हुई ३ सुख ४ शोक रूपी अग्नि के घर में ।

परन्तु इन करुणा विन नाहीं ❀ लोक वेद प्रयतन को आहीं ॥
कहि न सकों उपजे उर शंका ❀ पूछन अभिलाषा बड़ बंका ।
लाड़िलि लइ करवट तिहँकाला ❀ भइ प्रमुदित चित ललिता बाला ।
अल्प नयन उघरे लख ताहीं ❀ शिर नायो पद पंकज माहीं ।
जय जय किय उचार रसरासी ❀ वदन मयंके[1] विलोक विलासी ॥
श्रीमुख कह्यो प्रिया कहु प्यारी ❀ हे ललिते का करुणा धारी ।
तोर हियो मुख करुणा रूपा ❀ कहा बात कहु राख न गूपा ॥

दो० तब पुन-पुन शिर नाय कें, उर धर जीवन श्रेयं[2] ।
सुयश विसूचक[3] भक्ति के, कहे वचन चित देय ॥३६॥

सो० अतिशय चंड प्रभाव, है माया जग मोहनी ।
कंदुक[4] सदृश नचाव, सब ब्रह्मंडन जीव जे ॥२२॥

गति विलोक तिन मुहिं ह्वै खेदा ❀ जानो आप मोर उर भेदा ।
करो कृपा अब ऐसी प्यारी ❀ ते सब यहां बसैं बलिहारी ॥
आप पाद पंकज कर सेवा ❀ पावैं अविचल सुख मय मेवा ।
कह लाड़िलि ललिता सुन बैना ❀ धन्य-धन्य अस करुणा ऐना ॥
माया ध्वंस कबहुँ ह्वै नाहीं ❀ जीवोद्धरन होय सक ताहीं ।
विविध प्रकार अहैं ते कारन ❀ यदि तिनको करहीं ते धारन ॥
ते उपाय अब करौं बखाना ❀ तब अन्तर रुचि मैं पहचाना ।
नहि निस्तार भक्ति बिन कबहूँ ❀ कहौं अंग भक्ती के अबहूँ ॥
तेउ अंग बहु भक्ति प्रमानू ❀ विस्तृत छाड़ समास[5] बखानू ।
श्री गुरु शरण होय ते पावें ❀ माया भरम सकल विनसावैं ॥

१ चन्द्र २ कल्याण ३ सूचना करने वाले ४ गेंद ५ संक्षिप्त ।

दो० प्रथम भक्ति द्वै विधि कही, निर्गुण सगुन पछान।
तिन में निर्गुन कहत हौं, सुन सावधं[1] प्रिय प्रान ॥३७॥

सो० है परिपक्व जु भक्ति, पुन वह सिद्ध स्वरूप हो।
अरु इक रस अनुरक्ति, अधिकाधिक अनुपम अहै॥२३॥

हानि लाभ सुख दुख नहिं भाना ❀ विधि प्रकार जहँ नाहिं प्रमाना।
लोक वेद की शंक न जामें ❀ गुण प्रभेद लव अपि नहिं तामें॥
स्नेह सिन्धु जाको मन मीना ❀ है प्रवाह अविच्छिन्नं[2] प्रवीना।
जस सरितां[3] सागर मिल जाई ❀ तस मो नाम रूप लव लाई॥
निर्गुन भक्ति अंग हैं ये ही ❀ जे धारें मुहिं पावें ते ही।
सगुन भक्ति अव कहौं वखानी ❀ सब को सुखप्रद सुगम प्रमानी॥
अति अपार भव सागर जोऊ ❀ तामें सुदृढ़ सेतुं[4] सम सोऊ।
ताके नवधा भेद वखाने ❀ श्रवणादिक जड़ स्नेह समाने॥
गुण प्रभेद पुन तीन प्रकारा ❀ उत्तम मध्य कनिष्ठ विचारा।
यों गुण मिश्रित अंग अनेका ❀ हैं भवसिंधु सेतु दृढ़ टेका॥

दो० भक्ति अंग बहु विधि अहैं, जहँ जाको मन लाग।
दृढ़ भरोस अरु चाह युत, करै तहां अनुराग ॥३८॥

सो० साधु संग कर प्रीत, त्याग कपट पुन स्वार्थ को।
ज्ञान योग धर चीत, जो भक्ती सांची करै ॥२४॥

सो माया फन्दन ते छूटे ❀ भक्ति पाय सब विधि सुख लूटे।
सकल मनोरथ पूरण ताके ❀ सुफल जन्म है निजार्थ पाके॥

१ सावधान होकर २ नाश रहित ३ नदी ४ पुल।

परन्तु इन करुणा विन नाहीं ❀ लोक वेद प्रयतन को आहीं ॥
कहि न सकौं उपजे उर शंका ❀ पूछन अभिलाषा वड़ वंका ।
लाड़िलि लइ करवट तिहँकाला ❀ भइ प्रमुदित चित ललिता वाला ।
अलप नयन उघरे लख ताहीं ❀ शिर नायो पद पंकज माहीं ।
जय जय किय उचार रसरासी ❀ वदन मयंक[1] विलोक विलासी ॥
श्रीमुख कह्यो प्रिया कहु प्यारी ❀ हे ललिते का करुणा धारी ।
तोर हिये मुख करुणा रूपा ❀ कहा वात कहु राख न गूपा ॥

दो॰ तव पुन-पुन शिर नाय कैं, उर धर जीवन श्रेयँ[2] ।
सुयश विसूचक[3] भक्ति के, कहे वचन चित देय ॥३६॥

सो॰ अतिशय चंड प्रभाव, है माया जग मोहनी ।
कंदुक[4] सदृश नचाव, सब ब्रह्मंडन जीव जे ॥२२॥

गति विलोक तिन मुहिं है खेदा ❀ जानो आप मोर उर भेदा ।
करो कृपा अव ऐसी प्यारी ❀ ते मव यहां वसें वलिहारी ॥
आप पाद पंकज कर सेवा ❀ पावैं अविचल सुख मय मेवा ।
कह लाड़िलि ललिता सुन वैना ❀ धन्य-धन्य अस करुणा ऐना ॥
माया ध्वंस कवहुँ है नाहीं ❀ जीवोद्धरन होय सक ताहीं ।
विविध प्रकार अहें ते कारन ❀ यदि तिनको करहीं ते ध[illegible]
ते उपाय अव करौं वखाना ❀ तव अन्तर रुचि मैं पह[illegible]
नहि निस्तार भक्ति विन कवहूँ ❀ कहौं अंग भक्ती के अ[illegible]
तेउ अंग वहु भक्ति प्रमानू ❀ विस्तृत छाड़ समास[5] वखा[illegible]
श्री गुरु शरण होय ते पावें ❀ माया भरम सकल विनसावैं

१ चन्द्र २ कल्याण ३ सूचना करने वाले ४ गेंद ५ संक्षिप्त ।

दो॰ प्रथम भक्ति द्वै विधि कही, निर्गुण सगुन पछान ।
तिन में निर्गुन कहत हौं, सुन सावंध[१] प्रिय प्रान ॥३७॥

सो॰ है परिपक्व जु भक्ति, पुन वह सिद्ध स्वरूप हो ।
अरु इक रस अनुरक्ति, अधिकाधिक अनुपम अहै॥२३॥

हानि लाभ सुख दुख नहिं माना ❀ विधि प्रकार जहँ नाहिं प्रमाना ।
लोक वेद की शंक न जामें ❀ गुण प्रभेद लव अपि नहिं तामें ॥
स्नेह सिन्धु जाको मन मीना ❀ है प्रवाह अविच्छिन्न[२] प्रवीना ।
जस सरिता[३] सागर मिल जाई ❀ तस मो नाम रूप लव लाई ॥
निर्गुन भक्ति अंग हैं ये ही ❀ जे धारें मुहिं पावें ते ही ।
सगुन भक्ति अब कहौं बखानी ❀ सब को सुखप्रद सुगम प्रमानी ॥
अति अपार भव सागर जोऊ ❀ तामें सुदृढ़ सेतु[४] सम सोऊ ।
ताके नवधा भेद बखाने ❀ श्रवणादिक जड़ स्नेह समाने ॥
गुण प्रभेद पुन तीन प्रकारा ❀ उत्तम मध्य कनिष्ठ विचारा ।
यों गुण मिश्रित अंग अनेका ❀ हैं भवसिंधु सेतु दृढ़ टेका ॥

दो॰ भक्ति अंग बहु विधि अहैं, जहँ जाको मन लाग ।
दृढ़ भरोस अरु चाह युत, करे तहां अनुराग ॥३८॥

सो॰ साधु संग कर प्रीत, त्याग कपट पुन स्वार्थ को ।
ज्ञान योग धर चीत, जो भक्ती सांची करे ॥२४॥

सो माया फन्दन ते छूटे ❀ भक्ति पाय सब विधि सुख लूटे ।
सकल मनोरथ पूरण ताके ❀ सुफल जन्म है निजार्थ पाके ॥

---

१ सावधान होकर २ नाश रहित ३ नदी ४ पुल ।

पुण्य पाप जे बहु विधि करहीं ❀ ते भव गर्भ जन्म अरु मरहीं ।
स्वर्ग नर्क पावैं दुख भोगैं ❀ बहुर उदर दरि पड़ें अयोगैं ॥
इह सकामि जीवन गति आहीं ❀ रहैं भक्ति निष्काम सदाहीं ।
भव में मुख्य भाव हैं कारन ❀ सुन ललिते ते करहीं धारन ॥
भाव स्वरूप कहौं अब साचो ❀ बिन सुभाव जीवन है काचो ।
विषय विपिनैं मृग इन्द्रिन वृन्दा ❀ स्वेच्छाचार चरत लह द्वंदा ॥
मानैं हेत तिन मिल मन धावै ❀ तातें बुद्धि नाश ह्वै जावै ।
बुद्धि नाश ते सकल विनासा ❀ अंत हाय कर लेय उसासा ॥

दो०प्रथम विजय कर इन्द्रिगन, ह्वै सावध युत चाह ।
विषयन ते मन विलग कर, बढ़ै भक्ति उत्साह॥२९॥

सो०ह्वै वासन निर्मूल, यावत दृश्य पदार्थ हैं ॥
बुद्धि होय अनुकूल, सुधरे भाव रु सुदृढ़ ह्वै ॥२५॥

सुभावते उपजे मन शान्ती ❀ लहै शान्ति ते सुख निर्भ्रान्ती ।
सो सुख स्नेह सिन्धु मय आहीं ❀ गुप्त वेद सिद्धान्त लखाहीं ॥
तिहं लवांश परमानन्द पाकै ❀ सब ब्रह्माण्ड प्रसन्न अथाकै ।
भावस्वरूप अनूपम अहई ❀ या बिन जन नास्तिकता लहई ॥
भावहि की भक्ती है साची ❀ बिना भाव भक्ती किल काची ।
भावहि ते निश्चयता पावै ❀ भावहि ते मो धाम सिधावै ॥
भक्ति यदपि है एक स्वरूपा ❀ भाव पंच हैं परम अनूपा ।
लोक हमार बसत जन जेऊ ❀ करत संचैं इनको ध्रुवैं तऊ ॥
शांत दास्य अरु सख्य सुनामा ❀ वात्सल्य श्रृंगार ललामा ।

१ गुफा २ बन ३ कल्यान मानकें ४ पृथक ५ संग्रह ६ निश्चय।

यथा भाव लह सिद्धि स्वरूपा ❀ यही निबेरो कह्यो अनूपा ॥

दो० कह ललिता प्रति लाड़ली, सुनौ प्रिये सुकुमारि ।
पुन-पुन बलि-बलि होति हूँ, करुणा आप निहारि ॥४०॥

सो० मो मन की अभिलास, जानौ सब विधि आपहू ।
कीजै ताहि प्रकास, जिहँते जीवन गति सुगम ॥२६॥

श्रीराधा उर मुदिता धरकैं ❀ कृपा स्वरूप सुवचन उचरकैं ।
एक सुफल[1] निज कर प्रकटायो ❀ दियललिता प्रति तिहँ अपि पायो ॥
अरु भाख्यो सुन ललिते स्यानी ❀ प्रथम भाग द्वै[2] करौ प्रमानी ।
जोय मान सर में धर दीजै ❀ होइहैं युग्म प्रकट सुन लीजै ॥
एक वाम इक पुरुष स्वरूपा ❀ परम मनोहर अमित अनूपा ।
बहुर पुरुष को कर अभिषेका ❀ मोर स्वरूप कुंड सों एका ॥
सहचैरि[3] तनु है परम ललामा ❀ धरौ ताहि गोपीश्वरि नामा ।
सकल गोप्य लीला उपदेशा ❀ करौ ताहिं तुम प्रद मो देशा ॥
बहु विध भक्ति अंग जे कह्यऊ ❀ पंच प्रकार भाव जे रह्यऊ ।
तस पुन तुम सब जस कर सेवा ❀ भाखौ तिहँ प्रति सो सब भेवा[4] ॥

दो० शिव स्वरूप जग में प्रकट, हिये सहचरी भाव ।
तिहँ संग रह यह प्रेमदा, शिवा नाम भुव गाव ॥४१॥

सो० प्रेमा परा प्रवीन, तिम यह अर्द्धंगी तहाँ ।
मिल द्वौ नित्य नवीन, कहि विधिसौं जगमें धरें ॥२७॥

१ सुन्दर फल २ दो ३ सखी ४ भेद ।

कृपा पात्र जन जे भये, लीला तत्व पछान ।
ह्वै अशंक कर गान ते, मिलैं जाय भगवान ॥४५॥
सो॰ बिना कृपा नहिं होय, निसँशय प्रभु प्रेम जो ।
बसन्त भाखत सोय, कृपा चहौ भक्ती करो ॥३०॥

❀ इति श्रीबसन्तकृष्णायने प्रथम राधाकृष्ण द्वारे चतुर्थ सोपान समाप्त ❀

शिवा स्वामि करुणा उर माहीं ❀ भो श्रीयुगल निवास सदाहीं ।
गौर श्याम द्युति तेज निशाला ❀ अस श्रीश्यामाश्याम रसाला ॥
उज्वल श्यामल जोति महाना ❀ चिन्मय तनु नाशक अघ नाना ।
अस अगणित अण्डनपतिकह्यऊ ❀ राधाकृष्ण नाम जिन रह्यऊ ॥
तिनके पद-पंकज नख जोती ❀ रवि-शशि सम प्रकाश कर धोती ।
वह नख जोति भक्त उर माहीं ❀ प्रकटत ही सब अघ नस जाहीं ॥
परमानन्द सुलभ प्रति पल में ❀ नित्य निमग्न रहत निर्मल में ।
चतुर मुक्ति सुख लाग न नीको ❀ तिहँ सुख तटं सब सुख है फीको ॥
अस-प्रताप जानहु उर माहीं ❀ जिनके पद-नख जोतिहिं आहीं ।
तिहँ नख जोति किरण ते भयऊ ❀ पंच ब्रह्म संज्ञा जिन रह्यऊ ॥

दो॰ जिनके पद नख जोति ते, पंच ब्रह्म प्रकटाय ।
ते वृन्दावन भूमि में, करत विहार सदाय ॥४६॥
सो॰ सो रहस्य अति गूप, रसिक गुरुन करुणा लहै ।
लह अस लाभ अनूप, रहै न आशा आनकी ॥३१॥

¹ निर्मल २ समीप ३ गुप्त ।

सकल ब्रह्म को कारण जोऊ ❀ कारण को कारण अपि सोऊ ।
संज्ञा राधाकृष्ण बखाना ❀ वास्तव एक जोति पहिचाना ॥
कूटस्थ रु ब्रह्मतें पर जोऊ ❀ सर्व शक्ति युत है पुन सोऊ ।
परं ब्रह्म सबते पर कह्यऊ ❀ अक्षरात्पर अपि सो रह्यऊ ॥
तथा अपर परतें पर भाखा ❀ परंब्रह्म संज्ञा जिन राखा ।
अरु जो रमत अपर पर माहीं ❀ परंब्रह्म भाखत मुनि ताहीं ॥
तिहँ पद नख ज्योती ते भयऊ ❀ प्रकट कोटि ब्रह्मंड जु रह्यऊ ।
पालन कर-कर ध्वंस मिलावै ❀ स्वयं जोति में सकल समावै ॥
प्रति ब्रह्मंड धर विविध स्वरूपा ❀ हरि हर अज नामक सुरभूपा ।
उत्पति पालन नाश करावै ❀ कोटिन अंड अनूप रमावै ॥

दो॰ महतोज्वल अरु श्याम द्युति, तेज सनातन धार ।
असं परि पूरणतम युगल, कोटिक रवि आकार ॥२७॥

रसमय राधाकृष्ण बखाना ❀ सतत अनादि जांउ श्रुति गाना ।
कल्प-कल्प अगणित धर रूपा ❀ कारज कर लय हो ब्रज भूपा ॥
धर्म हेतु अवनी सुर हेतू ❀ गो द्विज भक्तन हित सुखसेतू ।
श्रुति मारियादा पालन कारन ❀ करत प्रकट वपु सब दुख टारन ॥
कबहु अंश अंशांश शरीरा ❀ कदा कला आवेश सुधीरा ।
पूर्ण परी पूरण तम कबहू ❀ जस अपेक्षे तस धर वपु सबहू ॥
इह विध जिहँ-जिहँ ब्रह्मंड माहीं ❀ यथा अपेक्षा होवैं ताहीं ।
तहँ-तहँ तस-तस धर निज रूपा ❀ कोटि कार्य कर रहे अनूपा ॥
अस श्रीराधाकृष्ण उदारा ❀ धर कर अस अगणित अवतारा ।

१ राधाकृष्ण २ महा ३ आवश्यकता ।

कोटि-कोटि ब्रह्मंडन माहीं ❀ कोटि काम कर सुखप्रद ताहीं ॥

दो०जहँ राधा तहँ कृष्ण प्रभु; वपु अनन्त प्रकटाय।
भक्तन भक्ति बढ़ै यथा, करें केलि तस आय ॥४८॥

द्विभुज चतुर्भुज वसुभुज धारें ❀ भुजा सहस्र रु कोटि उचारें।
इह प्रकार जन रक्षा करहीं ❀ नाना देह भक्त हित धरहीं ॥
परन्तु स्वयं जु नित्य विहारी ❀ नित्य विहारिनि अति सुकुमारी।
नित्य एक रस लीला करहीं ❀ शुद्ध माधुरीमय छवि धरहीं ॥
नित्य धाम रस धाम ललामा ❀ वसें युगल नित पूरण कामा।
है लीला यह भव विस्तारा ❀ अस ब्रह्मंड बहु रचैं उदारा ॥
तिनके तेज अंश त्रयदेवा ❀ ब्रह्मा विष्णु महेश कहेवा।
कोटि-कोटि भईं शक्ति महाना ❀ धनद[1] इन्दु[2] रवि शेष सुजाना ॥
कोटि अंश जोती ते भयऊ ❀ अगणित जलद[3] अनंग[4] जु रहाऊ।
तेंतिस कोटि विबुध[5] प्रकटाई ❀ नमो तिन्हें जिन अस प्रभताई ॥

दो० कोटि रुद्र रवि वरुण यम, शक्ति धनेश[7] गनेश।
मर्यादा पालन करत, सब ब्रह्मंड सुरेश ॥४९॥

कोटिन ब्रह्मा हरि हर जेऊ ❀ धरत ध्यान संतत उर तेऊ।
कोटि शेष अरु शारद माई ❀ गावत गुन-गन मुदित महाई ॥
अस श्रीराधाकृष्ण उदारा ❀ मंगल हेतु मनावौं प्यारा।
जिन प्रसाद जिनके गुन वृंदा ❀ विघ्न रहित नित गाउँ स्वच्छंदा ॥
युगल नाम के जाप प्रभावा ❀ तिन गुन गावन मो मन आवा।

१ कुबेर २ चन्द्रमा ३ बादर ४ कामदेव ५ देवता ६ देवी ७ कुबेर ।

भयउ हृदय मम परम हुलासा ❀ बढ़त रही गुन गावन आसा ॥
कोटि जन्म अर्जित अघ भारी ❀ पुन है कोटि काल भय हारी ।
कोटि जन्म आरतं हर जोऊ ❀ हरन अज्ञान भान सम सोऊ ॥
अस श्रीराधाकृष्ण भरोसा ❀ धार सुदृढ़ निज उर संतोषा ।
कृष्णायन रचना मन दीना ❀ शरण प्रताप महत उर चीना ॥

दो० श्रीराधा श्रीकृष्ण को, कहौं प्रभाव बखान ।
है प्रभाव बड़ उदधि सम, एक बूँद तहँ आन ॥५०॥

श्री राधा श्री कृष्ण समाना ❀ अपर ब्रह्म नहिं शास्त्र विज्ञाना ।
श्री राधा श्री कृष्ण समाना ❀ परम तत्त्व नहिं अन्य प्रमाना ॥
श्री राधा श्री कृष्ण समाना ❀ अपर तेज नहिं शास्त्र न माना ।
श्री राधा श्री कृष्ण समाना ❀ अवर लोक नाहीं को आना ॥
श्री राधा श्री कृष्ण समाना ❀ पूजा जप न अपर तप नाना ।
श्री राधा श्री कृष्ण समाना ❀ ज्ञान विज्ञान अवर नहिं ठाना ॥
श्री राधा श्री कृष्ण समाना ❀ दूसर नाम न रूप बखाना ।
श्री राधा श्री कृष्ण समाना ❀ परा भक्ति को को दे दाना ॥
श्री राधा श्री कृष्ण समाना ❀ उभयै लोक सुखप्रद नहिं पाना ।
श्री राधा श्री कृष्ण समाना ❀ मोचन पाप सुना नहिं काना ॥

दो० श्री राधा श्री कृष्ण सम, अवर न देवी देव ।
अपर नाहिं अवतार को, कहुँ जिहँ संज्ञा भेव ॥५१॥

श्री राधा श्री कृष्ण जु नामा ❀ धारण ध्यान समाधि विरामा ।
श्री राधा श्री कृष्ण जु नामा ❀ तीरथ योग यज्ञ वर तामा ॥

१ इकट्ठे किये हुये २ कष्ट ३ दोनों ४.नाशकर्ता ५ नाम महिमा ।

कोटि-कोटि ब्रह्मंडन माहीं ❀ कोटि काम कर सुखप्रद ताहीं ॥

दो॰ जहँ राधा तहँ कृष्ण प्रभु, वपु अनन्त प्रकटाय।
भक्तन भक्ति बढ़ै यथा, करैं केलि तस आय ॥४८॥

द्विभुज चतुर्भुज वसुभुज धारैं ❀ भुजा सहस्र रु कोटि उचारैं।
इह प्रकार जन रक्षा करहीं ❀ नाना देह भक्त हित धरहीं ॥
परन्तु स्वयं जु नित्य विहारी ❀ नित्य विहारिनि अति सुकुमारी।
नित्य एक रस लीला करहीं ❀ शुद्ध माधुरीमय छवि धरहीं ॥
नित्य धाम रस धाम ललामा ❀ बसैं युगल नित पूरण कामा।
है लीला यह भव विस्तारा ❀ अस ब्रह्मंड बहु रचैं उदारा ॥
तिनके तेज अंश त्रयदेवा ❀ ब्रह्मा विष्णु महेश कहेवा।
कोटि-कोटि भइँ शक्ति महाना ❀ धनद इन्दु रवि शेष सुजाना ॥
कोटि अंश जोती ते भयऊ ❀ अगणित जलद अनंग जु रह्यऊ।
तेंतिस कोटि विबुध प्रकटाई ❀ नमो तिन्हैं जिन अस प्रभुताई ॥

दो॰ कोटि रुद्र रवि वरुण यम, शक्ति धनेश गनेश।
मर्यादा पालन करत, सब ब्रह्मंड सुरेश ॥४९॥

कोटिन ब्रह्मा हरि हर जऊ ❀ धरत ध्यान संतत उर [illegible]
कोटि शेष अरु शारद माई ❀ गावत गुन-गन मुदित म[illegible]
अस श्रीराधाकृष्ण उदारा ❀ मंगल हेतु मनावौं प्यार[illegible]।
जिन प्रसाद जिनके गुन वृंदा ❀ विघ्न रहित [illegible] स्वच्छंदा।
युगल नाम के जाप प्रभावा ❀ तिन गुन गा[illegible] आवा।

---

१ कुबेर २ चन्द्रमा ३ बादर ४ कामदेव ५ देवता ६ देवी ७ कुबेर ।

भयउ हृदय मम परम हुलासा ❀ बढ़त रही गुन गावन आसा ॥
कोटि जन्म अर्जित[1] अघ भारी ❀ पुन है कोटि काल भय हारी ।
कोटि जन्म आरतं[2] हर जोऊ ❀ हरन अज्ञान भान सम सोऊ ॥
अस श्रीराधाकृष्ण[3] भरोसा ❀ धार सुदृढ़ निज उर संतोषा ।
कृष्णायन रचना मन दीना ❀ शरण प्रताप महत उर चीना ॥

दो॰ श्रीराधा श्रीकृष्ण को, कहौं प्रभाव बखान ।
है प्रभाव बड़ उदधि सम, एक बूँद तहँ आन ॥५०॥

श्री राधा श्री कृष्ण समाना ❀ अपर ब्रह्म नहिं शास्त्र विज्ञाना ।
श्री राधा श्री कृष्ण समाना ❀ परम तत्व नाहिं अन्य प्रमाना ॥
श्री राधा श्री कृष्ण समाना ❀ अपर तेज नहिं शास्त्र न माना ।
श्री राधा श्री कृष्ण समाना ❀ अवर लोक नाहीं को आना ॥
श्री राधा श्री कृष्ण समाना ❀ पूजा जप न अपर तप नाना ।
श्री राधा श्री कृष्ण समाना ❀ ज्ञान विज्ञान अवर नहिं ठाना ॥
श्री राधा श्री कृष्ण समाना ❀ दूसर नाम न रूप बखाना ।
श्री राधा श्री कृष्ण समाना ❀ परा भक्ति को को दे दाना ॥
श्री राधा श्री कृष्ण समाना ❀ उभयै लोक सुखपद नहिं पाना ।
श्री राधा श्री कृष्ण समाना ❀ मोचन[4] पाप सुना नहिं काना ॥

दो॰ श्री राधा श्री कृष्ण सम, अवर न देवी देव ।
अपर नाहिं अवतार को, कहुँ जिहँ संज्ञा[5] भेव ॥५१॥

श्री राधा श्री कृष्ण जु नामा ❀ धारण ध्यान समाधि विरामा ।
श्री राधा श्री कृष्ण जु नामा ❀ तीरथ योग यज्ञ वर तामा ॥

१ इकट्ठे किये हुये २ कष्ट ३ दोनों ४.नाशकर्त्ता ५ नाम महिमा ।

श्री राधा श्री कृष्ण जु नामा ※ कोटि नाम सम फलप्रद जामा ।
श्री राधा श्री कृष्ण जु नामा ※ चतुर वेद अधिकी विश्रामा ॥
श्री राधा श्री कृष्ण जु नामा ※ लिये तु किये वेद विधि कामा ।
श्री राधा श्री कृष्ण जु नामा ※ लिये किये सब तीरथ धामा ॥
श्री राधा श्री कृष्ण जु नामा ※ उच्चारत बहु मखं फल पामा ।
श्री राधा श्री कृष्ण जु नामा ※ रटत परम पद पाय ललामा ॥
श्री राधा श्री कृष्ण जु नामा ※ प्रेमा परा देय आरामा ।
श्री राधा श्री कृष्ण जु नामा ※ गुप्त भेद ज्ञापकं इक ठामा ॥

दो० श्री राधा श्री कृष्ण को, सुमरण किय जिहँ नाम ।
युग युग सहस समाधि अरु, किय तिहँ सब शुभ काम ॥५॥

सो० ऐसो नाम प्रभाव, जान लग्न मन की न हो ।
चढ़ि पत्थर की नाव, बसंत सो डूबन चहत ॥३२॥

* इति श्रीकृष्णायने प्रथम राधाकृष्ण द्वारे पञ्चम सोपान समाप्त *

अब श्री राधा नाम उदारा ※ तिहँ प्रभाव कछु करौं उचारा ।
पार न पाय सके कवि कोऊ ※ निज मति गावत हैं पुन सोऊ ॥
कृष्ण प्रिया वृषभान दुलारी ※ श्री राधा रसमयि रसकारी ।
राधा नाम जपे जन जोऊ ※ निश्चय सर्वसिद्धि लह सोऊ ॥
सकल सिद्धि को सुदृढ़ स्वरूपा ※ ताते राधा नाम अनूपा ।
पुन जिहिं कृष्ण कृपा के कारन ※ बहु विधि प्रयतन को कर धारन ॥

१ यज्ञ २ ज्ञान कराने वाला ।

विधि आदिक अपरन का गाथा ❀ अस दुर्लभ करुणा व्रज नाथा ।
सो प्रभु सकल लोकको स्वामी ❀ नित्य निरन्तर श्रीवन धामी ॥
यदि किहिं मुख राधा सुन लेवै ❀ कृपा कहा अंपि तिहँ जन सेवै ।
ताते कृष्ण कृपा जो चाहै ❀ राधा नाम रटन निर्वाहै ॥

दो० गौर तेज आश्रय सहज, श्याम तेज हिय आय ।
ताते अपि राधा रटै, कृष्ण सहज मिल जाय ॥५३

सो. लहै न कबहू पीव, श्रीराधा करुणा विना ।
किन्तु भटक यह जीव, दुसह दुःख भोगे सदा ॥२३॥

अत्र मैं कहौं कृष्ण प्रभु केरो ❀ नामायन श्रुति संत निवेरो ।
विधि संक्षेप कहौं मैं गाई ❀ जाते कृष्ण अर्थ को पाई ॥
कृषि भूं वाचक शब्द लखावै ❀ जो सत भाव प्रकट दरसावैं ।
ण निर्वृत्ति अर्थ आनन्दा ❀ कहैं संत श्रुति कोविद वृन्दा ॥
भू निर्वृत्ति ऐक्य जो गायो ❀ जाते चित अंतर गत आयो ।
ताते सत चित आनंद नामा ❀ अहै कृष्ण परब्रह्म ललामा ॥
कृषि संसार उपावन नामा ❀ ण निवृत्ति दोउ करि कामा ।
ताको कृष्ण नाम कह गायो ❀ तापिनि श्रुति यह अर्थ दिखायो ॥
परब्रह्म गूढ़ नराकृति अहई ❀ ताको कृष्ण नन्द सुत कहई ।
परिपूरण तम ब्रह्म जु लख्यऊ ❀ ताते कृष्ण नाम अस लख्यऊ ॥

दो० श्वेतदीप अधिपति तथा, नर नारायण मेशं ।
कृष्ण शब्द में वसत हैं, शंकर अज नागेशं ॥५४॥

१ निश्चय २ सत्ता ३ भूमापुरुष ४ विष्णु ५ शेष नाग।

सर्व तेज की राशी जोऊ ❀ सर्व मूर्ति स्वरूप जु होऊ।
सर्वाधार सर्व को बीजा ❀ ताते कृष्ण नाम बुध ईजा॥
कृषि उत्कर्ष वचन बुध भाख्यो ❀ ण सद्भक्ति वचन तहँ राख्यो।
अतिशय देन वाक्य अ अहई ❀ कृष्ण नाम बुध ताहित कहई॥
कृषि निर्वाण वचन कह गाई ❀ णकार मोक्ष वचन दिखराई।
अकार दातृ वचन है जोई ❀ ताहित कृष्ण नाम अस होई॥
सुर सुरपति ऋषि-ऋषिपति जेते ❀ असुर नाग गंधर्व नर केते।
सबको मन हर लेवै जोऊ ❀ कृष्ण नाम ता कारण होऊ॥
नयन पूतरी जस है श्यामा ❀ दरसावै जग वस्तु ललामा।
तथा जोहि धारे हिय माहीं ❀ गुप्त भेद लह कृष्ण कहाहीं॥

दो. कोटि अंड उत्पन करै, पालन लय कर जोउ।
परंब्रह्म अस नाम जो, शब्द कृष्ण कह सोउ॥५५॥

अंग श्याम घनसम हैं जहीं ❀ कानन भयो श्याम रंग तहीं।
रमत राधिका युत तहँ जोऊ ❀ ताहित कृष्ण नाम वर होऊ॥
कर्षात निज लावण्यहि करके ❀ मुरली मधुर ध्वनी उच्चरके।
श्रीराधा मोहन गुण अहई ❀ सालंकार कृष्ण तिहँ कहई॥
सब तीर्थन आकर्षण करके ❀ इक सर माहिं वारि वर धरके।
किय सरवर वह वर सवतेही ❀ राधा प्रेम हेतु कर जेही॥
तहां स्नान किय सखन समेता ❀ ताते कृष्ण नाम कह वेत्तां।
क उच्चार करत जन जबहीं ❀ वेपँते यम किंकर तबहीं॥

१ पूज्यो २ श्रेष्ठ ३ देने वाला ४ कारी ५ मोहित करने का ६ जानने वाले ७ काँपते हैं।

कहत ऋकार न ठहरत तेऊ ❀ प भाखत पातक अपि जेऊ ।
ण के वदत ठहर नहिं रोगा ❀ अ भाखत जा मृत्यु अयोगा ॥

दो० धावमान ये होइँ सब, भीरु[1] हो मन माहिं ।
अस है नाम प्रभाव जिहँ, कृष्ण कहत श्रुति ताहिं ॥५६॥

भक्त जनन के क उचरेही ❀ जन्म-मरण हर कैवल[2] देही ।
ऋकार दास्य अतुल कहवावे ❀ प इच्छा भक्ती मन पावे ॥
अरु मंहवाम णकार करावे ❀ तिहँ सम समय सुखेनं[3] बितावे ।
तरसारूप्य विसर्ग कहाई ❀ लहत न संशय या में राई ॥
सिमृती[4] उक्ति श्रवण कर जोऊ ❀ कृष्ण नाम महिमा अस होऊ ।
धेनु लोकतें रथ ले धावें ❀ किंकर श्रीहरि के हुलसावें ॥
पुहुमी[7] रज संख्या बुध करहीं ❀ नाम प्रभाव न सकें उचरहीं ।
गावत तद्यपि नाम प्रभाऊ ❀ कृष्ण नाम कर्पित चित चाऊ ॥
कृष्ण नाम सम अपर न नामा ❀ नहिं होवेगो है न ललामा ।
कृष्ण नाम वेदिक[8] विदु कह्यऊ ❀ सकल नाम तें वर[9] यह रह्यऊ[10] ॥

दो० कृष्याति राधा प्रेम कर, यमुना तट कानन ।
लीला कर आनंद लह, सोऊ कृष्ण आन न ॥५७॥

सो० सुमरत[4] जो फल होय, नाम कोटि भगवन्त के ।
कहै[5] कृष्ण यदि कोय, वसंत सो फल किलं लहै ॥३,४॥

॥ इति श्रीकृष्णायने प्रथम राधाकृष्ण द्वारे षष्ठम सोपान समाप्त ॥

---

१ डरपोक २ मुक्ती ३ सुख पूर्वक ४ सुमरण करना ५ कहना ६ सुनना ७ पृथवी ८ वेद के ज्ञाता ९ दूसरा १० निश्चय ।

अपर देव नहिं जान प्रभाऊ ❀ रहैं निरन्तर जिहँ भय पाऊ ॥
देवि सरस्वति कर स्तुति जाकी ❀ जड़ीभूत भयभीत सुथाकी ।
दासीपन को कर नित कामा ❀ महालक्ष्मी है जु ललामा ॥
सत्व स्वरूपिणि सुरसरि माई ❀ जाकी कृपा पुनीत कहाई ।
जन्म रु मृत्यु जरा दुख हर्ता ❀ जो त्रिभुवन दुख हर सुख कर्ता ।
जाके दरस परस अघ नासैं ❀ न्हावत जो जन तिहँ जलरासैं ।
जाके नाम लेत शुभ होई ❀ पाप ताप संताप न कोई ॥

दो० दुर्गा दुर्गति नाशिनी, पाद-पद्म जिहँ ध्याय ।
देवी जो त्रयलोक की, मूल प्रकृति कहवाय ॥६१॥

विश्व असंख्य जु चित्र विचित्रा ❀ अहैं स्थूल से स्थूल पवित्रा ।
लोम कूप अस सब जिहँ रहहीं ❀ महाविष्णु ताको श्रुति कहहीं ॥
सो जिहँ षोड़श अंश कहायो ❀ सर्वेश्वर अस कृष्ण लखायो ।
है सर्वान्तर आतम जोऊ ❀ सर्वज्ञ रु प्रकृती पर सोऊ ॥
जोतिस्वरूप ब्रह्म जो भाखा ❀ भक्तानुग्रह विग्रह राखा ।
निर्गुण अरु निरीह जिहँ कहाऊ ❀ निरआश्रय पूर्णानँद रहाऊ ॥
परमानन्दं पर सानन्दं ❀ जिहँ कह यशुमति सुत ब्रजचन्दं ।
स्वेच्छामयं सर्व के बीजा ❀ सब पर श्रेष्ठ सनातन ईजा ॥
शब्द ब्रह्म महब्रह्म जो भाखा ❀ सगुण ब्रह्म निर्गुण शुध राखा ।
इह प्रकार योगी अरु वेदा ❀ ध्यावत अहनिशि पाव न भेदा ॥

दो० सहस मनुन की अवधि लग, निराहार व्रत धार ।
पाद्म कल्प में तप तपे, पाद्मे पद्मं आनिवार ॥६२॥

१ शरीर २ इच्छा रहित ३ निराधार ४ ब्रह्मा ५ कमल ।

पुन कीनों तप तहँ बहु काला ❀ तबहु न देख्यो रूप रसाला ।
यद्यपि शब्द सुन्यो तिहँ ताहीं ❀ तद्यपि नयनन देख्यो नाहीं ॥
तावत काल फेर तप कीनों ❀ तब तिहँ दरस पाय वर लीनों ।
अस प्रभु दुर्लभ दरस जु आहीं ❀ भक्ताधीन भक्ति वश माहीं ॥
तस शिव तप किय दरशन हेतू ❀ अज वर्ष अवधि होय चित चेतूं ।
ज्योतिर्मंडल मध्य महाना ❀ धेनुलोक देख्यो हरषाना ॥
सर्व तत्व श्रीकृष्ण कृपाला ❀ दिय वर शिव प्रति परम विशाला ।
निर्मल पराभक्ति प्रभु जी की ❀ पाई अति दृढ़ मन विधि नीकी ॥
अरु श्रीकृष्ण आतमसम शिव को ❀ भूत वत्सल किय अस हरि इवँ को ।
सहस स्वर्गपति अवधि प्रयन्ता ❀ निराहार व्रत धार इकन्ता ॥

दो० जिहँ हित कीन अनंत तप, धर्मराय मन लाय ॥
तब तिहँ निजसम ज्ञान दिय, कृष्ण देव सुख दाय ॥८३॥

तदा भयो साक्षी सब केरो ❀ कर्म धर्म फल करैं निवेरो ।
सब जन शास्ता सब फल दाता ❀ कृष्ण कृपा भयऊ बुधि ज्ञाता ॥
कर बड़ तप वासव चिरकाला ❀ कृष्ण अनुग्रह भो सुरपाला ।
इह विधि सब को दे अधिकारा ❀ निर्विकार रह आप उदारा ॥
चिन्मय इकरस अविचल धामा ❀ बसैं नित्य युत प्रिया ललामा ।
रसमय शुध माधुर्य अनूपा ❀ करैं केलि मिलि सखिन स्वरूपा ॥
गुप्त तत्त्व यह गुरू लखावैं ❀ जाको वे कृपालु अपनावैं ।
सो गुरु कैसो रसिका चारी ❀ श्री वन तत्त्व हिये जिहँ धारी ॥

१ ब्रह्मा २ आयु ३ तक ४ सावधान ५ गोलोक ६ दास ७ बराबर ८ कौन है ९ दण्ड देने वाला १० इन्द्र । –

राधा कृष्ण ध्यान उर लावै ❀ नित-नित नूतन लाड़ लड़ावै।
आन उपासन जिहँ मन नाहीं ❀ सतत मग्न शुध माधुरि माहीं॥

दो॰ऐसे गुरु के शरण में, शिष्य धार शुध भाव।
जावै हंपन त्याग कैं, हिये चटपटी चाव ॥६४॥

सो॰ तब गुरु तिहँ अपनाय, गुप्त तत्त्व दरसाय हैं।
जिहँ प्राप्ती ह्वै जाय, वसंत अपर न चाय हैं॥३५॥

॥ इति श्रीकृष्णायने प्रथम राधाकृष्ण द्वारे सप्तम सोपान समाप्त॥

तत्त्र कृष्ण त्रय लोकन माहीं ❀ पूर्णानन्द जगत गुरु आहीं।
सर्व देववर वहि इक देवा ❀ सब प्राणिन इच्छित फल देवा॥
तारन भवनिधि नाव कहायउ ❀ दुख दारिद्र हरन श्रुति गायउ।
सदा ध्यान के योग्य स्वरूपा ❀ योगि ज्ञानि कर परम अनूपा॥
ज्ञेयं सदा सिद्धन कर अहई ❀ सिद्धान्तेहु दृढीकृत रहई।
वेदान्तिन कर गीतं जु कहाऊ ❀ त कष्ट निकन्दन रहाऊ॥
सर्व जीव प्रानन धर जोऊ ❀ कर्म पाश मोचन तिन सोऊ।
एक कृष्ण ही गति सबहीकी ❀ दुस्तर भवसागर नौ नीकी॥
सब जग को ध्वंसक है काला ❀ काल कवेल नित जगत विशाला।
कालाधीन काल विच रहई ❀ कालोत्पन्न जगत्त्रय अहई॥

दो॰ सोउ काल श्रीकृष्ण को, भृत्य जान जग माहिं।
कृष्णाधीन रु कृष्ण भर्व, रहत कृष्ण भय आहिं॥६५॥

१ जानने योग्य २ गाने योग्य ३ कल्याण करने वाला ४ नाशकर्ता ५ ग्रास ६ पैदा भया।

है अस सतत कृष्ण त्रय काला ❀ सदा देत गति सब नँदलाला ।
तात काल विजय जे चहहीं ❀ ते नित शरण कृष्ण के रहहीं ॥
अपर त्रिलोक देव जे कहाऊ ❀ ते अपि कृष्णाश्रित सब रहाऊ ।
तिष्ठति कृष्णाश्रित नित तेऊ ❀ रहत कृष्ण अनुचर सम भेऊ ॥
जस सूर्योदय होवत जबही ❀ क्षीण कांति तारागण तबही ।
तस सब देव कृष्ण प्रभु आगे ❀ हत वीरज हत ओजस लागे ॥
इतर तत्व नहिं कृष्ण समाना ❀ पद नहिं इतर कृष्ण सम माना ।
आन ज्ञान केशव सम नाहीं ❀ सखा न अपर कृष्ण सम आहीं ॥
कृष्णहि एक मित्र सब केरो ❀ जगद्गुरू इक कृष्णहि टेरो ।
कृष्ण समान न अपर उदारा ❀ कैसेहु नाम जपत त्वर तारा ॥

दो० कृष्ण-कृष्ण जे जीव जग, रटत नाम अस आहिं ।
तिनकी पुनरावृत्ति नहिं, कल्प कोटि शत माहिं ॥६६॥

तुष्टे कृष्ण मित्र जग होई ❀ रुष्टे कृष्ण शत्रु जग सोई ।
कृष्णात्मक यह जग सब रहही ❀ कृष्णाश्रित सब अगजग अहही ॥
जैसे भानु उदय जब होवै ❀ ज्ञान पदारथ बिन श्रम जोवै ।
तथा कृष्ण रवि जिहँ जिय माहीं ❀ प्रकटैं ज्ञानादिक दरसाहीं ॥
ता कारन सब नर सब काला ❀ चहैं शरण श्रीकृष्ण कृपाला ।
अपर उपाय न त्रिभुवन माहीं ❀ कृष्ण बिना जो भव तर जाहीं ॥
ताते शरन कृष्ण के चरना ❀ रे मन गह लीजै यदि तरना ।
नाहिं अन्त पछतावो भारी ❀ जब जावो नर तन यह हारी ॥

१ तेज २ जड़ जंगम ।

सुर दुर्लभ भारत भुवि माहीं ❀ पाय जन्म प्रभु सुमरौ नाहीं।
तो किल दुख भोगोगे भारी ❀ कह वसंत अस संत उचारी॥

दो० ताते कृष्ण प्रभाव को, सुन धारौ हिय माहिं।
भज सनेहसों रात दिन, तौ जावौ प्रभु पाहिं॥६७॥

सो० सर्वातम गत बाध, परंब्रह्म श्री कृष्ण विभु।
सुखप्रद सर्वाराध, दुराराध्य द्रुत साध्य प्रभु॥३६॥

शश्वद् द्रश्य स्वभक्त बखाना ❀ सतत अदृश्य अभक्त पछाना।
निज जनहीं को साध्य कहावै ❀ है असाध्य जहँ भक्ति अभावै॥
जाको चरित अहै दुर्ज्ञेया ❀ कार्य चित्त चिंतन नहिं ज्ञेया।
जिहँ दुरत्य माया अति आहीं ❀ जिहँ वश-बद्ध जीव जग माहीं॥
वहत वायु जाको भय पाई ❀ सव ब्रह्मंडन मध्य रहाई।
कमठ अनंतहु जिहँ भय धारैं ❀ अखिल ब्रह्मंड सतत वच पारैं॥
शेप धरै जिहँ भय निज माथे ❀ विश्व असंख्य सुमर सुरनाथे।
सप्तलोक विधिलोक समेता ❀ सात पताल मध्य भुवि जेता॥
अस कृत्रिम त्रिभुवन है जोऊ ❀ वहु विराट धारत है सोऊ।
तिहँ विराट वह अंश बखाना ❀ जाके सत्व धरत वपु नाना॥

दो० वहु ब्रह्मा जिहँ भय रचैं, अंड सृष्टि वहु जोइ।
लोम कूप वैराट के, वसत अंड सब सोइ॥६८॥

सो० पोषत सब जग आहिं, करुणानिधि माधव जिते।
संहारत भय जाहिं, कालानल रुद्रहु सकल॥३७॥

---

१ शीघ्र २ शीघ्र देखने योग्य ३ प्राप्त होने योग्य ४ कछुवा।

महा देव मृत्युञ्जय करहीं ❀ ते अपि जाकी भय उर धरहीं ।
रटत कृष्ण नित निज हृदि धामा ❀ ध्यान मग्न रहे लह विश्रामा ॥
षट गुण इन्द्रिय भोग विरक्ता ❀ ते अपि भजत कृष्ण अनुरक्ता ।
सिद्ध योगि डर धर उर माहीं ❀ बसत विविक्त[1] स्थल भज ताहीं ॥
जिहँ भय अनल[2] दहन कर कर्मा ❀ तपत भानु जिहँ रख भय धर्मा ।
जिहँ भय वासव वर्षा करही ❀ अपि मृत्यू जाको भय धरही ॥
कर यम शासन जिहँ भय धारे ❀ पापी नरन कर्म अनुसारे ।
जाके भय भुवि धारत जीवा ❀ सचराचर करुणा रस पीवा ॥
सूयति[3] सृष्टि प्रकृति भय जेहीं ❀ महदादिक डर पावत तेहीं ।
इह विधि अति दुर्ज्ञेय प्रभावा ❀ को जानत सब रंच दिखावा ॥

दो० जिहँ प्रभाव नहिं जान सक, ब्रह्मा विष्णु महेश ।
सो वसंत किम मंदमति, जानै चेष्ट[4] अशेष ॥६९॥

कर्ता भर्ता हर्ता जोऊ ❀ कोटि ब्रह्मंडन को इक सोऊ ।
स्तुति भाखत चतुरानन देवा ❀ उर वच मौन गही किय सेवा ॥
जेहिं स्तुति पञ्चानन[5] तेही ❀ है अगम्य तिहँ कहे न सकेही ।
है जु षडानन शंभु कुमारा[6] ❀ कह न सकत वह स्तुति विस्तारा ॥
करत द्वादशानन[7] तिहँ स्तूती ❀ द्वादश जीभ अटक कर सूती ।
कही शतानन शक्ती[8] जोऊ ❀ भाख प्रशंस मौन भइ सोऊ ॥
सहस्रानन अनंत अहिराया[9] ❀ पूरण स्तुति वह कर नहिं पाया ।
अनंतानन[10] नहिं सके उचारी ❀ कृष्ण स्तुति समस्त सुखकारी ॥

१ एकांत २ अग्नि ३ पैदा करती है ४ क्रिया ५ शिव ६ कार्तिक ७ सूर्य ८ देवी ९ शेष १० विराट ।

दो० या प्रकार गुन सिंधु प्रभु, को कवि पावै पार।
शिव विधि शेष न कह सकत,गो वसंत तहँ हार॥७६॥

इत्यादिक गुन वृंद स्वरूपा ❀ कहत भक्ति तिहँ संत अनूपा।
गुण गुणिको अभेद है जाते ❀ युगल स्वरूप भक्ति है ताते॥
जन उद्धारन पापी तारन ❀ युगल स्वरूप मिलावन कारन।
भक्ति प्रकट भइ इह जग माहीं ❀ बिना भक्ति को प्रभु लहै नाहीं॥
चतुर मुक्ति सेवा हित दीनी ❀ भक्ति शिरोमणि सब ते कीनी॥
जिन जिन जब जब प्रभु को पायो ❀ भक्तिहिते श्रुति संतन गायो॥
ज्ञान विराग पुत्र श्रुति टेरे ❀ उपजैं भक्तिहिते अस हेरे।
अपर सकल सिद्धी जे अहहीं ❀ धार भक्ति नर निश्चय लहहीं॥
यदा युगल प्रभु वश ह्वै जावैं ❀ तदा अपर किम वश नहिं लावैं।
सकल सुखन को कारण स्वामी ❀ सर्वेश्वर प्रभु पर सुख धामी॥

दो० यदि ताकी करुणा चहौ, गहौ भक्ति उर माहिं।
भाव अनन्य सुदृढ़ बिना,लहौ कबहु सुख नाहिं॥७७॥

सो० वृत अनन्य को भेद,अति अगाध अरु बड़ सरस।
मिट्यो सकल तिहँ खेद,जिहँ सद्गुरु अनुग्रह लह्यो॥९॥

श्री प्रभुके गुन वृन्द स्वरूपा ❀ भक्ति रूप है सोउ अनूपा।
जाको स्मरण मात्र कर कोऊ ❀ कृष्ण प्राप्ति तिहँ जनको होऊ॥
इह विधि की प्रभु भक्ति जु अहई ❀ तिहँ महिमा को कोविद[1] कहई।
जाको धर नर उर घर[2] माहीं ❀ आव कृष्ण निश्चय कर ताहीं॥
उत्तम वर्णाश्रम की गाथा ❀ कहै कवन वे स्वतः सनाथा।
कृष्ण सदनं ताके अपि आवै ❀ यदि श्वपचहु[3] भक्ती उर लावै॥

१ पंडित २ घर ३ चांडाल

तातें भक्तिहि त्रिभुवन माहीं ❀ मातु तुल्य हितकारक आहीं ।
देय कृष्ण पर पद अधिकारा ❀ योग क्षेम कर विविधि प्रकारा ॥
अमित शक्ति प्रभु की श्रुति गाई ❀ सबते श्रेय भक्ति हरि भाई ।
तातें हरिजन को यहि करनों ❀ अपर छांड़ भक्तहि उर धरनों ॥

दो० अष्टादश अरु चार को, तस संतन सिद्धांत ।
वसंत भगवद् भक्ति बिन, मिटै न मन की भ्रांत॥७८॥

सो०जो नर भक्ती त्याग, राग करत साधन अपर ।
सो निश्चय हतभाग, पाग रहै संसृति अमॅर ॥ ४० ॥

वर्णाश्रम थित हैं नर जेते ❀ तप मख कर गति पाव न तेते ।
कलि में वर्णाश्रम के धर्मा ❀ पालन कर न सकैं श्रुति कर्मा ॥
तिनकी भक्ति बिनागति आहीं ❀ कहूँ न देखी शास्त्रन माहीं ।
सोउ भक्ति बहु भाँतिन गाई ❀ यथाधिकार तथा दरसाई ॥
तिन में द्वै प्रकार मुख कह्यऊ ❀ वैधी रागा संज्ञा रह्यऊ ।
विधि विधानसों करै जु भक्ती ❀ नियम सुदृढ़ता में अनुरक्ती ॥
वैधी भक्ती सोइ कहाई ❀ भवसागर तारन प्रकटाई ।
जहाँ न विधिविधान कछुआहीं ❀ एक प्रेम ही है जिहँ माहीं ॥
रागा भक्ति ताहि को कह्यऊ ❀ शीघ्र फलद प्रेमीजन लह्यऊ ।
चींटी अरु विहंग पथ जैसे ❀ वैधी रागा भक्तिहु तैसें ॥

दो० फल प्राप्ती है दुहुन में, दोउ परम सुखदाय ।
प्रथम वैधि भक्ती धरै, रागा सहजहि पाय ॥ ७९ ॥

सो० आर्त जिज्ञासु सकामि, अरु ज्ञानी अपि भक्ति धर ।
करैं प्राप्त सुखधामि, सबकी सिद्धी भक्तिते ॥४१॥

१ श्रेष्ठ २ पुराण अठारह ३ वेद चार ४ सर्वदा ५ पक्षी ६ मार्ग.

तातें इह भव भक्ति समाना ❀ नाहिं श्रेयप्रद[1] अपर बखाना ।
भुवन चतुर्दश में इक भक्ती ❀ अहै अचल सुखप्रद अनुरक्ती ॥
भक्तिहि के वश है भगवन्ता ❀ भक्ति बिना नहिं भव दुख अंता ।
भयप्रद साधन अपर जु अहहीं ❀ निर्भय इक भक्तिहिते रहहीं ॥
तातें प्रभु भक्ती भव एकू ❀ सब प्रकार फल देत अनेकू ।
जे संसार जन्म जन पावैं ❀ कर भक्ती श्रीकृष्ण रिझावैं ॥
ते वर भक्त धन्य भुवि अहहीं ❀ कृष्णईश जिनके वश रहहीं ।
भक्तिवान सब कुल को तारे ❀ भक्ति बिना भटकै भुवि भारे ॥
श्रुति पुरान सिमृती मत एही ❀ भक्ति सनातन कह सब तेही ।
सब साधन के मध्य सुहाई ❀ भक्ती अतिशय श्रेष्ठ कहाई ॥

दो॰ कह्यो कृष्ण कौन्तेय को, दृढ़ पंन[2] जान हमार ।
भक्त मोर नहिं नाश हो, यह गीता आधार ॥८०॥

अस भगवत वाक्यन करकेही ❀ भक्तिहि परम श्रेष्ठ सबतेही ।
कर भक्ती अनन्यता मोरी ❀ ज्ञात होउँ अर्जुन तुम कोरी ॥
अस श्रीश्याम सुंदर बचते ही ❀ भक्ती अति ही श्रेष्ठ सबतेही ।
श्रद्धावान जु मोर परायन ❀ ते जंन मुहिं अतिशय प्रिय भावन ॥
अस श्रीकृष्ण वाक्य कर केही ❀ भक्तिहि परम श्रेष्ठ सबतेही ।
पत्र पुष्प फल जलकर जोऊ ❀ भक्ति युक्त अर्पे मुहिं कोऊ ॥
तंत अर्पित प्रमुदित ह्वै पाऊँ ❀ तिहँ जनपै अति मुदिता छाऊँ ।
अस श्रीहरि वाक्यन करकेही ❀ भक्ती अतिहिं श्रेष्ठ सबतेही ॥
सर्व धर्म तज इक मोहीके ❀ शरण आव अर्जुन तुम नीके ।
मैं तोकों सबहिन पापन तें ❀ करौं मुक्त तज शोक स्वंमन[3] तें ॥

१ कल्याणदायक २ प्रतिज्ञा ३ अपने मन से ।

दो॰ अस श्री भगवत वचनतें, भक्ति अतिहि बलवंत।
तातें साधन सबनमें, भक्तिहि प्रिय श्रीकंत ॥८१॥

होय विविक्त[1] स्थल को वासी ❀ शुद्ध सत्त्व लघु[2] भोजन[3] आसी।
काँय[4] हियो वानी यह तीनों ❀ राखै संयम माहिं सुचीनों ॥
ध्यान योग के होय परायन ❀ अविच्छिन्न वृत्ती मन भायन।
दृढ़ वैराग कह्यो है जोई ❀ नीकी विध तिहँ आश्रय होई ॥
अहंकार बल दर्प महाना ❀ काम क्रोध परिग्रह[5] कर हाना।
ह्वै निमर्म साधक है जोई ❀ योग्य ब्रह्म होवन है सोई ॥
ब्रह्म रूप लह्यऊ ता पाछे ❀ रहे मुदित चित दृढ़ मति काछे।
शोक न करै हरै अभिलासा ❀ सब भूतन सम दृष्टि विकासा ॥
ऐसो जन निश्चय सों पावै ❀ पराभक्ति मोरी हुलसावै।
अस श्रीकृष्ण वचन करके ही ❀ भक्ती परम श्रेष्ठ सबते ही ॥

दो॰ ज्ञानी कर्मी तपिन तें, योगी अधिक प्रमान।
योगिन में अपि श्रद्धयुत, भजै जु मोहिं सुजान ॥८१॥

सो॰ अधिकाधिक हैं तेउ, अर्जुन मो मत जान यहि।
हैं जु कृष्ण वच येउ, ताते सबतें भक्ति वर ॥४२॥

होय दुराचारी अपि जोऊ ❀ भजत अनन्य भाव मुहिं कोऊ।
वहि साधू करके किल मानौ ❀ वाही को व्यवसाय[6] सुहानौ[7] ॥
अस श्रीकृष्ण वचन करके ही ❀ भक्ती अतिहि श्रेष्ठ सब तेही।
द्वादश गुण युत ब्राह्मण जोऊ ❀ भक्ति विहीन होय यदि सोऊ ॥
तिहँते उत्तम श्वपच पछानो ❀ भक्त जु हरि को होय अमानो।
श्रीशुक शास्त्र[8] माहिं अस गायो ❀ भक्ति बिना कोउ कृष्ण न पायो ॥

१ एकांत २ थोरा ३ खाने वाला हो ४ शरीर ५ पदार्थ संग्रह ६ विचार ७ सुन्दर ८ श्रीमद्भागवत।

इत्यादिक प्रभु वच करके ही ❀ भक्ती अतिहि श्रेष्ठ सबते ही ।
अस भक्ती जिहँ जन जिय धारी ❀ बार-बार तापै बलिहारी ॥
लच्छण कछुक सरति तिन गावौं ❀ जिन प्रसाद प्रभु करुणा[१] पावौं ।
संतत इष्ट ध्यान लवलीना ❀ यथा वारि[२] तत्पर रह मीना[३] ॥

दो॰ सरस सरल मृदुवाणि सों, उच्चरें श्री प्रभु नाम ।
सुनतहि अपरन अपि हियो, पावै बड़ विश्राम ॥८३॥

श्रीहरि रसमयि लीला गावैं ❀ गाय-गाय मन मोद बढ़ावैं ।
गावत गुन गद-गद स्वर नाचैं ❀ ह्वै पुलकावलि और न राचैं ॥
कबहु ध्यानैं[४] माहिं हँस बोलैं ❀ सुन्दर सरस वचन अनमोलैं ।
कबहु स्नेह अश्रु बहैं[५] नैना ❀ लख माधुर्य छटा छवि-ऐना ॥
विधि अनेक सों लाड़ लड़ावें ❀ तत्सुख सुखी सुमोद बढ़ावें ।
निज सर्वस्व इष्ट ही जिनको ❀ अधिक इष्ट तें अपर न तिनको ॥
नख-शिख इष्ट स्वरूप समाना ❀ बिना इष्ट निरखैं नहिं आना ।
सब में निरख इष्ट प्रभुताई ❀ रहैं मुदित चित मद नहिं राई ॥
सहज दीनता नित उर आवे ❀ सबसों मधुर वचन कहवावे ।
सब विधि सब पै सहज कृपाला ❀ सहजहिं प्रणतन के प्रतिपाला ॥

दो॰ लख समृद्धी[६] आन की, हरषैं अपन समान ।
पर प्रशंस तस कान सुन, ह्वै प्रमुदित निज जान ॥८४॥

सो॰ निरख नयन पर नारि, शोभा संपन रति[७] सदृश ।
उपज न हिये विकारि, हरि भक्तन रंचक अपी ॥४३॥

१ कृपा २ पानी ३ मच्छी ४ लीलानुसंधान ध्यान ५ बहते हैं ६ वैभव ७ कामदेव की स्त्री ।

कवित्त

चुलुक समान नदिपतिहिं विलोक जेऊ,
रविहिं खद्योत मेरु लोष्टवत जानहीं।
विधि आदि देव गन भृत्य सम जान जेऊ,
चिंतामणि चय शिला शकल पछानहीं॥
कल्पद्रुम काष्ठ सम सकल जगत अपी,
तृणराशी सदृश सुहृद पहिचानहीं।
अहो कहाँ लगं कहीं भक्तन निस्पृहपन,
निज तनहू को अपि भार वत मानहीं॥ २॥

भक्तिवन्त भगवन्त दुलारा ❀ दोउ परस्पर प्राण अधारा।
इह विधि लक्षण हरिजन केरे ❀ यथा बुद्धि भाखे जो हेरे॥
जस श्रीप्रभु गुन आव न अंता ❀ तस हरिजन के गुण अगणंता।
धन्य–धन्य हरिजन जग अहहीं ❀ जिनके वश श्रीप्रभु अपि रहहीं॥
जिहँ किहँ विध यदि श्रीप्रभु माहीं ❀ दृढ़ बुद्धी जिहँ जनकी आहीं।
युक्त राग अथवा युत द्वेषा ❀ चित धर कृष्ण स भक्त विशेषा॥
यथा खेत में बोवत बीजा ❀ उलट सुलट तिहँ क्रम नहिं ईजा।
तथा कृष्ण श्रीहरि के माहीं ❀ नर धर प्रेम इच्छित फल पाहीं॥
होय सकामि अकामि जु भक्ता ❀ प्रभु-प्रापति तिनको श्रुति उक्ता।
धर सकामता गोपिन गायो ❀ तस ध्रुव आदि भक्त प्रभु ध्यायो॥

दो० सनकादिक नारद रटत, ह्वैकर उर निष्काम।
किय सुमरण अति द्वेषते, चैद्यादिक[१] बलधाम॥८५॥

१ शिशुपालादिक।

कंस भूप भय कंपित ध्यायो ❀ वैर भावसों रावण पायो ।
अति अनुराग युक्त ऋषि वृंदा ❀ गावैं हरिगुन तज जग फंदा ॥
वा पति पुत्र पिता के भावा ❀ वा मित्रादि भाव प्रभु ध्यावा।
इत्यादिक निज भावनुसारा ❀ भज भगवत पावत फल प्यारा॥
जो जिहँ विधि सुमरत धर प्रेमा ❀ तिहँ विधि मैं भजहूं अस नेमा।
गीता कृष्ण वचन अस भाखे ❀ तिहँ अनुसार अपन पन राखे ॥
भक्तन साखि प्रकट जग माहीं ❀ ताते यहँ विस्तृत कहि नाहीं ।
यहि निष्कर्ष कहत श्रुति संता ❀ जिहँ किहँ विध सुमरौ श्रीकंता॥
सार रूप यह त्रिभुवन माहीं ❀ विन हरि भजन रंच सुख नाहीं।
भाखे दीन सुखी धनवंता ❀ धनी कहे प्रमुदित नरकंता ॥

दो॰ कह नृप नृपंनृप मोद लह, पुन सो कह सुरनाथ ।
शक्र कहे सुख विधिहु को, विधि भाखे सुनपाथ॥८६॥
कृपापात्र श्रीकृष्ण के, भाखत संत सुजान ।
विना भक्त भगवन्त के, आनंदित नहिं आन ॥८७॥
ताते रे मन कृष्ण भज, तज प्रपंच दुखदाय ।
भज परलोक प्रमोद हित, व्रज भक्ती सुखदाय ॥८८॥

सो॰ ईश विमुख नर जान, खर सम इह संसार में ।
केवल भार पछान, होवै आकुल अवनि अपि ॥४४॥

१ सार २ राजा ३ चक्रवर्ति भूप ४ इन्द्र ५ शून्यमार्ग में (योग समाधि में) ६ प्राप्त कर ७ गर्दभ ८ व्याकुल ।

संतत कर हरि चिंतन जोऊ ❁ ताको बिन संशय मिल सोऊ ।
किहँ प्रकार अपि सुमरण करहीं ❁ ताको कृष्ण देव दुख हरहीं ॥
अरु तिहँ कर प्रभु आप समाना ❁ श्रीहरि राग-द्वेष सम माना ।
युत प्रमाद अथवा अज्ञाना ❁ लोभ मोह युत सुमिरण ठाना ॥
चिंतन चतुर शिरोमणि जोऊ ❁ पावत परम धाम नर सोऊ ।
देव मनुज पशु पक्षी केते ❁ त्रियग प्रभृति जग जँतू जेते ॥
ते सब कृत्य-कृत्य भै जीवा ❁ मुक्त भये सम माधव सीवा ।
दुर्विनीत अति दुष्ट सुभाऊ ❁ बहु दुर्वार दैत्य रण आऊ ॥
अस बहु भाँति उपासक जेते ❁ प्रभु पद को प्रापत भै तेते ।
भस्मासुर वर कर शिव भोला ❁ संकट सन्यो शंभु मन डोला ॥

दो० सुमिरण किय हरि आत्म निज, छुट्यो उपद्रव ताहिं ।
इम बसंत प्रभु भजत जे, पावत सब फल आहिं ॥८९॥

* इति श्रीकृष्णायने प्रथम राधाकृष्ण द्वारे नवम सोपान समाप्त *

दो० पंच प्रकारन ब्रह्म बुध, शास्त्रन में दरसाय ।
श्री कृष्णाभिद ब्रह्म पर, पष्टम दियो बताय ॥९०॥

प्रथमें शब्द ब्रह्म इक कहाऊ ❁ दूजो महद ब्रह्म तहँ रहऊ ।
तीजो सगुण ब्रह्म कर गायो ❁ चौथो निर्गुन ब्रह्म दिखायो ॥
पंचम शुद्ध ब्रह्म बुध भाख्यो ❁ पष्टम परम्ब्रह्म मन राख्यो ।
तथा रूप गुण तिनके जेते ❁ भाखे लक्षण युत सब तेते ॥

---

१ श्रीकृष्ण नाम वाले ।

शब्द ब्रह्म अनहद श्रुति माना ❀ जाते है सब ब्रह्मन ज्ञाना।
महद ब्रह्म भाखेउ प्रधाना। ❀ जिहँते सगुण प्रभृति प्रकटाना॥
प्रकृति युक्त जो पुरुष कहावे ❀ ताको सगुण ब्रह्म श्रुति गावे।
सगुण ब्रह्म प्रकृती कहवाई ❀ अरु अधिष्ठ जो पुरुष दिखाई॥
प्रथम पुरुष जिहँते बन आयो ❀ सगुण ब्रह्म सनिवेश जु पायो॥
सोउ सृष्टि आधार स्वरूपा ❀ भाखत कोविद संत अनूपा॥

दो० अगुण ब्रह्म परमातमा, गुणते भिन गुण माहिं।
ज्ञान गम्य सब हृदय को, जो अधिष्ठ रह ताहिं॥९१॥

सो० व्याप्त चराचर जोउ, गुण भोगे गुण ते पृथक।
संख्या तुरिये सोउ, जिहँ निर्गुन ब्रह्म कहत हैं॥४५॥

पंचम शुद्ध ब्रह्म सो कह्यउ ❀ जो केवल खं ब्रह्म है रह्यऊ।
व्यापक चिदाकाश जिहँ नामा ❀ ब्रह्म जिज्ञासु प्राप्त जिहँ कामा॥
ब्रह्म प्राप्त जब इच्छा आवे ❀ साधन संपति सुदृढ़ कमावे।
पावे अस जिज्ञासु जु होई ❀ है वेदान्त वेद्य ब्रह्म सोई॥
षष्ठम परम्ब्रह्म तिहं कह्यऊ ❀ जोउ कृष्ण संज्ञकं नित रह्यऊ।
ताके नाम अर्थ दिखराये ❀ श्रुति सिम्रती जिहँ बहुविधि गाये॥
ते भाखे संक्षिप्त प्रकारा ❀ पूर्व प्रसंग योग जहँ धारा।
जाको नाम रूप नर गावे ❀ चार पदारथ कर तल पावे॥
जाको नाम रटत भव तरहीं ❀ रूप ध्यान प्रभु संनिधि चरहीं।
जाको देख युद्ध में दानव ❀ बिन श्रम मुक्त भये तनु पानव॥

१ चतुर्थ २ जानने योग्य ३ नाम वाले ४ समीप।

दो॰ कोटि अंड उत्पन करै, पुन लय कर निज माहिं।
परंब्रह्म अस नाम जिहँ, कृष्ण कहत बुध ताहिं ॥९१॥

इह प्रकार पर ब्रह्म बखाने ❀ तामें कोउ विरोध न माने।
यदि को कहै ब्रह्म इक अहही ❀ एक-मेक अद्वितीय सु रहही ॥
तौ यह मत हू शास्त्र दिखावैं ❀ भिन्न-भिन्न अपि एक कहावैं।
ब्रह्म पांच विधि अपर जु गाये ❀ ते पर ब्रह्म अंश दिखराये ॥
शब्द ब्रह्म आदिक जे अहहीं ❀ ते सब छाया परं के कहहीं।
जस जोती अरु तेहिं प्रकासा ❀ अपर अंग पर ब्रह्म अवासा ॥
पक्षी यथा वृक्ष गृह करहीं ❀ उड़ जा पुन तामें आ चरहीं।
तथा शब्द ब्रह्मादिक अहहीं ❀ समय पाय पर में जा रहहीं ॥
जैसे रवि रवि द्युति है एकू ❀ एक मेक तस पृथक न नेकू।
तद्यपि रवि द्युति को है हेतू ❀ तस सब कारण कृष्ण उदेतू ॥

दो॰ प्रकट भयो श्रीकृष्ण से, महत ब्रह्म जो आहि।
भगवत गीता में कह्यो, मैंहि बीजप्रद ताहि ॥९२॥

ब्रह्म पांच विधि अपर जु अहहीं ❀ ते तो ज्ञान विरति सों लहहीं।
तिन की प्राप्ति न कलियुग माहीं ❀ शास्त्रन कथन कियो अस आहीं॥
कृत त्रेता द्वापर युग माहीं ❀ ज्ञान विराग योग भल आहीं।
कलि के ग्रस्त तदपि हित ज्ञाना ❀ कर श्रम वाद विविध विधि ठाना॥
तिन अधिकारि होन कठिनाई ❀ अस वेदान्त शास्त्र बुध गाई।
तप कर इन्द्रिन मन वश करहीं ❀ अघ सब क्षीण शांति चित धरहीं॥

१ परब्रह्म २ स्थान ३ प्रकाश ४ वैराग्य ।

जस दुर्वासो कृष्ण न माना ❀ भ्रमत रह्यो बड़ दुख लपटाना।
कृष्ण उदर माहीं चल गयऊ ❀ कोटिन ब्रह्मण्ड देखत रह्यऊ ॥

यहाँ लोमश ऋषि जी ने जो निर्गुन सगुन एक ही स्वरूप हैं। तामें निर्गुण का पक्ष लेकर सगुन को नहीं माना। इस अपराध से माया ने आय घेरा। क्या देखता है कि चारों ओर से जल प्रलय काल के समान बढ़ रहा है। यों देखते-देखते आश्रम को घेर लिया। आश्रम डूब गया। ऋषी जी जल में गोता खाने लगे। गोता खाते-खाते मरणान्त कष्ट से भी अकथनीय क्लेश पाया। जी घबराया, अन्त न आया; तब उसी जल में एक परम सुकुमार मनोहर बालक महजहि तैरता हुआ दृष्टि आया। हर्ष उपजाया, मन में भाया कि जाय इनको कण्ठ लगा कर प्राण को कुछ सहारा दूं। यों विचार शक्ति नहीं होने पर भी उस बालक की ओर जाने लगा। बालक के समीप आते ही बालक अन्तरध्यान हो गया। ऋषि जी फिर उसी तरह उस अगाध जल में गोता खा रहे हैं और हाय हाय-कर पश्चात्ताप करते हैं कि, ऐसा कौनसा अपराध हुआ, जो कि असीम व्यथा पा रहा हूँ। किन्तु माया मोहित कर रही है, इसलिये वह अपराध भी उनका नहीं सूझे। ऐसे अनेक बार उस पानी में बालक को देख कर क्षणिक हर्ष होवै; किन्तु फिर उस बालक को अन्तरध्यान हुआ देख हाहा खाय कर पछतावै, विविध विचार करै, परन्तु बुद्धी को कोई थाह नहीं लगे। कारन कि माया ने मोहित कर रखा है। इस तरह जब उस अपराध का फल असह्य कष्ट भोग चुके, तब माया दूर होगई। यथार्थ वस्तु सूझी-तब हाय-हाय कर कहने लगे, अरे मैं मूढ़ बुद्धि ने यह क्या महत्तर अपराध किया, जो अखिल ब्रह्माण्ड पति पूर्ण ब्रह्म जो निर्गुन होते हुए सगुन हैं और सगुन होते हुए निर्गुन हैं। अहो ऐसे श्रीप्रभु साक्षात् करुणा स्वरूप जो स्वेच्छा सों केवल भक्त अनुग्रह के कारण श्रीअवध में महाराज दशरथ जी के भवन में प्रादुर्भाव हुए हैं, उनके महत्त्व से मैं विमुख हो गया, निश्चय इसलिये यह कष्ट भोग रहा हूँ। अब वे प्रणतपाल, श्रीदशरथलाल, परम विशाल, अकथनीय कृपाल, जान मोहिं मूढ़ बाल मो प्रणत के अपराध को क्षमा करें, मैं इस कष्ट से मुक्त होकर अवश्य उन शरणागत रक्षक के दुर्लभ दर्शन कर कृतार्थ होऊँगा, बस इतना विचारते ही माया बिलाय गई, देखें तो अपने ही आश्रम पर बैठा हूँ, फिर उसी वक्त श्रीअवध में जाकर बाल स्वरूप श्रीरामजी का दर्शन किया, तो जो बाल स्वरूप जल में सहज ही तैरता हुआ देखा था, वही स्वरूप निश्चय हुआ, दर्शन कर निज को कृत्य कृत्य माना।

इस कारण जो ज्ञान के अभिमानवश निज ही को महान जान श्रीभगवान् के महान महत्व को नहिं पहिचान महान अपराध करता है, वो लोमश ऋषि के समान महान कष्ट पाकर पछताता है, फिर भी जब सगुन प्रभु की शरण लेता है, तब ही सुख पाता है। इतिदिक्

१ यह गाथा इसी ग्रन्थ के द्वितीय गोलोक द्वार में है।

वीतराग[1] जिज्ञासु जु होई ❀ आतम हेतु यतन कर सोई।
ता पाछे अनुबन्ध विचारै ❀ चार प्रकार जु निज मन धारै॥
अधिकारी इक अरु सम्बन्धा ❀ विषय प्रयोजन ये अनुबन्धा।
इन चतुष्टय को ह्वै अधिकारी ❀ पुन द्वादश साधन को धारी॥

दो॰ दृढ़ विवेक वैराग शम, दम उपरति यह पांच।
तितिक्षा श्रद्धा होय पुन, समाधानता सांच॥९३॥

और मुमुक्षुता कर दृढ़ जोई ❀ श्रवण मनन निदिध्यासन होई।
इन साधन संपन हो जब ही ❀ पावै ब्रह्मज्ञान को तब ही॥
यदि इनमें रंचक[2] त्रुटि होई ❀ तो आरूढ़ पतित हो सोई।
पुन श्रम कर आरूढ़ जु भयऊ ❀ तदपि भक्तिहीन यदि रह्यऊ॥
परत विघ्न प्रतिपद तिहँ माथे ❀ अन्त मगन होवै भवपाथे[3]।
ज्ञानी होय भक्ति नहिं मानैं ❀ ते लोमश * सम फिर पछतानैं॥

१ संसार के राग से रहित २ कोउ एक ३ संसार सागर मे।

* यहाँ यह गाथा है—जिस समय पूर्ण मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी महाराज का जन्म हुआ, तिस को सुनके परमभागवत श्रीदेवर्षी नारद जी महाराज श्रीअवध को श्रीरामचन्द्र महाराज के दर्शनार्थ जाते भये को पंथ में लोमश ऋषि निज आश्रम पै पाये, उनको महान् हर्षपूर्वक कहा, कि आप श्रीअवध को पधारें, श्रीपूर्णब्रह्म रामचन्द्र जी का जन्म महाराजा श्रीदशरथ जी के गृह में हुआ है, मैं वहाँ जा रहा हूँ। नारदजी के वचन सुन के कुछ मुसुकुराय के लोमश जी ने कहा कि, क्या आप पूर्ण ब्रह्म को एक देशी मानते हैं। तथा क्या जन्म-मृत्यु के चक्र में आने वाला मानते हैं ? वो तो सदा सर्वत्रव्यापक एक रस जन्म-मरण से रहित हैं। मुझे तो जड़, जङ्गम सर्व ही ब्रह्म रूप दीख रहा है। उसके सिवाय कुछ भी नहीं दीखता। आपको जो अयोध्या में दीखे है, तौ जाइये वहाँ देखिये। यह वचन सुन नारदजी श्रीभगवत् माया के महत्व का विवेचन करते हुए श्रीअवध को पधार कर बाल रूप पूर्णब्रह्म श्रीरामचन्द्रजी का दर्शन कर परमानन्द में निमग्न हुये।

**जस दुर्वासो कृष्ण न माना ❀ भ्रमत रह्यो बड़ दुख लपटाना।
कृष्ण उदर माहीं चल गयऊ ❀ कोटिन ब्रह्मण्ड देखत रह्यऊ ॥**

यहाँ लोमश ऋषि जी ने जो निर्गुन सगुन एक ही स्वरूप हैं। तामें निर्गुण का पक्ष लेकर सगुन को नहीं माना। इस अपराध से माया ने आय घेरा। क्या देखता है कि चारों ओर से जल प्रलय काल के समान चढ़ रहा है। यों देखते-देखते आश्रम को घेर लिया। आश्रम डूब गया। ऋषी जी जल में गोता खाने लगे। गोता खाते-खाते मरणान्त कष्ट से भी अकथनीय क्लेश पाया। जी घबराया, अन्त न आया; तब उसी जल में एक परम सुकुमार मनोहर बालक सहजहि तैरता हुआ दृष्टि आया। हर्ष उपजाया, मन में भाया कि जाय इनको कण्ठ लगा कर प्राण को कुछ सहारा दूं। यों विचार शक्ति नहीं होने पर भी उस बालक की ओर जाने लगा। बालक के समीप आते ही बालक अन्तरध्यान हो गया। ऋषि जी फिर उसी तरह उस अगाध जल में गोता खा रहे हैं और हाय हाय-कर पश्चात्ताप करते हैं कि, ऐसा कौनसा अपराध हुआ, जो कि असीम व्यथा पा रहा हूँ। किन्तु माया मोहित कर रही है, इसलिये वह अपराध भी उनका नहीं सूझे। ऐसे अनेक बार उस पानी में बालक को देख कर क्षणिक हर्ष होवै; किन्तु फिर उस बालक को अन्तरध्यान हुआ देख हाहा खाय कर पछतावै, विविध विचार करै, परन्तु बुद्धी को कोई थाह नहीं लगे। कारन कि माया ने मोहित कर रखा है। इस तरह जब उस अपराध का फल असह्य कष्ट भोग चुके, तब माया दूर होगई। यथार्थ वस्तु सूझी-तब हाय-हाय कर कहने लगे, अरे मैं मूढ़ बुद्धि ने यह क्या महत्तर अपराध किया, जो अखिल ब्रह्माण्ड पति पूर्ण ब्रह्म जो निर्गुन होते हुए सगुन हैं और सगुन होते हुए निर्गुन हैं। अहो ऐसे श्रीप्रभु साक्षात् करुणा स्वरूप जो स्वेच्छा सों केवल भक्त अनुग्रह के कारण श्रीअवध में महाराज दशरथ जी के भवन में प्रादुर्भाव हुए हैं, उनके महत्त्व से मैं विमुख हो गया, निश्चय इसलिये यह कष्ट भोग रहा हूँ। अब वे प्रणतपाल, श्रीदशरथलाल, परम विशाल, अकथनीय कृपाल, जान मोहिं मूढ़ बाल मो प्रणत के अपराध को क्षमा करें, मैं इस कष्ट से मुक्त होकर अवश्य उन शरणागत रक्षक के दुर्लभ दर्शन कर कृतार्थ होऊँगा, बस इतना विचारते ही माया विलाय गई, देखें तो अपने ही आश्रम पर बैठा हूँ, फिर उसी वक्त श्रीअवध में आकर बाल स्वरूप श्रीरामजी का दर्शन किया, तो जो बाल स्वरूप जल में सहज ही तैरता हुआ देखा था, वही स्वरूप निश्चय हुआ, दर्शन कर निज को कृत्य कृत्य माना।

इस कारण जो ज्ञान के अभिमानवश, निज ही को महान जान श्रीभगवान के महान महत्त्व को नहिं पहिचान महान अपराध करता है, वो लोमश ऋषि के समान महान कष्ट पाकर पछताता है, फिर भी जब सगुन प्रभु की शरण लेता है, तब ही सुख पाता है। इतिदिक्

१ यह गाथा इसी ग्रन्थ के द्वितीय गोलोक द्वार में है।

आवत ही जिन सुधि बुधि नासे ❀ तौ किम आतम ज्ञान प्रकासे ।
तथा काल को बड़ दुख जोऊ ❀ वृश्चिक[1] महस[2] देश सम सोऊ ॥

दो॰ जिहँ कराल दुख काल के, आवत प्रथमै होइ ।
आधि व्याधि[3] कफ वात पित, युत मूर्च्छित महि सोइ ९७

ताते कामादिक जे तापा ❀ अध्यात्मिक आदिक संतापा ।
काल महा दुख इन दुख तेही ❀ मुक्त-मुक्त कहिये नर वेही ॥
इन दुख निवृत्ति हेतु श्रुति गावै ❀ योग ज्ञान पथ भेद लखावै ।
योग पंथ के हैं अष्टंगा ❀ धर विराग मन करै असंगा ॥
दश यम दश नियमन प्रतिपारै ❀ आसन प्राणायामहिं धारै ।
अरु प्रतिहार धारणा ध्याना ❀ पुन समाधि धर मन वश लाना ॥
अष्ट अंग यदि धारै कोऊ ❀ जोति प्रतक्ष करै नर सोऊ ।
आधि-व्याधि तब तिहँ न सतावैं ❀ कामादिक ताके वश आवैं ॥
काल दुःख तिहँ आय न नेरा ❀ मुक्त होय अस योग निवेरा ।
द्वितिय ज्ञान मारग श्रुति कह्यऊ ❀ षोड़श साधन तामैं रह्यऊ ॥

दो॰ तिनैं धरै नर वेद विधि, वड़ उत्कण्ठा युक्त ।
आधि-व्याधि कामादिज्वर, मिटत तदा सो मुक्त ॥९८॥

तथा भक्ति मारग अस गायो ❀ नवधा भक्ति माहिं चित लायो ।
दर्शन कृष्ण हेतु अनुरक्ता ❀ कृष्ण मिलन उत्कण्ठा युक्ता ॥

---

१ बीछू २ पृथ्वी ३ आधि-व्याधि ।

यावत दृश्य पदारथ अहहीं ❀ सबते अधिक प्रेम प्रभु रहहीं ।
चाहत प्रति पल कृष्ण मिलापा ❀ गदगद होय नाम हरि जापा ॥
कबहु मिलन हित रोदन करहीं ❀ ह्वै रोमांच ध्यान पुन धरहीं ।
कृष्ण दास पूछत नित डोलैं ❀ कब प्रभु पाउँ यही मन तोलैं ॥
अस प्रेमी प्रीतम प्रभु अहहीं ❀ सदा कृष्ण तिन रक्षक रहहीं ।
लख अस भक्त कृष्ण निज केरो ❀ चिंतत ताको सांझ सवेरो ॥
चक्र सुदर्शन को कर आज्ञा ❀ जाउ भक्त मम रक्ष सुभाज्ञा ।
रक्षा करत सुदर्शन आई ❀ तिहँ हरि जन को भय नहिं राई॥

दो० देख सुदर्शन चक्र जो, फिरत भक्त चौफेर ।
आधि व्याधि कामादि सब, भाजत काल न घेर ॥९९॥
ताते अपि भक्ती महा, साधन कलियुग माहिं ।
अपर न साधन जन बनै, जो प्रभु रक्षक नाहिं ॥१००॥
कर्म योग वैराग अरु, आत्मज्ञान जे आहिं ।
ते पूरे कलि होइँ नहिं, परत विघ्न शिर ताहिं ॥१०१॥

सो० निर्भय जन तब होइ, श्रीहरि रक्षक होइँ जब ।
चार मुक्ति लह सोइ, वसंत जापे प्रभु कृपा ॥४७॥

इम हरि रक्षक होवैं जबही ❀ निर्भय सुख सोवै नर तबही ।
निर्भय कृष्ण भक्ति ते रहही ❀ सेवा जो हरि चरणन चहही ॥
बिन सेवा नहिं ह्वै कल्याना ❀ जो जन कहत ब्रह्म हम जाना ।
अरु नीकी विधि तिहँ पहिचानैं ❀ शुष्क ज्ञानि ऐसे मन मानैं ॥

तिहँ जन पै न मुदित भगवाना ❀ सेवा छांड़ जु चह कल्याना।
पत्र पुष्प पय कर प्रभु सेवै ❀ सो जन प्रभु प्रसन्न कर लेवै ॥
सेवा बिन सुख किनहु न पायो ❀ यह प्रतक्ष सब संतन गायो।
हरि सेवा जिन मन अलसाना ❀ उभय भृष्ट ते जड़मति माना॥
मनुष्य जन्म ते वृथा हि खोवैं ❀ जे प्रभु सेवा में नहिं होवैं।
ताते सेवा भक्ती जोई ❀ प्रभु प्रसन्न खैर कर ले सोई ॥

दो० तामैं इक इतिहास यह, कहै सुनै नर जोइ ।
अनायास सो भक्ति लह, छाँड़ ज्ञान श्रम सोइ ॥१०२॥

किहँक देश भूपति इक भयऊ ❀ तासों मिलन विप्र इक गयऊ।
सो अति निपुण राजनय माहीं ❀ नृप सों भेट करन मन चाहीं ॥
द्वारपाल तिहँ पूछन लागे ❀ को तुम किहँ कारन जा आगे।
कह पण्डित मैं सब कछु जानौं ❀ भली भांति भूपति पहिचानौं ॥
जानौं सब ताके अन्तःपुर ❀ बल अरु कोष पछानत रणचर।
है जेतिक नरपति रजधानी ❀ मैं विद्या बल सब पहिचानी ॥
ताते मोहिं जान दो भाई ❀ निज कारज कर फिर मैं जाई।
पण्डित के सुनकर अस वचना ❀ द्वारपाल किय मन अस रचना॥
यह धूरत विद्या बल पाई ❀ नहिं जानैं नृप करै बुराई।
ताते इन कारागृह दीजै ❀ अस विचार सब निज मन कीजै॥

दो० अस सम्मति कर रोक दिय, पण्डित कारागार ।
इम कछु काल अतीत भो, नृप सुधि दई बिसार ॥१०३॥

१ शीघ्र २ बिना श्रम ३ राजनीति ४ रानिन के महल इत्यादि ५ खजाना ६ कैदखाना ।

नृप इक दिन इक वनको गयऊ ❀ भूख प्यास कर व्याकुल भयऊ।
पालक-अजा तहां इक आया ❀ नृप ता को निज वृंत्त सुनायो॥
भूख प्यास कर प्रान हमारो ❀ अब ही हैं प्रिय जावन हारो।
ताते तुम अति द्रुत युत जावो ❀ अन वा फल जल त्वर यहँ लावो॥
पालक अजा कहत शिर नाई ❀ यहाँ अनजल प्रापति कठिनाई।
तदपि करहुँ मैं सद्य उपाऊ ❀ धरो धैर्य अति द्रुत मैं लाऊं॥
अस कह गयउ जलाशय पाहीं ❀ ढूंढ आम्रफल द्वै त्रै ताहीं।
भूपति तट आशू लै आयो ❀ खायो फल जल पियो अघायो॥
शांति पुहुमि पति प्राणन पाई ❀ भयो मुदित चित्त अति नरराई।
तिहँ नर नाम गाम लिख राजा ❀ गयो अपन जहँ राज समाजा॥

दो॰ पठै मंत्रि युत जन तहां, कह अस वच सहुलास।
गज अंबारि-बिठाय के, आनौ तिहँ मो पास॥१०४॥

सो॰ नृपति वचन सुन कान, गयो सचिवं तिंह गाम मैं।
राज मनुज पहिचान, डरन लगे तिहँ वासि जन॥४८॥

कहा हेतु नृप इनहि पठायो ❀ वड़ी धूमसों सचिवं जु आयो।
जिहँते अजा पालको नामा ❀ पूछत है वह डर उर धामा॥
देत वताय अमुक थल अहही ❀ मनमें कहैं काहि उन चहही।
इम पूछत पहुँचे तिहँ द्वारी ❀ छिप्यो सोउ सुन भवन मझारी॥
जबहि नाम लै मंत्रि पुकार्यो ❀ जरंठ जननि तिहँ वचन उचार्यो।
डरत डरत कह यहँ सो नाहीं ❀ गयो अहै अरण्य के माहीं॥

१ वकरी चराने वाला २ समाचार ३ शीघ्र ४ मन्त्री ५ वूढ़ी ६ वन।

कहा काज है कहु मो पाहीं ❀ तब मंत्री भाख्यो तिहँ ताहीं ।
भैया भय जिन करौ सुनीजै ❀ आप पुत्र पै भूपति रीझै ॥
भूप हमारो विपिन सिधायो ❀ प्यास लगी ताते अकुलायो ।
तब तुव सुतने फल जल सेती ❀ नृपकी सेव करी वह चेती ॥

दो० मुदित होय भूपाल नें, भेज्यो है तिहँ पास ।
ताहित हम आये यहां, तुम जिन होउ उदास ॥१०५॥

सुनत रह्यो मंत्री वच सोऊ ❀ आशु निकस आयो मुद होऊ ।
कियो मंत्रिको सरुचि प्रणामा ❀ सादर सचिवहु पूछियो नामा ॥
वाने कहि हां आज्ञा कीजै ❀ करौं सोइ निज दास गुनीजे ।
तब मंत्री भाख्यो तिहँ पाहीं ❀ नृप तुमपै प्रमुदित अति आहीं ॥
यह गज अंबारी नृप केरी ❀ नृप आज्ञा लाये तुव नेरीं ।
कह्यो अहै भूपति हम पाहीं ❀ अजापाल को सादर याहीं ॥
लै आवौ यापै बैठाई ❀ मोहिं प्राण सम प्रिय सो भाई ।
है आरूढ़ चलौ अविलंबा ❀ भई तुष्ट तुमपै जगदंबा ॥
अस सुन सविनय मंत्री पाहीं ❀ अजापाल भाख्यो तिहँ ठाहीं ।
नृप आज्ञा में निज शिर धारौं ❀ चलौं अवश विलंबहू टारौं ॥

दो० किन्तु दास को योग्य नहिं, हे मंत्री मतिवान ।
स्वामीकेरि सवारि पै, चढ़नौं यह किल जान ॥१०६॥

हमतो गाम निवासी अहहीं ❀ पुन निष्कंचन दीनहु रहहीं ।
अजा चरावन कृत्य विचारौ ❀ पंथ चलन अभ्यास हमारौ ॥

१ फल देने वाली हुई है २ समीप ३ प्रसन्न ।

याते मैं निज चरनन सेती ❀ चलिहौ संग आपके छेती।
निरख सभ्यता सचिव सुहाई ❀ प्रमुदित ताको कह समुझाई ॥
धन्य बुद्धि तुम को प्रभु दीनी ❀ याहित नृपहु मुदित अस चीनी।
अस्तु जु गजारूढ़ नहिं होवौ ❀ अपर सवारी चढ़ो जु जोवौ ॥
मान लियो वाने अपि ताहीं ❀ वाहनं अपर चढ्यौ तिहँ ठाहीं।
नृप के नगर माहिं जब आये ❀ अजापाल तब वचन सुनाये ॥
हे मंत्रीवर वचन सुनीजे ❀ अरु तिहँ अवश मानहू लीजे।
अब सवारि मुहिं नाहिं सुहावे ❀ चरननसों चलिवो मन भावे ॥

दो० अस कह उतर पर्यो जवै, अजापाल हरपाय।
मंत्री प्रभृतिहु उतरके, तिहँ संग चले सुहाय ॥१०७॥

ताको कर मंत्री निज करमें ❀ लिय आदर युत प्रमुदित उरमें।
मंत्री करमें तिहं कर अहई ❀ देख लोग वड़ अचरज लहई ॥
कहत परस्पर देखो भाई ❀ रंक वड़ाई किहँ विध पाई।
जो सचीव वर कर धर हाथा ❀ ले आयो जिहँ चह नरनाथा ॥
इह प्रकार मंत्री तहँ लायो ❀ राज सभा में जिहँ नृप चाह्यो।
देखत ही नृप प्रमुदित भयऊ ❀ निज सिंहासन अर्पन चह्यऊ ॥
अजापाल के ना ना करते ❀ नृपति हाथ सों हाथ पकरते।
दिय सिंहासन ताहिं विठाई ❀ भूपति चित तिहँ सेवा आई ॥
कहा कि इन मो प्रान वचाये ❀ या हित पितु सम मो मन भाये।
अवते मोर राज यह स्वामी ❀ मैं हुँ चलौं इनके अनुगामी ॥

दो० अस कह नृप तिहँ राज दिय, उतसव महत कराय।
आपहु तिहँ आधीन ह्वै, रहे सदा हरपाय ॥१०८॥

१ शीघ्र २ सवारी।

अजापाल परिवार बुलायो ❀ अपन राज में सत्रन बसायो।
भयऊ इम कछु काल वितीता ❀ कारागार विप्र मन रीता॥
उन सुन किय विचार मन माहीं ❀ अवतो भूप अपर वर आहीं।
उनको अपन वृतांत सुनावौं ❀ तो मैं मुक्ति यहां ते पावौं॥
अस विचार निज मनमें लाई ❀ अजापाल गृह ज्ञात कराई।
अजापाल माता सुधि पावा ❀ निज सुतको वृतांत सुनावा॥
और कहा हे सुवंन सुभागी ❀ रहौ सदा द्विज गौ अनुरागी।
काहु जीव को नाहिं दुखावौ ❀ तो तुम अचल राज सुख पावौ॥
जा दिन प्रजा जनन दुख पायो ❀ ता।दिन तुम निज सुकृत गँवायो।
तहँ अपि गौ द्विज बाल रु वृद्धा ❀ वाम अनाथ सेव सह श्रद्धा॥

दो॰ इनके अनुग्रहते सदा, लोक और परलोक।
सुख भोगोगे पुत्र तुम, रहौ नित्य गत शोक॥१०६॥

सो॰ तीनहुँ वड़ दुखदाय, धन मद श्रीमद राज मद।
वुध जन सोउ कहाय, करै ध्वंस धर दीनता॥४९॥

ताते विना दोष द्विज ताहीं ❀ पर्यो अहै काराग्रह माहीं।
करौ मुक्त ताको अविलंबा ❀ मानौ कहन कहत मैं अंबा॥
मातु वचन सुनकें ततकाला ❀ विप्र मुक्त किय नेह विशाला।
भूसुर मनमें करत विचारा ❀ मो विद्या को अहै धिकारा॥
सब कछु जानत कछु नहिं जान्यो ❀ वृथाहि दुखदाई मद सान्यो।
कहा कियो उत्तम कुल पायो ❀ लियो परिश्रम हू अधिकायो॥

१ जिसका मनोरथ निष्फल है २ पुत्र।

यदि कछु पायौ है तो येही ❀ कारागार माहिं दुख नेही ।
धन्य धन्य है वारम्बारी ❀ अजापाल जिहँ सेवा धारी ॥
नहिं कुल नहिं कछु विद्या पाई ❀ इतो कछुहु परिश्रम न लखाई ।
केवल फल जल दै नृप भयऊ ❀ सेवा ही को किल फल लह्यऊ ॥

दो० इम विचार करके गयो, अजापाल नृप पास ।
बहु विधि आशीर्वाद दे, गो निज गृह सहुलास ॥११०॥

सो० ज्ञातृ पन अभिमान, छाँड़ विप्र सेवा गहीं ।
पायो मोद महान, सेवा ही सों विप्रने ॥५०॥

देखो भक्ति प्रताप महाना ❀ जामें सेवा मुख्य बखाना ।
अजापाल सेवा चित दयऊ ❀ देकर फल जल भूपति भयऊ ॥
अरु भूपुरको केरी सहाई ❀ निश्चय सेव प्रशंस महाई ।
तिम श्रीप्रभु की सेवा करहीं ❀ पत्र पुष्प पयसों रुचि धरहीं ॥
तिनपै प्रभु प्रसन्न हों भारी ❀ करहीं निज पद को अधिकारी ।
देकर तिहँ प्रभु प्रभु अधिकारा ❀ पुन तिहँ सेवें प्रकट निहारा ॥
तें साखी प्रसिद्ध जग माहीं ❀ जिनपै कृपा लखें ते ताहीं ।
जस प्रसन्नता श्री प्रभु केरी ❀ निज सेवक पै अतिशय हेरी ॥
तस नहिं योगिन ज्ञानिन पाई ❀ येहु प्रकट बहु ग्रंथन गाई ।
तातें जो प्रभु करुणा चाहे ❀ सो भगवत सेवा निर्वाहे ॥

दो० प्रथमें जब यह अपनपो, तजै हृदय तें जीव ।
तब हीं सेवा कर सकै, संतन गुरु श्री पीव ॥१११॥
तातें सब साधन मयी, भगवत संतन सेव ।
ज्ञान योग सुरि संपदा, सहज सधै यह भेव ॥११२॥

सो॰ जस सेवा को छाँड़, जान विप्र बंधन पर्यो।
तस ज्ञानी कर राड़, वसंत जग बंधन फसैं ॥५१॥

इति श्रीकृष्णायने प्रथम श्रीराधाकृष्ण द्वारे दशमसोपान समाप्त।

सेवा करन इष्ट अनुकूला ❀ निश्चय सोइ परम मुद मूला।
जानत सबही कर सक कोऊ ❀ सब जन तहाँ समर्थ न होऊ॥
तामें जो कारन कह संता ❀ कहु यथार्थ सो सुख प्रद तंता।
हिय में बसत अनेक विकारा ❀ काम लोभ ममता हंकारा॥
इत्यादिक विकार तज जोऊ ❀ हिय सों होय दीन पुन सोऊ।
सो जन सहजहि कर सक सेवा ❀ सेवा सों लह सुख मय मेवा॥
यथा अम्ल[1] वस्तु जो भाखी ❀ किहँ अपि पात्र माहिं है राखी।
तामें यदि को पयं[2] को धरही ❀ तो प्रथमें तिहँ रीतौ[3] करही॥
पाछे मंजेन[4] कर तिहँ माहीं ❀ धरे दूध तबही वो ताहीं।
यथा रूप रह सकही जैसे ❀ हृदय पात्र को जानहु ऐसे॥

दो॰ अम्ल रूप कामादि मद, पूरित चित जो आहिं।
निर्मल दूध स्वरूप जो, प्रभु सेवा तिहँ माहिं॥११३॥

किम रह सक है यही विचारा ❀ ताते संतन कहुँ निरधारा।
प्रथमें सब विकार तज देवे ❀ श्रद्धा को निज उरसों सेवे॥
अरु सत्संग करे नित नेमा ❀ वचन वजू तज दे चह खेमा।
मधुर वचन सबहिन सों भाखे ❀ सब जीवन पे करुणा राखे॥

---

१ खट्टी २ दूध ३ खाली ४ साफ।

वृथा समय रंचहु नहि खोवै ❀ सदाचार विधि में सुख जोवै ।
धर्म सनातन को अनुरागी ❀ विषय वासना को है त्यागी ॥
निज को सदा क्षुद्र कर मानै ❀ कबहूँ उर अभिमान न आनै ।
मति व्यवसायि[१] राख कृत[२] करनों ❀ दूरहि ते कुसंग परि हरनों ॥
झूंठ अमर्ष[३] निंद तज देवै ❀ निरालस्य हो उद्यम सेवै ।
सहन शीलता उर में लावै ❀ दियो वचन पुन मृषा[४] न जावै ।

दो० स्तुति निंदा सुख दुख तथा, हानि लाभ जे द्वंद ।
इनमें सम वृत्ति राखि कै, भजै सदा व्रजचंद ॥११४॥

तृण सों अपि निज को लघु जानै ❀ मिथ्या वाद विवाद न ठानै ।
पर उपकार नित्य प्रति करनों ❀ सरल सुभाव हिये में धरनों ॥
हरि विमुखन सों कबहु न बोलै ❀ हरि जन संग सदाही डोलै ।
हरि जन दर्शन नित कर प्रेमा ❀ तिन मिल हरि गुन गाय सनेमा ॥
सब प्रकार हिंसा को तजही ❀ नीरसें[५] निज यश को नहिं भजही ।
हरि अनुकूल प्रसंगन धारै ❀ जे प्रतिकूल तिनै परिहारै ॥
अनुचित क्रिया सबहि तज देवै ❀ है हरिजन पुन हठ नहिं सेवै ।
कर उद्यम अरु धर संतोषा ❀ कबहुँ काहु पै करै न रोषा[६] ॥
पर दुख दुखी मुदित सुख आना ❀ सदा सर्वदा यह वृत ठाना ।
अवश एकादशि व्रत को करनों ❀ माला तिलक सदाही धरनों ॥

दो० बिन प्रसाद पावै न कछु, अस राखै दृढ़ टेक ।
आन देव आसा तजै, धर अनन्यता एक ॥११५॥

---

१ निश्चयात्मिक २ कार्य ३ ईर्षा ४ मिथ्या ५ फीको ६ क्रोध ।

हरि के जन्म कर्म हैं जेऊ ❁ जाने जिय में चिन्मय तेऊ।
नामी नाम एक कर माने ❁ नाम भरोसे पाप न ठाने॥
सदा नाम पै रख विश्वासा ❁ नामी संतत अहै मो पासा।
या हित ऊठत बैठत कहई ❁ सकल क्रिया मऊ करतो रहई॥
तहँ अपि नामोच्चार न भूलै ❁ कलि जीवन हरि नामनुकूलै।
नित हरि गुरु चरणामृत लेवै ❁ कर अष्टांग नमन नित सेवै॥
प्रभु प्राथना कपट तज करही ❁ यह औषधी सकल रुज हरही।
श्रीगुरु कृपया जो पथ दीनों ❁ वापै चलन श्रेय निज चीनों॥
आन पंथ भूलेउ न जावै ❁ यदि जावै किल नर्कहि पावै।
श्री गोविन्द कृपा जब करहीं ❁ तब गुरु प्राप्ती संत उचरहीं॥

दो॰ गुरु प्राप्ती जब होत है, गोविंद सहजहि पाय।
तातै गोविंद से गुरु, गुरु से गोविंद गाय॥१६॥

ऐसो भाव सदा हिय माहीं ❁ धार भेद तज भजहीं ताहीं।
उत्सव दिन विशेष कर मानै ❁ कर उत्साह प्रेम रस सानैं॥
रूप माधुरी श्रीहरि केरी ❁ निरख नैन रुचि होय घनेरी।
बैन बिहारी के गुन वृन्दा ❁ गावै नाम सहित मुद कंदा॥
कान कान गुन नित प्रति सुनहीं ❁ बिना श्रवन आकुलता गुनहीं।
श्रीप्रभु अंग अनूपम अहहीं ❁ सहज सुगंध स्वरूप जु रहहीं॥
ता में अथवा श्रीप्रभु अंगा ❁ धारन करी सुगंध सुरंगा।
घ्राण संतत ता मैं है मग्ना ❁ जग दुर्गंधी रंच न लग्ना॥
करसों कर सेवा प्रभु केरी ❁ तथा भक्त वृन्दन अस टेरी।
हरि गुरु दर्शन हित अरु सेवा ❁ चलै चरण अनुपम सुख लेवा॥

दो॰ शिरसों हरि गुरु पद कमल, करै नमन युत राग।
हिय में हरि माधुरि छटा, वसै आन नहिं लाग॥११७॥

हरि गुरु कारन निज के प्राना ❀ अपि नौछावर कर सुख माना।
इह विधि सकल अंग निज केरे ❀ इष्ट परायन नेह घनेरे॥
इम सब भाव धार भगवंता ❀ रिझवे दृढ़मति सुगति लहंता।
गौर श्याम द्युति आदि सनातन ❀ संज्ञा राधाकृष्ण पुरातन॥
अस जिय जान ध्यान उर धरहीं ❀ प्रेमावेश नृत्य पुन करहीं।
कहे भाव सब जब जिय आवें ❀ तब निज महत प्रभाव लखावें॥
हृदय पात्र अतिशय शुध होई ❀ लव मलीनता रहे न कोई।
तब तिहँ हृदय धाम घनश्यामा ❀ आय विराजें पर सुख धामा॥
ता पाछे सेवा अधिकारा ❀ तिहँ जनको दें परम उदारा।
इह विधि की सेवा है जोऊ ❀ योगिन अपि अति दुर्लभ सोऊ॥

दो॰ जब लग इह वपु में बसत, तब लग सेव विलास।
लहै अनिर्वचनीय सो, ब्रह्मानंद लघु भास॥११८॥

सो॰ तनु तजके यह जीव, नित्य अचल सब लोक पर।
अहै धाम जो पीव, तहाँ बसै पिय संगहीं॥५२॥

यह शृंखला श्रवन कर कोई ❀ निज उर अस शंकित यदि होई।
सब विकार त्यागें हम कैसे ❀ अहै असम्भवसी गति ऐसे॥

१ नाम २ क्रम।

तथा सुलक्षन जे दरसाये ❁ ते अपि सब किम जाइँ उपाये।
तो फिर नित्य अचल सुखदाई ❁ श्रीप्रभु सेव लहैं किम भाई॥
या शंका को उत्तर जोऊ ❁ गुरु करुणा अनुभव किय सोऊ।
इह थल प्रकट करौं सुन लीजै ❁ तदनुसार कृति में चित दीजै॥
विधि प्रपंच जहँ लग है भाई ❁ गुन अवगुन मिश्रित दरसाई।
ताहित गुन अवगुन सब माहीं ❁ भयो सिद्ध निश्चय है ताहीं॥
सब दुख निवृत्ति होन अभिलासा ❁ नित्य अचल सुख पावन आसा।
अपर योनि नहिं सम्भव होई ❁ मानुष देह माहिं है सोई॥

दो॰ जो जन सब दुख निवृति चह,तथा अचल सुख धाम।
ताके हित हितकी कहौं,रीति सुगम सुखधाम॥११६॥

थल विविक्त में सावधं[१] होई ❁ निज हिय माहिं विचारै सोई।
मो मैं कोउ प्रबल गुन अहई ❁ अरु अवगुनहु प्रबल को रहई॥
जबहि विवेचन निज जिय माहीं ❁ चित्त समाहितं[२] करकैं ताहीं।
बैठ करैगो तब तिहँ अंतर ❁ साक्षी पुरुष जु रहै सुतंतर॥
वो बताय देवैगो ताहीं ❁ यथातथ्य जो चाहत आहीं।
साक्षी जो गुन प्रबल दिखायो ❁ ताको अतिशय सुदृढ़ दृढ़ायो॥
सकल ओर सों ताकी रच्छा ❁ करै बढ़ावै ह्वै कर दक्षा[३]।
जब वो एकहि गुन हिय माहीं ❁ अतिशय दृढ़ तर वश भो ताहीं॥
तो फिर और अखिल गुन जेऊ ❁ ह्वैं वश सहजहि सबही तेऊ।
तथा जु अवगुन प्रबल दिखायो ❁ तिहँ ध्वंसन पुरुषार्थ बढ़ायो॥

१ सावधान २ एकाग्र ३ चतुर।

दो० सर्व ओर ते एक तिहँ,नष्ट करन की चिंत।
सबही विधि उद्यम करै,छिन नहिं ह्वै निश्चित॥१२०॥

सो० यदि तिहँ अवगुन एक, जोउ प्रबल तनु में रह्यो।
करके यतन अनेक, कियो ध्वंस तब होय अस॥५३॥

यावत दोष अपर जे ताहीं ❀ भाज जाइँ निश्चय अस आहीं।
या विधि सों एकहि गुन कारन ❀ करनों है पुरुषारथ धारन॥
और सकल गुन सहजहि आवैं ❀ मुखिया तज ते अनत न जावैं।
तथा एक दोषहि के ध्वंसन ❀ करनों है सब विधि सों प्रयतन॥
निश्चय एकहि अवगुन नासे ❀ सकल दोष नासें अप्रयासे[1]।
इम सुंदर लक्षन उर आवैं ❀ श्रीहरि सेव सहज तब पावैं॥
अब इक औरहु पथं[2] अप्रयासा ❀ श्रीगुरु प्रेरन प्रकटन आसा।
यदि कहि विधिसों श्रम नहिं होई ❀ अस अशक्त[3] जन अहै जु कोई॥
चाहत हरि सेवा हिय सेती ❀ ताहित तिहँ आतुरता एती।
जिम पर बिन पक्षी है जोऊ ❀ उड़नेच्छा उड़ सकत न सोऊ॥

दो० अतिशय व्याकुल होत है,कछु अपि तिहँ न सुहाय।
तिम अशक्त जो जन अहै,तिहँ उर दुःख समाय॥१२१॥

तिहँ दुखको प्रति पल नहिं भूले ❀ करै प्रार्थना इष्टनुकूले।
केवल एक प्रार्थना जोऊ ❀ इह प्रकार समरथ है सोऊ॥

१ बिना श्रम २ मार्ग ३ असमर्थ।

सब दुख नष्ट करे किल ताके ❀ शक्ति न अन साधन की जाके।
किंतु प्रार्थना फल दे नाहीं ❀ देवत अपि कालान्तर माहीं॥
ताहित जो प्रतक्ष फल आसा ❀ सो कर प्रार्थन कपट निरासा।
ताके चिह्न प्रकट दरसाई ❀ हरिजन निज अनुभव में लाई॥
यथा प्रार्थना कर प्रभु पाहीं ❀ मैं हूँ पतितराय जग माहीं।
कामी क्रोधी मो सम आना ❀ नाहिं अपर ह कृपानिधाना॥
यावत ब्रह्म सृष्टि के माहीं ❀ अहैं दोष अरु अघ जे ताहीं।

दो० ते सब पूरण रीति सों, हे हरि हैं मो माहिं।
आप पतित पावन सदा, परम उदार जु आहिं॥१२२॥

शरण आपकी हौं मैं दासा ❀ अहै आपही की मुहिं आसा।
इम अनेक विधिसों सो करही ❀ प्रभु प्रार्थना प्रेमहू धरही॥
किन्तू तिहँ अवसर तिहँ पाहीं ❀ किहँ बैरी अस भाख्यो ताहीं।
रे दंभी तू पाप स्वरूपा ❀ अब बन बैठो भक्त अनूपा॥
बस इतनो सुनतहि जर गयऊ ❀ प्रभु प्रार्थना तहांही रह्यऊ।
उन प्रति बकन लगो बहु गारी ❀ परम शुद्ध आपनहिं विचारी॥
मैं सतवक्ता नहिं अभिमानी ❀ नहिं दंभी हरि भक्त प्रमानी।
इह विधि निज सिद्धता दिखावे ❀ निजही को बड़पन प्रगटावे॥
अब इह थल निज हियके माहीं ❀ कर सूक्षम विचार इम ताहीं।
श्रीप्रभु प्रति प्रार्थन मैं कह्यऊ ❀ मो सम पतित अपर नहिं रह्यऊ॥

१ दूसरे

दो॰ यदि यह सत्यहि तिहँ हृदय, तौ जव तिहँ प्रति आन ।
भाखत तुम पापी महा, किम हो कुपित महान ॥१२३॥

अरु किम तिहँ अवसर में सोई ❀ निज निर्मलता दर्शत वोई ।
यासों सिद्ध होत है येही ❀ केवल कथन मात्र वचतेही ॥
प्रभु प्रसाद[1] चाहत जन सोई ❀ अहै असम्भव अस नहिं होई ।
लोक रीति प्रभु निकट चलावै ❀ तहँ किम चलै अफलता पावै ॥
यथा कोउ जन करै वड़ाई ❀ तव तहँ प्रकटावै लघुताई ।
मैं तो तुम्हरो दासन दासा ❀ मोहिं अहै आपहि की आसा ॥
इत्यादिक वचं[2] विविध प्रकारा ❀ भाख नीचपन अमन उचारा ।
किन्तु हिये में दैन्य न लेशा ❀ मानत सवतें निजहिं विशेशा ॥
भल यह वंचन[3] चल जग माहीं ❀ जीव अल्पज्ञाता जो आहीं ।
तिहँते निजकी जे अभिलासा ❀ पूरन होय सकैं अस आसा ॥

दो॰ तहँ अपि जे जन चतुर हैं, ते तिहँ कपट पछान ।
पूर्ण भरोसो नहिं करहि, लोक रीति दें मान ॥१२४॥

प्रायः जगत रीति चलि आई ❀ इह विध छलसों अपन वड़ाई ।
चाहत हैं पावत अपि ताहीं ❀ कहुँ पुन पूर्ण मनोरथ नाहीं ॥
यह तो लोक रीति निभ जावै ❀ ठगे औरको स्वयं ठगावै ।
प्रभु अंतरयामी सव जानें ❀ चतुर शिरोमणि कपट पछानें ॥
ताहित इह विध प्रार्थन जोई ❀ यथातथ्य फल देत न सोई ।
शीघ्र फलद वह प्रार्थन अहही ❀ जिम अन्तर तिम वाहिर रहही ॥

१ प्रसन्नता व कृपा २ वचन ३ ठगी ।

यथा श्वपच को जो जन भाखे ❀ अरे श्वपच तू किम मद राखे।
अस सुन यदि क्रोधित ह्वै सोई ❀ तिहँ समान को मूरख होई॥
तिम यदि निज को पतित प्रमाने ❀ अपर मनुज जो पतित बखाने।
तो तहँ कोप हेतु लव नाहीं ❀ यदि कर कोप मूर्ख सो आहीं॥

दो॰ इह विधि की जो मूर्खता, हरिजन में रह नाहिं।
तातें जिम प्रार्थन समय, मानत है मन माहिं॥१२५॥

सो॰ और कहत प्रभु पाहिं, तिम चरितारथ होय यदि।
तौ हरि सहजहि ताहिं, अपनावै निज विरद लख॥५४॥

श्री प्रभु पतितन पावनकारी ❀ दीन बन्धु प्रणतन[1] दुख हारी।
अहैं अवश लव शंक न अहई ❀ किन्तु भेद इतनो ही रहई॥
पतित दीन तिम प्रणंत[2] न कोई ❀ प्रभु के नाम सफल जहँ होई।
अन्तर में बड़ मद है ऐसो ❀ पुण्यवन्त नहिं जग मो जैसो॥
बाहर केवल वचन सुनावैं ❀ निज सम अघी[3] न और लखावैं।
या विधि सों चतुरन शिर मोरा ❀ कबहुँ न रीझें तिहँ जन ओरा॥
फलीभूत प्रार्थन नहिं होई ❀ तहाँ हेतु औरहु कहुँ सोई।
लोक दिखावन प्रभु के पाहीं ❀ बैठ करत हैं प्रार्थन ताहीं॥
किन्तु भावना में हरि नाहीं ❀ लोक रीति वस तिहँ हिय माहीं।
ताहित सिद्ध भई यह गाथा ❀ प्रार्थन नहिं सुनाय निज नाथा॥

दो॰ तौ किम फल प्रद होवही, हिये विचारो सोइ।
तातें प्रार्थन समय में, अस भावनाजु होइ॥१२६॥

१ शरण आये हुवन के २ शरण आया हुआ ३ पापी।

हरि साक्षात निकट मो पाहीं ✿ अहैं विराजमान इह थाहीं ।
मोरि विनय युत प्रार्थन बानी ✿ सुन रहिहैं मुहिं निज पहिचानी॥
सो पुन प्रार्थन इह विध होई ✿ जामें कपट रंच नहिं कोई ।
पतित होय प्रार्थन कर प्रानी ✿ पावन पतित प्रभू मन मानी ॥
तौ प्रभु अवश ताहि अपनावैं ✿ नाम प्रभाव प्रतक्ष जनावैं ।
ज जे पतित तरे भव माहीं ✿ श्री प्रभु अनुकंपा किय ताहीं ॥
ते सब वास्तिवक निजको पापी ✿ जान करी प्रार्थना प्रतापी ।
दैन्यादिक गुन तिन हिय माहीं ✿ सहजहिं रहि हरिजन के ताहीं ॥
या विध हैं हरि नाम अनेका ✿ तिन प्रभाव पूरण है टेका ।
किन्तू तदनुरूप जन कोई ✿ जहँ सफलपन प्रकटित होई ॥

दो॰ ताहित प्रार्थन समय में, जे जे उर के भाव ।
ते ते सब अवसर विषे, यदि चरितारथ आव ॥१७॥

तौ तुम पतितन पावन नामा ✿ आदि अनेक नाम सुख धामा ।
तिन परभाव प्रतक्ष निहारौ ✿ चित गत शंका सकल निवारौ ॥
श्रीप्रभु प्रार्थन फल जो अहई ✿ ताके मिलन विलंब जु रहई ।
तहँ औरहु इक कारन कह्यऊ ✿ सोउ प्रकट कर भाखन चह्यऊ ॥
करत प्रार्थना हे घनश्यामा ✿ मैं सब दोषन पूरन धामा ।
कर करुणा प्रभु तिन न गुनीजे ✿ आप कृपानिधि कृपाहि कीजे ॥
अहै नियम देवै सो पावै ✿ विना दिये रीतोही जावै ।
तथा जु माँगत है प्रभु पाहीं ✿ सो प्रथमैं इह भव के माहीं ॥
जे इन प्रति प्रार्थित जन अहहीं ✿ यद्यपि ते अपराधी रहहीं ।
तिनके क्षमा करै सब दोषा ✿ रंचहु करै न हियसों रोषा ॥

दो॰ औरहु करुणा कर तिनें, करै सहर्ष सहाय।
जाते दुख नहिं पावहीं, रहैं सुखी सुख पाय ॥१२८॥

तौ प्रभु यावत दोष तुम्हारे ❀ क्षमा करहिंगे विना विचारे।
औरहु करुणा करैं महाना ❀ जासौं लहै सतत कल्याना ॥
इह विध जो चाहत है आपू ❀ श्री प्रभु से लख महत प्रतापू।
जब इह भव प्रथमहि विस्तारा ❀ सब जीवन पै करै उदारा ॥
तौ यह अपि पावै विन शंका ❀ अहैं अमिट ये संतन अंका।
ताते प्रभु प्रार्थन कर जोई ❀ कहै वचन हिय धारै सोई ॥
तौ यथार्थ फल शीघ्रहि पावै ❀ अरु प्रभु तिहँ जन त्वरं अपनावै।
यद्यपि वहु साधन सुखदाई ❀ अघ ध्वंसन तिन शक्ति महाई ॥
किन्तु प्रार्थना सम नहिं एकू ❀ प्रार्थन शक्ति विचित्र विवेकू।
जब यह निज अपकृतँ हिय माहीं ❀ सुमरन कर तिन फल जे आहीं॥

दो॰ तिनको चिंतन करतही, रोवत हा हा खाय।
ते नेत्राश्रू अश्रु नहिं, मानौ अघ समुदाय ॥१२९॥

नख शिख पूरित रहे जु ताहीं ❀ ते सब होय इकात्रित वाहीं।
नेत्र द्वारतें है जल रूपा ❀ होय पलायन गुप्त स्वरूपा ॥
तहाँ हेतु प्रस्फुट यह जानो ❀ श्री प्रभु प्रति जन होय अमानो।
हा हा खाय प्रार्थना करहीं ❀ तव ते पाप वृंद जनु डरहीं ॥
ताहित भाजैं नयनन द्वारा ❀ अनुभवि अनुभव माहिं निहारा।
जब ते पाप निकस भज जाई ❀ तव तिहँ अंतर सुख उपजाई ॥

१ अन्तर (वचन) २ शीघ्र ३ पाप

सो सुख शांत स्वरूप कहायो ❀ ता पाछे प्रभु रूप धियायो ।
पुन प्रार्थन गाये गुन वृन्दा ❀ तासों उर उपजे आनन्दा ॥
सो जनु सकल सुगुन तहँ आये ❀ जेऊ कृष्ण गुन वृंद समाये ।
या विधि नितही कर यदि कोई ❀ कहो कहा दुर्लभ तिहँ होई ॥

दो० जब इह विधि चिरकाल लग, करै प्रार्थना कोउ ।
तब हिय में आह्लाद अति, निश्चय प्रकटित होउ १३०

या के प्रकट होत अस होई ❀ महानंद महत कहिं जोई ।
सो अतिशय लघु आनंद भासे ❀ रोम रोम प्रिय प्रेम प्रकासे ॥
प्रेमहि है श्रीकृष्ण स्वरूपा ❀ कृष्ण रूप प्रेम ही अनूपा ।
जहाँ प्रेम तहँ है घनश्यामा ❀ जहाँ कृष्ण तहँ प्रेम ललामा ॥
अरु जहँ प्रेम कृष्ण हैं दोऊ ❀ तहाँ कहा हो को कह सोऊ ।
तहँ जो कछु है कह्यौ न जावै ❀ मूक स्वादवत कहा लखावै ॥
तदपि आन हित सैन बखानै ❀ श्रीगुरु कृपा सुज्ञ जन जानै ।
ताते रहि हरिजन को नेमा ❀ करन प्रार्थना अकपट प्रेमा ॥
जस को अहै दुखी भव माहीं ❀ जेउ अभीष्ट[१] आस तिहँ आहीं ।
ते सब नष्ट भईं तिहँ कारन ❀ दुखी होय रोवत अनिवारन[२] ॥

दो० सो निज परम हितू प्रती, कहै व्यथा बहु रोय ।
तब तिहँ शांती ह्वै कछुक, तिम हरि जनहू जोय १३१

१ इच्छित २ रोकने से नहीं रुके ।

प्रथमें श्रेष्ठ विरह है जोई ❀ अतिशय दुसह दुःख है सोई।
पुना जन्म मृत्यू जे अहहीं ❀ ते अपि अमित व्यथा मय रहहीं॥
तथा त्रिविध जे ताप महाना ❀ देहिं कष्ट इह जनको नाना।
इन कष्टन सुमरन कर जेऊ ❀ हरि साक्षात भाव कर तेऊ॥
त्याग सर्वथा कपट प्रसंगा ❀ अहै यथार्थ भाव निज अंगा।
सो सब प्रकट निवेदन करहीं ❀ रंचहु हिय दुराव नहिं धरहीं॥
तहँ विचार तिन हिय में एहा ❀ पति सों कहा छिप्यो तिय देहा।
तासौं छल बल तज हरि सेती ❀ करनों प्रेम बात है एती॥
इह प्रकार हरिजन जे अहहीं ❀ सविनय प्रार्थन करतहिं रहहीं।
सहजहि आय बसें तिन माहीं ❀ जेउ सुलक्षन भाखे ताहीं॥

दो०सुख अरु आनन्द पायकें, लहैं अंत अहलाद।
जासौं तिनके नष्ट ह्वैं,सकल समूल विषाद॥१३२॥

सो०करैं प्राप्त रस धाम, नित्य अचल सेवा धरम।
ते वश रहिं घनश्याम, सदा श्याम तिन वश रहैं॥५५॥

कह्यो प्रसंग जु युत विस्तारा ❀ तहँ निष्कर्ष यही निरधारा।
जा अशक्त है सबहि प्रकारा ❀ सो प्रार्थन को लेय सहारा॥
किन्तु जोउ विधि कहि इन थाहीं ❀ तिहँ विधि को प्रार्थन हो ताहीं।
तो तिह साधन अपर जु अहहीं ❀ तिन आवश्यक्ता नहिं रहहीं॥

१ हिये में २ सार।

अरु योगिन ज्ञानिन फल जोऊ ❀ अति दुर्लभ, पावै किल सोऊ ।
जब उपरोक्त सुलक्षन धारै ❀ प्रभु प्रार्थन युत नेह उचारै ॥
तिहँ जनको प्रभु लीला माहीं ❀ होय रुची अतिशय कर ताहीं ।
ताहित प्रथम द्वार में कह्यऊ ❀ भक्ती तत्व गुप्त जो रह्यऊ ॥
तथा सुलक्षन विविध प्रकारा ❀ कहे प्रकट कर कर निरधारा ।
जो श्रद्धा युत स्वयं विचारै ❀ वा किहँ साधूजनसौं धारै ॥

दो॰ तौ अवश्यही पाय सो, यथातथ्य जो मर्म ।
परम स्वाद जासौं लहै, अपर विरस सब कर्म ॥१२३॥

कवित्त

बिन अधिकार वस्तु प्रापत न होत अरु,
प्रापत हुये ते अपि ताहिं न पछान है ।
भलहि पछाने तौहु ताको जो गुपत मर्म,
ताको ताहिं रंच अपि होवत न ज्ञान है ॥
गुपत मरम बिन जाने किम पावै सोऊ,
तिहँ वस्तु केरो कैसो स्वाद मृदुवान है ।
जिहँ वस्तु चाहत मनुज तिहँ अधिकार,
प्रथमहिं खोजे किल सोई बुधवान है ॥ ३ ॥
ताते इह राधाकृष्ण द्वार माहीं कृष्ण केरो,
भक्ति तत्व और सुष्टु[१] लछनहू कह्यऊ ।
ताहिं यदि मनन सहित धरै जोऊ जन,
तिहँ प्रभु लीलाकेरो अधिकार लह्यऊ ।

१ सुन्दर ।

॥ श्रीराधावसन्तविहारिणेनमः ॥

श्रीवसन्त कृष्णायन

का

द्वितीय श्रीगोलोक द्वार !

जिसमें

सोपान (१) मङ्गलाचरण, गर्ग ऋषि शौनक सम्वाद, नारद बहुलाश्व संवाद षटविधि अवतार सलक्षण (२) ब्रह्मादि देववृन्द का गोलोक में जाना (३) गोलोकस्थ श्रीकृष्णस्तुति, श्रीकृष्ण का देवतान को आश्वासन और आज्ञा देना (४-५) कंस दिग्विजय (६) श्रीराधा प्राकट्य, कीरति-वृषभानू का पूर्व जन्म (७) देवकी-वसुदेव विवाह, आकाश वाणी, देवकी को कंस से छुड़ाना (८) देवकी को प्रथम पुत्र होना, वसुदेव का कंस के पास ले जाना, प्रथम कंस का वध से निवृत्त होना, नारद प्रेरणा से उस बालक का वध करना, कंस-उग्रसेन का युद्ध, श्रीबलदेवजी का प्रादुर्भाव (९) गर्भ स्तुति, जन्म समय की शोभा, श्रीकृष्ण आवि-र्भाव, वसुदेव-देवकी कृत प्रार्थना, कृष्ण का गोकुल जाना (१०) नन्दोत्सव (११) पूतना वध, पूर्व जन्म (१२) उत्कच वध, तृणा-सुर वध, यशोदा वात्सल्य, असुर पूर्व जन्म (१३) नन्द यशोदा पूर्व जन्म (१४) राम श्याम नामकरण(१५-१६) माखन चोरी लीला (१७) मृद भक्षण लीला (१८) दाम बन्धन लीला, नलकूवर मोक्ष (१९) दुर्वासा मोह, श्रीकृष्ण कृपा द्वारा मोह निवृत्ति इत्यादि विषय वर्णित हैं।

रचियता—

श्रीव्रजपुर पुरन्दर पद पुण्डरीक प्रेम परमासक्त, सारस्वत कुलावतंस
श्रीश्यामस्नेही स्मृति संस्थापक, सिन्धु देश भूषण

श्रीयुत वसन्तरामजी महाराज ।

प्रकाशक—

श्यामस्नेही श्यामाशरण

अकतराई गली, हैदराबाद (सिन्ध)

सम्वत् १९९२ वि० ।

भयो जय अधिकारी क्रमसेती लहै सब,
प्रभु लीला माहीं जोऊ तत्व रस रह्यऊ ॥
इति भो प्रथम द्वार हे प्रभु कृपा आगार,
आपकी करुणा सार ऋतुराज चह्यऊ ॥ ४ ॥

इति श्रीवसन्तकृष्णायने प्रथम श्रीराधाकृष्ण द्वारे एकादश सोपान समाप्त ॥ ११ ॥

दो० राधाकृष्ण दुवार के, एकादश सोपान ।
इक शत पन्द्रहँ दशक हैं, चौपाई रसवान ॥ १ ॥

सो० पचपन सोरठ ताहिं, इकसौ तैंतिस दोहरे ।
चार कवित सुठ आहिं, श्लोक पंच संकट हरण ॥ १ ॥

इति श्रीश्यामस्नेही स्मृति संस्थापक भक्त शिरोमणि द्विज-कुल-कमल-दिवाकर
श्रीयुत वसन्तशर्म कृत सकल कलि कलुष निकन्दन परात्परानन्द
सम्पादन, श्रीकृष्णायने प्रथम श्रीराधाकृष्ण द्वार समाप्त ।

---

१ श्रीवसन्त ।

॥ श्रीराधावसन्तविहारिणेनमः ॥

श्रीवसन्त कृष्णायन

का

द्वितीय श्रीगोलोक द्वार !

जिसमें

सोपान (१) मङ्गलाचरण, गर्ग ऋषि शौनक सम्वाद, नारद बहुलाश्व संवाद पटविधि अवतार सलक्षण (२) ब्रह्मादि देववृन्द का गोलोक में जाना (३) गोलोकस्थ श्रीकृष्णस्तुति, श्रीकृष्ण का देवतान को आश्वासन और आज्ञा देना (४-५) कंस दिग्विजय (६) श्रीराधा प्राकट्य, कीरति-वृषभानु का पूर्व जन्म (७) देवकी-वसुदेव विवाह, आकाश वाणी, देवकी को कंस से छुड़ाना (८) देवकी को प्रथम पुत्र होना, वसुदेव का कंस के पास ले जाना, प्रथम कंस का वध से निवृत्त होना, नारद प्रेरणा से उस बालक का वध करना, कंस-उग्रसेन का युद्ध, श्रीबलदेवजी का प्रादुर्भाव (९) गर्भ स्तुति, जन्म समय की शोभा, श्रीकृष्ण आविर्भाव, वसुदेव-देवकी कृत प्रार्थना, कृष्ण का गोकुल जाना (१०) नन्दोत्सव (११) पूतना वध, पूर्व जन्म (१२) उत्कच वध, तृणासुर वध, यशोदा वात्सल्य, असुर पूर्व जन्म (१३) नन्द यशोदा पूर्व जन्म (१४) राम श्याम नामकरण(१५-१६) माखन चोरी लीला (१७) मृद भक्षण लीला (१८) दाम बन्धन लीला, नलकूवर मोक्ष (१९) दुर्वासा मोह, श्रीकृष्ण कृपा द्वारा मोह निवृत्ति इत्यादि विषय वर्णित हैं।

रचियता—

श्रीव्रजपुर पुरन्दर पद पुण्डरीक प्रेम परमासक्त, सारस्वत कुलावतंस श्रीश्यामस्नेही स्मृति संस्थापक, सिन्धु देश भूषण

श्रीयुत वसन्तरामजी महाराज।

प्रकाशक—

श्यामस्नेही श्यामाशरण

अकतराई गली, हैदराबाद (सिन्ध)

सम्वत् १९९२ वि०।

नाम-धुनि

गोविन्द जय जय गोपाल जय जय ।
राधारमण हरि गोविन्द जय जय ॥
माधव जय जय मोहन जय जय ।
मुरलीधर हरि माधव जय जय ॥
राधेश जय जय रसिकेश जय जय ।
मन मोहन छवि राधेश जय जय ॥
व्रजेश जय जय यमुनेश जय जय ।
नीलवरण छवि व्रजेश जय जय ॥
श्रीपति जय जय व्रजपति जय जय ।
भक्तों के प्यारे प्रभु श्रीपति जय जय ॥
केशव जय जय कन्हैया जय जय ।
नन्द के लाल प्रभु केशव जय जय ॥
गिरिधर जय जय मनहर जय जय ।
इन्द्र के मदहर गिरिधर जय जय ॥

GITA PRESS, GORAKHPUR

गोकुल-गमन

किहंक समय नैमिष वन माहीं ❀ गर्गाचारि ज्ञानिवर ताहीं।
आयो ऋषि शौनक ढिग सोऊ ❀ योगभानु[1] तेजस्वी जोऊ ॥
ऋषिवर को विलोक शिर नाई ❀ उठ्यो आशु[2] शौनक हरषाई।
पूजन किय पाद्यादिक सेती ❀ गद-गद मृदु वच स्तुति किय केती॥

दो॰ कह शौनक करि जोरकैं, धन्य आप अवतार।
अहै जु विचरन[3] आपको, केवल पर उपकार ॥ १ ॥

सो॰ गृहिन शान्तिकर हेतु, सन्तनको है परि अटन।
दर्शन रवि सम देत, अन्तर तम[4] हर संत जन॥१॥

हम सबको तीरथ[5] मय कीनों ❀ जो कृपया[6] मुनि दर्शन दीनों।
आप भूल तीरथ चल जावे ❀ तीर्थन तीर्थी[7] कर किल आवै॥
बिन कारन कृपालु हैं सन्ता ❀ प्राण पियारे श्रीभगवन्ता।
रवि शशि सम जिन दृष्टि समाना ❀ ऊच नीच पै कृपा महाना ॥
जिनके दरस मात्र ते होवै ❀ श्रीभगवत सुमरण सुख सोवै।
वचन विलास संतजन केरो ❀ कहा करै अस किहं नहिं टेरो ॥
आप दरस उपजी उर आसा ❀ कछु पूछों मन शंक निवासा।
ता कारन मो हृदय अंदेशा ❀ नाश करौ मो मन संदेशा ॥
केतिक भये विष्णु अवतारा ❀ कहु सो मुनिवर कर निरधारा।
कह मुनि भल पूछो तुम आजू ❀ भगवत गुणअनुवाद समाजू ॥

दो॰ कहत सुनत पूछत मनुज, भगवत गुण धर चीत।
श्रेय करत सब जनन को, अस हैं परम पुनीत ॥२॥

१ योग के सूर्य २ जल्दी ३ विचरना ४ अज्ञानरूपी अन्धकार ५ पवित्र रूप ६ कृपा करके ७ पवित्र

याहित एक उदाहरण, कहुँ प्राचीन वखान ।
जिहँ इतिहासहिं श्रवणते, पाप वृन्द ह्वै हान ॥ २ ॥

मिथिला नगर पूर्व विख्याता ❀ नृप वहुलाश्व तहां वर जाता ।
केशव भक्त शांत चित सोऊ ❀ अति निरमानि प्रकट जग होऊ ॥
अंवर से आवत तिहँ देखा ❀ नारद मुनि मुनि सत्तम रेखा ।
जो श्रीभगवत को मन कह्यऊ ❀ कर प्रथम ये प्रभु जो चह्यऊ ॥
नारद पंचरात्र प्रकटावन ❀ मुख्य हेतु जिन इह भुवि आवन ।
तिहं पूज्यो आसन पधरायो ❀ अंजलि वांध भूप अस गायो ॥
जो अनादि आतम भगवंता ❀ प्रकृती पर पुरुषोत्तम कंता ।
किहं कारन तिहं नरतन धारो ❀ सो मो प्रति मुनि आप उचारो ॥
कह मुनि द्विज सुर गो श्रुति संता ❀ निज रक्षा हित श्रीभगवंता ।
कृष्ण प्रकट मानव वपुधारी ❀ भगवत आतम लीलाचारी ॥

दो० निज लीला नटवर यथा, ह्वै मोहित नहिं आप ।
मोहित ह्वैं लख अपर जन, तस श्रीकृष्ण प्रताप ॥३॥
कहत भूप श्रीकृष्ण के, केतिक भे अवतार ।
संतन रक्षा करन हित, मुनि मुहिं कहु निरधार॥३॥

कह नारद सुन मैथिल राई ❀ हरि अवतार कहीं सुखदाई ।
अंशांश अंश आवेशा ❀ कला रु पूरण कह्यउ नरेशा ॥
परि पूरण तम षष्ठ लखायो ❀ कृष्ण व्यास आदिकन सुनायो ।
अंशांश मरीच्यादिकही ❀ अँज आदिकको अंश कहतही ॥

१ जन्म लियो २ आकाश ३ ब्रह्मा ।

कपिलादिकन कला कह गाये ❀ राम आदि आवेश लखाये।
राम अवधपति नृपके जाये ❀ तिनको पूर्ण पुरुष कह गाये॥
परिपूरण तम है साक्षाता ❀ आप कृष्ण भगवत विख्याता।
अण्ड असंख्यन को पति जोऊ ❀ श्रीगोलोक विराजित सोऊ॥
अब इन लक्षण तोहि सुनावौं ❀ यथातथ्य कहके समुझावौं।
कार्य स्वपद राखै जिम इन्द्रा ❀ तिन संज्ञा है अंश नरेन्द्रा॥

दो० इन्द्रादिक दिक्पतिन की, पालत आज्ञा जेउ।
जगदीश्वर श्रीकृष्ण के, अंशांश हैं तेउ॥ ४॥

सो० कारज कर पुन जाइँ, जिनके उरमें राज प्रभु।
ते आवेश कहाइँ, जे नाना अवतार विभु॥४॥

धर्महिं जान जनावें जेते ❀ अन्तरधान होइ पुन तेते।
युग-युग आय विलग कह धर्मा ❀ ते भाखे हरि कला सुकर्मा॥
चतुर व्यूह युत है अवतारा ❀ अरु नव रस देखिय निरधारा।
होय अलौकिक वीरज[1] धारी ❀ सो प्रभुको पूरण अवतारी॥
जामें सर्व तेज हैं लीना ❀ अपने तेज कर अपर विहीना।
कहत परात्पर तिहं साक्षाता ❀ परिपूरण तम सो विख्याता॥
पूरण के लक्षण हैं जामें ❀ पृथक-पृथक सब देखिय तामें।
सब जन न्यारे भाव दिखावें ❀ सो परिपूरण स्वयं कहावें॥
परिपूरण तम है साक्षाता ❀ श्रीप्रभु कृष्ण परम प्रख्याता।
भक्त कार्य हित जे भुवि आये ❀ कोटि कार्य करके दिखराये॥

१ परशुराम। २ अंशांश ३ शक्ति।

दो॰ कह मुनि सुन प्रभु विभवको, नृप बहुलाश्व उदार ।
परम प्रफुल्लित वदनसों, कह हिय भाव उचार ॥५॥

परिपूरण तम प्रभु साक्षाता ❀ गोलोकेश कृष्ण विख्याता ।
आये इह भारत किहं काजे ❀ जे अधुना द्वारिका विराजे ॥
कछु-कछु सुने सहज तिन कर्मा ❀ मन हर लेत देत अति शर्मा ।
भयो मनोरथ उत्कंट भारी ❀ प्रभु गुन सुनों सविधि विस्तारी॥
पुण्य पुंज परिपाक्यो आजू ❀ पायो दरश सकल ऋषिराजू ।
पूर्णेच्छा भइ दर्शन आपू ❀ अब मो विनय सुनौ निष्पापू ॥
अपरीमित प्रभु के जे कर्मा ❀ कहु ब्रह्मज्ञ सुखद तिन मर्मा ।
श्रीराधापति दासन दासा ❀ कदा आर्द्र मन हों यह आसा ॥
देवन वर दुर्लभ परमेशा ❀ है कब मम गोचर चख देशा ।
अस कह नयन अश्रु भर आये ❀ तब ताप्रति नारद अस गाये ॥

दो॰ धन्य भूप शार्दूल तुम, कृष्ण इष्ट प्रिय तोर ।
भक्तपाल प्रभु आवहीं, तव तट सुन वच मोर ॥६॥

द्विज श्रुत सुर अरु आपको, रक्षक संत अनंत ।
सो सुमरत नित द्वारिका, अहो भाग्य है संत ॥७॥

सो॰ उर सब संशय खोय, शतश जन्म तप तीर्थ कर ।
जब सत्संगति होय, तब वसंत प्रभु दरस वर ॥५॥

॥ इति श्रीकृष्णायने द्वितीय गोलोकद्वारे प्रथम सोपान समाप्त ॥

१ सुख २ तीव्र ३ अनंत ४ स्नेह में भीजा हुआ ५ प्रत्यक्ष ६ सिंह ७ समीप ८ ब्राह्मण ।

कह मुनि जीभ मनुज तन पावें ❀ कीर्तियोग्य प्रभु कीर्तिन गावें।
लह कर मुक्ति निसैनी सोऊ ❀ दुर्मति नहिं आरोहण होऊ॥
वह नर जन्म मरन दुख माहीं ❀ पचत रात दिन लह सुख नाहीं।
रह भुवि जो जन भज भगवाना ❀ करत कृष्ण तिहं आप समाना॥
चह सत्संग देत प्रभु ताको ❀ विन हरि कृपा पाय नहिं जाको।
गह पद-पंकज संतन केरो ❀ गुन गोविंद गाय कट फेरो॥
सह सनेह गावै गुन जोऊ ❀ पावै श्रीप्रभु दर्शन सोऊ।
दह दोपन अति दुन अव ताते ❀ नर तन दुर्लभ देवन जाते॥
अंह तुम प्रति मैं करौं वखाना ❀ जिहं हित भयउ कृष्णभुवि आना॥
मह वाराह कल्प इह माहीं ❀ जो कछु भो भाखौं नृप ताहीं॥

दो॰ पूर्व दैत्य दानव भये, नर भूमुंज खल रूप।
भूरिभार व्याकुल अवनि, धर वपु धेनु अनूप॥८॥

है अनाथ सम रोवत भारी ❀ सो दुख धीर न सकै निहारी।
विधि के शरण जाय तिहं कह्यऊ ❀ भुवि गति लख विधि व्याकुल भयऊ
तव अज आश्वासन तिहं दीना ❀ अपन संग त्वर सुरगण लीना।
है युत शङ्कर परम कृपाला ❀ श्रीवैकुण्ठ गयउ तत्काला॥
वन्द चतुरभुज माधव जीको ❀ निज अभिप्राय कह्यउ वचनीको।
देख सुरन उद्विग्न महाना ❀ विधिप्रति भाखत विष्णु सुजाना॥
अगणित अंडन पालक रह्यऊ ❀ कृष्ण स्वयं स्वामी श्रुति कह्यऊ।
राजन श्रीगोलोक अशोका ❀ जिह पर अपर न लोक प्रलोका॥

१ स्थिति २ आज ३ राजाएँ ४ अत्यन्त ५ धैर्य ६ व्याकुल।

जहँ ज्ञानिन योगिन गति नाहीं ❀ तौ कर्मी किम पावें ताहीं ।
केवल कृष्ण भक्ति तिहँ पावें ❀ नित इकरस सुख माहिं समावें ॥

दो०—जिहँ विन कवहु न कार्य हो, सुनहु वचन देवेश ।
तातें तुम सब आशु अब, जावौ तिहँ पर देश ॥

कह विधि स्वामि अपर नहिं जानों ❀ त्वं परिपूरण अस मन मानों ।
यदि हो अपर कोउ भगवंता ❀ देहु दिखाय सबन श्रीकंता ॥
कह मुनि इम सुन सुरभयहारी ❀ श्रीप्रभु पूरण जन सुखकारी ।
पर पद सोउ दिखावत भयऊ ❀ जो ब्रह्मंड शिखर पै रह्यऊ ॥
वाम पाद अंगुष्ठहिं नख सों ❀ भेद्यउ ब्रह्म अंड विन श्रम सों ।
वामन विवर वदत बुध ताहीं ❀ ब्रह्मद्रव पुरित वह आहीं ॥
तहँते वारियान पथ गयऊ ❀ पुन सब सुरगण वाहिर भयऊ ।
खरवूजे फल सम तब लेखा ❀ निज ब्रह्मंड अधे को देखा ॥
इन्द्रायण फल सम अगणंता ❀ जल के मध्य लुंठंति अनंता ।
निरख अनंत अंड सुर ताहीं ❀ चक्रित इव विस्मय हिय माहीं ॥

दो० कोटिन योजन ऊर्ध्व गे, पुर अष्टक तहँ देख ।
रत्नन युत प्राकार दिव, द्रुम मनहर तहँ पेख ॥१०॥

तहँते ऊर्ध्व सुरन तहँ देखा ❀ विरजा सरित सुभग तट पेखा ।
श्वेत पाटवत रुचिर तरंगा ❀ मणिसोपान विविधि विधि रंगा ॥
अस तहँ देख चले सब देवा ❀ तब अन्तः पुर पायउ भेवा ।

---

१ छिद्र २ जलमें चलने वाला रथ ३ नीचे ४ लुड़कते ५ परकोटा ६ रेशम ।

अगणित कोटि उदय रवि जैसे ❀ ज्योतिर्मंडल लख लिय तैसे ।
लखत तेज तौड़त[1] भे नैना ❀ ह्वैगइ स्तब्ध सकल सुर सैना ॥
पुन तिहँ तेजहिं वंदन कीनों ❀ आज्ञा विष्णु ध्यान धर लीनों ।
तब श्री विष्णु कृपा सुर वृन्दा ❀ विगत शोक ह्वै भे सानन्दा ।
जान्यौ यही अहै गोलोका ❀ सब लोकन वंदित गत शोका ॥
कह मुनि या गोलोक प्रशंसा ❀ मैं भाखन के योग्य न अंसा ।
ब्रह्मादिकहू रंच न जानें ❀ तौ कहु किम तिहँ अपर बखानें॥

दो॰ यद्यपि काल महाबली, सर्व लोक संहार ।
ब्रह्मादिक लोकन भखे, सो अपे इत हार ॥ ११ ॥

माया तहां रहन नहिं पावै ❀ मन बुधि चित अहंकार न जावै ।
गुण महदादि जाइँ नहिं ताहीं ❀ अपर विकार कहो किम जाहीं ॥
तहं कंद्रप सम शोभाकारी ❀ श्यामल वपु सुन्दर मनहारी ।
अस पार्षदन निषेध्यो तबही ❀ द्वारहि घुसन लगे सुर जबही ॥
तब हरि हर अज आदि जु रह्यऊ ❀ हैं हम लोकपाल अस कह्यऊ ।
गोलोकाधिप दर्शन हेतू ❀ शक्रादिक आये हम जेतू ॥
कह मुनि तिन अभिप्राय पछाना ❀ द्वारपाल सखि कृष्ण प्रमाना ।
देवन मन वृत्तांत बखाना ❀ अन्तःपुर जहँ सखि गण नाना॥
तब इक शत चन्द्रानन नामा ❀ बाह्य द्वार आई सखि श्यामा[2] ।
पीताम्बर धर वर वर नैना ❀ वेत्र[3] पाणि पूछत भइ सैना ॥

दो॰ तुम अधिपति किहँ अंडके, किमि आये यहँ देव ?
सो मो प्रति कहु जाउँ मैं, कहुँ प्रभु ढिंग सो भेव॥१२॥

१ कंपित २ षोड़शवर्ष की ३ छड़ी ।

अहो अंड औरहुँ हैं काहीं ❀ हम देवन कहुँ देखे नाहीं ।
हमतो इक ब्रह्मंड पछाना ❀ अपर न देखे सुने न काना ॥
कह चन्द्रानन सुन अज मंडा ❀ यहां लुठन्ति कोटि ब्रह्मंडा ।
अंड अंड प्रति अगणित देवा ❀ जिम तुम निज ब्रह्मंड रहेवा ॥
नाम ग्राम तुम अपन न जाना ❀ वाह्य न निकसे हो किम माना ।
रहे मुदित तुम जड मति करके ❀ जानत एकहि अंड विचर के ॥
जिमि खग जानत इक आकासा ❀ लखैं मेकं जिम कूप अवासा ।
जैसे कीट अपर नहिं जानै ❀ एकहि गूलर फल पहिचानै ॥
अस उपहास प्राप्त अज भयऊ ❀ ह्वै तूष्णी चिंतन मन दयऊ ।
चकृत इव विधि देख्यो जवही ❀ विष्णु वचन इस भाखे तवही ॥

दो॰ प्रश्निगर्भ जिहँ अंड में, भयो पूर्व अवतार ।
तिरि विक्रम नख भेद्य जो, तिहँ ब्रह्मंड हम सार॥१३॥

कह मुनि सुन अस प्रभु गुन गाई ❀ चन्द्रानन अन्तः पुर आई ।
वहुर आय देवन दे आज्ञा ❀ गवनी निज अन्तःपुर राज्ञा ॥
तिहँ अवसर सव सुरगण जेऊ ❀ चहं गोलोक विलोकन तेंऊ ।
जहँ गोवर्द्धन नामक शैला ❀ राजत चढ़ गिरिराज अमैलों ॥
जहां वसन्त मानिनी गोपी ❀ सुंदर गो गण आवृत रोपी ।
कल्प विटप युत लता समूहा ❀ सोहत मंडल रास जु फूहा ॥
अरु इक सरिता कृष्णा नामा ❀ निहँ तट मंदिर कोटि ललामा ।
मणि वैडुर्य सुभग सोपाना ❀ गति सुछंद जल रुचिकर माना ॥

१ भूपणरूप २ मेंडक ३ मौनी ४ पवित्र ५ यमुना ।

अगणित कोटि उदय रवि जैसे ❀ ज्योतिर्मंडल लख लिय तैसे ।
लखत तेज तोंड़त भै नैना ❀ ह्वैगइ स्तब्ध सकल सुर सैना ॥
पुन तिहँ तेजहिं वंदन कीनों ❀ आज्ञा विष्णु ध्यान धर लीनों ।
तव श्री विष्णु कृपा सुर वृन्दा ❀ विगत शोक ह्वै भै सानन्दा ।
जान्यौ यही अहे गोलोका ❀ सव लोकन वंदित गत शोका ॥
कह मुनि या गोलोक प्रशंसा ❀ मैं भाखन के योग्य न अंसा ।
ब्रह्मादिकहू रंच न जानें ❀ तौ कहु किम तिहँ अपर वखानें॥

दो० यद्यपि काल महावली, सर्व लोक संहार ।
ब्रह्मादिक लोकन भखे, सो अपें इत हार ॥ ११ ॥

माया तहां रहन नहिं पावे ❀ मन बुधि चित अहंकार न जावैं ।
गुण महदादि जाइँ नहिं ताहीं ❀ अपर विकार कहौ किम जाहीं ॥
तहं कंद्रप सम शोभाकारी ❀ श्यामल वपु सुन्दर मनहारी ।
अस पार्षदन निषेध्यो तवही ❀ द्वारहि ह्सन लगे सुर जवही ॥
तव हरि हर अज आदि जु रह्यऊ ❀ हैं हम लोकपाल अस कह्यऊ ।
गोलोकाधिप दर्शन हेतू ❀ शक्रादिक आये हम जेतू ॥
कह मुनि तिन अभिप्राय पछाना ❀ द्वारपाल सखि कृष्ण प्रमाना ।
देवन मन वृत्तांत वखाना ❀ अन्तःपुर जहँ सखि गण न
तव इक शत चन्द्रानन नामा ❀ वाह्य द्वार आई सखि
पीताम्बर धर वर वर नैना ❀ वेत्र पाणि पूछत भ

दो० तुम आधिपति किहँ अंडके, किमि आये य
सो मो प्रति कहु जाउँ मैं, कहुँ प्रभु ढिंग सो भे

१ कंपित २ षोड़शवर्ष की ३ छड़ी।

घंटा नूपुर पँसुरी शोभे ❀ मंडित किंकिणि जाल अखोभे ।
स्वर्ण शृङ्ग कंचन की माला ❀ रत्नजटित द्युति दमक विशाला ॥
लाला कृष्णा कपिला पीता ❀ हरितां ताम्रा धूम्रा चीता ।
चित्र विचित्र कोकिला वरणी ❀ धेनु अनेकन सब मन हरणी ॥
हैं सागर सम दूध दिलारी ❀ चिन्हित देह हाथ कर नारी ।
कूदत मृगवत वत्सन युक्ता ❀ मंडित रह मन मोहन रक्ता ॥
इत उत चल धेनुगण संगा ❀ ऋषभ देव बहु महत उतंगा ।
दीर्घ स्कंध शृङ्ग रुचिकारी ❀ धर्म धुरंधर सब मनहारी ॥

दो० वेत्र हस्त गोपाल तहँ, श्यामल वंशी धार ।
गावन लीला लालकी, मदन मुहन स्वर सार ॥१६॥

अस विलोक तहँ नारद माथा ❀ मध्यस्थल में देव सनाथा ।
ज्योतिर्मंडल पंकज देखा ❀ दल सहस्र कर सोह विशेखा ॥
ता पर शत दल पद्म सुहावे ❀ वत्तिस दल पुन तापर भावे ॥
तिहँ दल ऊर्ध्व कमल षोड़श दल ❀ तिन ऊपर दल अष्ट जु निर्मल ।
तिन पर दीरघ त्रय सोपाना ❀ मंडल रुचिर भान सम भाना ।
दिव सिंहासन तापर सोहे ❀ कौस्तुभ मणि ग्रंथित मन मोहे ॥
राजत तहां कृष्ण युत राधा ❀ सुर दर्शन कर भै गत बाधा ।
तस तहँ दिव्य अष्ट सखि सोहें ❀ मोहिन्यादि सबन मन मोहें ॥
श्रीदामादि अष्ट गोपाला ❀ तिनकर सेवित श्रीगोपाला ।
हंसाकृति वीजन कर डोले ❀ वज्र मुष्टि युत चामर होलें ॥

१ स्याह २ हरे रंग की ३ तांबे के से रंग की ४ धूसरी ५ मदनमोहन नामक राग में ६ ललितादि ७ राधाकृष्ण ।

वृन्दावन शोभा तहँ भारी ❀ दिव्यलता द्रुम वहु विस्तारी।
चित्र विचित्र विहंगम बोलें ❀ मधुकर युत वंशीवट डोलें॥

दो० पद्म पुटों में प्रविश कर, शीतल मन्द सुगंध।
सतत वायु बह त्रिविधि गति, सहस कमल दलकंद॥१४॥

सबके मध्य निकुंज सुहाई ❀ द्वात्रिंशत वन युत मन भाई।
पॅरखा[1] युत प्राकार सुवर्णां[3] ❀ अक्षय वट तहँ उज्वल वरणा॥
सप्त प्रकार पद्म रागादी ❀ युक्त कुंड भूषित भिर्ते[4] आदी।
कोटि इन्दु[5] मंडल आकारा ❀ द्युति वितान[6] पुष्पन के हारा॥
ध्वजा पताकं दिव्य द्युति सोहें ❀ पुष्प रचित मंदिर मन मोहें।
भ्रमर गीत धुनि मुनि मन भावें ❀ मत मधुर कोकिल स्वर गावें॥
बाल अंर्क[7] सम कुंडल धारी ❀ शत चन्द्रानन द्युति वर नारी।
गति स्वच्छन्द हंसगति चाली ❀ रत्न मध्य मुख लखत विशाली॥
रत्न जटित नूपुर पद माहीं ❀ केयुर[8] हार विभूषित आहीं।
क्वण क्वण नूपुर किङ्किणि वाजें ❀ चूड़ामणि कर शोभत राजें॥

दो० कोटि कोटि सुंदर सुरभि, द्वार द्वार पै आहिं।
श्वेत शैल सम उज्वली; भूषण दिव्य सुहाहिं॥१५॥

सब गौ बहु पय धारन हारी ❀ तरुण सुशील रूप गुण धारी।
स्वच्छ पुच्छ वर वत्सन साथा ❀ विचरत भव्य[10] मूर्ति शुभ पाथा॥

१ भौंरि २ खाही ३ स्वर्ण ४ भीत-दिवाल ५ चंद्र ६ चंदोवा ७ सूर्य ८ बाजूबंद ९ गौ १० सुंदर।

घंटा नूपुर पँसुरी शोभे ❀ मंडित किंकिणि जाल अशोभे ।
स्वर्ण शृङ्ग कंचन की माला ❀ रत्नजटित द्यु ति दमक विशाला ॥
लाला कृष्णा कपिला पीता ❀ हरिता ताम्रा धूम्रा चीता ।
चित्र विचित्र कोकिला वरणी ❀ धेनु अनेकन सब मन हरणी ॥
हैं सागर सम दूध दिलारी ❀ चिन्हित देह हाथ कर नारी ।
कूदत मृगवत वत्सन युक्ता ❀ मंडित रह मन मोहन रक्ता ॥
इत उत चल धेनुगण संगा ❀ ऋषभ देव बहु महत उतंगा ।
दीर्घ स्कंध शृङ्ग रुचिकारी ❀ धर्म धुरंधर सब मनहारी ॥

दो० वेत्र हस्त गोपाल तहँ, श्यामल वंशी धार ।
गावन लीला लालकी, मदन मुहन स्वर सार ॥१६॥

अस विलोक तहँ नागउ माथा ❀ मध्यस्थल में देव सनाथा ।
ज्योतिर्मंडल पंकज देखा ❀ दल सहस्र कर सोह विशेखा ॥
ता पर शत दल पद्म सुहावे ❀ बत्तिस दल पुन तापर भावे ॥
तिहँ दलऊर्ध्व कमल षोड़श दल ❀ तिन ऊपर दल अष्ट जु निर्मल ।
तिन पर दीरघ त्रय सोपाना ❀ मंडल रुचिर भान सम भाना ।
दिव सिंहासन तापर सोहे ❀ कौस्तुभ मणि ग्रंथित मन मोहे ॥
राजत तहां कृष्ण युत राधा ❀ सुर दर्शन कर भै गत बाधा ।
तस तहँ दिव्य अष्ट सखि सोहें ❀ मोहिन्यादि सबन मन मोहें ॥
श्रीदामादि अष्ट गोपाला ❀ तिनकर सेवित श्रीगोपाला ।
हंसाकृति बीजन कर डोलें ❀ वज्र मुष्टि युत चामर होलें ॥

१ स्याह २ हरे रंग की ३ तांबे के से रंग की ४ धूमरी ५ मदनमोहन नामक राग में ६ ललितादि ७ राधाकृष्ण ।

कह नृप सुन मुनि देवन देखा ❀ ईश कृष्ण छवि रूप विशेखा ।
पुन ते कहा करत भे देवा ❀ कहौ वृंत[1] सब हे सुखदेवा ॥
कह मुनि पुन तिहँ थल के माहीं ❀ सुरन लख्यो बड़ अचरज ताहीं ।
कला पूर्ण आदिक हरि रूपा ❀ जिन प्रभाव अति अकथ अनूपा॥
ते सब पृथक–पृथक तहँ आये ❀ निज अंशिन युत परम सुहाये ।
भये लीन सुर देखत ताहीं ❀ अति द्रुत कृष्णरूपके माहीं ॥
तदा विबुध विस्मय बड़ भयऊ ❀ निज हियमें अस निश्चय कियऊ ।
परिपूरण तम कृष्णहि अहहीं ❀ या सम नाहिं अपर को रहही ॥
प्रथमें विष्णु वचन अस कह्यऊ ❀ सो प्रतच्छ नैनन लख लह्यऊ ।
जामें सर्व तेज लय होई ❀ परिपूरण तम भाख्यो सोई ॥

दो॰ विष्णु अनुग्रह ते भयो, हमैं दरस साक्षात् ।
धन्य धन्य हैं हम सकल, भयो सफल सुर गात[2]॥१९॥

सो॰ कह मुनि सुर मन माहिं, जान कृष्ण परिपूर्ण तम ।
करत स्तुति मुद ताहिं, तत्त्व समन्वित[3] वचनसों ॥८॥

⋙ छन्द ⋘

श्रीकृष्णाय पूर्णतमाय, पुरुष पराय परात्परम् ।
यज्ञेशाय परहित काय, दुःख हराय वरात्वरम् ॥
राधेशाय परिपूर्णाय, अच्छनमाय साक्षातम् ।
गोलोकाय धाम वराय, प्रकृतिपराय व्याख्यातम् ॥

१ वृत्तान्त २ शरीर ३ मिला हुआ ।

योगेशाय भक्तहिताय, दुष्ट छिदाय नमोनमः ।
देववराय गोपेशाय, शङ्करणाय नमोनमः ॥
जगत हिताय विघ्न हराये, मङ्गलकाय सर्व समम् ।
घनश्यामाय वंशिधराय, वेत्रंकराय सर्व नमम् ॥

छन्द

वदति मह पर तत्त्व तुमको, शुद्ध बुधि योगीजना ।
वदति सगुण सरूप सात्विक, भक्त जन प्रेमीमना ॥
अद्य अस्माभिः विदित भो, अद्वितीय सुखासना ।
तिहँ नमोनम करहिं सब मिल, कृष्ण मुख लख सुख घना ॥
व्यंग लच्चणसों तुमहिं प्रभु, योगि जन जानत नहीं ।
विविध कवि कोविद चतुर बहु, तर्क कर लखत न सही ॥
गिरा भाव अतीत तुम प्रभु, प्रकृति पहुचत नहिं तहीं ।
ब्रह्म निर्मल अगुन अज हरि, शरण हम तोरी गही ॥
ब्रह्म केचित कहत तुमको, काल केचित कहत हैं ।
के अकाली कह प्रशंसत, कर्म को के लहत हैं ॥
के मुनीजन योग कह अरु, केउ कवि कर्ता चहैं ।
विदित नहिं अन्योक्ति करके, तेहिं तुव शरणहि रहैं ॥
सेव प्रभुपद श्रेय प्रद तिहं, त्याग तीरथ तप करैं ।
यजन ब्रह्म विज्ञान विदित हु, विघ्न ताड़ित नित डरैं ॥
कहत किल हम तिन मनुज प्रति, हो कृतारथ नहिं तरैं ।
पाद–पङ्कज प्रेम तज जन, ह्वै दुखी भव विप मरैं ॥
कहा ज्ञापन करहिं तुम प्रति, साग्नि सब जनके ।
सर्व भूतन उर रहत अरु, दं

१.संख्यात्मिकाय २ हम देवों करके ३ वाणी ४

देव निर्मल मन नमत तुहिं, मुक्त जानत सुखकरी ।
तिहँ नमोनम करत भगवन, पुरुष उत्तमता धरी ॥ ५ ॥
राधिका मन चन्द्र सुन्दर, हार हरि हर्षिन सुख ।
गोपिकाजन नयन जीवन, मूल द्वार विभु सुखे ॥
अधिपती गोलोक धाम जु, आदि सुरवर वर सुखं ।
कृष्ण विपदा विबुध जनकी, पाहि पाहि हरहु दुखं ॥ ६ ॥
श्रीवनेश्वर रासिक वर कर, केलि गोवर्द्धन पती ।
व्रजपती गोपाल वपु धर, विहर लीला नित रती ॥
राधिका पति श्रुति धरा पति, धराधर पति श्रुति मती ।
बसन्तोद्धर धर्म उद्धर, धर्मधर कर बहु गती ॥ ७ ॥

दो०कह मुनि श्रीहरि कृष्ण शशि, सुन देवन वर बैन ।
कह्यो मेघ गंभीर गिर, नम्र सुरन सुख दैन ॥२०॥

कह हरि हे हर अज मुनि देवा ❀ सुनो वचन उर अंतर भेवा ।
यशुमति नंद नृपति भुवि माहीं ❀ प्रकट गोकुल में वे जाहीं ॥
तिनके गृह प्रगटौं मैं जाई ❀ करौं केलि व्रज जन सुखदाई ।
भुवि को भार सकल मैं हरिहौं ❀ तुम्हरो पूर्ण मनोरथ करिहौं ॥
तुम यादव कुल जन्महि धारौ ❀ तिय सुत सहित वचन मम पारौ ।
वेद वचन अरु द्विज मुख मोरे ❀ संत प्राण जिन भूलहुँ भोरे ॥
हे सुर वृंद ! अंग तुम मोरा ❀ पुहुमी गौ तनु मोर निहोरा ।
कल्प-कल्प बाधा जब होवै ❀ पाखंडिन कर नर दुख जोवै ॥
धर्म दया तप मख की हानी ❀ अंश रूप प्रकटौं हित जानी ।
कह मुनि अस कह देवन पाहीं ❀ कह मुसुकाय प्रिया प्रति ताहीं ॥

दो॰रसिकन रस वर्द्धनि प्रिये, चलो अवनि मो साथ।
रसिकाराधिनि रसिकनी,रसिकन करन सनाथ॥२१॥

सो॰रसिकन प्राणाधार, करें केलि रसमय सुखद।
गाय अपर भव पार, नाहिं अन्य उपचार कलि॥९॥

बिना आप रस रूपा लीला ❀ अहै असम्भव श्रणु शुभ शीला।
ताहित आप अवश्य पधारें ❀ मो अनुराग हिये निज धारें॥
अस सुन स्वामिनि कह प्रति स्वामी❀ सुनौ प्राणप्रिय मो उर धामी।
अपन पृथकपन सम्भव नाहीं ❀ एकहि प्राण युगल तनु माहीं॥
तदपि सुनौ जहँ नहिं वृन्दावन ❀ जहँ यमुना सरिता न सुहावन।
जहँ नहिं गोवर्द्धन गिरि राजा ❀ तहँ न मोर मन सुखको साजा॥
कह मुनि कोश वेद अरु नागो ❀ व्रज भूमी राधा अनुरागा।
गिरि गोवर्द्धन यमुना जोई ❀ दिये पठाय पुहुमि पै सोई॥
कहत कृष्ण पुन प्रति विधि देवा ❀ हे अज सुनौ अपर कहुँ भेवा।
वृषरवि वर तिहँ कीरति रानी ❀ ये द्वौ प्रकटे व्रज सुखदानी॥

दो॰मोर प्रिया इनके भवन, रसिकन रसप्रद जोउ।
करन केलि श्रीव्रज विषे,निश्चय प्रकटन होउ॥२२॥

सो॰तहँ श्री प्यारी संग, क्रीड़ौं रासविलास वर।
शुद्ध प्रेम रस रंग, रंगौं रसिक मो प्रीति धर॥१०॥

१ दूसरो २ चार ३ आठ अर्थात् ८४ कोष ४ पृथ्वी।

सुंदरि शत चन्द्रानन वामा ❀ वैभव वसन अलंकृत[1] श्यामा ।
एतादृश गोपी व्रज माहीं ❀ हों शत यूथ रमण हित ताहीं ॥
सिद्धा साधन कृपा रु नित्या ❀ सब प्रकार प्रकटैं व्रज सत्या ।
इन मिल प्रेम पयोधि[2] बहावीं ❀ रस शृंगार महत्व लखावीं ॥
नंद भवन उपनंद सुनामा ❀ सुबल स्तोक कृष्ण श्रीदामा ।
तस पुन अंशार्जुन नव मीता ❀ व्रज प्रकटैं प्रकटावैं प्रीता ॥
ऋषभ विशाल सुहृद वृषभानू ❀ तेजस्वी सुरस्थ सुजानू ।
सखा वरूथप अपरहु जेते ❀ घोषमाहिं प्रकटैं सब तेते ॥
इन मिल सत्य प्रीति प्रकटावीं ❀ सख्य सुरसको सिंधु बहावीं ।
या विधि युत परिकर व्रजआवीं ❀ प्रेमिन की अभिलाष पुजावीं ॥

दो० दुष्टन को ध्वंसन करौं, हरौं भक्त जन ताप ।
भुविको भार विनासिहौं, तजो चिंत विधि आप॥२३॥

सो० कह मुनि सुन सुरराय, सुरन सहित अति मुदित भो।
कृष्णाचरण शिरनाय, भुवि धृति[3] दे निज भवन गो॥१॥

* इति श्रीकृष्णायने द्वितीय गोलोकद्वारे तृतीय सोपान समाप्त *

कह नृप पूर्व कंस को कह्यऊ ❀ जेहि प्रचंड पराक्रम लह्यऊ ।
कहु मो प्रति तिहँ जन्म रु कर्मा ❀ श्रवण करन इच्छा यह मर्मा ॥
कारण पाय मृत्यु हरि हाथा ❀ लही मुक्ति सहजै मुनि नाथा ।

१ शोभित २ समुद्र ३ धीरज

कह मुनि सिंधु मथन के काला ❀ कालनेमि जो असुर कराला ॥
कियो युद्ध तिहँ माधव संगा ❀ हरि मारे वहु असुर उतंगा ।
शुक्र जिवाये ते सब प्रानी ❀ विद्यामृत संजीवनि जानी ॥
पुन श्रीपतिसों रण उद्योगा ❀ मनसा कर किय तप अरु योगा ।
कीनों तप तिहँ अतिशय गाढ़ो ❀ मंद्राचल ढिंग इक पद ठाढ़ो ॥
दूर्वारिस नित प्रति सो पीवै ❀ भज चतुरानन तप कर जीवै ।
दिव्य वरप शत भै तिहँ ताहीं ❀ अस्थि शेप रह वलिमिक माहीं ॥

दो० आय कह्यो पद्मज तवै, वरंब्रूहि इम ताहिं ।
कालनेमि तव निकसकर, कह अस वच विधि पाहिं ॥

इह ब्रह्मंड माहिं जे देवा ❀ ईश्वर आदि महावलि एवा ।
तथा पूर्ण कर मरण न होई ❀ दे वर चाहत हौं मैं जोई ॥
कह विधि यद्यपि दानव राया ❀ तव प्रार्थित वर दुर्घट पाया ।
तद्यपि कालान्तर तू पावै ❀ कवहु मोर वच मृषा न जावै ॥
सो पुन उग्रसेन की नारी ❀ तास उदर से भो तनु धारी ।
वय कौमार महामल संगा ❀ ठानत रण अति धार उमंगा ॥
मागध भूप जरासुत राजा ❀ दिग्विजयार्थ चल्यो सज साजा ।
श्री कालिंदी तट किय डेरा ❀ शिविर वनाये वहु चौफेरा ॥
तिहँ नृप करी कुवलया पीरा ❀ सहस हस्ति वल धारी धीरा ।
तोड़ सुदृढ़ शृंखला समूहा ❀ धायो शिविरि त्याग कर हूहा ॥

१ कुशरस २ वामी ३ ब्रह्मा ४ पूर्णप्रभु ५ मिथ्या ६ जरासंध ७ दिशाओं को जीतने के लिये ८ तम्बू ।

दो॰ तोड़ पटे शिविरन विटप, गृह भूधर तट ग्राम।
रंग भूमि पुन आ गयो, जहां कंस संग्राम॥ २५॥

अपर मल्ल सब देखत भागे ❀ कंस सुभट गयऊ तिहँ आगे।
शुंड दंड ते दृढ़ गहि लीनों ❀ पटक पछार भूमि तल कीनों॥
पुन तिहँ पकर अपन कर कंसा ❀ घूम घुमाय पटक वहु हंसा।
तस पुन जरासंध नृप केरी ❀ गद कर चमु शत योजन फेरी॥
अद्भुत वल तिहँ देख जराऊ ❀ मुदित भयो मनसा मन भाऊ।
अस्ती प्राप्ती द्वै निज वेटी ❀ व्याहि कंस प्रति रण दिय मेटी॥
वहुतक सुंदर हय गज दीने ❀ तैसेही रथ रुचिर नवीने।
दासी सालंकृत वहु दीनी ❀ कार्य कुशल जे परम प्रवीनी॥
नृप ! इक काल कंस वड़ योधा ❀ द्वंद युद्ध हित निज मन सोधा।
माहिष्मति पुर प्रति सो गयऊ ❀ विक्रम चंड इकाइक रह्यऊ॥

दो॰ चाणुर मुष्टिक सुभट वर, शल तोषल अरु कूट।
माहिष्मति पति पुत्र मित, मलयुध जय हित घूट॥२६॥

कह्यो कंस तिन प्रति समझाई ❀ द्वंद युद्ध मुहि अतिशय भाई।
जो तुम मोंको जीत गिरावौ ❀ तो मुहिं आपन दास बनावौ॥
यदि मैं तुम सब सों जय पावौं ❀ तौ तुम सबको भृत्य बनावौं।
देखन द्वार नगर के वासी ❀ जे आये तहँ बुधजन रासी॥
तिन तट है प्रतिज्ञ मनसे ही ❀ कियो युद्ध जय हित मिलते ही।

१ जरासंध २ वस्त्राभूषण सहित ३ विचारा ४ घेरलिया ५ वृन्द।

गयो निकट जब चाणुर ताहीं ❀ पकड़ लई यादव पति बाहीं ॥
पुन-पुन पटक-पटक अवनी में ❀ गर्जन लगो मेघवत धीमें ।
तब तहँ धावत मुष्टिक आयो ❀ मुष्टिक युद्ध हेतु तिहँ भायो ॥
मुष्टिक एक हनी हिय माहीं ❀ पटक पुहुमि तल पुन किय ताहीं ।
तब पुन आयो कूट जु वीरा ❀ जीत्यो कंस पाद गहि धीरा ॥

दो० पुन ठोकत भुज धाय जब, आयो शल भटवीर ।
कंस भुजन में तिहँ पकर, पटक्यो भुवि रणधीर ॥२७॥

पुन तोषल को यादव लीना ❀ भुज बलते ताको किय दीना ।
पटक भूमितल लियो उठाई ❀ दश योजन फेंक्यो जिम राई ॥
दास भाव में सबको कीनों ❀ पुन तिन युक्त कंस बल पीनों ।
कह नारद मो वच उर धारी ❀ गयो प्रवर्षण गिरि मनहारी ॥
तहँ एक कपि वलिवर रह्यऊ ❀ निज अभिप्राय कंस तिहँ कह्यऊ ।
तासों विंशति दिन रण ठानो ❀ माधि विश्राम कबहु नहिं आनो ॥
द्विविद शैल उत्पाटन करके ❀ क्षेपण किय तिहँ माथ अडरके ।
कंसहु बड़ भूधर इक लीनों ❀ कपिके माथ पटक द्रुत दीनों ॥
तदा द्विविद इक मुष्टिक मारी ❀ चढ़ि गो नभ सो सहज सुरारी ।
धावत लख तिहँ कंस पकर के ❀ पटक्यो पुहुमीतल कंचे धरके ॥

दो० कंस प्रहारण से भयो, मूर्च्छित कल्मष होय ।
अंग चूर्ण बलहीन हो, दास भाव भो सोय ॥२८॥

१ धीरे से २ उखाड़ के ३ फेंक्यौ ४ देव द्रोही ५ साल ६ दुखी ।

ताको साथ कंस ले गयऊ ❀ ऋष्यमूक वन प्रहुँचत भयऊ ।
तहँ इक केशि नाम रह दानू ❀ हय स्वरूप गर्जन घन मानू ॥
मुष्टिक मार कियो वश माहीं ❀ अरु तापै चढ़ि प्रमुदित आहीं ।
गिरि महेन्द्र गयऊ यदुवीरा ❀ इह विधि जीत केशि रणधीरा ॥
तिहँ गिरि कर शतवार नवायो ❀ धार हाथ मन मोद बढ़ायो ।
तहँ गिरिधर परशुधर देखा ❀ क्रोध रक्त लोचन अवरेखा ॥
देखत प्रलय अर्क सम ताहीं ❀ किय प्रणाम द्रुत मुनि पद माहीं ॥
प्रदक्षणा भार्गव की कीना ❀ भयो पतित तिहँ पद ह्वै दीना ।
ताते राम शान्त चित रह्यऊ ❀ कछुक रोषयुत भाखत भयऊ ।
अहो कीट मर्कट सुत नाईं ❀ रे तुम तुच्छ मशक सम आई ॥

दो० आजहि तुमको मारिहौं, दुष्ट क्षत्रिवर मान ।
मो समीप धनु देख यह, लक्ष मार तुर्त मान ॥२९॥

येहि विष्णु शंकर प्रति दीनों ❀ त्रिपुरासुर सन रण जब कीनों ।
शंभु हाथ सो मो कर आयो ❀ क्षत्रिय वध कारण मुहिं भायो ॥
राहु उठाय यदा तुम तानो ❀ तदा कुशल तुम अपनो जानो ।
यदि नहिं तान सकहु धनु ताता ❀ तो तुम्हरो करिहौं मैं घाता ॥
सुनत वचन दानव नृप कंसा ❀ सप्त ताल सम धनु अवतंसा ।
लियो उठाय राम के देखत ❀ सज्य कियो लीलावति पेखत ॥
पुन आकर्ष्य श्रवण परियन्ता ❀ शतश वार तान्यो बलवंता ।
तानत धनु टंकोर सु भयऊ ❀ ताकर शतिश तड़ित निकसयऊ ॥

प्रमाण २ कंस ३ परशुराम ४ सूर्य ५ परशुराम ६ मच्छर ७ तोल प्रमाण ।

घनु संस्थाप्य राम ढिंग आई ❀ पुन-पुन नमन कियो शिरनाई।
कह्यउ कंस मैं क्षत्रिय नाहीं ❀ किंकर तुम्हरो दानव आहीं॥

दो० तुव दासन को दास हौं, पुरुषोत्तम मो पाहि।
सुन वच मुनि अति मुदित भो, दियो धनुषवर ताहि ३०

जब यह वैष्णव धनु हो भंगा ❀ तब तुम जान नष्ट निज अंगा।
धनु ध्वंसक तव काल निदाना ❀ इह प्रतीत मन राख सुजाना॥
कह मुनि-मुनि पद निज शिर नाई ❀ विचरण लगो महत पद पाई।
लरत न कोउ कंसके आगे ❀ देवत कर जिन उर डर लागे॥
पुन वह कंस सिंधु तट गयऊ ❀ तहाँ अघासुर देखत भयऊ।
अहि सम सों फूंकत लिलिहाना[1] ❀ देखत कंस क्रोध बड़ ठाना॥
धाय कंस को दंशन आयो ❀ कंस पकर तिहँ भूमि गिरायो।
पुन निज गर में स्रक सम धार्यो ❀ कंस सुभट अहि मद सब मार्यो॥
पूरव वंग देश इक अहड्डी ❀ बली अरिष्टासुर तहँ रहई।
तिहँ सन कियो युद्ध बड़ भारी ❀ द्विरद[2] द्विरद सम द्वौ बलधारी॥

दो० गिरि अरिष्ट निज शृंग से, कंसोपरि दिय डार।
पुना कंस तिहँ माथ पर, डार्यो गिरि ललकार ॥३१॥

मुष्टिक एक अरिष्टहिं मारी ❀ घन गर्जन कर कंस सुरारी।
मूर्छित कर तिहँ दास बनायो ❀ पुन वह कंस उतर दिशि धायो॥
प्राग्ज्योतिष पुर है इक ग्रामा ❀ भोमासुर तिहँ नृप को नामा।
कंस युद्ध हित तिहँ प्रति कह्यऊ ❀ दानव! तव रण मो मन चह्यऊ॥

१ जीभ चाटता हुआ २ हाथी।

तौ मैं होउँ तुम्हारो दासा ❀ जो तुम जीतौ युद्ध अवासा ।
यदा जीत मैं तुमते पावौं ❀ तदा तोहिं निज दास बनावौं ॥
कह नारद तहँ पूर्व प्रलम्बा ❀ कंस संग किय युद्ध अलम्बा ।
गजपति गजपति सों जिम लरहीं ❀ तैसे सुभट–सुभट रण भिरहीं ॥
मल्लयुद्ध कर कंस पछार्यो ❀ अति बलकर महिमें तिहँ डार्यो।
पुनः पकर कर तिहँ त्रिक्षेपो ❀ प्राग्ज्योतिषपुर अन्तर क्षेपो ॥

दो॰ ता पाछे तहँ आयऊ, धेनुक असुर महान ।
ग्रहण कियो तिहँ कंस को, क्रोधवान बलवान ॥३२॥

बहुतक दूर हटा ले गयऊ ❀ देह छटा दारुण तब भयऊ ।
पुन तिहँ बलकर कंस हटायो ❀ शत योजन धेनुक भय पायो ॥
भूमि निपात्य चूर्ण तनु कीनों ❀ मुष्टिक मार पूर्ण जय लीनों ।
भौम वचन तृण दानव ताहीं ❀ कंस उठाय गयो नभ माहीं ॥
जाय तहां दौ लरने लागे ❀ लाय लक्ष योजन तिहँ भागे ।
तब तहँ कंस अपन बल कीनों ❀ तृण को तृण सम कुपटक दीनों॥
रुधिर वमन भइ तृण को ताहीं ❀ करी कंस निज जय रण माहीं॥
तब तहँ एक बकासुर आयो ❀ पकर चौंच सों कंस गिरायो ॥
कंसहु ताको पुहुमि पछारा ❀ वज्रघात मुष्टिक इक मारा ।
पुन उठ बक दानव बलवाना ❀ श्वेत पक्ष घन गर्जन ठाना ॥

दो॰ क्रोधयुक्त बक धाय कें, ग्रस लीनों तिहँ कंस ।
ग्रसत भयो जब कंस तब, रुक लिय तिहँ बक हंस॥३४॥

१ स्थान २ सिंह ३ फेंक दिया ४ छिपाय दिया ५ गिराय कें ६ पृथ्वी पै पटक दिया ७ प्रान ।

तव स्वर त्याग कंस को दीना ❀ घाव भयो वक कंठ मलीना।
वक को कंस बाहुवल करके ❀ कियो पतन पृथिवी में धरके॥
पुना पकर कर धरो फिरावा ❀ इह विधि कंस अपन जय पावा।
तिहँ पश्चात पूतना आई ❀ रण हित जिँह मनसा मन लाई॥
विहँस कंस तिहँ प्रति अस कह्यऊ ❀ पूतन तुव तन तिय तन रह्यऊ।
नीति उलंघन करौं न कवहू ❀ यद्यपि नष्ट होइ मो सवहू॥
ताते तोसों युद्ध न करिहौं ❀ नहिं किय प्रांक नाहिं अब लरिहैं
वक दानव अब है मो भैया ❀ तू भवें भगिनी मो सुख दैया॥
देख अमित वल मधुपति केरो ❀ धर्षित भौम भयो मन चेरो।
सुन वच मैत्री किय युत कंसा ❀ असुरन अर्थ सहाय स्व वंसा॥

दो० कंसहु तिन सन मैत्रि किय, रण मरियाद पछान।
इह विधि सवको जीत लिय, कंस महा वलवान॥३४॥

❀ इति श्रीकृष्णायने द्वितीय गोलोकद्वारे चतुर्थ सोपान समाप्त ❀

कह नारद तिहँ पाछे कंसा ❀ जीत प्रलंव प्रभृति निरसंसा।
गो दैत्यन मिल शंवर ग्रामा ❀ निज अभिलाष कही वलधामा॥
यद्यपि शंवर वड़ वलधामा ❀ कियो न कंस संग संग्रामा।
मैत्री करी कंस के साथा ❀ अपर दैत्य सव मिल दें हाथा॥

---

१ पृथ्वी पै २ पूर्व ३ हो ४ वहिन ५ आदिक।

शिखर त्रिशृंगे शयन कर रह्यऊ ❀ व्योमासुर बलवन्त जु कह्यऊ ।
ताको कंस चरण दृढ़ मारो ❀ ताम्र नयन निज क्रोध सम्हारो ॥
उठकें कंसहिं मारण आयो ❀ तावत प्रलँब कोप कर धायो ।
तब इक मुष्टि कंस तिहँ मारी ❀ भो निःसत्त्व श्रमातुर भारी ।
ताको कंस भृत्य कर लीनों ❀ कह मुनि मिल मुहिं वंदन कीनों॥

दो० रण इच्छुक मैं देवऋषि, कहाँ जाउँ कहु भेव ।
तब मैं कहि अब जाउ तुम, बाणासुर युध लेव ॥२५॥

सो० मो प्रेरित मधुराय, गयऊ शोणित पुर विषे ।
हे नृप पुरमें जाय, हँस्यो कंस भुजबल प्रमत ॥१२॥
कंस प्रतिज्ञा बाण, सुनत महत क्रोधित भयो ।
निज भुज बल अप्रमाण, मान कंससों चह भिरन॥१३॥

रण उद्यत जब बाणहिं देखा ❀ आये तब भालेन्दु सुरेखा ।
श्रीशंकर बलिनंदन पाहीं ❀ समुझावत भाखत अस ताहीं ॥
बिन श्रीकृष्ण अपर नहिं कोऊ ❀ भुवि में कंस बधे अस होऊ ।
भृगुअंगज धनु याको दीनों ❀ प्रमुदित होय अभय तिहँ कीनों॥
इम कह शिव मित्रता कराई ❀ बाण कंस विग्रह बिनसाई ।
शंकर शं कारक श्रुति गावे ❀ शिव द्रोही सुख कबहु न पावे ॥

१ पर्वत का नाम है २ बलहीन ३ श्रीशिवजी ४ बाणासुर ५ परशराम ६ युद्ध का संकल्प
७ कल्याण ।

पुन सो कंस प्रतीची[1] गयऊ ❁ सुन्यो कि वत्सासुर तहँ रहाऊ ।
तिंह मिल कियो युद्ध वड़ भारी ❁ रहाउ जु दैत्य वत्स आकारी ॥
पकड़ पूछसों भूमि गिरायो ❁ कर वश तिहँ मलेच्छुपुर आयो ।
काल यवन तहँ मो मुख सुनकें ❁ गदा उठाय चल्यो शिर धुनकें ॥

दो० कंस गदा तिहँ छीन कर, गर्ज्यो जलद प्रमान ।
स्वगदा पटकी यवन पर, लक्षभार निर्मान ॥३६॥

गदा युद्ध जब भई महाई ❁ कंस रु काल यवन भटराई ।
तदा गदा द्वौ चूरण होई ❁ विस्फुलिंग विद्युत सम जोई ॥
काल यवन को कंस गिरायो ❁ अवनी माहिं ताहिं लपटायो ।
पुन-पुन गह कर पकर पछार्यो ❁ मृतक समान ताहिं कर डार्यो ॥
काल यवन सैना[3] तब आई ❁ बाण वर्ष बहु धूम मचाई ।
गदा उठाय कंस द्रुत धायो ❁ दले पल माहिं सकल विचलायो ॥
हय गज यान चूर्ण कर डारे ❁ वृंद वीर वर पुहुमि पछारे ।
गर्जत घन सम प्रमुदित कंसा ❁ निरख अपन जय बहुत विहँसा ॥
अपर मलेच्छ भाज[5] सब गयऊ ❁ निज-निज अस्त्र सवन तज दयऊ ।
भीत[4] पलायित म्लेच्छन देखा ❁ कंस न मारे नीति विशेखा ॥

दो० दीर्घ जानु पद ऊर्ध्व अरु, स्तंभ उरू कटि छोट ।
वक्ष कपाट रु पानवपु, पुष्ट पीठ भुज मोट ॥३७॥

पंकज नैन वृहत बहु केशा ❁ अरुण वरुण श्यामाम्बर[6] भेशा ।
कुंडल क्रीट हार वर धारी ❁ पंकज माल मुकुट मणि भारी ॥

१ पश्चिम दिशा २ पतंग ३ सैना ४ डरे हुये ५ भाजते हुये ६ काले कपड़े ।

खड्ग निषंग कवच कंस काया ❀ मुद्गर गदा धनुष मन भाया ।
मद उत्कट जय कांक्षी कंसा ❀ गयउ स्वर्ग जीतन सुर वंसा ॥
चाणुर मुष्टिक वीर अरिष्टा ❀ केशी शल तोपलक वलिष्टा ।
द्विविद वकासुर सुभट प्रलंवा ❀ व्योमासुर धेनुक तनु लंवा ॥
कूट भौम वाणासुर वीरा ❀ अपर वत्स शंवर रणधीरा ।
इत्यादिक दानव ले साथा ❀ रोक लियो सुरपुर मधुनाथा ॥
देवाधिप शचिपति जव देखी ❀ कंस सैन वलवंत विशेखी ।
विवुध वृंद मिल कर वड़ क्रोधा ❀ निकस्यो इन्द्र महावल योधा ॥

दो॰ तिन मिलकर संग्राम किय, रोमहर्ष अति घोर ।
दिव्य शस्त्र चमकत प्रभा, वहु तीक्ष्ण जिन कोर[३] ३८

शस्त्रन अंधकार के होते ❀ भो आरूढ़ इन्द्र रथ जोते ।
फेंक्यो वज्र कंस के माथा ❀ जो शत धार ताड़ति घुतिहाथा ॥
इन्द्र वज्र निज मुद्गर करके ❀ तोड़यो कंस वीचही धरके ।
गियौ वज्र तिहँ रणमें आई ❀ छिन्नधार भो गई तिखाई ॥
छुट गो वज्र इन्द्र के हाथा ❀ लियो खड्ग निजकर सुरनाथा ।
अति ही आशु कंस सिर मारा ❀ गर्जत भैरव नाद अकारा ॥
सो दुख कंस न नेंक विचारे ❀ जिम गज सुमन माल के मारे ।
ले निज गदा गहन अति भारी ❀ अष्ट धातु मय रिपु दुखकारी ॥
लक्ष भार की गदा सुहाई ❀ फेंकी कंस इन्द्र पै आई ।
गदा पतन वासँव जव देखा ❀ पकर लई तिहँ त्वर जिम रेखा ॥

१ कंस २ इन्द्र ३ अनी ४ इन्द्र ५ भयंकर ६ इन्द्र ।

दो० वही गदा पुन फेंक दी, त्वरा कंस पै आन।
दानव दल विचलाय दिय, मातुल सारंथिवान॥३९॥

कंस परिघ वर्ज्री¹ पै मारा ❀ इन्द्र आय पुन कंस पछारा।
तव मधुपति पुन परिघ उठायो ❀ शक्र कंध ताड़न कर धायो॥
तिहँ ताड़न सुरस्वामि गिरायो ❀ घड़ी एक तन चेत गँवायो।
गृध्र पक्ष सिफुरत युति वाणा ❀ मरुत वृंद मारे मधुराणा²॥
वाण समूहन छादन कीनों ❀ वर्षा जिम छिपाय रवि दीनों।
तव सहस्रंभुज कुपित महाई ❀ वाण चपेटन धूम मचाई॥
दिये भगाय सवन खिन माहीं ❀ वाणासुर वाणन तें ताहीं।
तव वाणासुर³ को सुर वृंदा ❀ द्वादश रवि वसुअष्ट सुछंदा॥
शस्त्र अस्त्र शैलन कर ताहीं ❀ अति आकुल कीनों खिनमाहीं।
तव लग तहँ भौमासुर आयो ❀ गर्ज प्रलंव प्रभृति दल धायो॥

दो० तिन नादनते देव सव, मूर्छित भै रण माहिं।
आयो आशू इन्द्र तव, गज चढ़ि रण भो जाहिं ४०

कंसोपरि ऐरावत छेरा ❀ अतिशय मद उन्मत तिहँ घेरा।
अंकुश फेरनते भो क्रुद्धा ❀ लागो करन पाँवमों युद्धा॥
वहु दैत्यन को मार भगायो ❀ शुंड फुँकारत दल विचलायो।
स्रवत जाहिं मद चतुर सुदंता ❀ हिमअद्री⁴ सम दुर्गमवंता॥
वार वार गर्जत घन घोरा ❀ वाजत श्रृंखल चल चहुँ ओरा।
घंट आढ्य वर किंकिणि जाली ❀ रत्नन मंडित सोह निराली॥

१ इन्द्र २ कंस ३ वाँणासुर ४ हिमाचल।

गोरोचन सिन्दुर कस्तूरी ❀ शोभित मुख पत्रावलि रूरी ।
अस गज को दृढ़ मुष्टिक मारी ❀ कंस महाबलि रिस बहु धारी ॥
द्वितिय मुष्टि वासव उर मारी ❀ रण भुवि में द्वौ गिरे अवारी ।
दृढ़ मुष्टिक प्रहार के लागे ❀ शक्र दूर जा गिर्यो न भागे ॥

दो० जानू से धरणी परस, गज विह्वल अकुलाय ।
पुन उठकें सँभार गज, कंस हन्यो रदनाय ॥४१॥

शुंड दंड से पकर्यो आई ❀ लख योजन तिहँ दूर भगाई ।
भयऊ पतित कंस बजंगा ❀ किंचित व्याकुल मानस भंगा ॥
ओष्ठ रुष्ट सिफुंरत जिहँ देही ❀ पुन रण भुवि आयो रण नेही ।
पकड़ कंस नागेन्द्र पछार्यो ❀ अरु निर्पात्य रण आँगन डार्यो॥
शुंड दंड बहु पीड़ित कीनें ❀ पल में दंत चूर्ण कर दीनें ।
तब शचिपति ऐरावत हाथी ❀ द्रुत भज गो रण रह्यो न साथी॥
अपर वीर सब किये निपाती ❀ देवयोनि पुरि गयो सुहाती ।
वैष्णव चाप ग्रहण कर कंसा ❀ संजं कियो देवन कुल हंसा ॥
विद्रावित सब सुर कर दीनें ❀ वाण समूहन धनु धुनि कीनें ।
वाणन ताड़ित सुर सब भागे ❀ भइ तिन बुद्धि लीन नहिं जागे॥

दो० केचित रण में मुक्त शिख, भीतास्मी इति वाद ।
के प्रांजलि युत दीन हो, मुक्त अस्त्र कछु छांद ॥४२॥
सह न सके ते कंस रण, विह्वल सुर गे भाग ।
नोंक शून्य लख कंस तब, गयो तहाँ युत राग ॥४३॥

१ दाँतों से २ काँपती हैं ३ ऐरावत हाथी ४ गिरायके ५ स्वर्ग ६ चढ़ायो ७ भाजने वाले ८ डरते हैं ६ त्याग दई १० स्वर्ग ।

सो०स्वर्ग विभूती लाय, छत्र सिंहासन तिन हरे।
पुन मथुरापुरि आय, वसंत मुदिता उर धरे ॥१४॥

कवित्त

भल मुदिताको हिय-धार गर्व करें जिय,
जिन जैसो कर्म किय-फल किल पावहीं।
पाप वृंद बढ़ जात-होवें तब उतपात,
दुख पावें साधुगात-पुण्य मिट जावहीं ॥
भुवि सुर विप्र धेन-पायके महा अचैन,
शरण हरि की लेन-तबै हरि आवहीं।
हरि वन्हीं है बसन्त-असुर पतंग जंत,
सहज होवहिं अन्त-संत हुलसावहीं ॥ १ ॥

* इति श्रीकृष्णायने द्वितीय गोलोकद्वारे पञ्चम सोपान समाप्त *

कहत गर्ग शौनक प्रति ताहीं ❀ मैथिलराय मुदित मन माहीं।
वंदन कर भाखत प्रति नारद ❀ हे सुरर्षि विज्ञान विशारद ॥
किय पवित्र मो कुल अरु अवनी ❀ कृष्ण भक्ति दिय आनँद सवनी।
कृष्ण-भक्त को इक पल संगम ❀ जन पवित्र हो सकुल निहंगम ॥
राधा राधापति गत बाधा ❀ किय व्रज चरित सुभक्त अराधा।
ते मो सन कहु सुर ऋपि नाहा ❀ तप्त त्रिताप रक्ष मुहिं चाहा ॥

१ साधुन के शरीर २ नाश ३ रहित।

कह नारद नृप निमिकुल धन्या ❁ कृष्ण भक्त जहँ रहत अनन्या।
जिहँ तुम पूर्ण प्रजा को कीनों ❁ भुक्ती मुक्ति उभय पद दीनों॥
शृणु पुनीत अब श्रीप्रभु लीला ❁ मंगल प्रद रस सनी सुशीला।
श्री को प्रथम प्रकट पन गावौं ❁ रसिकन के मन मोद बढावौं॥

दो० सुनौ नृपति बहुलाश्वजी, महामोद प्रद गाथ।
श्रीराधा प्राकट्य शुभ, रसिकन करन सनाथ ॥४४॥

सो०तट कालिन्दि निकुंज, तहँ मन्दिर वृषभानुवर।
स्नेह सुरस सुख पुंज, प्रकट भई अवतार वर ॥१५॥

कवित्त

भाद्रपद शुक्ल पक्ष वसु तिथि गुरु दिन,
अरुण उदय काल जन सुखदाई है।
नित्य सिद्ध राधिका सकल सुख साधिका,
आविश्य काय कीरति के इह भुवि आई है॥
आह्लाद स्वरूप स्वयं रूप सब रस सार,
जाके अंशांश होत श्रीन समुदाई है।
जाको दरसन हरि हर अज पावैं नाहीं,
वही आज कीरति के कुख प्रकटाई है॥ २॥

छन्द

भई प्रकट किशोरी, रसमयि गोरी-स्वामिनि मोरी, सुकुमारी।
अतुलित छवि भारी, हरि हिय हारी-कीर्ति दुलारी, सुखकारी॥

---

१ श्रीराधिका २ अष्टमी ३ प्रवेश ४ शरीर में।

गन रमा उमा गुन,रति शचि सुरि पुन-नहिं सरवर जिन,द्युतिलेशा।
प्रत्यँग छवि झरही, माधुरि वरही-रसमयि करही, व्रजदेशा॥
भो समय सुहावन, मुनि मन भावन-अतिशय पावन, चहुँ ओरा।
घन मँद-मँद परसैं, विद्युत सरसैं-अगजग हरसैं, नहिं थोरा॥
सुर सिद्ध सुजाना. राज विमाना-हनै निशाना, मोद महा।
सुन्दर नन्दन वन, सुसुमन नूतन-वर्षें जय धुनि, पूर रहा॥
देखैं सब ठाढ़े, लोचन गाढ़े-तनु सुख बाढ़े, ताप टरैं।
बहु गन्धवि गावैं, ताल बजावैं-किन्नरि आवैं. नृत्य करैं॥
सब सरिता निर्मल, बहत मधुर जल-प्रभवत धुनि कल,हृदय हरैं।
बह वायु सुगंधा, शीतल मंदा-मिश्रित नंदा, सुमन झरैं॥
द्रुम गन हरियाली, अतिहि निराली-बेलि विशाली, छवि भारी।
कूजत कल कोकिल, कीर मोर मिल, हँस सारस रिल, मनहारी॥
अति मुदिता छाई, चहुँ दिशि भाई-नव निधि पाई, जिम रंका।
इम उत्सव भारी, सब सुख कारी-बसँत निहारी, गत शंका।

कवित्त

जाके द्युति आगे शत शरद शशिहुँ लाजैं,
देख अस सुता मन मोद न समाई है।
कन्या हित हेतु दियो कीरति विविध दान,
युगलक्ष धेनु भू सुरन तहँ पाई है॥
जाको दरसन दुरलभ देव ईशन को,
कोटि यज्ञ कर तोहू पावैं नाहिं राई है।
यहि विधि वृषभानुवर गृह सुशोभित,
मुदित लड़ात लाड़ गोपी समुदाई है॥३॥

१ समूह २ बराबरी ३ जड़जंगम ४ बैठ ५ सुगंधित फूल ६ सुन्दर ७ नन्दन वन के ८ तोता।

दो० रत्नजटित पलना सुभग, हेम खचित अनमोल ।
भूलत तहँ श्रीराधिका, छवि माधुर्य अतोल ॥४५॥
सो० सखिजन नित्य झुलाहिं, बड़ी होन लगि अलपदिन।
शुक्ल पक्ष के माहिं, प्रति दिन बड़ जिम शशिकला १६॥

कर विकास रस रास महाना ❀ दीपावलि मंदिर वृषभाना ।
धेनु लोक चूड़ामणि स्वामी ❀ कृष्ण कंठ भूषण वर नामी ॥
कीरति की कीरति रति रूपा ❀ छवि माधुर्य मनोज्ञ अनूपा ।
कह नारद तिहँ पद नित ध्यावौं ❀ कर परिभ्रटन प्रिया गुन गावौं ॥
कह नृप अहो भाग्य वृषभानू ❀ अहो भाग्य कीरति को मानू ।
प्रकटी जिन गृह राधा रानी ❀ को इन पूर्व सुकर्म प्रमानी ॥
कह सुरर्षि नृग पुत्र महाना ❀ भूप सुचन्द्र सकल जग जाना ।
चक्रवर्ति वृषरविवर अंशा ❀ धरणी भयउ प्रकट शुभवंशा ॥
कन्या मानस पितृन केरी ❀ तीन भईं सुन्दर छवि हेरी ।
कलावती अरु रतनन माला ❀ अपर मेनका नाम विशाला ॥

दो० रत्नमाल दिय जनक को, मैना दई हिमाल ।
विधिवत पितृन दान कर, दायज दियो विशाल४६

सीता सुता रत्नमाला की ❀ पारवती कन्या मैना की ।
चरित विदित इन दोउन आहीं ❀ सुन नृप तेउ पुराणन माहीं ॥
कलावती अरु भूप सुचन्द्रा ❀ गोमति तट तप किय मधि कन्द्रा।
दिव्य वर्ष द्वादश तप तपा ❀ ब्रह्मा ध्यान मंत्र उर जप्ता ॥

---

१ महान रास रस को प्रकाश करन हारी चंद्रिका २ गुफा ।

लख तप विधि तहँ आवत भयऊ ❁ वरंब्रूहि इम तिन प्रति कह्यऊ ।
सुन वल्मीक देशते आये ❁ दिव्य देह द्युति बड़ तप पाये ॥
विधि प्रति नमन करत नृप कह्यऊ ❁ दिव्य मोक्ष मो मनसा रह्यऊ ।
सुन पति वच रानी मन माहीं ❁ करन विचार लगी अस ताहीं ॥
कहा मांगेउ बड़ तप करके ❁ जिम को काच कंचनहिं हरके ।
विधि रानी मन गति पहिचानी ❁ तिन दम्पति प्रतिकहअसवानी ॥

दो॰ सुनौ वचन दृढ़ राख मन, हे नृप प्रद कल्यान ।
दारुण तप; तुम्हरो निरख,मो मन मोद महान॥४७॥

अल्प मुक्ति सुख कह मुनि भक्ता ❁ जे नित अविचल सुख अनुरक्ता।
मिश्री होवन ते नहिं चाहें ❁ लेहिं स्वाद रस मिश्रि उमाहें ॥
है अपि सार यही सुन भूपा ❁ या सम अहै न स्वाद अनूपा ।
जिहँ सुख मगन रहत सतिस्वामी ❁ त्याग मोक्षसुख तिहँ अनुगामी॥
गुप्त भेद जानत मुनि जेऊ ❁ तिहँ सुख मगन रहत नित तेऊ ।
विन भक्ती वह पावत नाहीं ❁ ताते प्रीति करौं प्रभु माहीं ॥
मो मनसा अपि ताहित येही ❁ वहि पर सुख देवहुँ तुम नेही ।
अतिशय गुप्त गाथ सुन लीजे ❁ प्रेम लक्षणा रस नित पीजे ॥
आप दोउ गोलोक निवासी ❁ वृप रवि कीर्ति अंश सुखरासी ।
तिन तुमसों वंचन किम करिहौं ❁ गुप्त रहस्य प्रकट कर धरिहौं ॥

दो॰ तप प्रभाउ तुम दोउ अब, भोगहु सुख सुरलोक ।
परात्पर वर युगल को, धरहु ध्यान उर ओक॥४८॥

---

१ अतीव चाहसों ।

पुन तुम द्वौ किहँ कालहिं पाई ❀ नित्य सिद्ध तनु माहिं समाई ।
द्वौ प्रगटोगे पृथवी माहीं ❀ परम मोद पावहु तब ताहीं ॥
भारतवर्ष पुण्य प्रद माहीं ❀ मध्य गंग यमुना के ताहीं ।
द्वापर अंत चरित यह होई ❀ मृषा न होय मोर वच जोई ॥
तुम्हरे गृह राधा साक्षाता ❀ परिपूरण तम प्रिया प्रख्याता ।
प्रादुर्भाव होय मुदमूला ❀ करहिं चरित्र भक्त अनुकूला ॥
तामें अविचल प्रीति तुम्हारी ❀ होवै प्रेम लक्षणा धारी ।
तब पावौ तुम श्रीगोलोका ❀ नित्य एक रस विगत विशोका॥
कह मुनि सुन द्वौ विधि वर बानी ❀ पुलकित गात सत्य सब जानी ।
ताते अज वर कारन दोऊ ❀ दिव्य अमोघ भोग वर सोऊ ॥

दो॰ भये प्रकट द्वौ अवनि पै, दिपै देह तिन केरि ।
रानि कलावति भूमि पति, श्रीसुचन्द्र शुभ हेरि॥४९॥

जहँ कन्नोज सुपुण्य प्रदेशा ❀ तहँ भलंद नृप नृपवर वेशा ।
तिहँ गृह कलावती प्रकटाई ❀ जाको नाम कीर्ति कह गाई ॥
यज्ञ कुंड ते प्रकट्यो देहा ❀ परम दिव्य मानो छवि गेहा ।
निरख चकित चित चातुर वृंदा ❀ प्रफुलित भये कमल जिम चंदा॥
नृप सुरभानु भवन वर माहीं ❀ प्रकट्यो श्रीसुचन्द्र नृप ताहीं ।
वर वृषभानु कहत बुध ताहीं ❀ जिहँ तनु प्रभा काम सम आहीं॥
श्रीप्रभु प्रिय ज्ञाती गोपाला ❀ सकल प्रकार समृद्धि विशाला ।
इम द्वौ प्रकटे पुहुमी माहीं ❀ कीरति वृषरवि संज्ञा ताहीं ॥

१ सदैव २ वैभव

इनहीं के शुभ सदन मँझारा ❀ श्रीराधा को भो अवतारा ।
प्रभु निज आश्रित की अभिलाषा ❀ करत अवस पूरण सुखरासा ॥

दो० ताते तज आसा अपर, आस हरिहि की धार ।
बसन्त करुणा करहिं त्वर, निज रुचि के अनुसार ५०

सो० अनहोनी ह्वै जाय, होनी को कर हान हरि ।
बसंत ताहिं भुलाय, किहँ प्रकार सुख जीव लह॥१७॥

* इति श्रीकृष्णायने द्वितीय गोलोकद्वारे षष्ठम सोपान समाप्त *

कह नारद यादव कुल केरो ❀ ऋषिवर गर्ग पुरोहित टेरो ।
तीन काल ज्ञाता विद्वाना ❀ दरस करतही अघ ह्वै हाना ॥
एक समय यदु सदसी[1] माहीं ❀ आये गर्ग ऋषी मुद आहीं ।
गर्ग विलोक्यो नृप तहँ जाई ❀ करत सेव सब तिहँ मन लाई ॥
अक्रूर आहुक देवक कंसा ❀ नृप सेवत जिम मानस हंसा ।
नृप सिंहासन ऊच सुहायो ❀ रत्नजटित देखत मन भायो ॥
चामर छत्र आदिसों सोहे ❀ नृप छवि सबहिन को मन मोहे ।
अस प्रकार राजत नृप ताहीं ❀ मुनिको देख हरष हिय माहीं ॥
आशु उठ्यो नृप सहित समाजा ❀ किय प्रणाम प्रीती युत राजा ।
तिम सबहिन तहँ कियो प्रणामा ❀ उत्तम भाग्य मान उर धामा ॥

दो० सुन्दर सिंहासन दिपै, तापै मुनि पधराय ।
किय अर्चन बहु विधि सरुचि, जय जय मुखसों गाय५१

[1] सभा में ।

दिय असीस मुनिनृप प्रभृतिन को ❀ पूछी कुशल यदुन सवहिनको ।
पुना गर्ग देवक पै कह्यऊ ❀ जो वड़ नीतिवन्त यदु रह्यऊ ॥
जहँ तहँ कन्यहिं भल वर होवैं ❀ नीति निपुण वल धन वहु जोवैं ।
विन शौरी वर वर भुवि नाहीं ❀ मैं चिन्त्यो वहु दिन लग ताहीं ॥
ताहित तुम वसुदेवहिं देवौ ❀ त्रिभुवन माहिं सुयश यह लेवौ ।
श्री देवकी जु सुता सुहाई ❀ विधिवत दान करहु नरराई ॥
कह नारद अस सुन मुनि वानी ❀ तदनुसार कीनों हित मानी ।
श्री देवक युत नीति नृपाला ❀ सकल धर्म धृत धैर्य विशाला ॥
दइ देवकी विवाह कराई ❀ गर्गेच्छा वसुदेवहु पाई ।
कर मंगल वहु दायज दीनों ❀ दासी·हय·गज यान नवीनों ॥

दो॰ कर विवाह वसुदेव वर, सुन्दर तर रथ साज ।
गवनत भै सुखसों सुघर, जोत अश्व ससमाज॥५२॥

रत्नजटित रथ वर वधु राजे ❀ देख जिनें रति कन्द्रप लाजे ।
भगनी प्रियकर कंस तहाहीं ❀ हय रश्मी गह निज कर माहीं ॥
लेइ चल्यो चतुरंगिणि सैना ❀ अति प्रसन्न पहुचावन ऐना ।
हेम माल युत चतुशत हाथी ❀ पन्द्रहँ सहस अश्व तिँइ साथी ॥
सुभग सहस अष्टादश याना ❀ द्वैशत दासि श्रृंगार महाना ।
भेरि मृदंग धेनुमुख वाजैं ❀ वीना आनक सहनइ गाजैं ॥
महानन्द यदु चल अवनीपे ❀ शुभद प्रयाण काल पथ दीपे ।
उत्सव होत भई नभ वानी ❀ कंस गर्भ वसु इन तुव हानी ॥

१ धारण किये हुये २ घोड़े ३ हाथी ४ रथ ।

सो तुम रथ हाँक्यो निज काला ❀ रश्मी पकड़त मोद विशाला ।
कंस कुसंग निष्ठ खल जोई ❀ इम सुन रथ तज क्रोधित होई ॥

दो० उग्रकर्मि निर्दयि निलज, लेकर कर तरवार ।
पकड़ केशसों बहिन को,वध हित कियो विचार५३

सो० तब विस्मय सब लोक, अरु उत्सव सब रहि गयो ।
छाय रह्यो बहु शोक, कोलाहल भारी भयो ॥ १८ ॥

जाय रहे आगे जन जेते ❀ धाय आय विस्मय भै तेते ।
लख अस गति पीरे मुख भयऊ ❀ कहा भयो कह चकृत रह्यऊ ॥
कृत अनिष्ट हित उद्यत कंसा ❀ अहै जु क्रूर निलज गतसंसा ।
अस कंसहिं लख त्वर वसुदेवा ❀ शांति करन किय मनसा एवा ॥
स्तुति अरु युक्ति युक्त कर रचना ❀ तथा कृपा उत्पादक वचना ।
महा भाग्यशाली वसुदेवा ❀ कह्यो कंस प्रति निज उर भेवा ॥
शूर प्रशंसनीय तुम आहीं ❀ गुणसम्पन बहुगुणिजन माहीं ।
भोज सुकुलकी कीरित कर्ता ❀ सम्यक सब दिशमें यश भर्ता ॥
भो भोजेन्द्र भोजकुल केतू ❀ भौमादिक सब तव यश हेतू ॥
मागधेश अरु बक वत्सासुर ❀ जीते त्वर तृण अरु बाणासुर ।

दो० महा सुभट श्लाघा करत, तेरे महत प्रताप ।
किम भगनी वध हित मती,कीनी है अब आप॥५४॥

१ बुरे २ तैयार ३ जनक ४ ध्वजारूप ५ जरासंध ६ बड़ाई ।

आइ वकी रण हित तुम पाहीं ❀ कहे वचन तव इम किम ताहीं ।
मैं अवलासों युद्ध न करिहौं ❀ निज प्रिय वहिन तोहिं करि धरिहौं ॥
यह साक्षात भगिनि है तेरी ❀ अव किम नीति त्याग मति फेरी।
पर्व विवाह परम सुकुमारी ❀ वालक दीन तोर हितकारी ॥
आप इन्हें वहु लाड़ लड़ाये ❀ किय पालन मन मोद वढ़ाये ।
स्त्री ज्ञाती पुन वहिन तुम्हारी ❀ तिहँ मारन मति किम तुम धारी॥
यदि मारत मृत्यू भय करकें ❀ तौ मृत्यू न टरे वल धरकें ।
मिटे न मरण कोटि आयासा ❀ सव श्रम निष्फल होय निरासा॥
प्राणिमात्र के तनु के सगा ❀ सृज्यो मरण यह नियम अभंगा।
जीवन अधिक हेतु इन मारे ❀ तो निज हिय अस किम न विचारे॥

दो० मृत्यु अद्य वा शत वरप, आव अवश सव लोग ।
केवल तहाँ विलंव हित, करन पाप नहिं योग ॥५५॥

इह तन पतंन भये तन आना ❀ मिले न यदि अस निश्चय ठाना।
तौ भल पालैं अघ कर देहा ❀ परंतु अस नहिं श्रुति वच एहा॥
कारन यह अति परवश प्रानी ❀ मरण समय स्वकर्म वश सानी ।
विन श्रम आन देह को पावै ❀ पूर्व देह को तव तज जावै ॥
यथा चलत भुवि पै जन जोऊ ❀ पूर्व पाउँ दृढ़ करकें सोऊ ।
पुन दूसर निज पाउँ उठावै ❀ इह विधिको क्रम शास्त्र दिखावै॥
जस तृण कीट गहे तृण आना ❀ पूर्व तृणहिं पुन त्यागन ठाना ।
तैसे कर्म पंथ चल प्रानी ❀ लहतनु आन पूर्व कर हानी ॥

१ पूतना २ परिश्रम ३ नाश ४ नाश ।

देखे सुने जु वहू विधि देहा ❀ कर चिंतन मन में दृढ़ एहा ।
स्वप्न माहिं पुन तिहँ तनु देखे ❀ माने मैं हूँ अस तहँ लेखे ॥

दो० सोय भये या देहको, ताहि समय भुल जाय ।
पूर्व जन्मं की सुधि यथा, रहै नाहिं इह काय ॥ ५६ ॥

कर्माधीन तथा भव माहीं ❀ करै पूर्व वपु त्याग यहाँहीं ।
तनु विचित्र प्रद कर्म जु कीना ❀ अमुक देह पाई अस चीना ॥
ताको कारण यही बतायो ❀ पंचतत्त्वमय तनु जो गायो ।
पंच भूतने बहु वपु कीना ❀ माया ने यह कृति कर लीना ॥
तिन तनु त्याग समय के माहीं ❀ मन विकार सम्पन्न जो आहीं ।
सुर[१] नर पशु पक्षी तनु धावे ❀ जिहँ वपु अभिनिवेश मन पावे ॥
जीव जन्म तिहँ तनु में धारे ❀ भोगे सुख दुख कर्मनुसारे ।
धरे जन्म यदि है मन कर्ता ❀ लहै जन्म किम आतम अकर्ता ॥

दो० मैं हूँ मन अस आतमा, मानत है जिहँ हेतु ।
मनसों मिल सो ताहिते, जन्म बहुत विधि लेत॥५७॥

जस[२] जल पूर्ण पात्र जो आहीं ❀ शशि प्रतिबिंब लखै ता माहीं ।
वायु वेग सों काँपत सोऊ ❀ भासे जनु शशि कंपन होऊ ॥
तस निज अविद्या कृत जो देहा ❀ प्रविष्ट राग अनुगत ते एहा ।
आतम अभिनिवेश को पावे ❀ तिहँ तनु धर्म आपमें लावे ॥
जस कृप-थूल आदि तनु धर्मा ❀ ह्व प्रतीत आतम में कर्मा ।

१ राज्यादि २ इन्द्रादि ।

तस आतम को है अध्यासा ❀ इह वपु में दृढ़तर है आसा ॥
ताते आत्म धर्म जे वह्यऊ ❀ प्रेम पात्रता आदिक रह्यऊ ।
ते सब धर्म देह इह मांहीं ❀ हूवें प्रतीत निश्चय कर ताहीं ॥
ताते नृप वा सूकर देहा ❀ अहै प्रियपनो सम लख एहा ।
ताहित मृत्यु वचन जु उपाऊ ❀ अहैं व्यर्थ सब अस स्फुट गाऊ ॥

दो॰ ताते नृप वपु मद विवश, करन योग्य नहिं पाप ।
पाप कर्म फल पाय जब, तब कर पश्चाताप ॥ ५८ ॥

यह बालक लघु भगिनि तिहारी ❀ है पुतरी सम दीन विचारी ।
पुन विवाह काल कर मंगल ❀ आप समान जु दीनन वत्सल ॥
ताकर मारन योग्य नहीं है ❀ करो विवेचन बात सही है ।
कह मुनि या प्रकार वसुदेवा ❀ साम रु भेद उपायन भेवा ॥
कर्यो बोध सुंदर प्रति कंसा ❀ भो न निवृत्त रह्यऊ निरसंसा ।
हेतु तहाँ यही किल जानो ❀ असुर अनुसरन करन पछानो ॥
या निबंध को लख वसुदेवा ❀ कर चिंतन मन बहु विधि भेवा ।
प्राप्त काल टारन के कारन ❀ या विधि फुर वचन बुध धारन ॥
बुद्धिवान जनको जहँ ताहीं ❀ बुधिबल उपजे निज जिय माहीं ।
तहँ लग मृत्यु हटानो चहिये ❀ तदपि न निवृत्त होय अस लहिये ॥

दो॰ तौ या जनको कोउ अपि, है नहिं कछु अपराध ।
अस बुध जन मत समझकें, कर चिंतन मन साध ५९

अरु जो कहुँ मोकों सुत भयऊ ❀ कंसहिं मार देइ अस रह्यऊ ।
गति दुरत्य धाता की अहई ❀ ताते तिहँ किहँ विधि को कहई ॥

योग उपस्थित तो हट जाई ❀ निवृत भयो किहँ कालहिं पाई ।
आवैं पुन अस बहुत प्रसंगा ❀ दीखें सुनें चकित ह्वै अंगा ॥
तौ वामैं अपराध न मेरो ❀ कर विचार वसुसुर अस हेरो ।
प्राणिन की प्रारब्ध अलक्षा ❀ जानि न जाय कोउ हो दक्षा ॥
यथा अग्नि को इंधन संगा ❀ ह्वै संयोग वियोग जु अंगा ।
सो प्रारब्ध अधीनहि कह्यऊ ❀ यह प्रतक्ष सब के ह्वै रह्यऊ ॥
यदि दवाग्नि लागी वन माहीं ❀ जरत वृक्ष वृंदन के ताहीं ।
तिहँ वन माहिं जाय जन कोऊ ❀ देखे यह बड़ अचरज होऊ ॥

दो॰ जरत द्रुमन के निकटहू, जे द्रुम ते वच जाइँ ।
लगै दूरवर्ती द्रुमन, अनल जरावै ताइँ ॥ ६० ॥

सो॰ तथा न जानी जाय, गति संयोग वियोग तन ।
कर प्रारब्ध सदाय, अति विचित्र कृति चकित कर १६

निज विचार अनुगुण वसुदेवा ❀ सादर कहनोद्यत निज भेवा ।
वाह्य प्रसन्न वदन हैं जाकौ ❀ अंतर दुखित चित्त अपि ताको ॥
अस वसुदेव विहँस मुख रह्यऊ ❀ निर्दयि निलज कंस प्रति कह्यऊ ।
सौम्य कंसराय सुन लीजे ❀ भय न देवकीसों कछु कीजे ॥
जो कछु नभ वाणी ने कह्यऊ ❀ जाते तोर हिये भय रह्यऊ ।
सो मैं याके सुत जे होवैं ❀ ते सब सौंप देउँ तुहिं जोवैं ॥
कह मुनि वसुसुर के इह वचना ❀ सुनकैं कंस करी अस रचना ।
भयो निवृत्त वहिन वध हीते ❀ वसुसुर होय तुष्ट निज ही ते ॥

कंस प्रशंस महत किय ताहीं ❀ किय प्रवेश निज गृह के माहीं ।
यदपि तुष्ट तदपि न मन माहीं ❀ कंस कुसंग निष्ठ लख ताहीं ॥

दो० दुर्जन संगिन के वचन, प्रति पल नय नय होइँ ।
बसंत ताते संत जन, करहिं प्रतीत न सोइ ॥६१॥

सो० दृढ़ भरोस हिय होय, श्रीभगवत को भाव युत ।
बसंत सो नर सोय, अचिंत सुख की सेज पै ॥२०॥

* इति श्रीकृष्णायने द्वितीय गोलोक द्वारे सप्तम सोपान समाप्त *

भीत पलायित हों अस शंका ❀ कह नृप[1] रोकन योधन वंका ।
दश सहस्र शस्त्र कर धारी ❀ रोक लियो वसुसुर गृह द्वारी ॥
शूरंज[2] काल पाय सुत जाये ❀ देवकि उदर अष्ट जे गाये ।
ता पाछे इक कन्या आई ❀ जोउ सनातन माया गाई ॥
प्रथमें कीर्तिमंत सुत भयऊ ❀ आनकं दुंदुभि सम वृति रह्यऊ ।
ले निज पुत्र कंस प्रति दीनों ❀ शौरी सत्य वचन निज कीनों ॥
सत्य वाक वसुदेव विलोका ❀ कंस घृणा[3] किय निज उरओका ।
दुख को श्रेष्ठ सन्त जन सहहीं ❀ और स्वार्थ पर क्षमा न रहहीं ॥
अष्टम गर्भ जोउ तुम केरो ❀ तिहँ मारों नहिं संशय हेरो ।
कह्यौ कंस ले जा गृह माहीं ❀ इह बालक ते मुहिं भय नाहीं ॥

१ कंसराजा २ वसुदेव ३ दया ।

दो० कह मुनि अस वसुदेव सुन, लायो सुत गृह माहिं।
कंस वचन माने न सत, जान दुरातम ताहिं ॥ ६२ ॥

ताहि समय में नभ से आयो ❀ कंस पूज्य मुहिं माथ नवायो।
पूछ्यो मोसे सुर अभिप्राया ❀ मो मैं तिहँ सब कह समझाया ॥
नंदादिकन देव तुम जानौ ❀ वृषरवि प्रभृति विबुध पहिचानो।
ऋक यजु आदि श्रुतिन को रूपा ❀ ते भुविमें हैं गोपि अनूपा ॥
वसुदेवादिक जानौ देवा ❀ मथुरा माहिं जन्म जिन लेवा।
देवकि प्रभृति देवि पहिचानो ❀ निश्चय समझ नाहिं अनुमानो ॥
सप्तवार संख्या गिनतेही ❀ अष्ट सर्व हों तिम किल येही।
अष्टम गणना कर को मारे ❀ यह देवन मत तुम न सम्हारे ॥
इहविधि तिहँ प्रति कह मैं गयऊ ❀ यदुन निधनं उद्यम तिहँ कियऊ।
तदा सद्य कोपित ह्वै कंसा ❀ यादव कुल चाह्यो विध्वंसा ॥

दो० सहित सुवन वसुदेव को, आशु बुलायो कंस।
क्रुद्धित पाथर पृष्ठ पै, तिहँ सुत को किय ध्वंस ॥६३॥

जातिस्मर माधव भय करकें ❀ कंस महा विह्वल उर डरकें।
जाये देवकि सुत जो जोऊ ❀ कंस वधे निज कर सो सोऊ ॥
दुष्ट जनन को यही सुभाऊ ❀ विन कारण सबके दुखदाऊ।
उग्रसेन तब कोपित भयऊ ❀ यादवेन्द्र भूपेश्वर कह्यऊ ॥
किय निषेध निज सुतको आई ❀ आनक दुंदुभि करन सहाई।
दुर अभिप्राय कंस को देखी ❀ उग्रसेन भट उठे विशेखी ॥

१ मरण २ शीघ्र ३ अपने पूर्व जन्म की स्मृति।

उग्रसेन की करहीं रक्षा ❀ शस्त्र पाणि अरु असि कर दक्षा ।
नृप रक्षक तहँ निरखे जबहीं ❀ कंसहु सावधान भो तबही ॥
तिनके संग सभा थल माहीं ❀ भयो युद्ध बहु दारुण ताहीं ।
द्वार देश अपि युद्ध महाना ❀ वीर परस्पर भिरत सुजाना ॥

दो० असि प्रहार कर अयुत तहँ, निज जन निधन विचार ।
तदा गदा ले कंस अपि, पितु सैन दिय मार ॥६४॥

गदा कंसके सपरस होते ❀ केचित छिन्न माथ के रोते ।
केचित भिन्न पाद नख भयऊ ❀ छिन्न भुजा मन के चित रहाऊ ॥
अधमुख ऊर्ध वदन के भागे ❀ भागे सहित अस्त्र रण त्यागे ।
आनन वमन रुधिर के वीरा ❀ मूर्छित केइ निधन के धीरा ॥
मंडप सभा रुक्त क्षिति भयऊ ❀ जहँ विलोक तहँ रक्तहि रहऊ ।
इह विध मद उत्कट जो कंसा ❀ रिपु भट मार भयो निसंसा ॥
नृप आसन ते पितुहिं उठायो ❀ दुष्ट कंस बहु रोष बढ़ायो ।
पकड़ पिताको तुरत बँधाइ ❀ हाथ पांव बेड़ी जकराई ॥
पितुको युत मित्रन समुदाई ❀ कारागृह रोक्यो हरषाई ।
मधू शूर देशन निधि नाना ❀ किये अपन वंश निज गृहआना ॥

दो० नृप सिंहासन राज कर, स्वयं राज कर कंस ।
समय बड़ो खल बल बड़े, भाखे कौन प्रशंस ॥ ६५ ॥

पीड़ित यदु सब भये दुखाई ❀ कर सवंश मिर्प ते समुदाई ।
चारिहुँ देश दिशान्तर गवने ❀ काल गतिज्ञ कुरस लख रवने ॥

१ तलवार २ दशसहस्र ३ मरण ४ पृथ्वी ५ बैठ ६ निमित्त ।

सप्तम गर्भ देवकिहिं होते ❀ हर्ष शोक वश हसते रोते।
व्रज में वसत रोहिणी जाई ❀ कर्ष गर्भ तिहँ उदर धराई॥
योगमाय केशव प्रभु केरी ❀ तिहँ इह कारज कियो निवेरी।
गर्भ पतित भो देवकि केरो ❀ मथुरापुरि जन कियो निवेरो॥
व्रज में पांच दिवस के माहीं ❀ भाद्र शुक्ल षष्ठी तिथि ताहीं।
स्वाती पंच उच्च गृह आहीं ❀ लग्न तुला मध्यायन माहीं॥
सुरगन सुमन वृष्टि झर होते ❀ मंद मंद वारिद जल चोंते।
रोहिणिते प्रकटे बलदेवा ❀ निज द्युति नंद महल द्युति देवा॥

दो० जात कर्म शिशु नंद किय, विप्रन दिय गौ लाख।
गोप मिश्रजन गायकन, सब मिल मंगल भाख॥६६

कवित्त

द्वैपायन देवल वशिष्ठ देवरात अरु,
वाचस्पति आदि ऋषि वृन्द मैहुँ सङ्गमें।
आये नन्दराय गृह वल बाल दर्स हित,
देख छवि मग्न भयो हियो सु उमंगमें॥
अमित मुदित चित वेदव्यास तिहँ थल,
भविष्य चरित बल केरे प्रेम रंग में।
गावत नमत स्तुति कर नर वेश शेष,
देख देख पुलकित सब निज अंग में॥ ४॥

---

१ बहते हुये २ आगे होने वाले।

छन्द

देव देवं भक्त सेवं, हे अभेवं प्रभुवरम् ।
संत कंत अनंत रेवति, कंत संतत सुखकरम् ॥
कामपालक दुष्ट घालक[1], रूप बालक शोभितम् ।
नमत माथ नवाय हम सब, सतत मुनि मन लोभितम् ॥
शेष अब नर वेष धर निज, जन अशेषन सुख दियो ।
राम शोभा धाम पूरण, काम बड़ करुणा कियो ॥
हे धराधर पूर्ण प्रभुवर, सीर कर धर ते नमः ।
सहस शीशा कुल अहीशा, हे महीशा ते नमः ॥
हलायुधकर प्रलंब वधकर, पाहि[2] दुखहर सुखकरम् ।
नील अंबर गौर वपुधर, काम मद हर छवि वरम् ॥
धेनुकारि रु मुष्टिकारि कु, भांडकारि नमोनमः ।
जय जयाच्युत मुसल हल धृत, तालकारि नमोनमः ॥
रुक्मध्वंसक कूट हिंसक, सूत अन्तक ते नमः ।
बल्वलांतक वानरान्तक, कूपकांतक[3] ते नमः ॥
आप कर्षक रविसुता के, नागपुर कर कर्षणम् ।
कंस भ्राता सत्त्व[4] हर्ता, आप हो संकर्षणम् ॥
जगत गुरु कालिअंश गुरु[5], नित पाहि गुरु सुर सुखकरम् ।
तीर्थ कर्ता दान धर्ता, हो अकर्ता सुर वरम् ॥
घोष[6] मंडल महत मंडन, यदुन में मण्डित[7] सुखी ।
कृष्ण अग्रज कृष्ण प्रियकर, नित निजानँद में सुखी ॥

---

१ नाशक २ रक्षाकरि ३ कूपकर्ण के ध्वंसक ४ पराक्रम ५ दुर्योधन ६ व्रज ७ शोभित ।

यः पठेत्सततं स्तवं तव, स तु व्रजेत् परमं पदम ।
जगति सर्व बलं तु तिहँ अरि, मर्दनं भवती ध्रुवम् ॥
तस्य जन जय जयति दश दिशि, अन्न धन वर्द्धति घनम् ।
बसंत इच्छित फल मिलत मिल, लोक पर मुक्ती धनम् ॥

दो० कह मुनि पुन बल को करी, शत परिक्रम मुनिराय।
परारशरात्मज वुद्धिवर, द्वैपायन सुख पाय ॥ ६७ ॥

सो० कर पुन प्रेम प्रणाम, सत्यवती सुत व्यास मुनि ।
वसन्त मिल ऋषि ग्राम, गये धाम मुद दर्श गुन॥२१॥
वन्दौं सरल सुभाउ, दाउ पाद पङ्कज युगल ।
जिहँ अनुग्रह वड़ चाउ, वसंत प्रभुचरणन अमल॥२२

* इति श्रीकृष्णायने द्वितीय गोलाकद्वारे अष्टम सोपान समाप्त *

कह मुनि पूर्ण प्रभू विख्याता ❁ योगिन दुर्लभ जन सुखदाता ।
सो वसुदेव हिये में आयो ❁ स्वतः शौरि उर मोद सवायो ॥
अरु वसुदेव तेज अस भयऊ ❁ भास्कर अनल इन्दु जस रह्यऊ ।
भो सहसा आतिशय वसुदेवा ❁ मानौ अपर यज्ञपति देवा ॥
तिम पुन देवकि के मन आयो ❁ सर्व अभय कर तेज जु गायो ।
तव देवकि द्युति अस गृह माहीं ❁ जिम नभ में विद्युत द्युति आहीं ॥
तेजवंत तिहँ देखत भयऊ ❁ कंस भयातुर हो अस कह्यऊ ।

---

१ अतिशय २ सूर्य ३ अग्नि ४ चन्द्रमा ५ शीघ्र ६ इन्द्र ।

असुहंत्री[1] मो उदर तुम्हारे ❀ ताते तुम शोभा बहु धारे ॥
करौं नाश जन्मतही इनको ❀ इम कह भय विह्वल तिहँ खिनको ।
चिंतत पूर्वज अरि को रूपा ❀ देखत कंस सवन सुरभूपा ॥

❀ कवित्त ❀

खावत पीवत अरु चलत फिरत अपि,
सोवत जागत नृप कर जेउ काम है ।
पलहु न बिसरत अरि केरो रूप तहँ,
ऐसी गति कंस केरी लखी वसुयाम[3] है ॥
औरहु जेतक जड़ चेतन पदारथ हैं,
सबहिन माहीं देखे अरि घनश्याम[2] है ।
स्वपन विलोक सोऊ रूप अति आशू[4] जोऊ,
हरबड़ाय उठ कहै कहाँ बलधाम[5] है ॥ ५ ॥

दो० अहो वैर सम्बंध कर, पश्यति[6] प्रभु साक्षात ।
करत ताहिते हरिहिंसे, असुर वैर विख्यात ॥ ६८ ॥

सो० कह मुनि मैं मुनि आँन, अरु ब्रह्मादिक सुर सुमन ।
शौरि गृहोपरि आँन, करन लाग सुस्तुति नमन ॥ २३ ॥

❀ छन्द ❀

जाग्रतादी त्रय अवस्था, सकल संस्था पर प्रभो ।
तीन गुण सत्त्वादि तो में, लीन होवहिं हे विभो ! ॥

१ प्राण हर्त्ता २ श्रीकृष्ण ३ आठ पहर ४ शीघ्र ५ मेरा शत्रु बलवान ६ देखता है ७ दूसरे

अथ अवस्था त्रिगुण प्रस्था, आप सत्त्वहि[1] विचरहीं ।
इन्द्रि कर्म रु ज्ञान तिन अभि,मानि सुर किम उचरहीं ॥
वन्हि[2] से जिम विस्फुलिंगा[3], तिम जगत तुमते भयो ।
विस्फुलिंगा अनल गति को,पहुच नहिं अति दुरत्यया ॥
तिम वयं[4] सब आप भव[5] जब, आपको तब किम लहैं ।
ताहि हित है नमन निशदिन,आप भुज आश्रित रहैं ॥
अति प्रचंड[6] जु काल सोऊ, आपते नितही डरै ।
त्रिगुण माया भव नचाया, सीस नाया पद परै ॥
वेद बहु विधि कथत कर सिधि,सोउ ना विपर्यो करै ।
हम अज्ञानी स्वार्थ सानी, किम तुमहिं जानहिं खरे ॥
स्वामृतं परमं प्रशांतं, ब्रह्म पूर्णं सुख करम् ।
अति विशुद्धं परम बुद्धं, भक्त रुद्धं पर वरम् ॥
योग ज्ञानं पर विज्ञानं, शुद्ध ध्यानं नहिं लहैं ।
ताहि हित शरणं गतास्म रु, नित्य पद भक्ती चहैं ॥
अंश अंश रु अंश तस पुन, कलावेशं अवतरे ।
तेउ सब परिपूर्ण तुम महँ, पूर्ण लख जन त्वर तरे ॥
स्रजत किल सर्गादि पालत, करत अंत निकंदहीं[7] ।
अस जु केशव पूर्ण वर कर, चूर्ण मद पद वंदहीं ॥
पूर्व मन्वन्तरन में अरु, प्रति युगन वपु है धर्यो ।
कल्प महकल्पन अपी जस, अंश रूपन अवतर्यो ॥
अथ तस परि पूर्ण कर करुणा, प्रकट भे श्री प्रभो ।
जगत हितकर भक्त दुखहर, भावि वपु वर है विभो ॥

[1] बलसेंही [2] अग्नी से [3] चिनगारी [4] हम [5] पैदा भये हुये [6] महान पराक्रमी [7] संहार ।

रूप गूप अनूप यह जिहँ, योगिजन देखत नहीं ।
सो जन हिताय सुलभ काय, अवनि तल आवत सही ॥
चरित तुव आनंद कंद निकंद कर दुख द्वंद को ।
मंद गति पद कंज युग रज धरहिं तज छल छंद को ॥
पूर्व मनहर कोटि कंदर, देह धर सुंदर तनू ।
अत्र तस कमनीय वपु शमनीय मद कंद्रप मनू ॥
धार दुति वैकुंठ की छवि, सार सब सुख सागरम् ।
सिंधुजापति भक्त जन गति, नमहिं तुहिं गुण आगरम् ॥

दो॰ कह मुनि मुनि ब्रह्मादि सुर, प्रभु चरणन शिरनाय ।
गाय प्रशंसित कृष्ण यश, चले भुवन हरषाय ॥६६॥

कह मुनि सुन बहुलाश्व नृपाला ❀ जन्म समय हरिको तिहँ काला ।
अंबर अति निर्मल है गयऊ ❀ तसपुनदशदिशिउज्ज्वलभयऊ ॥
विमल गगन नक्षत्र सुहाई ❀ सब भुवि मंडल मुदिता छाई ।
बड़ नद नदी महोदधि ऊजल ❀ ताल सरोवर जल अति निर्मल ॥
दल सहस्र पंकज जे अहहीं ❀ शत दल पद्म वृंद जे रहहीं ।
तिनको परस वात वर वहऊ ❀ तिनरज कणन सुगंधितछयऊ ॥
पुष्प मध्य कूजत अलि मस्ता ❀ नादत वृक्ष विहंग समस्ता ।
तिन कूजन नादन सब मोहे ❀ जनु वटु वेद धुनी कर सोहे ॥
शीतल मंद सुगंधित वायू ❀ वहत दशों दिश मुनि मनभायू ।
ऋद्धी युत समूह भे गामा ❀ नगर नगर मंगल सुख धामा ॥

---

१ कामदेव २ सुंदर ३ नाशकर्ता ४ कामदेव ५ लक्ष्मीपति ६ आकाश ७ समुद्र ८ ब्रह्मचारी.

दो० दिविसुर भुविसुर सुरभि अरु, हरिजन ज्ञानिनवृंद ।
पायो परमानन्द उर, विचरत महि निर्द्वंद ॥ ७० ॥

सो० जय जय धुनि सुख गात, देव बजावत दुंदुभी ।
मंगल सुख दिनरात, बसंत राजत सतत चित॥२४॥

विद्याधर गंध्रव हैं जेते ❀ किन्नर सिधसाधक कुल केते ।
नायकान मिल गावत वेदा ❀ करतस्तुतिअति मुदित अभेदा॥
दिवि गंध्रवि गण नाचन लागे ❀ विद्याधर यश कह अनुरागे ।
पारिजात मंदार सुफूला ❀ मालति आदिसुमन अनुकूला ॥
वर्षा करन सुमन सुर लागे ❀ गर्जत घन जल वर्षत रागे ।
भाद्रे बुधे-कृष्ण पख माहीं ❀ रोहिणिनखत अर्धनिशिआहीं॥
हर्षण योग लगन, वृष भयऊ ❀ अष्टमि चन्द्र उदै है गयऊ ।
अंधकार आवृत वर काले ❀ देवकि उदर शोरिके आले ॥
प्रकट भये श्रीप्रभु साक्षाता ❀ यथा अरणिते अनल विभाता ।
सिफुरत स्वच्छ विचित्रित हारा ❀ विलसत कौस्तुभ रत्न सिंगारा॥

दो० नूपुर भास्कर कांति वर, अंगद तड़ित समान ।
बाल अर्क सम मुकुट शिर,कुंडल विद्युत कान ॥७१॥

कंकन चल द्युति अनल समाना ❀ तारावलि सम मेखल भाना ।
मधुकर गुंज युक्त वन माला ❀ अग्नि तप्तवत कौंधनि लाला ॥
नव जाम्बूनद दिव्य सुवरणा ❀ तिहँ सम वर पीतांबर वरणा ।

१ स्वर्ग के गायक जन २ कल्पवृक्ष ३ गृह में ४ काल ५ बाजूबंद ६ चमकती है ७ स्वर्ण ।

सोदक श्याम घटा सम श्यामा ❀ सिफुरत भृकुटी भाल ललामा ॥
सुन्दर लटकारी घुँघरारी ❀ अलकावली, सोह मनहारी ।
जिम कसुम्भ मुख पंकज लाला ❀ सुवा चोंच सम नाक विशाला ॥
तमहारी उज्ज्वल युग नैना ❀ अंबुज लाजत नैना सैना ।
वदन कंज चित्रावलि धारी ❀ सन्तत कोटि काम मद हारी ॥
इह प्रकार नखशिख छवि सोहे ❀ दरस करत अस को नहि मोहे ।
अद्भुत पुत्र देख यदुऐना ❀ कृष्ण जन्म उत्सव फुलें नैना ॥

दो० विप्र वरन प्रति आशु दिय, एक लक्ष गो दान ।
पुन इस्तुति वसुदेव किय, विस्मित प्रणमत आन ॥७२

छन्द

उदय देख कृपालु को, वसुदेव निर्भय ह्वै रह्यो ।
नयन अनिमिष रूप में कर, जोरि कर इह विध कह्यो ॥
आप एकहि प्रकृति गुण सों, हैं अनन्त प्रकास हो ।
स्रजन पालन ध्वंस कारन, विधि शिवादिक भासहो ॥
स्फटिक शुद्ध शिला सदृश हरि, स्वच्छ अनुपम आप हो ।
दिव्य वपुधर कृत्य कर श्रुति, धर्म पुन पुन थाप हो ॥
नमहुँ अस अखिलाण्ड पति पद, पद्म पुन पुन प्रेमसों ।
मोर हिय यह रूप अद्भुत, वसहि निश्चल नेमसों ॥
कर्म कर रह गुप्त पूतहु, काष्ठ में पावक यथा ।
आप विचरो बाह्य अन्तर, स्वच्छ इक रस हो तथा ॥

१ पानवाली २ कमल ३ वसुदेव भवन ४ मफुलित ५ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के ६ पवित्र ।

जिम गगन है सर्व व्यापक, ऊर्ध्व[1] अध तिम व्याप्त हो ।
योग सिद्धन को अपी नहि, सुपनहु में प्राप्त हो ॥
धरणि सर्वाधार जैसे, सबन आश्रय आप हो ।
सालि अद्भुत कर्म सबहिन, अमित आप प्रताप हो ॥
अस महान प्रभाव तुम्हरो, ताहिं प्रणवौं प्रेम सों ।
सकल अंग उमंग प्रद कर, भंग भव दुख नेम सों ॥
द्विज धरा श्रुति धर्म संतन, करन रच्छा मो गृहे ।
प्रकट भै खलवृन्द ध्वंसन, आप महिमा को लहै ॥
ताहि हित चितसों अमित मम, वार वार प्रणाम हैं ।
आप करुणा अब वसंता, मोर पूरण काम हैं ॥

सो० रच्छ कंससे मोहिं, पुरुषोत्तम प्रभु भुवन पति ।
पाहिं पाहि कहुँ तोहिं, कंस अंघीते आशु अब॥२५॥
जान पूर्ण प्रभु ईश, पुन तहँ देवकि दरस कर ।
पद पंकज धर शीश, करत स्तव उर नेह धर॥२६॥

छन्द
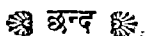
भै प्रकट बिहारी सब सुखकारी, मुनि मन मानस हंसा ।
सरसिज युग नैना सुखमा ऐना, हिमकर[5] कुल अवतंसा[6] ॥
युगबाहु विशाला उर वनमाला, छवि रसाल मुनि मन मोहै ।
मणि मुकुट विराजै विद्युत लाजै, युगल कर्ण कुण्डल सोहै ॥

१ नीचे ऊपर २ रत्नाकर ३ पापी ४ दो ५ चन्द्र ६ भूषण, चार भुजा।

जल धर सम श्यामा तनु छविधामा, कन्द्रप कोटिनिकाई[१] ।
कंकण कर माहीं अंगद बाहीं, परम अनूप सुहाई ॥
पट पीत सुहावें तड़ित लजावें, कटि किंकिनी विलासे ।
पद नूपुर राजे चल गति छाजे, नख श्रेणी रवि भासे ॥
नख शिख लख शोभा मुनि मन लोभा, अद्‌भुत रूप अनूपा ।
प्रकृति अतीता नहिं मति जीता, सदा अजीता भूपा ॥
श्रुति सन्त भनन्ता अण्ड अनन्ता, रोम रोम तुम्हरे अंगा ।
सो मम ओका[२] नैन विलोका, भयऊ हर्ष अभंगा ॥
लख कौतुक भारी रूप निहारी, धीर न धारहिं धीरा ।
प्रभु जन हित लागी किय बड़भागी, करुणासिंधु शरीरा ॥
हो परम उदारा कृपा अपारा, शरणागत सुखकारी ।
जन गुण ज्ञाता अगुण अज्ञाता, है यह टेक तुम्हारी ॥
कर सम्पुट हाथा सविनय माथा, नाथ यही विनती उचरों ।
पावें नहि योगी ज्ञानि वियोगी, तिहँ शुभ दर्शन भवन करों ॥
मैं को[३] तप कीनो वसु[४] द्विज दीनो, वा तुम्हरी भक्ती धारी ।
जिहँ दिय दर्शन किय मन पर्षन, बाधा अखिल निवारी ॥

दो० कह मुनि अस सुन कहत प्रभु, दम्पति प्रति मुस्कात ॥
सुनो वचन संशय हरन, पूर्व जन्म विख्यात ॥७३॥
यह पतिव्रत धर प्रश्नि अरु, तुम सुतपा सुतकाम[५] ।
अंज[६] आज्ञा तप दिव्य किय, अन जल तज तुम वाम[७]॥७४॥

१ शोभा २ घरमें ३ कौनसा ४ द्रव्य ५ पुत्रकी कामना वाले ६ ब्रह्मा ७ तुम और तुम्हारी स्त्रीने ।

सो० इक मन्वंतर काल, तप लख मैं आकर कह्यो ।
माँगौ माँग विशाल, तव माँग्यो मो सम सुवन ॥२७॥

तथा अस्तु तव मैं कहि दयऊ ❀ तप वल तुमहुँ प्रजापति भयऊ ।
मैं विचार किय निज मन माहीं ❀ मोर समान आन को नाहीं ॥
सुत सुत सुत तुम हूँ कहि दीनों ❀ ताते दरस वार त्रय कीनों ।
प्रश्नि गर्भ इक वार कहायो ❀ दूजे तनु उपेन्द्र ह्वै आयो ॥
तृतिय वार अव दर्शन दीनों ❀ पूर्ण प्रतिज्ञ जान अस कीनों ।
अव यदि आप कंस भय पावौ ❀ तो मुहिं नंद भवन ले जावौ ॥
लावौ यशुमति सुता तहाँ ते ❀ दीजे कंसहि आय वहाँ ते ।
पूर्व प्रसंग लखौ ता हेतू ❀ मैं प्रकट्यो वपु प्रभा निकेतू ॥
प्रकट होत यदि शिशु तनु धारी ❀ तौ न तुम्हें सुधि होत हमारी ।
कह मुनि अस कह कृपा निधाना ❀ भये मौन शिशु तनु प्रकटाना ॥

दो० हरि वचनन कों मान के, धार सूप में बाल ।
शिर धर सूतीभवन तें, कियो गमन तिहँ काल ॥७५॥

सो० प्रकट भई जग मात, ताहि समय नँदरानि से ।
योग मात सुख दात, प्रभु रुख लख जो जग रचे ॥२८॥

❀ कवित्त ❀

ज्योंहीं वसुदेव चल्यो त्योंही हरि माया अस,
रची रचना निरख अचरज भयऊ ।

१ पुत्र २ वामनावतार ३ अर्थात् वरदान को ४ प्रसूत गृह ।

खुली है सुभाविकहि पग केरी बेरी[१] दृढ़,
द्वारपन[५] वृन्दन[६] को नींद[७] घेर[८] रखऊ ॥
लोहे के शृंखलन[२] सों द्वार सब बँध रहे,
तामें दृढ़ अर्गलहु नीकी विधि दयऊ ।
सहजहि अस सान द्वार खुल गये त्वर,
तब मुद होय वसुदेव व्रज[३] गयऊ ॥६॥

पुर बाहिर पहुँचे वसुदेऊ ❀ किहँ अपि नहिं जान्यो यह भेऊ।
गराजि गराजि बरसत घन घोरा ❀ अंधकार भारी चहुँ ओरा ॥
नेंकहु नहिं सूझत पथ ताहीं ❀ वसुसुर शंक होत मन माहीं ।
आगे आगे दमकत दामिनि ❀ मनहु पंथ दिखरावे यामिनि[४] ॥
आनकदुंदुभि पाछे भूपा ❀ किये ऊँच फन सहस अनूपा ।
छत्र सरिस वारत जल धारे ❀ मंद मंद मग शेष सिधारे ॥
यमुना वारि वेग भय कारी ❀ तुंग तरंग भँवर भ्रम भारी ।
हरि वचनन वसुसुर विश्वासा ❀ धस्यो नीर महँ रंच न त्रासा ॥
यमुना पथ द्रुत शौरिहिं दीनों ❀ ताके शिर निज प्रिय पति चीनों।
सूरज नंदराय व्रज आये ❀ सर्व प्रसुप्त तहाँ तिहँ पाये ॥

दो० खुले द्वार सब देख कैं, मुद वसुसुर निज काज ।
कृष्ण कहे अनुसार किय, नंद महल सुख साज ॥७६॥

१ जञ्जीरनसों २ ।ििलैया और ताले आदिकनमों ३ गोकुल में ४ अँधेरी रात्रि में ५ वसुदेव ६ बड़े बड़े ७ चक्कर खा रहे हैं ८ सोये हुये ।

सो॰ इक मन्वंतर काल, तप लख मैं आकर कह्यो ।
माँगो माँग विशाल, तव माँग्यो मो सम सुवन॥२७॥

तथा अस्तु तव मैं कहि दयऊ ❀ तप वल तुमहुँ प्रजापति भयऊ ।
मैं विचार किय निज मन माहीं ❀ मोर समान आन को नाहीं ॥
सुत सुत सुत तुम हूँ कहि दीनों ❀ ताते दरस वार त्रय कीनों ।
प्रश्नि गर्भ इक वार कहायो ❀ दूजे तनु उपेन्द्र है आयो ॥
तृतिय वार अव दर्शन दीनों ❀ पूर्ण प्रतिज्ञ जान अस कीनों ।
अव यदि आप कंस भय पावौ ❀ तो मुहिं नंद भवन ले जावौ ॥
लावौ यशुमति सुता तहाँ ते ❀ दीजे कंसहि आय वहाँ ते ।
पूर्व प्रसंग लखौ ता हेतू ❀ मैं प्रकट्यो वपु प्रभा निकेतू ॥
प्रकट होत यदि शिशु तनु धारी ❀ तौ न तुम्हें सुधि होत हमारी ।
कह मुनि अस कह कृपा निधाना ❀ भये मौन शिशु तनु प्रकटाना ॥

दो॰ हरि वचनन कों मान के, धार सूप में वाल ।
शिर धर सूतीभवन तें, कियो गमन तिहँ काल॥७५॥

सो॰ प्रकट भई जग मात, ताहि समय नँदरानि से ।
योग मात सुख दात, प्रभु रुख लख जो जग रचे॥२८॥

❀ कवित्त ❀

ज्योंहीं वसुदेव चल्यो त्योंही हरि माया अस,
रची रचना निरख अचरज भयऊ ।

१ पुत्र २ वामनावतार ३ अर्थात् वरदान को ४ प्रसूत गृह ।

खुली है सुभाविकहि पग केरी बेरी दृढ़,
द्वारपन वृन्दन को नींद घेर रखऊ ॥
लोहे के शृंखलन सों द्वार सब बँध रहे,
तामैं दृढ़ अर्गलहु नीकी विधि दयऊ ।
सहजहि अस सात द्वार खुल गये त्वर,
तब मुद होय वसुदेव व्रज गयऊ ॥६॥

पुर वाहिर पहुँचे वसुदेऊ ❀ किहँ अपि नहिं जान्यो यह भेऊ ।
गराजि गराजि बरसत घन घोरा ❀ अंधकार भारी चहुँ ओरा ॥
नैंकहु नहिं सूझत पथ ताहीं ❀ वसुसुर शंक होत मन माहीं ।
आगे आगे दमकत दामिनि ❀ मनहु पंथ दिखरावै यामिनि ॥
आनँकदुंदुभि पाछे भूपा ❀ किये ऊँच फन सहस अनूपा ।
छत्र सरिस वारत जल धारे ❀ मंद मंद मग शेष सिधारे ॥
यमुना वारि वेग भय कारी ❀ तुंग तरंग भँवर भ्रम भारी ।
हरि वचनन वसुसुर विश्वासा ❀ धस्यो नीर महँ रंच न त्रासा ॥
यमुना पथ द्रुत शौरिहिं दीनों ❀ ताके शिर निज प्रिय पति चीनों ।
सूरज नंदराय व्रज आये ❀ सर्व प्रसुप्त तहाँ तिहँ पाये ॥

दो० खुले द्वार सब देख कैं, मुद वसुसुर निज काज ।
कृष्ण कहे अनुसार किय, नंद महल सुख साज ॥७६॥

१ जञ्जीरनसों २ बिलैया और ताले आदिकनमें ३ गोकुल में ४ अँधेरी रात्रि में ५ वसुदेव ६ बड़े बड़े ७ चक्कर खा रहे हैं ८ सोये हुये ।

यशुमति सेज सुतहिं पौढ़ायो ❀ कन्या तहँते हर्षित लायो ।
यमुना तट कारागृह माहीं ❀ सुता सहित गो वसुसुर ताहीं ॥
सुत वा सुता जन्म सुधि पाई ❀ असमंजस यशुमति चित आई।
परिश्रान्ता शय्या पै सोई ❀ शुषुपति निद्रा में लय होई ॥
यहाँ सुनत वालक ध्वनि जागे ❀ कंस सुभट तव धावन लागे ।
कंस निकट इक धावन गयऊ ❀ चिंत निमग्न कंस प्रति कह्यऊ ॥
सुनत कंस आतुर उठ धायो ❀ भय कातर प्रसूत गृह आयो ।
कर देवकी कर से लीनों ❀ सुता जान कछु विस्मय कीनों॥
देवकि कहन कंस ते लागी ❀ रोदति दीन हीन दुख पागी ।
अन्तिम सुता देउ इक मोहीं ❀ षष्ठ पुत्र मो मारे तोहीं ॥

दो० कन्या मारन कारने, योग्य न हो तुम कंस ।
दीन बंधु सुन भ्रात मम, किय तुम मोकुल ध्वंस ॥७७॥

इक कन्या के भाइन मारे ❀ हम दंपति को कैदहुँ डारे ।
अव तो देन योग्य कल्याना ❀ कल्यानी तनुजा दे दाना ॥
कह मुनि अश्रु बहा दुखराती ❀ लिय लगाय कन्या निज छाती।
सुन नृप भूत ग्रसित गति जैसी ❀ भई कंस की गति अपि तैसी ॥
त्वर निर्भर्त्स्य सुता लिय छीनी ❀ दृढ़ता युक्त अपन कर कीनी ।
स्वारथ वश नहिं जानत पापू ❀ देवत वृथा सवन संतापू ॥
दुष्ट जनन यह सहज सुभाऊ ❀ पर पीड़न जिन मन वड़ चाऊ ।
निरत कुसंग पापि खल जोऊ ❀ यदुकुल अधम कंस पुन सोऊ ॥

१ दुविधा २ थकित ३ दूत ४ कन्या ५ डाट कर ।

वहन पुत्रि के पद गह लीना ❀ शिला पछारन निज मन कीना।
निकस कंस करते वह कन्या ❀ गई गगन में देवि सुमन्या॥

दो० शत दल रथ बड़ दिव्य जिहँ, हय सहस्र जवमान।
शुभ्र छत्र चामर करें, दासी दिव्य महान॥७८॥

सो० सेवत पार्षद जाहिं, सुन्दरि सायुध अष्टभुजि।
शत रवि सम द्युति आहिं, गिरा मेघ कह कंसप्रति॥२९

परिपूरणतम प्रभु साक्षाता ❀ स्वयं कृष्ण भगवत विक्षाता।
कहँ अपि जन्म लियो तव काला ❀ मारे वृथा देवकी बाला॥
कह नारद इम कह जगदम्बा ❀ विंध्याचल पर्वत पै थम्बा।
भगवत्ति योग माइ तिहँ दिनते ❀ भइ बहु नामवन्त को गिनते॥
कंस सुनत सो विस्मय भयऊ ❀ योगमात वच जिहँ उर रहाऊ।
तव वसुदेव देवकीजी को ❀ बन्धन मुक्त कियो भो फीको॥
कह्यउ कंस मैं यदुकुल पापी ❀ पाप कर्म रत बड़ सन्तापी।
तुम्हरे पुत्रन ध्वंसन हारो ❀ क्षमा करो अपराध हमारो॥
हे बहनोइ बहिन तुम सुन हो ❀ जो कुछ भयो काल कृत गुनहो।
शुष्क पत्र कबहू नहिं हाले ❀ आज्ञा काल जगत सब पाले॥

दो० ताते मो अपराध नहिं, कालेच्छा बलवान।
मैं नहिं मारे पुत्र तव, काल गती पहिचान॥७९॥

१ वेगवान २ स्थित हुई ३ आपके।

देवन वचन भर्वसों कीनों ❀ गगन गिरा मिथ्या कहि दीनों ।
नहिं जानौं अव कहँ मो काला ❀ लियो जन्म मायावि विशाला ॥
कह नारद इम, कह गिर चरणे ❀ अश्रु नयन भर बहु दुख वरणे ।
करन लगो नीकी विधि सेवा ❀ दिखरायो सौहृद वसुदेवा ॥
अहो प्रभाव सकल जग माहीं ❀ परिपूरणतम प्रभु को आहीं ।
पुण्य रु दान नाम जहँ होई ❀ तिहँ थल अशुभ रहै नहिं कोई ॥
ताते शुभ कर्मन चित दीजे ❀ दुर्लभ जन्म सफल करि लीजे ।
जाते हो न अन्त पछतावा ❀ जन्म मरन छूटै अस गावा ॥
प्रातःकाल कंस नृप पाई ❀ प्रलँबादिक भट लिये बुलाई ।
कही कंस खल तिन प्रति बानी ❀ कही जु योगमाइ नभ आनी ॥

दो० कहत कंस मो काल कहुँ, प्रकट भयो भुवि माहिं ।
तातेे दशदिन केर शिशु, अरु दशदिन पूर्वाहिं ॥८०॥

कर कर यतन अनेक, तिन सवको वध करहु तुम ।
करहु राख दृढ़ टेक, शिशु ध्वंसन यह कार्य मम ॥३०॥

कहत असुर सुन तव धनु टंका ❀ भाजत महा सुभट रण वंका ।
तव गर्जन सुनतहिं छिप जावैं ❀ इन्द्रादिक ब्रह्मादिक भावैं ॥
ताते तुमको लव भव नाहीं ❀ सुरस्वामिनतें को वड़ आहीं ।
गो द्विज साधु वेद अरु देवा ❀ धर्म यज्ञ हरि सुमरन सेवा ॥
ये सव अहैं विष्णु वपुधारी ❀ इन नाशन दैत्यन वल भारी ।
जन्म्यो महाविष्णु यदि आई ❀ तोर शत्रु अतिशय दुखदाई ॥

१ छली २ स्नेह ।

तौ तिहँ वध हित येहि उपाऊ ❀ मारिय धेनु आदि समुदाऊ ।
कह मुनि इम कह गये अकासा ❀ महा सुभट सब दैत्य दुरासा ॥
प्रेरित मधुपति जहँ कहँ धाये ❀ मारे गौ शिशु जहँ जहँ पाये ।
आसमुद्र अवनीतल जाई ❀ निरखत इक इक गृह मनलाई॥

दो० कामरूप[1] ते दैत्य सब, विचरत धरणी माहिं ।
डोलत मूषक सर्प जिम, धेनु बाल धर खाहिं ॥ ८१ ॥

सो० कह मुनि हे धर्मिष्ठ, सन्तन हेलन[2] जगत में ॥
करत महान अनिष्ट, चतुर पदारथ नाश कर॥३१॥
ताते सावध होय, नर सन्तन अपराध ते ।
बसन्त मन मद धोय, शुद्ध नेहसों संत भज॥३२॥

* इति श्रीकृष्णायने द्वितीय गोलोक द्वारे नवम सोपान समाप्त *

कह मुनि तदनन्तर नँदरानी ❀ भोर भये जागी सुखदानी ।
देख्यो आतमज भयो अनन्दा ❀ तिहँ कह सकै न को कविचंदा॥
करन लगी उत्प्रेक्षा नाना ❀ कस स्वरूप अद्भुत प्रकटाना ।
कहा श्याम पंकज की माला ❀ अथवा नीलमणिन को जाला॥
वा सम्पति सौभाग्य स्वरूपा ❀ तिहँ सिद्धांजन अहै अनूपा ।
इम यशुमति मति विस्मय जागो ❀ पुन जब बालक रोवन लागो ॥
तदा सुनन्दा अति त्वर जागी ❀ देख सुवन अति आनँद पागी ।
नन्दरायसों कह्यौ कि भैया ❀ अहै बधाई बड़ सुख दैया ॥

१ इच्छित रूप धारी २ अपराध ।

अमित मोद प्रद शब्द जु काना ❀ सुन्यो नन्द भो मोद महाना ।
ता आनन्द हियो नँद केरो ❀ भयो मपूरित प्रस्फुट हेरो ॥

दो० यथा सरोवर शुष्क ह्वै, बहुत दिनन रवि ताप ।
पुन घन वर्षत सोउ सर, पयं पूरित ह्वै आप ॥ ८२ ॥

सो० तथा भयो चिरकाल, सुत अभावते शुष्क हिय ।
आनँद अमृत रसाल, घन वर्षत पूरित भयो ॥ ३३ ॥

अरु तिहँ रवं अस मोद निहारा ❀ जनु प्रमोद मंदाँकिनि धारा ।
नंद हृदय सर माहिं समाई ❀ या कारण पुलकावलि छाई ॥
गद्गद कंठ निकस नहिं बानी ❀ सूतीभवन आय मुदमानी ।
जब आतमंज देख्यो ब्रजराई ❀ करन लगो उत्प्रेक्षा भाई ॥
कहा सुनैनन निर्मल फल है ❀ कहा नील सर नील कमल है ।
कहा शुद्ध अति निज वात्सल है ❀ कहा मोर सौभाग्य अमल है ॥
अथवा ब्रजेश्वरी सौभागा ❀ कहा सार तिहँ प्रद अनुरागा ।
वा जग मंगल उदयाधारा ❀ वा ब्रजको सर्वस्व उदारा ॥
वा किहँ सिधजन लता सुफूला ❀ वा अमितानँद घनको मूला ।
अथवा कल्पलता मय अहहीं ❀ सबउपनिपद जाहिं श्रुतिकहहीं ॥

दो० कहा सरस फल तिनहुको, प्रकट्यो या थल माहिं ।
वा कालिंदी केर जल, श्यामरूप जो आहिं ॥ ८३ ॥

---

१ जल २ शब्द ३ श्रीगंगाजी ४ प्रसूतगृह ५ उदय के आधार रूप ।

सो० अस अति सुन्दर रूप, देख नन्द नृप हिय विषे।
उपज्यो मोद अनूप, उमड़्यो सिंधु समान सो॥३४॥

अपरहु गोपी ग्वाल, जाग उठे अति चोंपसों।
धाये मोद विशाल, वसन्त आये नन्द घर॥३५॥

वाल विलोक मोद ना माये ❀ बहु विध मणिगण दिये लुटाये।
पुना नन्द नृप बाहिर आये ❀ सुखद सुगन्धित नीर न्हाये॥
युगल पीत पट अरु आभूषण ❀ निज तनु धारण किय गत दूषण।
श्रुतिवित उपरोहितन बुलाये ❀ ते अपि नन्द भवन त्वर आये॥
तिनैं नन्द गृह में पधराये ❀ मंगल हेत वेद पढ़वाये।
जातक कर्म सविधी कराये ❀ और पितृ देवन पुजवाये॥
नन्द देव कृत कर ता पाछे ❀ कंचन श्रृंग रजत खुर आछे।
झूल पीठपै बहु पयदाई ❀ युत वछरन सुरभी सुखदाई॥
नियुतयुग्म विप्रन को दीनी ❀ ता पाछे अस रचना कीनी।
सात शैल तिलके बनवाये ❀ प्रति थल मणि माणिक सजवाये॥

दो० ठौर ठौर बहु मोलके, सुभग दुपट्टा ताहिं।
दिय लपेट ब्रजराजनैं, कनक श्रृंग रच वाहिं॥८४॥

सो० इह विधके गिरि सात, दिये दान द्विजवृन्द को।
औरहु प्रफुलित गात, विविध प्रकारन दान दिय॥३६

१ चांदी के २ दूध देने वाली ३ दो सहस्र ४ दुशाला ५ शरीर।

अमित मोद प्रद शब्द जु काना ❀ सुन्यो नन्द भो मोद महाना।
ता आनन्द हियो नँद केरो ❀ भयो प्रपूरित प्रस्फुट हेरो ॥

दो० यथा सरोवर शुष्क ह्वै, बहुत दिनन रवि ताप।
पुन घन वर्षत सोउ सर, पयं पूरित ह्वै आप ॥ ८२ ॥

सो० तथा भयो चिरकाल, सुत अभावते शुष्क हिय।
आनँद अमृत रसाल, घन वर्षत पूरित भयो ॥ ३३ ॥

अरु तिहँ रवं अस मोद निहारा ❀ जनु प्रमोद मंदाकिनि धारा।
नंद हृदय सर माहिं समाई ❀ या कारण पुलकावलि छाई ॥
गद्गद कंठ निकस नहिं बानी ❀ सूतीभवन आय मुदमानी।
जब आत्मज देख्यो ब्रजराई ❀ करन लगो उत्प्रेक्षा भाई ॥
कहा सुनैनन निर्मल फल है ❀ कहा नील सर नील कमल है।
कहा शुद्ध अति निज वात्सल है ❀ कहा मोर सौभाग्य अमल है ॥
अथवा ब्रजेश्वरी सौभागा ❀ कहा सार तिहँ प्रद अनुरागा।
वा जग मंगल उदयाधारा ❀ वा ब्रजको सर्वस्व उदारा ॥
वा किहँ सिधजन लता सुफूला ❀ वा अमितानँद घनको मूला।
अथवा कल्पलता मय अहहीं ❀ सबउपनिषद जाहिं श्रुतिकहहीं॥

दो० कहा सरस फल तिनहुको, प्रकट्यो या थल माहिं।
वा कालिंदी केर जल, श्यामरूप जो आहिं ॥ ८३ ॥

१ जल २ शब्द ३ श्रीगंगाजी ४ प्रसूतगृह ५ उदय के आधार रूप।

भीतर बाहिर दिये बिछाई ❀ चौमं बिछौना वड़ छवि छाई ।
जहँ तहँ सींच्यो अतर अमूला ❀ जिहँ सुगंधि चहुँदिश मुदमूला ॥
अमित मणिनसों जटित सुहावैं ❀ ऊंचे कनक दंड मन भावैं ।
फहर रहीं ता माहिं पताका ❀ सोहत जनु रोकहिं रथ चाका ॥

दो० चौक चौक चाँदनि तनी, झालर मोतिन केर ।
झुकत झुकत झूमति रही, मन मोहित ह्वै हेर ॥८६॥

सो० अरु लटकत ता माहिं, रत्न निकर छर अतुल अति ।
सकल ठौर तहँ आहिं, गड़े खंभ कदली कलित ३८

दीपावलि चन्द्रावलि भासे ❀ चहुँदिशि जगमग जगमग लासे ।
धेनु वृषभ बछरा अरु बाछी ❀ तिनके पीठ झूल छवि आछी ॥
केशर अत्तर हरद मिलाई ❀ गोप घेरि गोवन समुदाई ।
रँगहिं विविध पत्रावलि रचना ❀ पुनतिहँलखधनिधनिकहिंवचना ॥
स्वर्णशृंग सब सुरभि बनावैं ❀ मोर पक्षसों सुभग सजावैं ।
लाल रंगकी मनहर माला ❀ गोवन सिर बाँधें गोपाला ॥
सुमन माल सौरभप्रद लावैं ❀ हेममाल गर में पहिरावैं ।
पनवा पुरट गरे लटकावैं ❀ या विधि गौअन रुचिर सजावैं ॥
धर्म धुरन्धर वृष इत उतहीं ❀ विचरत शृंगारित छवि सुतेहीं ।
गोवन सम बछरा अरु बाछी ❀ सबहिनकियशृंगारविधिआछी ॥

दो० प्रति गोपन ब्रज के विषे, उमग्यो है आनंद ।
तासों एक अपर प्रती, कहत भयो सुत नंद ॥८७॥

१ रेशम २ चमकते हैं ३ बैल ४ मह्जही ।

मन शुद्धी सन्तोष दिखाई ❀ भूमि कालते पूत कहाई।
मज्जनते तनु शुचि पट धोये ❀ मखते विप्र शुद्धि किल होये॥
हरिभक्तीते[१] जीव पुनीता ❀ संस्कारनतें गर्भ सुचीता।
तथा दानतें द्रव्य पवित्रा ❀ अस विचार हिय व्रजपति अत्रा[२]॥
इह प्रकारको दान जु दीनों ❀ याचक गणन अयाचक कीनों।
हे व्रजराज आपको लाला ❀ जीवौ कोटिन वर्ष विशाला॥
इह विध द्विज गण देत असीसा ❀ अंचलमाहिं लेत व्रजईशा।
यहि विधि मागध सूतहू आये ❀ धाये वन्दीजन हरषाये॥
इन सबकी याचकता खोई ❀ स्वयं देत अपरन मुद होई।
बड़ संघर्ष भयो नृप द्वारा ❀ गोप लुटावहिं मणि भर थारा॥

दो॰ गायक गद्गद कंठसों, गावत मंगल गीत।
बहु विध बाजे बज रहे, सुन ह्वै चीत पुनीत॥८५॥

सो॰ जय जय धुनि चहुँओर, महत शोरकी मच रही।
जनु अथोर घनघोर, अपि लाजित होवत अहैं॥३७॥

यावत व्रजकी वीथिन माहीं ❀ नीर सुगंधित सींच्यो आहीं।
पचरँग वन्दनवार सुहावैं ❀ द्वार द्वारपे हियो लुभावैं॥
नन्द-महल शोभा को कहही ❀ अनुभवही में आनँद लहही।
नन्द पुत्र उत्सव में ताहीं ❀ निज सुत सम जिनके मन माहीं॥
भयो अहै उत्सव अस गोपा ❀ लाखन मगन फिरत चित चोपा[३]।
इनहूनें निज निज गृह माहीं ❀ विविध सजावट सजी जु आहीं॥

१ पवित्र २ यहां (पुत्र जन्मोत्सव में) ३ चाव ४ भीर।

भीतर बाहिर दिये बिछाई ❀ चौमं बिछौना बड़ छवि छाई ।
जहँ तहँ सींच्यो अतर अमूला ❀ जिहँ सुगंधि चहुँदिश मुदमूला ॥
अमित मणिनसों जटित सुहावें ❀ ऊंचे कनक दंड मन भावें ।
फहर रहीं ता माहिं पताका ❀ सोहत जनु रोकहिं रथ चाका ॥

दो॰ चौक चौक चाँदनि तनी, झालर मोतिन केर ।
झुकत झुकत झूमति रही, मन मोहित ह्वै हेर ॥८६॥

सो॰ अरु लटकत ता माहिं, रत्न निकर छर अतुल अति ।
सकल ठौर तहँ आहिं, गड़े खंभ कदली कलित ३८

दीपावलि चन्द्रावलि भासे ❀ चहुँदिशि जगमग जगमगलासे ।
धेनु वृषभ बछरा अरु बाछी ❀ तिनके पीठ झूल छवि आछी ॥
केशर अत्तर हरद मिलाई ❀ गोप घेरि गौवन समुदाई ।
रँगहिं विविध पत्रावलि रचना ❀ पुनतिहँलखधनिधनिकहिंवचना ॥
स्वर्णशृंग सब सुरभि बनावें ❀ मोर पक्षसों सुभग सजावें ।
लाल रंगकी मनहर माला ❀ गौवन सिर बाँधें गोपाला ॥
सुमन माल सौरभप्रद लावें ❀ हेममाल गर में पहिरावें ।
पनवा पुरट गरे लटकावें ❀ या विधि गौअन रुचिर सजावें ॥
धर्म धुरन्धर वृष इत उतही ❀ विचरत शृंगारित छवि सुतेही ।
गौवन सम बछरा अरु बाछी ❀ सबहिनकिय शृंगार विधि आछी ॥

दो॰ प्रति गोपन व्रज के विषे, उमग्यो है आनंद ।
तासौं एक अपर प्रती, कहत भयो सुत नंद ॥८७॥

१ रेशम २ चमकते हैं ३ बैल ४ सहजही ।

जाउ जाउ त्वर जाय विलोको ❀ अपर कृत्य या समये रोको।
सुन सुन युवा वृद्ध गोपाला ❀ पहरि पहरि मणि मोतिन माला॥
बाँध बाँध शिर पाग ललामा ❀ पहरि पहरि जरकस के जामा।
कसि कसि कटि पट छोरन छोरे ❀ भरि भरि रत्नन थार अथोरे॥
जोरि जोरि निज निज दल आवें ❀ चोप चोप बाजे बजवावें।
पग पग दीनन मणिन लुटावें ❀ जय जय हो की धूम मचावें॥
वृद्ध मधुर परिकर सब गोपा ❀ आवत परम सुहृद हृदि रोपा।
नाचत गावत बसन घुमावत ❀ भेंट हाथ लघु वृद्ध सुहावत॥
इह विधि गवनत गोपन वृन्दा ❀ अस को नहिं जिहँ नहिं आनंदा॥
निखिल नंद नृप निकट सिधाई ❀ पुत्र-जन्म की देत बधाई॥

दो० अरु गद्गद ह्वै कहत हैं, ऐसो परमानन्द।
कबहू अपि नाहीं भयो, जस जन्मे नँद नंद॥८८॥

सो० के उत्साहित जाइँ, नंद कुँवर के दरस हित।
निज हिय माहिं लजाइँ, मणिन निछावर करतहू॥३९॥

के भीतर के बाहिर आवें ❀ निज हाथन दुन्दुभी बजावें।
तिम गोपी गण जहँ तहँ धावें ❀ टेर टेर निज सखिन सुनावें॥
एरी यशुदा को भो लाला ❀ लेरी जाय निहार रसाला।
या विधि दूर दूरकी गोपी ❀ नंद महल आई चित चोपी॥
जिन केशर अँगराग शरीरा ❀ सोहत सुन्दर मनहर धीरा।

१ समाज।

खंजन नैनन अंजन सोहै ❀ जरतारी सारी छवि मोहै ॥
रत्न भरित घाघरे सँवारे ❀ कनक थार भरि मणिन अपारे।
निजनिज ढोटा अपि जिन संगा ❀ रँगी रंग उत्सव सउमंगा ॥
कोउ कोउ कनककलशधरशीशा ❀ दूब देन गवनीं ब्रज ईशा ।
या प्रकार सबही ब्रज गोरी ❀ कृष्ण जन्म उत्सव रस बोरी ॥

दो० महा मनोहर शोर ब्रज, छाय रह्यौ चहुँ ओर ।
सुन सुन मोद अथोर ह्वै, हनै उपद्रव मोर ॥ ८९ ॥

तिन गोपिनके कानन माहीं ❀ जटित मणिन कुंडल जे आहीं ।
चमकत चपल कपोलन तेऊ ❀ अस शोभा देवत हैं वेऊ ॥
जनु छविसर मराल को मंडल ❀ कचित भ्रमहु ह्वै जावै चंचल ।
बेंदी डोलत भालन माहीं ❀ गुन हरि जन्म नचत जनु जाहीं॥
पन्नन लालन हीरन हारे ❀ चंचल चहुँकित दीख अपारे ।
जनु हरि जन्म प्रमोद अपारा ❀ पावन तिरवेणी वहु धारा ॥
चलि आई निज सोह बढ़ावन ❀ पावन अपि होवन अति पावन ।
कमल सदृश कोमल युग पाँवन ❀ अनवट बिछुवे अहैं सुहावन ॥
अरु नूपुर पगपान सुहावें ❀ गज गति उत्कंठित चित आवैं ।
जब वे मिलकर एकहि संगा ❀ पाँव उठावत हैं सउमंगा ॥

दो० ता अवसर नूपुरन अरु, पायल गन झनकार ।
इम भासत आनंद मय, घन गर्जत रुचिकार ॥९०॥

१ चेटा ।

सो० ता रवसे चहुँ ओर, होइँ अमंगल दूर सव ।
उत्सव रस मन वोर, मग्न फिरत नर नारि शिशु४०

कृपंकटि[1] लचकन तन हिल रहहीं ❀ तासों तिन वैनी जे अहहीं ।
तिन में ते मालती चमेली ❀ मदन वान के सुमन सुवेली ॥
खसि खसि करि उन गोपिन केरे ❀ चरणन पर गिर रहे घनेरे ।
सो वे सुमन स्वयं नहिं गिरहीं ❀ जनु शिर केश हिये अस धरहीं ॥
अहो आज इन चरणन शोभा ❀ अति अद्भुत लख को नहिं लोभा।
निरख-निरख इम प्रमुदित होई ❀ पुन-पुन पुष्प चढ़ावत सोई ॥
अपरहु एक प्रयोजन रह्यऊ ❀ मानौ केशन इह विध कह्यऊ ।
अहो सुभाग्य हमारे ऐसे ❀ कहाँ हते हम जावहिं कैसे ॥
येहि हमै नंद-नंद दिखावन ❀ लिये चलैं धनि-धनि इन पाँवन ।
इम कह मुदित फूल वरसावैं ❀ दरस लालसा अधिक वढ़ावैं ॥

दो० इह विध व्रज वामा सकल, नंद महल मैं आय ।
नंद कुँवर के दरस हित, जिन चित चोप महाय॥६१॥

सो० दई दूव व्रजनाथ, लई हाथ मैं नंद नैं ।
फिर सव एकहि साथ, यशुमति प्रति भाखन लगीं४१

अरी यशोदा अपनो लाला ❀ हमैं दिखावौ हम व्रजवाला ।
थकीं मनाय जवै नारायन ❀ तवही भइ यह सुख पारायन ॥
तव यशुमति हू अपनो लाला ❀ जिहँ अनंत अंडन को पाला ।
ताहिं गोद कर अपरन गोदू ❀ लगी दैन वढ़वावन मोदू ॥

१ पतली कमर ।

अरु इम भाखत पुण्य तुम्हारे ❀ भयो मोद यह प्राप्त हमारे ।
निरख लाल मुख पंकज बाला ❀ भई मग्न आनंद रसाला ॥
मणिगण वारैं तन मन वारैं ❀ देहिं असीसा चौरैं ढौरैं ।
धन्य-धन्य तुव कुख ब्रजरानी ❀ जो अस गर्भ धर्यो सुखदानी ॥
चिरजीवौ यह लाल तुम्हारो ❀ हम ब्रजवासिन असु आधारो ।
अति असीमँ करुणा श्रीस्वामी ❀ बूढ़े पन पायो सुत नामी ॥

दो० घन सम सुंदर श्याम तनु, पद्म नयन मुख हास ।
रच्छ यशोदा नीकि विध, कबहु न पावै त्रास ॥९२॥

सो० अस कह यशुमति पाहिं, लाल वदन चूमैं मुदित ।
पुन-पुन वर्त्तं लगाहिं, धन्य-धन्य यशुमति कहैं॥४२॥

कोउ भीतरतें बाहिर आवैं ❀ कोउ बाहिर ते भीतर जावैं ।
कोउ अजिरँ में नाचैं गावैं ❀ कोउ आनको टेरि सुनावैं ॥
कोउ सखि धन ले बाहिर आवैं ❀ पुन अपरन प्रति मुदित लुटावैं ।
याचक गन धन जेते पावैं ❀ तेतो पुन सब तहाँ लुटावैं ॥
अस अनंद उमड़्यो ब्रजमाहीं ❀ खान पान तनु भानहु नाहीं ।
सहँसन स्वर्ण रजँत वर केरे ❀ कलश कुंभ अरु थार घनेरे ॥
भरि-भरि दही दूध नवनीता ❀ सुखद सुगंधित जल युत प्रीता ।
हरद अतर केशर कस्तूरी ❀ कुंभ अनेकन हैं भरपूरी ॥
ले पिचकीं धावत ब्रजबाला ❀ गोप धुनी कर जै नंदलाला ।
वे उनपै वे उनपै डारें ❀ प्रेम विवश नहिं लाज समारें ॥

१ भाए २ बेहद ३ छातीसों ४ आँगन ५ हजारन ६ चाँदी ७ घड़े ।

दो॰ नंदागन वहु जननकी, भई भीर सुख लैन।
नहीं धीर तिन तीर लव, दधिकांदोके चैन ॥९३॥

सो॰ झोरी भरहिं गुलाल, प्रमुदित व्रज गोरी तहाँ।
पकड़ पकड़ व्रज ग्वाल, मलहीं रोरी तिन वदन ४३

गोपहु तिन गोपिन को ताहीं ❀ अतर सिनान करावत आहीं।
कहुँ छिपजाइँ कहुँ पुनि आवैं ❀ तारी दे वहु गारी गावैं॥
रंगन सों भरि-भरि पिचकारी ❀ मारत हैं सन्मुख व्रजनारी।
अवरख अरु गुलाल आकासा ❀ छाय रह्यो अस सुंदर भासा॥
जनु संध्या समये प्रकटाये ❀ उड़गण वृंद, महत सुख पाये।
ताल पखावज मनहर वीणा ❀ वजवत गोपी गोप प्रवीणा॥
चंग मृदंग उपंग. वजावैं ❀ अरु वहु वाद्य वजावैं गावैं।
नाचत धूम मचावत भारी ❀ एक अपरकी सुरति विसारी॥
के गोपी गोपन मुख माहीं ❀ भर माखन विहँसत हैं ताहीं।
सारी अरु लहँगा पहिरावैं ❀ हँस-हँस नारी वेष वनावैं॥

दो॰ पुन तारी दे कहहिं अस, अपर गोपगण पाहिं।
देखौ या व्रजमाहिं इन, सम नइ दुलहिन नाहिं॥९४॥

गोपहु गोपिन गेरत ताहीं ❀ दूध दधी कुण्डन के माहीं।
या प्रकार खेलत हुलसाई ❀ मची कीच अतिही अधिकाई॥
जहँ देखौ तहँ परत दिखाई ❀ दधि घृत पयकी कीच महाई।
बाहिर भीतर पुरिमें जाते ❀ सब जन दधि कर्दमें में राते॥

१ पास २ कीच।

वृद्ध स्थूल गिरैं तिह माहीं ❀ करहीं हास्य अपर जन ताहीं।
परम विनोद बढ़्यो ब्रज देशा ❀ अहे कवी को कहै जु लेशा॥
देखतहीं बनि आवै सोऊ ❀ देखत कृपापात्र जन कोऊ।
इह विधि दूध दही की धारा ❀ बहन लगी रविसुता[1] प्रकारा॥
विबुध विमान राज निज नैना ❀ निरख निरख पावत बड़ चैना।
अरु इह विध भाखत सुर वृन्दा ❀ आज न नंद सरिस आनन्दा॥

दो० ब्रज के खग मृग धन्य हैं, धनि धनि ब्रज की भूमि।
धनि धनि गोपी ग्वाल जे, निरखैं हरि मुख चूमि॥९५॥
सो० कहुँ मिल गोपी ग्वाल, मुदित गुलाल उड़ावहीं।
कहुँ पुन पृथक[2] नृपाल, दधिकाँदो में लाल हैं॥४४॥

कहुँ अबीर की है अँधियारी ❀ जामें गोपवृन्द ब्रजनारी।
भूल फिरैं इतके उत जावैं ❀ जय जय हो की धूम मचावैं॥
पुना दूध दहिकी अधिकाई ❀ पाय विलोकैं ते दिनराई[3]।
झिल झिल झोकैं रोरिन झोरी ❀ चपलासी चमकैं ब्रज गोरी॥
चहूँ ओर बज रहीं बधाई ❀ नंद सदन नंदन प्रकटाई।
आपुस में लपटत मुद होई ❀ टूटत मोतिन माला जोई॥
मानों तारागण झरते हैं ❀ इह विध की शोभा देते हैं।
तनक नाहिं तिन तनुको भाना ❀ उत्सव मोद निमग्न महाना॥
कोउ हरि दर्शन की अभिलासा ❀ नंदभवन भीतर सहुलासा।
जावैं देख बाह्य पुन आवैं ❀ मैं अस निरख्यो सबन सुनावैं॥

१ यमुना २ अलग अलग ३ सूर्य।

दो० सुन्दरता माधुर्यता, लावणता जो आहिं।
पूर्ण रूपसों राजहीं, इन प्रति अंगन माहिं॥ ९६॥

छन्द

नन्द व्रजपति के भवन मो, प्रकट लाल ललाम है।
तेज हृत कन्दर्प कोटिन, निरख छवि छवि धाम है॥
वदन दुति तट उडुप[१] द्युति बहु, लाग फीकी वाम है।
श्यामता घन वृन्द लख अति, चाकित अस घनश्याम है॥
शिर सुडौल सुहान अलकैं, लोल मन थिरता गहे।
भाल परम विशाल अतिहि, रसाल रसिकन चित चहे।
कमल लोचन भव विमोचन, अरुणता तिहुँ को कहे।
शुक विलोक सुनासिका, लज्जित सतत मनमें रहे॥
बिंब फल सम अधर युग जिन, अरुणता मन मोहही।
मन्द मुसकन सहज मनहर[२], बेर इक जो जोहही॥
कान युग्म महान सुन्दर, कण्ठ छवि बड़ सोहही।
वक्ष[३]पै जब लक्ष[४] है तब, भास[५] कर[६] किल छोहही[७]॥
उदर त्रिवली नाभि सुन्दर, निरख मन ठहरे तहाँ।
जंघ रचना जो विलोकी, रुक रह्यो मो हिय वहाँ॥
चरण पंकज की मृदुलता, नाहिं देखी अस कहाँ।
अंग अंग अनूप रचना, किम कहौं तुमपै यहाँ॥
है प्रतीत हिये मनहु व्रज, छवि समुद्रहि वपु धर्यो।
याहित सब सोहही रवि, चन्द रतिपति लख पर्यो॥

---

१ चन्द्र २ सुन्दर ३ छाती ४ दृष्टि जाय ५ ऐसो भासे है ६ करेंगे ७ कृपा।

भाग्य हम व्रजवासि वृंदन, उदय मैं संशय हर्यो ।
जाउ जाउ बसंत अति द्रुत, दरस कर मन मुद भर्यो ॥

दो० इह विध दर्शन करहिं जे, ते पुन वाहर आय ।
अपरन प्रति प्रभु सोहको, वर्णत अति हरपाय ॥९७॥

ठौर ठौर दधिकाँदो ऐसो ❀ मच्यो न पूर्व कवहु इन जैसो ।
जुरि जुरि के गोपी अरु ग्वाला ❀ व्रज चहुँ दिशि किये लाल गुलाला॥
तिहँ अवसर त्रिवरण त्रय रंगा ❀ दीख परे अस भासत अंगा । ।
जनु हरि जन्म जान सुख श्रेणी ❀ प्रकटी व्रज में आय त्रिवेणी ॥
दधिकाँदो खेलन के माहीं ❀ हे नृप तिन तृप्ती लव नाहीं ।
जे जन दूर दूरते आवैं ❀ तेउ मुदित तिनमें मिल जावैं ॥
एक अपरको या विध कहहीं ❀ जिन गृह जाउ खेल सुख लहहीं ।
अस आनन्द फेर कब पैहैं ❀ यदपि भाग्य वश इन्द्रहु ह्वै हैं॥
धेनु वत्स वृप कूदत अहहीं ❀ जनु वधाइ देवत मुद लहहीं ।
परहिं रंग कुंडन में तेऊ ❀ रँगे भये धावहिं पुन वेऊ ॥

दो० धेनु वृन्द आनन्दको, कोकर सकही तूंल[1] ।
वछरन दूध पिवावनों, तृण चरणों गई भूल ॥ ९८॥

कृष्ण जन्म उत्सव के माहीं ❀ इह विध सबी मग्न मन आहीं ।
युग्म याम इम भये वितीता ❀ दधिकाँदो से कोउ न रीता ॥
यदपि यशोमति वारन करहीं ❀ को अपि वचन कान नहिं धरहीं ।

१ तुलना ।

पुन जब नंदराय नें ताहीं ❀ विविध वस्त्र मँगवाये वाहीं ॥
कह्यो सबन प्रति युत सन्माना ❀ शुद्ध वारि सों करहु सिनाना।
पृथक पृथक सबको नहवाये ❀ पृथक पृथक अँगराग लगाये॥
पृथक पृथक वस्त्रन सजवाये ❀ पृथक पृथक भोजन करवाये।
पृथक पृथक ताम्बूल खवाये ❀ पृथक पृथक सबको बैठाये॥
पृथक पृथक अत्तर लगवाये ❀ पृथक पृथक सन्मान कराये।
पृथक पृथक सब प्रतिकर जोरी ❀ करी विनय अरु कह्यो निहोरी॥

दो० तुम्हरे पुण्य प्रताप ते, भयो पुत्र यह मोर॥
मेरो तो यामें न कछु, दीनों मोद अथोर॥९९॥

जिन जिन जो जो मनसों चाह्यो ❀ दियो नंद तिन मोद बढ़ायो।
मागध बंदीगण अरु चारण ❀ सूत सुकवि कर सुयश उचारण॥
अरु देवें आसीस उदारा ❀ चिर जीवो यह नंदकुमारा।
सुन सुन मुदित नंद सुत नेहीं ❀ तिनको मनवांछित धन देहीं॥
सादर भूदेवन दिय दाना ❀ और जिमाये व्यंजन नाना।
विप्र पुकार पुकार असीसा ❀ दें जीवो सुत कोटि बरीसा॥
छाय रह्यो व्रज माहिं दकारा ❀ गयो निकस नरनाथनकारा।
ठौर ठौर बाजंत्र बजावें ❀ सुनत शब्द जलधरहु लजावें॥
देख नंदको विभव महाना ❀ नभथित अमरन अचरज माना।
कहें कि विभव नंद नृप केरो ❀ हमनें किहँ थल अपि नहिं हेरो॥

दो०काहे वैभव नहिं बढ़ै, आज नंद गृह माहिं।
स्वयं वैभवाधीश प्रभु, प्रकट भयो है जाहिं॥१००॥

सो० ब्रह्मा ब्रह्मोजात, तिनैं दरस दुर्लभ अहै ।
सो विलसत साक्षात, गोद यशोदा रूप शिशु॥४५॥

अरु सुर वामा निज हिय धामा ❀ उत्सव मोद विलोक ललामा ।
बार बार पछतावें भारी ❀ हाय आज हम घोष मँझारी ॥
नंद भवन की भई न दासी ❀ जो समीप जाकर सहुलासी ।
उत्सव सुख विलोक निज मनको ❀ करतीं आनंदित खिन खिन को॥
इम अति उत्कंठित सुरनारी ❀ रंचहु धैर्य सकीं न सम्हारी ।
ताहित गोपवधुन धर रूपा ❀ आईं नंद निकेत अनूपा ॥
आय अनूपम बालक केरो ❀ कर दर्शन सुख पाय घनेरो ।
छिपे वेषही माहिं नरेशा ❀ गवनीं अति प्रमुदित दिविदेशा॥
यहाँ देव वृंदनहुँ विचारा ❀ हमहूँ दरस करहिं इह बारा ।
अरु ऋषिगण अपि दरसन आसा ❀ मिल देवनसों हिये हुलासा ॥

दो० आये ब्रज में नंद गृह, दरस करन नँदलाल ॥
अति आतुरता जिन हिये, पगे प्रेम के जाल॥१०१॥

सनतकुमार कपिल शुक व्यासा ❀ दत्त पुलस्त हंस मुनिरासा ।
कह मुनि में अरु ब्रह्मा आये ❀ अपर मुनी अगणित मुद धाये॥
चतुरानन वेदन को कर्ता ❀ तेज प्रकाश दशहुँ दिशि धर्ता ।
हँसारूढ़ हेमके वरणा ❀ मुकुट स्फुरें कुंडल द्युति करणा॥
इह विध मुदित विरंचि सिधायो ❀ मुनिन संग सोहत अधिकायो ।

१ रुद्रादि २ समय ३ फसे ४ चमकता हुआ ।

तथा भूतगण अगणित संगा ❀ वृषारूढ़ शिव शिर पै गंगा ॥
रथारूढ़ रवि प्रमुदित आयो ❀ गज आरूढ़ पुरंदर[१] धायो ।
आयो षटमुख शिखि[२] आरूढ़ा ❀ मृगारूढ़ निशिपति द्युति गूढ़ा ॥
वायु खंजनारूढ़ सिधायो ❀ महिषारूढ़ भानुसुत[३] आयो ।
अजारूढ़ अग्नीसुर आयो ❀ दरस हेत जिन मोद सवायो ॥

दो० पुष्पक पै चढ़िके धनद, वरुण मकर आरूढ़ ।
गवने हुलासित हृदय सों, श्रीव्रज में द्युति गूढ़ ॥ १०२

कपि सवारि मंगल ग्रह आयो ❀ भासारूढ़ चद्रसुत[४] धायो ।
श्याम हरण पै जीव[५] विराजा ❀ वाहन रोझ शुक्र ने साजा ॥
मकर सवारि शनी सुर आयो ❀ राहु उष्ट्र आरूढ़ सिधायो ।
हे मैथिल इह विध दिवि देवा ❀ कृष्ण दरस कर बड़ सुख लेवा ॥
गये घोष किन्तू निज रूपा ❀ लिय छिपाय भै गोप अनूपा ।
प्रथमैं वृहद भीर व्रज माहीं ❀ पुन ऋषि देव गये तिहँ ठाहीं ॥
यासों बड़ कोलाहल भयऊ ❀ मोद महोदधि[६] उमड़त रह्यऊ ।
ऋषि देवन किय दरस रसाला ❀ पायो अति आनंद विशाला ॥
पुन मन सेती वंदन कीना ❀ मन सेती किय स्तुति रसभीना ।
तिहँ अवसर जो भो आनंदा ❀ मनहिं प्रशंसै ऋषि सुर वृंदा ॥

दो० दरस मोद लह देव सब, ब्रह्मादिक ऋषि साथ ।
निज निज धामन गमन किय, हर्षित भये सनाथ १०३

१ इन्द्र २ कार्तिकस्वामी ३ मयूर ४ यम ५ बुध ६ वृहस्पति ७ समुद्र ।

यहाँ रोहिणी बड़ सुख पायो ❀ कर सिनान अँगराग लगायो ।
सुंदर वस्त्राभूषण धारे ❀ अरु सोरहँ शृंगार सँवारे ॥
विविध रत्न वृंदन हुलसाई ❀ भरि-भरि कंचन थार महाई ।
पुन-पुन लगी लुटावन ताहीं ❀ को कह मोद जु तिहँ मनमाहीं ॥
नंद भवन में मोद निमग्ना ❀ डोल रही है अनत न लग्ना ।
कार्य करत श्रम रंचहु नाहीं ❀ औरहु बड़ उत्साहित आहीं ॥
निज आत्मज की अपि मन सेती ❀ सुधि विसार दइ प्रमुदित एती ।
मनहु कृष्ण रोहिणि नें जायो ❀ अस आनंद प्रकट दरसायो ॥
दूनो मोद यशोदा ही ते ❀ विलस रह्यो रोहिणि के चीते[१] ।
निर्मल मनवारन यहि रीती ❀ अपरन में निज समकर प्रीती ॥

दो०शेष रूप बलराम जो, ताकी रोहिणि माय ।
फिर किम नहिं तिहँ उर विषे, अस प्रीती दरसाय १०४

रोहिणि की अस दशा निहारी ❀ नंद हिये आनंद अपारी ।
नंद प्रशंसहिं बारम्बारा ❀ करहिं मुदित सन्मान अपारा ॥
ब्रजवासी त्वर निज घर जावें ❀ खेलन केर खिलौने लावें ।
लाय आय लाला को देवें ❀ छवि विलोक हिय बड़ सुख लेवें ॥
के ब्रजबाला यशुमति गेहा ❀ जावें जिन जिय महत सनेहा ।
मंत्रन पढ़ि यशुमति सुत केरी ❀ रक्षा करहिं रूप निधि हेरी ॥
केउ नील पट आय उढ़ावें ❀ भाल डिठौना केउ लगावें ।
केऊ राई नौन उतारें ❀ रूप देख बल जाइँ अपारें ॥

१ चित्त में ।

अरु सब कहँ आज व्रज माहीं ❀ आनँद शेषे रह्यो कछु नाहीं।
धनि धनि यशुमति धनि धनि नंदा ❀ हमहूँ धनि अस लह्यो अनंदा ॥

दो० इह प्रकार बहु गोपिका, आवैं यशुमति गेह।
देहिं बधाई हरषहीं, को कह इनहु सनेह ॥ १०५ ॥

नेगचार जस जा कहँ योगू ❀ यशुमति कर पावहिं तस लोगू।
सुन सुन सुतकी कल[1] किलकारी ❀ यशुमति सकै न सुखहिं सम्हारी॥
द्वारन द्वारन गृह गृह पाहीं ❀ अति कसमंस निकसत पर जाहीं।
कृष्ण जन्म व्रज हर्ष जु भयऊ ❀ यशुमति नंदहिं नेह जु रह्यऊ ॥
सहसवदन नहिं सकै उचारी ❀ इक मुख में किम कहुँ विस्तारी।
जबते व्रज में प्रभु प्रकटाये ❀ नित नूतन प्रमोद बरसाये ॥
प्रतिपल बाढ़ रह्यो सुख दूनों ❀ को अपि नाहिं दीखत मुदसूनों।
जो जो करत मनोरथ जेऊ ❀ सो सो पावत सहजहि तेऊ ॥
रहि न आस रंचहु मन माहीं ❀ किहँ अपि अस मोदित सब आहीं।
रह्यो न मोद लेश अवशेशा ❀ मोदहु मोद लेन व्रजदेशा ॥

दो० स्वयं आय प्रकटित भयो, कृष्ण जन्म उत्साह।
ऋद्धि सिद्धि डोलत फिरैं, किहँ अपि रंच न चाह॥ १०६

❀ कवित्त ❀

छाय रही गृह गृह निधि ऋधि सिधि आदी,
पाय भुक्ती मुक्ती जन परम अघाय हैं।

१ बाक़ी २ सुंदर ३ कठिनाई ४ बाक़ी।

डोलत फिरत गलि गलि माहिं सिधि स्वादी,
बोलत न देखत मनुज समुदाय हैं ॥
मग्न प्रभु दरसन परसन मन अति,
लग्न लागी व्रजपतिसुत स्याम काय[1] हैं ।
रह्यो नहिं भेद लव दाता मंगतन मति,
कह्यो ऋतुराज[2] निज हिये ध्यान लाय है ॥ ७ ॥

दो० सिद्धि आदि सब ऊपजें, प्रभु इच्छा को मान ।
जहाँ स्वयं श्रीकृष्ण हैं, तहँ किम ह्वै सन्मान॥१०७॥

इक इक गृह में जो धन अहही ❀ धनद देख विस्मयता लहही ।
नहिं इतनों धन मो भंडारा ❀ नहिं सुपनहु धन इतो निहारा॥
नन्द भूति लख अतुल नरेशा ❀ लजहिं सुरेश प्रजेश महेशा ।
जिहँ कमला कटाक्ष सुर वृन्दा ❀ पावैं विभव वडाइ अनन्दा ॥
वह चंचला अचल व्रज माहीं ❀ डोल रही है अनुदिन ताहीं ।
तदपि न करही को अनुरागा ❀ कृष्ण दरस रस सब मन पागा॥
नन्द विभव भव को कवि कहही ❀ भाखन चहे पराभव लहही ।
कारण यह जाके गृह माहीं ❀ स्वयं कृष्ण प्रकटे हैं ताहीं ॥
जो अनंत ब्रह्मंडन स्वामी ❀ सर्वेश्वर प्रभु पर सुख धामी ।
जिम विहंग नभ पार न पावे ❀ शक्ति सरिस नभ में उड़ जावे॥

१ शरीर २ श्रीवसंत ३ विभव ४ लक्ष्मी ५ हार जाइ ।

दो० तिम व्रजपति वैभव वृहद, अरु व्रजवासिन नेह ।
कृष्ण जन्म उत्सव विषे, को कह सकही एह ॥१०८॥

यह महुत्सव महुदधि[1] आकारा ❀ तर कर चहें जाइँ उह पारा ।
ते अवश्य भूलें तिहँ माहीं ❀ जहँ शारद अहिपति गति नाहीं ॥
तहँ को कवि करही अस आसा ❀ जाउँ उलँघ उत्सव जलरासा[2] ।
अनिर्वाच्य सुख को कह सकहीं ❀ मूढ़ न जान वृथा वच वकहीं ॥
मेंढक पंकज गुण किम जाने ❀ लोचन लाभ न अन्ध पछाने ।
संत संग में कबहु न गयऊ ❀ गुन गोविंद मर्म किम लह्यऊ ॥
तिहँ जन लगे रुचिर हरि गाथा ❀ प्रभु पद पद्म प्रीति भवपाथा ।
ताते श्रीगुरु चरण प्रभावा ❀ श्रीहरि जन्मोत्सव कुछ गावा ॥
केवल अपन मोद हित गायो ❀ गाय गाय परमानँद पायो ।
स्वतः सुलभ सब जनको होवै ❀ सुने सुनावे सब अघ खोवै ॥

दो० इह कलि काल कराल में, कित नहिं आन उपाउ ।
वसंत यदि चह भव तरन, तो प्रभु गुन गन गाउ ॥१०९॥

हे नृप व्रजपति निज सुत केरो ❀ किय महान उत्सव कछु टेरो ।
तथा छठी को उत्सव कीनों ❀ सोऊ वृहद रूप में चीनों ॥
तिहँ आनन्दहिं को कवि कहही ❀ भावुक भाव माहिं मुद लहही ।
तिहँ दिन अपि नृप नन्द उदारा ❀ विप्रन को दिय दान अपारा ॥
तथा औरहू जे जे आये ❀ तिनैं अपी दिय धन हरपाये ।
कोउ असीस देवें हुलसाई ❀ को कह जय जय हो व्रजराई ॥

१ महा समुद्र २ संसार समुद्र ।

ता दिन एक सूत सुन पायो ❀ नंदहि दैन वधाई आयो ।
पूछ्यो नंद नृपति तिहँ पाहीं ❀ आप कौनहो कह वह ताहीं ॥
अहौं सूत आपुहिके घरको, ❀ आप समान भाग्य किहँ नरको ।
कहा बात मनुजन की अहही ❀ या सुखहित सुर तरसत रहही ॥

दो० कहा बात सुर वृंद की, सुरपतिहू मन माहिं ।
या सुख को चाहत सतत, रंचहु पावत नाहिं ॥ ११०॥

सो० ताहित देन असीस, प्रमुदित आयो आप ढिग ।
सुनौ नंद व्रजईस, देख्यो वड़ अचरज यहाँ ॥४६॥

❀ कवित्त ❀

एक अरविंद[1] अहै सौरभ[2] अपार रहै,
अबलग अलि[3] वृन्द सूँघन न पाये हैं ।
वारि[4]से न उतपन तरंगन ताड़ित न,
देख न सक्यो है कोऊ सखी ताहिं चाये हैं ॥
सर्वत्र प्रवेश करे वायु महाबल धरे,
सोऊ जाकी सौरभ को, हरने न पायो है ।
वहि कंज व्रज माहीं श्याम रंग छवि जाहीं,
आनन्द सरोवरते आज प्रकटायो है ॥ ८॥

१ कमल २ सुगंधि ३ भँवरा ४ जल ५ भावार्थ, आज कल में वा सूतने आज की देख्यो तासों आज कह्यो ।

दो० पुन सोऊ पंकज सरस, व्रजरानी के गोद ।
विलसत विस्तारत अहै, निज सुगंधि प्रद मोद ॥१११॥

अस सुनकर अतिशय हुलसाई ❀ परम उदार जु श्रीव्रजराई ।
पूर्ण मनोरथ वाको कीनों ❀ तिहँ हिय अपि भो मोद नवीनों ॥
पुन चढ़ाय गजपै नृप नंदा ❀ कियो विदा सो गो सानंदा ।
पुन तहँ आयो याचक आना ❀ पूछ्यो नँद कहँते भो आना ॥
कह याचक गोवर्द्धन वासी ❀ दास आपको नित अभिलासी ।
श्रीपति ने पूरी मो आसा ❀ भयो पुत्र तुव गृह सुखरासा ॥
ताहित आयो दैन वधाई ❀ धनि व्रजरानी धनि व्रजराई ।
कह्यौ नंद याचौ मन भायो ❀ भयो मुदित भल मो गृह आयो ॥
याचक कह्यो जन्म दिन आयो ❀ विविध प्रकारन धन मैं पायो ।
सो सबही मैं यहाँ लुटायो ❀ बड़ उत्सव आनंद समायो ॥

दो० मोहिं लाल के दरस की, हती महत अभिलास ।
सो तो पूरण कीन प्रभु, तदपि हिये इक आस॥११२॥

पुन भाख्यो व्रजपति तिहँ पाहीं ❀ कहा मनोरथ है मन माहीं ।
कह याचक जिहँ शुभ दिन माहीं ❀ लाला घुटुवन चल मो पाहीं ॥
आय दरस देवैगो जबही ❀ मोर मनोरथ पूरण तबही ।
अस सुन नंद मुदित तिहँ ठाहीं ❀ भाख्यो अपन सेवकन पाहीं ॥
राज्य भवन ठहरावन याको ❀ देहु सुथल सुन मुद मन वाको ।
नंद सेवकन योग्य स्थाना ❀ दियो ताहिं निवस्यो हरषाना ॥
या प्रकार जे जे तहँ आये ❀ व्रजपति ने सबको हरषाये ।
वार वार मैं कहा वखानौं ❀ व्रज भर अहै मोद अप्रमानों ॥

या विध छठी महोत्सव भयऊ ❀ इम नूतन प्रमोद नित रह्यऊ ।
यह आनँद ज्ञानी अरु योगी ❀ अपि नहिं पावैं सदा वियोगी ॥

दो० बहु जन्मन सत्कर्मते, निपट शुद्ध हिय होय ।
हे नृप तव प्रभु भक्ति में, वढ़े प्रीति अघ धोय॥११३॥

सो० रे मन तज सब काम, भज अनुदिन घनश्याम तू ।
पाय प्रेम को धाम, वसंत अब मो मान वच ॥४७॥

❀ इति श्रीकृष्णायने द्वितीय गोलोक द्वारे दशम सोपान समाप्त ❀

कह मुनि सुन मैथिल नर नाथा ❀ अब आगे की शुभप्रद गाथा ।
लालन के खेलन हित लावौं ❀ रुचिर खिलौना मधुपुरि जावौं ॥
अस विचार व्रजपति नँदराऊ ❀ मथुरा गमनोद्यत बड़ चाऊ ।
शौरी[1] कुशल पूछवे हेतू ❀ पुत्र जन्म उत्सव कहवेतू ॥
देन भूप कर मधुपुरि माहीं ❀ नंदराय गवने नृप पाहीं ।
प्रेषित[2] कंस पूतना आई ❀ दुष्टा शिशु घातक कहवाई ॥
नगर ग्राम गृह गृह वह देखे ❀ विचरत खल प्रकृती सब पेखे ।
वहि दुष्टा गोकुल में आई ❀ गोपि गोप जहँ रह समुदाई ॥
दिव्यरूप तिहँ अपन बनायो ❀ षोड़शाब्द[3] वपु मनहर भायो ।
नहिं किहँ गोपहु ताको रोपी ❀ नहिं यशुमति नाना नहिं किहँ गोपी ॥

---

१ वसुदेव २ भेजी हुई ३ सोरह वर्ष को ।

दो० शारद शचि अरु लक्ष्मी, रम्भादिक छवि आहि।
जिहँद्युतिनिकटविडंवलग,असद्युतिजिहँतनुमाहिं॥११४॥

यशुमति रोहिणि धर्षित भयऊ ❀ सुघर रूप लख मन मुद छयऊ।
जान्यो यशुमति निज मन माहीं ❀ कोउ मथुरा की तियवर आहीं॥
रोहिणि के मन अस अनुमाना ❀ है कोउ महिराने की जाना।
दोउन मन अस उठें विचारा ❀ जानयोग्य तिय किय सत्कारा॥
हरि तिहँ लख मूँदे निज नैना ❀ शिशुविलोक अतिशयछविऐना॥
मोहित्त चकित उठावत अंका ❀ पुनपुन लख शिशु वदनमयंका॥
लिय उठाय चढ़ लाड़ लड़ावे ❀ मातृभाव बहु विधि प्रकटावे।
दयऊ स्तन शिशु मुख के माहीं ❀ कालकूट विषसन्यो जु आहीं॥
स्तन कटु लगो रोप बड़ कीनों ❀ प्राणयुक्त तब प्रभु पय पीनों।
मुंच मुंच कह धावन लागी ❀ व्यथित स्तन पुर बाहिर भागी॥

दो० धाय अतिहि अकुलायकँ, कह्यो छाँड़ वपु मोर।
राक्षसतनु तव प्रकटभो, जो लागत अति घोर॥११५॥

प्रसरे नयन महा भय दाई ❀ गिरि भुवि द्रुमगण पे अकुलाई।
वृक्ष कोप पट लग गिरि गयऊ ❀ गिरत शब्दअति भयप्रदभयऊ॥
सुन्यो शब्द यशुमति अकुलाई ❀ निरखनशिशु पलनाप्रति धाई।
लाल न देख दुखित भइ भारी ❀ बिन बत्सा जिमि धेनु दुखारी॥
अंध नैन यष्टी दृढ़ जैसे ❀ प्राणाधार मोर सुत तैसे।
हा लाला कह तू कहँ गयऊ ❀ बिनतुवअसु अब जावनचहाऊ॥

१ बनावटी २ दहल गई ३ यशुदाजी के पीहर की ४ गिर गई।

अस कह रुदन कियो बहु भारी ❀ को निहार सक धीरज धारी ।
अरु रोहिणि आदिक ब्रज नारी ❀ गोपवृंद उर आकुल भारी ॥
खोजन हित धाये अकुलाये ❀ लख पूतना देह विसमाये ।
भाखन लगे गोद इनकेरी ❀ आवै कोउ मरै बिन देरी ॥

दो० ताके उर खेलत रह्यो, मुदित हसत यह बाल ।
मनौ पूतना उर फव्यो, पंकज नील रसाल ॥११६॥

❀ कवित्त ❀

गोपी तुरतहि ताहीं, लियो है उठाय बांहीं,
हियो प्रेम सिंधु माहीं, अति उमड़ायो है ।
लाल माधुरी निरख, लायो हिये सौं हरख,
बार बार लाय चख, आँसुन बहायो है ।
दीन्हों यशोदहिं धाय, यशोमति पुत्र पाय,
हिये सौं लगाय भाय, नेह न समायो है ।
रोहिणिहु गोद लियो, प्रेम प्रपूरित हियो,
कहै कोटि वर्ष जीयो, ब्रज सुखदायो है ॥ ९ ॥

तहँ औरहु गोपी जुरि आईं ❀ बार बार हरि कहँ बल जाईं ।
कहहिं धन्य हे यशुमति माई ❀ मीचँ बदनतें बालक पाई ॥
राई नौंन उतारें कोई ❀ बाँधे यंत्र पूजि पद धोई ।
पढ़त मंत्र गो पुच्छ भवांवें ❀ जल उतार चुटकी चटकावें ॥
पुन गो मूत्र स्नान करवायो ❀ रहसिस्थल यशुमति इमगायो ।

१ महान और भयंकर देख विसमाये २ मृत्यु ।

ईश्वर तुव शिर रक्षा करही ❁ विकुंठ कंठ देश शुभ धरही ॥
श्वेतद्वीप पति कर्णन रक्षक ❁ मखहरि नाक अशुभ हो भक्षक ।
नर नारायण अधरन राखें ❁ सनतकुमार गाल रख भाखें ॥
रक्षक भाल श्वेतवाराहा ❁ भ्रू रक्षक नारद मुनि नाहा ।
नरहरि नित रत्ता कर नैना ❁ दशरथ सुत हो रक्षक वैना ॥

दो० चिवुक कपिल रत्ता करै, दत्तात्रय उरु पांत ।
स्कंध दुहुन रत्तक ऋषभ, हस्त मत्स्य सुखदात॥११७

युगल भुजा रक्षा पृथु करही ❁ उदर कमठ संतत दुख हरही ।
नाभी धन्वन्तर कर रक्षा ❁ गुदा मोहिनी रक्षक दक्षा ॥
कटि की रक्षा वामन करई ❁ पीठ परशुधर रक्षा धरई ।
दक्षिण उरु रक्षक प्रभु व्यासा ❁ जानु युगल बल रक्षक भासा ॥
जांघन की रक्षा बुध करई ❁ कल्की गुल्फ पाद शुभ धरई ।
केशव कवच परम सुखदाई ❁ सर्व ओर रक्षा हित गाई ॥
कवच यही नारायण दीना ❁ ब्रह्मा नाभि कमल मुद लीना ।
पुन विरंचि शङ्कर प्रति भाख्यो ❁ सतिपति से दुर्वासा राख्यो ॥
मुनि दुर्वासा व्रजपति धामा ❁ दिय जसुमति प्रति येहि ललामा ।
इनसे रक्षा किय व्रजरानी ❁ गोपिन युक्त परम हुलसानी ॥

दो० पान कराये स्तन पुना, विप्रन प्रति दिय दान ।
वृजपति आये तिहिं समय, मथुरा से वहि थान॥११८॥

१ यज्ञ नारायण २ कपोल ३ रत्ता करे ४ कच्छपावतार ।

तहां विलोक पूतना घोरा ❁ भय विह्वल नन्दादि न थोरा ।
छीन कुठारन ताकी देहा ❁ जार वार कर दीनी खेहा ॥
यमुना तट बड़ चिता जराये ❁ अतिश्रम कर पुनि गृहमें आये ।
एला[1] वर लवग श्रीखंडा[2] ❁ तगर अगर सम धूम्र प्रचंडा ॥
दग्ध देहकी धूम्र जु ऊठी ❁ सुखप्रद पावन परम अनूठी ।
कह मुनि कृष्ण छोड़ किन केरी ❁ शरण जाइँ हम,कुमतिहिं टेरी ॥
मातृगती पूतन को दीनी ❁ पावन कृष्ण पतित शुभ कीनी ।
कह नृप पूर्व कौन यह अहई ❁ वाल घातनी भुवि जो रहई ॥
विषस्तनी पुन दुष्ट सुभावा ❁ परम मोक्ष किमइन अपि पावा ।
कह नारद बलि के मख' माहीं ❁ देख्यो वामन वपु छवि ताहीं ॥

दो०सुता एक वलिराय की, रत्नमाल जिहँ नाम ।
निज मन किय सुत नेहदृढ़,पुनकिय मन अस काम[3] ११६

अस प्रकार जब हो मुहि बालक ❁ सब दुख घालक की हूँ पालक ।
ताको स्वस्तन पान कराऊँ ❁ तब अति मुदित होय सुख पाऊँ ॥
परम भक्त वलि नृप की कन्या ❁ सुत इच्छा प्रभु की किय धन्या ।
मनही मन श्रीहरि वर दीनों ❁ हो मन काम जु अब तुम कीनों ॥
पुन जब श्रीवामन भगवाना ❁ वलि को सर्वस हर्यो पछाना ।
तदा रत्नमाला दुख पाई ❁ निज मनमें अस मनसा लाई ॥
याको काहे दूध पिवावौं ❁ पयं[4] मिपं[5] विष दे आशु पुजावौं ।
प्रभु जानी तिहँ मन अभिलासा ❁ मनही कह्यो पूर्ण तव आसा ॥

१ इलायची २ चंदन ३ इच्छा ४ दूध ५ बहाने ।

प्रकटी वहि द्वापर के अंता ❀ नाम पूतना ताहिं भनंता ।
पूर्ण मनोरथ भयऊ ताको ❀ मातृ गती अपि हरि दिय वाको॥

दो०-अस करुणा आगार प्रभु, समदर्शी नंदलाल ।
वसन्त रे मन ताहि भज, तज प्रपंच दुख जाल१२०
भवसागर के तरन हित, कृष्ण चरित है नाव ।
श्रुति श्रुतिधर संतन कह्यो, अनंन बसंत उपाव१२१

सो०-यह लीला जो गाय, परम कृपामय कृष्ण की ।
करैं मनन मन लाय, लहैं भक्ति सो सहज ही॥४८॥

* इति श्रीकृष्णायने द्वितीय गोलोक द्वारे एकादश सोपान समाप्त *

कृष्ण कथामृत सरस अनूपा ❀ कियो पान तुमनें हे भूपा ।
जो जन भक्ति युक्त कर पाना ❀ है कृतार्थ नहिं संशय माना ॥
कह शौनक यह अमृत रूपा ❀ सबते परम मिष्ट अरु गूपा ।
कृष्णचरित शुभ श्रीमुख गाये ❀ ते सुनकें बड़ आनँद पाये ॥
कृष्ण भक्त अति शान्त स्वरूपा ❀ जो कछु पूछेउ मैथिल भूपा ।
कहि पुन नारद तिहँ प्रति गाथा ❀ सो सब मो प्रति कहु मुनिनाथा॥
कहत गर्ग मैथिल धर्मात्मा ❀ विह्वल प्रेमाकर्पित आत्मा ।
नारद प्रति वह भाखन लागो ❀ प्रभु सुमरत प्रभु प्रेमहिं पागो ॥
कह नृप धन्य धन्य मैं आजू ❀ भो कृतार्थ जागे शुभ काजूं ।
हरिजन संग मिलन जग माहीं ❀ दुर्लभ दुर्घट निश्चय आहीं ॥

१ पंडित २ दूसरा ३ कर्म ।

दो० बालरूप श्रीकृष्ण प्रभु, श्रुति प्रसिद्ध जगदीश ।
अद्भुत जन वत्सल परम, कोटि ब्रह्मंडन ईश ॥१२२॥

आगे कवन चरित प्रभु कीनें ❀ चित्र विचित्र भक्ति रस भीनें ।
कह मुनि भल पूछेउ नरराई ❀ तव प्रभुभक्ति धर्म हम पाई ॥
संगम साधु सुजन जन केरो ❀ निश्चय सुखप्रद यही निबेरो ।
कृष्ण जन्म नक्षत्र मँझारी ❀ यशुमति उत्सव करन विचारी ॥
गोपि गोपगण लिये बुलाई ❀ विप्रन से मंगल करवाई ।
स्वर्णाभरण पीतपट भूपित ❀ घन सम सुन्दर पयकर पूपित[1] ॥
हरि नख[2] युत शशिहार सुहायो ❀ कमल नयन अंजन लगवायो ।
इह विधि नख शिख सोहत वाला ❀ कियो गोद मन मोद विशाला ॥
दिविसुर भुविसुर नमन करायो ❀ अरु गोपिन आदर मन लायो ।
लाला को पलना पौढ़ायो ❀ उत्सव दान मान मन लायो ॥

दो० बाल कृष्ण तहँ रुदन किय, करन हेत पय पान ।
मनुज गतागत[3] के विषे, यशुमति सुन्यो न कान १२३

उत्कच नाम असुर तहँ आयो ❀ पवन रूप धर, कंस पठायो ।
आय शकट बैठ्यो मन फूल्यो ❀ शिशुछविनिरखअपनपोभूल्यो ॥
शकटहिं पद ताड़न प्रभु कीनों ❀ उत्कच भो पीडित वड़ पीनों ।
टूटो शकट असुर पर परियो ❀ तज दानववपु पल में तरियो ॥
अहो कृपालुता कहँ लग कहिये ❀ वार-वार लख वलि वलि जइये ।

१ पाला हुआ २ बघनखा ३ आवन जावन ।

वैर भाव धर दानव आवें ❀ दरस परस कर मुक्ति समावें ॥
तव प्रभु भक्तन को का देहैं ❀ यहि सूझे भक्तन वश रेहैं ।
यशुमति नंद गोप अरु गोपी ❀ आये अति आतुर तहँ रोपी ॥
वालक तहँ जे खेलत देखे ❀ तिन प्रति पूछत अचरज पेखे ।
आपुहि शकट पतन भो कैसे ❀ जस देख्यो तुम भाखौ तैसे ॥

दो॰ कह्यो वालकन सवन मिल, रह्यौ सोय यह कान ।
चह्यो दूध पीवन तदा, रोयो सुनौ सुजान ॥१२४॥

सो॰ अरु किय प्राद प्रहार, अतिहि खीभकें शकटको ॥
ताहित गिर्यौ अवार, हमरे देखत शकट यह ॥४६॥

तिनकी वात न मानत गोपा ❀ भे विस्मित तहँ सव जन रोपा ।
कहँ, त्रिमास को लाला येही ❀ कहँ इह भार शकट लख लेही ॥
यशुमति नव ग्रह शंका लीना ❀ वाल उठाय गोद निज कीना ।
विप्र वुलाय स्वस्ति करवायो ❀ विधिवत दान दियो सुखपायो॥
कह नृप कौन पूर्व यह आहीं ❀ उत्कच नाम कहत तुम जाहीं ।
अहो कृष्ण पंद परसत भयऊ ❀ मोक्ष यथा तुम मो प्रति कह्यऊ॥
कह मुनि दानव उत्कच नामा ❀ हाटकें अक्ष तनय दुख धामा ।
इक दिन लोमश आश्रम गयऊ ❀ यूथ कदम्ब चूर्ण कर दयऊ ॥
देख स्थूल देह कर आढ्यो ❀ अरुजिह्वलमद अपिवहुवाढ्यो।
कर मुनि रोप दिये अस श्रापु ❀ ह्वै विदेह भोगहु वड़ तापू ॥

१ ठाढ़े भये २ हिरण्याक्ष को पुत्र ३ समूह ।

दो॰ सर्प कंचुकी सम वपू, गियों स्वकर्म विपाक।
लोमश मुनि पद पद्म पर, भाखत आरत वाक १२५

पतित दैत्य अस मुनि प्रति भाखा ❀ अहो तेज वल मुनि रवि राखा।
कृपासिन्धु हे मुनिवर नाथा ❀ करौ कृपा मुहिं जान अनाथा॥
आप प्रभाव लेश नहिं जाना ❀ अव पुन देहि देह विज्ञाना।
शतें विधि जन्म देख ऋपि रह्यऊ ❀ कहनारद असमुनि तिहँकह्यऊ॥
रहु तुम वातें देहको पाई ❀ चाक्षुप मन्वन्तर लग जाई।
वैवस्वत मन्वन्तर आवै ❀ प्रभु पद लाग मुक्ति तू पावै॥
होय रोप संतन वरदाई ❀ वरते मोक्ष न कहु किम पाई।
ता कारन यह उत्कच दानू ❀ लोमश तेज मुक्त भो जानू॥
नित्य नमन अस संतन अहई ❀ वंधन मोचन जिन कर रहई।
कह मुनि नारद सुन नृपराई ❀ आगे प्रभुगाथा कहुँ गाई॥

दो॰ लाड़ करत शिशु गोद ले,इक दिन यशुमति माय।
गिरि सम भारी भयउ हरि,भार सह्यो नहिं जाय १२६

कह्यउ कि गिरि समान यह वाला ❀ भो किम यह आश्चर्य विशाला।
इम विस्मय है अवनि विठावा ❀ किहँ प्रति वात न तनक सुनावा॥
पठयो कंस महा वलधारी ❀ तृणावर्त दानव भयकारी।
खेल करत मोहन अति सुंदर ❀ लिय उठाय तिहँ दैत्य धुरन्धर॥
वात वेग वहु आँधि चलाई ❀ कर वड़ तम शर्करा उड़ाई।

---

१ खाल २ फल ३ पड़कें ४ ब्रह्मा के सौ जन्म ५ वायु ६ रजकण।

परी दुखद रज सबके नैना ❀ घड़ी दोय सब भये अचैना ॥
जब यशुमति सुत नयन न देखा ❀ आंगन में, अचरज कर लेखा।
सरित धार अश्रू वह नैना ❀ इत उत ढूंढ़त अकथ अचैना॥
नहिं निरख्यो जब बालक माई ❀ गिरी अवनि में मूर्छा खाई।
अरु उच्च स्वर रोवन लागी ❀ बिन वत्सा गौ जिम दुख पागी॥

दो॰सुन रवं गोपी धाईं सब, रुदन करत अति घोर।
नेह सिंधु डूबे अतिहि, भयो घोषं बहु शोर॥१२७॥

करते अश्रुपात सब धाईं ❀ इत उत नंद नृपति गृह आईं।
तृणावर्त हरि नभ ले गयऊ ❀ ऊर्ध्व लक्ष योजन जा रह्यऊ॥
सम सुमेरु शिशु कांधे जाना ❀ पीड़ित भयउ दैत्य बलवाना।
दैत्य दुखित तब मधि आकासा ❀ गेरन कृष्ण कीन मन आसा॥
तब श्रीकृष्ण पकर गर लीनों ❀ परिपूरण जिहँ वेद न चीनों।
मुंचं मुंच तब दैत्य पुकारा ❀ अद्भुत अर्भकं कृष्ण विचारा॥
बहु पीरा तिहँ के गर होई ❀ ताकर नास भयो खल सोई।
कृष्ण माहिं तिहँ जोति समाई ❀ दामिनि यथा मेघ में जाई॥
गिर्यो असुर नभ ते भुवि माहीं ❀ युतशिशु पीन शिला पै ताहीं।
गिरत दैत्य टूटे तिहँ अंगा ❀ भयऊ यह बड़ अचरज रंगा॥

दो॰शब्द दशौं दिशि भयउ अति,भुवि मंडल कंपाय।
शांत बाल तिहँ वर्क्षं लख, रुदत सुनंदा आय१२८

---

१ शब्द २ मजमें ३ छोड़ ४ बालक ५ छाती पर।

सो० लिय उठाय दिय मात, औरहु सखिजन आइँ तहँ ।
तुम कब पाल्यो तातें, कह्यउ गोपि नँदरानि प्रति५०

कहत सुनन्दा तुव उर माहीं ❁ करुणा की तो गंधहु नाहीं ।
यदि कछु मंत्रै कहैं तुम पाहीं ❁ तौ तू वृथा कोप कर ताहीं ॥
नेंक हमारो कह्यो न मानैं ❁ तू अपनी ही पटुता ठानैं ।
जबहि विधाता नें अपनायो ❁ तबहि जरठ वय में सुत पायो ॥
प्रथम पुत्र प्राप्ती हित केते ❁ किये परिश्रम सुमरहु तेते ।
जब तिन शुभ कर्मन फल दीनों ❁ निज आत्मजको दरसन कीनों॥
अब तू पेट भरीसी होई ❁ भोरीहू स्यानी सम जोई ।
जिहँ सुतपै मा सर्वस वारे ❁ अपन प्राण पुत्रहि मैं धारे ॥
कहा पुत्र अंकस्थित जोऊ ❁ आँधी आय तजत है सोऊ ।
कहौ कहाँ गइ है मति तोरी ❁ कहा कियो यह सुतकी ओरी॥

दो० हे यशुमति निश्चय कहौं, तू निर्दयि नँदवाम ।
भयसे भाग अपन वपू, पाल्यो तुम निज धाम॥१२६॥

कह यशुमति मैं जानौं नाहीं ❁ सत्य भेद को है या माहीं ।
मोर हिये अपि खेद महाना ❁ तुम्हरे प्रति यह सत्य बखाना ॥
यह लाला अतिशय सुकुमारा ❁ भारी भो बड़ शैल प्रकारा ।
ताहित मैं शिशु धरणि धरायो ❁ महदाश्चर्य मोर मन आयो ॥
सुनकें इम यशुमति की बानी ❁ कहत सुनंदा सुन ब्रजरानी ।

१ पुत्र २ सुनंदा ३ सल्हा ४ पुत्र ५ गोद में बैठा हुआ ।

दो० ताहित निर्भय देश को, हे रोहिणि मैं पाउँ।
मो जीवन धन मुदित मन, सुवन सद्म ले जाउँ॥१३॥

सो० कह नारद तिहँ काल, आयो याज्ञिक विप्रवर।
भयरू हर्ष विशाल, दम्पति उर तिहँ दरस कर॥५२॥

नन्द यशोमति पूजन कीनों ❀ दे आसन चरणोदक लीनों।
विप्र कहत नृप जिन भय कीजे ❀ सत्य वचन हमरो सुन लीजें॥
रक्षा हम करिहैं शिशु केरी ❀ निश्चय ह्वै इन आयु घनेरी।
कह मुनि इम कह विप्र प्रवीना ❀ दर्भ अग्र नव पल्लव लीना॥
उदक पुनीत कलश भर राखे ❀ ऋक यजु साम मंत्र पुन भाखे।
स्वस्ति वचन पढ़ रक्षा कीना ❀ यज्ञारम्भ विधान नवीना॥
विधिवत अग्नि देव कर पूजा ❀ पुनःशिशु रक्षा हित द्विजसूझा।
कहत विप्र तव पद युग रक्षक ❀ हो दामोदर अशुभन भक्षक॥
विष्टरश्रवा रक्षक जानूं ❀ उरू हरी रक्षक पहिचानू॥
परिपूरण तम स्वयं जु कह्यऊ ❀ तुव नाभी रक्षक वह रह्यऊ॥

दो० कटि राधापति रक्षही, पीताम्बर धर पेट।
कमल नाभ रक्षक हृदय, भुज गोवर्द्धन श्रेष्ठ॥१३२॥

मथुरानाथ रक्ष मुख तेरो ❀ द्वारकेश रक्षक शिर केरो।
असुर विध्वंसि पृष्ठ तुव राखे ❀ सर्वग शुभ भगवान सु भाखे॥

१. जाँघन को २. सर्व ओर ते।

काहे जूठ वृथाही बोले ❀ है तुम्हरी मति अतिशय भोले ॥
यह पय मुख बालक अति छोटो ❀ अति सुकुमार पद्म जिम बोटो[१] ।
सो किम भारी भयऊ माई ❀ तू अपनी ही करत बड़ाई ॥
गोपि गोप नन्दादिक जेते ❀ लख लाला मुख मुद भे तेते ।
पूछत कुशल परस्पर माहीं ❀ कुशल पाय सब हर्षित ताहीं ॥

दो०यशुमति सुत निज गोद कर,ओढ़ानि से ढकवाय ।
चूम माथ निरखत रही, सुवन वदन हरषाय १३०

सो०स्तन दिय शिशु मुख माहिं,पुत्र प्रेम सें मग्न मन ।
कहत रोहिणी पाहिं, हिये दुखित ह्वै दुख अपन॥५१॥

एकहि पुत्र देव ने दीनों ❀ नहिं बहुसुत सुख मैं जग लीनों ।
आजहु बाल काल मुख मुक्ता ❀ इनसे परे होय का उक्ता ॥
प्रतिदिन आवत बहुत अरिष्टा ❀ ताहित मुहिं अन अवधी कष्टा ।
कहा करौं अरु कहँ चल जावौं ❀ कहँ निवास अपनों करवावौं ॥
द्रव्य धाम हय गज रथ मोती ❀ माणिक रत्न देह मम जोती ।
सर्वस जाय कुशल शिशु होवै ❀ ईश अरिष्ट सकल तिहँ खोवै ॥
वापी कूप धर्म अरु दाना ❀ पुन प्रभु मन्दिर अर्चन नाना ।
शत–शत बार करौ मैं सबही ❀ हे रोहिणि भूलौ नहिं कबही ॥
जो मो आत्मज कुशली होवै ❀ ईश अरिष्ट अखिल तिहँ धोवै ।
एकहि सुख मुहिं बालक केरो ❀ अंध यष्टि जिम अपर न हेरो ॥

१ कमल की सुकुमारता आरम्भ में ।

दो० ताहित निर्भय देश को, हे रोहिणि मैं पाउँ।
मो जीवन धन मुदित मन, सुवन सद्य ले जाउँ॥१३॥

सो० कह नारद तिहँ काल, आयो याज्ञिक विप्रवर।
भयऊ हर्ष विशाल, दम्पति उर तिहँ दरस कर॥५२॥

नन्द यशोमति पूजन कीनों ❀ दे आसन चरणोदक लीनों।
विप्र कहत नृप जिन भय कीजे ❀ सत्य वचन हमरो सुन लीजे॥
रक्षा हम करिहैं शिशुकेरी ❀ निश्चय ह्वै इन आयु घनेरी।
कह मुनि इम कह विप्र प्रवीना ❀ दर्भ अग्र नव पल्लव लीना॥
उदक पुनीत कलश भर राखे ❀ ऋक यजु साम मंत्र पुन भाखे।
स्वस्ति वचन पढ़ रक्षा कीना ❀ यज्ञारम्भ विधान नवीना॥
विधिवत अग्नि देव कर पूजा ❀ पुनि शिशु रक्षा हित द्विज सूझा।
कहत विप्र तव पद युग रक्षक ❀ हो दामोदर अशुभन भक्षक॥
विष्टरश्रवा रक्षक जानूं ❀ उरू हरी रक्षक पहिचानू॥
परिपूरण तम स्वयं जु कहाऊ ❀ तुव नाभी रक्षक वह रहाऊ॥

दो० कटि राधापति रक्षहीं, पीताम्बर धर पेट।
कमल नाभ रक्षक हृदय, भुज गोवर्द्धन श्रेष्ठ॥१३२॥

मथुरानाथ रक्ष मुख तेरो ❀ द्वारकेश रक्षक शिरकेरो।
असुर विध्वंसि पृष्ट तुव राखे ❀ सर्वंग शुभ भगवान सु भाखे॥

१ आँगन को २ सर्व ओर तें।

दो० अखिल विश्व मायावशी, तिहँ सनेह वश मात।
भइ विस्मृति तत्काल पुन, लायउ उर शिशु गात १३६

सो० हे मैथिल नरनाथ, भक्ति वश्य श्रीकृष्ण हरि।
कहा कहौं मैं गाथ, यशुमति तप अरु भाग्य की॥५४॥

पूछ्यो नृप यशुमति नँदराजा ❀ किय तप कौन पूर्व बड़ काजा।
जिहँ कारण श्रीकृष्ण विहारी ❀ जिन गृह रह बालक तनु धारी॥
सुन नृप आठ वसुनके माहीं ❀ द्रोण सुमुख्य धरा तिय ताहीं।
विन संतान विष्णु के भक्ता ❀ देवराज पद इनको वक्ता॥
एक काल इच्छा सुत केरी ❀ विप्रन प्रेरित मनसा घेरी।
मंद्राचल पर बड़ तप कीनों ❀ धरा प्रियायुत तप मन दीनों॥
कन्द मूल फल किये अहारा ❀ शुष्क पात पुन रह निरहारा।
वारि भक्ष फिर जलहू नाहीं ❀ विन अन जल निर्जन वन माहीं॥
अर्बुद सम्वत्सर गत भयऊ ❀ दंपति तप में अति चित दयऊ।
तब विधि मुदित होय अस भाखा ❀ वरं ब्रूहि जो निज हिय राखा॥

दो० वांवी में से निकस कें, धरा द्रोण नृप दोय।
नमस्कार कर पूज अज, हर्ष अर्थ कह सोय॥१३७॥

सो० हे चतुरानन देव, हो समर्थ वर देन हित।
हम निज हिय को भेव, कहैं आपके प्रति मुदित॥५५॥

---

१ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड २ शरीर ३ महान्शुभ कार्य ४ बिना आहार ५ जल ६ विनीत।

परिपूरण तम श्रीप्रभु माहीं ❀ पुत्रीभूत[१] जनार्दन ताहीं ।
प्रेम लक्षणा भक्ती होवै ❀ सतत भक्ति रस माहिं समोवे[२] ॥
जिहँ भक्ती धर भव तर जावै ❀ गुण अनुवाद कृष्ण के गावै ।
नहिं हम दूसर वर को माँगें ❀ सो माँगें जिहँ प्रेमहि पागें ॥
कह विधि जो तुम मोसे याचा ❀ दुर्लभ दुर्घट है स अवाचा ।
तद्यपि होय मनोरथ पूरा ❀ आन जन्म फल होय न दूरा ॥
कह नृप द्रोण नंद नृप भयऊ ❀ धरा यशोदा तिय है रहाऊ ।
कृष्ण चतुरमुख वचनन हेतू ❀ प्राप्त भयो गोकुल सुखसेतू ॥
कृष्ण चरित अतिशय सुठँ[३] मीठा ❀ जिहँ तट सुधासिंधु अपि सीठा[४] ।
शैल गंध मादन के माहीं ❀ नारायण मुख सुनेउ आहीं ॥

दो० कहौं गुप्त सिद्धांत अब, सुन नृप चित थिर लाय ।
नित्यवास गोलोक में, नंद यशोदा माय ॥ १२८ ॥

तिनके अंशाअंश सु अहहीं ❀ द्रोण धरा वसु जे भुवि रहहीं ।
नित्य सिद्ध यशुमति नँदराई ❀ जबही भुविमें तनु प्रकटाई ॥
तबहीं द्रोण धरा वसु जोऊ ❀ तनु प्राकृतिक अहे तिन दोऊ ।
नित्य सिद्ध यशुदा नँद माहीं ❀ लय होवें ते दोनों ताहीं ॥
तिनके भवन कृष्ण घनश्यामा ❀ गोलोकाधिप सब सुख धामा ।
प्रकट होय करहीं बहु लीला ❀ जे बिन श्रम भव तारन शीला ॥
यही प्रथा प्रति कल्प पछानो ❀ अहै गुप्त यह निश्चय जानो ।

१ पुत्र रूप भया हुआ २ निमग्न होइ ३ सुंदर ४ फीका ।

होवै कबहु न विन अधिकारा ❀ कृष्ण पुत्र इह अवनि मझारा ॥
नित्य संबंध कृष्ण सों अहई ❀ नित्य सिद्ध यशुमति नँद रहई ।
नित लीला होवै गोलोका ❀ भक्तन हित आवैं इहं ओका ॥

दो० करहिं केलि रसमयि सुखद, अतिशय परम कृपाल ।
वसंत ताको भज सतत, सहज कटै जगजाल॥१३९॥

सो० कह मुनि पायो भेव, नर नारायण की कृपा ।
भयो कृतारथ एव, तोहिं सुनायो सो सकल॥५६॥

* इति श्रीकृष्णायने द्वितीयद्वारे त्रयोदश सोपान समाप्त *

कह नृप नंदराय घर माहीं ❀ शिशु साक्षात कृष्ण भै ताहीं ।
युत वलराम चरित किम कीना ❀ कहौ महा मुनि ते रस भीना ॥
कह मुनि नाम करण सुप्रसगा ❀ सुनौ भूप भक्तों रस भंगा ।
एक समय ऋषि गर्गाचारी ❀ अतिकुलीन यदुकुल आचारी ॥
अतिशय गूढ़ भाव युत जोऊ ❀ निजचित अमित प्रफुल्लितहोऊ ।
मख वितान इव मंत्र स्वरूपा ❀ स्वर गण सम स्वर सम्पन ऊपा ॥
यथा कपिल अवतार प्रवीना ❀ तत्त्व ग्राम तिहँ सदृश अधीना ।
इव अम्भोनिधि नहिं जो दीना ❀ परम तपस्वी तेज नवीना ॥
यथा विरोचन तम हर कह्यऊ ❀ तम अज्ञान हर तस मुनि रह्यऊ ।
इनको वसुसुर प्रेरण कीना ❀ मुनिवर नंद भवन पग दीना ॥

१ इस अवनी पें २ षड्ज ऋषभ आदि सप्त स्वर ३ समूह ४ महा समुद्र ५ सूर्य ।

दो॰ मुनिवर के दरसन करत, उठ्यो आशु व्रजराय।
अति प्रमुदित निज हिय विषे, जय हो जय मुख गाय॥१४०॥

रमणिय सिंहासन पधरायो ❀ हाथ जोर मुनि पद शिर नायो।
धोये पद-पंकज मुद आहीं ❀ पियो कछुक कछु बाँध्यो ताहीं॥
कछु छिरकायो भवन मँझारा ❀ अति पुनीत लख घोप भुवारा।
पाद्य आदि उपचार मँगाई ❀ बहु विधि किय पूजन व्रजराई॥
ता पाछे प्रदक्षणा दीना ❀ अष्ट अंगयुत वंदन कीना।
कह पुन नंद तुष्ट मम आजू ❀ अग्नी पितृदेव सुर राजू॥
मंदिर मो पुनीत ह्वै गयऊ ❀ आप कृपा कर दरशन दयऊ।
दान पुण्य बहु तीरथ कीनें ❀ दुष्प्रापति[1] तव दरसन चीनें॥
बिन प्रभु कृपा दरस है नाहीं ❀ आप समान मुनिन भव माहीं।
अस दुर्लभ दर्शन मैं पायो ❀ धन्य-धन्य मो भाग कहायो॥

दो॰ महद जननको विचरनो, दीन चित्त गृहि[2] हेतु।
नहि स्वास्थ के हेतु किल, आप दरस भव सेतु॥१४१॥

जाउ अतीन्द्रिय[3] ज्ञान करावे ❀ सोऊ ज्योतिष शास्त्र कहावे।
सो आपहुने रचना कीना ❀ परमारथ हित यह कृति चीना॥
जाने मनुज ज्ञान त्रयकाला ❀ प्राप्त करैं लघु[4] यतन विशाला।
इक ज्योतिष शास्त्रन के कर्ता ❀ दूसर श्रुतिज्ञन श्रेष्ठ प्रवर्ता॥
तासों मम द्वै सुतको नामा ❀ धरौ परावर वित सुख धामा।
नरन जन्मही से गुरु ब्राह्मण ❀ ताते मो गुरु आप विचक्षण॥

---

१ कठिनता से प्राप्त २ गृहस्थि ३ इन्द्रियन से परे ४ अल्प।

अस सुन कह मुनि गर्गाचारी ❀ मैं यदुकुल को प्रसिधाचारी।
ताते यदि तव सुत संस्कारा ❀ मैं करिहौं तो कंस भुवारा॥
पाप बुद्धि है सो अस जाने ❀ हैं देवकि सुत निश्चय माने।
आप मैत्रि वसुसुर से अहई ❀ सो अपि कंस जान मन रहई॥

दो० तथा देवकी की सुता, तिहँ वच सुन निज कान।
देवकि को वसु गर्भ जो, ह्वै न सुता अस मान॥१४२॥

सतत अपन उर करत विचारा ❀ अस शंका सों कंस भुवारा।
यदि वह आप आय ललकारे ❀ तौ होवे अन्याय हमारे॥
अस सुन मुनि प्रति कह व्रजराई ❀ हे कृपालु मुनिवर सुखदाई।
या गो व्रज में गुप्त स्थाना ❀ मो लोगन सों है अनजाना॥
तिहँ विविक्त[२] थल में संस्कारा ❀ करौ स्वस्ति वाचन सुप्रकारा।
अस व्रजपति की गाथा सुनकें ❀ मुनिवर गर्ग गुप्त थल गुनकें॥
तिनके युगल सुवन के नामा ❀ किये मुदित चित पूरण कामा।
जिहँ मनसा[३]सों आप पधारे ❀ ह्वै तत्पर तिहँ कार्य विचारे॥
नंद नृपति यशुमति प्रति कह्यऊ ❀ भगवत गर्ग जु दर्शन दयऊ।
नाम अपन पुत्रन को करहीं ❀ भावि फलन अपि तेउ उचरहीं॥

दो० रोहिणि प्रति यशुमति कह्यो, आयो है भगवान।
नाम करण पुत्रन करै, लैं परिच्छा मन मान॥१४३॥

बड़ सुतको मैं अंक बिठावौं ❀ छोटे को तुम गोद धरावौ।
कर अस मंत्रे परस्पर दोऊ ❀ ले लालन अति प्रमुदित होऊ॥

१ आठवाँ २ एकांत ३ सलाह।

कछु बतरावत आपुस माहीं ❁ गवनी रोहिणि यशोमति ताहीं।
आई तहँ जहँ गर्ग बिराजे ❁ जनु तप तेज रूप रवि भ्राजे ॥
कह नारद सुन मैथिल राई ❁ अति सावध चितसों मनलाई।
कृष्ण दरस मुनि गति भइ जोऊ ❁ अहै अकथ रंचक कहुँ सोऊ ॥
जाहिं सुनत उपजे उर प्रेमा ❁ श्रीभगवत में दायक खेमा।
छवि माधुर्य कृष्ण प्रभु केरी ❁ जाहि समय मुनि नयनन हेरी ॥
ताहि समयतें टकटाकि लागी ❁ मति आश्चर्य माहिं दृढ़ पागी।
गर्गाचारि विशद मति जोऊ ❁ विविध विचार करे मन सोऊ ॥

दो० ते विचार तुम प्रति कहौं, यथातथ्य निरधार।
यदि चिन्तन युत चित धरे, पाय प्रेम प्रभु सार १४४

❁ कवित्त ❁

कि अनादि मोहतम हेतु अहै यह शिशु,
सुन्दर रतनन दीप अंकुर सुहायो जू।
कह्यो यह ईश प्रतिपादक जु बहुविधि,
अहैं उपनिषद प्रमाण बहु गायो जू ॥
तिन सु प्रमाण कर पायो जाय जोउ वपु,
सोउ अहै यही किल मोरे मन भायो जू।
अथवा हमारेई सुभाग्य रूप कल्पद्रुम,
तिहँ माग प्रथम प्रसून यह आयो जू ॥ २० ॥

१ कथित २ फूल।

जाहिं ब्रह्म कहैं केऊ केउ जगकर्ता कहैं,
केउ पर स्वातमहु कहैं बुधिवान जू।
केचित उत्तम जन नेह सने जिन मन,
नेउ तो कहत अहैं जाहिं भगवान जू॥
जाहि के प्रभाव को न देश अरु काल सेती,
होय परिच्छेद किल अस प्रभावान जू।
सोउ यह नंदराय वामके उदर माहिं,
भयो परिच्छिन धन धन ये महान जू॥ ११ ॥

दो॰ प्रभु माधुर्य निमग्न मुनि, पुन-पुन वही निहार।
भो उत्कंठा विवश अति, मनमें करै विचार॥१४५॥

यदि मुहिं बड़ उत्कंठा घेरो ❀ करौं परस पद पद्मन केरो।
तौ उन्मत्त नंद नृप कहहीं ❀ जो प्रतक्ष यहँ देखत रहहीं॥
यदि निज वक्ष धरौं मैं याहीं ❀ तौ चापल[1] कहि हैं मुहिं पाहीं।
जो मैं कछु अपि करिहौं नाहीं ❀ तौ उत्कंठा धैर्य नसाहीं॥
मनही मन अस उठैं विचारा ❀ चरण परस है केहिं प्रकारा।
अहो अंक याको किम करिहौं ❀ याके पद-पंकज शिर धरिहौं॥
धन्य-धन्य मो भाग बखानू ❀ त्रिभुवनमें निज सम नहिं जानू।
सफल जन्म मो आजहि भयऊ ❀ नेत्रहु सफल आज है रह्यऊ॥
विद्या तप कुल सफल समस्ता ❀ जो यह दाव लह्यो मैं हस्ता।
भल यदुकुल को प्रोहित भयऊ ❀ जो यह अद्भुत दर्शन लह्यऊ॥

१ चंचल।

दो॰ कहा कहौं माधुर्य्य छवि, अस कहतहि वह नैन ।
रोक्यो चख जल धीर धर, अलभ लाभके लैन॥१४६॥

सो॰ शिव विरंचि पचहार, ज्ञानि ध्यानि दुरलभ दरस ।
जय-जय हो सुखकार, सो दर्शन मुहिं सुलभ दिय५७

मनही सों पद-पंकज माहीं ❀ लोटपोट है धीरज नाहीं ।
मनही सों बहु अर्चन कीना ❀ मनही सों कर स्तुति रस भीना॥
मनही सों आरती उतारे ❀ मनही सों निज भाव उचारे ।
हे प्रभु आप मृदुल पद कंजू ❀ मो शिर धरौ मोदप्रद मंजू ॥
मन गति भई मीन जल जैसे ❀ निकसे नहिं किय यतन गनैसे ।
धैर्य गयो तनु कम्पत आहीं ❀ अति रोमाञ्च मती लय ताहीं॥
तब विचार आयो मन माहीं ❀ नामकरण आयो मैं याहीं ।
कहुँ मो नाम लोप है नाहीं ❀ मग्न होय इन माधुरि माहीं ॥
परम मोद जिहँ मुनि मन रह्यऊ ❀ है सावध तिहँ तिन प्रति कह्यऊ।
हे यशुमति यह रोहिणि-नंदन ❀ गौर वर्ण सबके मन नंदन ॥

दो॰ सुहृदन को निज गुणनसों, मुदित रमावे येउ ।
ताते याको भाखि हैं, नाम राम लख लेउ ॥१४७॥

सो॰ अधिक वीर्य यहि माहिं, रहैं याहिते चतुर जन ।
बल अपि कहि हैं याहिं, अपर नाम अपि सुनहु अब५८

१ आनंद देवे वारो २ बल ।

निज ज्ञातिन मत एक, राखैगो यह बाल वर ।
धर उर सुदृढ़ विवेक, ताते संकर्षण कहैं ॥ ५६ ॥

रोहिणि यह यशुमति सुत जोऊ ❀ श्याम वर्ण सब सुखप्रद होऊ ।
कृष्ण वर्ण ते कृष्ण कहावै ❀ सुहृदन के मन मोद बढ़ावै ॥
किहँकि समय वसुसुरगृह माहीं ❀ भयो प्रकट यह शिशु जो आहीं ।
ताते वासुदेव अपि नामा ❀ भाखें बुधजन परम ललामा ॥
अस सुन नंद प्रभृति अस माना ❀ पूर्व जन्म ऋषि बात बखाना ।
इह शिशु के गुण कर्म प्रभावा ❀ विविध नाम अरु रूप कहावा ॥
जिनको मैं अपि जानौं नाहीं ❀ तथा न आनहुँ जानैं ताहीं ।
गो गोपन यह आनँदकारी ❀ तुम सबको यह बहु सुखकारी ॥
हे यशुमति ब्रजपति सुख पावौ ❀ याही को तुम लाड़ लड़ावौ ।
इनके लाड़ लड़ावनही ते ❀ बिन श्रम मुक्त सर्व दुखहीते ॥

दो० महाभाग्यशाली मनुज, जो इनमें कर प्रीति ।
कबहु पराभवं नहिं लहै, अस निश्चय परतीति १४८

यथा विष्णु पक्षी सब देवा ❀ असुरन से नहिं हार रहेवा ।
हे ब्रजपति तुम्हरे सुत केरे ❀ गुण कीरति श्री प्रभा जु हेरे ॥
तो यह नारायण सम लागे ❀ ताते इन पालौं अनुरागे
अस सुन अतिशय प्रमुदित भयऊ ❀ नंद यशोदा मुनि प्रति कह्यऊ ॥
कहा भयो तुमको मुनिराई ❀ बार-बार चख अश्रु भराई ।
अस सुन भाख्यो गर्गाचारी ❀ सुनौ दम्पती तुम मतिधारी ॥

१ लक्ष्मी २ कान्ति ।

या बालक पै बहुत अरिष्टा ❀ आवें इह जानत है कष्टा ।
सुनत दुहुन कह्यऊ ततकाला ❀ हां-हां इक आसुरी कराला ॥
आई शिशु मारन मरि सोई ❀ श्रीनारायन रक्षक होई ।
अस सुन गर्ग मुनीश्वर कह्यऊ ❀ है उपाउ इक कहुँ जो रह्यऊ ॥

दो० मो शिरमें इक यंत्र है, शिशु पद परस जु होय ।
यदि अरिष्ट आवें तदपि, नष्ट होइँ सब कोय ॥१४९॥

सुन कह दम्पति इम है कैसे ❀ हे मुनिराज कहो तुम जैसे ।
अति अयोग्य यह बात बखानी ❀ शिशुपद आप माथ किम आनी॥
मति अति मुदित गर्ग ऋषि कह्यऊ ❀ कछु न दोष बालक हित रह्यऊ ।
तब यशुमति ले शिशु निज जायो ❀ मुनि शिर शिशु पद परस करायो॥
प्रभु पद पद्म परस मुनि केरो ❀ भो प्रमोद जिहँ अंत न हेरो ।
नख शिखते अति गदगद भयऊ ❀ गुप्त प्रेम मुनि किहँ नहिं लह्यऊ॥
बहु आशीर्वाद मुनि दीना ❀ गृह जावन मन मनसा कीना ।
बहु सन्मान पुरस्सर ताहीं ❀ धरी भेंट बहु मुनि पद माहीं ॥
बहुत दूर लग मुनि पहुँचायो ❀ गर्गहु तहँते मुदित सिधायो ।
नंद यशोमति प्रमुदित भारी ❀ सुत सनेह प्रभु माहिं अपारी ॥

दो० लालन लाड़ लड़ान में, निशि दिनकी सुधि नाहिं ।
धन-धन यशुमति नंद नृप, सब ब्रह्माण्डन माहिं १५०

* इति श्रीकृष्णायने द्वितीयद्वारे चतुर्दश सोपान समाप्त *

कह मुनि तदनन्तर हरि रामा ❀ श्याम गौर मन हर निज धामा।
लीला करत अतुल छवि धारी ❀ सुन्दर नन्द महल रुचि कारी॥
घुटुवन चलत मन्द मुसुकाई ❀ चलन विलोक माय चलजाई।
बीत्यो अल्प काल ब्रज माहीं ❀ बोलन लगे मधुर वच ताहीं॥
यशुमति रोहिणि द्वौ वर मैया ❀ लालन पालन कर द्वौ भैया।
निकस गोद तें कबहु पराई ❀ फेर अंक में आन सुहाई॥
मंजिर पुन किंकिनि झनकारें ❀ इत उत चलत महल के द्वारें।
त्रिभुवन मोह करावन हारे ❀ निज इच्छा द्वौ शिशु तन धारे॥
खेलन हित निज वयस बुलावें ❀ निरख उभय मैया सुख पावें।
ब्रज रज लुठति सु वयसन संगा ❀ धीर विलोक भूल सुधि अंगा॥

दो० ब्रज रज धूसर अंग लख, मुदित मातु मन माइँ।
उठ आशू प्रोक्षण करैं, बार-बार बल जाइँ॥१५१॥

सो० काहि न हिय बौराय, धीर जनन को हे नृपति।
शिव विधि सुर समुदाय, जिहँ पद रज शिर धारहीं६०॥

सो साक्षात आज ब्रज माहीं ❀ ब्रजरजलुठत मुदित अतिआहीं।
भक्त वृन्द ह्व युत आनन्दा ❀ निरख मुदित लीला ब्रजचन्दा॥
कारन यह भक्तन के हेतू ❀ प्रकट करत लीला सुख केतू।
सगुन चरित बिन प्रेम न होई ❀ यह अनुभव अनुभव कर जोई॥
ताहिं न रुचै अपर का गाथा ❀ गाय सगुन गुन तर भवपाथा।
यह साधारन भक्तन रीती ❀ कृष्णचरित बिन अन्य न प्रीती॥

१ भाग जाते हैं २ गोद ३ रजवारे ४ पौंछना।

किन्तु अनन्य कृष्ण अनुरागी ❀ जिन सम त्रिभुवन को वड़भागी।
ते लीला रहस्य जिय जानें ❀ निज सर्वस्व एक वहि मानें ॥
जिम-जिम चरित विलोकें नैना ❀ वा गावें तिम-तिम लह चैना।
कृपा विना प्रभु चरितन भेवा ❀ रंच न पाय सकै को एवा ॥

दो० कृपापात्र हरि भक्त हैं, लख रहस्य गुन वृन्द ।
सन्तत लीला गावहीं, पावें परमानन्द ॥ १५२ ॥

सो० माधुरि मूरतिवन्त, मोहन व्रज विख्यात हैं ।
तिहँ लीला जु लसन्त, माधुरि मय ही प्रकट लख ६२

द्वय जांनू द्वय करसे लाला ❀ विचरत अजिर मुदित व्रजवाला।
मातु गोद आवै पुन जावै ❀ वाल केलि कर मुद उपजावै ॥
विरचित स्वर्ण तार पट पीता ❀ रत्नजटित केचुकि हर चीता ।
रत्न मुकुट झुमकत लड़ मोती ❀ देख यशोदा वहु मुद होती ॥
वालमुकुन्द चरित मनहारी ❀ निरखत मुदित होत व्रजनारी।
नन्द भवन आवत व्रजवाला ❀ तज निज सदन हेतु नँदलाला॥
सिंह पौरि पै सिंह निहारें ❀ डरत धाय हा सिंह पुकारें ।
तहँते यशुमति सुत ले जावै ❀ कर गोदी वहु लाड़ लड़ावै ॥
ता अवसर यशुमति के पाहीं ❀ व्रजनारी अस भाखत आहीं ।
खेलन अति चञ्चल यह लाला ❀ है कोमल पय वदन रसाला ॥

दो० आँगन तें वाहर करन, नीक नाहिं यह वात ।
ताते याको दृष्टि में, राख यशोमति मात ॥१५३॥

१ घुटुवन ।

सो॰ जाये इन मुख माहिं, ऊर्ध्व[1] रदन[2] युगं पूर्वके ।
मातुल हित भल नाहिं, किन्तु नाहिं मामा इनहिं६२

तद्यपि शुभद दान तुम करहू ❀ विघ्न नास हित यह आचरहू ।
तस पुन गौ द्विज साधुन केरो ❀ कर अर्चन सुख, होय घनेरो ॥
तव रोहिणि यशुमति ब्रजरानी ❀ पुत्रन कुशल हेतु मन ठानी ।
रत्नाभरन वसन अन दाना ❀ करतसतत सुत हित कल्याना॥
ता पाछे ब्रज में हरि रामा ❀ गौरश्याम जिन छवि शतकामा।
बड़े भये चल चरनन सेती ❀ ब्रज वीथिनविचरत चित चेती॥
श्रीदामा सुबलादिक गोपा ❀ अपर वयस जिन खेलन चोपा ।
यमुना रमण पुलिन में खेलैं ❀ करत कुतूहल बहु विध मेलैं ॥
कालिन्दी उपवन के माहीं ❀ श्याम तमाल वृक्ष घने[3] आहीं ।
कुञ्ज कदम्ब सोह मन मोहै ❀ विचरत राम श्याम तहँ सोहै ॥

दो॰ भक्त हेतु तनु धरत प्रभु, कर लीला सुख देन ।
हरत जगत दुख दीनके, चरत घोप युत चैन ॥१५४॥

सो॰ कह बसन्त मन मोर, तोर जगत श्रृंखल सकल ।
यथा मेघ लख मोर, ओर कृष्ण कंपत तथा ॥६३॥

देत गोप गोपिन आनंदा ❀ बाल केलि कर श्री ब्रजचंदा ।
एक दिना यशुमति से काना ❀ माँगत माखन हठ बहु ठाना ॥
रह्यो मचल बहु मैया पाहीं ❀ लाड़ सहित यशुमति कहताहीं ।
लाला तनक धीर को धारै ❀ नूतन माखन देउ रुचिकारै ॥

१ ऊपर के २ दां ३ गहरे ।

नहिं मानत पुन-पुन यहि भाखै ❀ माखन ही मो मन अभिलाखै ।
ता अवसर यशुमति घर माहीं ❀ हतीं जेउ व्रजबामा- ताहीं ॥
तिन निज मन राखी अस आसा ❀ हमरे सदन आय छविरासा ।
माखन बिन माँगे ही खावे ❀ तब हमरो हिय बड़ हुलसावे ॥
नारायन यह हमरी आसा ❀ पूर्ण करें, है जन सुखरासा ।
हे नृप परिपूरण साक्षाता ❀ कृष्ण एव जन वांछित दाता ॥

दो॰ब्रजवासिन सुख दैन को, प्रकटे व्रज के माहिं ।
तातें तिन गोपिन भवन, जावन ठानी ताहिं ॥१५५॥

सो॰एक सखी के धाम, गये श्याम मिलि सखन सों ।
मोहक कोटिन काम, जाकी छवि चित चोरटी ॥६४॥

ता सखि नें प्रातः निज धामा ❀ दहि बिलोय नवनीत ललामा ।
धर्यो कमोरी में छींके पै ❀ हिये आस एकहि नीके पै ॥
आज नन्द सुत मोद बढ़ावें ❀ छींके तें माखन यह खावें ।
श्रीपति पूरहु आस हमारी ❀ या विधि उत्कण्ठित व्रजनारी ॥
आप छिपी निज भवन मँझारा ❀ कौतुक देखन हिये विचारा ।
सूनों सदन सखी को देख्यो ❀ छींके पै नवनीतहु पेख्यो ॥
कहत श्याम वयसन के पाहीं ❀ छींके धर्यो जु माखन आहीं ।
किहँ विधि पावें करो विचारा ❀ तब मधुमंगल वचन उचारा ॥
सत्यहि तू बाँको है भैया ❀ चोरी करन सिखावत हैया ।
और कह्यो हम तुम्हरो मानें ❀ चोरी करन वचन न प्रमानें ॥

दो॰ कह मोहन सुन मीत मम, यह चोरी है नाहिं।
सखी खिझावत मोहिं नित, मैं हु खिझावौं ताहिं॥१५६॥

सो॰ और अपन सब बाल, ऊधमहू सोहत अहै।
लागत सबन रसाल, है ऊधम जो बाल को॥६५॥

ताते मीत शंक नहिं कीजै ❀ युक्ति विचार शीघ्र कहि दीजै।
मधु मंगल मुसकत तब कह्यऊ ❀ जो माखन चाखन मन चह्यऊ॥
तौ यह युक्ती मो उर आवै ❀ एक अपर को कंध चढ़ावै।
या विधि सहजहि पहुँचैं छीके ❀ लेहिं उतार कमोरी नीके॥
किन्तु कहत हम बात विचारी ❀ जब या घरकी जो ब्रजनारी।
आवेगी हम त्वर भज जावैं ❀ तेरौ नामहि ताहिं बतावैं॥
कहत कान मधु मंगल पाहीं ❀ मैं काहू से डरपत नाहीं।
अस सुन कहत सखा प्रति श्यामा ❀ एक अपर के कंध ललामा॥
चढ़त अहैं अस सुन हरषाई ❀ चढ़े कंध आपुस में भाई।
सबसे ऊपर रहै कन्हाई ❀ इत उत चितवत कर चतुराई॥

दो॰ लई कमोरी हाथ में, करी सुबल के साथ।
कूद कूद क्रमशः सकल. कछु बतरावत गाथ॥१५७॥

सो॰ अब मण्डल आकार, बैठे श्रीदामादि सब।
मध्य श्याम छवि धार, राजे सुत ब्रजराज को॥६६॥

श्याम स्वयं बाँटत नवनीता ❀ ले ले खावत सब युत प्रीता।
किन्तु काक सम अहैं सशंका ❀ कहत कन्हाई प्रति यह अंका॥

अहो सुनो भो आहट भारी ❀ कहूँ छिपी तो नहीं घरवारी ।
कोउ कहै देखो वह वामा ❀ छिपी देख रहि है घनश्यामा ॥
को कह नाहिं-नाहिं वह नाहीं ❀ हमको वृथा डरावत आहीं ।
या विधि विविध भाव युत ग्वाला ❀ खावत माखन मिल नँदलाला॥
छिपी भई जो घरकी वामा ❀ कौतुक देखि मुदित उर धामा ।
उझक उझक पुन बारम्बारा ❀ देख-देख नहिं अपन सम्हारा॥
परमानन्द मग्न व्रजनारी ❀ रोम-रोम जिम श्याम विहारी ।
काहि न परमानन्द निमग्ना ❀ परमानन्द रूप में लग्ना ।

दो०जा परमानँद रूप को, योगी ज्ञानी आद ।
ध्यावतहू पावत क्वचित, पावतहू लघु स्वाद ॥१५८॥

सो०सोई परमानन्द, मूर्तिमान व्रजचन्द है ।
करत चरित सानन्द,सखिन भाव अनुकूल ही ॥६७॥

अब कहु किम नहिं परमानन्दा ❀ मग्न होइँ सुभगा सखि वृन्दा ।
यदपि विनोद न हिये समायो ❀ तदपि अपन उर धैर्य दृढ़ायो ॥
कारण यह तत्सुखिनी वामा ❀ सोचत अहै अपन उर धामा ।
जो मो प्रकटपनो ह्वै जाई ❀ इनके सुख किल अन्तर आई॥
ताते सुदृढ़ धीर धर वामा ❀ मग्न-मोद लख चरित ललामा।
लखी कमोरी जब ही रीती ❀ विहँसत धावत युत बड़ प्रीती ॥
पकर कान को कह नृप बेटा ❀ कहो कहा अब दउँ तुहिं भेटा ।
कृष्णहिं पकरत ही सब ग्वाला ❀ तुरत भाज गे हँसत विशाला॥

कह सखि लाज तोहिं नहिं थोरी ❀ राज सुवन है करहिं जु चोरी ।
तुव हिमायती कहाँ पधारे ❀ ले ले नाम न तिनें पुकारे ॥

दो॰अब छुड़ाउ मो हाथ से, अहो चतुर शिरमोर।
ले जावों यशुमति निकट, कृत्य दिखावों तोर १५९

सो॰तब मोहन सखि पाहिं, कहत न भय मुहिं मायको।
स्वल्पहु डाटत नाहिं, परम नेह वश मातु मुहिं॥६९॥

किन्तु कहो मो दोप कहा है ❀ जो तोमें वड़ रोप रहा है।
मा दीनों नूतन नवनीता ❀ कह्यो बांट कर खा मिल मीता ॥
हम सब सखा अजिर में आये ❀ खावन हित हिय में हुलसाये ।
तावत कपि वृन्दन नवनीता ❀ लूट लियो कर दियो सुरीता ॥
फिर भय वश मैया के पाहीं ❀ हे सुन्दरी गये हम नाहीं ।
आये हम तुव भवन मँझारा ❀ अपनोंही मन माहिं विचारा ॥
भूख हमें वड़ व्याकुल कीनों ❀ छीके पै माखन हम चीनों ।
तोहिं न देख्यो भूख सतायो ❀ तासों हमनें माखन खायो ॥
कहा याहिं चोरी तुम मानो ❀ मुहिं निज प्रेमपात्र नहिं जानो ।
मैं तो निज सर्वस तुमही को ❀ मानत सत्य मतो मो जीको ॥

दो॰सरस वचन सुन श्यामके, मोहित भइ वह वाम।
कहन लगी या विधि लला, नित ऐयो मो धाम१६०

सो॰मिल्यो सखनसों जाय,कह्यो,कहो सखि का कियो।
वृथा डरप तुम धाय, संग तजन नहिं योग्य है॥६९॥

कह मुनि या विधि प्रभु व्रज माहीं ❀ बाल चरित कर मनहर ताहीं ।
व्रजवासिन के मन अनुकूला ❀ उपजावत तिन उर मुदमूला ॥
शेष महेश सुरेश धनेशा ❀ धरैं ध्यान नित निज उर देशा ।
तदपि ध्यान में आवत नाहीं ❀ सो साक्षात प्रकट व्रजमाहीं ॥
प्राकृत बाल सदृश कर लीला ❀ भक्तन सुख देवन जिन शीला ।
चकित होय सुरवृन्द निहारैं ❀ व्रजवासिन बड़ भाग्य उचारैं ॥
मानैं हरि वश कारन एकू ❀ सत्य सनेह सुदृढ़ सविवेकू ।
व्रज चरित्र प्रकटहि दरसावैं ❀ प्रेमहि से प्रभु निज वश आवैं ॥
यावत पूरण प्रेम न पायो ❀ तावत ही हरि दूर लखायो ।
जहाँ प्रेम तहँ प्रभु साक्षाता ❀ प्रकट चरित कर जन सुखदाता॥

दो०निज ऐश्वर्य अनन्त जो, नेह विवश सब त्याग ।
ह्वै अधीन सम दीनके, स्वयं करैं अनुराग ॥१६९॥

सो०प्रेम परिच्छक नाहिं, कृष्ण सदृश तिहुँ लोक में ।
वसन्त पुन अपि ताहिं, भजैं न हतभागी लखौ॥७०॥

* इति श्रीकृष्णायने द्वितीय गोलोक द्वारे पञ्चदश सोपान समाप्त *

कह नारद सुन नृप इक काला ❀ गये अपर सखि घर नँदलाला
मध्य भाग दिनको हो जाते ❀ सोय रही निज घर सखि ताते ॥
सोई भई सखी लख काना ❀ मो नूपुर धुनि सुन कर काना।
जाग उठेगी अस अनुमाना ❀ लगे उतारन नूपुर काना ॥

तावत सखी जगी ततकाला ❀ कहन लगी सुन प्रिय नँदलाला ।
आप पदाश्रय नूपुर जोई ❀ करौ दूर चरणनतें सोई ॥
तौ फिर को पद आश्रय चाही ❀ कछु विचार कीजै हिय माहीं ।
सखि वच सुन संकोचित होई ❀ पीछे को पग राखत सोई ॥
तावत पुन सखि कह प्रति काना ❀ करत काहि संकोच सुजाना ।
हर्ष सहित मो भवन पधारौ ❀ अपन मनोरथ प्रकट उचारौ ॥

दो० गोरस अभिलाषा लखी, सखी चतुर ततकाल ।
आय निकट नँदलाल के, दियो मुदित चित बाल १६२

सो० श्याम सोह निधि माहिं, सखि मन मीन समान है ।
अपर रंच सुधि नाहिं, तहँ अनिमिप चख टकटकी ॥७१

या विधि परम कृपालु कन्हाई ❀ व्रज गोपिन घर फिरत मुदाई ।
योगिन दुर्लभ सुख तिन देवे ❀ ह्वै अधीन व्रजवासिन सेवे ॥
यथा भाव जाको है जैसो ❀ तथा भाव सुख देवत तैसो ।
कृष्ण कौतुकी कन्त कृपाला ❀ गये अपर सखि घर भूपाला ॥
सूनों सदन विलोक कन्हाई ❀ माखन निरख हियो ललचाई ।
लियो हाथ नवनीत रसाला ❀ तावतही आई व्रजबाला ॥
आप धाय कमरा के माहीं ❀ छिपे, वन्द किय पट[1] त्वर ताहीं ।
ता कमरा में रह्यो अँधेरो ❀ तासों सखि मोहन प्रति टेरो ॥
अहो प्राणप्रिय चतुर कन्हाई ❀ यदि तमंही[2] तुहिं भाय महाई ।
तौ मो हिय कमरा जो रहही ❀ तहँ अगाढ़[3] तम निवसत अहही॥

१ किवाड़ २ अँधे से ही ३ बिल्कुल ।

दो० तातें तममय मो हिये, वसौ आय तत्काल।
एक वेर मो विनय को, मानौ हे नँदलाल ॥१६३॥
सो० इम भाखत व्रजवाम, मग्न प्रेम आवेश में।
रह्यो न सुधि उर धाम, विना श्याम सुन्दर हिये ॥७२॥

तावत थांत पाय श्रीकाना ❀ गयो भाज जनु डरत महाना।
दर्शन आतुरता व्रज वामा ❀ आवत नन्द-निकेत ललामा ॥
तहँ उराहनों हेतु प्रतक्षा ❀ कह यशुमति प्रति वचन समक्षा।
अरी यशोदा तुम्हरो लाला ❀ जीवौ कोटिन वर्ष विशाला ॥
अवध सकल बीती कर आसा ❀ नीठ नीठ पूजी अभिलासा।
किन्तु कुलक्षन तुव सुत माहीं ❀ निरख दुखित हम होवत आहीं॥
राज घरानें को कर चोरी ❀ बड़ी लाज आवत हमको री।
अरु जे जे ऊधम कर काना ❀ तुम प्रति भाखत हिय सकुचाना॥
छोटेपन यह अवगुन मोटो ❀ तुव तट सरल, हृदय को खोटो।
हम तौ तुम्हरी ओर निहारें ❀ लाला प्रति कछुहू न उचारें ॥

दो० यदि अपनों लख हेतसौं, देहिं सीख तव कान।
औरहु गारी देइ हम, कहै न तुम्हरी कान ॥ १६४ ॥
सो० या सम छली न कोइ, किहँ थल अपि देख्यो सुन्यो।
हम सब सावध होइ, पकरैं, हाथ न आवही ॥ ७३ ॥

यासों अब व्रज तज थल आना ❀ वसें जाय यशुमति सुन काना।
गोपिन वचन सुनत व्रजरानी ❀ होय चकित सी कह अस वानी॥

१ मौका २ डर।

तुम सबहिन करुणा यह लीला ❀ पायो मैं सुनिये व्रजवाला ।
यह मैं मानत अहै जु चोरी ❀ बालकपन में यह बड़ खोरी ॥
किन्तु होय आश्चर्य महाना ❀ चोरी किम करही मो काना ।
घर में दूध दही नवनीता ❀ सिन्धु समान रहत है नीता ॥
नेंकहु नहिं खावत रुचि सेती ❀ खावन हेतु बहुत कहि देती ।
औरहु हे सखि वृन्द सुनीजे ❀ इतनी करुणा मोपै कीजे ॥
बूढ़ेपन पायौ है लाला ❀ तुमहू जानत हो व्रजबाला ।
ताते या पै रुष्ट न होवौ ❀ हिय तें कष्ट सकल तुम खोवौ॥

दो॰ निज सुत अरु मो सुवन में, रंच न भानौ भेद ।
श्रेष्ठ मनुज इम मानकैं, लावत नहिं उर खेद ॥१६५॥

सो॰ लघु[1] चित ही पहिचान, मोर तोर जिन हिय बसै ।
जन उदार[2] ते जान, निज कुटुम्ब सम सबन लखं७४

तो हू एक बात मो मानौ ❀ तहँ संकोच नेंक नहिं आनौ ।
जितनों इन खायो नवनीता ❀ मोसे लेहु आप युत प्रीता ॥
अल्प दोप तें व्रज तज जावैं ❀ ये तुम्हरे वच नाहिं सुहावैं ।
बाल बुद्धि से तुम्हरे संगा ❀ करत लाड़ वह साँवलअंगा ॥
मो देखत तुम सब व्रजवामा ❀ हर्षित लाड़ लड़ावत श्यामा ।
सहजहि चञ्चल व्रज के बाला ❀ ता में अति चञ्चल मो लाला॥
यदि वाको कछु ऊधम होऊ ❀ सहन योग्य ही सखिजन सोऊ।
तदपि कहौं तुमसौं इक बाता ❀ पकर लाउगी साँवलगाता ॥

१ छोटे २ बड़े चित वारे।

तो मैं उचित ताड़ना करिहौं ❀ अरु तुम्हरे वच सत उर धरिहौं।
सरल सुभाव मातु ढिंग काना ❀ ठाड़ो है जनु परम अजाना॥

दो० मन्द मन्द मुसकत कबहु, ता अवसर की सोह।
सखीं विलोकत नैनभर, उपज्यो हिये विमोह॥१६६॥

सो० गवनीं घर धर मौन, हिये विचारत श्याम छवि।
या पटतर[1] है कौन, निरखत ही मन मोह कर॥७५॥

कह मुनि एक समय श्रीकाना ❀ मिल वयसन मन मोद महाना।
प्रभावती सखि सदन पधारे ❀ शनै शनै तहँ जाय निहारे॥
सूनों भवन विलोक्यो ताहीं ❀ एक अपरको कर कर माहीं।
कछु वतरावत जावत अहहीं ❀ मन्द मन्द मुस्कन जिन रहहीं॥
भाजन लख माखन ते लागे ❀ जे माखन चाखन अनुरागे।
किन्तु धर्यो छीके पै सोऊ ❀ किम पावैं, का युक्ती होऊ॥
कह मधुमंगल विलम न कीजै ❀ पीठ चढ़नही युक्ति सुनीजै।
चढ़े पीठपै आपुस माहीं ❀ तदपि न पहुँच सके ते ताहीं॥
तव श्रीदामा सुवल कन्हाई ❀ लकुट ताड़ना किय मुसकाई।
टूटो त्वर भाजन दहि केरो ❀ जंवहि चुचावत वालन हेरो॥

दो० राम श्याम द्वौ ओकसों, पीवत हैं हरपाय।
अपर सखाहू पिवत हैं, स्वाद लखाय लखाय॥१६७॥

१ वरावरी।

सो०आयो माखन हाथ, मोहन के, चाखन लगो।
कहत अटपटी गाथ, छीन-छीन खावत सखा ॥७६॥

कछु-कछु कपिन खवावत तेऊ ❀ हँसत हँसावत आपुस जेऊ।
तावत प्रभावती व्रजवामा ❀ आई अपन निकेत ललामा ॥
धाय भाज गै सब व्रजबाला ❀ पकर लियो सखि श्रीनंदलाला।
तब हरि झूंठहि रोवन लागे ❀ चली सखी ले यशुमति आगे ॥
बड़ घूंघट काढ्यो व्रजवामा ❀ जावत अरु सोचत उर धामा।
आज अनोखी पटुता याकी ❀ यशुमति ढिंग देखौंगी पाकी ॥
या विधि विविध तरंग उठावे ❀ मोहन गुन-गुन हियो रमावे।
मन्द-मन्द मुसकत प्रतिकाना ❀ प्रभावती अस वचन बखाना ॥
क्यों रे अब रोवत कर चोरी ❀ राज पुत्र तुहिं लाज न थोरी।
करत चिन्तवन साँवल गाता ❀ देवै दण्ड मोहिं मो माता ॥

दो०तावत मारग में मिल्यो, मोहन को निज मीत।
प्रभावती देवर लगे, सदय हृदय युत प्रीत ॥१६८॥

सो०कह्यौ सखी प्रति कान, बायें कर ह्वै पीर मुहिं।
पकर दाहिन मो पान, सुन गोपी पकरन लगी॥७७॥

तावत कृष्ण युक्ति किय ताहीं ❀ दिय कर सखा,सखी कर माहीं।
आप सटक मैया तट गयऊ ❀ तहाँ माय प्रति या विधि कह्यऊ॥

१ हाथ।

सखी वृन्द मुहिं चोर बतावैं ❁ वृथा चोरिको दोष लगावैं।
जूँठहि मोहिं चोर सब भाखैं ❁ चोर नाम मैया मो राखैं॥
अपन पोरि पै खेलौं जबही ❁ मिल वयसन वे सखिजन तबही।
आय बुलाय दूरि ले जावैं ❁ चूम गाल मुख लाड़ लड़ावैं॥
अरु ते हँस-हँस मोहिं खिझावैं ❁ निरख वदन मो तारि बजावैं।
कहैं कटाक्ष वचन मुहिं तेऊ ❁ चोर-चोर भाखैं तहँ केऊ॥
तब मैं भाज जाउँ सख माहीं ❁ खेलौं मन लगाय मैं ताहीं।
मोहिं परी का चोरी करिहौं ❁ काहे इन माखन को हरिहौं॥

दो०छींके पै मो बाहु लघु, किम पहुँचे तिहँ ठाऊँ।
कहु किहँ विधि इनके भवन, चोरी करन सिधाउँ ७६

सो०राजत कोटिक धेनु, हे मैया मो भवन में।
बहत अहै दिन रैन, सिन्धु सदृश माखन प्रभृति ७८

कहा मोहिं तू नाहिं खवावै ❁ खावौं जितेक मो मन भावै।
पुन चोरी करिहौं किहँ कारन ❁ करौं काहि इन घर पग धारन॥
मुहिं खेलन में बड़ रुचि रहही ❁ कहां समय, तहँ जावन चहही।
कह्यौ यशोमति सुन प्रिय लाला ❁ सत्य कहै तू वचन रसाला॥
तू काहे चोरी कर जाई ❁ तेरे गोरस का कमियाई।
रहै निशंक अंक कर कहही ❁ वदन मयंक टकटकी अहही॥
करौ न कान-कान इन वचना ❁ है गँवारि भल कर कछु रचना।
मैं तो तनक न करौं भरोसा ❁ माय वचन सुन भयो सुतोषा॥

तावत प्रभावती ब्रजनारी ❀ दूरहिते गोपाल निहारी ।
देख देख री मैया मोरी ❀ आवत है इक यह सखि गोरी ॥

दो० सुनौ मात का कहत है, गद् गद् के नइ बात ।
सुनकैं तुहिं अपि होवही, महदाश्चर्य सुमात॥१७०॥

सो० आई यशुमति पाहिं, तावत सखी प्रभावती ।
अतिप्रफुलित चितमाहिं,कहतवचनयशुमतिप्रती७६

बैठे देख तहाँ नँदराई ❀ घूंघट युक्त कह्यो हरषाई ।
देखो यशुमति सुत कृति नीकी ❀ कहा कहों मैं अपने जीकी ॥
आज दाव पायो मन भायो ❀ आयो हाथ तोर कुख जायो ।
गोरस पात्र फोर सब दयऊ ❀ दिय लुटाय नवनीत जु रह्यऊ ॥
कछुक आप कछु वयसन दीना ❀ दिय बंदरन मोरन कछु चीना ।
शेष दियो ढरकाय कन्हाई ❀ हँसे निरख तहँ सख समुदाई ॥
ज्यों त्यों पकड़ कान को लीना ❀ भागे सकल सखा ह्वै दीना ।
अस सुन विहंस यशोमति कह्यऊ ❀ जाके उर अति अचरज रह्यऊ ॥
हे प्रभावती तुहिं का भयऊ ❀ का भाखत कछु भान न रह्यऊ ।
प्रथम नयन निजते लख लेवौ ❀ पुना दोष मो सुतको देवौ ॥

दो० पकड़ कौन को लाइ है, लेत कौनको नाम ।
अससुनअतिशयचकितह्वै,निरख्योतिहँब्रजवाम१७१

निरख देवरहिं विस्मय होई ❀ कह्यो ताहिं प्रति कुपिता सोई ।
अरे निगोरा कहँते आयो ❀ मोकर तो बृजसार सुहायो ॥
इम कह अति लज्जित है गोपी ❀ त्वरित गई निज गृह में कोपी ।
यशुमति रोहिणि अरु बृज राऊ ❀ गोप बृंद विहँसत बलभाऊ ॥
कहत परस्पर सब मिल ताहीं ❀ देख्यो न्याव घोष इह माहीं ।
सुनके कृष्ण मुदित मन माहीं ❀ मंद मंद मुसकावत ताहीं ॥
कहे माइ प्रति मधुरे बैना ❀ सुनी मोरि देखी अब नैना ।
अस सुन प्रमुदित यशुमति माई ❀ लियो लगाय वक्ष पुलकाई ॥
पुन लालहिं बिठाय मृदुबर्नी ❀ घर के अपर चौक में गवनी ।
यहां कृष्ण मन मती उपाई ❀ निकसे बाह्य रसिक जनराई ॥

दो० जाय बाह्य इक बीथि में, कौतुकि नंद कुमार ।
भाखत हँस हँस गोपि प्रति, माखन चोर पुकार १७२॥

परम ढीठ चंचल नयनारो ❀ देख्यो सुंदरि लाल तुम्हारो ।
फेर कदाचित पकरसि मोकों ❀ सुन सुभगा निश्चय कहुँ तोकों॥
तो ऐसेहि होय उपहासा ❀ ताते धार मौन तज आसा ।
सुन विस्मय विहँसत मन माहीं ❀ हरिके गुन गुन मुदमन आहीं॥
ता पाछे सब बृज की बामा ❀ लज्जासों न गहें घनश्यामा ।
गोपिन यहि मनसा मन धारी ❀ जिहँकिहँविधिअपिआवविहारी॥
आवे किम मो गृह घनश्यामा ❀ अति दृढ यह मनसा बृजबामा ।
अंतरयामि मनोरथ दानी ❀ करत केलि गोपिन मन जानी ॥

१ श्रीयशुदाजी २ गली में ३ देवर को भी कहे हैं ।

पृथक-पृथक सबके घर जावैं ❀ फोर पात्र दधि दुग्ध लुटावैं ।
वयसन कपिन बाँट तहँ खाई ❀ भाज जाइँ कौतुकी कन्हाई ॥
कह मुनि सुन बहुलाश्व नृपाला ❀ कृष्ण चरित मनहरन रसाला ।
किन्तु न जान तत्व जन अज्ञा ❀ तर्क उठावत, उचित न सुज्ञा ॥
निज इच्छा हरि लें अवतारा ❀ करहिं चरित जन रुचि अनुसारा ।
माखन चोरहु नाम धरायो ❀ भक्तन कारन प्रकट बतायो ॥
यासों यह शिक्षा प्रभु कीनी ❀ जिन जिय गहरी प्रीति नवीनी ।
उनको दियो मैंहुँ हिय सेती ❀ स्वीकृत करौं बात है एती ॥
केवल प्रेमहि को मैं भूखो ❀ बिना प्रेम सब लागत रूखो ।
मोहि दैन हारो भव को है ❀ जहँ लग जग में दीखत जो है ॥
सो सब मेरो ही तुम मानो ❀ मो बिन कर्ता अपर न जानो ।
तौ किहँकी मैं करिहौं चोरी ❀ यह लीला प्रीती रस बोरी ॥

दो०बाल भाव बारेन हित, सर्वस लीला येहि ।
अपरहु गावैं भव तरैं, रहस जानहीं नेहि ॥१७३॥

या विधि शिशु लीला करैं, प्रद गोपिन मन मोद ।
शिवादि कह लख मोद वह, धन धन यशुमतिगोद १७४

सो०धन्य-धन्य भुवि माहिं, कृष्ण चरित मन मग्न जिन ।
वसन्त संशय नाहिं, सब फल कर तल होइँ तिन ॥८०॥

* इति श्रीकृष्णायने द्वितीय गोलोक द्वारे षोडश सोपान समाप्त *

कह मुनि सुन मैथिल नरराई ❀ हरि चरित्र भक्तन सुखदाई।
जिन लीला रस चाख्यो अहही ❀ तिनको मन पुन अन्य न चहही॥
मूढ़ मनुज चिन्तामणि त्यागैं ❀ काचमाहिं निज जिय अनुरागैं।
विष पीवैं तज अमृत अज्ञा ❀ हरि लीला नहिं नेह, न सुज्ञा॥
प्राज्ञ पुरुष हित सर्वस येही ❀ बिन प्रभु चरित न अपरन नेही।
भगवत में अनुराग बढ़ावै ❀ जो हरि लीला नित प्रति गावै॥
बिन लीला गाये हरि ध्याना ❀ कबहु न होय मके अस माना।
ताते कृष्ण चरित नित गावौं ❀ प्रतिपल नूतन आनंद पावौं॥
एक काल कालिन्दी तीरा ❀ मृद भक्षण कीनी बलवीरा।
कह्यउ बाल मिल यशुमति पाहीं ❀ माटी कृष्ण खाइ मुख माहीं॥

दो०दाऊनें अपि यों कह्यो, अस सुन व्रजपति नार।
भीरु नयन शिशु भुज पकर, कियो रोष निज वार१७५

सो०परंब्रह्म श्रुति सार, ज्ञानी योगि अलक्ष जो।
वहि यशुदाको वार, नृप! जिहँ प्रति कह वच क्रुधित८१

मूरख माटी किम तुम खाई ❀ कहत सखा तव अरु बल भाई।
माटी खावै बल घट जावै ❀ नेष्ट पदारथ तज्यो न भावै॥
कह हरि मृषा कहत सब बाला ❀ मैं नहिं मृद खाई किहँ काला।
कहा ज्ञात नहिं मुहिं मम माई ❀ कहुं माटी अपि किहँ जन खाई॥
सखा दाउ मिल सत्य न भाखैं ❀ मोसे सब अमर्ष उर राखैं।
समीचीन हैं यदि वच इनके ❀ तौ तू मो मुख देख यतनके॥

१ अर्थात वह मूर्ख है २ माटी ३ डरपोक ४ क्रोध ५ बुरा ६ मिथ्या ७ ईर्षा ८ ठीक-ठीक।

पुत्र कमल मुख देखत रहई ❀ जब निजको देख्यो तब तहई ।
कहि विधि नेह निमग्न महाना ❀ अतिअचरजमयवचनबखाना ॥
नेह दशा ऐसी ही भाखी ❀ तहाँ न लोक वेद गति राखी ।
प्रेमहि मति चतुराई खोवै ❀ प्रेमहि हियको मल सब धोवै ॥
तो यशुमति जो प्रेम स्वरूपा ❀ तिहँइह गतिनहिं अचरजभूपा ।
इक सहजहि भोरे ब्रजवासी ❀ पुनतियमतिअपिअल्पप्रकासी॥
अरु जहं प्रेम पयोधि[1] महाना ❀ उमड़तरहत सदा विधि नाना ।
तहां यशोमति गति अस होई ❀ नृप यामें नहिं अचरज कोई ॥
नेकहु प्रेम प्रकट जिहँ मनमें ❀ ताकी गति औरहि इक खिनमें।
ताहित जिहं लागे सो जानै ❀ शुष्क वृथाही संशय आनै ॥

दो० इहविधि प्रेम निमग्न मन, यशुमति करत प्रलाप ।
शिशु मुख चंद्र चकोर जिम, निरख रही है आप ॥७८

सो० यथा बांवरो कोइ, कर प्रलाप सुधि रंच नहिं ।
तथा यशोदा होइ, सुत सनेह व्याकुल महत ॥८२॥

कछुक काल अंतर सुधि आई ❀ कछु न निरख है चकित महाई ।
कह यशुमति बल जाउँ कन्हाई ❀ तुव मुख कमल कहा दरसाई ॥
कहा भयो कनुवा मुख मांहीं ❀ सत्य भाख जननी के ताहीं ।
नेह दशा अतिशय उर बाढ़ी ❀ रोम रोम पुलकावलि ठाढ़ी ॥
तब श्रीकृष्ण लिपट उर सेती ❀ कह्यउ मात भांति महसित छेती ।
सुन जननी मुहिं कछु ना भयऊ ❀ सत्य सत्य मैं तुमप्रति कह्यऊ ॥

१ समुद्र २ शीघ्रही ।

कह मुनि अस कह वदन पसारा ❀ तब यशुमति देख्यो विस्तारा।
सत्व आदि गुण मय ब्रह्मंडा ❀ द्वीप नगर सागर नव खंडा॥
श्रा अजलोक लोक सब लोका ❀ व्रज चौरासी अरु निज ओका।
पुन सब गोपि ग्वाल गो वृंदा ❀ निरख रही मुख श्रीव्रजचंदा॥

दो० जब तहँ यशुमति अपनकों, देख्यो हे नरराय।
तब आश्चर्य निमग्न वह, भाखत अति घबराय १७६

अहो अपर यशुमति मो जैसी ❀ आइ कहांते ठाड़ी कैसी।
कहा मोर आत्मंज ले जावे ❀ मो सम नेह सनी दरसावे॥
कहुँ कनुवा अपि भूले नाहीं ❀ याही को जाने मा आहीं।
चलो न जावे याके संगा ❀ मोर प्राण धन जिहँ घनरंगा॥
बूढ़ी भई लाल इक पायो ❀ अंध यष्टि जिम मो सुखदायो।
अरी यशोदा जाउ यहां ते ❀ तू या व्रजमें आइ कहां ते॥
शीघ्र जाउ मो लाल न देखे ❀ तोही को निज माय न लेखे।
काहि भई तू मुहिं दुखदाई ❀ एकहि सुत मो अहै कन्हाई॥
सो यदि जावे तुम्हरे साथा ❀ तौ तू मुहिं लख निपट अनाथा।
ताहित मोपे दया धरीजे ❀ चली जाउ तुम विलंम न कीजे॥

दो० अपर सृष्टि सब लोक युत, निरखी सुत मुखमाहिं।
जानत भइ कछु होयगो, स्वयं नेह वश ताहि॥१७७॥

१ देखा २ पुत्र।

पुत्र कमल मुख देखत रहई ❀ जब निजको देख्यो तब तहई ।
कहि विधि नेह निमग्न महाना ❀ अतिअचरजमयवचनबखाना ॥
नेह दशा ऐसी ही भाखी ❀ तहाँ न लोक वेद गति राखी ।
प्रेमहि मति चतुराई खोवै ❀ प्रेमहि हियको मल सब धोवै ॥
तौ यशुमति जो प्रेम स्वरूपा ❀ तिहँइह गतिनहिं अचरजभूपा ।
इक सहजहि भोरे ब्रजवासी ❀ पुनतियमतिअपिअल्पप्रकासी॥
अरु जहं प्रेम पयोधि[1] महाना ❀ उमड़तरहत सदा विधि नाना ।
तहां यशोमति[2] गति अस होई ❀ नृप ! यामें नहिं अचरज कोई ॥
नेकहु प्रेम प्रकट जिहँ मनमें ❀ ताकी गति औरहि इक छिनमें।
ताहित जिहं लागे सो जानै ❀ शुष्क वृथाही संशय आनै ॥

दो० इहविधि प्रेम निमग्न मन, यशुमति करत प्रलाप ।
शिशु मुख चंद्र चकोर जिम, निरख रही है आप ॥१७८॥

सो० यथा बांवरो कोइ, कर प्रलाप सुधि रंच नहिं ।
तथा यशोदा होइ, सुत सनेह व्याकुल महत ॥८२॥

कछुक काल अंतर सुधि आई ❀ कछु न निरख ह्वै चकित महाई ।
कह यशुमति बल जाउँ कन्हाई ❀ तुव मुख कमल कहा दरसाई ॥
कहा भयो कनुवा मुख माहीं ❀ सत्य भाख जननी के ताहीं ।
नेह दशा अतिशय उर बाढ़ी ❀ रोम रोम पुलकावलि ठाढ़ी ॥
तब श्रीकृष्ण लिपट उर सेती ❀ कह्यउ मात भांति महसित छेती ।
सुन जननी मुहिं कछु ना भयऊ ❀ सत्य सत्य मैं तुमप्रति कह्यऊ ॥

१ समुद्र २ श्रीमती ।

तव यशुमति प्रमुदित ततकाला ❀ कर सुत अंक चूम मुख वाला।
गई भूल देख्यो जो नैना ❀ दिय बहु दान मुदित उर ऐना ॥
इह प्रकार प्रेमान्वित लीला ❀ निरख नंद यशुमति शुभ शीला।
त्रिभुवन इन सम को बड़ भागी ❀ शिवादि ध्यान धरत जिहँ लागी॥

दो॰ सो सनेह वश होय नृप, करत नेह मय केलि[१]।
तातें साधन आन तज, कृष्ण चरण शिर मेलि॥१७९॥

सो॰ नेह निवाहक आन, नहिं समान श्रीश्याम के।
वसन्त धर दृढ़ ध्यान, संसृति[३] ते यदि मुक्ति चह॥८३॥

कवित्त

चहत तरन इह भवसिन्धु जोउ नर,
सो तो गुन गावै युत सनेह गोपाल के।
विन योग बिन ज्ञान कर्म धर्म बिन तेऊ,
होवैं कृपा पात्र किल प्रभु नन्दलाल के॥
आयु को विश्वास नाहीं विघन अनेक आहीं,
मन तो कुसंग चाहीं इह कलि काल के।
कहत वसंत तू तो एक ही भरोस धर,
गाउ गुन गोविन्द के गर्भ वच पाल के॥१२॥

* इति श्रीकृष्णायने द्वितियगोलोक द्वारे सप्तदश सोपान समाप्त *

१ गोद में २ लीला ३ जन्म मरण ।

बँधे-नटवर

कर कसि कान्हाके कहति जसुमति भ्रकुटि मरोरि ।
छरी झारि हरिहौं अबै सबै चातुरी तोरि ॥

GITA PRESS, GORAKHPUR

कह देवर्षि सुनौ नर राई ❀ एक समय की कथा सुहाई ।
अरुणोदय भो निशा सिरानी ❀ उडुगण उडुप तेज भइ हानी ॥
कूजत कल रव सकल विहंगा ❀ भयऊ कुमुद प्रमोद विभंगा ।
प्रफुलित पद्म सुगन्धि सुहाई ❀ कोक शोक सब गयो विलाई ॥
निशिचर तियन शोक बड़ छायो ❀ प्रभु रसिकन उर मोद बढ़ायो ।
धीर पुरुष हरि कीर्तन करहीं ❀ परम प्रेम निज उर में धरहीं ॥
तीन प्रहर तो अपर प्रजागें ❀ चौथे जे प्रभु में अनुरागें ।
निशांत[1] याम भजन हित अहही ❀ भक्त सदा तहं जाग्रत रहहीं ॥
यदपि रजनि भर भक्तन हेतू ❀ अहै योग्य सब विधि सुख सेतू ।
तदपि रात्रि को अंतिम यामा ❀ है अतिशय प्रिय हितघनश्यामा ॥

दो० प्रातकाल अतिशय रुचिर, भक्तन कर आनन्द ।
जे जन प्रात न ऊठहीं, ते अभक्त मतिमन्द ॥ १८० ॥

ताहि समय गोकुल सब गोपीं ❀ निज निज गृह दधि मंथन रोपीं ।
भवन भवन कल गायन करहीं ❀ चरित गुपाल वदन उच्चरहीं ॥
यशुमतिअपिउठिनिजगृहराजन ! ❀ दधि मंथत मथनी धर भाजन ।
जे जे चरित कृष्ण यह कीनें ❀ ते गावत वात्सल रस भीनें ॥
चंचल सुठ सुडौल हैं भौंहैं ❀ पुष्ट नितंव क्षौम्य[2] पट[3] सोहैं ।
वांधी कटि मेखला सुहावै ❀ सुत सनेह स्तन टपकत आवै ॥
नेतीकर्षण[4] श्रम जो भयऊ ❀ ताते कर कंकन हिल रहाऊ ।
कानन के कुंडल चल जाके ❀ वदन कंज पै स्वेदहु[5] ताके ॥

---

१ रात्री को पिछलो पहर २ रेशमी ३ वस्त्र ४ रज्जु के खींचने से ५ पसीना ।

कह देवर्षि सुनौ नर राई ❀ एक समय की कथा सुहाई ।
अरुणोदय भो निशा सिरानी ❀ उडुगण उडुप तेज भइ हानी ॥
कूजत कल रव सकल विहंगा ❀ भयऊ कुमुद प्रमोद विभंगा ।
प्रफुलित पद्म सुगन्धि सुहाई ❀ कोक शोक सब गयो विलाई ॥
निशिचर तियन शोक वड़ छायो ❀ प्रभु रसिकन उर मोद वढ़ायो ।
धीर पुरुष हरि कीर्तन करहीं ❀ परम प्रेम निज उर में धरहीं ॥
तीन प्रहर तो अपर प्रजागें ❀ चौथे जे प्रभु में अनुरागें ।
निशांत[1] याम भजन हित अहहीं ❀ भक्त सदा तहं जाग्रत रहहीं ॥
यदपि रजनि भर भक्तन हेतू ❀ अहे योग्य सब विधि सुख सेतू ।
तदपि रात्रि को अंतिम यामा ❀ है अतिशय प्रिय हितघनश्यामा ॥

दो० प्रातकाल अतिशय रुचिर, भक्तन कर आनन्द ।
जे जन प्रात न ऊठहीं, ते अभक्त मतिमन्द ॥१८०॥

ताहि समय गोकुल सब गोपीं ❀ निज निज गृह दधि मंथन रोपीं ।
भवन भवन कल गायन करहीं ❀ चरित गुपाल वदन उच्चरहीं ॥
यशुमतिअपिउठिनिजगृहराजन ! ❀ दधि मंथत मथनी धर भाजन ।
जे जे चरित कृष्ण यह कीनें ❀ ते गावत वात्सल रस भीनें ॥
चंचल सुठ सुडौल हैं भौंहैं ❀ पुष्ट नितंब क्षौम्य[2] पट[3] सोहैं ।
बांधी कटि मेखला सुहावे ❀ सुत सनेह स्तन टपकत आवे ॥
नेत्रोकर्षण[4] श्रम जो भयऊ ❀ ताते कर कंकन हिल रह्यऊ ।
कानन के कुंडल चल जाके ❀ वदन कंज पै स्वेदहु[5] ताके ॥

---

१ रात्री को पिछलो पहर २ रेशमी ३ वस्त्र ४ रज्जु के खींचने से ५ पसीना ।

गुथी शिखाते बहुविधि फूला ❀ निकस-निकस गिर ग्रह अनुकूला।
उठ्यो कृष्ण कल मा मा भाखे ❀ वसन्त इह छवि निज हिय राखे॥

दो०पुन-पुन बलि-बलि जाउँ मैं, निरख-निरख व्रजसार।
पावों अनुपम अमित सुख,हिये ध्यान नित धार१८१

अस व्रजपति नन्दन मुद माहीं ❀ पद नूपुर कल धुनि कर ताहीं।
आयो दधि मंथत मा पाहीं ❀ स्तन पीवन इच्छा मन आहीं॥
हँसत मातु करमें जो नेतू ❀ पकर नाहिं किय मंथन हेतू।
यशुमति गोद लियो निज जायो ❀ स्नेह सन्यो प्रस्नुत थन प्यायो॥
मंद-मंद मुसकान कन्हाई ❀ मुख मयंक लख यशुमति माई।
तावत पय औटत जो रह्यऊ ❀ तिहँ उफान आयो लख लह्यऊ॥
तज अतृप्त शिशु यशुमति धाई ❀ ता कारण हरिको रिस आई।
अरुण अधर फरकन तब लागे ❀ भ्रू चढ़ाइकें कछु गै आगे॥
अधरन रदनन से डसि करके ❀ फोरी दहि मथनी पत्थर से।
जाय गृहान्तर शून्य स्थाना ❀ देख्यो माखन सो मन माना॥

दो०ऊखल को उलटायकें, चढ़ तापै डर पाय।
छीके सों माखन लियो, बैठ उखल पै खाय॥१८२॥

तहाँ झरोखे से नवनीता ❀ दे बंदरन को कर-कर प्रीता।
पय उतार यशुमति तहँ आई ❀ जहँ मंथन मंदिर रुचिदाई॥
दहि मथनी फूटी लख ताहीं ❀ यह कारज मो सुतको आहीं।
अस विचार कीनों मन माहीं ❀ कृष्ण न निरख हँसी बहु ताहीं॥

१ चोटी २ सुन्दर शब्द से ३ रज्जु ४ पय मे भरते हुये ५ स्तन पीते हुए जो तृप्त नहिं ६ दाँतो से ७ दूसरे कमरे में।

गइ गृह अंतर यशुमति माई ❀ देख्यो तहँ अस कुँवर कन्हाई ।
बैठो औंधे ऊखल माथे ❀ माखन खावत कपिगन साथे ॥
चोरी कृति से चकृत नैना ❀ निरख पुत्र, पकरन तिहँ ऐना ।
पीछे से पग धर अति धीरे ❀ आवत भइ यशुमति सुत तीरे ।
मा के हाथ लकुट लख धायो ❀ ह्वै भयभीत कृष्ण सकुचायो ॥

दो०धावत तिहँ पहुँचत नहीं, रह अंतर इक हाथ ।
किम पहुँचे यशुमति तहां,जहँ न पहुँच सुरनाथ[१] ८३

सो०योगीश्चरन दुराप[२], ज्ञानी जिहँ नहिं निरख सक ।
परिपूरण तम आप, तिहँ यशुमति पकरन चहत ८४

तद्यपि निज भक्तन दिखराई ❀ कृष्ण भक्त वत्सलता भाई ।
पकर्यो यशुमति निज सुत जोऊ ❀ रोवत रह्यो रु भय युत होऊ ॥
भय विह्वल जिनके हैं नैना ❀ अंजन सहित,सोह छवि ऐना ।
तिन नयनन को मलै रु रोवै ❀ उर्ध्व दृष्टि कर जन कछु जोवै ॥
अस अपराध युक्त सुत हाथा ❀ पकड़ डाट रहि प्रिय व्रजनाथा।
ताही समय ऐश्वरी शक्ती ❀ आई समय श्रेष्ठ अनुरक्ती ॥
अस भयभीत पुत्र को चीना ❀ तव यशुमति लकुटी तज दीना।
करी दाम बांधन अभिलासा ❀ जिहँ बांधन कुल अंड अवासा॥
जो-जो दाम बँधन हित लाई ❀ सो-सो द्वय अंगुल घट जाई ।
घरकी सब जेवरी मँगाई ❀ सब तहँ ओछी ही ह्वै जाई ॥

१ शिव ब्रह्मादिक २ कठिनता से प्राप्त ।

गई दूध रक्षा हित माई ❀ परे न अग्नि माहिं पय जाई ।
हेतु यही सुत आयु बढ़ावन ❀ नहिं पय रक्षा कारन जावन ॥
पुत्र हेतु जो सर्वस त्यागे ❀ सो किंचित पय किम अनुरागे ।
कृष्णहि यशुमति असु आधारा ❀ कृष्ण बिना जिहँ सब अँधियारा॥

दो० है वात्सलता रूप जो, श्रीयशुमति साक्षात ।
तहँ अस शंक न संभवे, गुप्त हेतु यहि तात! ॥१८६॥

दाम बँधन सुन बहु ब्रजनारी ❀ अति आतुर आईं नृप द्वारी ।
तहँ फूट्यो भाजन तिन देख्यो ❀ ऊखल सों बांध्यो प्रभु पेख्यो ॥
है भयभीत रह्यो तिहँ काला ❀ नयन अश्रुयुत लख ब्रज बाला।
कहनलगीं हे ब्रजपति नारी ❀ कहा कियो कछु हिये विचारी॥
जब यह तुम्हरो प्रान[1] अधारा ❀ हमरो जीवन धन सुकुमारा ।
हम सबहिन के घर में आवै ❀ सखा संग ले हमहिं खिझावै ॥
करत अचगरी शंक न मानै ❀ लाज छोड़ बहु गारि बखानै ।
सुन्दर दधि भाजन बहु फोरै ❀ कही न कछु लख तुम्हरी ओरै ॥
तथा जान इन बाल सुभावा ❀ ऊधम सहै नाहिं रिस आवा ।
प्रत्युत इनकी सौष्ठवताई ❀ मिठ बोलन मन हर चतुराई ॥

दो० नख शिख छवि मन मोहनी, देख देख बल जाइँ ।
भूलें गृह कारज सकल, रोम रोम पुलकाइँ ॥१८७॥

१ प्रान ।

दो० अस विलोक अति चकित ह्वै, विहँस गोपि सब ताहिं ।
अरु आपहु हँसवे लगी, ह्वै विस्मय हिय माहिं १८४

जिहँ प्रकृती त्रय गुण नहिं बाँधैं ❀ तिहँ कहु दाम बंधन किम साँधैं ।
बांधत बांधत वड़ श्रम भयऊ ❀ श्रम सों देह स्वेद आ गयऊ ॥
सरकि शिखासों सुमनन माला ❀ अति व्याकुल भइ तियब्रजपाला।
सदा भक्त वश परम उदारा ❀ कृपा रूप अस मातु निहारा ॥
दया स्वच्छन्द स्ववश को आई ❀ निज इच्छा प्रभु आप बँधाई ।
जगत वश्य जिहँ सो वश आयो ❀ सदा भक्त वश आप दिखायो॥
जो प्रसाद ज्ञानिन पै नाहीं ❀ वीतराग नहिं इह गति पाहीं ।
योगिन यह सुख सपनेहु नाहीं ❀ कृतकर्मी किम पावैं ताहीं ॥
सो सुख कृपा यशोमति लीना ❀ भक्ति प्रभाव महत प्रभु कीना ।
भक्ताधीन रहैं नन्दलाला ❀ तथा न अपरन सुन भूपाला ॥

दो० भक्ति देत प्रभु सवन को, या हित मुक्ति न देत ।
चतुर मुकुट हरि जान अस, निज बन्धन नहिं लेत १८५

यशुमति सुत अतृप्त तज दीना ❀ पय उफान की रक्षा कीना ।
अस सुन को शंका उर लावै ❀ तौ यह उत्तर हिये दृढ़ावै ॥
चूल्हे चढ़्यो दूध जो आहीं ❀ तिह उफान आवै यदि ताहीं ।
पुन सो पर चूल्हे के माहीं ❀ तिहँ सुत की आयू घट जाहीं॥
शकुन ग्रन्थ में इह विधि गायो ❀ यशुमति उर सोऊ वच आयो ।
ताते सुत को स्तनहु पिवाती ❀ लख अतृप्त अपि स्तनहिं छुराती॥

गई दूध रक्षा हित माई ❀ परे न अग्नि माहिं पय जाई।
हेतु यही सुत आयु बढ़ावन ❀ नाहिं पय रक्षा कारन जावन ॥
पुत्र हेतु जो सर्वस त्यागे ❀ सो किंचित पय किम अनुरागे।
कृष्णहि यशुमति असु आधारा ❀ कृष्ण बिना जिहँ सब अँधियारा॥

दो० हैं वात्सलता रूप जो, श्रीयशुमति साक्षात।
तहँ अस शंक न संभवे, गुप्त हेतु यहि तात! ॥१८६॥

दाम बँधन सुन बहु ब्रजनारी ❀ अति आतुर आई नृप द्वारी।
तहँ फूट्यो भाजन तिन देख्यो ❀ ऊखल सों बांध्यो प्रभु पेख्यो ॥
है भयभीत रह्यो तिहँ काला ❀ नयन अश्रुयुत लख ब्रज बाला।
कहनलगीं हे ब्रजपति नारी ❀ कहा कियो कछु हिये विचारी॥
जब यह तुम्हरो प्रान[1] अधारा ❀ हमरो जीवन धन सुकुमारा।
हम सबहिन के घर में आवै ❀ सखा संग ले हमहिं खिझावै ॥
करत अचगरी शंक न मानै ❀ लाज छोड़ बहु गारि बखानै।
सुन्दर दधि भाजन बहु फोरै ❀ कही न कछु लख तुम्हरी ओरै॥
तथा जान इन बाल सुभावा ❀ ऊधम सहै नाहिं रिस आवा।
प्रत्युत इनकी सौष्ठवताई ❀ मिठ बोलन मन हर चतुराई ॥

दो० नख शिख छवि मन मोहनी, देख देख बल जाईं।
भूलैं गृह कारज सकल, रोम रोम पुलकाईं ॥१८७॥

१ प्रान।

जो तुम रंचहु सुत को कष्टा ❀ देख न सकत मनावत इष्टा ।
अरु तुम दया मूर्ति साक्षाता ❀ तुम्हरे चरित सवन सुख दाता॥
अपर काहु को अपि हो लाला ❀ वाहू को दुख सहौ न वाला ।
तौ फिर निज सुत अति सुकुमारा ❀ किम बांध्यो कछुहू न विचारा॥
आज दया को कहँ राखि आई ❀ निर्दय पनों गह्यो दृढ़ताई ।
करौ मुक्त अव सुत निज केरो ❀ रोवत है लाला तिहँ हेरो ॥
तजो निठुरता हे ब्रजरानी ❀ वाल सुभाव कृत्य यह मानी ।
नहिं तौ हम अव देहिं छुड़ाई ❀ कहैं सत्य नहिं संशय राई ॥

दो०इतनो कह हरि ढिंग गईं, मुक्त करन के हेत ।
तव यशुमति तिन प्रति कह्यौ,जावौ अपन निकेत १८९

नहिं मानो तौ तुम सवहिन को ❀ अहै शपथ निज-निज पुत्रन को।
तदपि न शंक करी तिन वाला ❀ मुक्त करन चाह्यौ नंदलाला ॥
पुन यशुमति भाख्यो तिन पाहीं ❀ पतिको शपथ अहै तुम ताहीं ।
तदपि न मुरीं छुटावन कारन ❀ तव यशोमति अस कियो उचारन
जो तुम नहिं मानत सव नारी ❀ अहै शपथ कनुवा को भारी ।
अस सुन भईं व्याकुल मन माहीं ❀ है उदास गवनीं गृह ताहीं ॥
वाहि समय वलभद्र कृपाला ❀ आयो जहँ वांध्यो नंदलाला ।
ऊखल सों वांध्यो लघु भैया ❀ निरख दाउ चखे वारि भरैया ॥
भ्रातृ नेह सों व्याकुल होई ❀ कहैं कृष्ण प्रति वच वल रोई ।
अहो कान तुहिं वांधन हारो ❀ अहै कौन खर वचन उचारो ॥

१ नेत्रों में जल ।

सो॰इह प्रकार को लाल, है तुम्हरो हे यशुमती।
व्याकुल होइँ विशाल, जा दिन हम नहिं देखहीं॥८५॥

तब इनके दरसन अभिलासा ❀ धार हिये आवें तुम पासा।
तहँ उराहनो हेतु प्रतक्षा ❀ कहैं विविध विध वचन समक्षा॥
आपहु सुन-सुन हमरे वैना ❀ लाल ओर निरखौ निज नैना।
सुत माधुर्य छटा जब देखौ ❀ तबही नेह सने दृग पेखौ॥
कबहु रंच अपि डाट्यो नाहीं ❀ प्रत्युत कह्यो हमारे पाहीं।
जैसो मो सुत तैसो तुम्हरो ❀ रुष्ट न होउ मान बच हमरो॥
घरमें तो कछु खावत नाहीं ❀ कोटिन धेनु मोर घर माहीं।
दूध दही घृत सुठ नवनीता ❀ सिंधु समान अथाह पुनीता॥
यदि यह तुम्हरे घरमें खावै ❀ यह सुन मोर हियो सुख पावै।
अरु जो भाजन फोरे अहहीं ❀ मोसे लेहु जेउ तुम चहहीं॥

दो॰किंतु रुष्ट मो लाल पै, नहिं होवो व्रजनार।
तुम्हरेही अनुग्रह लह्यो, इक सुत प्राणाधार॥१८८॥

सो॰देत रही संतोष, या विध हम व्रजवधुन मन।
कियो न रंचहु रोष, कबहू अपि निज लाल पै॥८६॥

कहा भयो है यशुमति आजू ❀ व्रज भरके प्राणन को साजू।
बाँध्यो ऊखल लघु अपराधा ❀ बाँधत तोहिं न भइ कछु बाधा॥

१ अर्थात्-आपके सामने।

जो तुम रंचहु सुत को कष्टा ❀ देख न सकत मनावत इष्टा ।
अरु तुम दया मूर्ति साक्षाता ❀ तुम्हरे चरित सवन सुख दाता॥
अपर काहु को अपि हो लाला ❀ वाहू को दुख सहो न वाला ।
तौ फिर निज सुत अति सुकुमारा ❀ किम बांध्यो कछुहू न विचारा॥
आज दया को कहँ रखि आई ❀ निर्दय पनों गह्यो दृढ़ताई ।
करौ मुक्त अब सुत निज केरो ❀ रोवत है लाला तिहँ हेरो ॥
तजौ निठुरता हे ब्रजरानी ❀ बाल सुभाव कृत्य यह मानी ।
नहिं तौ हम अब देहिं छुड़ाई ❀ कहैं सत्य नहिं संशय राई ॥

दो०इतनो कह हरि ढिंग गईं, मुक्त करन के हेत ।
तब यशुमति तिन प्रति कह्यौ, जावौ अपन निकेत १८६

नहिं मानो तौ तुम सबहिन को ❀ अहै शपथ निज-निज पुत्रन को।
तदपि न शंक करी तिन बाला ❀ मुक्त करन चाह्यौ नंदलाला ॥
पुन यशुमति भाख्यो तिन पाहीं ❀ पतिको शपथ अहै तुम ताहीं ।
तदपि न मुरीं छुटावन कारन ❀ तब यशोमति अस कियो उचारन
जो तुम नहिं मानत सब नारी ❀ अहै शपथ कनुवा को भारी ।
अस सुन भईं व्याकुल मन माहीं ❀ है उदास गवनीं गृह ताहीं ॥
वाहि समय बलभद्र कृपाला ❀ आयो जहँ बांध्यो नंदलाला ।
ऊखल सों बांध्यो लघु भैया ❀ निरख दाउ चखं वारि भरैया ॥
भ्रातृ नेह सों व्याकुल होई ❀ कहै कृष्ण प्रति वच बल रोई ।
अहो कान तुहिं बांधन हारो ❀ अहै कौन त्वर बचन उचारो ॥

१ नेत्रों में जल ।

दो०सुन दाऊ वच कृष्ण कह. वांध्यो है मुहिं मात ।
श्याम वचन सुन राम फिर, कहत वचन प्रति तात १९०

हे भैया सुख दैया मेरे ❀ अमित वार तुम प्रति वच टेरे ।
ऊधम करन त्याग दे भैया ❀ चोरी कृत्यहु वड़ दुख दैया ॥
मेरी वात नेंक नहिं मानी ❀ वाल सुभाव अचगरी ठानी ।
ताको फल यह निकस्यो भाई ❀ आज वँध्यो मुहिं पड़्यो दिखाई॥
इम भाखत ही मा ढिंग गयऊ ❀ रोवत ही मैया प्रति कहयऊ ।
री मैया मेरो लघु भैया ❀ किम ऊखल वांध्यो सुख देया ॥
कह यशुमति भो चंचल भारी ❀ निश दिन ऊधम करन विचारी।
आज पुरातन भाजन जोऊ ❀ दधि मंथन को, फोर्यो सोऊ ॥
बांध्यो है ऊखल सों याते ❀ विन ताड़न नहिं समुझे ताते ।
मात वचन सुन कह वलरामा ❀ छाड़ देहु मैया अव श्यामा ॥

दो०अल्प दोपते दंड यह, दियो अहै लघु वाल ।
है न उचित अस आपको,मानौ वचन रसाल ॥१९१॥

मृतिका पात्रन को का टोटो ❀ जा हित वांध्यो वालक छोटो ।
दूध दही याने ढरकायो ❀ तौ अपि मैया कहा घटायो ॥
यदि समुद्र ते वूंद निकासी ❀ कहा सिंधु घट जाय प्रकासी ।
तथा दूध दहि माखन आदी ❀ अपन भवन सम सिंधु सुवादी ॥
फिर थोरे से दधि के कारन ❀ इतनो रोप वृथा किय धारन ।
इम कह चल्यो कानके. पाहीं ❀ मुक्त करन भै[illegible] ताहीं ॥

वल के मनकी लख व्रजरानी ❁ कछुक रोष युत वानि वखानी ।
जा जा तू उनको मिलवैया ❁ नहिं तौ वांधूं तुहिं संग भैया ॥
तव वल भद्रहु तहँते गयऊ ❁ कछुक कुपित मैया मति कह्यऊ ।
जो तू मोहन को नहिं छोरे ❁ जाय पिताको कहौं निहोरे ॥

दो० जावत कह नंद नंद पै, तू मत होउ उदास ।
आशु छुड़ावन जाय कहुँ, नंदवावा के पास॥१६२॥

यहँ ते वलदाऊ इम कहि कैं ❁ कृष्ण छुड़ावन निज चित चहिकैं।
गयउ नँदवावा के पाहीं ❁ यशुमति गृह कारजके माहीं ॥
भइ तत्पर हे मैथिलराई ❁ परम कौतुकी कृष्ण कन्हाई ।
जिनके इक इक लीला माहीं ❁ विविध हेतु होवत हैं ताहीं ॥
पूर्ण रूपसों को तिहँ जानै ❁ मति अनुरूप गाय मुद मानैं ।
मोर श्रापतें द्वै तरु भयऊ ❁ यमलार्जुन संज्ञा तिन रह्यऊ ॥
धनद सुवन मद मत्त महाना ❁ ते यलमार्जुन यहँ प्रकटाना ।
तिनकी ओर दृष्टि पहुचाई ❁ नंद नंदन प्रणतन सुखदाई ॥
तिनको मुक्त करन नन्दलाला ❁ चाह्यो तव तहँ हे भूपाला ।
कर्ष उलूखल श्रीहरि सहसा ❁ गृह आंगनगे युत शिशु वयसा॥

दो० तहँ विहँसत तिन मध्य गै, दामोदर घनश्याम ।
अपर वालकन देखते, कृपासिंधु सुखधाम ॥१६३॥

---

१ शीघ्रही २ नाम ।

खैंच्यो तिन दोउन कर लीला ❀ जन उद्धारन जिन शुभ शीला ।
कर्षत ते द्वौ वृक्ष समूला ❀ गिरे आय भुविमें युत फूला ॥
भो तहँ पतन शब्द बड़ भारी ❀ वज्रपात इव चंड दुखारी ।
प्रकटे तिन तरुते द्वय देवा ❀ दिव्य देह धर वर सुख लेवा ॥
इंधनतें जिम अनल प्रकासा ❀ तिम भूपति तिन देह विभासा ।
दामोदरहिं प्रदक्षण कीना ❀ मस्तक निज प्रभु पद धर दीना ॥
अंजलि बांध कृष्ण प्रति नत्वा ❀ पुन उठ प्रभु सन्मुख कह सत्त्वा ।
वार वार वंदैं तुव चरना ❀ मंगल मूल अमंगल हरना ॥
जै ब्रह्मादिक देवन स्वामी ❀ आदि अंतते पर सुखधामी ।
जै सुखसागर सब गुन आगर ❀ प्रणत जननके सदा उजागर ॥

दो० जै व्रजभूषन मन हरन, जै मुकुंद श्रीकंत ।
जै केशव गोविंद हरि, जै इक रस विलसंत ॥१६४॥

अगम अगोचर आनंद कंदा ❀ नित स्वछंद वृंदावन चंदा ।
श्रुति नित नेति नेति कह भाखै ❀ शंकर निज मानस सर राखै ॥
ज्ञानि योगि जिहँ पावैं नाहीं ❀ रटत नाम नवें शेष सदाहीं ।
जाहिं नाम सुन काल डरायो ❀ अस दुर्लभ दरशन हम पायो ॥
नारद को यह शाप न मानैं ❀ परमोत्तम वरदान प्रमानैं ।
उनहीं की करुणासों आजू ❀ लह्यो दरस तुम्हरो व्रजराजू ॥
जय भव मोचन कृपा निवासा ❀ पंकज लोचन जन दुख नासा ।
जय श्रुति संत धेनु प्रति पालक ❀ जै ब्रह्मण्य दुष्ट जन घालक ॥

१ लकड़ी २ नित्य नवीन ३ ब्राह्मणनिके रक्षक ।

वसुधा व्यथित भई प्रभु जबही ❀ कियो प्रकट निज तनुको तबही।
यदपि सबन प्रतिपालक आपू ❀ सबही विध है अमित प्रतापू ॥

दो०प्रेमिन प्राणाधार हो, प्रेमिन के आधीन।
प्रेमिन ही के कारने, लीला करौ नवीन ॥ १९५ ॥

सो०गो मन इन्द्रि अतीत, निराकार निर्गुन अगम।
प्रेमिन निकट अजीत, ऊखलसों बांध्यो लख्यो॥८७॥

कवित्त

हिये अभिलास अब करहिं प्रकास प्रभु,
आप हो उदार पुन करुणा निधान जू।
रसना सों गुन-गन नितही तुम्हारे गावैं,
हिये माहिं रहे तुव माधुरी को ध्यान जू॥
श्रवण-श्रवण कर आपकी कथा पुनीत,
जहां-जहां प्रेमीजन गावैं गुन गान जू ।
नैनन सों आपको दरस संत दरस हू,
कर-कर होवैं हम महा मोदवान जू॥ १३ ॥
करसों करहिं नित चित लाय सेव तुव,
विचरैं चरन सेती आपही के धाम जू।
यही वरदान दीजै आन आस सब छीजै,
प्रेम रस माहीं भीजैं परम ललाम जू॥

१ पृथिवी २ वाणी ३ कान ।

और एक वर हम याचत हैं आप प्रति,
संतन को हेलन[1] न होय दुख धाम जू।
चरन शरन जान दीजै हेम वरदान,
चहैं यहि दान कर कृपा घनश्याम जू॥ १४॥

कह मुनि कर वंदन सुर दोऊ ❀ उत्तर दिशि गै प्रमुदित होऊ।
आये नंद नृपति चल मंगा ❀ औरहु व्रज जन अचरज रंगा॥
व्रजपति कियो पुत्र निज मुक्ता ❀ ऊखल दाम बँध्यो जो उक्ता।
भर्त्स्यो भामिनि को व्रजराया ❀ विप्रन दिय शत गौ सुत दाया॥
व्रज वारन ते पूछयो राई ❀ वृक्षपात विन वात दिखाई।
तव तत्काल कहत मिल वाला ❀ व्रजपति प्रति सब गाथ रसाला॥
वृक्षपात तुव वालक कीना ❀ तिनते द्वै जन निकस नवीना।
नमस्कार कर इनको दोऊ ❀ उत्तर दिशि गवनत भै ओऊ॥
सुन अस वचन विहँस नृप नंदा ❀ निरख मोहनी छवि व्रजचंदा।
कहन लगे कह जानें वाला ❀ गोद लेन चाह्यौ निज लाला॥

दो०करन अंक निज हाथ द्वै,जवहि पसारे नंद।
तव कछु-कछु मुस्काय कें,पितु प्रति कह व्रजचंद १६

मैया केरि अंक में जावौं ❀ गोद आपके मैं नहिं आवौं।
अस सुन बहुत हँसे नँदराई ❀ हे सुत तुहिं बाँध्यो तुव माई॥
करत ताड़ना तोहिं डराई ❀ तदपि जाय तिहँ अंक कन्हाई।
आउ-आउ लाला मो अंका ❀ वल जावौं लख वदन मयंका॥

१ अपराध २ डाट्यो ३ बापु।

इम कह कियो अंक निज लाला ❀ को कह भो जो मोद विशाला ।
तब वलदाऊ मुदित महाई ❀ हे नृप कह बच प्रति नंदराई ॥
मुहिं अपि अंक माहिं किन लेवौ ❀ कनुवा सम मुहिं संतत सेवौ ।
राम वचन सुन नंद हरषायो ❀ वलको अपि निज गोद धरायो ॥
एक जानु राजत है रामा ❀ द्वितिय जानु भ्राजत घनश्यामा ।
जनु घनु अरु विद्युत छवि सोहैं ❀ युगल जानुपै युगल विमोहैं ॥

दो० लख जोरी नृप अंकमें, बसन्त मग्न महान ।
निज हिय में वह छवि धरौं. कह जय २ प्रियप्रान १६७

सो० धनद सुवन को शाप, किहँ कारन तुमने दियो ।
आप कृपालु अमाप, कहौ कृपाकर मोहिं यह॥८८॥

कह मुनि नल कूवर मणिग्रीवा ❀ भूप कुवेर तनय वलसींवा ।
सुन्दर वनमें ते दो गयऊ ❀ मंदाकिनि तट राजत भयऊ ॥
गीयमान अप्सरा गण करकें ❀ विचरत विन वसननविनडरकें ।
मदिरा वारुणि के मद माते ❀ युवा द्रव्य दर्पित तिय राते ॥
मैं हूं बिचरत तिहँ थल आयो ❀ तहँ तिनको श्रीमदमत पायो ।
देवांगना सबन भय कीनों ❀ शाप शंक त्वर पट धर लीनों ॥
वे मतवारे गुह्यक दोऊ ❀ द्रुम सम नग्न स्थित तहँ होऊ ।
इह विध धनद पुत्र पहिचानी ❀ श्रीमदांध मदिरा मत मानी ॥
मो उर अतिशय कृपा समाई ❀ तिनको शाप देन मन आई ।
कियो विचार अपन मन माहीं ❀ सो अब स्पष्ट कहौं तुम पाहीं ॥

१ धन ।

दो० रजगुण श्रीमद से उदय, पुनाभिजात्य[1] समान ।
अल्प विषय भोगिन मती, भृंशक[2] कोउ न आन १९८

सो० आसव[3] स्त्री अरु द्यूत, धनतें इनको संग ह्वै ।
करै ध्वंस मति पूत[4], अस अनर्थ वहु दृव्यतैं ॥ ८१ ॥

पाय धनहिं अजितेन्द्रिय जेऊ ❀ अजर अमर तन मानत तेऊ ।
ह्वै निर्दयि पशु हिंसा करहीं ❀ नेंक न निज जिय करुणा धरहीं॥
भल इह समय देह कछु जानौ ❀ अंत तीन गति ध्रुव पहिचानौ ।
कृमि विड्[5] भस्म सु तीन प्रकारा ❀ देह अंत गति यहिं निरधारा ॥
भूत[6] द्रोह अस वपु हित करहीं ❀ ते नर का स्वार्थज्ञ उचरहीं ? ।
नर्क पतन तिन निश्चय होवैं ❀ हाय हाय कर अतिशय रोवैं ॥
प्रथम विवेचन जन यह धारै ❀ पुन भल यह वपु अपन विचारै ।
जिहँ तनहित अनर्थ वहु करहीं ❀ अहै कौनको को इह धरहीं ॥
अन्न प्रदाता को यह देहा ❀ अथवा अपन राख जहँ नेहा ।
वा जननी कि जनक को अहही ❀ वा मातामह को यह रहही ॥

दो० किहँ बलिको वा स्वामि को, वाक्रियकर्ता[8] देह ।
अथवा है यह अग्नि को, वा कूकर[9] को एह ॥१९९॥

सो० प्रथम तु निश्चय नाहिं, याहि वातको ह्वै सकत ।
अस अस्थिर तनु माहिं, करैं मूढ आसक्ति अति ९०

१ अभिजात्य (जातकिृत वड़प्पन) २ नष्ट करने वाला ३ मदिरा ४ पवित्र ५ मल (विष्टा) ६ जीवमात्र ७ नाना ८ मोल लेनेवाला ९ कुत्ता ।

प्रकृति सर्व साधारण माहीं ❀ प्रकटे पुन है लय अपि ताहीं ।
अस परतन्त्र देह निज मानैं ❀ वृथा जीव हिंसा मन आनैं ॥
अस अनर्थ धनहीते प्रकटें ❀ धन मदांध दुष्कृति में अटकें ।
तिन हित दारिद्रहि परमांजन ❀ करै आशु अति दृढ मद गंजन॥
सब जीवन को अपन समाना ❀ लखैं अकिंचन, अनुभव ठाना॥
जाहिं शूल व्यापे सो जानै ❀ सब प्राणिन पै करुणा आनै ॥
कारन तहाँ यही बुध गावैं ❀ सुख दुखादि की समता पावैं ।
यहि अनुमान जान उर आनै ❀ सब जीवन निज सम पहिचानैं॥
जिहँ कांटो नहिं लागो कोई ❀ तिहँ का पीर पराई होई ।
रहै दरिद्री निर अभिमानी ❀ गहै दीनता बड़ सुख दानी ॥

दो० जो जो पावै कष्ट वह, श्रीहरि इच्छा मान ।
धैर्य सहित सो सहन कर, धर भरोस भगवान॥१९९॥
यही तपस्या वाहि की, स्वीकृत करत कृपाल ।
कष्ट अन्त सुख देय कैं, करत सतत प्रतिपाल॥२००॥

सो० क्षुधा व्यथित कृप देह, नित अन[1] आकांक्षा रहै ।
अस दरिद्र गति एह, शिथिल होइँ इन्द्रिय सकल॥९१॥

हिंसा की निवृत्ति याही ते ❀ सहज होय सक नृप ताही ते ।
जोउ स्वयं अशक्त अति अहई ❀ सो अपरन का दुख प्रद रहई ॥

१ अन्न ।

तथा साधु समदर्शी उदारा ❀ दरिद्रन मिल सक इह संसारा।
पुन ते कर संतन सहवासा ❀ करैं नाश निज विषय पिपासा॥
ह्वै शुद्धान्त करण अति आशू ❀ लहै दरिद्री इम सुप्रकाशू।
समाश्रित जेहि संत जे कह्यऊ ❀ संतत निर अपेक्ष ते रह्यऊ॥
तिन कर योग्य उपेक्षा आहीं ❀ असदाश्रय जन जे जग माहीं।
कहा प्रयोजन तिन सों अहही ❀ संत सदा निशंक मन रहहीं॥
तात्ते अजितेन्द्रिय ये दोऊ ❀ श्रीमदांध तिय लंपट होऊ।
वारुणि मदिरा मत्त महाना ❀ जासों योग्य अयोग्य अजाना॥

दो० अज्ञानज मद भो इनहिं, करौं दूर तत्काल।
असं सूझी मो मन विषे, त्वरता महत विशाल॥२०१॥

सो० डूबे तम अज्ञान, लोकपाल सुत होय कैं।
धर्यो न रंचहु ज्ञान, द्वौ दुर्मद वश ह्वै गये॥६२॥

हैं विन वसन तोहु नहिं ज्ञाना ❀ कि हैं नग्न हम अस अज्ञाना।
तव थावरपन योग्य विचारा ❀ पुन उन्मत्त न ह्वैं संसारा॥
तहँ अपि मो प्रसाद पहिचानैं ❀ पूर्व स्मृति निजनित उर आनैं।
सुर इक शत हायन के पाछें ❀ कृष्ण कृपामय काछनि काछें॥
इन समीप आवैंगे जबही ❀ तिन करुणा पावें स्वरें तबही।
अस विचार भाख्यो तिन पाहीं ❀ करो गर्व का निज मन माहीं॥

१ नाशवन्त पदार्थों के सहारा लेने वाले २ कृपा ३ वर्ष ४ स्वर्ग।

अहो मूढ़ जड़ सम द्वौ वृद्धा ❀ निलज द्रव्य दर्पित गत-श्रद्धा ।
अतिहि आशु तुम तरु तनु धारौ ❀ वर्ष एक शत, वचन हमारौ ॥
द्वापरान्त भारत भुवि माहीं ❀ माथुर मंडल है व्रज ताहीं ।
तहँ कालिंदी तट अति सोहे ❀ महाविपिन तट मुनि श्रापि मोहे ॥

दो० सत्य करन मो दास वच, दामोदर भगवान ।
करें मुक्त जड़ योनिते, तव तुम्हरो कल्यान ॥२०२॥

सो० कह मुनि ते मो शाप, यमलार्जुन द्रुम भै युगल ।
किये मुक्त प्रभु आप, जो दासन वच पाल किल ६३
को कृपालु अस आहिं, नंदलाल विन र मना ।
निज जन वचन निवाहिं, वसंत सब विधि टेक गहु ६४

✱ इति श्रीकृष्णायने द्वितीय गोलोक द्वारे अष्टदश सोपान समाप्त ✱

कह मुनि कृष्ण दरस के कारन ❀ दुर्वासा मुनिवर श्रुति धारन ।
आयो श्रीव्रज मंडल माहीं ❀ बड़ उत्साह जाहिं मन आहीं ॥
कालिन्दी जल पुण्य[1] समीपा ❀ रमण रेत सम तारन दीपा[2] ।
महवन तट सह शिशु समुदाई ❀ कृष्ण दरस दूरहिते पाई ॥
श्रीमन् मदन गुपाल लुठंता ❀ रमण रेत मिल वयस लसंता ।
करत परस्पर सब मल लीला ❀ बाल केलि मिल बाल सुशीला ॥

१ पवित्र २ प्रकाशित ।

धूरी धूसर हैं हरि अंगा ❀ वक्र केश पट पीत सुरंगा ।
अस प्रभु धावत वयसन साथा ❀ लखअसकहविस्मितमुनिनाथा॥
यदि परात्पर यह भगवाना ❀ तौ किम लुठत यथा अनजाना ।
यह तो नंद पुत्र व्रजवाला ❀ नहिं श्रीकृष्ण देव प्रतिपाला ॥

दो० कह मुनि इम मोहित भयो, दुर्वासा महाराज ।
करत कृष्ण क्रीड़ा तवै, आय अंक ऋषिराज२०३

पुना गोद से निर्गत वाला ❀ वालसिंह सम लख्यो विशाला ।
विहँसत करत मधुर हरि बोली ❀ पुन सन्मुख आ गयो किलोली॥
मुनिवर हँसत श्याम मुख माहीं ❀ मारग श्वास उदर गो ताहीं ।
लोके तहाँ आन बड़ लोका ❀ सहितअरण्य विविधजनओका॥
तिन २ विपिन भ्रमत मुनि रह्यऊ ❀ कहँ आयो मैं मुनि अस कह्यऊ ।
ताहिं समय इक अजगर आयो ❀ निगल लियो तिहँउदर समायो॥
तहाँ अंड इक औरहु देख्यो ❀ भुवन चतुर्दश युत मुनि लेख्यो।
द्वीप विचित्र भ्रमत दुर्वासा ❀ श्वेत द्वीप पर्वत क्रिया वासा ॥
तहँ तप कियो वर्षशत कोटी ❀ कृष्णभजनहित मुनि मतिमोटी।
भई प्रलय नैमित्तिक आई ❀ विश्व भयंकर बड़ दुखदाई ॥

दो० आय उदधि में सव मिले, कहूं न धरा दिखाय ।
वहत रह्यौ मुनि ताहि में, जलको अन्त न पाय॥२०४॥

भये अतीत अयुत युग ताहीं ❀ भयो मग्न रंचहु सुधि नाहीं
ता जलमें लुढ़कत ऋषि रायो ❀ एक अंड अपरहु तहँ पायो ॥

१ कृष्ण २ देखे ३ वन ।

वाके विवर प्रविस मुनि कीनों ❁ दिव्य सृष्टि लख अचरज भीनों।
पुन तिहँ अंड ऊर्ध जे लोका ❁ तहँ विधिवय सम मुनिवर रोका।।
औरहु एक छिद्र वड़ देख्यो ❁ जहँ प्रविशत प्रभु सुमरण लेख्यो।
पुन तिहँ अंड वहिर सो आयो ❁ महावारि को दर्शन पायो ।।
तहां विलोके मुनि दुर्वासा ❁ कोटिन अंडन करत निवासा।
जब तिहँ वारि मग्न मुनि भयऊ ❁ तव विरजा सरिता तट गयऊ ।।
वाके पार अहै साक्षाता ❁ सो देख्यो गोलोक सुहाता।
वृन्दावन गोवर्द्धन सोहै ❁ यमुना पुलिन निरख मन मोहै।।

दो० किय प्रवेश गोलोक में, जय जय शब्द उचार ।।
भयो मुदित मन देख कें, शोभा अपरम्पार ।।२०७।।

सो० कोटि धेनु विचरन्त, आवृत गोपी गोप गण ।
मण्डल जोति अनन्त, अगणित रवि फीके जहाँ ९५

दिव्य लक्ष दल पंकज माहीं ❁ राधापति राजत रह ताहीं ।
परि पूरण तम जो साक्षाता ❁ पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण सुहाता ।।
जो अगणित अंडन को राई ❁ सो गोलोक विलोक्यो जाई ।
पुन तहँ हँसत कृष्ण मुख तेही ❁ निकस्यो मुनि दुर्वासा नेही ।।
किय दर्शन मिल सख वलवीरा ❁ रमण रेत कालिन्दी तीरा ।
करत खेल वहु विधि मन भाई ❁ रमण रेत में लुठत सुहाई ।।
छिपे वेष प्रभु रह व्रज माहीं ❁ विन उन करुणा को लख ताहीं।
कृष्ण कृपा दुर्वासा जान्यो ❁ कृष्ण परात्पर वर कर मान्यो।।

कृष्ण चरन गिर दण्ड समाना ❀ अञ्जलियुत बहु स्तुती बखाना॥
नव पंकज दल नैन विशाला ❀ बिम्बाधर वर परम रसाला॥

दो० सजल मेघ सम रुचिर वपु, शोभा सिन्धु महान।
मन्द मधुर सुन्दर चलन, मनहर मँद मुस्कान२०८

सो० निरख अनूपम सोह, रोम रोम आनन्द स्रव।
धीर वृन्द कर मोह, या सम छवि वहु अंड नहिं॥६६॥

या विधिके प्रभु पद युग माहीं ❀ मो वन्दन तन मन वच आहीं।
बिन्दी भाल भक्त दुखहारी ❀ वक्षस्थल विशाल सुखकारी॥
कण्ठ केसरी नख शुभ सोहै ❀ अपर सकल भूपन मन मोहै।
नव रत्नन नूपुर धुनि कारी ❀ पद पंकज सोहत मनहारी॥
वन्दौं हरि यमुना तट केली ❀ वयसन मिल खेलत मन मेली।
पूर्ण इन्दु सुन्दर मुख सोहै ❀ केश नवीन भ्रमर द्युति मोहै॥
भ्रकुटी काम चाप मद हारी ❀ नयनन चितवन जन सुखकारी।
आनंत शिर मुख पंकज जोई ❀ जिहँ दर्शन संसृति हत होई॥
अस जो नन्द तनय घनश्यामा ❀ राम सहित तिन मोर प्रणामा।
पुन पुन सविनय स्तुतिमुख भाखौं ❀ यह छविनिज मनमानसराखौं॥

दो० व्रजपति नन्दन स्तोत्र यह, पढ़ै प्रात उठ जोउ।
तिहँ जन चख गोचर सदा, युत प्रमोद हरि होउ२०९

१ कंदूरी के फल समान ओष्ठ २ सिंह ३ नीचे को झुका हुआ।

सो० लहै नाहिं विन कष्ट, परम इष्ट निश्चय यही।
वसन्त वचन विशिष्ट, नष्ट अनिष्ट सु कष्ट सों॥६७॥

कह मुनि कृष्णहिं वन्द मुनीसा ❀ जपत ध्यान युत गो वदरीसा।
कहत गर्ग इम नारद गाये ❀ मैथिल प्रति हरि चरित सुनाये॥
ते चरित्र तुम प्रति मैं भाखे ❀ कलिमल ध्वंसक गुप्त न राखे।
सुनै जु इच्छित सव फल पावै ❀ आन श्रवण कहु का मन भावै॥
कह शौनक मैथिल नर नाथा ❀ पुन मुनि प्रतिका पूँछी गाथा।
नारद भक्त शिरोमणि जोऊ ❀ कह्यौ भूप प्रति कहु मुहिं सोऊ॥
कहत गर्ग नृप मुनि शिरनाई ❀ अंजलि वांध विनय वहु गाई।
पुन पूछे श्रीकृष्ण चरित्रा ❀ मंगल प्रद इह लोक अमुत्रा[१]॥
कह वहुलाश्व कृष्ण साक्षाता ❀ विग्रह[२] सच्चिद्धन विख्याता।
कौन चरित्र किये व्रज माहीं ❀ ते विस्तृत भाखो मो पाहीं॥

दो० कह मुनि मैथिल धन्य हो, साधु प्रश्न किय आप।
श्रीवन चरित सुनाइहौं, जाको अमित प्रताप॥२१०॥

सो० छवि समुद्र घनश्याम, रसिकन जीवन प्रान जो।
वृन्दावन निज धाम, नित्य करत रस प्रद चरित॥६८॥

यह गोलोक द्वार सुखकारी ❀ गुह्य परम अद्भुत मनहारी।
तोहिं सुनायो मैथिल राई ❀ कृष्ण चरित पूरित सुखदाई॥
वांचै विप्र याहिं नित जोई ❀ सर्व शास्त्रवित निश्चय होई।
क्षत्री सुनै प्रेम उर धारी ❀ चक्रवति पद लह सुखकारी॥

१ परलोक में २ शरीर।

सुनै वैश्य यदि निधिपति होवै ❀ शूद्र सुनै बन्धन सब खोवै ।
है निष्काम सुने जो कोई ❀ जीवन मुक्त मनुज सो होई ॥
श्याम सनेहिन सर्वस येही ❀ करैं पाठ सन्तत है नेही ।
पराभक्ति पावें विन शंका ❀ अनुभव मय हैं ये मो अंका ॥
मंगल मय सब काम प्रदाता ❀ पढ़े जु सायं समय रु प्राता ।
वाके वश होवैं भगवाना ❀ करैं नित्य प्रेमामृत पाना ॥

दो० सम्यक प्रति दिन पाठकर, सहित भक्ति अरु भाव ।
सो निश्चय श्री युगलको, श्रीगोलोक उपाव॥२११॥

सो० पाठक जन सुख दैन, सम्यक श्रीगोलोक को ।
जहँ न प्रकृति नहिं वैन, पहुच सकै मैथिल सुनौ९९
द्वितिय द्वार गोलोक, युगल कृपाते इति भयो ।
धर तिन पद उर श्रोक, वसन्त सविनय वन्दहौं१००

❀ इति श्रीद्वितीय गोलोक द्वार एकोन्विंशति सोपान समाप्त ❀

दो० श्रीगोलोक दुवारके, उन्निस सुठ सोपान ।
शत पंचानव दशक हैं, चौपाई रसखान ॥ १ ॥
द्वैशत ग्यारह दोहरे, शत सोरठा मनोज्ञ ।
चौदहँ सुभग कवित्त हैं, उन्तिस छन्द सुयोज्ञ ॥ २ ॥

सो० श्लोक एक या माहिं, द्वितिय द्वार संख्या कही ।
पढ़े मनन युत ताहिं, लहै लोक परलोक सुख ॥ १ ॥

इति श्रीश्यामस्नेही स्मृति संस्थापक, भक्त शिरोमणि, द्विजकुल कमल दिवाकर, श्रीयुत वसन्तराम कृत सकल कलि कलुप निकन्दन परात्परानन्द सम्पादन श्रीकृष्णायने द्वितीय श्रीगोलोक द्वार समाप्त ।

* श्रीराधावसन्तविहारिणेनमः *

श्रीवसन्त कृष्णायन

का

तृतीय वृन्दावन द्वार

जिसमें

सोपान (१) मङ्गलाचरण, नन्दवात्सल्य, वृन्दावन गमन, वत्सासुर वध अरु पूर्व जन्म (२) बकासुर वध अरु पूर्व जन्म (३) बाल लीला, अघासुर वध अरु पूर्व जन्म, यशोदा वात्सल्य (४ से ६ तक) ब्रह्मा-वत्सहरण (१० से १६ तक) ब्रह्मकृत स्तुति (१७) गोचारन लीला (१८) धेनुकासुर वध अरु पूर्व जन्म (१६) श्याम-सगाई (२०) युगल विवाह (२१) भाण्डिर वन लीला (२२) काली मर्दन, धुंधक-कंस सम्वाद, धुंधक वध (२३) चीर हरण, शङ्का समाधान (२४) गोप क्षुधा निवृत्यर्थ यज्ञकर्त्ता विप्रन के पास गोपों को भेजना (२५) वरुण लोक से नन्द को ले आना (२६) विद्याधर उद्धार अरु पूर्व जन्म के प्रसङ्ग में विद्याधर और अष्टावक्र का सम्वाद (२७) व्योमासुर वध और पूर्व जन्म, अरिष्टासुर वध और पूर्व जन्म आदि प्रसङ्ग वर्णित हैं।

रचयिता--

श्रीहरिभक्ति प्रचारक-श्रीश्यामस्नेही सम्प्रदाय संस्थापक
सारस्वत कुलावतंस सिन्धु देश भूषण
श्रीयुत वसन्तरामजी महाराज।

प्रकाशक—
श्यामस्नेही श्यामाशरण
आगा का टंडा, हैदराबाद (सिन्ध)

सम्वत १९९२ वि०।

नाम-धुनि

जय जय गोपाल लाल।
मोही जिन ब्रज की बाल ॥
जिन के लोचन विशाल ।
जिन की वाणी रसाल ॥
जिन को विशाल भाल ।
जिन के घुँघरारे वाल ॥
गल में वैजन्ती माल ।
ब्रजकिशोर नन्दलाल ॥
लटक मटक चलत चाल ।
भक्तन को रक्षपाल ॥
सन्तन को रक्षपाल ।
गौवन को रक्षपाल ॥
विप्रन को प्रणतपाल ।
दुष्टन को महाकाल ॥

उपरोक्त नाम धुनि में "जय जय गोपाल लाल" यह पंक्ति हर एक पंक्ति के पश्चात कही जाती है।

कर नवनीत लिये
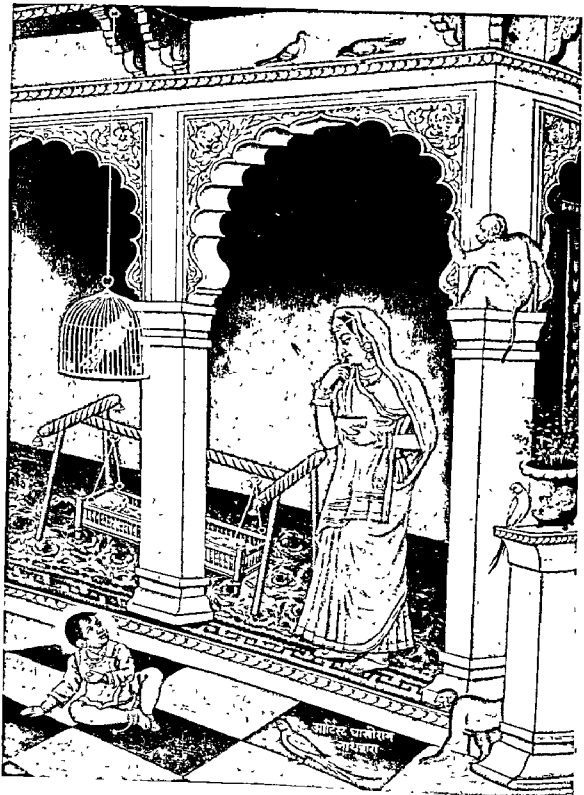
पलना तजि ललना लुक्यो ललकि खात नवनीत ।
मचलत मैया मुख निरखि उत उमगत सिसु-प्रीत ॥

GITA PRESS, GORAKHPUR

॥ श्रीराधावसन्तविहारिणेनम ॥

अथ

॥ श्रीवसन्तकृष्णायन प्रारम्भ ॥

॥ तृतीय श्रीवृन्दावनद्वार ॥

मंगलाचरण

श्री कालिन्द्यानिकूले विटपिगणवृते आढ्य कण्ठेर्विहङ्गै ।
रामोदानन्द पूर्णे सुमधुर पवने गुञ्जते भृङ्ग पुञ्जैः ॥
वृन्दारण्येष्ट कुञ्जोदर गत गहने श्रीनिकुञ्जाख्य धाम्नि ।
युग्मत्वेनोल्लसन्तौ प्रमुदित रसिकौ राजमानौ नमामि ॥ १ ॥

श्री यमुनाजी के किनारे प्रफुल्लित वृक्ष वृन्द से युक्त मनहर कंठ-वारे पक्षिन से कूजित सुंदर सुगंधि के आनद से पूर्ण सुदर मधुर वायु वारे भृंग गणकी गुंजना वारे ऐसे वृन्दारण्यान्तरगत अष्ट कुञ्ज के मध्य श्री निकुञ्जाख्य धाम में विराजमान एवम् युग्मता से विहार करन वारे रसिक के आनन्द देन वारे (श्री राधाकृष्ण) तिनको मै नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥

कोकिल कीर[1] केलि कर तीरे ❀ यमुना वाट रमण नवनीरे ।
गुंजें पुंज सुरे[2] सुमन[3] मनोज्ञा[4] ❀ तहाँ निकुंज युगलवर योज्ञा ॥

१ क्रीडा शुक २ चिरमीटी ३ कल्पवृक्ष के फूल ४ सुन्दर ।

त्रिविध बयारि बहे सुखदाई ❀ मृदुतर महि नहिं बरण सकाई।
तहँ विचरत अति मोद स्वरूपा ❀ राधाकृष्ण युगल रस रूपा ॥
कंबुग्रीव[1] गरवाहिं सुहाये ❀ करें मोर मंगल मन भाये।
खलन छलन द्रुत दलन दुरासा ❀ गति न कलन को करहीं आसा॥
अस गुरुदेव देव शंकर्ता ❀ तम अज्ञान सहज सो हर्ता।
ज्ञान शलाका अंजन सेती ❀ उन्मीलन किय नयन सुचेती ॥
प्रणवौं अस गुरु गुरुवर नामी ❀ शंकर गोपेश्वर ब्रजधामी ।
कह मुनि श्रीवन द्वार सुनीजे ❀ नृप बहुलाश्व प्रेम रस पीजै॥१॥

दो० एक समय गोकुल विषे, विविध अरिष्ट विलोक।
नंदराय अकुलाय उर, प्रकट करन निज शोक॥१॥

सो० बुलवाये निज तीर, वयोवृद्ध ब्रज गोप सब।
कहत वचन गंभीर, तिन प्रति भीजे प्रेम रस ॥१॥

अहो मोर हिय भाव सुनीजे ❀ बेगहि निज सम्मति कह दीजे।
विविध वेदना[2] हमपै आई ❀ सो सब तुमहू जानत भाई ॥
बँकी[3] शकट तृणसे मो लाला ❀ लिय बचाय जगदीश दयाला।
पुन द्रुमपात भयंकर भयऊ ❀ गौ ब्राह्मण असीस बच गयऊ॥
बनी रहत उत्पातन शंका ❀ चैन न लहत लेश उर अंका।
प्राण समान सुवन यह अहही ❀ नहिं अवलम्ब अपर मुहिं रहही॥
तापे विविध अरिष्ट जु आवें ❀ ताहित मो चित वृति अकुलावें।
निशदिन चित चिंतत अकुलाई ❀ यह मोहि नहिं सुहात अब भाई॥

१ शंख जैसा कण्ठ २ कष्ट ३ पूतना ४ प्रथवी।

तिन गोपन में वृद्ध सुजाना ❀ हरिजन नाम सुनंद वखाना ।
भाखत भयो नंद नृप पाहीं ❀ समीचीन[१] तुम्हरे वच आहीं ॥२॥

दो॰ तुव वालक हम सवन कों, निश्चै प्राणाधार ।
अकथ अलौकिक सुख लहैं, तिहँ मुख चंद निहार॥२॥

सो॰ व्रज सर्वस छविवान, जन्महिते मनहर चरित ।
करें निछावर प्रान, याके इक इक रोम पै ॥ २ ॥

मोर विचार सुनहु व्रजराई ❀ वसिये श्री वृन्दावन जाई ।
चतुर्विंशती[२] कोश प्रमाना ❀ सब वनवर वृंदावन माना ॥
है वृन्दावन मनहर भारी ❀ रवितनया[३] तट सोह अपारी ।
जामें प्रचुर[४] हरित तृण अहही ❀ वृक्षवेलि शोभा वहु रहही ॥
नंदीश्वर गहवर गिरिराई ❀ अघमर्दन सुखवर्धन भाई ।
गोवन हित सो वन अति नीको ❀ यदि भावै वृन्दावन जीको ॥
वहाँ निवास सुखद अति होई ❀ भाखैं निज निज सम्मति जोई ।
कह मुनि सुन सुनंदकी वानी ❀ हित कारक सवके मन मानी ॥
साधु साधु सव भाखन लागे ❀ नंदहु तिन सम्मति अनुरागे ।
आशु[५] अपन अनुचरन वखाना ❀ करनो है श्रीधाम पयाना ॥३॥

दो॰ सज स्यन्दन[६] आदिक त्वरित, शकटन[७] वस्तु धराय ।
गो गण आगे कर चलौ, सवहिन देहु सुनाय ॥ ३ ॥

---

१ ठीक ठीक २ चौबीस ३ श्रीयमुनाजी ४ वहुत ५ राय ६ रथ ७ गाड़न में ।

कह मुनि नंद वचन सुन काना ❀ सवहिन गमनोद्यम मन माना ।
तब सब गोप गणन युत नंदा ❀ किय उद्यम जावन वन वृंदा ॥
यशुमति रोहिणि आदिक गोपी ❀ गण समूह युत मन मुद रोपी ।
हय रथ वीर वृंदकर मंडित ❀ सोहत तिनमिल मंडलि पंडित॥
धेनु पंक्ति अरु शकटन युक्ता ❀ वृद्ध वाल अनुचर अनुरक्ता ।
गीयमान गायकजन होते ❀ दुंदभि शंख नाद के जोते ॥
श्रीव्रजराय महामति जोई ❀ आतमज श्याम राम युत होई ।
रथ चढ़ि गवने परम हुलासा ❀ श्रीवृन्दावन कियो निवासा ॥
तस पुनवर वृषभानू गोपा ❀ कीरति युत रथ पै अति ओपा।
लई गोद में कन्या राधा ❀ गायकजन गावन सुख साधा४॥

दो० वीणा ताल मृदंग कल, वेणुनाद वर आहिं ।
गोप वृंद गो गणन युत, गै वृन्दावन माहिं ॥४॥

नव उपनन्द अपर नवनन्दा ❀ तस पट वृषभानू सानन्दा ।
सब निज निज परिकर संयुक्ता ❀ गै वृन्दावन में अनुरक्ता ॥
इम वृन्दावन कीन प्रवेशा ❀ युत अनुचरन गोप शुभ वेशा ।
इत उत वासस्थल रच गोपा ❀ पृथक पृथक तिनमें ते रोपा ॥
मण्डप सदसि किला अरु खाही ❀ अतिविचित्ररमणिय कियताहीं ।
विस्तृति योजन चतुर सुहाई ❀ ससद्वार तिन परम निकाई ॥
सरवर कर परिवृत पुन सोऊ ❀ राजमार्ग वड़ मनहर होऊ ।
कुञ्ज अनन्त युक्त शुभदाई ❀ अस पुर वृषरवि पृथक वसाई ॥

१ शोभित २ रहने वाला ३ तालाव ४ घेरा हुआ ५ आम रास्ता (शाहीरोड) ।

नन्दनगर वृषरवि पुर माहीं ✿ व्रजभूपन वयसन मिल ताहीं ।
क्रीड़ा करत मुनिन मन हारी ✿ गोप समूहन वड़ सुखकारी ॥

दो० तदनन्तर वृन्दाविपिन, सम्मत सव गोपाल ।
वत्सपाल भे दाउ अरु, कौतुकि व्रजपति वाल ॥५॥

वड़ उत्सव भयऊ व्रज माहीं ✿ यशुमति मोद कहे को ताहीं ।
गोप वालकन मिल हरि रामा ✿ वत्स चरावत श्रीवन धामा ॥
प्रायः ग्राम सीम के माहीं ✿ यमुना पुलिन पुण्य वर ताहीं ।
वत्स चरत प्रमोद रस भीना ✿ क्रीड़त हरि वल केलि प्रवीना ॥
वत्सन पूँछ पकरकैं धावैं ✿ धाय वत्स पुन तिनैं छुड़ावैं ।
पीत नील अम्वर वपुधारी ✿ अंगद हार सिंगार निहारी ॥
को धीरज धर जो नहिं मोहै ✿ निज उपमा त्रिभुवन में को है ।
क्रीड़त गोपन मिल वन जाईं ✿ जहँकहँ वल अरु कृष्ण कन्हाईं ॥
कन्दुक[1] क्षेपत मिल गोपाला ✿ तत्पर वंशि वजावन लाला ।
सर्वत निज मुख शिशु समुदाई ✿ किङ्किणि शव्द करत हुलसाई ॥

दो० भूषित पल्लव पुष्पकर, राम कृष्ण द्वौ भाय ।
मयुर पक्ष धारे सुभग, धावत पक्षिन छाय ॥ ६ ॥

सो० इक दिन प्रेरित कंस, वत्सासुर आयो तहां ।
गति विलोक सम हंस, माधुरि मूरति मनहरन ॥३॥

१ गेंद २ सर्व औरतें ।

उर सोचत यापै नृप कंसा ❁ किम रूठ्यो मो उर वड़ संसा ।
निरखत मन कपैत यह वाला ❁ त्रिभुवनछविनिधि परमरसा ॥
सेवक धर्म परम कठिनाई ❁ प्रकटहि वेद पुराणन गाई ।
कियो कंसको जो निज स्वामी ❁ ताते प्राण देउँ अनुगामी ॥
स्वामी काज करन उत्साही ❁ तत्पर प्रान देन चित चाही ।
इम विचार प्रफुलित चित भयऊ ❁ आशु नन्दनन्दन तट गयऊ ॥
इत उत गोपन संग डुलावत ❁ पूंछ चलावत सींग हिलावत ।
आय कृष्ण तट निज पद दोऊ ❁ स्कन्ध देश मारे मुद होऊ ॥
निरख भयङ्कर भागे गोपा ❁ पश्चिम पाद कृष्ण तिहँ रोपा ।
अतिहि भ्रमायो गह निज हाथा ❁ पटक्यो पुन भुविमें व्रजनाथा॥७॥

दो॰ कृष्ण पकड़ पुन फेंक दिय, द्रुम कपित्थ के साथ ।
गिरतहि युक्त कपित्थ वह, गिर्यो गतासु अनाथ॥७॥

सो॰ गिरत असुर तिहँ काल, गिरे विपिन वहु वृक्षआपि ।
अद्भुत कर्म विशाल, निरखन धाये वहु मनुज॥४॥

विस्मय साधु साधु कह वाला ❁ भाखत जय जय धुनी रसाला ।
दिवि देवा पुष्पन वरसावैं ❁ जय जय धुनि युत मंगल गावैं ॥
ताहि समय दानव वड़ जोती ❁ देखी कृष्ण माहिं लय होती ।
अहो पूर्व सुकृती यह को है ❁ भयो लीन श्रीप्रभु में जो है ॥
कल्मष सकल खोय जिहँ पायो ❁ पद सायुज्य जु दुर्लभ गायो ।
सुन नृप मुरसुत नाम प्रमीला ❁ महाअसुर सुरजित दुश्शीला ॥

---

१ मैं दाम २ पकड़ा ३ गतप्राण ।

मुनि वशिष्ठ आश्रम इक काला ❀ नन्दनिधेनु विलोक विशाला ।
कर इच्छा तिहँ द्विज वपु धारा ❀ मनहर गौ याचत मुनिद्वारा ॥
मौन भये दिव दृष्टि वशिष्ठा ❀ तब ता प्रति गौ कह्यउ सपष्टा ।
हरन करन मुनि सुरभी आयो ❀ विप्र रूप धर आप छिपायो॥८॥

दो० जानौं तुहिं मुरु पुत्र तू, दानव वर तुव तात ।
तिहँ कुवंत्स तू भयउ जिहँ, होउ वत्स को गात ॥८॥

सो० कह मुनि वत्स स्वरूप, भो मुरुपुत्र तदा तहाँ ।
त्राहि त्राहि कर ऊँप, गौ को किय परिक्रम नमन॥५॥

तदा मुदित भाखत गौ ताहीं ❀ द्वापरान्त वृन्दावन माहीं ।
गो वत्सन के मध्य सिधावै ❀ मुक्ति कृष्ण करसे तब पावै ।
कह मुनि श्रीप्रभु परम कृपाला ❀ परम उदार पतित प्रति पाला ।
ताके परस मुक्त सो भयऊ ❀ पद सायुज्य कृष्णको लह्यऊ ॥
जिन आश्चर्य करहु सुन गाथा ❀ हैं समर्थ सब विध व्रजनाथा ।
अधमोद्धारन बिरद पछानी ❀ कर उद्धार अधम अघखानी ॥
यामैं निज महत्व प्रभु जानैं ❀ बुध महत्व भल थाको मानैं ।
निज भक्तन की करन भलाई ❀ यह जगरीति सदा चलि आई॥
स्वार्थ पन्थ भाख्यो यह भूपा ❀ अहे नेह सो स्वारथ रूपा ।
निस्स्वारथि तारक अघ देहा ❀ अहै एक श्रीकृष्ण सनेहा ॥९॥

१ कुपुत्र २ प्रशंसा ३ नहिं ।

दो० ताते सब तज कृष्ण भज, नृप बहुलाश्व सुजान।
अब आगे श्रीप्रभु चरित, सुन सावध दे कान ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीकृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे प्रथम सोपान समाप्त ॥

कह मुनि एक दिना द्वौ भैया ❀ मिल निज वयसन वत्स चरैया।
प्रातःकाल कलेऊ करकें ❀ क्रीड़ा भाजन ले मुद भरकें ॥
युत वत्सन गवने वन माहीं ❀ विहरन लगे मोद युत ताहीं।
कर बहु खेल मेल मन काना ❀ वत्स घास चरहीं मन माना ॥
जब जल पीवन इच्छा भयऊ ❀ श्रीयमुना तटपै ते गयऊ।
तहँ बछरन को उदक पिवायो ❀ आपहु पियो वारि मन भायो ॥
तिहँ थल एक जन्तु बड़ भारी ❀ देख्यो गोपन शैलाकारी।
शैल शिखर सम ऊचो जोऊ ❀ काठिन वज्र सम वपु जिहँ होऊ॥
इह प्रकार लख ते सब बाला ❀ डरप गये निज हिये विशाला।
नाम बकासुर वलि अति भारी ❀ जाकी चोंचअतिहिअनियारी१०॥

दो० बगला को सो रूप धर, शीघ्र श्याम तट आय।
निगल गयो नँदलाल को, मन में बहु हरषाय॥१०॥

सो० जाके उदर समाइँ, अखिल अण्ड सो बक उदर।
अगम गती हरि गाइँ, श्रुतिशिव आदिक गण असर॥६॥

१ बगुला २ पर्वताकार ३ तीक्ष्ण ४ देव।

करत चरित प्राकृत नर जैसे ❀ लखैं भेद नहिं ऐसे वैसे ।
श्रीगुरु कृपा पात्र जन जोऊ ❀ कृष्ण चरित्र तत्त्व लख सोऊ ॥
निगल्यो लख्यो लाल को जवही ❀ वलादि सव व्याकुल भै तवही ।
इन्द्रियगन अचेत विन प्राना ❀ तस अचेत गति गोपन नानो ॥
निज जन कष्ट निवारन हेतू ❀ करुणासिन्धु कृष्ण व्रजकेतू ।
सर्व समर्थ स्वतन्त्र सुशीला ❀ हेनृप तिहँ तहँ किय असलीला॥
कृष्ण तेज अति असह महाना ❀ ज्वलित अग्नि अंगार समाना ।
तासों तिहँ वक दानव केरो ❀ तालु जरन लाग्यो अस हेरो ॥
तव त्वर व्यथित होय तिहँ काला ❀ हे नृप उगल दियो नँदलाला ।
पुन वो अतिशय क्रोधित होई ❀ अपन चोंचसों मारन सोई॥११॥

दो० हरि सन्मुख आवत भयो, तव श्रीकृष्ण कृपाल ।
जो देवन आनन्द प्रद, दानव वृन्दन काल॥ ११ ॥

सकल वालकन निरखत ताको ❀ कंस सखा वक दानव वाँको ।
द्वौ करसों द्वौ चोंच पकरके ❀ दिय विदार त्वर लीला करकें॥
यथा पूर्व चीर्यो तृणवीरें ❀ खेलत वाल तृणेहि जसचीरें ।
तथा याहिं आपे सहजहि मार्यो ❀ पकर चोंच तृण सदृशविदार्यो॥
देवन गगन सुमन वरसाये ❀ जय जय मंगल रवँ मद गाये ।
शंख नगारे मुदित वजावैं ❀ वहुविध कृष्ण स्तुति सुर गावैं ॥
देख गोप सव विस्मित भयऊ ❀ है सव मुदित विचारत रह्यऊ ।
राम आदि सव गोपन वाला ❀ वक मुख मुक्त निरख नंदलाला।

१ अनेक (सव) २ शूरवीर तृणासुरको ३ तिनके को ४ शब्द ।

प्राण लौट आवें तनु माहीं ❀ इन्द्रियगन चेतन हैं ताहीं ।
तथा गोप सावध मन भयऊ ❀ नूतन मोद सबन पुन लह्यऊ १२॥

दो० नन्दनन्दनहिं निज निकट,आवत लख सब ग्वाल ।
धाय वत्सों मुदित ह्वै, लिय लगाय नँदलाल॥१२॥

सो० कर सब एकहि ठाम, निज निज वत्सन आय व्रज ।
विपिन चरित्र ललाम, कहे मुदित व्रजजननको ॥७॥

सुन बालन बातें व्रजवासी ❀ जिन है कृष्ण प्राण धन रासी ।
चकित हृदय तें गोप रु गोपी ❀ महदाश्चर्य मान मन रोपी ॥
जैसे मृत्यु वदन ह्वै मुक्ता ❀ आवै वगद कोउ जिय युक्ता ।
या विधि उत्कण्ठित बहु भारी ❀ व्रजके सकल मनुज अरु नारी ॥
कृष्णचन्द्र मुखचन्द्र विलोकें ❀ रहें अतृप्त सदा उर ओकें ।
महदाश्चर्य युक्त सब रह्यऊ ❀ प्रातःकाल सबन अस कह्यऊ ॥
या बालक पै मृत्यु अरिष्टा ❀ महत महान आय प्रद कष्टा ।
परन्तु जिन जिननें भय दयऊ ❀ तिन तिनही को मृत्यू भयऊ ॥
बड़े बड़े राक्षस भयदाई ❀ आये करन अनिष्ट महाई ।
तदपि भई या बालक रक्षा ❀ मरे आपही लख्यो प्रतक्षा ॥१३॥

दो० यथा अग्नी में आयकें, मरहीं स्वयं पतंग ।
तथा स्वयं तिनहूँ अपी, कियो नष्ट निज अंग ॥१३॥

सो० अहो सत्य जिन वाक, अस वेदज्ञ जु विप्रवर ।
तिन के वचन मनाक, नहिं मिथ्या होवैं कबहु ॥८॥

देखौ मुनिवर गर्ग जु कह्यऊ ❀ सो सव सत्य सत्य ह्वै रह्यऊ ।
कह मुनि याविधि सव व्रजवासी ❀ राम रु श्याम चरित सुखरासी ॥
कहत सुनत अति प्रमुदित होई ❀ या विन अपर न जानैं कोई ।
याहीते भव सम्भव तापू ❀ भूल जाइँ सव ही गत पापू ॥
या विध आँख मिचौनी लीला ❀ पुल वाँधन लीला शुभशीला ।
कपिन नाइँ कूदन अरु नाचन ❀ मोरन मिल नाचन अनुराचन॥
इह विधि कर लीला सुखदाई ❀ दें सुख व्रजवासिन द्वौ भाई ।
कह नृप पूर्व दैत्य यह को है ❀ किहँ कारन वक दानव भो है ॥
किम श्रीकृष्ण हाथ भो मुक्ता ❀ असुर देह तज जीवन मुक्ता ! ।
यह संशय मुनि मो मन माहीं ❀ निराकरण कीजे अव याहीं१४॥

दो० कह नारद हय ग्रीव सुत, उत्कल नाम नृपाल ।
रण में सव सुर जीत लिय, हरेउ छत्र सुरपाल ॥१४॥

अरु सव नृपन राज हर लीनों ❀ दैत्य महावलि वड़ मद पीनों ।
राज्यासन शतहायन भोगा ❀ निज वश किये वड़े वलि लोगा॥
एक काल सो विचरत भयऊ ❀ सिन्धू सागर संगम गयऊ ।
जाजलि मुनि सिध कुटी समीपा ❀ आयो वारि वहत जहँ दीपा ॥
वृहद जाल ता जल में डारी ❀ कर्षत मीनन खल मति धारी ।
मुनि ता प्रति निषेध अपि कीनों ❀ नहिं मान्यो दुर्मति दुख दीनों॥
तव जाजलि ऋषि सिद्ध महाई ❀ दियो शाप ताको रिसियाई ।
वकवत हर्षत खावत मीना ❀ हो वक तोहिं शाप मैं दीना ॥

१ इन्द्र २ एकसौ वर्ष ।

प्राण लौट आवैं तनु माहीं ❀ इन्द्रियगन चेतन
तथा गोप सावध मन भयऊ ❀ नूतन मोद सबन पुन

दो० नन्दनन्दनहिं निज निकट, आवत लख सव
धाय वत्ससों मुदित ह्वै, लिय लगाय नँदला

सो० कर सब एकहि ठाम, निज निज वत्सन आय
विपिन चरित्र ललाम, कहे मुदित व्रजजननव

सुन बालन बातें व्रजवासी ❀ जिन है कृष्ण प्राण धन र
चकित हृदय तें गोप रु गोपी ❀ महदाश्चर्य मान मन रो
जैसे मृत्यु वदन है मुक्ता ❀ आवै वगद कोउ जिय युव
या विधि उत्कण्ठित वहु भारी ❀ व्रजके सकल मनुज अरु ना
कृष्णचन्द्र मुखचन्द्र विलोकें ❀ रहैं अतृप्त सदा उर ओ
महदाश्चर्य युक्त सब रहाऊ ❀ प्रातःकाल सबन अस कहा
या बालक पै मृत्यु अरिष्टा ❀ महत महान आय प्रद क
परन्तु जिन जिननें भय दयऊ ❀ तिन तिनही को मृत्यू भयउ
बड़े बड़े राक्षस भयदाई ❀ आये करन अनिष्ट महा
तदपि भई या बालक रक्षा ❀ मरे आपही लख्यो प्रतक्षा ॥१

दो० यथा अग्नी में आयकें, मरहीं स्वयं पतंग।
तथा स्वयं तिनहूँ अपी, कियो नष्ट निज अंग ॥१

सो० अहो सत्य जिन वाक, अस वेदज्ञ जु विप्रवर।
तिन के वचन मनाक, नहिं मिथ्या होवें कबहु ॥ ८

तदा कृष्ण कर मुक्ति उपावै ❁ यामैं रञ्च न संशय लावै ।
हिरण्याक्ष आदिक विबुधारी ❁ हरिसे वैर बुद्धि जिन धारी ॥
तिन अपि सहज मोक्षको पायो ❁ सम दृष्टीपन ईश लखायो ।
अस कृपालु को निज उर धारौं ❁ वन्दौं पद पङ्कज भय टारौं ॥
कह मुनि उत्कल नृप जो रहयऊ ❁ जाजलि शाप बकासुर भयऊ ।
पुन मुनिवर वर कारन सोऊ ❁ प्रभुकर मुक्ति प्राप्त जिहँ होऊ ॥
शाप ताप हर भयउ सु कैसे ❁ भानु तपन जल कारन तैसे ।
जवैं सूर्य गर्मी वहु करहीं ❁ तवसव जल आशाउरधरहीं१७

दो॰ येन केन विधि कीजिये, सन्त संग युत नेह ।
गोपद इव भव सिन्धुतर, सफल होय नर देह॥१७॥

सो॰ दृढ़ संगति हरिदास, कहौ कहा नहिं कर सकत ।
वसन्त तिन सहवास, तजै न पलभर चतुर नर॥८॥

* इति श्रीकृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे द्वितीय सोपान समाप्त *

कह मुनि सुन मैथिल इक काला ❁ प्रातः उठे मुदित नँदलाला ।
विपिन गवन मनसा मन करकें ❁ करन गोठ वनमें उर धरकें ॥
चारु शृंग रव वयसन बाला ❁ तिन्हें जगावत भै नँदलाला ।
मिल तिनसों युत वत्सन वृन्दा ❁ वहु पक्वान लेइ व्रजचंदा ॥
गवने व्रजते विपिन मँझारा ❁ इह प्रकार श्रीनंदकुमारा ।
तिन मन मोहन संग सुहावैं ❁ सहसन नेहि वाल छवि पावें ॥

तिहँ पल भो भूपति वक्र रूपा ❀ छाड़यो तेज अपन नरभूपा ।
पाद पतित मुनिके सो भयऊ ❀ अञ्जलिबाँध वचनइम कह्यऊ१५

दो० जान्यो तव न प्रचण्ड तप, अव निज अनुचर पाहि।
आप साधुजन संग पल, मोक्ष देनको आहि ॥१५॥

शत्रु मित्र सम मानपमाना ❀ लोहा कञ्चन एक समाना ।
सुख दुख एक वृत्ति जिन आहीं ❀ तिन दर्शन दुर्लभ जग माहीं ॥
भाग्य वश्य यदि दर्शन होवे ❀ कहा लाभ तिहँ प्राप्त न जोवे ।
पारमेष्ठ्य साम्राज्य समावे ❀ योग सिद्धि वासव पद पावे ॥
तव हे जाजलि वर मुनिराई ❀ कहा वर्गत्रय मिलें न आई ।
सन्त अनुग्रह होवत जवहीं ❀ मिलत ब्रह्म पूरण अपि तवहीं ॥
मैं निज दुष्कृति को फल पायो ❀ जो मैं निज गुरु ज्ञान भुलायो ।
अव शापानुग्रह मुनि कीजे ❀ शरण जान निर्भय वर दीजे ॥
कह मुनि अस सुन मुनि हरषाई ❀ उत्पल प्रति भाष्यो मुसुकाई ।
वैवस्वत मन्वन्तर माहीं ❀ अष्टाविंशति युग में ताहीं॥१६॥

दो० द्वापरान्त जव होइ हैं, तव भारत भुवि माहिं ।
व्रज मण्डल रमणीय अति, श्रीवृन्दावन आहिं॥१६॥

परि पूरणतम प्रभु साक्षाता ❀ कृष्ण स्वयं भगवत्त विख्याता ।
चारत वत्सन विचरत ताहीं ❀ तू अपि जावे तिहँ वन माहीं ॥

---

१ ब्रह्मपद २ चक्रवर्तिराज्यपद ३ स्वर्गपद ४ धर्म अर्थ काम ।

तदा कृष्ण कर मुक्ति उपावै ❀ यामें रञ्च न संशय लावै ।
हिरण्याक्ष आदिक विवुधारी ❀ हरिसे वैर बुद्धि जिन धारी ॥
तिन अपि सहज मोक्षको पायो ❀ सम दृष्टीपन ईश लखायो ।
अस कृपालु को निज उर धारौं ❀ वन्दौं पद पङ्कज भय टारौं ॥
कह मुनि उत्कल नृप जो रह्यऊ ❀ जाजलि शाप वकासुर भयऊ ।
पुन मुनिवर वर कारन सोऊ ❀ प्रभुकर मुक्ति प्राप्त जिहँ होऊ ॥
शाप ताप हर भयउ सु कैसे ❀ भानु तपन जल कारन तैसे ।
जवै सूर्य गर्मी वहु करहीं ❀ तवसव जल आशाउरधरहीं१७

दो० येन केन विधि कीजिये, सन्त संग युत नेह ।
गोपद इव भव सिन्धुतर, सफल होय नर देह॥१७॥

सो० दृढ़ संगति हरिदास, कहौ कहा नहिं कर सकत ।
वसन्त तिन सहवास, तजै न पलभर चतुर नर॥६॥

॥ इति श्रीकृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे द्वितीय सोपान समाप्त ॥

कह मुनि सुन मैथिल इक काला ❀ प्रातः उठे मुदित नँदलाला ।
विपिन गवन मनसा मन करकें ❀ करन गोठ वनमें उर धरकें ॥
चारु शृंग रव वयसन वाला ❀ तिन्हें जगावत भे नँदलाला ।
मिल तिनसों युत वत्सन वृन्दा ❀ वहु पक्वान लेइ व्रजचंदा ॥
गवने व्रजते विपिन मँझारा ❀ इह प्रकार श्रीनंदकुमारा ।
तिन मन मोदन संग सुहावें ❀ सहसन नेहि वाल छवि पावें ॥

लकुट श्रृंग वेणू कर जिनके ❁ अरुनिजनिज छीके कर तिनके।
निज निज सहसन वत्सन युक्ता ❁ गवने हरि मिल प्रमुदित मुक्ता ॥
हरिके वत्स असंख्य सुहावैं ❁ तिनसों निज वछरनहिं मिलावैं।
ग्वाल केलि कर मुदित चरावैं ❁ जहँतहँ विहर विपिनसुखपावैं१८

दो० वहु प्रकार मणि जटित सुठ, कंचन भूषण अंग ।
तद्यपि चित्र विचित्र फल, अरु मृदुदल वहु रंग॥१८॥

सो० पुष्प गुच्छ शिखि पिच्छ; खरिया गेरु प्रभृति जे ।
इन वस्तुन सों स्वच्छ,वहु विधि आभूषण रचैं॥१०॥

सव निज निज तनुको श्रृंगारा ❁ करैं मुदित चित विविध प्रकारा ।
पुन आपस में छीकन चोरी ❁ करहीं जिन मुदिता नहिं थोरी ॥
जो को जान लेत है जवही ❁ फेंकत सो दूसर तट तवही ।
पुन वो अपि मँद मुसकत ताहीं ❁ तृतिय ग्वालपै फेंकत आहीं ॥
इह विधि केलि करत वन माहीं ❁ वयसन देख कृष्ण मुद आहीं ।
वन शोभा निरखन के हेतू ❁ यदि चल जाइँ दूर व्रजकेतू ॥
तव सव सखा होड़ वँध करकें ❁ मैंहि पूर्व मैं पूर्व उचरकें ।
धावत हैं हरि परसन कारन ❁ या विधि खेलत हरि मिलवारन॥
के प्रमुदित है वेणु वजावैं ❁ केउ वजाय श्रृंग हरषावैं ।
के अलिगन मिल डोलत गावैं ❁ के तिन लख हँस तारि वजावैं१९

दो० के कोकिल गन संग रह, तिन अनुकरण सुवोल ।
वोलें मनहर मुदित चित,इह विधि करत किलोल१९

---

१ उनके नाईं ।

के नभचर पक्षिन की छाया ❀ तहिं संग भाजत हुलसाया ।
के हंसन के पाछे चालैं ❀ मंद मंद चल हँसगति पालैं ॥
के वक सम चुपके से राजैं ❀ जनु वड़ संतहु आय विराजैं ।
के मोरन मिल वहु विधि नाचैं ❀ विन नाचन अन्यत्र न राचैं ॥
केउ वंदरन पूँछ पकरकें ❀ खैंचत तिन्हें मोद मन धरकें ।
जब वे द्रुम ऊपर चढ़ि जावैं ❀ तव तिन पाछे आपहु धावैं ॥
धाय कूद वृक्षन चढ़ि तेऊ ❀ खेलत इम वंदरनसों केऊ ।
केउ कान चपटे कर ताहीं ❀ अरु घुन्नाय घुरक रह वाहीं ॥
अरु कूदें वँदरन के संगा ❀ के फुदकें गन मेंडुक अंगा ।
जव वे यमुना जल डुवजावैं ❀ तिन मिल गोता मार सुहावैं२०

दो० के निज छाया सों रमैं, करहिं हाँसि पुन तेउ ।
कूप वावड़ी माहिं स्वर, ऊंचे वोलैं केउ ॥ २० ॥

उनमेंते प्रतिध्वनि जव आवै ❀ तव ताको ते गारि सुनावैं ।
इह विधि विज्ञानिन को दयऊ ❀ ब्रह्मानुभव मोद जो रह्यऊ ॥
तस पुन दासभावयुत भक्ता ❀ तिन्हेंस्वामिपन सुखदियक्ता।
प्राकृत जनको अति मनहारी ❀ नर वालकपनसों सुखकारी ॥
नन्दनँदन व्रजचन्द समाना ❀ आनंदकंद द्वंद कर हाना ।
सवन भाव अनुगुण सुख दयऊ ❀ भावात्मक हरि हैं श्रुति कह्यऊ॥
जिन जिन पुण्य वृंद युत देहा ❀ पुन जिनको प्रभुमें दृढ़ नेहा ।
तिन तिनहीसों तिन अभिलासा ❀ प्रभुवहुविधकिय केलि विलासा॥

---

१ अनुसार २ भावस्वरूप ।

अरु निज भाइ बहिन प्रति देवौं ❀ सुष्ठु तिलांजलि तब सुख लेवौं ।
तब ये सबरे जे ब्रजवासी ❀ स्वतः होवहीं यमपुर वासी ॥
यथा देहते निकसे प्राना ❀ स्वयं नष्ट होवैं वपु नाना ।
या विधि प्राण धारि जे कह्यऊ ❀ तिन हित प्राण पुत्रही रह्यऊ ॥
अस निश्चय करकें मन माहीं ❀ वड़ शैलाकृति किय तिहँताहीं ।
निचलो ओष्ठ अवनि में जाको ❀ ऊर्ध्व ओष्ठ वारिदं लग वाको ॥
तम गिरि गुहा सदृश नहिं अंता ❀ असनिज मुख पसार सुरहंता ।
शैल शिखर सम दाढ़ें अहहीं ❀ चौड़े पथं जिम जिह्वा रहही ॥
परुषांनिल नाईं जिहँ श्वांसा ❀ ज्वलित वन्हिसम दृष्टिविकासा ।
अस विचित्र वस्तू जब देखी ❀ बालन श्रीवन शोभा लेखी२३॥

दो० किन्तू अजगरसो वदन, जान सहजहि तेउ ।
लीला पूर्वक निज हिये, शंक करन लग वेउ॥२३॥

कहत परस्पर आपुस माहीं ❀ अहो मित्र सोचो तुम याहीं ।
कहो कहा यह अतिशय भारी ❀ दीखत है निश्चल असुधारी ॥
हम सबहिन भक्षण अभिलासा ❀ यहाँ आय बैठो सहुलासा ।
वदन पसारें बैठो आहीं ❀ देखो कहा व्याल तो नाहीं ? ॥
अहै सत्य दीखत भी ऐसे ❀ ओष्ठ उपरलो है अहि जैसे ।
रवि किरणन सों अरुण भयो है ❀ जो बादर सम दीख रह्यो है ॥
अरु जो सूरज की परछाईं ❀ तासों लाल अवनि के नाईं ।

१ सुन्दर (अच्छी तरह से) २ पर्वत समान ३ ऊपर लो ४ बादर ५ अघासुर ६ रास्ता ७ कठिन वायू ८ प्राणधारी ।

जिन दारुण तप में अनुरागा ❀ पुन बहु विधि करहीं बहु यागा।
और जीत मन इन्द्रिन योगी ❀ जे नित ब्रह्मानंदहिं भोगी॥२१॥

दो० धूरि कृष्ण पद पद्म की, इनको प्राप्त न होय।
अस प्रभाव को कृष्ण प्रभु, है चख गोचर सोय॥२१॥

सो० सहजहि ठाड़ो होइ, जिन ब्रजजन सन्मुख सदा।
तिन सुभाग्य कहकोइ, जिंहहित तरसत भवप्रभृति[१]

या प्रकार सबरे ब्रज बाला ❀ नित खेलें वन मिल नँदलाला।
यमुना निकट रम्य सुस्थाना ❀ बालकेलि मनहर तहँ ठाना॥
इक दिन एक अघासुर ताहीं ❀ गोपन केलि देख मन माहीं।
अति क्रुद्ध भयो करी अभिलासा ❀ गोपन मारन तिहँ दुखरासा॥
जहाँ खेल रह ब्रज के बाला ❀ पहुँच्यो आय तहाँ विकराला।
जिहँ भय अमृत पीवन हारे ❀ सब सुरगण कंपत बहु भारे॥
निज जीवन मनसासों देवा ❀ मरन बाट तिहँ देख रहेवा।
बकी बकासुर को लघु भैया ❀ कंस पठायो बड़ दुखदैया॥
सोउ दैत्य गोपन युत काना ❀ निरख विचार यही मन ठाना।
नाशक मोर सहोदर येही ❀ तासों हतौं सबालन एही॥२२॥

दो० पुन अपि निज मन माहिं सो, इह विध करै विचार।
सहित कृष्ण जब सबनको, पहुँचावौं यमद्वार॥२२॥

१ शिव आदि।

अरु निज भाइ वहिन प्रति देवौं ❀ सुष्ठु तिलांजलि तव सुख लेवौं ।
तव ये सवरे जे व्रजवासी ❀ स्वतः होवहीं यमपुर वासी ॥
यथा देहते निकसे प्राना ❀ स्वयं नष्ट होवैं वपु नाना ।
या विधि प्राण धारि जे कह्यऊ ❀ तिन हित प्राण पुत्रही रह्यऊ ॥
अस निश्चय करकें मन माहीं ❀ वड़ शैलांकृति किय तिहँताहीं ।
निचलो ओष्ठ अवनि में जाको ❀ ऊर्ध्व ओष्ठ वारिदं लग वाको ॥
तम गिरि गुहा सदृश नहिं अंता ❀ असनिज मुख पसार सुरहंता ।
शैल शिखर सम दाढ़ैं अहहीं ❀ चौड़े पथ जिम जिह्वा रहही ॥
परुषाँनिल नाईं जिहँ श्वासा ❀ ज्वलित वन्हिसम दृष्टिविकासा ।
अस विचित्र वस्तू जव देखी ❀ वालन श्रीवन शोभा लेखी२३॥

दो० किन्तू अजगरसो वदन, जान सहजहि तेउ ।
लीला पूर्वक निज हिये, शंक करन लग वेउ॥२३॥

कहत परस्पर आपुस माहीं ❀ अहो मित्र सोचो तुम याहीं ।
कहो कहा यह अतिशय भारी ❀ दीखत है निश्चल असुधारी ॥
हम सवहिन भक्षण अभिलासा ❀ यहाँ आय वैठो सहुलासा ।
वदन पसारें वैठो आहीं ❀ देखो कहा व्याल तो नाहीं ? ॥
अहै सत्य दीखत भी ऐसे ❀ ओष्ठ उपरलो है अहि जैसे ।
रवि किरणन सों अरुण भयो है ❀ जो वादर सम दीख रह्यो है ॥
अरु जो सूरज की परछाईं ❀ तासों लाल अवनि के नाईं ।

१ सुन्दर (अच्छी तरह से) २ पर्वत समान ३ ऊपर लो ४ वादर ५ अघासुर ६ रास्ता ७ कठिन वायू ८ प्राणधारी ।

निचलो अधर अहै पुन ताहीं ❀ दहिने वाम गुहा गिरि आहीं ॥
ऐसी लगै मनहु अहि केरो ❀ वदन अंत है तुम सब हेरो ।
सबते ऊपर अहै जु भाई ❀ शैल शिखर सम देत दिखाई२४

दो० सो जनु अहि को डाढ़ है, अरु ये दीखत जोउ ।
चौड़ो लंबो मार्ग है, मनहु जीभ तिहँ होउ ॥ २४ ॥

तथा शिखिर में जो अँधियारौ ❀ सोअहि मुख जनुतमहि विचारौ।
तीक्षण दाढ़ सदृश जो अहही ❀ अतिहि उष्णं वायू यह वहही ॥
मनहु सर्प मुख श्वासहि रहयऊ ❀ वामें जे जंतू जर गयऊ ।
तिनकी जो दुर्गंधी आई ❀ सोअहि आंत गंध जनु भाई॥
याके वदन धसें हम सबही ❀ तो का हम सबहिनको तवही ।
निगल जायगो ? कहो विचारी ❀ जो निगलन आशा इन धारी ॥
अरुयदि निगल जाय नहिं चिंता ❀ क्षणमें कृष्ण करै इन अंता ।
पूर्व यथा चक मार गिरायो ❀ या विधि काहि २ मोद चढ़ायो ॥
मोहन मुख पंकज मनहारी ❀ निरख बाल गन मुदिता भारी ।
ताल बजावत हँसत सब तेऊ ❀ जावत भे आगे को वेऊ ॥२५॥

दो० अजगर देह वनायकैं, वैठो दैत्य जु ताहिं ।
वालनकी सुन वात इम, झूठ लखीं हिय माहिं॥२५॥

किन्तु कृष्ण तिहँ दैत्य पछानें ❀ सब जीवन अंतर गत जानें ।
अस अंतरयामी घनश्यामा ❀ अपननपै करुणा वसुधामा ॥

---

१ अग्नी २ गर्म ।

तिन प्रभु जे स्वकीय निज संगा ❀ खेलत रहत बाल सउमंगा ।
उन बालन वाके मुख माहीं ❀ घसतो देख सबन को ताहीं ॥
करन निषेध चहैं जबताईं ❀ वत्स सहित बालक तबताहीं ।
वा अहि मुख में प्रविशे जाई ❀ किन्तु बकारी कृष्ण कन्हाई ॥
तिहँ मुख में नहिं गे ता हेतू ❀ तिनैं न निगल्यो सुरदुखदेतू ।
करत विचार हिये निज माहीं ❀ अभी कृष्ण तौ आयो नाहीं ॥
जो मो भैया भगनी हंता ❀ आवे, निगलौं सबन तुरंता ।
सबन अभय प्रद कृष्ण कन्हाई ❀ अपन अनन्य बालसमुदाई२६॥

दो० जे निज करसों निकसके, मृत्यु उदर गै देख ।
करुणासों पीड़ित भये, उर आश्चर्यहि लेख ॥२६॥

करत विवेचन निज हिय माहीं ❀ दुष्ट अघासुर यह जो आहीं ।
याके तनुमें रहैं न प्राना ❀ बालन अपि न होय असुहाना॥
ये द्वै बातें किम बन जावैं ❀ इह विधि प्रभु विचार हिय लावैं ।
सो केवल तिन है नर लीला ❀ वस्तुत सब कछु जानत शीला॥
जाके श्वास प्रकट श्रुतिचारी ❀ लोक वेद ज्ञाता जिहँ धारी ।
अरु जिनं जानैं सब कछु जानैं ❀ तिनते कौन उपाय छिपानैं ॥
इम विचार कर जान उपाऊ ❀ घसे असुर मुख,तिहँ वध भाऊ।
जिनमें अखिल अंडवस रह्याऊ ❀ असुर उदरअस कृष्ण जु गयऊ॥
वारिद वृंदन छिपे जु देवा ❀ जिन उर अति भयभीत रहेवा ।
तिन केशव कांक्षा नहिं जानी ❀ ताहिततिनकीमतिअकुलानी२७

१ खास अपने २ अर्थात्–श्रीकृष्णके स्वरूप को जानने से ३ भाव (इच्छा) ४ इच्छा ।

दुष्ट सर्प तनुते इक जोती ❀ अतिअद्भुतअरु महतसुधोती॥
निकस दसों दिसि करत प्रकासा ❀ कृष्ण प्रतीक्षा किय नभ वासा।
जब हरि बाहिर निकसे ताहीं ❀ सब देवन के देखत बाहीं॥
श्रीभगवत में गई समाई ❀ इह विधि असुर मुक्ति तहँ पाई।
यदा अघासुर को वध भयऊ ❀ महत हर्ष देवन है गयऊ॥२९॥

दो॰ निज कृतिकारक कृष्ण पै, सुमन सुमन बरसाय।
बहुविधि पूजा करत भे, हिये मोद नहिं माय॥२९॥

अरु अप्सरा नाचनें लागीं ❀ बहु प्रकारसों हिय अनुरागीं।
सुंदर गायक गंध्रव वृंदा ❀ गावें गीत विविध ब्रजचंदा॥
वाद्यवंत बहु वाद्य बजावें ❀ तामें ते हरि यशही गावें।
अवनीसुर स्तुति वचन उचारें ❀ औरहु सज्जन वृंद अपारें॥
जय जय शब्द करें हुलसाई ❀ सो शोभा लव बरणि न जाई।
तेहिं समय वे अद्भुत बाजे ❀ स्तोत्र पाठ जयधुनि युत छाजे॥
इत्यादिक वा उत्सव माहीं ❀ भये विविध मंगल रव ताहीं।
तिहँ सुनें चतुरानन ततकाला ❀ वाहि ठौर आयो भूपाला॥
कृष्ण प्रशंस निरख मन माहीं ❀ बड़ विस्मय को पायो ताहीं।
कह मुनि हे मैथिल नरराई ❀ अघ दानव जो हत्यो कन्हाई३०

दो॰ तिहँ अजगर सूखो चरम, श्रीवन बहुदिन ताइँ।
खेलनको बालन लिये, भयो गुहा के नाइँ॥ ३० ॥

---

१ निर्मल २ राह देखते देखते।

दो० सुरकुल हाहाकार भो, असुरन मोद महान ।
तब अविनाशी कृष्ण प्रभु, देवन आकुल जान॥२७॥

वत्स बाल अरु निजको ताहीं ❀ चूर्ण करण इच्छा जिहँ आहीं ।
अस जो दुष्ट अघासुर अहही ❀ ताके गर प्रभु बाढ़ तहहीं ॥
जनु विराट वपु तहँ है धार्यो ❀ दैत्य निधनको हेतु विचार्यो ।
जब तिहँ दैत्य कंठ रुक गयऊ ❀ तब ताकी गति इह विध भयऊ॥
इत उत नाचन लागे नैना ❀ रोम रोम सो भयो अचैना ।
अरु जब श्वास निकसनैं लागे ❀ ठौर न पावैं, कैसहु आगे ॥
इह विधि असुर कलेवर जोऊ ❀ चहूँ ओर घुट गयऊ सोऊ ।
कहूँ गैल पाई नहिं जबही ❀ ब्रह्मरंध्रते निकस्यो तबही ॥
जब सब प्राण अघासुर केरे ❀ ब्रह्मरंध्र है निकसे हेरे ।
तब मुकुंद प्रभु कृपानिधाना ❀ मरे वत्स बालक जे जाना॥२८॥

दो० तिनैं अपन अमृतमयी, कृपादृष्टि सौं ताहिं ।
दिय उठाय तत्कालही, हे नृप या कृति माहिं॥२८॥

कृष्ण केरि कछु नाहिं बड़ाई ❀ कृष्ण दृष्टिकी अस प्रभुताई ।
जिहँ केशवकी दृष्टिहि सेती ❀ अंड अनंत सृष्टि है जेती ॥
चल रहि है नहिं तो ततकाला ❀ होय नाश यह जगत विशाला ।
प्रभु सबसों मिल बाहिर आये ❀ ग्वाल बाल निज हिय हरपाये॥
श्रीमुकुंद भगवत जब ताईं ❀ अघ मुख नहिं निकसे तबताईं ।

---

१ मरण २ शरीर ३ अघासुर ।

दुष्ट सर्प तनुते इक जोती ❀ अतिअद्भुतअरु महतसुधोती॥
निकस दसों दिसि करत प्रकासा ❀ कृष्ण प्रतीक्षों किय नभवासा।
जब हरि बाहिर निकसे ताहीं ❀ सब देवन के देखत बाहीं॥
श्रीभगवत में गई समाई ❀ इह विधि असुर मुक्ति तहँ पाई।
यदा अघासुर को वध भयऊ ❀ महत हर्ष देवनं हे गयऊ॥२९॥

दो० निज कृतिकारक कृष्ण पै, सुमन सुमन बरसाय।
बहुविधि पूजा करत भै, हिये मोद नहिं माय॥२९॥

अरु अप्सरा नाचनें लागीं ❀ बहु प्रकारसों हिय अनुरागीं।
सुंदर गायक गंध्रव वृंदा ❀ गावें गीत विविध ब्रजचंदा॥
वाद्यवंत बहु वाद्य बजावें ❀ तामें ते हरि यशही गावें।
अवनीसुर स्तुति वचन उचारें ❀ औरहु सज्जन वृंद अपारें॥
जय जय शब्द करें हुलसाई ❀ सो शोभा लव वरणि न जाई।
तेहिं समय बे अद्भुत बाजे ❀ स्तोत्र पाठ जयधुनि युत छाजे॥
इत्यादिक वा उत्सव माहीं ❀ भये विविध मंगल रव ताहीं।
तिहँ सुनें चतुरानन ततकाला ❀ वाहि ठौर आयो भूपाला॥
कृष्ण प्रशंस निरख मन माहीं ❀ बड़ विस्मय को पायो ताहीं।
कह मुनि हे मैथिल नरराई ❀ अघ दानव जो हत्यो कन्हाई३०

दो० तिहँ अजगर सूखो चरम, श्रीवन बहुदिन ताईं।
खेलनको बालन लिये, भयो गुहा के नाईं॥ ३० ॥

१ निर्मल २ राह देखते देखते।

अस नारद मुनिकी सुन वानी ❀ हर्षित चित पूछत नृप ज्ञानी ।
कोन दैत्य यह पूरव काला ❀ लीन भयो जो हरि नँदलाला ॥
अहो वैर अनुबंधन[१] करकें ❀ गयो मुक्ति पद भवनिधि तरकें ।
कह मुनि शंखासुर सुत जोऊ ❀ नाम अघासुर को यहँ होऊ ॥
युवा रूप सुंदर विक्षाता ❀ मानो काम अपर साक्षाता ।
मलयाचल गिरि जावत भयऊ ❀ मुनिवर अष्टावक्र जु रह्यऊ ॥
तिहँ कुरूप कहकें यह पापी ❀ हँस्यो न जान्यो वड़ो प्रतापी ।
कुटिल चलन लखमुनि दिय शापू ❀ हे खल तुम अहि हो लह तापू ॥
तव मुनि पाद पतित भो सोऊ ❀ वंजित[२]मद निर्मानी होऊ ।
असतिहँनिरख मुदितमुनि भयऊ ❀ तव दानव प्रतिवरं[३] वर दयऊ३१॥

दो० कोटि काम लावण्य[४] जिहँ, अस मोहन व्रजसार ।
तोर उदर प्रविशे यदा, वृंदाविपिन मँझार ॥३१॥

तव अहि तनुते मुक्ती पावो ❀ ये मो वचन सत्य उर लावो ।
नारद कहत अघासुर जोऊ ❀ अष्टावक्र शाप कर सोऊ ॥
भयो सर्प आकृति दुखदाई ❀ पुन वर कर मुक्ती तिहँ पाई ।
देवन दुर्लभ पद तिहँ पायो ❀ जाहित हरि वपु माहिं समायो॥
कह नारद मुनि नृप के पाहीं ❀ हरि कुमार[५] वय कृत जो आहीं ।
अरु अहि मृत्यू से निज केरो ❀ किय वचाव जो वालन हेरो ॥
सो व्रज ग्वाल वालकन ताहीं ❀ वड़ विसमय है कें हिय माहीं ।
वय पौगण्ड[६] घोप में भाख्यो ❀ व्रजवासिनहुसुननअभिलाख्यो॥

१ संबंध २ रहित ३ उत्तम ४ शोभा ५ पांचवर्षकी उमरि ६ दश वर्ष तक अवस्था ।

सुनत सकल ब्रजवासी जेऊ ❀ अति आश्चर्य मग्न भै तेऊ ।
यशुमति प्रथमहु सुन्यो जु काना ❀ वरस और बकते मो काना३२॥

दो० कियो मुक्त माधव प्रभू, तासों मुदित महान ।
किन्तु लालपै कष्ट बहु, आवत हैं अस मान ॥३२॥

सो० बहु व्याकुल हिय माहिं, रहै यशोमति मात नित ॥
पुन बालन मुख ताहिं;सुन्यो अघासुर घात अपि१२

ताहित आकुलता अप्रमाना ❀ सुत सनेह हिय मग्न महाना ।
यशुमति निज दुख रोहिणि पाहीं ❀ कह्यो कहा करनो कहु याहीं ॥
वाने कह्यो सबन बुलवावौ ❀ तिनप्रति आपन व्यथा सुनावौ।
पुन सबहिन को मंत्र जु होई ❀ करन योग्य आपन को सोई ॥
जासों कनुवाको कल्याना ❀ होय, सोइ कर्तव्य महाना ।
इम आपुस में निश्चय कीनों ❀ नंदराय प्रति सब कहि दीनों ॥
तब ब्रजराज महत सन्माना ❀ पठयो एक ग्वाल मनमाना ।
सबहिन प्रति गयऊ त्वर सोऊ ❀ सुन संदेश आय मुद होऊ ॥
वृषभानू तिय आदिक केऊ ❀ बूढ़ी बड़ी गोपि ब्रज जेऊ ।
अरु वृषरवि वर प्रभृति सयाने ❀ वृद्ध गोप ब्रजमाहिं बखाने३३॥

दो० नव उपनंद रु नंद नव, आदिक पट वृषभान ।
आये सब वृजराज घर, पायो बड़ सन्मान ॥ ३३॥

१ श्रीनारायण भगवान २ सखा ।

मधुरे स्वरसों यशुमति पाहीं ❀ कहत भयो सब सुनहीं ताहीं।
हे यशुमति व्रजरानी सुनिये ❀ विप्र वचन निज हियमें गुनिये॥
यदपि अरिष्ट लाल पै आवें ❀ तदपि याहिं नहिं नेंक दुखावें।
जिम पतंग दीपक पै आई ❀ स्वयं नष्ट ह्वै तथा कन्हाई॥३५॥

दो० हे दीपक सम ताहिपै, अरिष्ट रूप पतंग।
स्वयं आय निज देहको, सहजै करहीं भंग॥ ३५॥

सो० दीपक को कछु नाहिं, अशुभ होय हे यशुमती।
ताहित भय नहिं आहिं,कनुवाको नेंकहु अपी॥१४॥

तदपि दान कर्तव्य महाना ❀ है अरिष्ट ध्वंसन हित दाना।
यदि अरिष्ट आत्मज[1] पै आवें ❀ दान करत किल हत ह्वै जावें॥
विप्र संत याचक कर सेवा ❀ सदा सुखी लह इच्छित मेवा।
कह मुनि तब यशुमति दियदाना ❀ विप्रन प्रति नवरत्न महाना॥
अरु निज कृष्ण राम आभूषण ❀ रंकन प्रति दिय सुत हित पूषण।
संत सेव बहु विधि की कीनी ❀ सुतहितवांच्छा जिहँमतिभीनी॥
आत्मज श्रेय निमित्त अनेकू ❀ किय उत्सव मंगल विधि टेकू।
तब कछु धीरज हिय को भयऊ ❀ यशुमति सुत सनेह अस रह्यऊ॥
कह बहुलाश्व सुनहु ऋषिराई ❀ कछु पूछन की मनमें आई।
प्रणतपाल श्रीकृष्ण कन्हैया ❀ सब प्रकार अपनन सुखदैया॥३६

दो० तिन कुमार वय किय चरित, वय पौगंड मँझार।
किम ह्वै गो कारण यही, व्रजवासी जे चार॥३६॥

[1] पुत्र।

कहत यशोमति सबहिन पाहीं ❀ कहो मंत्र सब मिलके याहीं ।
कहा करौं अरु कहँ चलि जावौं ❀ किहँ विधि सुवनकुशलतापावौं॥
मो सुतके जु अरिष्ट घनेरे ❀ आवत हैं ते अतिशय नेरे ।
पूर्व महावन को तज दीनो ❀ शिशु हित इह वृंदावन चीनों ॥
अब यह त्याग कहौ कहँ जावौं ❀ जाय जहाँ निर्भय सुख पावौं ।
यह मो बालक चंचल पूरो ❀ खेलन के हित है बड़ शूरो ॥
सो अपि खेलन हित वन माहीं ❀ जाय दूर मानत है नाहीं ।
अतिशय चपल बाल व्रज केरे ❀ ते अपि नहिं मानैं बहु टेरे ॥
प्रथम वत्स दानव बलवाना ❀ तिहँ ते राख्यो श्रीभगवाना ।
पुना बकासुर दानवराई ❀ ग्रस लीनों मो बाल कन्हाई२४॥

दो॰ तिहँ ते अपि भो मुक्त जब, अघ दानव वन आय ।
निगल्यो प्राणाधार सुत, दीनों देव बचाय ॥३४॥

सो॰ ताहित अब मैं नाहिं, वत्स चरावन वन पठौं ।
राखौं निज गृह माहिं,कहौं सत्य वच शपथ कर१२

कह मुनि इमकह यशुमति ताहीं ❀ रोवन लगी पगी दुख माहीं ।
यह गति यशुमति केरि विलोकी ❀ सबकी समुझावन मति रोकी ॥
सकल शोक उदधी के माहीं ❀ अहैं मग्न रोवत सुधि नाहीं ।
तब तहँ बूढ़ो गोप सुनंदा ❀ तिहँ निज अंक[1] कियो व्रजचंदा॥
अति सुकुमार मनोहर भारी ❀ कृष्णकमल मुख मुदित निहारी॥
धीरज धर ऋषि गर्गाचारी ❀ तिहँ वच सुमरे हिये मँझारी ॥

१ गोद ।

मधुरे स्वरसों यशुमति पाहीं ❀ कहत भयो सब सुनहीं ताहीं ।
हे यशुमति व्रजरानी सुनिये ❀ विप्र वचन निज हियमें गुनिये ॥
यदपि अरिष्ट लाल पै आवैं ❀ तदपि याहिं नहिं नेंक दुखावैं ।
जिम पतंग दीपक पै आई ❀ स्वयं नष्ट ह्वै तथा कन्हाई ॥३५॥

दो० हे दीपक सम ताहिपै, अरिष्ट रूप पतंग ।
स्वयं आय निज देहको, सहजै करहीं भंग ॥ ३५ ॥

सो० दीपक को कछु नाहिं, अशुभ होय हे यशुमती ।
ताहित भय नहिं आहिं, कनुवाको नेंकहु अपी॥१४॥

तदपि दान कर्तव्य महाना ❀ है अरिष्ट ध्वंसन हित दाना ।
यदि अरिष्ट आत्मज[१] पै आवैं ❀ दान करत किल हत ह्वै जावैं ॥
विप्र संत याचक कर सेवा ❀ सदा सुखी लह इच्छित मेवा ।
कह मुनि तब यशुमति दियदाना ❀ विप्रन प्रति नवरत्न महाना ॥
अरु निज कृष्ण राम आभूषण ❀ रंकन प्रति दिय सुत हित पूषण ।
संत सेव बहु विधि की कीनी ❀ सुतहितवांच्छा जिहँमतिभीनी॥
आत्मज श्रेय निमित्त अनेकू ❀ किय उत्सव मंगल विधि टेकू ।
तब कछु धीरज हिय को भयऊ ❀ यशुमति सुत सनेह अस रह्यऊ॥
कह बहुलाश्व सुनहु ऋषिराई ❀ कछु पूछन की मनमें आई ।
प्रणतपाल श्रीकृष्ण कन्हैया ❀ सब प्रकार अपनन सुखदैया३६

दो० तिन कुमार वय किय चरित, वय पौगंड मँझार ।
किम ह्वै गो कारण यही, व्रजवासी जे बार ॥३६॥

१ पुत्र ।

कहत यशोमति सबहिन पाहीं ❀ कहो मंत्र सब मिलके याहीं ।
कहा करौं अरु कँह चलि जावौं ❀ किँह विधि सुवनकुशलतापावौं॥
मो सुतके जु अरिष्ट घनेरे ❀ आवत हैं ते अतिशय नेरे ।
पूर्व महावन को तज दीनो ❀ शिशु हित इह वृंदावन चीनों ॥
अब यह त्याग कहौ कहँ जावौं ❀ जाय जहाँ निर्भय सुख पावौं ।
यह मो बालक चंचल पूरो ❀ खेलन के हित है बड़ शूरो ॥
सो अपि खेलन हित वन माहीं ❀ जाय दूर मानत है नाहीं ।
अतिशय चपल बाल ब्रज केरे ❀ ते अपि नहिं मानैं बहु टेरे ॥
प्रथम वत्स दानव बलवाना ❀ तिहँ ते राख्यो श्रीभगवाना ।
पुना बकासुर दानवराई ❀ ग्रस लीनों मो बाल कन्हाई२४॥

दो० तिहँ ते अपि मो मुक्त जब, अघ दानव बन आय ।
निगल्यो प्राणाधार सुत, दीनों देव बचाय ॥२४॥

सो० ताहित अब मैं नाहिं, वत्स चरावन बन पठौं ।
राखौं निज गृह माहिं,कहौं सत्य बच शपथ कर१२

कह मुनि इमकह यशुमति ताहीं ❀ रोवन लगी पगी दुख माहीं ।
यह गति यशुमति केरि विलोकी ❀ सबकी समुझावन मति रोकी ॥
सकल शोक उदधी के माहीं ❀ अहैं मग्न रोवत सुधि नाहीं ।
तब तहँ बूढ़ो गोप सुनंदा ❀ तिहँ निज अंक[1] कियो ब्रजचंदा॥
अति सुकुमार मनोहर भारी ❀ कृष्णकमल मुख मुदित निहारी॥
धीरज धर ऋषि गर्गाचारी ❀ तिहँ बच सुमरे हिये मँझारी ॥

१ गोद ।

मधुरे स्वरसों यशुमति पाहीं ❀ कहत भयो सब सुनहीं ताहीं ।
हे यशुमति व्रजरानी सुनिये ❀ विप्र वचन निज हियमें गुनिये ॥
यदपि अरिष्ट लाल पै आवें ❀ तदपि याहिं नहिं नेंक दुखावें ।
जिम पतंग दीपक पै आई ❀ स्वयं नष्ट ह्वै तथा कन्हाई ॥३५॥

दो॰ हे दीपक सम ताहिपै, अरिष्ट रूप पतंग ।
स्वयं आय निज देहको, सहजै करहीं भंग ॥ ३५ ॥
सो॰ दीपक को कछु नाहिं, अशुभ होय हे यशुमती ।
ताहित भय नहिं आहिं, कनुवाको नेंकहु अपी॥१४॥

तदपि दान कर्तव्य महाना ❀ हे अरिष्ट ध्वंसन हित दाना ।
यदि अरिष्ट आत्मज[१] पै आवें ❀ दान करत किल हत ह्वै जावें ॥
विप्र संत याचक कर सेवा ❀ सदा सुखी लह इच्छित मेवा ।
कह मुनि तव यशुमति दियदाना ❀ विप्रन प्रति नवरत्न महाना ॥
अरु निज कृष्ण राम आभूषण ❀ रंकन प्रति दिय सुत हित पूषण ।
संत सेव बहु विधि की कीनी ❀ सुतहितवांच्छा जिहँमति भीनी॥
आत्मज श्रेय निमित्त अनेकू ❀ किय उत्सव मंगल विधि टेकू ।
तब कछु धीरज हिय को भयऊ ❀ यशुमति सुत सनेह अस रह्यऊ॥
कह बहुलाश्व सुनहु ऋषिराई ❀ कछु पूछन की मनमें आई ।
प्रणतपाल श्रीकृष्ण कन्हैया ❀ सब प्रकार अपनन सुखदैया३६

दो॰ तिन कुमार वय किय चरित, वय पौगंड मँझार ।
किम ह्वै गो कारण यही, व्रजवासी जे बार ॥३६॥

---

१ पुत्र ।

कँह मुनिवर हे नृप बड़भागी ❀ हे प्रियवर उत्तम अनुरागी ।
सुंदर प्रश्न कियो है आपू ❀ जो तुम भगवत कथा प्रतापू ॥
सुन सुन के अपि पूछत जाते ❀ पुन पुन नूतन करिहो ताते ।
यथा जार जन इये मँझारी ❀ लगे तियन गाथा वड़ प्यारी ॥
सुनत रंच तिन तृप्ति न आसा ❀ पुन पुन पूछत नूतन भासा ।
तथा सारग्राही जे साधू ❀ तिनयह सहज सुभाव अगाधू॥
नित भगवत सुंदर यश माहीं ❀ अपन कर्ण वाणी चित ताहीं ।
रहैं लगाय निरंतर तेऊ ❀ लागैं विरस अपर रस जेऊ ॥
अरु अच्युत श्रीकृष्ण कृपाला ❀ तिनकी वार्ता परम रसाला ।
तिहँ प्रतिपल नूतन सी करहीं ❀ निज उर रंचहु तृप्ति न धरहीं२८

दो० हे नृप यद्यपि गुप्त है, तद्यपि कहुँ तुम पाहिं ।
गुरुजन नेही शिष्य पै, गुह्य बात कह ताहिं॥३८॥

सो० तोर प्रश्न अनुसार, समाधान या थल करौं ।
यहाँ सख्य रस सार,सावधान ह्वै श्रवण कर॥१७॥

प्रथम कृष्ण भोजन के हेतू ❀ पुलिन प्रशंस करत सुखदेतू ।
इह विधि वयसन पाहिं वखाना ❀ अहो पुलिन है रम्य महाना ॥
विविध पंक्तिसों भोजन केली ❀ है सक अस सम्पदा नवेली ।
यासों थल विस्तार लखायो ❀ अरुइहविधिनिजसखनसुनायो॥
देखो मृदुल स्वच्छ यह वालू ❀ किम आपन मन हरे रसालू ।

२ व्यभिचारी ।

तिन कुमार वय हरि कृत जोऊ ❀ वय पौगंड कह्यो व्रज सोऊ।
यह जु आपने मो प्रति कह्यऊ ❀ मुहिं ये बड़ो कुतूहल रह्यऊ॥
वो चरित्र पुन अपि मो पाहीं ❀ कहन योग्य हो मुनिवर ताहीं।
मुहिं हरि माया सूझत आहीं ❀ नहिं तो इम वन सकही नाहीं॥
मैं पुन पुन निज धन्य प्रमानूँ ❀ याते और सुभाग्य न मानूँ।
जो मैं आप वदन अरविंदा ❀ वारम्बार सहित आनंदा॥
कृष्ण कथामृत करिहौं पाना ❀ जो देवन अपि दुर्लभ माना।
या विधि परम भागवत भूपा ❀ जब नारद प्रति कह्यो अनूपा॥
तब देवर्षी के हिय माहीं ❀ भगवत भाव बढ़यो अति ताहीं।
तासौं हरि स्वरूप गुण भूती ❀ अरु ऐश्वर्य रूप अनुभूती॥२७॥

दो० सुमरण भै अति आशुही, मुनिवरके हिय माहिं।
तासौं सब इन्द्रिन वृती, वाइ ओर गइ आहिं॥ ३७॥

सो० पुन भूपति के पाहिं, भाखत भै मुनि धीरसौं।
सो अपि इह थल माहिं, करौं प्रकट नहिं गुप्त रख१५
करत चरित्र अनेक, प्रेम विवश श्रीकृष्ण वर।
वसंत ताते टेक, धरौ प्रेमकी तज अपर॥ १६॥

* इति श्रीकृष्णायने तृतीय वृन्दावनद्वारे तृतीय सोपान समाप्त *

---

१ आश्चर्य २ कमल ३ विभूती।

कहे मुनिवर हे नृप बड़भागी ❀ हे प्रियवर उत्तम अनुरागी ।
सुंदर प्रश्न कियो है आपू ❀ जो तुम भगवत कथा प्रतापू ॥
सुन सुन के अपि पूछत जाते ❀ पुन पुन नूतन करिहो ताते ।
यथा जार जन हिये मँझारी ❀ लगै तियन गाथा बड़ प्यारी ॥
सुनत रंच तिन तृप्ति न आसा ❀ पुन पुन पूछत नूतन भासा ।
तथा सारग्राही जे साधू ❀ तिनयह सहज सुभाव अगाधू॥
नित भगवत सुंदर यश माहीं ❀ अपन कर्ण वाणी चित ताहीं ।
रहैं लगाय निरंतर तेऊ ❀ लागैं विरस अपर रस जेऊ ॥
अरु अच्युत श्रीकृष्ण कृपाला ❀ तिनकी वार्ता परम रसाला ।
तिहँ प्रतिपल नूतन सी करहीं ❀ निज उर रंचहु तृप्ति न धरहीं३८

दो० हे नृप यद्यपि गुप्त है, तद्यपि कहुँ तुम पाहिं ।
गुरुजन नेही शिष्य पै, गुह्य बात कह ताहिं॥३८॥

सो० तोर प्रश्न अनुसार, समाधान या थल करौं ।
यहाँ सख्य रस सार,सावधान ह्वै श्रवण कर॥१७॥

प्रथम कृष्ण भोजन के हेतू ❀ पुलिन प्रशंस करत सुखदेतू ।
इह विधि वयसन पाहिं बखाना ❀ अहो पुलिन है रम्य महाना ॥
विविध पंक्तिसों भोजन केली ❀ है सक अस सम्पदा नवेली ।
यासों थल विस्तार लखायो ❀ अरुइहविधिनिजसखनसुनायो॥
देखो मृदुल स्वच्छ यह वालू ❀ किम आपन मन हरे रसालू ।

२ व्यभिचारी ।

यासौं पुलिन प्रवेश प्रमोदा ❀ दरसायो श्रीकृष्ण विनोदा ॥
अरु प्रफुलित पंकज बहु आहीं ❀ जासौं जलहू दीखत नाहीं ।
तासौं मुनि सर नाम बखाना ❀ पंकज बाहुलता तहँ जाना ॥
तिन अरविंदन सौरभ सेती ❀ आकर्पित अलि अवली केती ।
तथा विविध वृक्षन पै सोहैं ❀ विविध प्रकार विहंग विमोहैं ३९

दो० अलिगन पक्षीवृंद जे, तिन धुनिते जल माहिं ।
प्रति धुनि होवै मन हरन, अरु द्रुमगन जो आहिं ॥३९॥

तिनसौं व्याप्त पुलिन अति सोहै ❀ जन विरक्तको अपि मन मोहै ।
इन वचनन श्रीकृष्ण कन्हाई ❀ सकल सखन यह दियो जनाई ॥
भोजन योग्य धूप जो चहही ❀ सो पंकज सौरभ यहँ रहही ।
वीणादिक बहु वाद्य जु होई ❀ भ्रमर पक्षिगण धुनि है सोई ॥
पद्म पत्र आदिक बन माहीं ❀ भोजन पात्र मनोहर आहीं ।
शीतल उज्वल जल है जोऊ ❀ पान करन हित रुचिकर सोऊ ॥
ताप निवारण अर्थ सुहाई ❀ घनें वृक्षन छाया मनभाई ।
ये सब वस्तु उपस्थित अहहीं ❀ भोजन केलि सम्पदा रहहीं ॥
जब बड़ नृपन भवन के माहीं ❀ भोजन समय होत है ताहीं ।
तदा धूप सौरभ वाद्यादी ❀ वस्तू विद्यमान रंह स्वादी ॥४०॥

दो० तिम श्रीवृंदावन विषे, वस्तु जु भोजन काल ।
चहियें ते सुतही अहैं, सब मन हरन रसाल ॥४०॥

१ भँवरा २ पंक्षी ३ शरत्कालीन ताप ४ गहरे ५ मौजूद ६ सहजही ।

सो० काहे इम ह्वै नाहिं, भगवतमय श्रीवन विषे ।
धामी विभव जु आहिं,तेउ धाम सें किहँक लख१८

इह विधि भोजन सम्पति काना ❀ निरखसखन प्रति वचन वखाना।
पुन तिन प्रति कह मोहन हरखो ❀ भोजन वेला अतिक्रम निरखो ॥
हे मित्रो ! या थल के माहीं ❀ मिल भोजन करही जस चाहीं।
अपन खेल में सुधि नहिं रह्यऊ ❀ देखौ दिवस वहुत चढ़ि गयऊ॥
अवतो क्षुधा व्यथा वहु जागी ❀ अपन सवन वहु भूख जु लागी।
कृष्ण वचन सुन मोहन केरी ❀ श्लाघा करत कह्यौ अस टेरी ॥
अहो मित्र मोहन जस कह्यऊ ❀ तस हम सवन मनोरथ रहयऊ।
या विधि निश्चय करके ताहीं ❀ जल पिवाय वछरनको वाहीं ॥
हरित घास वाहुलता जाहीं ❀ वत्सनको रोक्यो है ताहीं ।
जासौं घास लोभ थल आना ❀ गमन समर्थ न ह्वै अस माना४१

दो० वत्सन को समुदाय तहँ, मुदित चरत है घास ।
वीच वीच मोहन वदन,निरखत सहित हुलास॥४१॥

प्रातः निज निज घरते आये ❀ छींकन में वहु भोजन लाये ।
अधमुख प्रविशन प्रथमहि ताहीं ❀ लटकाये वृक्षन के माहीं ॥
ते अव पृथक पृथक ले लीनें ❀ तिनको खोल प्रेमरस भीनें ।
भगवतसों मिलकें सव वाला ❀ जेंवन लगे सनेह विशाला ॥
जिहँ विधि जेंवत भे वन माहीं ❀ या थल मुनि दरसावैं ताहीं ।

१ भगवत २ प्रसन्नात्मा ३ प्रशंसा ।

प्रथमें श्रीदामादिक वाला ❀ बैठन हेतु प्रेष्ठ नँदलाला ॥
स्वच्छ सुकोमल बालू सेती ❀ रची एक वेदी सुख देती ।
जाहिं निरख मोहन मन भाई ❀ अपरहु करत प्रशंस महाई ॥
अस मनहारी बड़ रुचिकारी ❀ वेदी पै श्रीविपिन बिहारी ।
राजत भे सबहिन मन मोहैं ❀ तिहँ थल सखा वृंदहू जोहैं ॥४२॥

दो० मधु मंगल श्रीदाम अरु, तोप आदि अगणंत ।
सखा श्याम के जिन हिये, एकहि कृष्ण बसंत॥४२॥

मोहन के चहुँ ओर विराजे ❀ बहु पंक्तिन रचना छवि छाजे ।
नित सुख जिहँ क्रमसों धरध्याना ❀ पावौं श्रीगुरु कृपा महाना ॥
सो क्रम अति संक्षेप लखावौं ❀ आय प्रसंग न ताहिं दुरावौं ।
अहै सख्य रस गहर गभीरा ❀ गुरु करुणा पावै को धीरा ॥
प्रथमें अष्ट सखा हैं जेऊ ❀ श्रीदामादिक प्रमुदित तेऊ ।
क्रमसों केशव के चहुँ ओरी ❀ मुदित विराजे सोह न थोरी ॥
अहै जु षोड़श सख समुदाई ❀ अष्ट सखन चहुँ ओर सुहाई ।
षोड़श सखन चतुर दिशिं माहीं ❀ बत्तिस सखा विराजे ताहीं ॥
चौसठ सखा वृन्द जे अहहीं ❀ ते तिन चहुँदिश राजत रहहीं ।
पुन तिनके चहुँ ओर विराजे ❀ शतदल सखा सोहअति छाजे४३

दो० सहस सखा समुदाय जो, तिन पाछे चहुँ ओर ।
राजत भे प्रमुदित हिये, जिनकी सोह न थोर॥४३॥

इम अनेक सख मंडल सोहैं ❀ को वरणन कर सक छवि जोहैं ।
सबके मध्य अहैं घनश्यामा ❀ जिनविलोकलज्जितशतकामा॥

सबहिन के सन्मुख प्रभु आहीं ❀ नेकहु अंतर दीखत नाहीं ।
प्रत्युत सबहिन के मन माहीं ❀ अस अभिमान सुदृढ़तरआहीं॥
हमरे मंडल राजत काना ❀ बिन व्यवधान हमहिं असमाना॥
यह प्रसंग सुन किहँ जन चीता ❀ उपज शंक यह गति विपरीता॥
मस्तक वदन नयन पद पानी ❀ प्रभुके सर्व ओर श्रुति मानी ।
किन्तु जु इह प्रकार है भावा ❀ सो ऐश्वर्य भाव दरसावा ॥
सो माधुरि लीला के माहीं ❀ मुनिवर किम दरसायो आहीं ।
या शंका को उत्तर जोऊ ❀ सावधान ह्वै सुनिये सोऊ ॥४४॥

दो॰ यथा एक बड़ रानि है, तिहँ दासी समुदाय ।
तिनि में किन अधिकार अस, जहँ जहँ रानी जाय ४४

तहँ तहँ जाय सकैं ते दासी ❀ भल हो गुप्त मर्म थल वासी ।
आशय यह ते हिये मँझारा ❀ या प्रकार को करहिं विचारा ॥
ना जानैं तिहँ थल के माहीं ❀ अकस्मात् कारज ह्वै ताहीं ।
तौ रानी को होय प्रयासा ❀ ताहित जित जित संगहि वासा॥
तिम प्रभु इच्छा शक्ती जोऊ ❀ महारानि इह थल है सोऊ ।
तिहँ दासी हैं विविध प्रकारा ❀ करहिंकृत्य सबनिज अधिकारा॥
तिन में केउ मुख्य हैं दासी ❀ जिनकी गति सर्वत्र प्रकासी ।
जो सब गोपन हिय अभिलासा ❀ भई एकही साथ प्रकासा ॥
हमरे सन्मुख रहैं कन्हाई ❀ हमरे मंडल माहिं सुहाई ।
तिन युगपत इच्छा प्रभुताई ❀ मोहन मन इच्छा प्रकटाई॥४५॥

---

१ अंतराय २ हाथ ३ एक साथही ।

दो० भगवत इच्छा से महत, भक्त मनोरथ आहि ।
ताहित व्रज बालन हिये, भई जु इच्छा ताहि॥४५॥

तिन इच्छाते हरि हिय माहीं ❀ भयो कि ऐसेहि होवहि याहीं ।
अहै जु केशव केरि अनूपा ❀ शक्ति सत्य संकल्प स्वरूपा ॥
तिहँ उद्भावित होतहि ताहीं ❀ आशुअचिन्त्य शक्ति जोआहीं।
वाने इह विधि रचना कीना ❀ किन्तु यहाँ रहस्य यह चीना ॥
यह प्रसंग गोपन नहिं जान्यो ❀ तिम श्रीकृष्णहुनहिं पहिचान्यो।
यहि माधुरि लीला रस अहही ❀ ताहित यहाँ शंक नहिं रहही ॥
प्रत्युत औरहु रहस्य बढ़ायो ❀ नेंकहु रसाभास नहिं आयो ।
यहाँ शंक तब उचित लखावे ❀ अरुमाधुरि रस स्वाद न आवे॥
कृष्ण स्वयं यदि निज प्रभुताई ❀ करत प्रकट अरु सखसमुदाई ।
अपि वा वैभव को पहिचानी ❀ कृष्णैश्चर्य अहै अस मानी४६॥

दो० करत प्रशंसा कृष्णकी, आपहि प्रभु इत्याद ।
यहाँ नेंक आभास नहिं, ताहित शंक विवाद ॥४६॥

सो० अति सुंदर चहुँ ओर, बहु विधि अवली सखनकी ।
सबहिन को चितचोर, सोहत सबके मध्य में ॥१६॥

यथा कमल कर्णिका जु अहही ❀ तिहँ चहुँ ओर कमलदलरहहीं।
तथा कृष्ण चहुँ ओर सुहावैं ❀ सखा वृंद अतिशय छवि पावैं॥

१ उत्पन्न २ वृथा ।

प्रफुलित नैना चैना ऐना ❀ गदगद बैना कहत बनैना ।
इम अवली क्रम सख समुदाई ❀ राजे चतुर ओर हुलसाई ॥
मध्य सोह मोहन की भारी ❀ अब भोजन की आई बारी ।
तहँ भोजन परसन के कारन ❀ करहीं रचना भोजन पात्रन ॥
सब निज निज रुचि के अनुसारा ❀ मे प्रवृत्त जिन मोद अपारा ।
के वत्सप मृदु पंकज फूला ❀ लाये निज भोजन अनुकूला ॥
तिन फूलन पखुरी मनहारी ❀ राखी बालू मध्य विचारी ।
यथा नेंकहु संधि न रहहीं ❀ भोजन पात्र बनाये अहहीं४७॥

दो० के बालक लाये तहाँ, पत्ता केला केर ।
तथा अपर वृक्षन अपी, लाय योग्य तिन हेर॥४७॥

के नव विकसित पल्लव लाये ❀ ते बालू में दिये बिछाये ।
किन निज चातुरता दरसाई ❀ अंकुरवृंद लाय हुलसाई ॥
केला केरी चीर्म उतारी ❀ गुच्छा बांधें बड़ रुचिकारी ।
इम अनेक अंकुरन बनाई ❀ बिन संधी पातर मन भाई ॥
के पुन भाखत हैं तिन पाहीं ❀ देखो हमरी पटुता आहीं ।
विविध फलन ते रचना करहीं ❀ भोजन पात्र बनावें बरहीं ॥
इम कह लघु फल संग्रह कीनें ❀ यथा आमरा अतिहि नवीनें ।
और करौंदा आदिक सेती ❀ रच्यो पात्र शोभा कहुँ केती ॥
किन कह्यऊ तिन सबके पाहीं ❀ वृथा समय किम खोवत आहीं ।
देखौ बासन तो अप्रयासू ❀ यह छीके हैं आपन पासू॥४८॥

१ अर्थात् खाल सूखी ।

दो॰ केउ भोज पत्तान की, पातर नीक बनाइ ।
पुन किन पातर योग्यही, सुंदर शिला उठाइँ॥४८॥

या विध निज निज रुचि अनुसारा ❀ पात्र बनाये विविध प्रकारा ।
अथवा जिहँ को भोजन जैसो ❀ कीनों वासन अपि तिहँ तैसो ॥
पुन ईश्वर श्रीकृष्ण विहारी ❀ तिनसों मिल वत्सप रुचिधारी ।
पावत भे भोजन ते ताहीं ❀ परम मुदित हैं आपुस माहीं ॥
निज निज घरतें बहु पकवाना ❀ दधिओदन व्यंजन विधिनाना ।
लाये तिन रोचकता ताहीं ❀ पृथक पृथक दरसावत आहीं ॥
प्रथम आप कछु पावत अहहीं ❀ स्वाद विशेप पाय पुन कहहीं ।
अहो सखे मनमोहन श्यामा ❀ सुवल तोप अरु हे श्रीदामा ॥
देख देख मो भोज्य जु अहही ❀ कैसो स्वादुवंत यह रहही ।
अस कह भक्ष्य पात्र ते ताहीं ❀ लेकर कृष्णादिक कर माहीं ४९

दो॰ देवत हैं प्रमुदित हिये, तव ते सखाहु ताहि ।
पाय यथा तिहँ स्वाद कै, तथा कहत तिन पाहिं४९॥

अरु ते मुख आकृति विधि नाना ❀ करहीं यथा स्वाद तिन जाना ।
मनहुँ प्रतक्ष दृश्य दिखरावैं ❀ इम आपुसः में हँस हँसावैं ॥
अथवा जाती और चमेली ❀ आदिक सुमन सुगंधि सुरेली ।
वदकान्तर करकें ते फूला ❀ देहिं परस्पर जिय जिन फूला ॥
अरु भाखैं कहु सखा पियारे ❀ कहा स्वाद या कौर मँझारे ।

१ प्रफुल्लित ।

अरु अलक्ष तिन वासन माहीं ❀ डारें फल वटकान्तर आहीं ॥
यदि विलोक लेवै को ताहीं ❀ तो या विध वच कह तिन पाहीं ।
अहौ भखे स्वादिष्ट महाना ❀ पावौ रुचिसों ग्रास सुहाना ॥
जिन यह भेद लख्यो ते ताहीं ❀ वहुतहि हँसे मुदित मन माहीं ।
इम आपुस में हँसे हँसावें ❀ कृष्ण विलोक तिने सुख पावें५०

दो० मोहन प्रति दें ग्रास सव, पूछें वड़ हुलसाय ।
कहौ सखे या कौर को, कैसो स्वाद लखाय ॥५०॥

कवहु पृथक पुन एकहि साथा ❀ पूछत हैं प्रति श्रीव्रजनाथा ।
कृष्णहु तिन रुचि के अनुसारा ❀ स्वाद लखावें वारौं वारा ॥
तव तहँ मधु मंगल तिन पाहीं ❀ कह्यो सखे तुम सव जो आहीं ।
ते या ग्वाल पाहिं का पूछो ❀ कहा स्वाद यामें है सूछो ॥
मोहिं खवावौ स्वाद लखावौं ❀ हाँसी नाहिं सत्य वतरावौं ।
मैं तो हूँ भूदेव प्रधाना ❀ मिष्ट अन्न स्वादिष्ट महाना ॥
नितही पावैं अपर न भावे ❀ मिष्ट अन्न मो इष्ट कहावे ।
हास्य वचन मधु मंगल केरे ❀ सत्य जान वालक वहु तेरे ॥
वाके वदन कौर दिय आहीं ❀ अरु ते पूछत हैं तिहँ पाहीं ।
कहौ स्वाद यामें है कैसो ❀ कहौ यथारथ होवहि जैसो ५१

दो० कह मधुमंगल मोर मन, मोर नृत्य के माहिं ।
जाय लगो ता हेतुते, स्वाद ज्ञान लव नाहिं ॥ ५१ ॥

१ छिपायके २ सुंदर ।

विन मन रसनाहू नहिं जानै ❀ किम मधुमंगल स्वाद बखानै ।
अबके पुन यदि मोहिं खवावौ ❀ स्वाद भेद को उत्तर पावौ ॥
अस सुन सत गुन सख समुदाई ❀ तिहँ मुख कौर दियो हरषाई ।
अरु तिहँ स्वाद पूछने लागे ❀ ब्राह्मण वचन सुनन अनुरागे ॥
कह मधुमंगल भयो विलंबा ❀ करनी है गायत्री अंबा ।
वेला अति क्रम लख हे बाला ❀ संध्या करन जाउँ इह काला ॥
इम कह कर उठ गवनत भयऊ ❀ हठसौं सखन रोक तिहँ लहऊ ।
अरु सब भाखैं ताके पाहीं ❀ खायो जो मिष्टान्न यहाँही ॥
हम प्रति वाको स्वाद लखावौ ❀ पुन संध्या कारण तुम जावौ ।
जानैं हम तोरी पंडिताई ❀ काहि जनावै निज चतुराई५२॥

दो॰ हम कदापि या ठौरतें, तोहिं उठन दें नाहिं ।
ताहित स्वाद बतावहो, जो खायो है याहिं ॥ ५२ ॥

तब पुन मधु मंगल तिन पाहीं ❀ इह प्रकार भाखे वच ताहीं ।
इक तो समय उलंघन चिंता ❀ ताहित मो मन नहिं निश्चिंता॥
अरु तुमहू नें बहु खिलायो ❀ तासौं स्वाद न नेंक जनायो ।
नासा पुट कर अँगुरी धारी ❀ नेत्र मूंद लिय मौनाकारी ॥
कछुक श्वाससौं सूँ सूँ कीनों ❀ या विधि प्राणायाम नवीनों ।
करकें आशु बझाई तारी ❀ लियो आचमन लुटिया वारी ॥
पाछे तिन वयसन के पाहीं ❀ कह्यो खवावौ अब मुहिं याहीं।
तो मैं स्वाद अवश्य लखावौं ❀ अरु तुम पाहिं सत्य बतरावौं ॥

२ मधुमंगल ।

पुन मधुमंगल के मुख माहीं ❀ दियो कौर सख वृंदन ताहीं ।
अरु पूछ्यो कहु स्वाद जु होई ❀ जिन प्रकटावें कारण कोई॥५३॥

दो० तव मधुमंगल तिन प्रती, कह्यो कि सारे जाउ ।
मोर उदर पुर भर गयो, ताहित स्वाद न आउ ५३

सो० यदा पेट भर जाय, तव जो गति तुमहूँ लखौ ।
कैसोहु भोजन आय, स्वाद नीक नहिं लागही॥२०॥

इन वचनन सुन सव सख वृंदा ❀ हँसे वहुत ही युत आनंदा ।
इह विधि आपुस में मिल ताहीं ❀ हँसें हँसावें प्रमुदित आहीं ॥
इम वयसन सों मिलकर काना ❀ किय भोजन इह ठौर वखाना ।
किन्तु सवन में केशव केरी ❀ भोजन केलि विलक्षण हेरी ॥
ताहिं मुनीश्वर कहें सनेहा ❀ करौं प्रकट सोऊ थल एहा ।
कटि काछनी कृष्ण तनु सोहै ❀ झलमलात किरणनसों जोहै ॥
तापे पटुका उरथल माहीं ❀ अति सुंदर वांध्यो है ताहीं ।
कटि प्रदेश में सोहत सेला ❀ झलक विद्यु सम अहै नवेला ॥
दाईं ओर पटुका के माहीं ❀ इह विधि मुरली उरसी आहीं ।
जो वह कटि वंधन परियंता ❀ सुविधासों सोहत छविवंता ५४

दो० अरु सुंदर जो शृंग है, तथा छरी मन भाय ।
वाईं काँख में नीकि विधि, राखे दोउ दवाय ॥५४॥

---

१ दुपट्टा ।

बाईं हाथ में सोहत हेरो ❀ दध्योदन है पिण्ड घनेरो ।
तथा स्निग्ध मिश्रित नवनीता ❀ अस दधि ओदन वर्द्धक प्रीता ॥
और वाम कर अँगुरिन केरी ❀ संधी हैं जिन सोह घनेरी ।
तिनि में तिनके उचित अचारा ❀ टेंटी प्रभृतिन धर्यो मुवारा ! ॥
कर विस्तार हेतु अस कीनों ❀ इम बाँएँ दधि ओदन चीनों ।
या विधि मोहन छवि मन मोहै ❀ चहुँ दिशि बाल मंडली सोहै ॥
सुहृदन बीच विराज कन्हाई ❀ निज विचित्र हाँसिन रुचिदाई ।
सकल ग्वाल मंडली हँसावैं ❀ हँसें ग्वाल हिय बड़ हुलसावैं ॥
या विधि हरिकी भोजन लीला ❀ सख्य सुरस वर्द्धक शुभ शीला ।
स्वर्ग लोक वासी समुदाई ❀ नभ थित यह लीला रसदाई ५५

दो० देख विचारत निज हिये, शुद्ध सनेह प्रशंस ।
थाह न पावैं रंच अपि, प्रेम प्रशंस जु अंस ॥५५॥

अरु भाखत हैं आपुस माहीं ❀ देखौ व्रज जन महिमा आहीं ।
जिहँ प्रभुको वैदिक विद्वाना ❀ करकें बड़ मख वेद विधाना ॥
अतिशय सावधान है ताहीं ❀ मख भुक्ता हरिको हिय माहीं ।
कर उद्देश मात्र द्विज तेऊ ❀ बहु साकल संग्रह कर वेऊ ॥
अग्नि देव मुख द्वारा अर्पैं ❀ इम बहुविधि भगवत को तर्पैं ।
तब स्वीकार मात्र प्रभु ताहीं ❀ करहिं ग्रहण तिनके मख माहीं॥
अस दुर्लभ प्रभु ग्वालन माहीं ❀ करत बाल लीला शुभ ताहीं ।
ताहिं विलोक विबुध समुदाई ❀ मानत हिय आश्चर्य महाई ॥

१ यज्ञ ।

वा अनेक विधि करत प्रयासा ꕥ विविध प्रकार धार अभिलासा ।
तद्यपि यज्ञ–भाग जो रहहीं ꕥ नहिं स्वीकृतकरअसप्रभुअहहीं५६

दो॰ सो भगवत साज्ञात ही, गोप मंडली माहिं ।
प्राकृत बालक केलि जिम, करत केलि लख ताहिं५६

अखिलअमर आश्चर्य निमग्ना ꕥ करत आस अस कब ह्वै लग्ना ।
कह मुनि हे मैथिल हरि-गाथा ꕥ प्रेमी वृंदन करन सनाथा ॥
सुन सावद्ध कर निग्रह चीता ꕥ परम प्रेम देवन जिहँ रीता ।
जिहँ स्वरूप सों कियो वखाना ꕥ राजैं सख्य मंडली काना ॥
जे वत्सप प्रभु प्राण स्वरूपा ꕥ वा भगवत के रूप अनूपा ।
तिनके मध्य सुभोजन पावैं ꕥ तथा तिनैं अपि मुदित पवावैं ॥
तावत ते वछरा समुदाई ꕥ निकट चरंत रह जे हुलसाई ।
ते सब घास लोभते ताहीं ꕥ गये दूर गह्वर वन माहीं ॥
तिनैं न देख ग्वाल समुदाई ꕥ भै विमना, अस निरख कन्हाई ।
तिन वयसन जिन जिय के माहीं ꕥ इह विधि भय उपज्यो है ताहीं५७

दो॰ वछरा नहिं दीखत अहैं, गये कहाँ वन दूर ।
या विधि भयसों भीत जे, तिन प्रति मंगलमूर ॥५७॥

कृष्ण कह्यो जिन भय हिय धारौ ꕥ मोरे वचनन को प्रतिपारौ ।
हे मित्रो या मंडल शोभा ꕥ जामैं मो मन अतिशय लोभा ॥
सो यह यथा प्रकार सुहावै ꕥ तथा प्रकार रहै मन भावै ।

१ उदास २ डरे हुये ।

दो० व्रज़ में मुख्या माधुरी, अरु श्रीव्रज के माहिं ।
मोहन अंग उपांग जे, माधुरिमय ही आहिं ॥ ५९ ॥

सो० जनु व्रज में सात्तात, माधुरि ही मोहन अहै ।
जिहँ रससों न अघात, माधुरि के जो भक्त हैं ॥२२॥

* इति श्रीकृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे चतुर्थ सोपान समाप्त *

कह मुनि शक्ति ऐश्वरी जोई ❀ तिहँ प्रवेश दुर्लभ ही होई ।
ताहित ऐश्वरि शक्ति सदाही ❀ अपन दाव खोजत तहँ आई ॥
यथा कृष्ण जब व्रज रज खाई ❀ अरु ता प्रति श्रीयशुमति माई ।
ले लकुटी डरपावत कह्यऊ ❀ मृद भक्षण कुटेव तुव रह्यऊ ॥
तहँ मोहन निज वदन दिखायो ❀ नहिं मृद खाई,किनैं सुनायो ।
तव ऐश्वरी शक्ति निज दाऊ ❀ पायो अपन प्रभाव चलाऊ ॥
रूप विराट कृष्ण मुख माहीं ❀ श्रीयशुमतिहिं दिखायो आहीं ।
अमित प्रभाववती जो अहही ❀ शक्ति माधुरी व्रज में रहही ॥
निज प्रभाव यशुमति हिय भावा ❀ दियोपलट निज शक्ति दिखावा॥
तिम या थल में अपि पहिचानो ❀ बड़ प्रभाव माधुरि को जानौ६०

दो० बन में केवल कृष्ण है, माधुरि मय सात्तात् ।
ऐश्वरि को आभास हू,इह थल नाहिं दिखात॥६०॥

१ रज ।

मैं जावौं त्वर वत्सन वृंदा ❀ ले आवौं यहँ युत आनंदा ॥
इम कह गवने मोहन ताहीं ❀ वछरा ढूँढ़न हित वन माहीं ।
यदि को यह शंका उर लावै ❀ ग्वालन तत्सुख भाव बतावै ॥
अरु भाखे जब तत्सुख अहहीं ❀ तौ जे ग्वालवृंद तहँ रहहीं ।
तिनिमें ते एकहु नहिं गयऊ ❀ तौ किम तिनको तत्सुख रह्यऊ ॥
तौ याको उत्तर यहि अहही ❀ तिन गोपन मन इह विधि रहही ।
यावत वत्स निकट हैं याहीं ❀ अतिहि दूर गवने ते नाहीं५८॥

दो० अरु इन मन रत्ता जु है, सोइ मुख्य हम हेतु ।
यदि हम इम नहिं करहिंगे, दुख पावैं ब्रजकेतु॥५८॥

सो० ताहित मोहन संग, वछरा खोजन नहिं गये ।
रहै तहाँ सउमंग, हेतु यही, ये तत्सुखी ॥ २१ ॥

गवने गोविंद, जिहँ कर माहीं ❀ पूर्व दिखायौ कौर जु आहीं ।
सोउ यथावत कर में सोहै ❀ जिनैं देख देवन मन मोहै ॥
अस साक्षात माधुरी रूपा ❀ श्रीनँदनंद परम रस रूपा ।
ते वछरन खोजत वन माहीं ❀ गिरि गोवर्द्धन गुहा जु आहीं ॥
तिनि में अरु कुंजन में जावैं ❀ पुन गह्वर वन माहिं सिधावैं ।
इह विधि भगवत कृष्ण कन्हाई ❀ वछरन को खोजत हरपाई ॥
यद्यपि सब जानत भगवाना ❀ तद्यपि खोज करत बहु थाना ।
यामैं एक हेतु यह अहही ❀ नरलीला दिखरावत रहही ॥
अपर हेतु वहु सरस बखान्यो ❀ रसिक जनन ताको है जान्यो ।
माधुरि ऐश्वरि शक्ति प्रभावा ❀ अहै महान भेद दरसावा ॥५९॥

दो॰ व्रज में मुख्या माधुरी, अरु श्रीव्रज के माहिं ।
मोहन अंग उपांग जे, माधुरिमय ही आहिं ॥ ५६ ॥

सो॰ जनु व्रज में साक्षात, माधुरि ही मोहन अहै ।
जिहँ रससों न अघात, माधुरि के जो भक्त हैं ॥२२॥

* इति श्रीकृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे चतुर्थ सोपान समाप्त *

कह मुनि शक्ति ऐश्वरी जोई ❀ तिहँ प्रवेश दुर्लभ ही होई ।
ताहित ऐश्वरि शक्ति सदाही ❀ अपन दाव खोजत तहँ आई ॥
यथा कृष्ण जब व्रज रज[1] खाई ❀ अरु ता प्रति श्रीयशुमति माई ।
ले लकुटी डरपावत कह्यऊ ❀ मृद भक्षण कुटेव तुव रह्यऊ ॥
तहँ मोहन निज वदन दिखायो ❀ नहिं मृद खाई,किनैं सुनायो ।
तब ऐश्वरी शक्ति निज दाऊ ❀ पायो अपन प्रभाव चलाऊ ॥
रूप विराट कृष्ण मुख माहीं ❀ श्रीयशुमतिहिं दिखायो आहीं ।
अमित प्रभाववती जो अहही ❀ शक्ति माधुरी व्रज में रहही ॥
निज प्रभाव यशुमति हिय भावा ❀ दियोपलट निज शक्ति दिखावा।
तिम या थल में अपि पहिचानौ ❀ वड़ प्रभाव माधुरि को जानौ६०

दो॰ वन में केवल कृष्ण है, माधुरि मय साक्षात् ।
ऐश्वरि को आभास हू,इह थल नाहिं दिखात॥६०॥

---

१ रज ।

मैं जावौं त्वर वत्सन वृंदा ❀ ले आवौं यहँ युत आनंदा ॥
इम कह गवने मोहन ताहीं ❀ वछरा ढूँढ़न हित वन माहीं ।
यदि को यह शंका उर लावै ❀ ग्वालन तत्सुख भाव बतावै ॥
अरु भाखे जब तत्सुख अहहीं ❀ तौ जे ग्वालवृंद तहँ रहहीं ।
तिनिमें ते एकहु नहिं गयऊ ❀ तौ किम तिनको तत्सुख रह्यऊ ॥
तौ याको उत्तर यहि अहही ❀ तिन गोपन मन इह विधि रहही ।
यावत वत्स निकट हैं याहीं ❀ अतिहि दूर गवने ते नाहीं५८॥

दो० अरु इन मन रत्ता जु है, सोइ मुख्य हम हेतु ।
यदि हम इम नहिं करहिंगे,दुख पावैं व्रजकेतु॥५८॥

सो० ताहित मोहन संग, वछरा खोजन नहिं गये ।
रहै तहाँ सउमंग, हेतु यही, ये तत्सुखी ॥ २१ ॥

गवने गोविंद. जिहँ कर माहीं ❀ पूर्व दिखायौ कौर जु आहीं ।
सोउ यथावत कर में सोहै ❀ जिनैं देख देवन मन मोहै ॥
अस साक्षात माधुरी रूपा ❀ श्रीनँदनंद परम रस रूपा ।
ते वछरन खोजत वन माहीं ❀ गिरि गोवर्द्धन गुहा जु आहीं ॥
तिनि में अरु कुंजन में जावैं ❀ पुन गह्वर वन माहिं सिधावैं ।
इह विधि भगवत कृष्ण कन्हाई ❀ वछरन को खोजत हरपाई ॥
यद्यपि सब जानत भगवाना ❀ तद्यपि खोज करत बहु थाना ।
यामैं एक हेतु यह अहही ❀ नरलीला दिखरावत रहही ॥
अपर हेतु वहु सरस बखान्यो ❀ रसिक जनन ताको है जान्यो ।
माधुरि ऐश्वरि शक्ति प्रभावा ❀ अहै महान भेद दरसावा ॥५९॥

दो॰ व्रज में मुख्या माधुरी, अरु श्रीव्रज के माहिं ।
मोहन अंग उपांग जे, माधुरिमय ही आहिं ॥ ५९ ॥

सो॰ जनु व्रज में साक्षात, माधुरि ही मोहन अहै ।
जिहँ रससों न अघात, माधुरि के जो भक्त हैं ॥२२॥

* इति श्रीकृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे चतुर्थ सोपान समाप्त *

कह मुनि शक्ति ऐश्वरी जोई ❀ तिहँ प्रवेश दुर्लभ ही होई ।
ताहित ऐश्वरि शक्ति सदाही ❀ अपन दाव खोजत तहँ आई ॥
यथा कृष्ण जब व्रज रज खाई ❀ अरु ता प्रति श्रीयशुमति माई ।
ले लकुटी डरपावत कह्यऊ ❀ मृद भक्षण कुटेव तुव रह्यऊ ॥
तहँ मोहन निज वदन दिखायो ❀ नहिं मृद खाई,किनैं सुनायो ।
तब ऐश्वरी शक्ति निज दाऊ ❀ पायो अपन प्रभाव चलाऊ ॥
रूप विराट कृष्ण मुख माहीं ❀ श्रीयशुमतिहिं दिखायो आहीं ।
अमित प्रभाववती जो अहही ❀ शक्ति माधुरी व्रज में रहही ॥
निज प्रभाव यशुमति हिय भावा ❀ दियोपलट निज शक्ति दिखावा।
तिम या थल में अपि पहिचानौ ❀ बड़ प्रभाव माधुरि को जानौ६०

दो॰ बन में केवल कृष्ण है, माधुरि मय साक्षात् ।
ऐश्वरि को आभास हू,इह थल नाहिं दिखात॥६०॥

---

१ रज।

वांम हाथ दधि ओदन अहही ❀ दहिनें करसों जेंवत रहही ।
इह विधि सों खोजत प्रभु ताहीं ❀ गुहा कुंज गह्वर वन माहीं ॥
तहँ नभ थित सुर वृंद विलोकें ❀ महाश्चर्य की लें हिय झोकें ।
तिनि में जो चतुरानन अहही ❀ परमेष्ठी पद जाको कहही ॥
नारायण नाभी अरविंदा ❀ तिहँते जन्म लह्यो सानंदा ।
ता कारण सुतही सर्वज्ञा ❀ हे ब्रह्मा संयुत शत प्रज्ञा ॥
जो अनंत शक्ती भगवाना ❀ तिहँकृत लख अघमुक्ति विधाना।
इह प्रकार को विधि जो आहीं ❀ भयो परम विस्मय हिय माहीं ॥
वा विरंचि जलजोद्भव जाते ❀ तिहँ जड़वंश प्रकटही ताते ।
किन्तु स्वयं चेतन अपि अहही ❀ तद्यपि निश्चय जड़ही रहही६१॥

दो० जो भगवत सब शक्ति युत, को कर सक तिहँ चिंत ।
तथा महामाया जु है, ताके अपि हैं कंत ॥ ६१ ॥

अस प्रभुकी सुठ लीला माहीं ❀ निज माया विस्तारी आहीं ।
अरु आक्षेप पटक दिय अहही ❀ ताहित चेतन अपि जड़ रहही॥
यदपि अघासुर मुक्ती देखी ❀ विधिनेअतिहिविचित्र विशेखी।
तदपि जोउ प्रभु कृपा स्वरूपा ❀ अपनन पै जिन कृपा अनूपा ॥
ते भगवत करुणा वश होई ❀ बाल रूप राजै व्रज जोई ।
अस ईश्वर को अपरहु चहही ❀ निरखन मंजु महत्व जु अहही॥
ताहित वनतें वछरन वृंदा ❀ अरु वत्सप यावत सानंदा ।
तिनैं आन थल में ले गयऊ ❀ यावत भगवत खोजत रहाऊ ॥

---

१ लहरैं २ कमल ३ बुद्धी ४ कमल तें जन्म्यो है ५ सुंदर ६ सुंदरता ७ ऐश्वर्य ।

तावत वन प्रदेश के अंतर ❀ भो अंतरहित तिन थापन कर ।
यह विधि कृत है चोर समाना ❀ निज प्रभुता दिखराय महाना६२

दो॰ सकल सखा श्रीश्यामके, मोहन तुल्यहि आहिं ।
आशय यह इन रूप जो,कृष्ण भिन्न लव नाहिं६२

तिनिको विधि माया सों भयऊ ❀ जा परिभव यह कारण रह्यऊ ।
यथा स्वयं श्रीकृष्ण उदारा ❀ कर लीला नर नाट्यनुसारा ॥
तिम भगवत सम इन शुभ शीला ❀ नर लीलापन की यह लीला ।
है सम्भव जानें बुधवाना ❀ अपर कोइ कारण नहिं माना ॥
इन वचनन वादी कर शंका ❀ यदि इम मानें तुम्हरे अंका ।
अहै प्रकट भगवत प्रभुताई ❀ ब्रह्मा अपि सर्वज्ञ कहाई ॥
तौ पुन किम तिहँ विस्मय भयऊ ❀ यह शंका मो हियमें रह्यऊ ।
तथा परीक्षा अपि तिहँ कीनी ❀ प्राय मूढ़तासों अस चीनी ॥
ताको उत्तर प्रकटहि कह्यऊ ❀ जिहँ सुन शंक लेश नहिं रह्यऊ।
माया मोहनता संयुक्ता ❀ अहै कृष्ण अर्भक अस उक्ता६३

दो॰ ताहित मोहन की अहैं, जे लीला समुदाय ।
सबके मन मोहन करैं,अस यह बाल सुहाय ॥६३॥

यद्यपि शिशुवय पूतन ध्वंसा ❀ आदि चरित्रन परम प्रशंसा ।
ब्रह्मादिक निश्चय तिहँ जानें ❀ बालक नहिं परब्रह्म पछानें ॥

---

१ अर्थात्-मोहन भयो २ बालक ।

दो० यहँ विधि माया सों सखन, केवल दियो सुवाय ।
तासों इह लीला विषे, कहा सिद्धि दरसाय ॥ ६५ ॥

आशय यह तिन गोपन केरो ❁ योगमाय कृत मोहन हेरो ।
मुनिवर आगे यथा कह्यो है ❁ ग्वालन को हिय हरण भयो है ॥
सो मोहन मायाही सेती ❁ यासों सिद्ध वात भई एती ।
केशव माया मोहित अहहीं ❁ यावत ग्वाल वाल रह तहहीं ॥
तिनको ब्रह्मा कृत थल आना ❁ ले जावन व्याख्या सुभमाना ।
अरु आगे विधि कहिगो वानी ❁ निजहियमें वहु विधिअनुमानी ॥
कृष्ण निकट ये वछरा वाला ❁ अहैं कहांके रूप रसाला ।
जे मो माया मोहित नाहीं ❁ अरु जे मो माया के माहीं ॥
सोय रहे हैं ते के अहहीं ❁ या विधि विधि उर सोचत रहहीं ।
पुन श्रीमुनि वच अपि हैं ताहीं ❁ विधि विचार करही मनमाहीं ६६

दो० यहां वहाँ दोउन विषे, सत्य कौन कहि जाहिं ।
अरु किनको नहिं सत्य कहुँ, भेद पाय सक नाहिं ६६

[illegible] सिद्ध वात यह भयऊ ❁ योगमाय की कृति यह रह्यऊ ।
[illegible]लिपत वछरा वाला ❁ तिनको हरण कियो सुरपाला ॥
[illegible]ख्या इहथल है योज्ञा ❁ भावुक वृंदन लगै मनोज्ञा ।
[illegible]रे खोजत वन माहीं ❁ तिहँ अवसर आयो अज ताहीं ॥
[illegible]पहु देखन चहहीं ❁ मंजु महत्व जु प्रभुको रहहीं ।

तदपि मोह विधि को जो भयऊ ❀ तामैं हेतु यही इक रह्यऊ ।
जो मोहन पन मोहन माहीं ❀ इह प्रकार को निश्चय आहीं ॥
पुन पुन जिहँ ऐश्वर्य विलोकी ❀ ज्ञानावरण होय मति रोकी ।
यहि आशय वादी तुम जानौ ❀ ताहित हियतें संशय हानौ ॥
जिम प्रथमैं अपि श्रीप्रभु केरी ❀ बाल केलि विस्मय प्रद हेरी ।
तहँ अपि मोहनता प्रकटाई ❀ तिम वन भोजन केलि सुहाई ॥
वाही विधि मोहन पन याहीं ❀ भो ताहित विधि विस्मय आहीं।
अरु तादृश भगवत प्रभुताई ❀ निरखन प्रवर्त भयो सुरराई ६४

दो० हे भूपति देखौ तुमहुँ, या प्रकार हरि केरि ।
बाल केलि ऐश्वर्यता, जिहँ ब्रह्मा अपि हेरि ॥ ६४ ॥

परम ज्ञान दृढ़ चित युत जोऊ ❀ परम मोहको प्रापत सोऊ ।
अथवा नित विज्ञान स्वरूपा ❀ अरु आनंद स्वरूप अनूपा ॥
जो श्रीकृष्णचंद्र भगवाना ❀ तिनके सखा प्रेष्ठ जिम प्राना ।
तिन ग्वालन विधि माया सेती ❀ भइ मोहनगति उचित न एती॥
जाहित पूतन प्रभृतिन माया ❀ अपियशुमतिआदिकनभुलाया॥
ताहित किल विस्मय रस वारी ❀ उन उन लीला सिद्धि विचारी॥
लीला शक्तिहि निश्चय ताहीं ❀ कर अनुमोदन तिहँ कृति माहीं।
नहिं पूतनादिकन की माया ❀ यशुमति प्रभृतिन सकै भुलाया॥
तिम इह थल अपि निश्चय अहही ❀ यामैं नेकहु तर्क न रहही ।
पूतन प्रभृति प्रसंगन माहीं ❀ तिनध्वंसनकारणअपि आहीं६५

१ ब्रह्मा २ प्यारे ।

दो॰ यहँ विधि माया सों सखन, केवल दियो सुवाय ।
तासौं इह लीला विषे, कहा सिद्धि दरसाय ॥ ६५ ॥

आशय यह तिन गोपन केरो ❀ योगमाय कृत मोहन हेरो ।
मुनिवर आगे यथा कह्यो है ❀ ग्वालन को हिय हरण भयो है ॥
सो मोहन मायाही सेती ❀ यासौं सिद्ध बात भई एती ।
केशव माया मोहित अहहीं ❀ यावत ग्वाल बाल रह तहहीं ॥
तिनको ब्रह्मा कृत थल आना ❀ ले जावन व्याख्या सुप्रमाना ।
अरु आगे विधि कहिगो बानी ❀ निजहियमें बहु विधिअनुमानी ॥
कृष्ण निकट ये बछरा बाला ❀ अहैं कहांके रूप रसाला ।
जे मो माया मोहित नाहीं ❀ अरु जे मो माया के माहीं ॥
सोय रहे हैं ते के अहहीं ❀ या विधि विधि उर सोचत रहहीं।
पुन श्रीमुनि वच अपि हैं ताहीं ❀ विधि विचार करही मनमाहीं ६६

दो॰ यहां वहाँ दोउन विषे, सत्य कौन कहि जाहिं ।
अरु किनको नहिं सत्य कहुँ, भेद पाय सक नाहिं६६

ताहित सिद्ध बात यह भयऊ ❀ योगमाय की कृति यह रह्यऊ ।
माया कल्पित बछरा बाला ❀ तिनको हरण कियो सुरपाला॥
यहि व्याख्या इहथल है योज्ञा ❀ भावुक वृंदन लगै मनोज्ञा ।
बत्सन हरि खोजत वन माहीं ❀ तिहँ अवसर आयो अज ताहीं॥
निज मन अपरहु देखन चहही ❀ मंजु महत्व जु प्रभुको रहही ।

१ ब्रह्मा २ सुंदर ।

इततें वत्स वृंद ले गयऊ ❀ तथा पुलिन वत्सप जे रह्यऊ ॥
तिनैं अपी ले कर थल आना ❀ भयो आशुही अंतरधाना ।
या थल विधि माया जो कह्यऊ ❀ तिहँ कारण हरि माया रह्यऊ ॥
अरु प्रभु माया मोहित जाते ❀ हरि महत्व देखन चह ताते ।
माया कल्पित ही थल ताहीं ❀ वत्स और वत्सप जे आहीं ६७

दो० तिनैं विरिंची आन थल, ले गवन्यो पुन ताहिं ।
उपजावत उर मुदित ह्वै, विविध तर्क हिय माहिं ॥६७॥

अहो आज मैं आपन माया ❀ मोहित कर वत्सप समुदाया ।
तथा वत्स वृंदन हर लायो ❀ कृष्ण नेंकहू जान न पायो ॥
अव देखौं ऐश्वर्य महाना ❀ कहा करै अद्भुत यह काना ।
वा मो चोरी लख मो पाहीं ❀ स्वयं प्रार्थना करही याहीं ॥
हे ब्रह्मा हमरे सव वाला ❀ अरु वछरा जिन रूप रसाला ।
ते मो प्रति देवौ ततकाला ❀ मानौ मोर विनय सुरपाला ॥
वा कछु अपि नहिं जानै काना ❀ याविधि विधिकर हिय अनुमाना।
किन्तु कृष्ण माया विन नाहीं ❀ विधिको मोहन सम्भव आहीं ॥
जवहि चतुर मुख हिये मँझारा ❀ चोरी करन हेतु निरधारा ।
तवहि योगमाया ततकाला ❀ सत्य जु रहै वत्स अरु वाला ६८

दो० तिन सवहिन को ढाँप दिय, अरु तिहँ थलके माहिं ।
चोरी करनेच्छा हिये, आयो पद्मंज ताहिं ॥ ६८ ॥

१ ब्रह्मा २ ब्रह्मा ।

तिहँ वहिरंगी माया द्वारा ॐ कल्पित वत्सप वत्स अपारा ।
दिये दिखाय सर्व अस मानौ ॐ या लीला यह रहस पछानौ ॥
चतुरानन तिन गयो चुराई ॐ अरु अंतरहित भो हरपाई ।
ता पाछे श्रीकृष्ण कृपाला ॐ ढूँढत वछरन विपिन विशाला ॥
नहिं पाये तव पुलिन सिधाये ॐ पुलिन माहिं वत्सप नहिं पाये ।
अरु तिन छींके प्रभृतिहु नाहीं ॐ इम दोउन नहिं निरखे ताहीं ॥
तव इह विध निज हिये विचारा ॐ मुहिं विलम्ब भो लख व्रजवारा ।
अतिशय दुखित होय मन माहीं ॐ मो पाछे मो खोजन ताहीं ॥
निज भोजन सामिग्री युक्ता ॐ कहा कहूँ गे मो अनुरक्ता ।
वन में वत्स पुलिन में वाला ॐ नहिं पाये तव श्रीनँदलाला ॥६९

दो० प्रेम प्रपूरित हृदयसों, तिन वियोगके माहिं ॥
अतिशय आकुल भै तहाँ, को कह सकही ताहिं ६९

यहाँ माधुरी शक्ति प्रभावा ॐ दीखत है जो प्रकट जनावा ।
पूर्ण ज्ञान सम्पन्न सदाई ॐ अस प्रभाव के कृष्ण कन्हाई ॥
तिरोधान तिन भयउ विचारा ॐ प्रेम विवश हैं नंदकुमारा ।
अथवा नहिं निरखे तिहँ भावा ॐ नहिं पाये, अस प्रकट जनावा ॥
ताहित वनथित वछरा वाला ॐ तिनैं जान अपि श्रीनँदलाला ।
नहिं निरखे अस अभिनय करहीं ॐ नरलीला दिखराय विचरहीं ॥
यदि को शंक करै मन माहीं ॐ यहँ तो केवल कृष्णहि आहीं ।
तौ फिर अभिनय किनैं दिखावैं ॐ हिय आकुलता किम उपजावैं ७०

१ शीघ्र ।

अहो सखे तुम कहाँ दुराये ❀ तिम वछरन अपि कहाँ छिपाये ।
जानौ नहिं तुम बिन मन मेरो ❀ रह उदास अरु व्यथित घनेरो ॥
यदि तुमको कौतुक अभिलासा ❀ छिपे होउ तौ तज सो आसा ।
शीघ्र प्रकट होवौ मो पाहीं ❀ तुम्हरी विरह व्यथा जो आहीं ॥
अब मोपै वह सही न जावे ❀ रोम रोम मेरो अकुलावै ।
तुमहू मो बिन रह सक कैसे ❀ कबहु न कियो, कियो अब जैसे ॥
अब तो नेंक बिलम नहिं लावौ ❀ आय आय मुहिं कंठ लगावौ ।
और कहा निज दुख प्रकटावौं ❀ देखौ तुमहुँ यथा अकुलावौं ७२॥

दो॰ या विधि करत विषाद तहँ, खोजत वन चहुँ ओर ।
विरहाश्रू नयनन वहैं, अस गति नंदकिशोर ॥७२॥

अभिनय पूर्वक तिहँ वन माहीं ❀ इम विस्मय विषाद जे आहीं ।
तथा औरहू भाव अनेका ❀ दरसावत जिम नट सविवेका ॥
दिखरावे जन वृंदन माहीं ❀ यथा एक नट भूसुर आहीं ।
सो किहँ विधि को स्वाँग बनावे ❀ जब हियतें द्विजपनों भुलावे ॥
तबही कर सकही सो ताहीं ❀ यथातथ्य अभिनय जो आहीं ।
नहिं तो भल अभिनय दरसावे ❀ किन्तु यथार्थ स्वाद नहिं आवे ॥
तिम चतुरेन्द्र मुकुटमणि कान्हा ❀ जिन स्वरूपही पूरण ज्ञाना ।
विस्मय प्रभृति जु अभिनय नाना ❀ दिखरावें नर नाट्य समाना ॥
लीला करत विचित्र अपारा ❀ या प्रकार श्रीनंदकुमारा ।
जिहँ सुन जीव सहज भव तरहीं ❀ संत वेद गुरु अस उचरहीं ७३॥

दो॰ विपिन मध्य मोहन तहाँ, होत दुपहरी काल ।
जान असम्भव व्रज गमन, बिन वछरा गए वाल ७३॥

वछरा बालक तहँ जे रहहीं ❀ योगमाय आच्छादित अहहीं ।
अरु तिहँ कृत वछरा अरु बाला ❀ ले अंतरहित भो सुरपाला ॥
तथा और ताके मन माहीं ❀ आपन मंजु महत्व जु आहीं ।
तिहँ देखन विधि आस अशेशा ❀ सद्य जान लइ हरि शुभवेशा ॥
जाहित आप अहैं सर्वज्ञा ❀ आप समान अवर किहँ प्रज्ञा ।
कारण आप स्वयं भगवाना ❀ अहैं सकल श्रुतिवंतन माना ॥
यावत हरि खोजत रह ताहीं ❀ वछरा बालक गण वन माहीं ।
तावत ज्ञानशक्ति हरि केरी ❀ रही तटस्था इह विधि हेरी ॥
प्रभु या समय करत हैं लीला ❀ वहि अन्वेषणमयि शुभशीला ।
ताहित मो कर्तव्य न आही ❀ प्रभुके निकट जाउँ अब याहीं७४

दो० यथा एक राजा अहै, तिहँ आमात्य प्रवीन ॥
प्रजा सबंधी जोउ व्रत, भाखत समयोचीन ॥७४॥

आशय यह राज्यासन राजा ❀ अहै विराजमान ससमाजा ।
ताहि समय तिहँ नृप के पाहीं ❀ करै निवेदन जो वृत आहीं ॥
किन्तु रहसि थल वचन विलासा ❀ कर मित्रन मिल नृप सहुलासा ।
तो तिहँ थल मंत्री न बखानै ❀ प्रजा वृतांत अवश भल मानै ॥
तिम जो ज्ञान शक्ति हरिकेरी ❀ तिहँ आपन हियमें जो हेरी ।
प्रभु वहि अन्वेषणमयि लीला ❀ करन प्रवृत्त अहैं शुभशीला ॥
रही तटस्था तब लग सोई ❀ तहँ जावन अधिकार न जोई ।
अब मनमें भो अनुसंधाना ❀ निश्चय ज्ञानशक्ति अस जाना॥

---

१ प्रज्ञा २ एक ओर अर्थात् दूर ३ खोजनेरूप ४ मंत्री ५ समाचार ६ खोज करण ।

लख निज अवसर तब प्रभु पाहीं ❁ आशु उपस्थित भइ है ताहीं।
ताहित विधि उर जे अभिलाषा ❁ अरुतिहँकातिलखलइछविरासा॥७५

दो॰ ता पाछे श्रीकृष्ण प्रभु, लागे करन विचार।
अहो विरिंची आस यह, धरी जु हिये मँझार॥७५॥

देखौं कृष्ण केरि प्रभुताई ❁ वछरा बालक जाउँ चुराई।
तदनुसार विधि कृतहू कीना ❁ किन्तू मो हित रहस्य नवीना॥
प्राप्त होय, लव संशय नाहीं ❁ अस विचित्र घटना या माहीं।
आशय यह यावत व्रजवासी ❁ मोसों मिल नित रहत हुलासी॥
मैं हूँ तिन मिल मोद महाना ❁ लहत सतत जो है अप्रमाना।
या प्रकार सन्तत व्रज माहीं ❁ पावैं मोद परस्पर ताहीं॥
किन्तू या अवसर सुख लैहों ❁ तहँ विशेष आस्वादन पैहों।
अरु वात्सल रसवारी जेऊ ❁ हैं गोपिका वृन्द अपि तेऊ॥
रस विशेष आस्वादन जोऊ ❁ या अवसर पावैं किल सोऊ।
तामैं है यह हेतु रसाला ❁ व्रज न जाउँ बिन बछराबाला॥७६

दो॰ ताहित मैं ही होवहूँ, बछरा बाल स्वरूप।
स्वयं मोद अनुपम लहौं, दउँ व्रज जनन अनूप॥७६॥

जब मैया मुहिं लाड़ लड़ावै ❁ विविध प्रकारन मुद उपजावै।
तब वात्सल रस सनी जु गोपी ❁ निरख निरखप्रमुदितअतिओपी॥

१ श्रीकृष्ण २ ब्रह्मा।

अरु ते आपन मन के माहीं ❀ करहीं विविध चिंतवन ताहीं।
यद्यपि हम इन लख सुख पावें ❀ अरु बहुविधिसों लाड़ लड़ावें॥
तद्यपि पूर्ण तोपे है नाहीं ❀ प्रत्युत या प्रकार मन माहीं।
बाढ़े आतुरता अप्रमाना ❀ करहिं मनोरथ याविधि नाना॥
जिम यह नंदराय की वामा ❀ लाड़ लड़ावत इन वसुयामा।
तिमि हम हूँ बिन अंतर याहीं ❀ लाड़ लड़ावें अपर न चाहीं॥
इम संतत आसा जिन धारी ❀ लाड़ लड़ावन प्रीति अपारी।
तिन को वात्सल लख मो चीता ❀ उपजे अभिलाषा युत प्रीता ७७

दो॰ अहो यशोदा माय की, जिम सेवों नित गोद।
पावत हों निज रुचि सरिस, बहु विधि लाड़ प्रमोद॥७७॥

सो॰ मो मन अपि यहि आस, तथा इनहुँ को लाड़ सुख।
कब पावों यह प्यास, बढ़त रही मो हिय विषे॥२४॥

तैसे हा गौवन मन माहीं ❀ या प्रकार चिंतन रह ताहीं।
यदपि कृष्ण हमरो पयपाना ❀ करहि निरन्तर मुदित महाना॥
किन्तू सो साक्षात न अहही ❀ यथा प्रथम तो पय जो रहही।
दुह्यो जाय पुन तिहँ औटाई ❀ मिश्रि आदि बहु वस्तु मिलाई॥
ता पाछें सियरो है जब ही ❀ करहि पान मन मोहन तबही।
या विधि सों भल कर पय पाना ❀ याको अपि है हर्ष महाना॥
किन्तू पूर्ण रूप से नाहीं ❀ ताहित हम निजहिय असचाहीं।
यथा वत्स करहीं पयपाना ❀ तथा यदी यशुमति सुत काना॥

१—सन्तोष।

पावे दूध वत्स के रूपा ❀ तब है पूर्ण प्रमोद अनूपा ।
जनु अस इच्छा गोवन केरी ❀ अतिशय सुदृढ़ निरंतर हेरी७८

दो० ताहित मो मन में अपी, उपजेऽया विधि भाव ।
कदा वत्स ह्वै गोन को, पीवों पय बड़ चाव ॥७८॥

सो० जे जन निज जिय माहिं, यथा भावना धारहीं ।
मो दृढ़ ब्रत यह आहि, तथाहि पूरण करण को॥२५॥

* इति श्रीकृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे षष्ठम सोपान समाप्त *

तासों इह अवसर के माहीं ❀ सबहिन आस पूर्ण ह्वै याहीं ।
अरु यह प्राप्त प्रसंग जु अहही ❀ विधि मो शक्ति विलोकन चहही॥
ताहित मो बछरा अरु बाला ❀ हरण मनोरथ किय सुरपाला ।
प्रथमें वाहि समय यदि ताकी ❀ करत नष्ट तिहँ आसा पाकी ॥
पुन जबही वो गयो चुराई ❀ मायाकृत बछरा समुदाई ।
अरु बालक तबही मैं ताहीं ❀ दिखरावत निज महत्त्व जु आहीं॥
जासों मो महती प्रभुताई ❀ जान लेत विधि शंक नसाई ।
किन्तु विधाता के हिय केरी ❀ इम नहिं मुदिता होत घनेरी ॥
जिहँ थल में जिहँ वस्तू केरो ❀ है अभाव तिहँ थल अस हेरो ।
यदी अचानक किँहहुँ प्रकारा ❀ वह वस्तु पहुँचे किँह द्वारा ७९

दो० तौ तिहँ वस्तू को तहाँ, होइ महत सन्मान ।
अरु तिहँ थल वासी जनन, होवें मोद महान ॥७६॥

तिम ब्रह्मा ऐश्वर्य उपासी ❀ है ऐश्वर्य देश को वासी।
यदि निज बड़ प्रभुता जो आहीं ❀ दिखरावौं तौ विधि हियमाहीं॥
मोद विशेष नाहिं उपजावे ❀ पुन अपि पूर्ण तोष नहिं पावे।
कारण यह हमरी प्रभुताई ❀ बहु अवसर विधि निरखी आई॥
किन्तु तदपि यह निज हिय माहीं ❀ मंजु महत्व विलोकन चाहीं।
ताहित निज माधुरी मनोज्ञा ❀ दरसावौं अब अंजके योज्ञा॥
अरु ऐश्वर्य अपी अप्रमाना ❀ पद्मज प्रति प्रकटावौं नाना।
तब परमेष्ठी हिय हुलसावे ❀ अरु बड़ अचरज सिंधु समावे॥
तिम या अंतर रहस्य नवीना ❀ मो अरु ब्रजवासिन हित चीना।
धार विवेचन अस हिय माहीं ❀ यहि निश्चय कीनों हरि ताहीं८०

दो० ताहित वयसन मात जिन, मातृ भावना आहि।
तिन प्रसन्नता करन हित, पूर्ण मनोरथ चाहि॥८०॥

सो० अरु गौवन मन माहिं, वत्स भावना सुदृढ़ है।
जान कृष्ण प्रभु ताहिं, पूर्ण करण चित चाहहीं २६

अरु माया अतीत हैं जेऊ ❀ पुन निज परिकरमें अपि तेऊ।
अस बल परियंतन अपि ताहीं ❀ मोहित कर सब लोकन माहीं॥
निज माया बलकेर प्रभावा ❀ दरसावन हित अपि है भावा।
कियो पितामह मोहित भारी ❀ योगमाय माया विस्तारी॥
पुन अपि मोहित विधिको ताहीं ❀ बड़ विस्मय समुद्र के माहीं।

१ ब्रह्मा २ ब्रह्मा ३ ब्रह्मा ४ ब्रह्मा।

पटकन अहै मनोरथ काना ❀ अरु श्रीवासुदेव भगवाना ॥
तिहँ जापै किय कृपा विशेशा ❀ सरस भागवत को उपदेशा ।
कियो अहै अस परम उदारा ❀ तामैं जिहँ अनन्य व्रत धारा ॥
या विधि वासुदेव प्रभु माहीं ❀ भक्तिवान निश्चित मति आहीं ।
तिहँ प्रति वासुदेव के रूपा ❀ दिखरावन हित अमित अनूपा॥८१

दो० स्वयं एव श्रीकृष्ण हरि, वत्सप वत्स स्वरूप ।
भये शीघ्रही जेउ प्रभु, अहैं समर्थ अनूप ॥ ८१ ॥

सो० जाहित हैं साक्षात, महा पुरुष प्रभृतिन प्रभू ॥
अस समर्थ प्रख्यात, हैं अवतारी आपुही ॥ २७ ॥

वत्सप वत्सात्मिक प्रभु कह्यऊ ❀ ते का अंश रूप से रह्यऊ ।
अथवा स्वयं एव बहु रूपा ❀ भये कृष्ण सामर्थ्य अनूपा ॥
वा निज योगमाय प्रति आज्ञा ❀ करी कृष्ण प्रभु नें श्रुत राज्ञां ।
वानें निज संकल्प विशाला ❀ रचे अनेकन बछरा बाला ॥
याको उत्तर उर में आनो ❀ हरि की अनुपम शक्ति पछानो॥
यावत बछरा बालक आहीं ❀ आपुहि भे प्रभु अंतर नाहीं ॥
नहिं इतनोही किन्तु निहारो ❀ कृष्ण प्रभाव प्रतक्ष विचारो ।
वत्सप वत्स रूप प्रभु भयऊ ❀ कहा विलक्षणपन यहँ रह्यऊ ॥
इन सबहिन के अंगन माहीं ❀ विविध वस्त्र आभूषण आहीं ।
ते अपि स्वयं आप प्रभु भयऊ ❀ रंचहु भेद तहाँ नहिं रह्यऊ॥८२॥

१ अर्थात् वासुदेव भगवंत २ प्रीति ।

सोय रहे हैं ते सब जाते ❀ विरह व्यथा सम्भवे न ताते ।
या विधि या थल दोउ प्रकारा ❀ नेंकहु असमंजस न निहारा ॥
वत्सप वत्स रूप प्रभु धारे ❀ वहि प्रसंग मुनि कह विस्तारे ।
जिहँ प्रमाण वछरा अरु बाला ❀ छोटे बड़े रहे भुविपाला ! ॥
जिहँ प्रमाण तिन सबहिन केरे ❀ कर चरणादिक श्रीप्रभु हेरे ।
जिहँ प्रकार तिनके कर माहीं ❀ लकुट श्रृंग वेणू सुठ आहीं ॥
अरु छींके आदिक अपि अहहीं ❀ यथा वस्त्र भूपण तनु रहहीं ।
यथा रह्यउ तिन सुष्ठ सुभावा ❀ गुण उत्कर्ष हेतु दरसावा ॥८४॥

दो॰ अरु विशेष शिक्षात्मिका, बानी यथा मनोज्ञ ॥
जिन जिनके जे नाम हैं, नामहु तिनके योज्ञ ॥८४॥

सो॰ रहे यथा आकार, गौर श्याम सुंदर सुभग ।
अरु जिम तिन व्यवहार, मात पिता प्रभृतिन विपे२६

सवन जो अहहीं ❀ तिहँसुमरण आदिकजिम रहहीं ।
है सर्व प्रकारा ❀ सर्व रूप भे नंदकुमारा ॥
प्र[illegible] [illegible]त भयऊ ❀ सर्व विष्णुमय वच जिम रह्यऊ ।
प्रकासा ❀ जीवात्मक पन रंच न भासा ॥
नूपा ❀ भये वत्स वत्सप युग रूपा ।
हीं ❀ ग्वाल बाल खेलत रह ताहीं ॥
❀ वत्सप वत्स स्वयं व्रजचंदा ।

दो० कछु अचरज नहिं कृष्ण को, कारण यहि ता माहिं।
महा सृष्टि कर्तान के, अपि ते ईश्वर आहिं ॥ ८२॥

यदि को शंक करे मन माहीं ❀ परम कृपालु कृष्ण जो आहीं।
तिन निज वयसन केर वियोगा ❀ कियो सहन किम,बनै न योगा॥
अरु जे वछरा बालक अहहीं ❀ इक पलहू बिन कृष्ण न रहहीं।
ते अपि किम सह बिरह कन्हाई ❀ रसाभास सम्भवित महाई ॥
तौ याको उत्तर मुनि कहहीं ❀ तुम्हरे वचन नीक ये अहहीं।
किन्तु रहस्य जोउ या माहीं ❀ रंचहु तिहँ तुम जानहु नाहीं ॥
प्रथमैं कृष्ण पक्ष सुन लीजे ❀ हिय संशय को त्वर तज दीजे।
नँद नंदन निज हिये विचारा ❀ ग्वाल बाल मो प्राण अधारा॥
नैंकहि विलम भयो या ठाहीं ❀ प्रविशे अजगर के मुख माहीं।
ना जानौं इम औरहु आवैं ❀ के उत्पात जु तिनैं दुखावैं८३॥

दो० या शंका को निज हिये, धार कृष्ण भगवान।
शुभ एकांत प्रदेश में, राखे हित कल्यान॥ ८३॥

सो० जिम द्वारावति माहिं, राखें यादव वृंद को।
तिम रच्छा किय आहिं, यहँ बछरा अरु बालकन२८

अब गोपन के पक्ष सुनीजे ❀ या शंकाहू को तज दीजे।
ग्वाल बाल वछरा जे आहीं ❀ योगमाय के परिधी[1] माहीं॥

---

[1] मंडल (घेरा)।

सोय रहे हैं ते सब जाते ❀ विरह व्यथा सम्भवै न ताते ।
या विधि या थल दोउ प्रकारा ❀ नैंकहु असमंजस न निहारा ॥
वत्सप वत्स रूप प्रभु धारे ❀ वहि प्रसंग मुनि कह विस्तारे ।
जिहँ प्रमाण बछरा अरु बाला ❀ छोटे बड़े रहे भुविपाला ! ॥
जिहँ प्रमाण तिन सबहिन केरे ❀ कर चरणादिक श्रीप्रभु हेरे ।
जिहँ प्रकार तिनके कर माहीं ❀ लकुट शृंग वेणू सुठ आहीं ॥
अरु छींके आदिक अपि अहहीं ❀ यथा वस्त्र भूषण तनु रहहीं ।
यथा रह्यउ तिन सुष्ठ सुभावा ❀ गुण उत्कर्ष हेतु दरसावा ॥८४॥

दो० अरु विशेष शिक्षात्मिका, बानी यथा मनोज्ञ ॥
जिन जिनके जे नाम हैं, नामहु तिनके योज्ञ ॥८४॥

सो० रहे यथा आकार, गौर श्याम सुंदर सुभग ।
अरु जिम तिन व्यवहार, मात पिता प्रभृतिन विषे२९

पूर्वाचरण सवन जो अहही ❀ तिहँ सुमरण आदिक जिम रहहीं ।
तथा तथाही सर्व प्रकारा ❀ सर्व रूप भे नंदकुमारा ॥
या प्रकार प्रभु सोहत भयऊ ❀ सर्व विष्णुमय वच जिम रह्यऊ ।
भगवत आत्मक सकल प्रकासा ❀ जीवात्मक पन रंच न भासा ॥
इम एकहि प्रभु ईश अनूपा ❀ भये वत्स वत्सप युग रूपा ।
दिनके दुपहर त्रिपहर माहीं ❀ ग्वाल बाल खेलत रह ताहीं ॥
तिम सायं अवसर सानंदा ❀ वत्सप वत्स स्वयं व्रजचंदा ।

१ दो अर्थात् वत्स वत्सप ।

दो० कछु अचरज नहिं कृष्ण को, कारण यहि ता माहिं।
महा सृष्टि कर्तान के, अपि ते ईश्वर आहिं ॥ ८२॥

यदि को शंक करे मन माहीं ❀ परम कृपालु कृष्ण जो आहीं।
तिन निज वयसन केर वियोगा ❀ कियो सहन किम,बनै न योगा॥
अरु जे वछरा बालक अहहीं ❀ इक पलहू बिन कृष्ण न रहहीं।
ते अपि किम सह विरह कन्हाई ❀ रसाभास सम्भवित महाई ॥
तौ याको उत्तर मुनि कहहीं ❀ तुम्हरे वचन नीक ये अहहीं।
किन्तु रहस्य जोउ या माहीं ❀ रंचहु तिहँ तुम जानहु नाहीं ॥
प्रथमें कृष्ण पक्ष सुन लीजे ❀ हिय संशय को त्वर तज दीजे।
नँद नंदन निज हिये विचारा ❀ ग्वाल बाल मो प्राण अधारा ॥
नेंकहि विलम भयो या ठाहीं ❀ प्रविशे अजगर के मुख माहीं।
ना जानौं इम औरहु आवैं ❀ के उत्पात जु तिनैं दुखावैं८३ ॥

दो० या शंका को निज हिये, धार कृष्ण भगवान।
शुभ एकांत प्रदेश में, राखे हित कल्यान ॥ ८३ ॥

सो० जिम द्वारावति माहिं, राखें यादव वृंद को।
तिम रक्षा किय आहिं, यहँ वछर बाल ८८

अब गोपन के पक्ष सुनीजे ❀ या त
ग्वाल बाल वछरा जे आहीं ❀ योगमाय

१ मंडल (घेरा)।

करही रहि हैं खोज कन्हाई ❀ तिन बछरन कर कार सुहाई ।
भयो वर्ष सो पलक समाना ❀ किहँअपि यागतिको नहिंजाना॥
अरु तिहँ-तिहँ थल वनके माहीं ❀ नित प्रति जावत हैं सब ताहीं ।
किन्तु तहाँ नहिं देखत तेऊ ❀ अन्य भाव परिकारिके जेऊ ॥
स्वयं कृष्ण निज रूप जु बाला ❀ अरु बलदेवहु रूप रसाला ।
ते अपि तिनको तिहँ थल माहीं ❀ नहिंविलोकसकअसगतिआहीं॥
कारण योगमाय जो अहही ❀ नित अचिंत्य शक्ती युत रहही।
तिहँ प्रभाव तिन देख्योहु नाहीं ❀ लीला रहस्य बढ़ावन ताहीं ८७

दो० कृष्णरूप वत्सप सकल, तिन-तिन बछरा वृंद ।
कृष्णरूप सब हैं तिन्हें, नँद-नंदन ब्रजचंद ॥ ८७ ॥

पृथक-पृथक प्रथमें यथा, हते तथा थल ताहिं ।
भिन्न-भिन्न कर वृंद तिन, तिन-तिन खिरकन माहिं ३०

पहुँचाये अरु मिल सख वृंदा ❀ निज निज-गृह गवने सानंदा ।
अहो यशोमति सुत यह काना ❀ हमरो सुत किम होय सुजाना ॥
इम गोपिन अभिलाषा जोई ❀ जिहँ प्रकार तिहँ सिद्धी होई ।
सो या थल मुनि करत बखाना ❀ जिम गोपिन भो प्रेम महाना ॥
जो सनेह प्रथमें नहिं रह्यऊ ❀ अरु वर्ताव न या विधि भयऊ ।
प्रथमें जो कबहू न विलोक्यो ❀ उमड़्यो वातसल गयो न रोक्यो॥
अस सीमान्त प्रेम तिन केरो ❀ मुनि या थल में प्रस्फुट टेरो ।
जब ब्रज निकट सकल ते आये ❀ वेणु बजावत अति हरषाये ॥

ह्वै कर तिन तिन खिरकन माहीं ❀ गवने सोउ कहत मुनि याहीं ॥
स्वयं कृष्ण आत्मा हैं जोऊ ❀ आतमरूप गोवत्सन सोऊ ।
आतमरूप ग्वालन के द्वारा ❀ तिन वत्सन लौटाय उदारा ८५

दो० स्वयं हि आत्म विहार ह्वै, आत्म रूप जे बाल ।
वेणु बजावन आदिसे, करत विहार रसाल ॥८५॥

इम सर्वातम व्रज के माहीं ❀ भे प्रवेश प्रमुदित चित ताहीं ।
यहँ सब थल आतम पद कह्यऊ ❀ तामें बड़ रहस्य यह रह्यऊ ॥
मोहन सो मिल ग्वालन वृंदा ❀ ले वछरा वन गै सानंदा ।
तावत यहँ गोवन ने जाये ❀ जे वछरा वछिया समुदाये ॥
तिनि में तिन धेनूगण केरो ❀ इतो प्रेम वात्सल नहिं हेरो ।
जितनों प्रेम अहे इन माहीं ❀ आतम रूप वछरा जे आहीं ॥
अरु गोपिन के अपरहु बाला ❀ तिनिमेंअपि वात्सल्य विशाला॥
इतनों नहिं जितनों इन माहीं ❀ आतमरूप बालक जे ताहीं ॥
मुनिवर यह प्रत्यक्ष निहारो ❀ ताते आतम शब्द उच्चारो ।
आशय यह भगवत साक्षाता ❀ प्रेमपात्र जिन निकट सुहाता८६

दो० ताहित तिनमें प्रेम है, सो सीमान्त लखाय ।
अपरन में है नेह जो,सो अति अल्प दिखाय॥८६॥

यहाँ पुलिन में वत्सप जेऊ ❀ भोजन ही कर रहिं हैं तेऊ ।
अरु यावत वछरा जे अहहीं ❀ ते अपि तृण चर रहिहैं तहहीं ॥

१ बेहद ।

करही रहि हैं खोज कन्हाई ❀ तिन वछरन कर कार सुहाई ।
भयो वर्ष सो पलक समाना ❀ किहँअपि यागतिको नहिंजाना॥
अरु तिहँ-तिहँ थल वनके माहीं ❀ नित प्रति जावत हैं सब ताहीं ।
किन्तु तहाँ नहिं देखत तेऊ ❀ अन्य भाव परिकारिके जेऊ ॥
स्वयं कृष्ण निज रूप जु बाला ❀ अरु बलदेवहु रूप रसाला ।
ते अपि तिनको तिहँ थल माहीं ❀ नहिंविलोकसकअसगतिआहीं॥
कारण योगमाय जो अहही ❀ नित अचिंत्य शक्ती युत रहही ।
तिहँ प्रभाव तिन देख्योहु नाहीं ❀ लीला रहस्य बढ़ावन ताहीं ८७

दो० कृष्णरूप वत्सप सकल, तिन-तिन वछरा वृंद ।
कृष्णरूप सब हैं तिनैं, नँद-नंदन ब्रजचंद ॥ ८७ ॥

पृथक-पृथक प्रथमें यथा, हते तथा थल ताहिं ।
भिन्न-भिन्न कर वृंद तिन, तिन-तिन खिरकन माहिं३०

पहुँचाये अरु मिल सख वृंदा ❀ निज निज-गृह गवने सानंदा ।
अहो यशोमति सुत यह काना ❀ हमरो सुत किम होय सुजाना ॥
इम गोपिन अभिलापा जोई ❀ जिहँ प्रकार तिहँ सिद्धी होई ।
सो या थल मुनि करत वखाना ❀ जिम गोपिन भो प्रेम महाना ॥
जो सनेह प्रथमें नहिं रह्यऊ ❀ अरु वर्ताव न या विधि भयऊ ।
प्रथमें जो कबहू न विलोक्यो ❀ उमड़्यो वात्सल गयो न रोक्यो॥
अस सीमान्त प्रेम तिन केरो ❀ मुनि या थल में प्रस्फुट टेरो ।
जब व्रज निकट सकल ते आये ❀ वेणु वजावत अति हरषाये ॥

तिहँ वंशी धुनि सुनि तिन मैया ❀ रस वात्सल्य मग्न सुख पैया ।
जे-जे गृह कारज में लागीं ❀ तिन तज सुत सनेह में पागीं ॥८८

दो० त्वरा युक्त ते गोपि सब, ठाढ़ीं निज-निज द्वार ।
उत्कंठा पुत्रन मिलन, बाढ़ी हिये अपार ॥ ८८ ॥

जब वे द्वार देश पै आये ❀ निज-निज माय निरख सुखपायें।
अरु यावत गोपी रहिं ताहीं ❀ सुनत विलोक महद मुद आहीं॥
तिहँ अवसर वात्सल रस केरो ❀ उमड़यो महाउदधि अस हेरो ।
तामें सकल गोपि हैं मग्ना ❀ या विधि तिन विचित्र है लग्ना ॥
यह-यह गति गोपिन की अहहीं ❀ तावत सकल बाल जे रहहीं ।
तिन निज-निज मैया पद-पद्मा ❀ कियो प्रणाम प्रेम उर सद्मा ॥
तब ते तिन पुत्रन हरषाई ❀ लियो अंक में आशु उठाई ।
अरु निशङ्क है आपन छाती ❀ लियलगाय हिय बड़ हुलसाती॥
पुन जिनको छोड़न तें सबहीं ❀ भइ असमर्थ प्रेम अस तबही ।
जो सनेह व्यापो सब देहा ❀ कोकवि कह सक तिन बड़ नेहा॥८९

दो० अरु तिनको निज अंक में, लियो अहैं हुलसाय ।
मानत हैं परब्रह्महीं, पुत्ररूप ह्वै आय ॥ ८९ ॥

सो० वा पुत्रन को ताहिं, परम्ब्रह्म मानत अहैं ।
वा मुनिवर उर माहिं, प्रभुकी परमैश्वर्यता ॥ ३१ ॥

स्फूर्ति भई ताहित या ठाहीं ❀ परंब्रह्म भाख्यो मुनि आहीं ।
यासों गोपिन भाग्य बड़ाई ❀ मुनिवरनें प्रस्फुट दरसाई ॥

यथा ब्रह्म-नत्र आगे कहहीं ❀ यावत जे व्रजवासी अहहीं ।
अहो भाग्य पुन-पुन तिन केरे ❀ पूर्णब्रह्म जिन मित्र भइरे ॥
या प्रकार पुत्रन कर अंका ❀ निरखत पुन-पुन वदन-मयंका ।
गवनी निज-निज गृहके माहीं ❀ जिनको लाड़ अलौकिक आहीं ॥
जिन वक्षोजन दूध चुचातो ❀ अधिक प्रेम प्रत्यक्ष दिखातो ।
सो पय मादक मिष्ट महाना ❀ निज-निज सुतन करावत पाना ॥
वा परब्रह्महि कर पय पाना ❀ मान सुधासव मुदित महाना ।
स्नेह स्नुतको है यह भावा ❀ स्नेह स्वरूप प्रतक्ष जनावा ॥९०॥

दो० यहाँ प्रेम आस्वाद को, महा रसिक श्रीकान ।
अमृत सम स्वादिष्ट अति, मधुसम मादक[1] मान ॥९०॥

स्तन पय पुन-पुन पीवत ताहीं ❀ तृप्ति रंच अपि मानत नाहीं ।
या विधि कृष्णहिं लोभ महाना ❀ स्तन पय पान करन प्रकटाना ॥
इन गोपिन में मोहन केरी ❀ पुत्र भावना रही घनेरी ।
सो अपि सिद्ध भई या ठाहीं ❀ विधि मोहन प्रसंग के माहीं ॥
याही हित निज सखा पियारा ❀ मोहे योगमाय के द्वारा ।
या विधि निज निज पुत्रन ताहीं ❀ स्तन पय पान करावत आहीं ॥
अहैं सकल वात्सल रसमग्ना ❀ नाहिं तनु अनुसंधान सुलग्ना ।
स्तन पय पान करत रह बाला ❀ तिन अपि तृप्ति भई भूपाला ॥
ताहित वक्षोजन तें ताहीं ❀ मुख हटाय अंकस्थित आहीं ।
जब गोपिन भो अनुसंधाना ❀ पुत्रन तृप्ति भई अस माना ॥९१॥

---

१ प्रेमकी खुमारी करने वाला ।

दो० तव के वारें सुतन पै, राई नौंन जो आहिं।
केउ आरतो करत हैं, के तृण तोरें ताहिं॥ ६१॥

सो० पुन सुगन्धमय जोउ, तेल चमेली आदि को।
तिन तनु में मुद होउ, मंजु करन मर्दन करहिं॥३२॥

वा० केशर बदाम तिन माहीं ❀ लई मिलाय चिरौंजी ताहीं।
सवन पीस उवटनों बनायो ❀ करत उवटनों निज मन भायो॥
जिहँ अवसर जिहँ अंग मँझारा ❀ करहिं उवटनों प्रीति अपारा।
तिहँ अवसर तिहँ अंग निहारी ❀ ते मन में इम कहैं विचारी॥
अहो सोह या अंग अपारा ❀ यदि किहँ जनअपि याहिं निहारा।
तो तिहँ दृष्टि अवशही लागे ❀ इम कह वात्सल रस में पागे॥
अरु मो दृष्टिहु इन लग जाई ❀ अस विचार तिन बालक माई।
अधोदृष्टि त्वर करहीं ताहीं ❀ मग्न होय वात्सल रस माहीं॥
इम उवटनों करहिं जिहँ अंगा ❀ तिहँ-तिहँ सोह विलोक सुरंगा।
याही विधि तिन गोपिन चीता ❀ उपज शंक अस वात्सल प्रीता१२

दो० इमि सर्वांग सुरीति सों, कर उबटन तिन माय।
ऋतु अनुसार सुवारि सों, नहवायो हुलसाय॥६२॥

सो० पुन तिन भाल कपोल, पत्रावलि रचना रची।
जिहँ विलोक ह्वै लोल, जन विरक्त के नैन हिय॥३३॥

१—कोमल हाथन सों २ चञ्चल।

ता पाछे ऋतु के अनुसारा ❀ पहिराये पट विविध प्रकारा।
अरु अमूल आभूषण जेऊ ❀ धारण करवाये मुद होऊ॥
सुठ अंजन आँज्यो तिन नैना ❀ सकल गोपि प्रमुदित उर ऐना।
हम जब उवटन कर नहवाये ❀ बहु विधि भूषण पट पहिराये॥
पत्रावली रची मनहारी ❀ नैनन काजर सोह अपारी।
तब उपजी शंका उर माहीं ❀ छवि स्वरूप हमरे सुत आहीं॥
इन सुकुमारन सोह निहारी ❀ होय चकित निज हिये मँझारी।
देखैं इनकी सोह महाई ❀ ताहित इन्हें दृष्टि लग जाई॥
हम सब ही गोपी मन माहीं ❀ पृथक-पृथक शंका कर ताहीं।
कियो डिठोना लालन अंगा ❀ सुत सनेह जिय परम उमंगा॥३२

दो० अरु तिन चन्दन को कियो, तिलक मनोहर भाल।
दाईं हाथ अंगुष्ठ सों, ऊरध पंड्र रसाल॥ ६३॥

सो० पुन ताके दुहुँ ओर, खोर रच्यो सुठ रीति सों।
जाकी सोह न थोर, चोर सदृश मन हरण कर॥३४॥

ता पाछे रुचिदाय, अरु स्वादिष्ट महान जे।
बहु पकवान बनाय, सुतन जिमाये लाड़ सों॥३५॥

तदनन्तर निज पुत्रन पाहीं ❀ वन वृतांत पूछत मुद आहीं।
तहँ सुबल मैया अस कहही ❀ अहो सुबल तुव मुस्कन अहही॥
सो मुहिं तुव उर भाव लखावे ❀ कृष्ण जु तुम्हरो मित्र कहावे।
तासौं मिल तें मोद महाई ❀ पायो है निश्चय वन जाई॥

सोउ सुनाय माय प्रति याहीं ❀ अस सुन सुवल कहत मा पाहीं ।
अहो माय मो मन मुदिताई ❀ याहि हेतु तुहिं देत दिखाई ॥
आज खेल खेलत वन माहीं ❀ नंद सुवनसों मिलकें ताहीं ।
तहाँ खेल में हार्यो काना ❀ यद्यपि सो है चतुर महाना ॥
अरु मैं जीत्यो सहज सुभाई ❀ ताहित मो मन मोद महाई ।
वहु दिन तें मैं आजुहि मैया ❀ भलो दाव पायो सुख दैया ९४

दो॰ अस सुन मैया सुवल की, हर्ष वलैया लेत ॥
अरु वहु लाड़ लड़ावती, वहु प्रकार सुखदेत ॥९४॥

याही विधि यावत जे गोपी ❀ सुत सनेह में मति जिन ओपी ।
निज-निज पुत्रन पूछत ताहीं ❀ वन वृतांत ते अपि तिन पाहीं ॥
कहत भये जिहँ सुन तिन मैया ❀ मनमें महा मोद है पैया ।
निज आचरण सकल ते वाला ❀ मातुन को दें मोद विशाला ॥
इह थल वात्सल प्रेम महाना ❀ गोपिन केरो कियो वखाना ।
यथा विपिन तें बालक आये ❀ उमड़यो वात्सल उर न समाये॥
तदनुसार वर्ताव जु कह्यऊ ❀ सो अपि वड़ अचरजप्रद रह्यऊ ।
तिम वात्सलता यशुमति केरी ❀ शतप्रज्ञादिकहू तिहँ हेरी ॥
ह्वै वड़ चकित तथा वरतावा ❀ जिहँ सुनतहि उपजे उर भावा ।
कारण यह श्रीयशुमति माता ❀ वात्सल रस रूपा साक्षाता॥९५॥

दो॰ताहित यशुमति कृष्ण को, नितही लाड़ लड़ाय ।
नित नूतन वात्सल रहै, को अपि थाह न पाय॥ ९५ ॥

किन्तू मातृ भावना वारी ❀ अपर गोपि गण घोष मँझारी ।
तिन यह दाव अबहि है पायो ❀ यामें यहि कारण प्रकटायो ॥
जो तिन बालक कृष्ण स्वरूपा ❀ नेकहु अंतर नहिं हे भूपा ।
इह विधि नंद-सुवन घनश्यामा ❀ गोपवृंद अरु श्रीबलरामा ॥
आतमरूप सबही तिन संगा ❀ सायं समये सहित उमंगा ।
आये व्रज में सबही ताहीं ❀ गवने निज-निज गृह के माहीं॥
अब गौवन वात्सल अप्रमाना ❀ मुनिवर या थल माहिं बखाना ।
आई जब गौ खिरकन माहीं ❀ जान समय बछरन अपि ताहीं ॥
त्वर हुं हुं रव बछरा वृंदा ❀ टेरत अहैं सकल सानंदा ।
आतुरता जो है तिहँ काला ❀ को कह सक भल बुद्धि विशाला९६

दो० गौवन के टेरत तहाँ, यावत बछरा वृंद ।
हंवा हंवा शब्द कर, धाये युत आनंद ॥ ९६ ॥

आये निज-निज खिरकन माहीं ❀ तिनें विलोक धेनुगण ताहीं ।
महा मोद में अहैं निमग्ना ❀ अतिविचित्र तिनसबहिनलग्ना॥
अहै अधिक वात्सल ता हेतू ❀ स्रवत ऐन ते पय सुखदेतू ।
सो पय निज-निज बछरन ताहीं ❀ सबहि पिवावत प्रमुदित आहीं॥
पुन तिन बछरन के शुभ अंगा ❀ चाटत धेनुवृंद सउमंगा ।
इन बछरन में गौवन केरो ❀ वात्सल अमित अहै जो टेरो ॥
यासों पूर्व वत्स जे ताहीं ❀ तिनतें अधिक लखायो आहीं ।
या विधि गोपिन गौवन केरो ❀ वरण्यो अहै सनेह घनेरो ॥
गो गोपिन यशुमति सुत माहीं ❀ अहै मातृभाव जो ताहीं ।
सो निश्चय है सर्व प्रकारा ❀ उपलालनादि रूप निहारा॥९७॥

दो॰ सोउ यथा निज सुतन तें, रह्यौ प्रथम तिन नेह।
तिनितें अधिकी कृष्ण में,लख्यो प्रकट है एह ॥६७

अब जो तिन गोपिन गृह माहीं ❀ पुत्र रूप है कृष्ण जु आहीं।
तिनिमें अपि तिन नेह विशेशा ❀ तथाहि है नहिं अंतर लेशा ॥
आशय यह यशुमति सुत माहीं ❀ यथा नेह तिन गोपिन आहीं।
तथा अपन पुत्रन में नेहा ❀ है गोपिन को निश्चय एहा ॥
तिम गौवन अरु गोपिन माहीं ❀ हरिको वाल भाव जो आहीं।
सो अपि सुत समान ही कह्यऊ ❀ नहिं साक्षात पुत्र पन रह्यऊ ॥
अब विधि मोहन दिनतें काना ❀ तिन पुत्रन के रूप सुहाना।
आशय यह श्रीमोहन केरो ❀ सत्यहि पुत्र भाव अब हेरो ॥
यहँ वादी यह शंका करही ❀ अरु इह विध के वचन उचरही।
श्रीदामादिक पुत्रन माहीं ❀ निज मातुन को नेह जु आहीं [१]८

दो॰ सो जैसे प्रथमै रह्यो, तैसे कृष्ण स्वरूप।
निज पुत्रन में उचित है,भई अधिक किम ऊप ॥६८॥

कारण प्रथमें मुनिवर कह्यऊ ❀ कृष्ण स्वरूप वाल जे रह्यऊ।
तिनमें यावत शील गुणादी ❀ रहे यथावत ये वच वादी ॥
जब शीलादि यथावय रह्यऊ ❀ तौ फिर कृष्ण रूप जे भयऊ।
तिनमें किम भो अधिक सनेहा ❀ यह संशय निश्चय थल एहा ॥

१: प्रीति।

शंक निवारण वादी पाहीं ❀ भाखत वचन रहसमय आहीं।
नंद-सुवन श्रीकृष्ण जु कहहीं ❀ जाहित महा महेश्वर अहहीं॥
ताहित ब्रह्मादिक समुदाई ❀ बड़े-बड़े जे देव कहाई।
निज अधीन किय सहज सुभाई ❀ अस है नँद-नंदन प्रभुताई॥
और कहाँ लग केशव केरी ❀ या थल कहुँ प्रभुताइ घनेरी।
जिहँ वल परियंतन अपि कीना ❀ सहज सुभाव अपन आधीना ९९

दो० जे निज अंश स्वरूप हैं, अरु निज परिकर माहिं।
इम अधीन किय सबन भल, कृष्णचन्द्र जे आहिं॥९९

तदपि प्रेम के स्वयं अधीना ❀ रहैं निरन्तर किल अस चीना।
प्रेम प्रशंस अनिर्वचनीया ❀ किल आकर्षक सबहिन जीया॥
यद्यपि बंधन विविध प्रकारा ❀ प्रेम-रज्जु[१] दृढ़ बंध निहारा।
यथा दारु[२] मंजूषा[३] माहीं ❀ एक भ्रमर राख्यो है ताहीं॥
तिहँ छेदन कर भौंरा सोऊ ❀ निकस जाय बाहर मुद होऊ।
छेदन काष्ठ चतुर अपि भौंरा ❀ जावत है जब बनकी ओरा॥
तहाँ ताल तट पंकज माहीं ❀ गंध प्रेम बैठत मुद आहीं।
जिम-जिम सूर्य अस्त तहँ होई ❀ तिम-तिम कमल मुदत है सोई॥
मुदतः देख भौंरा मन माहीं ❀ यदपि विचारत है तिहँ ठाहीं।
या पंकज में ते उड़ जावौं ❀ अब मैं नेंक विलम नहिं लावौं॥१००

दो० किन्तु गंध नेही सुदृढ़, ताहित उड्यो न जाय।
तावत रविहू अस्त ह्वै, कमल-कोश मुदियाय।१००।

१ रस्सी, २ काष्ठ, ३ पेटी।

यदपि पूर्वहू बछरन माहीं ❀ हतो नेह तिन गोवन ताहीं ।
किन्तु अब श्रीकृष्ण स्वरूपा ❀ वत्स वृन्द ताहित हे भूपा ॥
सहज सुभाव वत्स गण केरो ❀ सब मनहर प्रिय दर्शन हेरो ।
ता कारण गोवन मन माहीं ❀ उपज्यो नेह विशेप तहाहीं ॥
तिहँ सनेह वश आपन देहा ❀ रंच न सुधि अस उमड्यो नेहा ।
शैल शिखर तें वेगहि धाई ❀ बछरन निकट तरहिटी आइ ॥
दारुण पंथ उलंघन कीनों ❀ नैंकहु आपन कष्ट न चीनों ।
यद्यपि ग्वालन विविध प्रकारा ❀ रोकन हित तिन कियो विचारा॥
अरु रोक्यो कर विविध प्रयासा ❀ किंतु व्यर्थ भइ तिन सब आसा॥
धेनु अपन वत्सन के पाहीं ❀ धावत लाड़ सहित त्वर ताहीं१०७

दो० द्वै पद सों ठाड़ी अहें, ऊपर को है ग्रीव ॥
अरु ऊचो है पुच्छ तिन, नहिं सनेह की सीवँ।१०७।

उत्कंठित हुं-हुं रँव करहीं ❀ नैंकहु निज हिय धीर न धरहीं ।
जिनके नैनन अश्रू धारा ❀ सम्यक स्रवत सनेह अपारा ॥
अरु तिन ऐनन दूध चुचावै ❀ अप्रमाण सो नेह लखावै ।
इम गिरिराज तरहिटी माहीं ❀ वत्सन पाय धेनु मुद आहीं ॥
यद्यपि निजू वत्स तिन रहहीं ❀ तद्यपि कृष्ण रूप जे अहहीं ।
तिनैं स्रवत पय स्वयं पियावैं ❀ अरु तिन बछरन अंग सुहावैं॥
चाटत तिनको गो सउमंगा ❀ मानौं निगलत हैं तिन अंगा ।
चाटन अधिक गौन जो अहही ❀ अधिक सनेह जनावत रहही ॥

१ कठिन २ हद ३ शब्द ।

यहां वृत्त गो गण को कह्यऊ ❀ सुनौ जु गोपन की गति भयऊ।
जब तिन गौवन रोकन चाह्यो ❀ अपनों बल सम्पूर्ण लगायो १०८

दो० सो उद्यम तिन व्यर्थ गो, ताहित तिन मन माहिं।
भइ लज्जा अरु क्रोध अपि, ते अपि गवने ताहिं १०८

दुर्गपंथ¹ सम्भव जो क्लेशा ❀ सहन करत आये तिहँ देशा²।
शैल तरहिटी में जहँ बाला ❀ वत्स चरावत मुदित विशाला॥
यद्यपि गौवन रोकन कारण ❀ गोपन किय प्रयास को धारण।
किन्तु प्रेमरस उदय मँझारा ❀ सो श्रम अंतरै³ करन उचारा॥
गोपन निज-निज पुत्रन पाहीं ❀ या विध वचन पूर्व कहि आहीं।
जिहँ थल हम गोवृंद चरावैं ❀ तहँ गौ, बछरा देख न पावैं॥
आशय यह जहँ हमहिं विलोको ❀ तिहँ थल बछरन को नहिं रोको।
कहुं आन थल में ले जावौ ❀ सुखपूर्वक तहँ वत्स चरावौ॥
तिन वचनानुकूल नित नेमा ❀ वत्स चरावत भै युत प्रेमा।
किन्तु अचानक वत्स चरावत ❀ हुलसावत बातन बतरावत १०९

दो० आये गिरि के तरहिटी, वत्सप बछरन संग॥
शैल शिखर गौवैं हतीं, चर रहिं तृण सउमंग १०९

सो० देखत बछरा ताहिं, धाइँ, न रुकीं रुकाइँ अपि॥
भयो क्रोध मन माहिं, ताहित गोपन सबनको३८

१ कठिन रास्ता २ तिस स्थान पै ३ अंतराय करवे वारो।

किन्तु जबै क्रोधित है आये ❀ देखे अपन पुत्र समुदाये ।
देखत ही तिन सबाहिन ताहीं ❀ अंतःकरण प्रेम रस माहीं ॥
डूब गयो प्रकट्यो अनुरागा ❀ क्रोधहु शीघ्र तहां ते भागा ।
इति मतिवंत गोप समुदाई ❀ निज-निज पुत्रन को हरपाई ॥
द्वै भुजसौं उठाय अति आसू ❀ लिय लगाय छाती सहुलासू ।
अरु तिन गोद माहिं ले लीना ❀ शिर को सूंघ्यो नेह नवीना ॥
इह विध पुत्रन सों मिल ताहीं ❀ परम मोद पायो हिय माहीं ।
यहां शंक है जस गोवृन्दा ❀ वत्सन निरख भई सानन्दा ॥
तैसे इह थल सम्भव आहीं ❀ दूरहि से निज पुत्रन ताहीं ।
गोपन अपि किल देख्यो होई ❀ वा यदि या विधकह यहँ कोई११०

दो० वत्स चरत तृण रुचि सरिस, शैल तरहिटी माहिं ॥
अहैं बाल सब आन थल, कछु अंतर तिन आहि ११०

ताहित गौवन वछरन वृंदा ❀ देखे तहां भईं सानंदा ।
किन्तु गोप गण देखे नाहीं ❀ निज-निज बालक वत्सन पाहीं ॥
अस्तु मान लिय वचन तुम्हारे ❀ गोपन नहिं देखे निज वारे ।
तौहु अवश तिन हिय के माहीं ❀ अस निश्चय है गो थल ताहीं ॥
वत्सन संगहि बालक अहहीं ❀ बिन बालकन वत्स नहिं रहहीं ।
तौ फिर तिन पुत्रन पै कैसे ❀ भयो क्रोध गोपन, कहु जैसे ॥
या शंका को उत्तर कह्यऊ ❀ यावत धेनु वृंद तहँ रह्यऊ ।
वत्सन निरख प्रमोदित जेऊ ❀ शैल शिखर पै तृण चर तेऊ ॥
कियो उलंघन गोपन आसू ❀ ताहित तिनमें क्रोध प्रकासू ।
निश्चय क्रोध हेतु यहि मानौं ❀ तासौं निज हिय संशय हानौं१११

दो॰ प्रत्युत तिन बालकन को, देखत ही तिन चीत।
तिन सुष्टु[1] माधुर्य में, भयो मग्न सुठ रीत ॥१११॥

तिन माधुरि अनुभव जो भयऊ ❀ सहजहि क्रोध शांत ह्वै गयऊ।
अरु प्रेमोद्भव भो मन माहीं ❀ जो प्रथमैं भाख्यो है ताहीं ॥
यद्यपि वृद्ध गोप हैं जाते ❀ प्राय विवेकी अहहीं ताते।
तिनको निज-निज पुत्रन केरो ❀ अतिशय अल्प वियोग जु हेरो॥
तदपि नेह बड़ हेतु अनूपा ❀ अहैं बाल सब कृष्ण स्वरूपा।
आशय यही तरहिटी माहीं ❀ वत्स चरावन आये ताहीं ॥
इतनो ही अवसर तिन भयऊ ❀ नहिं चिरकाल विरह तिन रह्यऊ।
अरु ते वयो वृद्ध अपि अहहीं ❀ ताहित प्राय विवेकी रहहीं ॥
तदपि नेह सीमान्त[2] लखायो ❀ जब गोपन पुत्रन लख पायो।
तामैं यही हेतु तुम जानौ ❀ कृष्णस्वरूप बाल पहिचानौ॥११२॥

दो॰ याही हित नैंकहु[3] विरह, यद्यपि तिन भो आहिं॥
तद्यपि प्रकट्यो नेह बड़,देखत बालक ताहिं।११२।

वातसल मग्न गोपगण आहीं ❀ किय आलिंगन पुत्रन ताहीं।
तासों भयो महत आनंदा ❀ जिहँ अनुभव लघु ब्रह्मानन्दा ॥
तिहँ आनंद पाय गोपाला ❀ गवने तहँते नेह विशाला।
शनै शनै पग धरहीं ताहीं ❀ सुतन सनेह मोद जो आहीं॥
प्रतिपल सुमरण हिय में आवै ❀ वदन फेर दृष्टी तहँ जावै।

१ सुन्दर २ बेहद ३ अल्प।

दो० तव पुनि अपि सम्भावना, करत राम हिय धाम।
प्राय मोर स्वामी जु है, मनहर सुंदर श्याम ॥१२२॥

वाही की माया यह अहहीं ❀ महायोग माया जिहँ कहहीं।
शक्ति असाधारण किल जाकी ❀ को कर सकही समता ताकी ॥
जो मैं माया केर नियंता ❀ मेरो है ऐश्वर्य अनंता।
विशुद्ध घन चेतन के माहीं ❀ किल मेरो अधिकारहु आहीं ॥
ऐसो मैं तिहँ मोहन हारी ❀ अपर कोउ माया न निहारी।
जाहित मोर अंश विधि अहहीं ❀ महत सृष्टिकारक जो रहहीं ॥
अस विधि आदिक सुर समुदाई ❀ सवन मोहिनी सोइ कहाई।
प्रायः वाहीने मन मेरो ❀ मोह्यो अपर न कारण हेरो ॥
प्राय शब्द वलराम जु कह्यऊ ❀ ताहित अवहु शंक हिय रह्यऊ।
पूर्णतया हिय निश्चय नाहीं ❀ यह माया मो प्रभुकी आहीं १२३॥

दो० किन्तु यही निश्चय लख्यो, माया अवशहि आहिं।
मोहि न मुहिं माया अपर, ताहित इह थल्त माहिं।१२३।

प्राय मोर स्वामी की अहहीं ❀ यह माया अस निश्चय रहहीं।
अस विचार पुन हिये मँझारा ❀ इह विधि कह वलदेव उदारा ॥
अस्तु ज्ञान दृष्टी से याको ❀ जो रहस्य जानहुँ पुन वाको।
करतहिं अस विचार मन माहीं ❀ चतुर्थ अंश माया को ताहीं ॥

१ प्रेरक।

भो उपराम, श्याम अभिलासा ❀ तथा राम अपि लख्यो प्रकासा ।
वत्सप वत्स रूप हरि केरे ❀ जन वत्सल बल सत्यहि हेरे ॥
बहुविधि अपिमुनि इह थल कहहीं ❀ भइ विराम माया जब तहहीं ।
तब अनुसंधानात्मक ज्ञाना ❀ प्रेम विशेष रूप जिहँ माना ॥
ताहित समरथपनहु विशेषा ❀ दिखरावैं यह रहस्य अशेषा ।
अब सर्वज्ञ शक्ति ते ताहीं ❀ यावत वत्सप वत्स जु आहीं ।१२४

दो०तिन सबहिन को राम ने, देख्यो कृष्ण स्वरूप ।
रंचहु तिनमें भेद नहिं, इह प्रकार तद्रूप ॥१२४॥

ता पाछे आपन उर धामा ❀ सोच करत है श्रीबलरामा ॥
कृष्णहि भयो वत्स अरु बाला ❀ तहँ को कारण अहै विशाला ॥
अथवा कहा प्रयोजन अहहीं ❀ अरु जे पूर्व रूप इन रहहीं ।
ते किहँ थल थापित किय आहीं ❀ समाधान बहु किय मन माहीं ॥
तदपि स्वयं तिहँ जान्यो नाहीं ❀ यह कारण माया नहिं आहीं ।
निश्चय कृष्णैश्वर्य अनूपा ❀ अहै असाधारण हे भूपा ! ॥
ताहित सब प्रकार सर्वज्ञा ❀ अपि जिन अहै अकुंठित[2] प्रज्ञा[3] ।
अस पूरण आदिक जो अहहीं ❀ जिनको महदैश्वर्यहु रहहीं ॥
कृष्ण अंश ताहित तद्रूपा[1] ❀ तद्यपि है यह बात अनूपा ।
पूर्णतया जो कृष्ण प्रभावा ❀ नहीं जान सक अस दिखरावा ॥

दो० या विधको ऐश्वर्य जो, अहै कृष्ण प्रभु केर ।
भो संशय निज हिय विषे, बलदेवहिं तिहँ हेर ॥१२५॥

१ कृष्ण स्वरूप, २ कहूँ भी नहीं रुकने वाली, ३ बुद्धि ।

ताहित कृष्णैश्वर्य जु अहही ❀ सो स्वरूपही सें अस रहहीं ।
तासों श्रीवलराम जु आहीं ❀ कृष्ण रूप लखे निज हिय माहीं ॥
तत्त्व भेद सब सत्यहि लह्यऊ ❀ अरु निजहियनिश्चयअसकह्यऊ ।
देव और ऋषि गण मन माहीं ❀ प्रभुलीला लालच तिन आहीं ॥
तिहँ लालच वत्सादिक भयऊ ❀ अरु जे पूर्व रूप तिन रह्यऊ ।
तिनैं छिपाय लियो थल आना ❀ अस भो,मो मन तर्क महाना ॥
सो निश्चय पूर्वक भो हाना ❀ यथातथ्य अब तत्त्व पछाना ।
तिन सबहिन को हियो जु अहही ❀ तादृश प्रेमास्पद नहिं रहही ॥
आसुरि माया को थल याहीं ❀ वश संकोच नाम लिय नाहीं ।
ताहित वत्सादिक प्रभु रूपा ❀ यासों बाढ़त प्रेम अनूपा ।१२६।

दो॰ यद्यपि वत्सप वत्स को, अहै जु यह समुदाय ।
विविध भेद आश्रय तदपि, तत्त्व रूप दरसाय १२६

हे प्रभु तुम्हरो महत प्रतापू ❀ विविध भेद आश्रय अपि आपू ।
तदपि आप हो एकहि रूपा ❀ यह रहस्य है परम अनूपा ॥
या अवसर वत्सादिक जेऊ ❀ अहैं आपुही निश्चय तेऊ ।
यदपि आप में कछु क्षति नाहीं ❀ एकहि रूप विराजत आहीं ॥
यथा वेद वानी अस कहही ❀ एकहि ईश अमित है रहही ।
तदपि प्रभु स्वरूप के माहीं ❀ नेकहु अन्तर दीखत नाहीं ॥
सो प्रत्यक्ष यहां दरसायो ❀ आप कृपा अनुभव प्रकटायो ।
किन्तु किहँ कारण अस कीनों ❀ अस भासत ही नेह नवीनों ॥

१ प्रेमपात्र, २ हेरफेर।

प्रकट्यो प्रभु ऐश्वर्य महाना ❀ तिहँ हेतू सब निज हिय जाना।
जाहित बड़ समरथ है रामा ❀ बल विशेषते है बल नामा।१२७।

दो०-या विधि कृष्णहि के कृपा, सकल वृत्त लिय जान।
अब लग ज्ञान समान हो, मान हेतु रस सान।१२७

इति श्रीवसंत कृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे सप्तम सोपान समाप्त।

कह मुनि भगवत हिये विचारा ❀ मो अग्रज बलदेव उदारा।
अति दयालु अरु सरल सुभाऊ ❀ ताहित इनतें करहुँ दुराऊ॥
नहिं तो बछरन बालन केरी ❀ जान अवस्था इनैं घनेरी।
होवैगी जो व्यथा महाई ❀ सह न सकैगो मृदुल सुभाई॥
इम विचार निज इच्छा सेती ❀ अब लग बात भई है जेती।
वर्ष पर्यंत छिपाई सब ही ❀ प्रकटाई बल प्रति सो अबही॥
तब बलदेवहु विधिकृत जोऊ ❀ मो वृतांत जान्यो तहँ सोऊ।
जब विधि वत्सप वत्स समूहा ❀ तिरोधान किय हिय रह ऊहा॥
पुन जब अपन लोक सो गयऊ ❀ तहां योगमाया अस कियऊ।
निज कल्पित ब्रह्मा तिहँ आसन ❀ दिये बिठाय या विधि के त्रासनं॥

दो० यह विधि ज्योंही तहँ गयो, त्योंहीं ताके पाहिं।
द्वारपालकन अस कह्यौ, जे अपि मोहित आहिं।१२८

१ शंका, २ डराने के लिये।

अहो आप कहँ ते यहँ आये ❀ परमेष्ठी स्वस्थान सुहाये ।
आप कौन सो कहु हम पाहीं ❀ कहा छलन हित मति तुव आहीं॥
हम जब भो विधि को अपमाना ❀ तब त्वर किय व्रज ओर पयाना ।
त्रुटि मात्रैक समय पुन सोऊ ❀ आयो व्रज में विमना होऊ ॥
वा अति द्रुत आयो व्रज माहीं ❀ तहँ कारण यह अपि इक आहीं ।
जब विधि सत्य लोक में गयऊ ❀ तब तिहँ उर या विधि भय भयऊ॥
जाहित विधि हरि आत्मज अहही ❀ ताहित अस विचार कर रहही ।
अहो अतिहि अनुचित मैं कीनों ❀ जो मैं अमित बार यह चीनों ॥
कृष्ण अहै ईश्वर साक्षाता ❀ परंब्रह्म भक्तन सुखदाता ।
तद्यपि तिहँ अपराध महाना ❀ कियो अहै अस निज मन माना॥

दो० ताहित भय युत शीघ्रही, आयो विधि व्रज माँहि ।
यहाँ वर्ष इक बीत गो-श्रीनँदनंद जु आहिं ॥१२९॥

वत्सप वत्स स्वयं ही भयऊ ❀ नहीं राम तिनमें किल रहऊ ।
वत्सहरण दिन श्रीव्रज माहीं ❀ हतो जन्म दिन बलको ताहीं ॥
ताहित मोहन संग न लाये ❀ उत्सव हेतु तहाँ तज आये ।
पुन अपि वही जन्म दिन भयऊ ❀ पूर्ण वर्ष इक बीत जु गयऊ ॥
लिय न संग ताहित बलरामा ❀ तादिन अपि कौतुकि घनश्यामा ।
पुन अपि ब्रह्मा तिहँ थल आयो ❀ जिहँ उर पश्चाताप समायो ॥
विधि आकर देख्यो व्रज माहीं ❀ प्रथमें जे वत्सादिक ताहीं ।
देखे हते तथा पुन देखे ❀ भो तिहँ उर आश्चर्य विशेखे ॥

---

१ शीघ्र ।

चकित होय निज हिय अस कहही ❀ अहो महत अचरज यह रहही।
या व्रज में वत्सादिक जेऊ ❀ यथा पूर्व में निरखे तेऊ ॥१२०॥

दो० तथा सर्व तिहँ रूप में, विद्यमान निज नैन ॥
देख रह्यो हूँ ताहि ते, ह्वै अचरज उर ऐन ॥१३०॥

मैंने हरण किये हैं जेऊ ❀ मो माया में सोये तेऊ ।
अब लग पुन ते उठेउ नाहीं ❀ वा यह नंद सुवन जो आहीं ॥
कहा तिनैं यह व्रज में लायो ❀ या विधि हिये तर्क प्रकटायो ।
गयो तहाँ देखन अभिलाखे ❀ जहँ प्रथमें तिन सवाहिन राखे ॥
देख दूर ही से पुन आयो ❀ जिहँ उर बड़ आश्चर्य समायो ।
यहँ अपि वत्सादिकन निहारे ❀ तब बहुविध विधि हिये विचारे॥
अरु अँगुरी तर्जनी जु अहही ❀ तासौं अभिनय कर अस कहही।
ये वत्सादिक कहँ ते आये ❀ क्रीड़त कृष्ण संग हुलसाये ॥
सोउ वर्ष भर या व्रज माहीं ❀ करी यथावत लीला ताहीं ।
मो माया मोहित हैं आना ❀ यह संशय विधि हिय प्रकटाना॥

दो० तदा विचारत निज हिये, ये वत्सादिक जेउ ॥
कहा कृष्ण सृष्टा[१] अहैं, यदि अस मानौं येउ॥१३१॥

तौ मैंने जो अहैं छिपाये ❀ ते का माया ने प्रकटाये ।
अथवा कृष्णरचित हैं दोऊ ❀ वा दोऊ प्राकृत[२] ही होऊ ॥

१ पैदा करने वाले २ मायारचित ।

वस्तुत तिनं वत्सादिक देहा ❀ वा या केशव नें निज नेहा।
कहुँ किहँ अंड माहिं धर राखे ❀ मो मति भ्रमित करन अभिलाखे॥
वा जब मैं तिन देखन गयऊ ❀ तब यह नंद--सुवन जो रह्यऊ।
तिहँ इनही को तहँ पहुँचायो ❀ पुन मैं जब या थल में आयो।
तबही यहां लाय दरसाये ❀ अस्तु कृष्ण भल चतुर कहाये।
मैं हूं अब दुहुँ दिशि इक संगा ❀ दृष्टि चलावौं है का रंगा॥
तथाहि दुहुँ दिशि दृष्टि चलाई ❀ कियो ध्यान चिरकाल महाई।
तबहु तथा विधि देखे ताहीं ❀ रंचहु भेद लख्यो तिहँ नाहीं१३२

दो० तब ब्रह्मा कह निज हिये, अस्तु नाहिं कछु चिंत॥
निज सर्वज्ञ जु शक्ति है, जेहिं प्रभाव अचिंत।१३२।

अबहीं तिहँ शक्ती के द्वारा ❀ जानहुँगो सब भेद अबारा।
इम निश्चय कर विधि मन माहीं ❀ धरी समाधी बहु थल ताहीं॥
तदपि अहैं के भगवत रूपा ❀ बछरा बालक परम अनूपा।
अरु बहिरंगा माया केरे ❀ के हैं, करत विचार घनेरे॥
आशय यह इन दोउन माहीं ❀ के हैं सत्य, सत्य के नाहीं।
इह विधि संशय ज्ञानहु केरो ❀ कर न सक्यो शत प्रज्ञ निबेरो॥
अस विधि निज माया से चाह्यो ❀ मोहन करन कृष्ण सुखदायो।
जोउ अनंत विश्व को मोहे ❀ तिहं मोहन कर त्रिभुवन को है॥
त्रिभुवन बारन की का गाथा ❀ ये अनंत ब्रह्मांडन नाथा।
तिन मोहन नहिं कर सक कोऊ ❀ जाके मोह सेज सब सोऊ।१३३।

१ मायारचित २ पैदा करने वाले।

दो॰ ताहित यद्यपि कंजे सुतं, चाह्यो मुद मन माहिं ॥
मोहन को मोहन करों,भइ विपर्य गति ताहिं १३३

स्वयं एव निज माया माहीं ❀ भयो विमोहित शतमति आहीं ।
पाटकीट तंतू विस्तारे ❀ अस अभिलाषा निज हिय धारे॥
कर विस्तार जाल सुख सेती ❀ विचरहुंगो तामें, मति एती ।
किन्तु अपन कृत तन्तुन माहीं ❀ अस उरझाय निकस सक नाहीं॥
तिमयहँअपिविधिगतिअस अहही❀ कृष्णहि मोहित करन जु चहही ।
ताहित निज माया विस्तारी ❀ किन्तु स्वयं ही मोहित भारी ॥
यदि को कह यह मोहन जोऊ ❀ भगवत मायाकृत ही होऊ ।
सो न उचित अस निश्चय मानो ❀ यह अभिप्राय हिये निज आनो॥
जाहित प्रथमें विधि जो अहही ❀ सो विशेष ही मोहित रहही ।
तिहँ मोहित विधि को पुन ताहीं ❀ अतिशय विह्वल करनजुआहीं १३४

दो॰ सो प्रयोग अपराधमय, जान्यो, माया ताहिं ॥
ताहित यह जो मोह भो,पाटकीटवत आहि।१३४।

भगवत महामाय है जोई ❀ पूर्ण प्रभाववती है सोई ।
तिहँ तट अपरन माया जेऊ ❀ निज प्रभाव दरसावत तेऊ ॥
ताको फल यह निकसे ताहीं ❀ स्वयं विलीन होय तिहँ माहीं ।
अरु हास्यास्पद निश्चय होई ❀ सब निष्फल तिन श्रम है जोई॥
या थल विधि निज माया सेती ❀ निज प्रभुता प्रकटाई केती ।

१ कमल २ पुत्र अर्थात् ब्रह्मा ३ एक सौ बुद्धि वारौ ४ रेशम का कीड़ा ।

चली न एकहु प्रत्युत ताहीं ❀ स्वयंहि मोहित भो तिहँ माहीं॥
यथा कुहर तम अपन प्रभाऊ ❀ मावस निशि दिखरावन चाऊ।
किन्तु रात्रि तम माहिं विलीना ❀ होवत है अस प्रस्फुट चीना॥
चहत आवरण निशितम केरो ❀ तम कुहार को अहै जु टेरो।
स्वयं आवरण होवत ताहीं ❀ रहै न नामहु तिहँ तम माहीं१२५

दो० इह प्रकार पावत अहैं, तिरस्कार निज केर॥
यहां ब्रह्म माया जु है, तथाहि ताको हेर॥१२५॥

भगवत माया ने तिहँ केरो ❀ किय आवरण प्रकटही हेरो।
किन्तु कुहरतम रजनी माहीं ❀ है विलीन तिहँ अंश जु आहीं॥
जाते निशितम में रहि गयऊ ❀ या दृष्टान्तहि तोपः न भयऊ।
कहत अपर दृष्टान्त मनोज्ञा ❀ अहै जु यथा तथ्य इह योज्ञा॥
यथा रात्रि में प्रभा जु मेरी ❀ होय प्रकाशित प्रकटहि हेरी।
तथा दिवस में प्रभा प्रकासा ❀ होवै यह खद्योतहिं भासा॥
इम विचार पटबीजन जोऊ ❀ उर में अतिहि प्रफुल्लित होऊ।
दिन में अपन तेज दिखरावै ❀ किन्तु रंच अपि सो न सुहावै॥
प्रत्युत सबहिन को वह जोती ❀ भृष्टहि दीखत अस गति होती।
अरु हास्यापद होवै, ताहीं ❀ जानो तिम या थल के माहीं१२६

दो० निज ऐश्वर्य प्रभाव जिहँ, चल सक अपरन माहिं।
सो भगवत माया विषे, विधी चलावन चाहि१२६

ताहित भृष्ट तेज ही भयऊ अरु निज तिरस्कार अपि लह्यऊ ।
या कारण अपरस्थल माहीं माया करन समर्थ जु आहीं ॥
ते यदि आपन माया द्वारा महत पुरुष मोहन मन धारा ।
अरु चाहें आपन प्रभुताई तो तिन या विधि गति है जाई ॥
स्वयं अपन प्रभुता जु महाना हे नृप निश्चय करहीं हाना ।
अरु हास्यास्पद अपि किल होई जिम या थल में विधि को जोई ॥
जब लग ब्रह्मा निज हिय माहीं विविध तर्क उपजावत आहीं ।
नेंक न भेद लह्यो शतप्रज्ञा रह्यऊ कठपुतरी सम अज्ञा ॥
तब लग विधि देखत विधि पाहीं वत्स-वत्स पालक जे आहीं ।
ते जनु विधि को करत अमाना या विधि भाखत वचन-प्रमाना ॥

दो० हे विरंचि शतप्रज्ञ अरु, सत्यहि हो अज आप ।
सत्य लोक स्वामी अहो, जानत अपन प्रताप ।१३७।

सो० है आश्चर्य अमाप, याहि बुद्धि से सृजहु भव ।
जो निज माया आप, मोह करन इच्छहु हमहिं ॥४०॥

रंच प्रभाव ज्ञात अपि भयऊ तदपि न तत्त्व यथा विधि लह्यऊ ।
अब विलोक हम श्री-वन माहीं चरहिं घास अस वत्सहु आहीं ॥
अरु वत्सन चारत गोपाला लखौ तदपि हम महिम विशाला ।
इह विधि विधि प्रतिबोध करावत सुप्रकाशपन अपन जनावत ॥

१ नचा ।

विधि दृग्गोचर या विधि भयऊ ❀ नैंकन विलम,चकित अज रह्यऊ ।
प्रथमैं सबन लख्यो घनश्यामा ❀ पुन पीताम्बर धर छवि धामा ॥
सभी चतुर्भुज हाथन माहीं ❀ गदा चक्र दर कंजहु आहीं ।
सबहिन शिर किरीट श्रुति कुंडल ❀ गरे हार बनमाल सपरिमल ॥
या विधि विधि विलोकि उर माहीं ❀ यदपि चकित तद्यपि बड़ नाहीं ।
करत विचार मुक्ति सारूपा ❀ तिन होवैं अस रूप अनूपा ।१३८।

दो० तावत ही श्री वत्स को, चिन्ह वक्ष थल माहिं ।
अरु भृगुलाँछन अपि लख्यो, कौस्तुभ मणिगर आहिं १३८

अहैं असाधारण ये तीनों ❀ बिन भगवत अपरन नहिं चीनों ।
महदाश्चर्य मग्न विधि भयऊ ❀ औरहु या विधि देखत रह्यऊ ॥
सबहिन भुज अंगद अति सोहैं ❀ सबन कलाई कंकन मोहैं ।
चरणन नूपुर और कडूला ❀ कटि मेखला निरख मति भूला ॥
अंगुरिन में मुद्रिका विलोकी ❀ इम शृंगार कहत मति रोकी ।
मस्तक से पद पद्म प्रयन्ता ❀ कोमल नूतन बड़ छबिवन्ता ॥
तुलसी माल सोह अति भारी ❀ भूरि पुण्यवारन गर डारी ।
सोददाय चन्द्रिका समाना ❀ अहै विशद सबहिन मुसकाना ॥
सहित अरुणता निरखन जिनको ❀ है कटाक्ष युत मनहर तिनको ।
अस प्रतीत होवत तिहँ काला ❀ सत रज सेती परम कृपाला ॥

१ नेत्रों के सामने २ शंख ३ मुकुट ४ सहित सुगन्धिकी ।

दो०–निज भक्तन अभिलाष जे,पूर्ण करन हित आप।
उत्पादक पालक जगत, आपुहि को परताप ।१३६।

याहि प्रकार विरंचि निहारो ❀ तब अस निज हियमाहिं विचारो।
अस्तु यदा ये भवधव रह्यऊ, ❀ मैं हुँ सृष्टि उत्पादक कह्यऊ ॥
इम समानता को उर माहीं ❀ उपज्यो अंकुर तबही ताहीं।
ब्रह्मा या विधि देखत भयऊ ❀ हिय आश्चर्य माहिं डुब गयऊ ॥
आपनते लघु जीव प्रयंता ❀ जड़ जंगम सब मूरति वंता।
नृत्य गती आदिकसे जेऊ ❀ विविधि भांति पूजत हैं तेऊ ॥
इम सब पृथक् पृथक् युतचाहा ❀ करत उपासन बड़ उत्साहा।
अणिमादिक वसु सिद्धिजु अहहीं ❀ मायादिक शक्ती जे रहहीं ॥
सकल विभूति तत्त्व चौबीसा ❀ महदादिक महतत्त्व महीसा।
काल प्रकृति यावत संस्कारा ❀ कान कर्म गुण आदि उचारा।१४०।

दो०–जिन महिमा ध्वंसित अहै, ते सबहिन के पाहिं।
पृथक् पृथक् ह्वै मूर्तिमत,करत उपासन ताहिं।१४०।

प्रभु स्वरूप वहु ब्रह्म निहारे ❀ ते हरि माया कृत न उचारे।
यदपि एक विभु और नित्यपन ❀ अहैं असाधारण हरि लक्षन ॥
तदपिश्रुतिन अस निर्णय कीनों ❀ वहु मूर्ती अपि एकहि चीनों।
आनँद मात्र अजर भगवाना ❀ सदा सनातन एक वखाना ॥
तद्यपि दृश्यमान वहु रूपा ❀ यही ईश ईशता अनूपा।
ताहित तिहँ परमातम केरे ❀ सब तन शाश्वत नित्य निवेरे ॥

१ सतोगुनादि २ जल।

उपादान अरु हान अतीता ❀ नहिं प्राकृत, नाशक भवभीता।
ज्ञानस्वरूप नित्य प्रभु रूपा ❀ परमानंद स्वरूप अनूपा ॥
इत्यादिक श्रुति स्मृती प्रमाना ❀ यावत प्रभुके रूप बखाना।
जे विधि ने निज नैन निहारे ❀ ते अप्राकृत वपु गुणवारे।१४१।

दो०-ये दृश्यत्व बहुत्व जो, विविधित्वादिक आहिं।
ते न ब्रह्मके, अस कहत, ब्रह्मवादी जग माहिं॥ १४१॥

तिहँ उत्तर देवर्षि कृपाला ❀ देत अहैं कह वचन रसाला।
पढ़हीं बहु उपनिषदन पढ़ावैं ❀ विन भक्ती तिहँ तत्त्व न पावैं ॥
यातें उपनिषद के ज्ञाता ❀ अस जे दार्शनीक विख्याता।
ते तिहँ भूरि महात्म्य न जानैं ❀ देखौ श्रीमुख वचन बखानैं ॥
भक्तिहि से मुहिं लहैं यथारथ ❀ जितनों जो कछु अहौं यथारथ।
ग्राह्य अहौं इक भक्तिहि सेती ❀ निश्चय बात जानिये एती ॥
इनको रूप न निरखैं नैना ❀ याको भाव लखौ उर ऐना।
चर्म चक्षु चिन्मय प्रभु देहा ❀ नाहिं निरख सक निश्चय एहा ॥
जाको वे कृपालु अपनावैं ❀ ते निश्चय प्रभु दर्शन पावैं।
तम प्रकृती पर आदित वर्णा ❀ चिन्मय चख विन सुलभ न वर्णा।१४२

दो०-इम श्रुति स्मृती प्रमाणसों, सिद्ध भई यह बात।
भक्तिहिसे हैं प्राप्य प्रभु, विन भक्ती न दिखात।१४२।

इति श्री वसंतकृष्णायने तृतीय गोलोक द्वारे अष्टम सोपान समाप्त।

१ वास्तविक। २ सत्यही।

कह मुनि एकहु अहैं अनेकू ❀ हैं अनेक तद्यपि वपु एकू ।
रंचक तारतम्य नहिं तामें ❀ जानत सोउ भक्ति है जामें ॥
सत्य गियान अनन्त स्वरूपा ❀ अरु आनन्द स्वरूप अनूपा ।
तहँ अपि एक मात्र है चीता ❀ विजातीय संभेद अतीता ॥
पुन तहँ अपि इक रस तिहँ जानो ❀ काल परिच्छेदक तहँ हानो ।
याते सत इक रूप शरीरा ❀ यावत मूर्ति लखौ विधि वीरा ॥
वा विज्ञान सत्य आनन्दा ❀ सत विज्ञान अनन्त अद्वन्दा ।
आनँद रूप ब्रह्म को रूपा ❀ इत्यादिक श्रुति ब्रह्म स्वरूपा ॥
सत्यादिक स्वरूप सा कहही ❀ सोउ ब्रह्म इन मूरति रहही ।
या विधि विधि सबहिन इककाला ❀ निरखत भो परब्रह्म दयाला ।१४३।

दो०-जिहँ परब्रह्म प्रकाशते, जड़ जंगम जग जोउ ।
अहैं प्रकाशित सकल विधि, चकित मग्न मन होउ।१४३।

देख्यो परमैश्वर्य अनन्ता ❀ तदपि न लह्यो लवांशहु अन्ता ।
तिहँ अति कौतुक ते विधि केरो ❀ उन्मंथित चित भयो घनेरो ॥
तासों ग्यारह इन्द्रिय जेऊ ❀ भई स्तव्य गति चेतन तेऊ ।
ता हित कृष्ण तेज ही सेती ❀ भयो मौन विधि,हत मति जेती ॥
तिहँ अवसर विधि वपु किम भासे ❀ सो दृष्टांतहि से परकासे ।
इक चौमूहा नामक ग्रामा ❀ ब्रज में अहै प्रकट जिहँ नामा ॥
तहँ चौमुखी देवि अस्थाना ❀ प्रस्तुत लीला तिहँ थल माना ।
ग्राम निवासिनि तहाँ कुमारी ❀ खेलन अभिलाषा जिन धारी ॥
तिन प्रतिमा देवी के नाईं ❀ मृतिका की इक और बनाई ।
यहँ जैसे प्राचीन महाना ❀ ब्रजदेवी राजत तिहँ स्थाना।१४४।

दो०-तिहँ तट अपर वनावटी, देवी प्रतिमा आहिं ।
तथा यहाँ वहु ब्रह्मथित; अहैं सवनके पाहिं ।१४४।

तिन समीप यह ब्रह्मा जोऊ ❀ प्रतिमा सम भासत है सोऊ ।
जब करुणानिधि विधि गति देखी ❀ तब तिहँ कृपा पात्र हिय लेखी ॥
कियो विचार अपन उर माहीं ❀ निज माधुर्य महिम जो आहीं ।
तिहँ लवांश विधि को दरसाई ❀ तदपि विलोकन शक्ति न राई ॥
तथा परम ऐश्वर्य दिखायो ❀ सोउ असाधारण प्रकटायो ।
तहँ अपि अनधिकारता याकी ❀ याहीते याकी मति थाकी ॥
ताते मंजु महिम निज जोऊ ❀ और परम ऐश्वर्यहु सोऊ ।
रह्यो जु निरख विरंची याहीं ❀ ताहिं समाप्त करन अब चाहीं ॥
सोउ प्रसंग मुनिन्द्र कृपाला ❀ भाखत प्रतिं वहुलाश्व नृपाला ।
सृष्टि ईश अपि अज जो रहाऊ ❀ गुप्त तत्त्व नहिं जानत भयऊ ॥

दो०-यथा प्रथम जव हरण किय, वत्सप वत्सन वृंद ।
पुन आयो व्रजके विषै, लखे चरत सानंद ॥१४५॥

तव विधि दुहुँदिश दृष्टि चलाई ❀ सत्य भेद पायो नहिं राई ।
फेर परम ऐश्वर्य दिखायो ❀ तहँ अपि वड़ आश्चर्य समायो ॥
अरु उर में संकल्प अनेका ❀ उठैं, रह्यो नहिं धीरज नेका ।
पूर्व वाल वत्सादिक रूपा ❀ लख्यो एक आश्चर्य स्वरूपा ॥

१ सरस्वती ।

पुन कह कहा विलोकों याहीं ❀ नेंकहु समझ शक्ति रहि नाहीं।
जो प्रभु स्वयं प्रकाश स्वरूपा ❀ अरु जो सुख के रूप अनूपा॥
स्थूल न अणू न ह्रस्व कहावें ❀ इह प्रकार वहु श्रुति दिखरावें।
यह इम नहिं इम नहिं कह जाको ❀ सिद्ध करत ब्रह्मवादी वाको॥
तदपि तत्त्वते पावत नाहीं ❀ प्रकृती पर अस प्रभु जो आहीं।
तिहँ निज महिम दिखाइ अनूपा ❀ जो यह चतुर्भुजादिक रूपा।१४६।

दो॰ सो महान ऐश्वर्य लख, गिरा पती अपि जोउ।
मोहित भयऊ याहि विधि, चल्यो तर्क नहिं कोउ॥१४६॥

औरहु सुधि बुधि निज की खोई ❀ श्रुति वक्तापनहू दिय धोई।
महदाश्चर्य महोदधि माहीं ❀ गोता खाय रह्यो विधि ताहीं॥
तबै परम अज कृष्ण कन्हाई ❀ दीनन की जो करें सहाई।
तिहँ प्रभु निज ऐश्वर्य महाना ❀ तिहँ निरखन अज शक्ति न जाना॥
तब विलोक विधिको अति दीना ❀ कृष्ण कृपालु आशु अस कीना।
योग माय रूपा चिक[1] भारी ❀ लई हटाय प्रभु गर्व प्रहारी॥
प्रथम पुलिन में जिहँ अस कीना ❀ श्री दामादिक सखा प्रवीना।
खात रहे तिनको, अरु ताहीं ❀ वत्सनको, त्रण चर रह वाहीं॥
अरुमें अपि तिहँ विपिन मँझारा ❀ खोज रह्यो हो वत्स पियारा।
ढाँप दियो सबदिन को आसू[2] ❀ लीला स्वाद बढ़ावन आसू।१४७।

दो॰ पुना योगमाया कृती, कही पूर्व थल आहि।
निज स्वरूप ही जे रहे, वछरा वालक याहि॥१४७॥

---

१ छोटी २ चाणी।

चतुर्भुजादि रूप दरसाये ❀ योगमाय अस दई हटाये ।
माया वस्तुत वस्तु छिपावे ❀ वनावटी को सत्य लखावे ॥
जो वस्तुत वस्तू तिहँ माहीं ❀ कछु ढाँपे अरु कछु दरसाहीं ।
ताहि योगमाया अस कहहीं ❀ इन दोउन में भेद जु रहहीं ॥
तासों या थल निश्चय नाहीं ❀ वहिरंगा माया जो आहीं ।
ब्रह्मा जब अद्भुत गति रूपा ❀ उदधी डूब रह्यो है भूपा ॥
ता अवसर मूर्च्छा सी आई ❀ तहँ औरहु आश्चर्य महाई ।
निरख्यो चतुरानन नें जोऊ ❀ यथातथ्य तुव प्रति कहुँ सोऊ ॥
विधि सुपने में देखत अहही ❀ कोउ अनूपम थल इक रहही ।
जहाँ विविध रत्नन के सोहैं ❀ महल अनेकन जिहँ सम को है १४९

दो० नील मणी के रंग सम, सरिता वह रहि ताहिं ।
वहु भाँतिन तिहँ तट उभय, खचित रत्न तिन माहिं १४८

लता पता वहु विधि मन हारी ❀ फूल रही चहुँदिशि फुलवारी ।
भ्रमर आदि गुंजत रुचिराई ❀ रचना निरखत चकित महाई ॥
कछु आगे जावत विधि जवहीं ❀ है चतुरानन देखे तवहीं ।
ड्योढ़ीवान रहे ते दोऊ ❀ पूछत ब्रह्म चकित चित होऊ ॥
कहा अहै या महल मंझारा ❀ सुन विधिवचतिनकह्यो उदारा ।
जाउ आप भीतरि हुलसाई ❀ तुमहिं न रोके को आप भाई ॥
गयो जवहि चतुरानन ताहीं ❀ द्वितीय द्वार पै राजत आहीं ।
अष्ट मुखी ब्रह्मा द्वै देखा ❀ भयो हिये आश्चर्य विशेखा ॥

१ नदी (यमुना)

तिनते विधि पूछ्यो तिन कह्यऊ ❀ गवनौ भीतरि लखौ जु रह्यऊ।
तब चतुरानन भीतरि गयऊ ❀ तृतिय द्वार पै अपि द्वै रह्यऊ।१४९

दो०-षोड़श मुख तिनके अहैं, चतुरानन लख ताहिं।
क्रमशः तिहँ आश्चर्य उर, रह्यो ठिकानौं नाहिं।१४९।

उनते आज्ञा पाय सिधायो ❀ द्वार चतुर्थ तहाँ तिहँ पायो।
शतमुख ब्रह्मा तहाँ निहारे ❀ चतुरानन चित चकित महारे॥
पुन तिनते अनुशासन पायो ❀ पंचम द्वार समीप सिधायो।
सहसवदन निरखे विधि दोई ❀ निरख चकित चितथित नहिंहोई॥
तिनते सविनय आज्ञा पाई ❀ षष्ठ द्वार आयउ हरषाई।
तहाँ विलोके वदन अनेका ❀ अस ब्रह्मा लख गयो विवेका॥
अमित चकित चित पूछत अहही ❀ कहा अहै भीतरि को रहही।
वदन अनेक ब्रह्म तब ताहीं ❀ भाखत है चतुरानन पाहीं॥
आप कौन किहँ अंड विराजै ❀ सुनत चतुर्मुख हिय बड़ लाजै।
कहा कहौं अस हृदय विचारे ❀ अति लज्जितअस वचनउचारे१५०

दो०-ब्रह्मा मैं किहँ अंडके, सो मैं जानत नाहिं।
किम जानौं मेंढक सदृश, रहैं जु धरती माहिं॥१५०॥

कहा न निरखे ब्रह्म अनेका ❀ अंड अनेकन अस सविवेका।
जो परिपूर्ण कृष्ण भगवाना ❀ तिहँ भय सृजहिंसृष्टि विधिनाना॥
कृष्ण नाम सुनके हिय माहीं ❀ भयो सलक्ष, भूल गो ताहीं।
तब अनेक मुख कह इन पाहीं ❀ कछुक पतो दे सकहु कि नाहीं॥

तवै विविध चिंतन कर मोऊ ❀ कहा पतो दउँ विभ्रमित होऊ ।
नीठँ नीठ भाख्यो चतुरानन ❀ नारद नाम सुवन मुदितानन ॥
हे नृप प्रणतपाल भगवंता ❀ नंदनँदन श्री राधाकंता ।
उनही की अनुकम्पा सेती ❀ मो अकुंठ गति हैं दिशि जेती ॥
किँह अपि ब्रह्म अंड चल जावौं ❀ मुहिं रोकनहारो नंहिं पावौं ।
याते मो पितु विधि ने जवही ❀ लियो नाम मो तहिं थल तवही॥

दो०-वहु आदर पूर्वक कह्यो, हे गोलोक सुधाम ।
जावौ भीतरि मोदयुत, नारदपितु सुखठाम॥१५१।

चतुरानन भीतरि जव गयऊ ❀ सप्तम द्वार पारपद रह्यऊ ।
ते हरिदास कहत विधि पाहीं ❀ कहु किम आये हो या ठाहीं ॥
यहँ सावध है ब्रह्मा कह्यऊ ❀ श्री भगवत के दर्शन चह्यऊ ।
श्री भगवत पार्षद प्रभु आज्ञा ❀ कह्यो जाउ तुम हो वड़भाग्ञा ॥
हर्षित विधि भीतरि जव गयऊ ❀ रचना लख स्तम्भित चित रह्यऊ ।
करुणानिधि को दर्शन कीनों ❀ दंड प्रणाम कियो सुख भीनों ॥
करत विनय युत प्रार्थन ताहीं ❀ चकित चितै मुख कंजहु माहीं ।
तावत तहँ श्रीविग्रह केते ❀ औरहु आय लीन भे तेते ॥
यह वड़ अद्भुत निरख्योजवहीं ❀ परिपूरण तम मान्यो तवहीं ।
आपन भाग्य सराहन लागो ❀ उपज्यो उर नूतन अनुरागो १५२

१ कोई भी रोक न सकै ।

दो०-ता प्रमोद में पुलक अति, जागृत भो तत्काल ।
यथा मृतक तन कबहुँ अपि, उठ बैठे भूपाल! ।१५२।

तिम उठ बैठो कंजकुमारा ❀ कष्ट साथ निज नैन उघारा ।
तौ निज युत सब जगत विलोका ❀ सुपन चरित गुन रह उरओका ॥
ता पाछे श्रीकृष्ण कृपाला ❀ विधि पै करुणा करत विशाला ।
अंतरंग निज विभव दिखायो ❀ सोउ प्रसंग मुनिन्द्र लखायो ॥
विधि शीघ्रहि मीड़त निज नैना ❀ अहै विलोकत चहुँदिशि ऐनां ।
तौ निरख्यो श्रीधाम अनूपा ❀ चिन्मय जहँ चर अचर स्वरूपा ॥
जामें खग मृग जन सुखदाई ❀ अहैं व्याप्त द्रुम वृंद महाई ।
वा भगवत जन श्रीवन माहीं ❀ तिन हित सर्वस ते द्रुम आहीं ॥
जिनको दरस परस प्रकटावै ❀ भगवत भाव जु सुलभ न आवै ।
केवल श्रीवन लता प्रसंगा ❀ रंगै अवस प्रीती रस रंगा ।१५३।

दो०-यथा कृष्ण बलराम प्रति, कह्यो कि श्रीवन वृन्द ।
अहैं प्रमुख मो भक्तजन, ते मुनि द्रुम तनु लन्द ।१५३।

ताते वृंदावन द्रुम जेते ❀ लागत मुहिं अतिशय प्रियतेते ।
इह विधि के वृक्षन वृंदावन ❀ है परि पूरण परम सुहावन ॥
पुन श्रीवन सम्यक अति प्यारो ❀ सहजहि हियको कर्षणहारो ।
अहै परम प्रिय श्रीराधा, को ❀ बिन श्रीवन लव चैन न जाको ॥

१ ब्रह्मा २ स्थान ।

प्राण श्रेष्ठ ते हू वड़ प्यारो ❀ श्रीमुख ही अस वचन उचारो।
वा श्रीकृष्णहि अति प्रिय लागे ❀ श्रीवन बिन अपर न अनुरागे॥
यथा स्वयं श्रीमुख है भाख्यो ❀ इक श्रीवन मो हिय अभिलाख्यो।
वृंदावन सों वाह्य न जावों ❀ सत्य-सत्य उर भाव लखावों॥
श्रीवन के जड़ जंगम जेते ❀ प्राणहु ते निश्चय प्रिय तेते।
मुहिं बाँधन हारो जग को है ❀ व्रज जेवरी बाँध दिय मोहे॥

दो०-वृंदावन मो रूप है, मो स्वरूप श्रीधाम।
धामी धाम न भेद लव, श्रीवनहू मो नाम।१५४।

वा श्रीराधाकृष्ण पियारो ❀ निश्चय है श्रीवन रुचिकारो।
जैसे व्रज चौरासी माहीं ❀ तीन स्थल प्यारी के आहीं॥
रावल राधाकुंड पछानो ❀ अरु तीजो बरसानो जानो।
तिम मोहन के अपि हैं तीनों ❀ गोकुल गिरिवर मधुपुरि चीनो॥
किंतु जुगलजोरी मनहारी ❀ है वृन्दावन ही सुखकारी।
जहाँ निरन्तर रहे निवासा ❀ पिय प्यारी को सहत हुलासा॥
ताहित श्रीवन अतिशय प्यारो ❀ अहे युगल वरको मन हारो।
युगल उपासक जो जन अहहीं ❀ ता हित श्रीवन सर्वस रहहीं॥
उनको चित्त अपर थल माहीं ❀ नहिं लागे विशेष कर ताहीं॥
जहाँ सेव्य तहँ सेवक होई ❀ प्रकटहि यहजानत सबकोई।१५५।

दो०-अरु जहँ सेव्य निवास है, सबते प्रिय वह धाम।
प्रीति विशेष न होवही, अपर धाम सुखठाम।१५५।

ताहित श्रीवन ही है प्यारो ❀ युगल प्रेम धारिन मनहारो।
वा श्यामा सों दे गरबाहीं ❀ नित्य संग राजत जो आहीं॥
तिहँ श्रीकृष्ण केर वृन्दावन ❀ सम्यकही है प्रिय अति पावन।
वा राधा वाही को प्यारो ❀ जो श्रीकृष्ण अहै मनहारो॥
सो मोहन नित इक रस रहहीं ❀ श्रीवृन्दावन ही में अहहीं।
निश्चय है आधार स्वरूपा ❀ तासों आतिशय प्रेष्ठ अनूपा॥
वा आत्मारामी जे अहहीं ❀ स्तुति निन्दादिकमें सम रहहीं।
केवल आतम श्रीघनश्यामा ❀ तामें आरामी वसुयामा॥
अस भक्तन को प्राण पियारो ❀ है श्रीवन अतिशय मनहारो।
पुन जिहँ श्रीवृन्दावन माहीं ❀ नसैर्गिक वैरी जे आहीं।१५६।

दो०-यथा सिंह अरु नर अहैं, अहि नकुलादिक जेउ।
एक संग जल पीवहीं, सरिता तट पै तेउ॥१५६॥

सो०-विचरहिं एकहि संग, तदपि न तिन उरके विषे।
रंचहु वैर तरंग, किन्तु मित्र सम वर्तहीं॥ ४१॥

या प्रकार वृन्दावन अहही ❀ नित्य एक रस चिन्मय रहहीं।
ज्ञानी योगी आदिक जेऊ ❀ योग प्रभृति को बड़ श्रम तेऊ॥
करकें अपि आपन उर माहीं ❀ नहिं वश कर सक हरिको ताहीं।
सो भगवत श्रीकृष्ण कन्हाई ❀ जामें नित्य बसैं पुलकाई॥

१ स्वभावही से २ सर्प ३ न्योला।

तासों श्रीवन श्याम स्वरूपा ❀ कृष्ण सदृशही महिम अनूपा ।
याहीते श्रीवन वस जोऊ ❀ संसृति रोग आशु हत होऊ ॥
अरु जो विषय पिपासा रहही ❀ जासों जीव अकथ दुख सहहीं ।
सो अपि सहजहि होय विनासा ❀ यदि ह्वै जावै श्रीवन वासा ॥
किंतु जवै श्रीराधा प्यारी ❀ परम कृपानिधि कुंजविहारी ।
अरु रासिकाचारी गुरुदेवा ❀ पूर्णकृपा करहीं लख सेवा॥१५७।

दो०-तव श्रीवनके वासकी, भल प्रापति ह्वै जाय ।
नहिं तो कोटि प्रयास कर, तौ हू नहिं दरसाय।१५७।

सो०-वा वृंदावन एव, आप स्वयं करुणा करै ।
तबै शरण निज देव, फिर संसृति रुज रह कहाँ।४२।

यदपि अपर साधन अस अहही ❀ जासों विषय प्यास नहिं रहही ।
तदपि पूर्ण रूप से वाको ❀ ह्वै न ध्वंस निश्चय कर याको ॥
एक विषय की प्यास मिटावै ❀ अपर विषय आसा प्रकटावै ।
यथा एक जन प्यासो रह्यऊ ❀ आपन मित्र भवन सो गयऊ ॥
जल पीवन प्रकटाई आसा ❀ त्वर इक जल लायो सहुलासा ।
तावत दूजोहू जल लायो ❀ कह्यौ कि यह शीतल सुखदायो॥
शीतल जल सुन रुचि उपजानी ❀ करी उपेक्षा प्रथम जु पानी ।
तब लग एक औरहू आयो ❀ शीतल और मिष्ट जल लायो ॥
प्यासे प्रति भाख्यो यह लीजे ❀ मिष्ट और शीतल जल पीजे ।
यह सुन शीतल जल के माहीं ❀ भई उपेक्षा मति त्वर ताहीं ।१५८।

दो० जब लग पीवन चहत है,तब लग तिहँ जन पाहिं।
शीतल मिष्ट सुगंधि जल,लायो अरु कह ताहिं १५८

सुनो सुनो जी यह जल पीजे ❁ या समान नहिं आन गुनीजे।
शीत सुगंधित अरु है मिष्टा ❁ ग्रीषम ऋतु में यदि जल इष्टा॥
अस सुन वह जल अपि तज दीनों ❁ जन चतुर्थ को पानी लीनो।
यहँ क्रमशः जिहँ जल के माहीं ❁ भई अपेक्षा पुन अपि ताहीं॥
भई उपेक्षा पुन अपि वाको ❁ इम उतरोत्तर गुनिये ताको।
तथाहि विषय पिपासा जोऊ ❁ सकल प्रकार ध्वंस नहिं होऊ॥
श्रीवृन्दावन की गति न्यारी ❁ ठाठ यहां को अचरजकारी।
विषय पिपासा कहा विचारी ❁ श्रीवनवासिन अस मति धारी॥
श्रीवृन्दावन बाहिर होऊ ❁ कोटि-कोटि चिन्तामणि जोऊ।
यदपि मिलैं तदपि नहिं लीजे ❁ याहू ते अपि और सुनीजे१५९

दो० श्रीवन सीमा के परे, हरि हू मिलै जु आय॥
तदपि निहार न नैन भर,इक वृन्दावन चाय१५९

यही आस दृढ़तर वसुयामा ❁ नित्य निरंतर तिन उर धामा।
श्रीवन धूरी धूसर रहही ❁ यह जो देह हमारो अहही॥
अब कहु विषय पिपासा जोऊ ❁ कहँ रह सकही तिन उर सोऊ।
ताहित श्रीवृन्दावन केरी ❁ अमित प्रशंसा श्रीमुख टेरी॥
श्रीप्रभु विधि पै होय कृपाला ❁ अस चिन्मय श्रीविपिन रसाला।

---

१ प्रिय २ त्यागने की इच्छा ३ श्री वृन्दावन की रज से सना हुआ।

दरसायो विधिको प्रभु ताहीं ❀ बिन करुणा जो दीसत नाहीं ॥
ता पाछे प्रभु रूप जु रह्यऊ ❀ वत्सप वत्स पूर्व जे कह्यऊ ।
चतुर्भुजादि रूप सब जोऊ ❀ योगमाय द्वारा तिन सोऊ ॥
ढाँप दियो अरु तिहँ थल माहीं ❀ एक एव अद्वय जो आहीं ।
ब्रह्म स्वरूप श्रुती जिहँ कहहीं ❀ जो स्वरूप निज दर्शित रहहीं १६०

दो॰ सोऊ सर्व स्वरूप को, मूल भूत ही आहि ॥
नहिं दरसायो विधि प्रती, यह गाथा प्रकटाहि १६०

तिहँ पुनीत वृन्दावन माहीं ❀ परमेष्ठी ब्रह्मा जो आहीं ।
देखत भयो ब्रह्म साक्षाता ❀ जोऊ गोप वंश में जाता ॥
जाती ग्वाल बालपन अहही ❀ तद्यपि प्रौढ़[1] परम पटु रहही ।
अरु जिहँ उचित नाट्य गंभीरा ❀ जानत भक्त मनुजमति धीरा ॥
अपन स्वरूप भूत जे रह्यऊ ❀ बछरा बाल प्रथम जे कह्यऊ ।
पुन विरंचि पै तिन समुदाये ❀ चतुर्भुजादि रूप दरसाये ॥
ता पाछे वह विभव महाना ❀ ढांप दियो प्रभु कृपा निधाना ।
ता कारण अब एकहि रूपा ❀ रहै शेष छवि परम अनूपा ॥
कियो दरस परमेष्ठी सोऊ ❀ अद्वय ब्रह्म एक रस जोऊ ।
सबते पर अनन्त अपि रह्यऊ ❀ बोध अगाध जाहि को कह्यऊ१६१

दो॰ बडे बडे ऋषि मुनि प्रभृति, विधि आदिक सुर जेउ ।
जिहँ कृति को नहिं तत्त्व लह, रंचहु निज उर तेउ १६१

१ नवयुवक ।

औरन की तो कहा कही जै ❀ धाम स्वरूप राम लख लीजै ।
या लीला को लक्ष न पायो ❀ निरख-निरख आश्चर्य समायो ॥
वा जिहँ जिय भऊ बोध महाना ❀ श्रुतिचित अरु बहु शास्त्रन ज्ञाना ।
बहु विधि तर्क चलावत अहही ❀ तदपि प्रभु गति को नहिं लहही ॥
कारण यह अगाध गति स्वामी ❀ अहै कृष्ण-प्रकृती पर धामी ।
अहै अगाध बोध ता हेतू ❀ अस स्वरूप रह घोप निकेतू ॥
अब विधि को दर्शन जो भयऊ ❀ सो स्वरूप या विधि को रह्यऊ ।
यथा पूर्व चहुँ ओर कृपाला ❀ खोजत रहे बछरन अरु बाला ॥
कर में कौर कृष्ण के अहही ❀ या छवि सों विधि देखत रहही ।
छवि विलोक विधि अतिशय आसू ❀ उतर हंसते सहित हुलासू ॥

दो०-कनक दंड इव अवनि में, गिर्यो मोद नहिं माय ।
कृष्ण युग्म पद कंज को, कियो परस हुलसाय ।१६३।

लोट पोट है. कियो प्रणामा ❀ को कह मोद जु तिहँ उर धामा ।
बहत नैन धारावत ताके ❀ अस आनंद अश्रु जो वाके ॥
वाही सों विधि किय अभिषेका ❀ प्रभु के पद पद्मन सविवेका ।
पुन पुन पूर्व दृष्ट हरि केरी ❀ सुमर सुमर हिय महिम घनेरी ॥
उठ उठ प्रभु पद पद्मन माहीं ❀ गिर्यो विरंची चिर लग ताहीं ।
उठ के ब्रह्म शनै निज नैना ❀ पोछत भयो पाय उर चैना ॥
अतिहि नम्र विधि प्रभुहिं विलोका ❀ सावधान है निज उर ओका ।

---

१ शेष स्वधाम मासिकम् । श्रीमुख वचन हैं कि शेषनाम वाला नेत्र मेरा है

कर संपुट कर कंपित देहा ❀ गदगद होय रह्यो अस नेहा ॥
करन लगो निज वाणी सेती ❀ कृष्ण स्तुती अपन मति जेती।
निखिल सच्चिदानन्द स्वरूपा ❀ मूलभूत श्रीकृष्ण अनूपा।१६४।

दो०-तिहँ दर्शन साक्षात कर, पुन विधि आपन नैन।
कृष्ण महा महिमा लखी, पायो निज उर चैन।१६४।

सो०-तासौं तिहँ उर माहिं, भई भक्ति निष्ठा प्रकट।
सो ब्रह्मा थल माहिं, वर्णत है युत नेह सौं ॥४३॥

* इति श्रीकृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे नवम सोपान समाप्त *

हे नन्द-नन्द कृपालु महाना ❀ हैं स्तुति योग्य आप इम जाना।
याको कारण आपन नेना ❀ निरख्यो अबही पायो चैना ॥
आपनते लघु जीव प्रयंता ❀ कर रहि स्तुति तुम्हरी भगवंता।
वा परि पूरण तम परतापू ❀ परम स्तुवन योग्य हैं आपू ॥
घन सम तन सुंदर मन हारी ❀ बिजुरी सम पीताम्बर धारी।
याको भाव यही परकासे ❀ जिम वारिद भुवताप विनासे॥
तिम ध्वसंक अवनी संतापू ❀ हैं निश्चय अस कृष्णप्रतापू।
अरु चातक जीवन घन अहही ❀ जैन चातक जीवन प्रभु रहहीं॥
तथा मुकुट जो मस्तक सोहै ❀ तहँ गुंजन तुर्रा मन मोहै।
रुरकत गंडस्थल छवि पावै ❀ अरु शिखिपिच्छजुअधिकसुहावै१६५

१ भक्त।

दो० चहुँ ओर ते मुकुट के, शोभा देत अथोर।
या विधि को शृंगार जो, लेत मदन मन मोर१६५

तासौं मुख छवि सोहत भारी ❀ याको भावहु कहत उचारी।
अहैं असाधारण हरि लक्षन ❀ जिन सर्वस धन श्रीवृन्दावन॥
ताहित वैकुण्ठहु के जेते ❀ रत्नाभरण अमूल्यहु तेते।
तद्यपि श्रीवन गुंजन भूषन ❀ मोर पिच्छ आदिक प्रिय मोहन॥
इनही को उत्कर्ष दिखायो ❀ अरु जो श्रीवन परम सुहायो।
ताही की तुलसी की माला ❀ सुमनमालहू गर नँदलाला॥
याको भाव कहौं थल याहीं ❀ श्रीवैकुण्ठ माहिं इक आहीं।
नैश्रेयस नामक आरामा[1] ❀ तहां पारिजातादिक नामा॥
तिन सौरभमय सुमन सुहावैं ❀ तिनते अपि उत्कर्ष लखावैं।
अहै कौर प्रभु के कर माहीं ❀ कांख दवाये लकुट सुहाहीं१६६

दो० वंशी और विषाणं[2] द्वै, खरसे कटि पट माहिं।
इन चिन्हनि श्रीकृष्ण छवि, औरहु सोहत आहिं१६६

गोप वंश शिशुतन प्रभु रहहीं ❀ ये आचरण उचित ही अहहीं।
यासौं भगवत सर्वाचरणा ❀ तिनते अपी श्रेष्ठता वरणा॥
पूर्ण भक्तवत्सलता जोऊ ❀ दिखरावत या लीला सोऊ।
अति सुकुमार चरण अरविन्दा ❀ याको भाव कहत सानंदा॥
श्री चरणन वन विचरें जबही ❀ करहिं दरस वनवासी तबही।

१ बगीचा २ सींग।

ता दर्शन तिनके उर माहीं ❁ अतिशय करुणामय जो आहीं॥
प्रेम मूरछा प्रकटत आँसू ❁ अस हैं मृदुल चरण सुखरासू।
गोपराज गोपालक नंदा ❁ तिहँ अंगजे हो श्रीवनचन्दा॥
याको भाव महद जन कहहीं ❁ श्रीवसुदेव आदि जे अहहीं।
तिनते अपि व्रजराजहि केरो ❁ दिखरायो सौभाग्य घनेरो १६७

दो० इह विधि, विधि श्रीकृष्ण की,छवि वर्णत पुलकाय।
चरण कमल में नाय शिर, आत्म भाव प्रकटाय १६७

इह प्रकार प्रभु दरस जु दीना ❁ ता प्रति वन्दौं है अति दीना।
भात्र यही किय कृपा महाना ❁ अरु मोकों मदीय कर माना॥
याको वदलो मैं का देवौं ❁ रंच न शक्ति चरण ही सेवौं।
वा आपुहि के पावन आसा ❁ करहुँ नमन मैं है तुव दासा॥
वा प्रसन्नता हित व्रजचन्दा ❁ प्रणवौं आप पाद अरविन्दा।
पूर्व वचन जे विधि ने कह्यऊ ❁ ते दर्शक ऐश्वर्य न रह्यऊ॥
ताते मनहु कृष्ण विधि-पाहीं ❁ भाखत हैं इह विध वच ताहीं।
ब्रह्मा तुम भव वैभव स्वामी ❁ मैं गोपाल सुवन व्रजनामी॥
आप पुरातन निजको देखौ ❁ मैं प्रतक्ष हूँ बालक पेखौ।
तुम वेदार्थ तत्त्व के ज्ञाता ❁ ताते बड़ विद्वान प्रख्याता१६८

दो० सदाचार तत्पर सदा, सावध रहौ प्रवीन।
मैं श्रीवन उपवन विषे, वत्सन चारत चीन।१६८।

१ पुत्र २ श्रीकृष्ण ३ अपनों ४ अपना।

ताते वेद पठन नहिं कीनों ❀ वेदाचार गंध नहिं चीनों ।
ऐसो मैं मो कर में आसा ❀ वत्सन खोजन मन अभिलासा ॥
भ्रमत विपिन खावत अपि वाको ❀ मो चरित्र तुम इह विध ताको ।
तुम मायापति जग प्रख्याता ❀ हो परमेश्वर ही साक्षाता ॥
अहैं आप तौ सुखी महाना ❀ मैं तुव माया में लपटाना ।
ताते मो मन व्यथित जु अहही ❀ तासों विपिन भ्रमत नित रहहीं ॥
ताहित स्तुती जु अब तुम कीना ❀ वाके योग्य न अहौं प्रवीना ? ।
या विध वंक्रोक्ती प्रभुकेरी ❀ जान हिये भइ शंक घनेरी ॥
तासों सत्यहि निज अज्ञाना ❀ करत अहौं अपराध महाना ।
इम मानत विधि निज मन माहीं ❀ सोइ प्रसंग कहत प्रभु पाहीं१६९

दो० गोपवंश गोपाल प्रभु, हे कृपालु जगदीश ।
नंदलाल श्रीवन रतन, छवि रसाल मो ईश १६९

यह जु आपको बाल स्वरूपा ❀ तिहँ चेष्टा है परम अनूपा ।
भोरापन प्रकटहि है जामें ❀ हिय आकर्षण शक्ती तामें ॥
अस जु आपको अहै शरीरा ❀ वाकी महिमा अति गम्भीरा ।
तिहँ जानन में समरथ नाहीं ❀ रंचहु अपी सत्य वच आहीं ॥
तौ किशोर लीला के माहीं ❀ महा चातुरी प्रकटे ताहीं ।
अस जो पंचतत्त्व ते न्यारो ❀ चिन्मय वपु प्रभु अहै तुम्हारो ॥
वाकी महिम अनंत जु आहीं ❀ लख न सकौं लवलेशहु ताहीं।
तौ फिर आप हिये के माहीं ❀ महा सुखानुभूति जो आहीं ॥

१ देख्यौ २ टेढ़ी बोलन।

सोउ निरतिशय स्वानँद रूपा ❀ मैं किम जानौं ऐ व्रज-भूपा।
और वत्स चारण ते आदी ❀ लीला अहै जु अतिही स्वादी१७०

दो० तिनकौ सुख अनुभव करौ, जोउ अपन उर माहिं।
वाको कहु किम लख सकौं, रंचहु बोध न आहि १७०

तथा आपके हैं सहचारी ❀ तिन हियसुख अनुभव जो भारी।
तिहँ महिमा जानन लवलेशा ❀ मैं नहिं समरथ हे परमेशा !॥
अरु साक्षात हर्यो हिय जिनको ❀ वशीभूत कीनों जिय तिनको।
तिन महिमा अपि रंच न जानै ❀ मो अस्थिर मन कहा वखानै॥
मैं तौ कहा और अपि जेते ❀ लेश न लख सक निश्चय तेते।
किन्तु कृपा कटाक्ष कण जिनपै ❀ यह शक्ती अपि निश्चय तिनपै॥
भाव यही जिन आप जनावैं ❀ तेई जान सकैं अरु गावैं।
मो अपराधी पै अपि कीनों ❀ आप महत अनुग्रह असचीनों॥
कारण यह ऐश्वर्य महाना ❀ दरसायो जो दुर्लभ माना।
पुन करुणाकर दर्शन दीनों ❀ यहि अनुमान हिये मैं चीनों१७१

दो० कियो अनुग्रह आपने, तामैं अपि यहि हेतु॥
प्रेम भक्ति वारे अपन, जिन जिय नेह निकेतु१७१

जिहँ-जिहँ विध तिन दर्शन आसा ❀ तिहँ-तिहँ विध पूरहु अभिलासा।
अरु सेवादिक जाहि प्रकारा ❀ चाहत है चित भक्त उदारा॥
ताहि प्रकार लेत हो सेवा ❀ भक्त मनोरथ पूरक एवा।
तामें कारण एकहि कह्यऊ ❀ आप भक्त-वत्सल किल रह्यऊ॥

यासों यद्यपि मो उर माहीं ❀ नहिं साक्षात भक्ति लव आहीं।
है निश्चय केवल आभासा ❀ अरु अपराधी है यह दासा ॥
तदपि कृपा लवलेश तुम्हारी ❀ भइ जासों म भो अधिकारी ।
जो आपन दर्शन मुहिं दीनों ❀ शरण जान अपनो अपिकीनों॥
नाहीं ज्ञान विनां पथं आना ❀ विना ज्ञान नहिं मुक्ति वखाना।
तरहिं मृत्यु जे ब्रह्म पछानें ❀ इह प्रकार श्रुति ज्ञान प्रमानें१७२।

दो०-तौ जिहँ जनको ज्ञान नहिं, सो किम भव तर जाय।
इमजनु विधिप्रति प्रभुकह्यो,सुनविरंचि असगाय १७२

हे कृपालु मो मन के माहीं ❀ जो आशय निश्चय ही आहीं ।
सो भाखों तत्वत स्फुट रीती ❀ जासों अज्ञन हित नहिं भीती॥
ज्ञान हेतु अणुमात्रहु यासों ❀ तजकैं जिन अस कृती प्रकासा।
आप और आपुहि के प्यारे ❀ जिन चरित्र है शक्ति महारे ॥
निज माधुरी प्रभाव जु मोहैं ❀ मौन शील संतहु जग जोहैं।
तासों त्याग मौन वृति तेऊ ❀ तुव तुवजन गुन गावत वेऊ ॥
अरु जे त्याग ज्ञान अभिमाना ❀ गावन गुन जिन मोद महाना।
अस संतन को जहाँ निवासा ❀ तिहँथलतिन तट जायअयास ॥
वा निज थल थितहू किहँ काला ❀ सहज पधारें संत रसाला ।
तहाँ संतजन निज मुख गावैं ❀ तुव तुवजनगुनगनपुलकावैं१७२

४ नान्य पंथा विद्यतेऽयनाय । २ ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः । ३ तमेव विदित्वा अति-मृत्युमेति ४ प्रयास । ५ विना श्रम ।

दो०-ते गुन कानन प्राप्त ह्वै,स्वतः एव तिन संग ।
सादर मन क्रम वचन सुन,जीवत हैं तुव रंग।१७३।

दंड समान गिराय शरीरा ❀ अपने शिर सेती मतिधीरा।
संत चरण परसें युत नेहा ❀ तन सन्मान विधी है एहा ॥
कृष्ण कथा जु सुनी निज काना ❀ तिहँ जो जानत स्वाद महाना।
तिहँ वैष्णव प्रति गाय सुनावै ❀ वचनादर की विधी कहावै ॥
सुनी भई हरि कथा जु आहीं ❀ होय समाहित धर हिय माहीं।
जाहिं निदिध्यासनहु उचारा ❀ अहै यही विधि मन सत्कारा॥
या विधि परिचर्या है जिन की ❀ याही सों जीवन गति विनकी॥
अपर कछुहु अपि करहीं नाहीं ❀ सुन गुन रंचहु मन न अघाहीं॥
और बात सब लागै फीकी ❀ नीकी लगन अहै जिन जीकी।
यदपि आप त्रिभुवन के माहीं ❀ अहैं अजितही संशय नाहीं।१७४।

दो०-तदपि प्राय ऐसेन सों, जीते गे प्रभु आप ।
मैं किंचित अनुभव कियो,आपुहि के परताप ॥१७४॥

ज्ञानलब्ध मुक्ती से स्वामी ❀ नहिं वश होइँ आप परधामी
तासों आप कथा जु सुनेहा ❀ सुनत अहै लख दुर्लभ देहा ॥
तिन भव तरन न अचरज अहई ❀ गोपद इव भवतिन हित रहई ।
यासों यही वात दरसाई ❀ आप कथा जो सरस: महाई ॥
वाको एक: मात्र जो ज्ञाना ❀ सोइ ज्ञान श्रुति अर्थ प्रमाना ।
वाहि ज्ञान से है भव पारा ❀ अपर ज्ञान, अज्ञान उचारा ॥

श्रवण कीरतन आदिक अहहीं ❀ नवधा भक्ति जाहि को कहहीं।
इनमें ते एकहु अपि भक्ती ❀ करै कृतार्थ अवस अस शक्ती॥
यह प्रभाव भक्तिहि को गायो ❀ यथा न् सिंह पुराण दिखायो।
पत्र पुष्प फल जल हैं जोऊ ❀ बिना दाम तिन प्रापति होऊ१७५

दो०—अरु सब अवसर के विषै, विद्यमान सब ठाहिं।
श्रीपुराण पुरुषहु अपी, सुलभ भक्ति ते आहिं॥१७५॥

तौ फिर मुक्ती पावन आसा ❀ काहे करहीं महत प्रयासा।
श्रीमुख बचनंहु ऐसे अहहीं ❀ अर्जुन प्रति गीता में कहहीं॥
पत्र पुष्प फल जलयुत भक्ती ❀ मुहिं अर्पे जो जन अनुरक्ती।
अर्पित भक्ति युक्त तिन सोई ❀ ग्रहण करौं प्रमुदित चित होई॥
इह विधि प्रभु प्रसन्नता जोई ❀ सुलभ रीतिसों होवै सोई।
तदपि ताहिं परिहाय प्रयासा ❀ ज्ञान हेतु करहीं सुख आसा॥
किन्तु क्लेशही तिन बट आवै ❀ सो प्रसंग विधि या थल गावै।
यावत श्रेय अहैं जग माहीं ❀ मुक्ति स्वरूपहु जितनी आहीं॥
ते सब भक्तिहिते प्रकटावैं ❀ जिम सरते प्रवाहि बहि आवैं।
सकल श्रेय उत्पादक रूपा ❀ अस साक्षात जु भक्ति स्वरूपा१७६

दो०—अथवा साधन विविध हैं, ज्ञान कर्म ते आदि।
और साध्य फल ते सकल, जिहँ भक्ती रस स्वाद१७६

१ मौजूद।

सहजे है अस भक्ति तुम्हारी ❀ त्याग दई जिनकी मति मारी ।
अरु मुक्ती आशा उर धारी ❀ ज्ञान हेतु किय परिश्रम भारी ॥
तिन जन इह प्रकार को ज्ञाना ❀ देवत केवल क्लेश महाना ।
आशय यह प्रयत्न किय जोऊ ❀ तिहँ फल शेष क्लेशही होऊ ॥
तहँ दृष्टान्त कहत मुनिराई ❀ जासों सहज समझ आ जाई ।
द्वै जन खेती करन विचारी ❀ लाभ और श्रम सम निर्धारी ॥
इन दोउन में इक बुधवाना ❀ अहै मुग्ध मतवारो आना ।
बोयो धान खेत भो नीको ❀ फल्यो परिश्रम, आनँद जीको ॥
धान समस्त तहाँ जो भयऊ ❀ चतुर मनुज इकत्र कर दयऊ ।
पाछे सब कुटवायो वाहीं ❀ पृथक किये तुष तंदुल ताहीं१७७

दो०-पृथक पृथक तिन दुहुनकी, द्वै राशी रच दीन ।
कहै अपर जन प्रति वचन, युग्म वस्तु यह चीन।१७७।

इन दोउन राशीन मँझारा ❀ तुम किहँ चाहत करो उचारा ।
सुन साझी वच निज हिय माहीं❀ मुग्ध मनुज सोचत है ताहीं ॥
वड़ो ढेर है शैल समाना ❀ अपर ढेर है अल्प प्रमाना ।
अरु यह अल्प ढेर जो अहही ❀ याहि ढेर ते निकस्यो अहही ॥
तौ फिर वड़ो ढेर किम त्यागौं ❀ काहे अपर माहिं अनुरागौं ।
अस विचार भाखत तिहँ पाहीं❀ वड़ो ढेर मैं चाहत आहीं ॥
इम कह निज वट में तुष लीनें ❀ हिय में विविध मनोरथ कीनें ।
ता पाछे मूसल सों तिनकों ❀ कूटत भयो मुदित चित उनकों॥

१ ढेर ।

कूटत-कूटत तुप उड़ गयऊ ❀ मूसल ही तिहँ के कर रह्यऊ।
भाव यही तुप हित श्रम जेतो ❀ निष्फल ही भयऊ तिहँ तेतो।१७८

दो०-यदि परिश्रम को फल लह्यो, तौ केवल ही क्लेश।
और शेप कछु ना रह्यो, भयो दुखी उद देश।१७८।

तिम जे जन प्रभु भक्तहिं त्यागें ❀ केवल ज्ञानहि में अनुरागें।
ते जन अन्तःकरण विहीना ❀ केवल क्लेशहिं पावत चीना॥
याको भाव यही जिय जानौ ❀ ज्ञान सर्वथा अफल न मानौ।
जिम तंदुल बोयेते कबहू ❀ धान न उपजे जानत सबहू॥
तुप आवृत तंदुल जे अहहीं ❀ ते किल बोवन योग्यहि रहहीं।
उनहीं सों उपजे बहु धाना ❀ तिम जब भक्ती मिश्रित ज्ञाना॥
तबहीं अपरन के हिय माहीं ❀ भक्ति बीज उपजत है ताहीं।
इम यद्यपि सहकारी ज्ञाना ❀ तद्यपि याही भाँति प्रमाना॥
यथा एक धनपति को अहही ❀ सो को कार्य करन यदि चहहीं।
तौ निज अनुचर संगहि राखे ❀ तबही कार्य करन अभिलाखे।१७९

दो०-इम सहकारी ज्ञान भल, किन्तु स्वतंत्र न आहिं।
यही सार है बुध जनन, यदि विचार उर माहिं।१७९।

जिम चाँवल बोवन हित नाहीं ❀ किन्तू स्वादक तो किल आहीं।
उदर भरन पुष्टिद अपि रह्यऊ ❀ तिम केवल प्रभु भक्तिहु कह्यऊ॥
निज को परम स्वाद की दाता ❀ रोम रोम पूरक प्रख्याता।
तासों अस पुष्टी जन पावे ❀ भव अथाह सहजे तर जावे॥

कालहु, तिनते है भयभीता ❀ दूत न अपि उपदेशत नीता।
भूलहु भक्ति निकट जिन जावौ ❀ भक्त विमुख त्वर मोढिग लावौ॥
अरु अतिशय दुर्लभ जो अहहीं ❀ श्रुति श्रुतिवित जिहँ तत्त्व न लहहीं
शिव सनकादिक हू हिय ध्याना ❀ धेरें, तवै लह मोद महाना॥
सो साक्षात कृष्ण हू विनके ❀ है वश में, नित चह सुख तिनके।
इह विधि भक्ति प्रशंस अनंता ❀ जासों जीतो जा श्रीकंता॥१८०

दो०-ज्ञान युक्त भक्ती कही, जो अपरन हिय माहिं।
भक्त्यंकुर उत्पन करन, सहजहि समरथ आहि १८०

राख्यो जिम डिविया के माहीं ❀ अति अमूल्य इक हीरा आहीं।
वह हीरा रच्छक अपि अहहो ❀ हीरा की समता नहिं लहही॥
तथा भक्ति रच्छक भल ज्ञाना ❀ किंतु भक्ति महिमा अप्रमाना।
अस प्रभु भक्ति-त्याग जन जोई ❀ ज्ञान हेतु परिश्रम[1] कर कोई॥
सो निश्चय तंदुलहिं विहाई ❀ तुष संग्रह जानत मनुसाई।
जिनमें ते कछु हाथ न आवे ❀ केवल क्लेश शेष रहि जावें॥
प्रभु प्राप्ती भक्तिहि से भाखी ❀ याहि वात की थिरता राखी।
सोऊ अन्वय अरु व्यतिरेका ❀ विधि सों सिद्ध कियो सविवेका॥
अव यामें विधि देत प्रमाना ❀ सदाचार को सुनौ सुजाना।
हे प्रभु प्रथमें योगी भयऊ ❀ भक्ति योग वारे जे रह्यऊ॥१८१

१ पुरुषार्थ।

दो० जिन निज की चेष्टा सकल, अर्पी आपुहि माहिं ।
भाव यही तिन इन्द्रियन, यावत क्रिया जु आहिं १८१

ते सबही तुव भक्तिहि हेतू ❀ अपर लगन नहिं हृदय निकेतू ।
अरु तुव भक्ति योग के माहीं ❀ पूरण श्रद्धावन्त जु आहीं ॥
श्रवण कीरतन आदि सुकर्मा ❀ करत अहैं तिन हित यहि धर्मा ।
तिन कर्मन सों प्रापति कीनी ❀ प्रेमलक्षणा भक्ति नवीनी ॥
तामें प्राय हेतु यहि रह्यऊ ❀ आप कथा पुनीत ही कह्यऊ ।
वाको श्रवण कीरतन जोऊ ❀ तथाहि सुमरण किय मुद होऊ ॥
तासों प्रेमलच्छणा भक्ती ❀ पाई अहै अधिक अनुरक्ती ।
ता भक्ती सों आप स्वरूपा ❀ अरु गुण लीला प्रभृति अनूपा ॥
इनको अनुभव कर तिन पायो ❀ पद परातपर जो ध्रुव[1] गायो ।
वा जिम निष्फल केवल ज्ञाना ❀ तिम केवल जो योग बखाना१८२

दो०सो अपि निश्चय अफल है, करत सिद्ध थल याहिं ।
सदाचार परमाण से, सुनत भक्ति उपजाहिं १८२

विविध योग किय यत्न विशाला ❀ योगी होय रहे चिरकाला ।
तदपि योग को निष्फल जाना ❀ आप भक्ति बिन वृथा पछाना ॥
ताहित निज चेष्टा निज कर्मा ❀ आपुहि में अर्पण किय धर्मा ।
तासों मिश्रित ज्ञान जु भक्ती ❀ पाय, भये तुम्हरे अनुरक्ती ॥
ता भक्तिहि से तुम्हरो रूपा ❀ जान परम पद लह्यो अनूपा ।

१ अचल ।

कालहु. तिनते ह्वै भयभीता ❀ दूत न अपि उपदेशत नीता।
भूलहु भक्ति निकट जिन जावौ ❀ भक्त विमुख त्वर मोढिंग लावौ॥
अरु अतिशय दुर्लभ जो अहहीं ❀ श्रुति श्रुतिवित जिहँ तत्त्व न लहहीं
शिव सनकादिक हू हिय ध्याना ❀ धरैं, तवै लह मोद महाना॥
सो साक्षात कृष्ण हू विनके ❀ ह्वै वश में, नित चह सुख तिनके।
इह विधि भक्ति प्रशंस अनंता ❀ जासौं जीतो जा श्रीकंता।१८०

दो०-ज्ञान युक्त भक्ती कही, जो अपरन हिय माहिं।
भक्त्यंकुर उत्पन करन, सहजहि समरथ आहि १८०

राख्यो जिम डिविया के माहीं ❀ अति अमूल्य इक हीरा आहीं।
वह हीरा रच्छक अपि अहही ❀ हीरा की समता नहिं लहही॥
तथा भक्ति रच्छक भल ज्ञाना ❀ किंतु भक्ति महिमा अप्रमाना।
अस प्रभु भक्ति त्याग जन जोई ❀ ज्ञान हेतु परिश्रम कर कोई॥
सो निश्चय तंदुलहिं विहाई ❀ तुष संग्रह जानत मनुसाई।
जिनमें ते कछु हाथ न आवे ❀ केवल क्लेश शेष रहि जावें॥
प्रभु प्राप्ती भक्तिहि से भाखी ❀ याहि बात की थिरता १ ...
सोऊ अन्वय अरु व्यतिरेका ❀ विधि सों सिद्ध कियो सविवे...
अब यामें विधि देत प्रमाना ❀ सदाचार को सुनो सुजान॥
हे प्रभु प्रथमें योगी भयऊ ❀ भक्ति योग वारे जे रह्यऊ।१८१।

---

१ पुरुषार्थ।

दो॰ जिन निज की चेष्टा सकल, अर्पी आपुहि माहिं।
भाव यही तिन इन्द्रियन, यावत क्रिया जु आहिं १८१

ते सबही तुव भक्तिहि हेतू ❀ अपर लगन नहिं हृदय निकेतू।
अरु तुव भक्ति योग के माहीं ❀ पूरण श्रद्धावन्त जु आहीं॥
श्रवण कीरतन आदि सुकर्मा ❀ करत अहैं तिन हित यहि धर्मा।
तिन कर्मन सों प्रापति कीनी ❀ प्रेमलक्षणा भक्ति नवीनी॥
तामें प्राय हेतु यहि रह्यऊ ❀ आप कथा पुनीत ही कह्यऊ।
वाको श्रवण कीरतन जोऊ ❀ तथाहि सुमरण किय मुद होऊ॥
तासों प्रेमलक्षणा भक्ती ❀ पाई अहै अधिक अनुरक्ती।
ता भक्ती सों आप स्वरूपा ❀ अरु गुण लीला प्रभृति अनूपा॥
इनको अनुभव कर तिन पायो ❀ पद परातपर जो ध्रुव गायो।
वा जिम निष्फल केवल ज्ञाना ❀ तिम केवल जो योग बखाना१८२

दो॰ सो अपि निश्चय अफल है, करत सिद्ध थल याहिं।
सदाचार परमाण से, सुनत भक्ति उपजाहिं १८२

विविध योग किय यत्न विशाला ❀ योगी होय रहे चिरकाला।
तदपि योग को निष्फल जाना ❀ आप भक्ति बिन वृथा पछाना॥
ताहित निज चेष्टा निज कर्मा ❀ आपुहि में अर्पण किय धर्मा।
तासों मिश्रित ज्ञान जु भक्ती ❀ पाय, भये तुम्हरे अनुरक्ती॥
ता भक्तिहि से तुम्हरो रूपा ❀ जान परम पद लह्यो अनूपा।

---

१ अचल।

इम आपुहि की कथा पुनीता ❀ तिहँ श्रवणादिक करे सप्रीता ॥
वाही सों तुव प्रापति कह्यऊ ❀ अपर उपाय नाहिं अस रह्यऊ।
निर्गुन को सहजहि लह ज्ञाना ❀ किन्तु सगुण को कठिन प्रमाना॥
कारण यह अचिंत्य है लीला ❀ अरु अनंत गुणवंत सुशीला ॥
ताहित हे इकरस गुणवंता ❀ गुणातीत[1] तुव महिम अनंता१८२

दो० अमल[2] अन्तरात्मा मनुज, जान सकत हैं ताहिं ।
निर्मल हिय को भाव जो, प्रकट करत थल याहिं१८३

एक प्रसारित[3] इन्द्रि बखाना ❀ प्रत्याहृत इन्द्री हैं आना ।
बाह्य पदार्थ ग्रहण कर जेऊ ❀ कही प्रसारित इन्द्री तेऊ ॥
अन्तर भावें ग्राह्य जिन सेती ❀ प्रत्याहृत इन्द्री हैं तेती ।
नैन आदि इन्द्री जे अहहीं ❀ वाह्य वस्तु के ग्राहक रहहीं ॥
हृदय जान सक अन्तर भावा ❀ या विध समझो दुहुन प्रभावा।
किन्तु यथा द्वै जनन मिताई ❀ दुहुन भवन जब उत्सव आई ॥
वह उनके वह उनके पासा ❀ जाय सहायक हों सहुलासा ।
तथा हृदय नैनादि मिताई ❀ अहे परस्पर संतत गाई ॥
जबहि नेत्र किय दर्शन आसा ❀ जनु यहि उत्सव नेत्रन पासा।
तबहि हियो मिल नैनन संगा ❀ नैन कार्य कर देत उमंगा १८४

१ दो०—प्राकृत गुण जामें नहीं, गुणातीत सो जान।
अप्राकृत गुणवन्त है, नंद-नँदन भगवान ॥
२ निर्मल ३ पसरी हुई ४ मन चित आदि ५ पदार्थ ।

दो०-चहत हृदय अपि याहि विध, ध्यानादिक कृत जेउ।
तब नैनादिक इन्द्रिहू, होत सहायक येउ ॥१८४॥

याको भाव प्रकट यह अहही ❀ पृथक पृथक इन कृत जे रहहीं।
तिन कर्मन के करन मँझारा ❀ नहिं समर्थ मंन करौ विचारा ॥
यथा श्रवण इन्द्री जो अहही ❀ श्रवण करन हरि गाथा चहही।
तांते मन समर्थ नहिं होई ❀ यह तो जानत है सब कोई ॥
जिम किहँ बात सुनत रह काना ❀ ता प्रति कह पुन करौ बखाना।
कारण मो मन अन थल गयऊ ❀ सुने न वच जे मो प्रति कह्यऊ ॥
यासों सिद्ध भई यह बाता ❀ श्रवणादिक इन्द्रिय संघाता।
बिन मन शक्तिवान नहिं अहही ❀ तथा हियो अपि इह विध रहही ॥
बिन इनके ध्यानादिक कर्मा ❀ कर न सकत याको यहि मर्मा।
प्रत्याहृत इन्द्रिय को कह्यऊ ❀ निर्मल हियो । रह्यऊ१८५

दो०-अस निर्मल हियके मनुज, गुणातीत परसंस।
जान सकत वा कोउ इक, तुव महिमा लख अंस १८५

❀ इति श्रीकृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे दशम सोपान समाप्त ❀

यदि कहु किम जानत है सोऊ ❀ अमल अन्तरात्मा कहु जोऊ।
वाको उत्तर विधि वच कहही ❀ स्वानुभव से जानत अहही ॥

१ समूह २ अर्थात् नेत्रादिक इन्द्रियों

भाव यही वो स्वयं प्रकासा ❀ को कर सकही ताहिं विकासा ।
यथा घटादिक देखन कारन ❀ दीपक अरु नैनन कर धारन ॥
किन्तु दीपके देखन हेतू ❀ दीपक ही समर्थ लख लेतू ।
जैसे अन्तःकरण जु अहही ❀ सोई जनु इक दर्पण रहही ॥
दर्पण पै कालिमा जु होई ❀ नहिं प्रतिबिंब पड़त तहँ कोई ।
तिम जब अन्तःकरण मलीना ❀ संस्कारनसों है रह दीना ॥
तब लग आतम बिंबको ताहीं ❀ नहिं प्रतिबिंब पड़त तिहँ माहीं ।
जब मलीनता होवै दूरा ❀ यथातथ्य है शुद्ध प्रपूरा॥१८६॥

दो०–तब दीखे प्रतिबिंब तहँ, आतमको, यह जान ।
यही आतमाकारता, भई प्राप्त पहिचान ॥१८६॥

तासों अन्तःकरण जु अहही ❀ आतमाकारपनो जहँ रहही ।
सो तुव महिमा को पहिचाने ❀ नाहिं अन्यथा रंच पछाने ॥
जिम राखे सुठ दर्पण दोऊ ❀ ते सन्मुख समता में होऊ ।
तौ तिन मध्य स्थित जो रहही ❀ पूर्णरूप सों दीखत अहही ॥
तिम जो अन्तःकरण मँझारा ❀ अहै कालिमा विविध प्रकारा ।
विक्षेपादिक आतम माहीं ❀ पूर्ण रूप सों दीखत आहीं ॥
पूर्ण रूपको भाव यही है ❀ शुद्ध स्फटिक मणी जु कही है ।
वाके बराबरी में राखौ ❀ जपा कुसुम जाको तुम भाखौ ॥
तौ तिहँ कुसुम बिंब मणि माहीं ❀ प्रतक्ष ही दीखेगो ताहीं ।
तासों फटिक मणी जो अहही ❀ पद्मराग मणि सम भल कहही१८७

दो०-किन्तु जपाके फूल सम, मणि कह सकहीं नाहिं।
कारण यह तिन दुहुनके, पृथक् पृथक् गुण आहिं १८७

यहां जु अन्तःकरण बखाना ❀ सो आतम के तुल्य प्रमाना।
अन्तःकरण माहिं जे रह्यऊ ❀ विक्षेपादिक जाको कह्यऊ ॥
टीक[1] सामने आतम रहही ❀ तासों तामैं दीखत अहही।
वस्तुत अन्तःकरण जु रह्यऊ ❀ आतम सम वह शुद्धहि कह्यऊ ॥
केवल मायाकृत गुण जेऊ ❀ अन्तःकरण माहिं रह तेऊ।
तब आतम ते अंतर परही ❀ किन्तु जबहि तिनको परिहरही॥
तौ वह शुद्ध स्वरूप उचारा ❀ यही कह्यो है आतमाकारा।
जिम सुठ द्वै दर्पण सम सामैं ❀ तिन प्रतिबिंब बिंब द्वौ तामैं॥
कछु न दीखहीं ऐक्य निहारा ❀ इह थल तथा प्रकार बिचारा।
अन्तःकरण माहिं जो परही ❀ आतम को प्रतिबिंब उचरही१८८

दो० तथाहि अन्तःकरण को, परत आतमा माहिं।
जो प्रतिबिंब सु दुहुन की, अहै ऐक्यता ताहिं १८८

यही आतमाकार लखायो ❀ अन्तःकरण केर जो गायो।
या विध आतम साक्षातकारा ❀ कीनों अन्तःकरण उचारा॥
सो भल तुव महिमा कछु जानै ❀ अपर निरासा निज उर आनै।
या थल शंका उपजत अहही ❀ अन्तःकरण जाहिको कहही॥
करत विषय वह जो साकारा ❀ तौ किम मान आतमाकारा।

१ बिल्कुल ठीक सन्मुख सामने।

याको समाधान विधि करही ❀ सहजे हिय संशय अपहरही ॥
अविक्रियपन से आत्माकारा ❀ अविक्रियपन यह भाव उचारा ।
यावत माया धर्म जु रह्यऊ ❀ तिन संज्ञा विकारही कह्यऊ ॥
यथा अहं मम तू तुव होई ❀ मन्यु[1] मदन मोहादिक जोई ।
इन विकारते होय जु मुक्ता ❀ अविक्रियपनो यही है उक्ता॥१८९

दो०-स्वयं अतीत विकार ते, होकर शुद्ध स्वरूप ।
लहत आतमाकारता, जानत महिम[2] अनूप ।१८९।

पुन शंका होवत है ताहीं ❀ अन्तःकरण कह्यो जो आहीं ।
तिहँ साक्षातकार दरसायो ❀ आतम को, यह जो तुम गायो ॥
तासों अविषय आतम माहीं ❀ भयो अनात्म दोष थल याहीं ।
कारण यह जे गोचर रह्यऊ ❀ ते अनात्म वस्तू सब कह्यऊ ॥
आतम को श्रुति इह विध गावे ❀ मन वाणी तहँ पहुच न पावे ।
तौ किम आतम साक्षातकारा ❀ अन्तःकरण कियो जु उचारा ॥
तापे विधि भाखत प्रभु पाहीं ❀ वस्तुत समाधान जो आहीं ।
अरूपता सों आत्माकारा ❀ अरूपता को भाव उचारा ॥
नित्य सर्वगत अचल सनातन ❀ कहिं आत्मा की वृत्ति महाजने[3] ।
इन वृत्तिन को विषय करत है ❀ नहिं फल विषय करन उचरतहै१९०

दो०-यदि आतम की वृत्ति ही, विषय करत अस आहि ॥
तौ स्फूर्ती[4] कैसे भई, यह संशय थल याहिं॥१९०॥

१ क्रोध २ असाधारण गुण ३ वेद जानने वाले महापुरुष ४ अर्थात् भाक्षात ।

जो पदार्थ देख्यो है नाहीं ❀ केवल वृत्ति श्रवण किय आहीं ।
तो तिहँ रूप फुरे कहु कैसे ❀ भाखत हो तुम या थल जैसे ॥
तापै कहत बात है एती ❀ अनन्यबोध आतपन सेती ।
निज प्रकाशही से परकासे ❀ नहीं अन्यथा, रंच न भासे ॥
यथा अँधेरे वस्तू राखी ❀ तिहँ लेवन को है अभिलाखी ।
गयो तहाँ कछु दीखे नाहीं ❀ यद्यपि वस्तु निकट तिहँ आहीं ॥
पावै तब जब दीप प्रकासे ❀ नाहिं अन्यथा होय निरासे ।
किन्तु दीप हित दीपक आना ❀ नाहिं अपेक्षा प्रकट प्रमाना ॥
तिम जब अन्तःकरण मँझारा ❀ रज तम आदि भये संहारा ।
तब तो होय आतमाकारा ❀ या विधि मान्यो साक्षात्कारा १९१

दो०-इह प्रकार जिनको अहै, अन्तःकरण पुनीत ।
ते तुव महिमा जान कछु, अस मो हिये प्रतीत १९१

अप्राकृत कल्याण स्वरूपा ❀ हो अनन्त गुण शील अनूपा ।
भक्त श्रेय हित धर अवतारा ❀ जन हित कर लीला विस्तारा ॥
अस जे आप प्रणत हित पावन ❀ को समर्थ तुम्हरे गुन गावन ।
यावत भुवि पै रजकण अहहीं ❀ नभमंडल हिमकण जे रहहीं ॥
तथाहि अन्तरिक्ष के माहीं ❀ जेते उड़गण बसहीं ताहीं ।
तिनैं चतुर नर भल गिन लेवैं ❀ चिरंकाल गिनती को सेवैं ॥
किन्तु आपके गुन अप्रमाना ❀ सो अपि रंच न गिन सक माना ॥
अब ब्रह्मा भाखत प्रभु पाहीं ❀ यदि को मोसे पूछन चाहीं ॥

श्रीप्रभु-प्रापति पथः को कहाऊ ❀ तो तापर्ति कहुँ, यह पथ रहाऊ।
आप कृपाकी बाट निहारे ❀ अतिहिसुदृढ अरु नीकप्रकारे१९२

दो०-जिम सरिताके पारकों, जिहँ जावन अभिलास।
ताकत नौका घाट कों, इकटक सहित हुलास १९२

चहत कृपा सो धीरज धारे ❀ कब हो कृपा, दृष्टि तहँ डारे।
जो जन करत शीघ्रता यामें ❀ कछुं विलंब लख सोचत तामें॥
अहो कहा कारण यह रहही ❀ अब लग कृपा न कीनी अहही।
किन्तु अपन उर यह न विचारे ❀ प्रभु करुणामय परम उदारे॥
मो उरकी अभिलाषा जोऊ ❀ पूर्ण रूप सों जानत सोऊ।
यदि विलंबहू कियो कृपाला ❀ तहं अपि मो,को श्रेय रसाला॥
या प्रकार धीरज जब आवे ❀ आप कृपा तब त्वर दरसावे।
धन्य धन्य चातक को अहही ❀ यदपि जलदकी प्रकृतिहि रहही॥
समय भये वर्षा वरषावे ❀ तदपि न चातक धैर्य भुलावे।
खिन्न भयो हू रटत सदाई ❀ एक टेक निज हिये बसाई।१९३।

दो०-ता प्रकार जो आपकी, करुणा बाट निहार।
सुख दुख निज के कर्म फल, भोगत सहित विचार १९३

सुख में आप कृपा फल जाने ❀ दुखमें निज कर्मन फल माने।
अस हिय धर सुखमें नहिं फूले ❀ भक्ति भक्त भगवत नहिं भूले॥

१ व्याकुल होता हुआ भी रटना लगी रही है।

दुख में धीरज को दृढ़ धारे ❀ पाप कर्म फल हिये विचारे ।
नित्य नेमहू से अधिकाई ❀ भक्ति माहिं निज चित्त लगाई॥
हँसत हँसत दुख को सहि जावे ❀ या प्रकार निज समय वितावे ।
इम सुख दुख भोगे सविचारे ❀ आप कृपा की बाट निहारे ॥
अन्तरंग साधन ये दोऊ ❀ बहिरंगी साधन कहुँ जोऊ ।
हिय से ध्यान करै युत प्रेमा ❀ वाणी से जप करै सनेमा ॥
अरु लीलाको गानहु करही ❀ तनु हरि सेवा में नित धरही ।
या विध निज आयुषा वितावै ❀ निज कृति में हंपन नहिं लावै१९४

दो०-वाको भवते छूटनो, अरु तुव चरण सरोज ।
प्रापत करनों दोउ में, है अधिकार सुओज ॥१९४॥

या विध विधि प्रभु महिमा गाई ❀ अब निज दोष जु कियो महाई।
क्षमा करावन प्रार्थन वानी ❀ कहत सविनय अपन लघुजानी॥
हो अनन्त सबही विध आपू ❀ पुन मो स्वामी अमित प्रतापू ।
तुमही हो आदी सबहीते ❀ मैं हूँ सान्त यथा जगरीते ॥
आप परातम मैं अवरातम ❀ किम है तुलना मो तुम्हरे सम ।
मायात्री त्रिभुवन जे अहहीं ❀ मोह करावन समरथ रहहीं ॥
तिन सब को अपि माया द्वारा ❀ आपुहि मोह करावनहारा ।
या विध को ऐश्वर्य तुम्हारो ❀ मो दुर्जनता तहां निहारो ॥

---

१ शक्ति । २ अन्तवारी । ३ जीव ।

आप सकल ऐश्वर्य प्रमूला ❁ तहँ माया पटकी प्रतिकूला।
केवल निज वैभव अवलोकन ❁ भयो सु हास्यास्पद को कारन१९५

दो०-यथा अनलमेंते निकस, लोय अपन वड़ जान।
अग्नी की समता करै, होय स्वयं ही हान ॥१९५॥

सोई गति प्रभु भइ है मोरी ❁ अव अथाह गति निरखी तोरी।
जनु प्रभु कह चतुरानन पाहीं ❁ किम नहिं चेत्यो प्रथमै ताहीं ॥
तव विधि भाखत सुनहु उदारा ❁ रजगुण संभव देह हमारा।
ताहित मो मति रजगुण सानी ❁ अनुचित उचित ज्ञान कर हानी॥
अरु अजानतासों कृत कीनों ❁ गोपबाल हो,निज हिय चीनों।
वस्तुत सवके ईश्वर आपू ❁ तुम सम किहँको होय प्रतापू॥
सो मैं निज को आप समाना ❁ पृथकहि ईश हिये में माना।
वामें यहि इक कारण जानूं ❁ आपुहि जग को कर्ता मानूं॥
ता मदसों मो हिय में छायो ❁ गाढ़ तमोगुण. कछु न दिखायो।
ज्ञान नेत्र मेरे मुँद गयऊ ❁ या विध अंधपनो वड़ छयऊ।१९६।

दो०-तुव माया मोहित भयो, कछू न सूझी मोहिं।
अव अपराध क्षमहु सकल,को क्षमिहैं विनतोहिं१९६

आपुहि हैं मो नाथ उदारा ❁ मैं हूं संतत दास तुह्मारा।
कैसोहु दास होय किन स्वामी ❁ तजै ममत्व न हे सुखधामी॥

१ गहरा।

तातें अब निज जन मुहिं जानौ ❀ करहु अनुग्रह विलम न आनौ।
जनु प्रभु कह पद्मजके पाहीं ❀ तू अपि जगको इश्वर आहीं ॥
तापै कहत होय मद हीना ❀ निज महत्व विधि अति लघुचीना।
प्रकृती महतत अरु हंकारा ❀ भू आदिक तत पंच प्रकारा ॥
इन आवरणन वेष्टितं कह्यऊ ❀ यह ब्रह्मंड घट रूप जु रह्यऊ।
सात विलांद देह मो आहीं ❀ आप निकट किहँ गिनती माहीं॥
हे करुणा निधि श्रीभगवन्ता ❀ याही विधि के अंड अनंता ।
तुम्हरे रोम छिद्र जे आहीं ❀ सम गवाक्ष ते ताके माहीं १९७

दो०-परमाणूवत भ्रमत हैं, अस ऐश्वर्य अमाप ।
मैं तुच्छाती तुच्छ प्रभु, क्षमा करहु अब आप१९७

जासौं हौं मैं दीन महाना ❀ कृपा योग्य हौं हे भगवाना ।
अस विचार अनुकंपा कीजे ❀ शरण जान अपनो लख लीजे॥
पुन विधि भाखत है प्रभु पाहीं ❀ सुनौ अधोक्षज विनती आहीं ।
नाम अधोक्षज विधि जो कह्यऊ ❀ वाको भाव हिये यह रह्यऊ ॥
इन्द्री जन्यँ ज्ञान जो अहही ❀ सो जिहँते नीचेको रहही ।
इन्द्री जन्य ज्ञानते आना ❀ अहै कहा मो पास प्रमाना ॥
जासों हम वस्तुत तुवरूपा ❀ जान सकें, न परें भवकूपा ।
याही ते अपराधहु होई ❀ किन्तु आप करुणानिधि जोई ॥

१ लिपटा हुआ २ इन्द्रियों से होने वाला ।

हमरे अपराधन नहिं देखौ ❀ जान बाल करुणा चख पेखौ।
यथा गर्भगत बालक जोऊ ❀ इत उत चरण चलावत सोऊ १९८

दो०–कहा मात तिहँ दोपको, मानेगी अपराध ?।
नहिं कदापि तिम हे हरी, तुमहु कृपालु अगाध १९८

जनु प्रभु कह पद्मज के पाहीं ❀ मेरो बालक किम तुम आहीं।
तापै प्रभु प्रति ब्रह्म बखाना ❀ यह जो दीखत जगत महाना॥
भावं अभांव शब्द से जोऊ ❀ है अभिहितं निश्चय कर सोऊ।
आप कूख से बाह्य कहा है ? ❀ जो कछु भाव अभाव रहा है॥
कछु अपि नहिं, निश्चय अस अहही❀ताते सब तुव कूखहि रहहीं।
तौ मैं हूं तुव कूखहि सेती ❀ भयऊ प्रकट बात है एती॥
तासों मातावत हितकारी ❀ सहन योग्य हो चूक हमारी।
यावत जीव वृंदते मेरो ❀ तुमतें जन्म प्रकटही टेरो॥
याहि बात को श्रीप्रभु पाहीं ❀ करत प्रकाश ब्रह्म वच ताहीं।
प्रलय समय प्रभु उदधि मँझारा ❀ डूब गये त्रैलोक विचारा ।१९९।

दो०–नारायण के उदर में, नाभी सोह महान।
तासु नालते जन्म भो, तहँ वहु वाक्य प्रमान १९९

कहा मृषा है सक वह बानी ❀ नहिं कदापि, साची ही मानी।
इम कहतहु विधि के मन माहीं ❀ संशय शेप रह्यो तहँ आहीं॥

---

१ है २ नहीं ३ माना हुआ।

तासों पुन अपि भाखत अहही ❁ हे ईश्वर कहु सत्य जु रहही ।
कहा जन्म मो तुमते नाहीं ? ❁ नहिं, निश्चय तुमही ते आहीं॥
जनु प्रभु कह चतुरानन पाहीं ❁ यदि तुम नारायण सुत आहीं।
तौ मेरे समीप किम आयो ❁ अस सुन विधि ने वचन सुनायो॥
कहा नहीं नारायण आपू ? ❁ निश्चय आपुहि हैं गततापू ।
कहु विधि नारायणहूँ कैसे ❁ तापै विधि भाखत है ऐसे ॥
सर्वजीव आश्रय हो जाते ❁ कहा न तुम नारायण ताते ।
निश्चय आपुहि हो नारायण ❁ भक्त प्रीत ही व्रत पारायण।२००।

दो०-हे अधीश ! तुम नाहिं हो, श्रीनारायण देव ? ।
निश्चय नारायण तुम्हीं, ताको है यह भेव ॥२००॥

यावत जीव प्रवर्तक आपू ❁ अहे आपको तेज अमापू ।
पुन तुम अखिल लोक के साखी ❁ यामें वेद श्रुती वहु भाखी ॥
तासों अपी आप नारायण ❁ सदा रहत हो भक्त परायण ।
जनु प्रभु कह पंकजके पाहीं ❁ हे विरंचि अस बनत न आहीं॥
कारण कृष्ण वर्ण है मेरो ❁ ताहित कृष्ण नाम है टेरो ।
अरु निवास थल श्रीवन माहीं ❁ तापै विधि कह श्री प्रभु पाहीं ॥
नरसे जो होवै सो नारा ❁ नारा जल को नाम उचारा ।
ता जल में जिहँ अयन सुहावै ❁ सो नारायण ईश कहावै ॥
अस जो नारायण जलशायी ❁ आपुहि की मूरति है गायी ।
तासों मैं यद्यपि उनहीते ❁ उत्पत भयों तदपि तुमहीतें २०१।

१ हे विलाप रहित । २ स्थान ।

दो०-तुव मूरति जलशायि जो, नारायण के नाम ।
सत्य न तुव माया अहै, अस प्रतीत उर धाम ॥२०१॥

जो तुव वपु जल में थित रहाऊ ❀ जगदाश्रय स्वरूप तिहँ कहाऊ।
यदि वो सत्यहि सत्य कहायो ❀ तौ जब मैं नाभी तें जायो ॥
कंज नाल पथ उदर मँझारा ❀ शत सम्वत्सर वस्यो उदारा ! ।
यदपि खोज तहँ करी महाना ❀ तदपि विलोक्यो नहिं भगवाना॥
हे अचिन्त्य वैभव कर धारन ! ❀ यामें कहो कहा है कारन ।
पुन ता समय ध्यान हिय माहीं ❀ कियो तदपि तहँ दीखे नाहीं ॥
तप यह शब्द सुन्यो मैं काना ❀ पुन जब मैं तप कियो महाना।
तब वाही थल तप अवसाना ❀ शीघ्रहि दर्शन भयो सुहाना ॥
ता कारण तुव मूरति माहीं ❀ देश विशेष विछेद जु आहीं ।
सोउ कदापि सत्य नहिं मान्यो ❀ यह सिद्धान्त हिये निज आन्यो२०२

दो०-जल आदिक परपंच यदि,सत्यहि मानो जाय ।
तौ तासों परिछेद तुव,होवे अस श्रुति गाय ॥२०२॥

जनु प्रभु कह परमेष्ठी पाहीं ❀ वह माया कहुँ अपरहु आहीं ।
वा नारायण ही की होऊ ❀ जाकी बात करत हो जोऊ ॥
तापै ब्रह्मा कह प्रभु पाहीं ❀ हे मायोपशमन[१] थल याहीं ।
यह जो बाह्य प्रपंच प्रतच्छा ❀ दीख रह्यो है सबन समच्छा ॥

१ माया को वश में करने वाले ।

सो संपूर्ण जठर के माहीं ❀ मैया को दिखरायो आहीं ।
वह माया आपुहिं प्रकटाई ❀ अस अचिन्त्य शक्ती तुव गाई ॥
जनु प्रभु कह मो मुखके माहीं ❀ जो प्रपंच दीख्यो हो ताहीं ।
सो मुखकी जो सुन्दरताई ❀ अरु चाक्चिक्यपनो जु महाई ॥
तासों प्रतिबिंबहि तहँ होई ❀ प्रपंच को, तुम भाखत सोई ।
तापै ब्रह्म कहत प्रभु पाहीं ❀ हे प्रभु आप कुख के माहीं २०२

दो०-दीखत है यह सब यथा, सो सब तथा प्रकार ।
बाहर आपि दीखत अहै, यही बात निर्धार ॥२०३॥

कारण यह तुव मुख के माहीं ❀ जो प्रपंच दीख्यो हो ताहीं ।
आप सहित सो सकल निहारा ❀ ताते तुव मायाहि विचारा ॥
तुव माया बिन घटत न सोई ❀ यथातथ्य निश्चय यह होई ।
दर्पण में प्रतिबिंब जु परही ❀ सो विलोमही दीखत अहही ॥
तिम यदि आप माहिं अस मानैं ❀ है प्रतिबिंब प्रपंच महानैं ।
तौ बाहर से श्रीमुख माहीं ❀ दीख पड़े विलोमता[1] ताहीं ॥
किन्तु अस नहिं रंचक होई ❀ यथातथ्य ही दीखत सोई ।
कहा नहीं यह तुम्हरी माया ? ❀ यह सब मायाही दरसाया ॥
तामें विधि अब अपन प्रमाना ❀ देत कहत प्रति कृपानिधाना ।
नहिं केवल तुव मातुहि केरो ❀ है प्रमान जो इह थल टेरो२०४

१ उलटा (औंधा)।

दो०-किन्तु स्वयं मैं हूँ तथा, देख्यो या थल माहिं।
या प्रकार के वचनसों, भाखत विधि प्रभु पाहिं २०४

* इति श्रीकृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे एकादश सोपान समाप्त *

हे प्रभु कहा न मोहिं दिखाई ? ❀ आप विना जु माय प्रकटाई।
आप विना को भाव बताये ❀ प्रथम एक आपुहि दरसाये ॥
जब मैं आप, सखा समुदाई ❀ तथा वत्सगण गयो चुराई।
तब तिन सखा वृन्दके रूपा ❀ और वत्सगण रूप अनूपा ॥
मोहिं दिखाइ दिये पुन जेऊ ❀ दीखे चतुर बाहु सब तेऊ।
एक एकके आगे ताहीं ❀ मो युत अखिल देव जे आहीं॥
ते तिनकी उपासना करहीं ❀ तावतही अस देखत अहहीं।
इक इक के आगे थल ताहीं ❀ एक एक ब्रह्मांड महाईं ॥
अब वहि इक अद्वय तुव रूपा ❀ निरखत प्रथम समान अनूपा।
विना आप माया रहि जेती ❀ तिरोधान भइ सबही तेती २०५

दो०-एक आपुही शेष अब, देख रह्यो हूँ याहिं।
जनु प्रभु कह हे ब्रह्म किम, माया भाखत ताहिं २०५

जो कछु तुम या थल के माहीं ❀ निरख्यो सो चिन्मयही आहीं।
तापै विधि अस वचन उचारा ❀ जे नहिं जानत रूप तुम्हारा ॥
प्रकृतीथित जन हैं तिनमाहीं ❀ आपुहि स्वतन्त्रतासों ताहीं।
करकें मायाको विस्तारा ❀ किम भाखत हो कहे प्रकारा ॥

१ छिपगई।

यथा जगत स्रष्टा मो माहीं ❀ पालक विष्णु रूप में आहीं ।
अरु जिम शंकर माहिं प्रकासे ❀ ये सब तुमहीं हो अस भासे ॥
प्राकृत सदृश जन्म नहिं जाको ❀ स्वयं स्वरूप शक्तिसे वाको ।
आविर्भाव होय तहँ कारन ❀ केवल भक्त भक्ति परिपालन ॥
तथाहि पुन लीला मुद मूला ❀ करहीं सरस भक्त अनुकूला ।
वहि प्रसंग विधि कहहे स्वामी ❀ हे अचिन्त्य शक्ति युत नामी २०६

दो०-दुष्ट जनन दुर्मद हनन, श्रेष्ठ जनन के साथ ।
करन अनुग्रह अवतरहु, अपनन करन सनाथ२०६

यथा सुरन में वामन भयऊ ❀ ऋपिन माहिं रामादिक कह्यऊ ।
नरन माहिं रामादि स्वरूपा ❀ तिर्यक्[३] में क्रोड़ादि[४] अनूपा ॥
जलचारिन मत्स्यादि उचारा ❀ या विधि तुव अनन्त अवतारा ।
निज इच्छा निज शक्तिहि सेती ❀ तुव अवतार, बात है एती ॥
जनु विधि प्रति प्रभु वचन उचारा ❀ यदि मो स्वेच्छा से अवतारा ।
तौ निन्दित योनिन के माहीं ❀ लियो जन्म किम मैं, कहु ताहीं॥
जो तनु धरै अपन अभिलासा ❀ कुत्सित योनिन किम कर आसा।
पुन वामनादि वपु के माहीं ❀ माँगन आदि कर्म किय आहीं ॥
अरु कार्पण्यपनों किम कीनों ❀ जोउ निन्द्य अति सवहिन चीनों॥
जिम पट विक्रिय कर्ता सेंती ❀ वस्त्र भाव निर्णय किय चेंती॥२०७

दो०-यदा लियो गज अपन कर, नाप करन हित ताहिं।
तव गाहक इक वांस को, लिय उठाय कह वाहिं२०७

---

१ प्रकटपनो। २ परशुराम, नर नारायण आदि। ३ पशुन में। ४ वराहादि। ५ निन्दित। ६ खिसियाय जानों ७ सावधान होकर ।

यासों नाप देहु मुहिं चीरा ❀ अस सुन यदि वो धरे उर धीरा॥
निज उदारपनसे दे देवै ❀ गाहक निलज होय ले लेवै ॥
देखनहार सुजस किहँ गावै ❀ यह विचार देखो उर भावैं।
लेनहार पट भल मन भायो ❀ ले जावै हिय में हुलसायो ॥
तदपि अपन छल निज जिय जानै ❀ उनकी महिमाको मन मानै।
तिम वामन वपु वलिके पाहीं ❀ तीन पैर याचे मैं ताहीं ॥
परम उदार वली नृप जोऊ ❀ मुहिं दीने ततकालहि सोऊ।
नाप समय मैने तनु आना ❀ धार लियो जो दीर्घ महाना॥
यदि वलिराय कहत अस ताहीं ❀ जिहँ तनुसों याच्यो तुम आहीं।
तिहँ तनुही के चरणन नापू ❀ लेवौ भल अवनी तुम आपू॥२०८॥

दो०-किन्तु विपंद वपु चरण के, नाप भूमि दउँ नाहिं।
तौ यामें कछु दोष अपि,को नहिं कहितो ताहिं २०८

तद्यपि वलि नृप परम उदारा ❀ वानें मो रुचिके अनुसारा।
विक्रम वपुके चरणन सेती ❀ दई नाप पुहुमी भइ जेती ॥
अव कहु सुजस सुजन किहँ गावैं ❀ मो छल कृति किम नाहिं वतावैं।
वानें दई लई मैं ताहीं ❀ मैं हूं अपने उर के माहीं ॥
निज कृत छलको किम नहिं जानों ❀ किम वलि की महिमा नहिं मानौं।
यहि कार्पण्यपनों तहँ रहाऊ ❀ वामन वपु में जव मैं भयऊ ॥
कहु स्वतन्त्रपन मोपै होई ❀ अस कृति किम करहूं, कहि जोई।
तापै विधि भाखत प्रभु पाहीं ❀ निज अन्तर को भाव जु आहीं॥

१ वड़ा। २ पृथिवी।

हैं गुण अपरिच्छिन[1] तुम्हारे ❀ अरु परिछिन[2] गुण अहैं हमारे ।
पुना आप पट वैभव वारे ❀ पूर्ण रूप सों अचल निहारे २०९

दो०-तिनमें ते एकहु नहीं, पूर्णतया हम माहिं ।
तथाहि आप परातमा, अवरातम[3] हम आहिं २०९

पुन योगेश्वरहू हैं आपू ❀ या विधि तुम्हरो अमित प्रतापू।
अब कहु तुव लीला जो आहीं ❀ जान सके को त्रिभुवन माहीं ॥
करकें योगमाय विस्तारा ❀ लीला कर रहि आप अपारा ।
वा लीला हित को अस कहही ❀ कहँ कैसे कब कितनी अहही ॥
यासों मत्स्यादिक अवतारा ❀ वामनादि अवतारहिं धारा ।
लीला करी जु तिन तनु माहीं ❀ गुह्य भेद को लख सक ताहीं ॥
आप अपन इच्छा अवतारा ❀ धार करत लीला विस्तारा ।
तहँ केवल द्वै हेतु प्रमाने ❀ दुष्ट हनन सन्तन दुख हाने ॥
पुन तुव लीला जो जन गावै ❀ गोपद सम इह भव तर जावै ।
जनु कह कृष्ण विरंची पाहीं ❀ मो अवतारन महिम जु आहीं २१०

दो०-है अचिन्त्य तुमने कही, लई मान मैं ताहि ।
किन्तु प्रपंच असत्य जब, किम सत भासत आहिं २१०

जिम नासै यह शंक समूला ❀ विधि भाखत वच तिहँ अनुकूला।
यह सम्पूर्ण जगत जो कहही ❀ तेहिं स्वरूप असत ही अहही ॥

---

१ एक रस रूप से रहने वाले । २ अदल बदल होने वाले । ३ जीव ।

यदि मिथ्या तौ दीखत कैसे ? ❀ कह विधि स्वप्न पदारथ जैसे।
किन्तु स्वप्न जिम मिथ्या रह्यऊ ❀ तिम यह जगतहु मिथ्या कह्यऊ॥
तौ भासत किम सत्य समाना ? ❀ तापै ब्रह्मा वचन बखाना।
जब लग नींद माहिं यह सोयो ❀ तब लग सुपन पदारथ जोयो॥
ताहिं सत्यवत मानत अहहीं ❀ जाग्रत भये असत तिहँ कहहीं।
तिम मति अस्त अहै जब ताईं ❀ जगत सत्य दीखै तब ताईं॥
बुद्धि अस्त को आशय रहही ❀ मोह नींद में सोयो अहही।
मोह नींद में चेत न लेशा ❀ सत्य असत्य न लख उर देशा॥२११

दो०—जगत असत दुख रूप पुन, दुख पै दुख आ जाय।
रहे आस सुख की सतत, किन्तु जीव नहिं पाय॥२११

यथा राख सुख की अभिलासा ❀ करत कर्म बहु विध सहुलासा।
किहँ जन पुत्र होत है नाहीं ❀ विविध देव पूजत सो आहीं॥
पुत्र प्राप्ति हित धर्म विगारे ❀ सर्वस वारे मनसा धारे।
जब तिहँ सुवन भयो घर माहीं ❀ बड़े बड़े उत्सव कर ताहीं॥
शिशुवय के दुख निज सुत केरे ❀ सहि लिय अहैं मनोर्थ घनेरे।
विद्या पठन हेतु पुन वाके ❀ कीनों घनों द्रव्य व्यय[1] ताके॥
पुत्र युवावय वारो भयऊ ❀ द्रव्य उपार्जन[2] योग्यहु कह्यऊ।
कियो विवाह परम उत्साहा ❀ हिये अपन राखी अस चाहा॥
अब हम दम्पति बूढ़े भयऊ ❀ इनके हेतु कष्ट बहु सह्यऊ।
बहु तो अब गृह कृत्य सम्हारे ❀ द्रव्योपार्जन सुत उर धारे॥२१२

१ खर्च। २ कमाने के।

दो०-हम द्वौ जन या जन्मको, फल जो सुख सो लेहिं ।
यावत कारज भार इन, माथे पै धर देहिं ॥२१२॥

यहँ तो ये तरंग उठ रहहीं ❀ वे कछु औरहि चिंतत अहहीं ।
जिँ आत्मज हित कष्ट महाना ❀ सहे आस पावन सुख नाना ॥
भयो विमुख दुख देन विचारे ❀ किय जु यतन सुख मनसा धारे ।
तिहँ श्रमही दुख फल उपजोयो ❀ जाते औरहु दुख अधिकायो ॥
याइ प्रकार धन यश अरु नारी ❀ इन पावन मन आसा धारी ।
आशय यह इनतें सुख पावौं ❀ अहो भाग्य अस कहँते लावौं ॥
जबै मिलैं तब दें दुख दूनों ❀ प्रथम सुखहुते करहीं सूनों ।
इम यावत जगकृति दुखदाई ❀ सुख इच्छा इन माहिं वृथाई ॥
या विध जग दुख रूप वखान्यो ❀ पुन मिथ्या स्वरूप है मान्यो ।
किन्तु नित्य सुख बोध स्वरूपा ❀ अहैं जु आप अनंत अनूपा२१२

दो०-तामैं यह जो जगत है, मायोद्भव अपि आहि ।
तदपि सत्य सम भासही, कारण यह तिहँ माहिं २१३

यथा कोइ इक भूपति होई ❀ पीतर को गहनों है जोई ।
निज शरीर धारण यदि करही ❀ को अपि पीतर को न उचरही ॥
निश्चय कंचन ही को मानैं ❀ रंचहु संशय हिय नहिं आनैं ।
तथा आप सच्चिद्घन जोई ❀ तामैं असतजगत सत सोई ॥

---

१ सत २ आनन्द ३ चित्त ४ माया करके उत्पन्न ५ मिथ्या ६ सत्य के समान प्रतीत होता है ।

कह विधि प्रभुप्रति तात्विक बानी ❀ भगवत रूप सत्य हिय मानी।
हे प्रभु एक सत्य हैं आपू ❀ विद्यमान त्रयकाल प्रतापू॥
अहैं सनातन आत्म स्वरूपा ❀ नित्य निरंजन आद्य अनूपा।
निज प्रकाश से आप प्रकासें ❀ सदा एकरस मोद विलासें॥
जन्म मृत्यु जे अहैं विकारा ❀ तिनतें रहित स्वरूप तुम्हारा।
तुम बिन पूर्ण अहैं नहिं कोई ❀ सच्चिद्घन इकरस तुम होई २१४

दो०-जेती संज्ञा पूर्ण की, जेते पूर्ण स्वरूप।
ते सब जिनतें पूर्ण हैं, अस तुम पूर्ण अनूप २१४

इह प्रकार को रूप तुम्हारो ❀ सम्यक् किहँ जन अहै निहारो।
किम देखे ? तहँ विधि अस कहहीं ❀ आत्म स्वरूप अनूप जु रहही॥
वाको आत्मपने से देखे ❀ सो अपि मुख्यपने सों पेखे।
यथा पुत्र तिय आदि निहारे ❀ आत्मपने सों, तिम न विचारे॥
आतमपन पुत्रादिक माहीं ❀ जो देखनों, गौण सो आहीं।
सकलात्मा पेखे सो ऐसे ❀ निज आतम को देखत जैसे॥
किहँ प्रकार जन याहि निहारे ❀ तहँ चतुरानन वचन उचारे।
श्रीगुरुरूप सूर्य सम अहहीं ❀ तिहँते ज्ञान चत्तु जन लहहीं॥
नैन होइ भल सूर्य न होई ❀ कछुहू न देख सकै जन कोई।
तिम भल शास्त्र ज्ञानमय नैना ❀ तदपि न दीखे आतम ऐनं।२१५

१ सिद्धान्त से भरी हुई २ अच्छे प्रकार ३ अर्थात् आत्माको ४ ध्यान ।

दो०-श्रीगुरु रविद्वारा लहै, अन्तर चक्षु प्रकास ।
तव विलोक सक अवस ते, सत्य स्वरूप विकास ॥२१५॥

अरु ते जूठो यह भवसागर ❀ तरत अहैं हे करुणा आगर ।
आतम को आतमपन सेती ❀ नहिं जानत, तासों भ्रम एती ॥
निखिल प्रपंच आत्मसे जाये ❀ ज्ञान भयेते वही विलाये ।
यथा प्रकाश कछुक जहँ अहहीं ❀ तिहँ थल रज्जु देख, अहि कहहीं ॥
सर्प निरख उर होवत जैसे ❀ तिहँ हिय अपि भय भयऊ तैसे ।
भय युत माग दीप तहँ लायो ❀ निरख जेवरी भय विनसायो ॥
या थल जिमि रस्सी के माहीं ❀ कहुँते अपि अहि आयो नाहीं ।
पुन जब दीपक तिहंथल लायो ❀ तबहु निकस सो नाहि पलायो ॥
केवल तिहँ भ्रम भयऊ जोऊ ❀ ताते है नहिं भासे दोऊ ।
तिम आतमते उदय न भयऊ ❀ यह सगरो प्रपंच जो रह्यऊ ॥

दो०-नहिं पुन लयहू होत है, केवल जो अज्ञान ।
तासों होय प्रतीत अस, दोउ न, जब ह्वै ज्ञान ॥२१६॥

भव बंधन अरु मोक्ष जु आहीं ❀ आतममें ते दोऊ नाहीं ।
किन्तु प्रतीत होत हैं दोऊ ❀ सो अज्ञानहि सें किल होऊ ॥
नित्य ऐकरस केवल आतम ❀ अरु अचिन्त्य परब्रह्म परातम ।
करत विवेचन या विधि जबही ❀ सत्य ज्ञान हिय होवै तबही ॥

१ भान होता है ।

ज्ञान भये आतम के माहीं ❀ बंध मोक्ष द्वौ दीखें नाहीं।
जिम रजनी अरु दिवस जु अहहीं ❀ दोउ प्रभाकर में नहिं रहहीं॥
किन्तु प्रतीत होत हैं ताहीं ❀ किये विचार दोउ तहँ नाहीं।
तिम जब सत्य ज्ञान हिय होई ❀ बंध मोक्ष आतम नहिं दोई॥
पर स्वरूप प्रभु आप जु अहहीं ❀ सर्वलोक अंतर में रहहीं।
तदपि दोष यावत तिन केरे ❀ छुइ नहिं सकें तुम्हें अस हेरे२१७

दो०-पालन पोषन करत हो, उन नियमन अनुसार।
अस जे आप परातमा, तिनको दियो विसार २१७

जीवातमही मान लियो है ❀ इह विधि युत अज्ञान हियो है।
अरु आतम जो है जीवातम ❀ तिहँ मान्यो है देह अनातम॥
फिर परमातम ढूँढ़त बाहर ❀ अहो येहि अज्ञान प्रबलतर।
जिम भूषण खोयो घर माहीं ❀ पुन तिहँ बाहर खोजत आहीं॥
सो कहु कब अरु कैसे पावै ❀ वृथाहि आपनी अवध गँवावै।
वा जस माला गरमें अहही ❀ पीठ ओर है गइ, है तहही॥
वक्ष ओर लख माला नाहीं ❀ कहे अहो मो माल जु आहीं।
कहुँ किहँ थल में गिर गइ सोई ❀ अस भ्रम ह्वै खोजत है जोई॥
कहो आन थलतें किम पावै ❀ वृथा समय तहँ अपन वितावै।
जब तिहँ अपर मनुज को कहही ❀ रे कहँ खोजत तुव गर अहही ११८

१ सूर्य

दो०-तव वो भाखत है तहां, पाई मैं अब माल।
पाइ कहां ते, पास रहि, यही अहै भ्रम जाल२१८

या मरकत मणि है किहँ पाहीं ❁ किन्तु तिहँ गुण जानत नाहीं।
इत उत भटकत है पुन सोऊ ❁ मानत है दरिद्र अपं ओऊ॥
तिम परमातम हैं जो आपू ❁ नहिं जानत तुव महत प्रतापू।
अतिहि निकट अपि दूरहि जानें ❁ भटकत वृथा महत दुखसाने॥
जब श्री गुरु तुव तत्त्व लखावें ❁ अरु गुण महिम रूप समझावें।
तव भल परमातम जो आपू ❁ तिहँ पावें जिहँ अमित प्रतापू॥
सन्त आतम खोजत तनु माहीं ❁ जड़ संघाते[२] त्याग कर ताहीं।
वह विधि विधि भाखत प्रभु पाहीं ❁ हे अनन्त प्रभु! विज्ञ[३] जु आहीं॥
चिज्जड़ रूप देह में तेऊ ❁ खोजत हैं आपुहि[१] को वेऊ।
अतत त्याग करहीं ते ताहीं ❁ अतत भाव भाखत यह आहीं२१९

दो०-परमातम सों भिन्न जो, जेतो जड़ संघात।
तिनें त्यागनों कहत हैं, अतत त्याग सुखदात२१९

आशय यह या तनु के माहीं ❁ चिज्जड़ मिश्रित वस्तू आहीं।
इनमें जड़ पदार्थ हैं जेते ❁ नहिं आतम नहिं आतम तेते॥
या विधि जान त्याग ते करहीं ❁ इक आतमहि पृथक हिय धरहीं।
आतम बिन जड़ वस्तु जेती ❁ जड़ही जान त्यागहीं तेती॥
यह साधन कर सकहीं संता ❁ दुहुन ज्ञान जिन हिये बसन्ता।
वस्तुत रूप न जाने जोऊ ❁ संग्रह त्याग न कर सक सोऊ॥

१ अपने को २ समूह ३ सत्य को जानने वाला।

यासों आतमरूप को ज्ञाना ❀ जड़ को रूप हिये जिहँ जाना।
चिज्जड़ मिश्रित तनुमें अहहीं ❀ ते चित जड़हिं पृथक कर सकहीं॥
यथा रज्जु में अहि भ्रम भयऊ ❀ रज्जु ज्ञान तिहँ समय न रह्यऊ।
यदि रस्सी को होवै ज्ञाना ❀ कबहु न अहि भ्रम है अस माना२२०

दो०-सर्प ज्ञान प्रथमै अहै, जासों रज्जू माहिं।
उपज्यो भ्रम भ्रमसों भये, भय आदिक जे आहिं२२०

तथा सुज्ञजन जे जग माहीं ❀ निज समीप थित रज्जु जु आहीं।
सर्प प्रतक्ष न दीखत अहही ❀ कहा ताहिं अहि है अस कहहीं॥
बिन जेवरी सर्प नहिं जानैं ❀ जानत जेउ सुज्ञ नहिं मानैं।
तिम जे विज्ञ मनुज जग माहीं ❀ आतम बिन जड़ वस्तु जु आहीं॥
तिनें न कबहू आतम मानें ❀ आतम माहिं सुदृढ़ रति ठानें।
अतत त्याग कर अस जे संता ❀ खोजत तुमही को भगवंता!॥
जनु प्रभु कह विरंचि के पाहीं ❀ प्रथमैं मो भक्ती जो आहीं।
वाकी मुक्तकंठ तुम गाई ❀ यथातथ्य महिमा अधिकाई॥
अब तो ज्ञान पंथ है जोऊ ❀ कहन लगो महिमा युत सोऊ।
तापै कह परमेष्ठी ताहीं ❀ तत्त्व समन्वित वच प्रभु पाहीं२२१

दो०-पूर्ण ज्ञान दृढ़ पाय भल, आतमनिष्ठहु होय।
तदपि भक्ति बिन आपको, कबहु न पावै कोय२२१

* इति श्रीकृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे द्वादश सोपान समाप्त *

देव नाम तुम्हरो है ताते ❀ तुम हो सर्व प्रकाशक जाते।
वा क्रीड़ति नित श्रीवन धामा ❀ तासों अपी देव है नामा ॥
आप युग्म पद पंकज जोऊ ❀ तिन प्रसाद लवसे अपि कोऊ।
है यदि अनुग्रहीत बड़भागी ❀ या विधको जो है अनुरागी ॥
सो तुव महिम तत्त्वको जानै ❀ आपुहि को सर्वस्व पछानै।
खोजतहू चिर अवसर आना ❀ को अपि नहिं समर्थ अस माना॥
महिम तत्त्व तुम्हरो दुर्ज्ञेया ❀ सहज सुलभ जिन होवत ज्ञेया।
तहँ कारण निश्चय इक अहही ❀ प्रभु तुव कृपा कटाक्षहि रहही॥
आन प्रकार समर्थ न होई ❀ भल कोटिन साधन कर कोई।
ताते किहुँ योनि में जावों ❀ याद पद्म तहँ तुम्हरे ध्यावों२२

दो०-या प्रकार अभिलाप निज, विधि अब करत प्रकास।
जानें अपनपै मुदित प्रभु, निरख मंद मृदुहास २२२

सर्व काम परिपूरक स्वामी ❀ वार वार पद पद्म नमामी।
भूरि भाग्य मेरो कब होई ❀ जनु कह प्रभु हे विधि सुन सोई॥
पारमेष्ठ्य पद अहे तुम्हारो ❀ शतप्रज्ञहु है नाम उचारो।
उत्पन करन सृष्टि तुव हाथा ❀ चतुर वेदवक्ता. सुरनाथा ॥
पुन अपि भूरि भाग्य तुम भाखो ❀ तो कहु कहा हिये अभिलाखो।
तापै कह विरंचि प्रभु पाहीं ❀ निश्चय भूरि भाग्य सो नाहीं॥

१ महानते महान।

नीके कर मैं देख्यो , अहही ❀ आप चरण आश्रित जे रहहीं ।
पारमेष्ठय पद आदिक जेई ❀ तृण सम जान न चाहत तेई ॥
विन तुव कृपा रंच चह नाहीं ❀ मोक्षहु की न आस मनमाहीं ।
आपहु अस भक्तन निज जानें ❀ प्राणहुते विनको प्रिय मानें २२३

दो०-धन्य धन्य पुन पुन अहैं, कहा कहौं इन भाग ।
भूरि भाग्य मो होय कब, कब ह्वै अस अनुराग २२३

या विधि मनुज कलेवर होऊ ❀ वा मृग आदि देह हो कोऊ ।
यह आग्रह मेरो है नाहीं ❀ जन्महुँ अमुक कायके माहीं ॥
जन्म होय किहँ योनिहुँ मेरो ❀ व्रजमें हों तुव चरणन चेरो ।
आप भक्तिते जो मैं हीनों ❀ ताते मुहिं असहायहि चीनों ॥
तासों तुव भक्तन को संगा ❀ पाय रँगों मैं उनके रंगा ।
सेवौं तुव पद पल्लव[1] जबही ❀ मानों भूरि भाग्य मैं तबही ॥
देव देहहुते बड़भागी ❀ जिहँ किहँ जन्मै[2],तुव अनुरागी ।
तुव अनुराग विना सुर देहा ❀ है मसान की निश्चय खेहा ॥
अहो धन्य अति व्रज गौ गोपीं ❀ त्रिभुवन प्रेमिनमें ते ओपीं[3] ।
सब प्रकार परिपूर्ण कृपाला ❀ तद्यपि व्रजकी गौ अरु वाला २२४

दो०-तिनको थन अमृत पियो, रुचिसों हिय हरषाय ।
जब मैं वत्सप वत्सगण, मति भ्रम गयो चुराय २२४

---

१ कमल दल २ जन्मा हुआ ३ शोभित हुई ।

याज्ञिक मनुज पूर्ण विद्वाना ❀ विविधं यज्ञ कर विधी विधाना ।
अवलगहू कर सकहीं नाहीं ❀ तृप्ति युक्त तिनको व्रज माहीं ॥
गौ गोपिन थन अमृत जोऊ ❀ भयो तृप्तिदायक अति सोऊ ।
यह सब प्रेम प्रशंस महाना ❀ प्रेमहि के वश तुम भगवाना ॥
रागात्मक भक्ती में ओपीं ❀ वात्सल प्रेमवती जे गोपीं ।
तिन प्रशंस चतुरानन कीनी ❀ पुन इन करत प्रशंस नवीनी ॥
जे रागात्मक भक्ती युक्ता ❀ सहप प्रेमधारे अनुरक्ता ।
श्रीनँदराय गोप व्रज माहीं ❀ जिनको वास निरन्तर आहीं ॥
अहोभाग्य तिनको किल अहही ❀ अहो भाग्य तिन पुन विधि कहही ।
पा थल विधि द्वै वार बखाना ❀ अहो भाग्य व्रजवासिन माना २२५

दो०–अतिहि हर्ष आश्चर्य में, अहो कह्योही जाय ।
किन्तु यहाँ है वेर कह, यह हिय भाव लखाय ॥२२५

इन व्रजवासिन की जु प्रशंसा ❀ कहा कहीं कह सकत न अंसा ।
व्रजवासी को भाव बखानों ❀ पशु पक्षी परियन्त प्रमानों ॥
यावत जड़ चेतन को अहही ❀ अहो भाग्यविधि इह विध कहही ।
तो पुन भाग्य नंद नृप केरो ❀ अरु तदीय गोपन को हेरो ॥
जे वात्सल आदिक संयुक्ता ❀ सबहि प्रकार अहैं अनुरक्ता ।
जिनको मित्र अहै साक्षाता ❀ परमानंद ब्रह्म विख्याता ॥

१ राजसूय अश्वमेध आदि २ देखो ।

पूर्ण सनातन श्रुति कह गायो ❀ अब लग श्रुतिहु दर्श नहिं पायो।
सत्य ज्ञान आनंद बखाना ❀ ब्रह्म स्वरूप वेद अस माना॥
ब्रह्म प्रतिष्ठा भूत कहायो ❀ कृष्ण, परम पद यही लखायो।
पूरण पद को भाव उचारा ❀ ब्रह्म स्वरूप जेउ अवतारा॥२२६॥

दो०–ते सब अंश कलादि हैं, पूर्ण कृष्ण भगवान्।
कृष्ण स्वयं भगवत अहैं, किय श्रीशुकहु बखान२२६

श्रीदामादि बाल ब्रज केरे ❀ अस जु ब्रह्म तिन मित्र महेरे[1]।
अहै सनातन पद जो कह्यऊ ❀ वाको भाव हिये अस रह्यऊ॥
श्रीदामादि मित्र सब काला ❀ याते नित्यसिद्ध ब्रजबाला।
इनको नित्यसिद्ध जो गायो ❀ तासों ब्रज यावत समुदायो॥
पशु पत्ती परियन्त बखाना ❀ नित्यसिद्ध ही कियो प्रमाना।
याते नित्यसिद्ध ब्रजवासी ❀ नित्यसिद्ध करुणाकोरासी॥
ताते कृष्ण सनातन मीता ❀ ब्रजवासिन, यह सुदृढ़ प्रतीता।
यथा नन्द प्रति गोपन कह्यऊ ❀ हम सब ब्रजवासी जे रह्यऊ॥
तिनकी प्रीति आप सुत माहीं ❀ है अनिवार सहज ही ताहीं।
यद्यपि यह बड़ ऊधम करही ❀ भवन आय गारीहु उचरही॥२२७॥

दो०–हमहूँ अनखावैं प्रकट, तदपि उठै हिय चाह।
कब हमरे गृह आवही, बढ़त रहै उत्साह॥२२७॥

---

[1] श्रीकृष्ण।

कहा वाल बूढ़े अरु नारी ❀ सबन प्रीति इनमें दृढ़ धारी।
यह स्वरूपजा[1] प्रीति हमारी ❀ तुव सुत में सहजही अपारी ॥
याको कारण हम नहिं जाना ❀ इन गोपन के वचन प्रमाना।
इनको कृष्ण माहिं है एहा ❀ स्वरूप से जो दृढ़तर नेहा ॥
कृष्णहु को व्रजवासिन माहीं ❀ अहै जु प्रेम छिप्यो सो नाहीं।
या प्रसंग को सार यही है ❀ स्वयं परम आनंद सही है ॥
तद्यपि व्रजवासिन से जोऊ ❀ अति आनन्दित चित में होऊ।
तथाहि परम मोद व्रज माहीं ❀ देवत व्रजवासिन को ताहीं ॥
जिम सत चित आनँद घनश्यामा ❀ तिम तत्रूप वसत व्रजधामा।
याही ते तिन मित्र सनातन ❀ कह्यो अहै या थल चतुरानन२२८

दो०-अहो भाग्य व्रज वसत जे, को महिमा सक गाय।
परंब्रह्म श्रीकृष्ण जिन, अहै मित्र सुखदाय ॥२२८॥

भूरि भाग्य व्रजवासी अहहीं ❀ किन्तु हमहुँ तिन संग जु रहहीं।
तासों हम सवहु बड़भागी ❀ यहि भाखत विधि हैं अनुरागी॥
अच्युत व्रजवासीन प्रशंसा ❀ है अचिन्त्य को कहि सक अंसा।
किन्तू हम एकादश देवा ❀ रुद्र इन्द्र आदी जु रहेवा ॥
व्रजवासिन जे इन्द्री अहहीं ❀ रहें अधिष्ठातासों तहहीं।
तासों भूरि भाग्य निज मानें ❀ वह विधि या थल ब्रह्म बखानें ॥
इन व्रजजनन इन्द्रि हैं जेती ❀ निश्चय पात्र पात्र हैं तेती।

१ स्वरूप से ही होने वाली अर्थात सहज ही।

हम सब इन इन्द्रिन के द्वारा ❀ तुव पद पंकज अति सुकुमारा ॥
तिहँ मधु पान करहिं हुलसाई ❀ या विधि जे इन्द्री समुदाई ।
तिहँ तिहँ इन्द्रि विषय जो अहहीं ❀ रूप रसादिक जे तुव रहहीं २२९

दो०-लेहिं स्वाद मादक महा, हे प्रभु कहे प्रकार ।
यातें बड़भागी हमहुँ, मानत हिये मँझार ॥२२९॥

या थल विधि एकादश देवा ❀ कह्यो अहै तिहँ है यह भेवा ।
द्व अश्लील इन्द्रि तज दयऊ ❀ चित्त अधिष्ठाता जा कह्यऊ ॥
वासुदेव संज्ञा तिहँ अहही ❀ प्रभुसों तिहँ अभेदता रहही ।
तासों ग्यारहँ इन्द्रिन सेती ❀ रस पीवत विधि कह्यऊ चेती ॥
अध्यातम सिद्धान्त जु आहीं ❀ विषय-भोग आतम में नाहीं ।
इन्द्रि अधिष्ठाता जे कह्यऊ ❀ कर्तापन तिनहीं में रह्यऊ ॥
तदपि जु ब्रह्मा रह मति माहीं ❀ नयनन वास सूर्य को आहीं ।
अहैं अधिष्ठाता इम जेते ❀ इन बिन यावत इन्द्री तेते ॥
कृष्णनिष्ठ जनके अपि जेऊ ❀ रूप रसादि न ग्रह सक तेऊ ।
इन्द्रि अधिष्ठाता जु बखानें ❀ तिन को कर्तापनों प्रमानें २३०

दो०-अध्यातम वादी वचन, अहैं जु कहे प्रकार ।
भोक्तापन अभिमान यदि, करहीं हम स्वीकार ॥२३०॥

तद्यपि कृष्ण प्रेम के माहीं ❀ अति उत्कंठित चित जिन आहीं ।
तिनिमें ब्रह्मादिक जे देवा ❀ निज कर्तापन मान रहेवा ॥

१ मल मूत्र त्यागने वाली २ बुद्धि ।

तासौं तिनको आनँद कारन ❀ कर्तापनेही कियो उचारन।
सो अपि प्राकृत तनु में माने ❀ अप्राकृत वपु में न प्रमाने ॥
भगवत परिकर प्राकृत नाहीं ❀ तन्मयपनों हेतु तहँ आहीं।
तो प्रपञ्चगत अमर बखानें ❀ ब्रह्मादिक जेते हैं मानें ॥
तिनको तहँ प्रवेश हो कैसे ❀ प्राकृत तनु तिन होवत जैसे।
अप्राकृत वपु इन्द्री अहहीं ❀ एक अधिष्ठाता प्रभु तहहीं ॥
वा मोहन माधुरी जु आहीं ❀ कवहु किहँ प्रकार अपि ताहीं।
भयो लाभ तासौं विधि कहही ❀ अहो भाग्य हमहूँ के अहहीं २३१

दो०--इन व्रजवासिन भाग्य बड़, अनुपम, नहिं किहँ आन।
हम दशहू दिकपाल जे, हमरो भाग्य महान ॥२३१॥

जनु कह कृष्ण कहो सो कैसे ❀ तापै विधि भाखत है ऐसे।
निज तर्जनी अंगुरी नैना ❀ अरु श्रवणन छुवाय कह वेना ॥
वत्स चरावन वस्ती बाहर ❀ निकसत हो जब हे छविसागर।
तब तुव पद सौन्दर्य स्वरूपा ❀ नाद सुरीला सुधा अनूपा ॥
नेत्रन अरु श्रोत्रन के द्वारा ❀ हमहुँ पियें प्रभु कहे प्रकारा।
हम इतनेहू ते बड़भागी ❀ मानत हैं निजको अनुरागी ॥
अहो भाग्य पुन पुन कहि इनको ❀ सच विधि सर्वकाल जिय जिनको
आप माहिं अनुरक्त महाना ❀ जिन सर्वस्व आपही माना ॥

१ गोलक, शक्ति, तत्त्व और देवता विषय ग्रहण करने में चारों का पद है, तो देवताओं को एक पद मिलता है २ स्वर।

तातें जगतैश्वर्य जु पायो ❀ सो अब रंचहु नाहिं सुहायो ।
त्याग करन हित मनसा कीनी ❀ निजकरसों जलअञ्जलि दीनी२२२

दो०-अब तो किहहुँ प्रकार से, व्रजवासिन पद धूर ।
पावौं अस अभिलास उर, सबविधि मंगल मूर ॥२३२॥

यहि निश्चय निजको थल याहीं ❀ भाखत हे विधि श्रीप्रभु पाहीं ।
भूरि भाग्य मैं मानौं तबही ❀ या विधि जन्म माहिं अरु अबही॥
यदि तुव कृपा कटाक्ष उदारा ❀ मो पै हो हे कृपाअगारा !
जनु कह कृष्ण कहा अभिलासा ❀ तापै विधि मकृदावन आसा ॥
इह श्री वृन्दावन के माहीं ❀ कोमल तृग दूर्वादि जु आहीं ।
इनमें मोर जन्म प्रभु होई ❀ तुव प्रिय सखादि व्रज बस जोई॥
ते निज मृदु पद राखैं मोपै ❀ अस सौभाग्य प्राप्त हो जोपै ।
तबही भूरिभाग्य निज मानौं ❀ कृत्य कृत्य आपन को जानौं ॥
तापै विधि प्रति प्रभु वच यहू ❀ अति दुर्लभ लालच तज देहू ।
हे विरंचि आपन अधिकारा ❀ कर प्रार्थन ताके अनुसारा॥२२३॥

दो०-कह विधि तौ गोकुल विषे, आप नगर के प्रान्त ।
मृदु तृणादि मैं जन्म मुहिं, देवहु हे श्रीकान्त ॥२३३॥

जासों व्रजजन चरनन धूरी ❀ मो अभिषेक होय मुद मूरी ।
जनु प्रभु कह व्रजवासिन केरी ❀ या विधि की प्रशंस किम टेरी ॥
अरु तुम जगतपूज्य जगकर्ता ❀ पुन परमेष्टी पद के धर्ता ।
किम साधारण जन पद धूरी ❀ इच्छत, दई लाज तज दूरी ॥

१ जलांजली अर्थात् जल हाथ में लेकर संकल्प कर दिया २ समीप ।

तापै विधि कह श्रीप्रभु-पाहीं ❁ ये यावत व्रजवासी आहीं
तिन जीवन उपाय तुम एकू ❁ सुपनहु माहिं अपर नहिं टेकू
तुव सौंदर्यपनो मनहारी ❁ मुरली धुनि आकर्षणकारी
मंद हसन आदिक जे अहहीं ❁ यहि जीवन उपाय जिन रहहीं।
बिन इनके जिन रंच न चैना ❁ होइँ अधिक आकुल उर ऐना
अहे असाधारण तुम माहीं ❁ महा प्रेम इन सबहिन ताहीं ॥२३

दो०-सबते इन उत्कर्ष जो, यहि कारण तिहँ माहिं।
निखिल क्रिया व्रज जननकी, आपुहि के हित आहिं

तासों श्रुति खोजत अब ताई ❁ इन पद रज, पावें नहिं राई।
किम नहिं इन पद रज में याचौं ❁ काहि लजहुँ, थल आन न राचौं॥
यही विनय अब तुव तट कहहूँ ❁ व्रजजनानुगतमत में अहहूँ।
ताते मग्न करौ मुहिं ताहीं ❁ रागानुगासुधानिधि माहीं॥
जिन पद रज लोभित में भयऊ ❁ आप निकट प्रार्थित में रह्यऊ।
वह पद रज पावों वा नाहीं ❁ उत्तर प्रकट न देवत आहीं॥
किन्तु आन कछु पूछत वाको ❁ उत्तर अवस देहु प्रभु ताको।
यहि विधि कहत कृष्ण के पाहीं ❁ ये जेते व्रजवासी आहीं॥
इनें कहा तुम देहु कृपाला ❁ यही प्रश्न मो हे नँदलाला!
जनु कह कृष्ण आप हो धाता ❁ सब वेदार्थ तत्त्व के ज्ञाता ॥२३५

दो०-स्वयं आप निज उर विषे, काहि न करौ विचार।
तापै ब्रह्मा कहत हैं, हमरो नहिं अधिकार ॥२३५॥

---

१ चतुराई।

मैं अरु शिव सनकादिक नारद ❀ अह सकल तत्वज्ञ विशारद ।
किन्तु चित्त उरझत है याहीं ❀ कछु नहिं सूझत हम हिय माहीं ॥
कारण यह तुम सब फल रूपा ❀ हम खोजत फल आन अनूपा ।
पावत नहिं किहुँ अवसर माहीं ❀ नहिं किहुँ देशहुमें को आहीं ॥
कारण यह जे साधन नाना ❀ तिन फल जे, तिन फल तुम माना ।
तुमते पर फल अपर न रह्यऊ ❀ सर्व फलात्मक आपहि कह्यऊ ॥
ते तुम इंन किय निज आधीना ❀ कहा रह्यो तुव तट, कछु चीना ।
जो दे कर ऋणते हो मुक्ता ❀ ताहित हम चित उरझन युक्ता ॥
जबु कह कृष्ण विरंची पाहीं ❀ कहो कहा कारण तिहँ माहीं ।
तापै विधि कह सुनहु कृपाला ❀ दै पमरी जु पूतना वाला ॥२३६॥

दो०—वाको मुक्ती तुम दई, कहा इनैं तुम देहु ।
कह प्रभु मुक्ती देहुँगो, विधि कह, उचित न एहु॥२३६

कह प्रभु सकुल मुक्ति मैं देहों ❀ या विधि ऋणते मुक्ती पैहों ॥
तापै विधि कह वकीहु पाई ❀ सकुल मुक्ति अस प्रकट लखाई ।
कैसो न्याय आपको अहही ❀ यामें हम मोहित चित रहही ॥
न्यायालय में जावे कोई ❀ दोषी, दोषयुक्त है जोई ॥
न्यायाधीश प्रथम तिहँ पाहीं ❀ पूछत है परिचयको ताहीं ।
जैसे नाम कर्म अरु जाती ❀ पुन व्यवसाय आदि संघाती ॥
ता पीछे पूछे तिहँ बयाना ❀ पुन निर्णय की कर सो रचना ।
तिम पूतना आइ तुव पाहीं ❀ न्यायाधीश आप जो आहीं ॥

१ कोर्ट २ जज ३ पहिचान ४ पेशा ५ बयान ६ फतवा ।

कहा न्याय कीनों तुम ताको ❁ कछु परिचय पूछयो हो वाको ।
नाम पूतना राक्षस जाती ❁ कर्म वालवृन्दन कर घाती २३७

दो०-अरु वाको व्यवसाय जो, रुधिर अशनही आहि ।
पुन आपुहि को मारनों, यहि इच्छा उर ताहि २३७

जिम को किहँ जन मारण चहही ❁ वाण प्रहार करत तनु तहहीं ।
किन्तु वृक्ष वा पाथर माहीं ❁ भयो प्रहार वच्यो नर ताहीं ॥
न्यायाधीश निकट ले जावें ❁ न्याय करन हित वचन सुनावें ।
तो जो न्यायधीश कहायो ❁ ताहिं यदा अस हिये दृढ़ायो ॥
मारनहारे मारन चाह्यो ❁ दैवयोग से यह वच पायो ।
भल्लहि प्रहार आन थल माहीं ❁ भयो तदपि यह दोषी आहीं ॥
अहै नियम मन मनसा जोई ❁ तदनुसार फल पावे सोई ।
जिम किहि अपि मन चह न बुराई ❁ दैवयोग से तिहँ है जाई ॥
तौ ताको फल ताहिं न होई ❁ कारण उन इच्छा नाहिं जोई ।
अरु जिहँ जिय किहँ मारन आसा ❁ तदनुसार को किये प्रयासा२३८

दो०-दैवयोग से तिहँ मनुज, रक्षा भइ थल ताहिं ।
तौ तिहँ मनसा फल अवस, मिलत न संशय आहि २३८

सो०-अस विचार मन माहिं, न्यायाधीश जु दोषिको ।
उचित दंड दें ताहिं, नीती पथ अस कहत है ॥४४॥

१ भोजन ।

मैं अरु शिव सनकादिक नारद ❁ अह सकल तत्त्वज्ञ विशारद ।
किन्तु चित्त उरझत है याहीं ❁ कछु नहिं सूझत हम हिय माहीं ॥
कारण यह तुम सब फल रूपा ❁ हम खोजत फल आन अनूपा ।
पावत नहिं किहँ अवसर माहीं ❁ नहिं किहँ देशहुमें को आहीं ॥
कारण यह जे साधन नाना ❁ तिन फल जे, तिन फल तुम माना ।
तुमतें पर फल अपर न रह्यऊ ❁ सर्व फलात्मक आपहि कह्यऊ ॥
ते तुम इन किय निज आधीना ❁ कहा रह्यो तुव तट, कछु चीना ।
जो देकर ऋणते हो मुक्ता ❁ ताहित हम चित उरझन युक्ता ॥
जनु कह कृष्ण विरंची पाहीं ❁ कहो कहा कारण तिहँ माहीं ।
तापै विधि कह सुनहु कृपाला ❁ द्वेपभरी जु पूतना वाला ॥२२६॥

दो०—वाको मुक्ती तुम दई, कहा इनैं तुम देहु ।
कह प्रभु मुक्ती देहुँगो, विधि कह, उचित न एहु॥२३६

कह प्रभु सकुल मुक्ति मैं देहों ❁ या विधि ऋणते मुक्ती पैहों ॥
तापै विधि कह वकीहु पाई ❁ सकुल मुकित अस प्रकट लखाई ।
कैसो न्याय आपको अहहीं ❁ यामें हम मोहित चित रहहीं ॥
न्यायालय[१] में जावे कोई ❁ दोषी, दोषयुक्त है जोई ॥
न्यायाधीश[२] प्रथम तिहँ पाहीं ❁ पूछत है परिचय[३]को ताहीं ।
जैसे नाम कर्म अरु जाती ❁ पुन व्यवसाय[४] आदि संघाती ॥
ता पीछे पूछे तिहँ वचैना[५] ❁ पुन निर्णय[६] की कर सो रचना ।
तिम पूतना आइ तुव पाहीं ❁ न्यायाधीश आप जो आहीं ॥

१ कोर्ट २ जज ३ पहिचान ४ पेशा ५ बयान ६ फतवा ।

कहा न्याय कीनों तुम ताको ❀ कछु परिचय पूछयो हो वाको ।
नाम पूतना राक्षस जाती ❀ कर्म बालवृन्दन कर घाती २३७

दो०-अरु वाको व्यवसाय जो, रुधिर अशन[1] ही आहि ।
पुन आपुहि को मारनों, यहि इच्छा उर ताहि २३७

जिम को किहँ जन मारण चहही ❀ बाण प्रहार करत तनु तहहीं ।
किन्तु वृक्ष वा पाथर माहीं ❀ भयो प्रहार बच्यो नर ताहीं ॥
न्यायाधीश निकट ले जावें ❀ न्याय करन हित वचन सुनावें ।
तौ जो न्यायधीश कहायो ❀ ताहिं यदा अस हिये दृढ़ायो ॥
मारनहारे मारन चाह्यो ❀ दैवयोग से यह वच पायो ।
भलहि प्रहार आन थल मार्हीं ❀ भयो तदपि यह दोषी आहीं ॥
अहे नियम मन मनसा जोई ❀ तदनुसार फल पावै सोई ।
जिम किहि अपि मन चह न बुराई ❀ दैवयोग से तिहँ है जाई ॥
तौ ताको फल ताहिं न होई ❀ कारण उन इच्छा नहिं जोई ।
अरु जिहँ जिय किहँ मारन आसा ❀ तदनुसार को कियो प्रयासा २३८

दो०-दैवयोग से तिहँ मनुज, रच्छा भइ थल ताहिं ।
तौ तिहँ मनसा फल अवस, मिलत न संशय आहि २३८

सो०-अस विचार मन माहिं, न्यायाधीश जु दोपिको ।
उचित दंड दें ताहिं, नीती पथ अस कहत है ॥४४॥

---

१ भोजन ।

हां यदि शुभ इच्छाहू होई ❀ तौ अपि शुभ फल पावै सोई।
जिम मृगया हित कों वन माहीं ❀ वाण चलावत किन्तू ताहीं ॥
किँ अपि मनुज देह में लागे ❀ जासों मरणगर्ताको पागे।
न्यायाधीश न्याय यदि करही ❀ तौ तिहँ वचन पूछ अनुसरही ॥
यदि तिहं मन मनसा जन मारन ❀ नहीं सिद्ध है किंईं अपि कारन।
वाण दैववश लाग्यो अहही ❀ जाते मर्यो मनुज थल तहही ॥
तौ मृगयाबारेको नाहीं ❀ मानत दोष कछुहु उर माहीं।
इन पूतना मनोरथ जोऊ ❀ कहँते अपी छिप्यो नहिं सोऊ॥
केवल तुम्हें मारने काजा ❀ आप निकट आई तज लाजा।
वाको सकुल मुक्ति तुम देवौ ❀ वाही विधि व्रजवासिन सेवौ २३९

दो०—ताहित मोहित चित भयो, या प्रकार को न्याय।
देख्यो सुन्यो न कहुँ कबहुँ, आपुहि दियो दिखाय २३९

इति श्रीकृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे त्रयोदश सोपान समाप्त।

जनु कह कृष्ण विरंची पाहीं ❀ यावत व्रजवासी जे आहीं।
तिने अधिक फल देवन भाखौ ❀ तामें हेतु कहा तुम राखौ ॥
कह विधि व्रजजन धन तन प्राना ❀ सुत गृह आदि आप हित माना।
जिम किहँ सदन उतर मुख अहही ❀ शिशिर ऋतु सीरक वहु रहही ॥
ठंडीसी वायू वहु आवै ❀ अजिर[1] माहिं को बैठ न पावै।
गृहवासिन मन यह अभिलासा ❀ अहो नंद नंदन छविरासा ॥

---

१ आंगन।

प्रातहि अमुक भवन में जावे ❀ धूप सिदौसी तिहँ थल आवे ।
अस यदि पूर्व ओर घर होई ❀ प्रात धूप आवे यहँ जोई ॥
तौ हमरेहू भवन मँझारा ❀ प्राणपियारो नंद दुलारा ।
प्रातहि यहां सखन के संगा ❀ आवै, पावे हिये उमंगा ॥२४०॥

दो०-इम किँह व्रजवासी अजिर, यदि अति छोटो आहि।
बड़ो करावन आस ह्वै, आप हेतु तिहँ माहिं ॥२४०॥

अहो वयस्यन संग सिधावे ❀ तव यह आंगन अति सकँरावे।
तासों खेल जु खेलत आहीं ❀ तामें मोहन हुलसत नाहीं ॥
याको अब विस्तृत करवावौं ❀ इन सुखते मैं वड़ सुख पावौं ।
या विधि व्रजवासिन के जेते ❀ अहँ निकेत आप हित तेते ॥
अपनो सुख रंचहु चहँ नाहीं ❀ आपुहिको सुख तिन सुख आहीं।
अरु जिनको धनहू तुव हेतू ❀ निज सुख सुपनहु चहँ न जेतू ॥
यही तरंग उठे उर ताहीं ❀ जाय आज मथुराके माहीं ।
रत्न जटित मुरली मुठ हेमा ❀ लावौं मैं बनाय युत प्रेमा ॥
अहो जड़ाऊ कुंडल लावौं ❀ लाय लाल को मैं पहिरावौं ।
या विध जिहँ व्रजवासी पाहीं ❀ जो धन सो तुव हितही आहीं २४१

दो०-बहु मूल्य भूषण विविध, विविध वस्त्र बहुमूल ।
लावत पहरावत मुदित, तुम्हरे रुचि अनुकूल २४१

१ सवेरे ही २ सकरो हो जाय अर्थात् छोटो हो जाय ।

या प्रकार धन खर्चन आसा ❀ मो अपि तुव सुखकी अभिलासा।
इम तिनको परिकर है जेतो ❀ सुहृद सखा बंधूगण तेतो ॥
आप साथ तिनको यदि देखें ❀ आप मोदमें मुदितहु पेखें।
तो तिन हिये हर्ष बहु होई ❀ या विध सुहृदहु तुवहित जोई ॥
कहा कहौं ब्रजवासिन प्रेमा ❀ चिंतत प्रेम होत प्रद खेमा।
ब्रजवासिन की अहैं जु वामा ❀ आपहुको सुख चह उर धामा ॥
या विध हिये तरंग उठावैं ❀ माखन नंद सुवन को भावै।
नीके प्रकार दूध औटावौं ❀ पुन वाहीते दही जमावौं ॥
प्रातहि ताहिं विलोय निकासौं ❀ सद माखन तव हिये हुलासौं।
कारण यह नंद नंद पियारो ❀ नैनन तारो जिय आधारो २४२

दो०-प्रातहि सद माखन चहै, अस न होय सो आय।
लौट जाय अस चिन्तवन, करत हिये हुलसाय २४२

सो०-दधी विलोवत वाम, हिये आस कब आवही।
देउँ माखन प्रति श्याम, बल बल जावौं निरखछवि ४५

किहँके मन अस उठत विचारा ❀ माखन चोरी नंद दुलारा।
करत मुदित चित होवत अहही ❀ अहो भवन मेरो जो रहही ॥
तहँ सुठ माखन छींके राखौं ❀ चोरी करे लाल अभिलाखौं।
छिपी भई निज नैनन देखौं ❀ वह मोहन माधुरी जु पेखौं ॥
वार वार जावौं वलिहारी ❀ ब्रजवनिता इम मोद अपारी।
नारिन अस सनेह तुव माहीं ❀ निरख निरख तिनपति हुलसाहीं॥

नइ दुलहिन यदि घरमें आई ❀ तिहँ उर प्रेम न देत दिखाई ।
तौ वाही को पति अस कहही ❀ मोर प्राणप्रिय मोहन अहही ॥
वाके सुखमें मैं सुख मानौं ❀ यह मो हिय को भाव पछानौं ।
ताते यथा आन ब्रजनारी ❀ प्रेमवती है लाल मँझारी ॥२४३॥

दो०-तथा प्रेम तुमहू अपी, नंद सुवन के माहिं ।
राख सदा आज्ञा अहै, व्रज सर्वस यहि आहिं २४३

सो०-सहजै कर्षत आहिं, हम ब्रजवासिनको हियो ।
अस कहुँ देखो नाहिं, जस है मोहन माधुरी ॥४६॥

जिनके भवन अहैं नहिं नारी ❀ ते पछतावें हिये मँझारी ।
अहो मोर घर वामा नाहीं ❀ दही जमाय विलोवे ताहीं ॥
जो माखन चाखन हित लाला ❀ आय आय दें मोद रसाला ।
जग सुख जिन सुपनहु में नाहीं ❀ अहैं सुखी तुम्हरे सुख माहीं ॥
या विध ब्रजवासिन की नारी ❀ आपुहि के सुख हेतु विचारी ।
स्वयं निजहु को अर्पण कीनों ❀ आपुहि को निज सर्वस चीनों ॥
यही रहे तिन हिये विचारा ❀ पलहु न विछुरें नंदकुमारा ।
वांको नेकहु सुख यदि होई ❀ करें निछावर निज तनु जोई ॥
वड़े भाग्य या ब्रज वपु पायो ❀ या विन अपर कछुहु न सुहायो ।
यदि रुजवश शरीर किहँ अहही ❀ आप साथ तादिन नहिं रहही२४४

दो०-तो निज तनुके कष्ट से, कष्टित रंचहु नाहिं ।
आप विरहको कष्ट तिन, को कह सकही ताहिं २४४

अहो आज दिन व्यर्थहि गयऊ ❀ जो मोहन को दरस न भयऊ।
हमको पलकान्तर अपि जोऊ ❀ अकथ दुःखदायक ही होऊ ॥
पुना आज दिन यह मो देहा ❀ मोहन अर्थ न लाग्यो एहा।
वड़भागी निश्चय हैं तेऊ ❀ श्याम संग वन में गे जेऊ ॥
या विध निज तनहू तिन केरो ❀ आपुहि के कारण है हेरो।
अरु व्रजवासिन के सुत जेऊ ❀ सहजहि तुव सुख कारण तेऊ ॥
यथा विपिन में वत्सन वृन्दा ❀ जाउ चरावन हे व्रज चन्दा।
तव तुव साथ चलें वन माहीं ❀ विविध खेल खेलें ते ताहीं ॥
आप रुचीमें निज रुचि मानें ❀ तुव प्रसन्नता निजकी जानें।
जिनके सुवन आपके साथा ❀ गवनत वनमें हे व्रजनाथा २४७

दो०-तिन व्रजवासिन हिय हरष, होवत अहै महान।
सहज प्रीति व्रज जनन इम, आपुहि माहिं अमान २४५

किन्तु जिनें आत्मज हैं नाहीं ❀ तिनके हिय तरंग अस आहीं।
अहो सुवन मो एकहु होतो ❀ मिल मोहन प्रमोद बहु जोतो ॥
वत्स चरावन मोहन संगा ❀ जावत खेलत सहित उमंगा।
जिहँ विलोक है मुदित कन्हाई ❀ तव होतो मुहिं मोद महाई ॥
या विध व्रजवासिन सुत जेऊ ❀ आपुहि के हित अहहीं नेऊ।
प्राणहु आप हेत इन अहहीं ❀ प्राणहुते तुम्हरो सुख चहहीं ॥

१ नाग रहित।

आप तनक दुखते इन प्राना ❀ आशु होइँ व्याकुल अप्रमाना ।
ताते प्राणहु व्रजजन केरे ❀ अहें आप हित निश्चय हेरे ॥
अरु इन अन्तःकरण मँझारा ❀ यावत उठत अहें जु विचारा ।
ते सब आप सम्बंधी रहहीं ❀ नहिं संकल्प आन तिन अहहीं २४६

दो०-ताते इन आशय अपी, आपुहि के हित आहिं ।
विना आप इनके कछू, रंचहु प्रियपन नाहिं २४६

जिन व्रजवासिन अस उर माना ❀ धाम द्रव्य आतम अरु प्राना ।
सुहृद प्रिया सुत आशय जेते ❀ आपुहि हेतु अहें सब तेते ॥
आपुहि को सर्वस पहिचानें ❀ आप विना रंचहु नहिं जानें ।
जब मुक्ती पूतन को दीनी ❀ सोउ सकुल सद्गति तिहँ कीनी ॥
तौ तुम व्रजवासिन का देहो ❀ किम इन ऋणते छूटन पैहो ।
अस विचार मोहित चित होई ❀ कछुहु न सूझत है हिय जोई ॥
अधिक मुक्ति ते तुम्हरे पासा ❀ अहै कहा कहु पुरक आसा ।
मुक्ती आप चरन की दासी ❀ इन पद रजकी स्वयं उपासी ॥
केचित वीतराग[1] सन्यासी ❀ कहत गृहस्थ अहें व्रजवासी ।
सुत तिय आदि जाल संसारा ❀ फसे भये ता माहिं विचारा २४७

दो०-तापै ब्रह्मा भाखही, अहै सत्यही एहु ।
कहा कहौं गाथा प्रभू, इन व्रजवासिन जेहु॥२४७॥

---

१ प्रेमशून्य ।

जिन व्रजवासिन धन तन प्राना ❀ धाम आदि सब तुव हित माना।
लक्षित तुव लक्षण सुत जिनके ❀ त्रियादि तुव भक्ती युत तिनके ॥
अहैं गृहस्थ अवस व्रजवासी ❀ इन समता की को कर आसी।
किन्तु अपर देशहु के वासी ❀ आप चरण के अहैं उपासी ॥
ते गृहस्थ आश्रम अपि रहहीं ❀ सन्यासी उन समहु न अहहीं।
यहि सिद्धान्त कहत विधि याहीं ❀ करुणानिधि नँदनंदन पाहीं ॥
हे प्रभु जीवनिष्ठ जो रहही ❀ ज्ञानानंद महाधन अहही।
वाको राग द्वेष आसक्ती ❀ महाचोर, चोरी अनुरक्ती ॥
ते निज बल चुराय सब लेहीं ❀ जीवहिं मोद शून्यकर देहीं।
पाछे बुद्धि जीवको ताहीं ❀ कारागार गृहस्थ जु आहीं२४८

दो०-जामें कर्महि को अहै, पूर्णतया अधिकार।
मोह निगड़सों बाँधके, राखें ताहिं मँझार ॥२४८॥

जब लग तुव भक्तन के संगा ❀ रंगो न जन भक्ती के रंगा।
तब लग ही रागादिक चोरा ❀ ज्ञान मोद धन हर बरजोरा ॥
भयो भक्त जब आपुहि केरो ❀ तब अस होवत नैनन हेरो।
राग होय तुव भक्तन माहीं ❀ अरु जो द्वेष कह्यो थल ताहीं॥
भक्ति विरोधक वस्तु मँझारा ❀ होय द्वेष जो है हितकारा।
अरु जो अभिनिवेश है सोऊ ❀ आप माहिं दृढ़तासों होऊ ॥

१ जंजीर २ आसक्ता।

ये तीनों जु प्रथम रह चोरा ❀ जीव प्रमोद हरत बरजोरा ।
तेई अब तीनों अनुकूला ❀ भई नष्ट तिन गति प्रतिकूला ॥
प्रत्युत आप निष्ठ हैं जेऊ ❀ ज्ञानानन्दादिक रह तेऊ ।
सहजहिं लाय जीव में धरहीं ❀ औरहु भक्ति सुदृढ़ तिहिं करहीं ॥

दो०-आप भक्त सहकार इम, करहीं नित उपकार ।
असं गृहस्थ तुव भक्त जे, हैं तुम्हरे आधार ॥२४९॥

है गृहस्थ आश्रम भद शूला ❀ हित अनहित कर्मन को मूला ।
तातें कारागार समाना ❀ तदपि जु तहँ तुव भक्त प्रमाना ॥
तिन हित सो गृहस्थ सुख मूला ❀ नासत मायाकृत सब शूला ।
कारण तिन धन संतति प्राना ❀ आदि सबहि तुव हेतु प्रमाना ॥
जासों तुव परिचर्या[1] कीर्तन ❀ आदि सकल कर सकहीं साधन ।
जिन साधन भवनिधि तर जावें ❀ तुम्हरो नित्य धाम ते पावें ॥
या विध मोह विषय अपि जोऊ ❀ आप भक्त में आवे सोऊ ।
तुव प्रेमानुभाव के रूपा ❀ मोह होय जो अहै अनूपा ॥
अव कहु अस गृहस्थ तुव भक्ता ❀ निज सर्वससों जे अनुरक्ता ।
तिन समान किय है सन्यासी ❀ नहिं कदापि निश्चय छविरासी ।

दो०-इह अथाह भवसिन्धु में, कामादिक पट आहिं ।
मगर सदृश ते जीवको, नोंच नोंचके खाहिं २५०

१ सेवाकार्य ।

विना नाव भवसिन्धु अथाहा ❁ ताहि पार होवन रख चाहा ।
महत कष्टसे हों भवपारा ❁ या प्रकार तिन मुक्ति उचारा ॥
अस मो सुवन जु सनत कुमारा ❁ यह सिद्धान्त कह्यो सु विचारा ।
इन सन्यांसिन तें तुव भक्ता ❁ देशान्तर थित जे अनुरक्ता ॥
यदपि गृहस्थ तदपि ते अहहीं ❁ परम अधिक, यह मो मत रहही ।
पुन तिनतें ब्रजवासी जेऊ ❁ अधिक सहस गुण अहहीं तेऊ ॥
तहँ कारण व्रजवासिन प्रेमा ❁ सुनतहिं उपज प्रेम यह नेमा ।
जिन तुम पूर्ण ब्रह्म साक्षाता ❁ पुत्रादिक स्वरूप के नाता ॥
सबहि प्रकार कियो स्वाधीना ❁ नैनन निरख हिये दृढ़ कीना ।
कहत कृष्ण जनु सुन हे धाता ❁ मैं जो पूर्ण ब्रह्म साक्षाता २५१

दो०-मेरो सुतादि भाव जो, वस्तुत नहिं, के भाख[1] ।
कह विधि सत्यहि भ्रान्त ते, कहुँ विस्तृत वहि सास[2]

आप प्रपञ्चातीत प्रमाना ❁ तदपि प्रपञ्चस्थित हो भानां ॥
यही विडंबन अहै तुम्हारो ❁ तहँ कारण यह अहै उचारो ।
जिम प्राकृत पुत्रादिक आहीं ❁ प्राकृत पितु आदिक के माहीं ।
चेष्टा करत अहैं तिम आपू ❁ चेष्टा करत रहत निष्पापू ॥
किन्तु यथा तिन या जग माहीं ❁ पितु पुत्रादि भाव जे आहीं ।
ते वस्तुत साचे नहिं माने ❁ तथा आपके नाहिं प्रमाने ॥

१ वार्ता २ भासते ।

कारण यह तुम्हरो जो रूपा ❀ निष्प्रपंचमय अहै अनूपा ।
ताते वस्तुत सत्यहि अहही ❀ तासों लीला अपि नित रहही ॥
याको यह सिद्धान्त बखाना ❀ तुमहिं प्रपंचातीत प्रमाना ।
प्राकृत पितु पुत्रादि समाना ❀ चेष्टा करत होत जो भाना २५२

दो०-सो प्रपंच अनुकरण है, येहि विडंबन आहि ।
काहे करहुँ विडंबना, कह जनु प्रभु विधि पाहिं२५२।

इति श्रीकृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे चतुर्दश सोपान समाप्त ।

कह विधि प्रणत जु भक्तन वृन्दा ❀ विविधि भावसों चह आनंदा ।
तिन तिन भक्त भाव अनुसारा ❀ करत आप लीला विस्तारा ॥
जासों तुव लीला को स्वादू ❀ भक्त पाय हिय लहैं प्रसादू ।
प्रकट पुहुमिमें लीला करहीं ❀ गुप्त हेतु ता माहिं उचरहीं ॥
है जु ब्रह्म आनन्द महाई ❀ ज्ञानी अनुभव करत सदाई ।
अरु विकुण्ठ लीला आनन्दा ❀ पावत हैं जो भक्तन वृन्दा ॥
इनतें उत्तम अवनि मँझारा ❀ लीलानंद करन विस्तारा ।
चेष्टा करत आप प्रभु ऐसे ❀ कर चेष्टा प्राकृत नर जैसे ॥
अहै प्रकाश जेहिं थल माहीं ❀ तहँ दीपक अति सोहत नाहीं ।
हीरा अति न सुहावत आहीं ❀ श्वेतरजत भाजन के माहीं२५३

१ प्रसन्नता २ चांदी ।

सो० ताते विधि युत लाज, अरु निर्वेद सहित कहत ।
अहो सुनो व्रजराज, हिय को भाव करहुँ प्रकट४७

अब पल भर अपि या थल माहीं ❀ टाड़ो रहन योग्य मैं नाहीं ।
तासों रजो गुणी जस अहहूं ❀ तम रजमय सतलोकहि रहहूं ॥
अस आज्ञा अब देवहु स्वामी ❀ सर्व चित्त आकर्षक नामी ।
यद्यपि चित कर्षत व्रज ओरा ❀ आप चरण में कियो निहोरा ॥
भूरि भाग्य तबही मैं मानौं ❀ व्रज में जन्म होय जब जानौं ।
यह मो विनय श्रवण कर काना ❀ इंगित[1] सों अपि कछु न बखाना ॥
तासों कहा करौं वस नाहीं ❀ कारण मैं दोषी तौ आहीं ।
जोउ पुलिन भोजन के काला ❀ अंतराय किय हे नंदलाला ॥
भयो आप लीला प्रतिकूला ❀ तासों कृपा न तुव मुद मूला ।
श्रीमुख वचनामृतको लेशा ❀ अपि नाहिं प्राप्त भयो उर[2] देशा२५७

दो०-ता कारण अब शीघ्र ही, जावौं मैं निज गेह ।
आपहु इन वछरान को, तृण चराय सुख देहु२५७

पुलिन माहिं मिल सखा पियारे ❀ भोजन कीजै मुदिता धारे ।
तहँ आपुस में हँसो हँसावो ❀ या विध कौतुक विविध रचावो ॥
पुन भोजन लीला अवशेषा[3] ❀ करो कृपानिधि नटवर वेषा ।
मैं पुन पुन प्रभु कहा जनावों ❀ अब तो आप पाहिं अस गावों ॥

१ इशारे सो २ हृदय स्थान में ३ समाप्ति ।

हम सबहिन के मन वच कर्मा ❀ जो वैभव है वाको मर्मा।
आपुहि जानों मैं नहिं जानों ❀ जगन्नाथ आपुहि को मानों॥
कहा कहों या जग की गाथा ❀ आप अनंत अंड के नाथा।
तासों अतिहि क्षुद्र जग येही ❀ आपुहि को है,सत वच एही॥
यहं जग आपुहि को है जाते ❀ अर्पण करत आप प्रति ताते।
अब मो योग्य जु है अभिलासा ❀ तथा करो,ठाड़ो यह दासा २५८

दो०-मो अपराधी को यदपि, श्रीमुख कहो न वाक।
निज नैनन ही सों तदपि,इंगित करहिं मनाक२५८

करुणामय अवलोकन जोऊ ❀ है साक्षात सुधा-सम सोऊ।
केवल सकरुण नैन निहारो ❀ यहि अमृत पीवों जु तुम्हारो॥
इन अहार मो प्राणन रक्षा ❀ होय कल्प परियन्त प्रतक्षा।
या विध मो जीवन है जाई ❀ अस हियधर,विधि कह शिरनाई॥
यादव कुल जो कंज समाना ❀ तिनको देवहु प्रीति महाना।
यही प्रफुल्लितपन तिन रह्यऊ ❀ यासों रवि सम आपुहि रह्यऊ॥
मैं अपि कमलात्मज हूँ जाते ❀ करो प्रफुल्लित मुहिं अपि ताते।
मुनि अरु अमर वृंद जे अहहीं ❀ यावत खग जे श्रीवन रहहीं॥
अरु गोगण सब उदधि समाना ❀ तिनें वृद्धिकर शशिसम माना।
जो पाखंड धर्म भुवि माहीं ❀ गहर अंधकार सम आहीं २५९

[1] थोरासा।

दो०-वाको अपन प्रकाशते, दूर करत हो आप ।
तातें रवि शशि दहन सम, तुम्हरो अमित प्रताप २५९

जब पाखंड ध्वंस कर आपू ❀ तौ मो विनय सुनो निष्पापू ।
मो छल इच्छा लक्षण जोऊ ❀ है पाखंड हरहु तुम सोऊ ॥
करो कृपा मो पर थल याहीं ❀ जासों पुन इम करहूँ नाहीं ।
भुवि राक्षस अघ आदिक रहाऊ ❀ द्रोही, तदपि सुगति तुम दयऊ॥
तुमते सद्गति द्रोहिन पाई ❀ मानो मुहिं अपि द्रोहि महाई ।
जो तुव वत्स वृंद सख वृंदा ❀ अंतराय किय तिन आनंदा ॥
यदपि आपको द्रोही भयऊ ❀ किन्तु शरण में तुम्हरी लयऊ।
ता कारण अब करुणा कीजे ❀ कही विनय मो उर धर लीजे ॥
हसित वदन निज स्वामी देखे ❀ वा निजपे तिहँ करुणा पेखे ।
तबहि दास राखत है चाहा ❀ निज जियमें जीवन उत्साहा२६०

दो०-किन्तु स्वामी वदन को, देखे दास उदास ।
तौ निज प्राणन आसको, पोषत नहिं सहुलास २६०

हाथ वेंत गुंजा गर माहीं ❀ मोर पिच्छ माथे पै आहीं ।
या विधिको जु आप शृंगारा ❀ वत्स चरावत विपिन मँझारा ॥
गोप वालकन सम वन माहीं ❀ खेलत हँसत रहे तुम ताहीं ।
जासों महामहेश्वर आपू ❀ अखिल अण्ड तुम्हरोहि प्रतापू ॥
अस जे आप, विलोक्यो ताहीं ❀ गोप वालवत तिहँ वन माहीं ।
यह मो प्रभुको अनुचित अहही ❀ अस शृंगार देह धर रहही ॥

कारण पूर्व प्रकाशित ज्ञाना, ❀ रह्यो न मो उर हे भगवाना ।
यावत वस्तु अहैं व्रज माहीं ❀ निश्चय चिन्मयही ते आहीं ॥
ताको प्राकृतवत मैं मान्यो ❀ यहि अपराध हिये निज जान्यो ।
ताते मै प्रसन्न अब करिहौं ❀ निज अपराध दोपको हरिहौं २६१

दो०-अस मन माहिं विचार कर, कह श्रीप्रभुके पाहिं ।
तुम्हरे गुंजादिक जिते, आक वृक्षलग आहिं २६१

यदपि आक के पुष्प जु आही ❀ आप योग्य निश्चय ते नाहीं ।
तदपि जु है व्रजमें तिहँ वासा ❀ ताहित वंदन योग्य प्रकासा ॥
हे मो पूज्य, आपके साथा ❀ इन सबहिन को नावहुँ माथा ।
कह नारद या विधि चतुरानन ❀ कर भगवत की बहु विध प्रार्थन॥
वंदन किय युग चरणन माहीं ❀ करकें तीन परिक्रम ताहीं ।
अपन धाम परमेष्ठी गयऊ ❀ यहि अभीष्ट श्रीहरि को रह्यऊ॥
कारण यह विधि उर अभिलासा ❀ यहीं हतौ हो व्रज में वासा ।
किन्तु न जान ताहिं अधिकारी ❀ भेज्यो तिहँ सतलोक मँझारी॥
भाव यही विधि पद अधिकारा ❀ सृष्टी कर्ता जोउ निहारा ।
यदि सहसा विधि तजही ताहीं ❀ जग रचना असिद्ध है जाहीं२६

दो०-कारण यह जिहँ पद विषे, को अधिकारी होइ ॥
तिहँ पद अधिकारी अपर, आवे, तज सक सोइ२६२

१ इन्द्रा २ अतिशीघ्र ही ।

अहै न्याय यह ताहित ताहीं ❀ जनु कह कृष्ण विरंची पाहीं ।
अब तुम सत्य लोक को जावो ❀ अधिकारान्ते इच्छित पावो ॥
विधिको प्रभु अनुज्ञापनं कीना ❀ अनुज्ञापन आशय यह चीना ।
जब आज्ञा हित प्रार्थित भयऊ ❀ माथ नाय अभिलाषित रहयऊ॥
श्रीप्रभु मौनहि रहि थल ताहीं ❀ मौनहु सम्मति लक्षण आहीं ।
तासों विधि जान्यो मन माहीं ❀ अस आज्ञा देवत मो पाहीं ॥
जावो अपने धाम मँझारा ❀ तहँते सहसा विधिहु सिधारा ।
कियो मौन से प्रभु अनुज्ञापन ❀ याको भूप अहै यह कारन ॥
आप परातम हैं साक्षाता ❀ यदि विधि प्रति प्रतक्ष कर वाता ।
तो सच्चिद्घनंपनसे करते ❀जासों विधि अपि निज जिय धरते॥

दो०-अहो येहि निश्चय अहै, परम्ब्रह्म साक्षात ।
राजत है या ब्रज विषे, गोप वंश शिशु गात२६३

यदपि विरंची तत्त्वत गायो ❀ श्री प्रभु को जु रहस्य लखायो ।
अरु विचित्र वैभव अपि देख्यो ❀ सबते आद्य परातम पेख्यो ॥
तदपि होय नहिं निश्चय याको ❀ कछु मोहनपन हिय रहि वाको ।
तासों आप जु या ब्रज माहीं ❀ गोपवंश शिशुपन वय आहीं ॥
तहँ जो विधि के मोहन हेतू ❀ नाट्यारंभ कियो सुख सेतू ।
परि समाप्ति सिद्धी के कारन ❀ विधिप्रति मुखसों किय न उचारन॥
यथा पूर्व अस अहै बखाना ❀ यदपि कृष्ण पूरण भगवाना ।

१ आज्ञा २ अखिल ब्रह्मांड के अधिपतिपने से ।

नहिं विलोक ते पुलिन मँझारा ❀ वत्सप वत्सन नंद कुमारा ॥
दोउन खोजत है वन माहीं ❀ कर प्राकृत नर अभिनय ताहीं।
खोजत वत्स बाल जबही ते ❀ नाट्यारंभ भयो तबही ते।२६४।

दो०-पुन जब ब्रह्मा प्रवृत भो, गावन कृष्ण प्रशंस।
तद्यपि प्राकृत शिशु सदृश, मोहन व्रज अवतंस २६४

मुख नयनन अभिनय असकरहीं ❀ जासों विधि हित जनु उचरहीं।
यह चौमुखा कहा भाखत है ❀ अरु कस निज चेष्टा राखत है॥
कहा कहत है यह मो पाहीं ❀ में वत्सप वत्सन वन माहीं।
व्यग्र हियो खोजन में मेरो ❀ अस अभिनय प्रभुको तहँ हेरो॥
नाट्यारंभ कियो है जाते ❀ परिसमाप्ति करनी अब ताते।
तासों मौनहुको यहि कारन ❀ पूर्व कियो है जोउ उचारन॥
अपन महा वैभव जो आहीं ❀ विधिको पूर्ण ज्ञान है नाहीं।
तासों निज अधीन विधि आगे ❀ किय अभिनय प्रभुहिये प्रजागे॥
नाट्य शब्दको भाव यही है ❀ तत्त्व ज्ञानको वचन सही है।
किन्तु यशोमति आदिक आहीं ❀ वात्सल रस परिकर व्रजमाहीं२६५

दो०-महा प्रेमसों कृष्ण तिन, है अधीन सुख सेतु।
ज्ञान जु महदैश्वर्य निज, ढाँप दियो तिहँ हेतु २६५

१ भूपन।

मधुर सुरीले स्वर युत रहही ❀ वहू मूल्य वेणु कर अहही ।
आप वजावत हिय हरषाई ❀ अहैं तहां जे सख समुदाई ॥
किनके कर पीपर दल केरी ❀ जाको पीपी कहि कें टेरी ।
तिनैं वजावत हर्षित होई ❀ किनके हाथ सींग हैं जोई ॥
ते शृंगनहिं वजावत अहही ❀ इन सवहिन धुनि मधुरी रहही ।
वाहि कुतूहल में घनश्यामा ❀ मुरली में वछरन के नामा ॥
टेरत मुदित सखन मिल ताहीं ❀ इम आवत भे प्रभु व्रजमाहीं ।
सखा सख्यरस वारी लीला ❀ गावत प्रमुदित हैं शुभशीला२६१

दो०-तिहँ अवसर श्रीप्रभु दरस, गोपिन किय निज नेन ।
तासों तिन वड़ मोद भो, को अपि भाख सकैन२६९

इति श्रीकृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे पञ्चदश सोपान समाप्त ।

कह मुनि वर्षान्तर व्रजमाहीं ❀ गये गोप वालक सवताहीं ।
अरु अस भाखत गोप कुमारा ❀ आज कृष्ण नें विपिन मँझारा ॥
वड़ो एक अजगर है मार्यो ❀ हम सवहिन निज नैन निहार्यो ।
अरु तहँ रक्षा करी हमारी ❀ जव यह वालन वात उचारी ॥
पसर गई त्वर व्रज के माहीं ❀ व्रजजन पूछत हैं तव ताहीं ।
कहो हन्यो किहँ अजगर देहा ❀ यशुमति पक्ष केर जन जेहा ॥
कहैं हमारी यशुमति मैया ❀ तिहँ लाला मार्यो दुख देया ।
तिम व्रजराज पक्षके जेते ❀ होय प्रसन्न भाख रह तेते ॥

हमरे नंद बबा के लाला ✿ मार्यो अजगर दुखद कराला।
अस ब्रजभर प्रभु चरित बखानें ✿ निरख माधुरी छवि सुखमानें२७०

दो०-कह मैथिल देवर्षि प्रति, ब्रजवासी जे आहिं।
तिन किम उत्कट प्रेम भो, अपरोद्भव प्रभु माहिं२७०

यथा न पूर्व भयो तिन केरो ✿ निज उद्भव पुत्रन, जस हेरो।
श्रीगिरिराज तरहटी माहीं ✿ बछरन घास चरावत ताहीं॥
अपन स्वरूप मूर्त सखवृंदा ✿ तिनसों मिल मोहन सानंदा।
गोवर्द्धन पै गोपहु रह्यऊ ✿ गौवन घास चरावत भयऊ॥
जब ऊपर से गोपन ताहीं ✿ देखे बाल तरहटी माहीं।
देखत हिये प्रेम उमड़ायो ✿ यथा न निज पुत्रन प्रकटायो॥
येहि प्रसंग पूर्व तुम गायो ✿ तिम अपरहु थल अहे सुनायो।
याहीते मो हियके माहीं ✿ अहे शंक, मैटौ तुम ताहीं॥
तब नृप प्रति मुनिराज उचारा ✿ तहाँ हेतु है यही विचारा।
सब प्राणिन निज आतम अहहीं ✿प्रकटहिअतिशयप्रियतमरहहीं२७१

दो०-इतर पुत्र धन आदि जे, आतम ते प्रिय आहिं।
बिन आतम रंचहु अपी, प्रीति न ह्वै तिन माहिं२७१

यथा दरिद्री अरु गुण हीना ✿ अपन पुत्रको मृत्यू चीना।
याको शोक होय हिय जैसे ✿ अपर पुत्रको होय न तैसे॥

१ दूसरे से अर्थात यशोदाजी से जन्मा हुआ २ अपने से जन्मा हुआ।

भले वो होवे राजकुमारा ❀ शुभ गुण भूपित परम उदारा।
तद्यपि तिहँ मृत्यू सुन काना ❀ तथा न शोक होय,अस माना॥
यहँ कारण आतमपन अहही ❀आतम विन प्रियपन नहिं रहही।
तासों सब प्राणिन जस आहीं ❀ प्रेम अपन आतम के माहीं॥
तस ममतास्पद जेते अहहीं ❀ पुत्र द्रव्य गृह आदिक रहहीं।
तिनमें कबहू होवत नाहीं ❀ यथा गृहस्थ एक गृह माहीं॥
अति आसक्त कुटुम्बिन रह्यऊ ❀ किहँ अपि संत ताहि प्रति कह्यऊ।
काहि वृथा दुर्लभ तनु खोवै ❀ किम नहिं सावधान हिय होवै२७२

दो०-सब जन आपन को चहैं, परको चहै न कोइ।
अस स्वार्थी जन जगतके,यदि विचार हिय होइ२७२

तब वानें कह्यऊ ता पाहीं ❀ यद्यपि जगत माहिं अस आहीं।
किन्तू मो तिय सुत पितु माता ❀ तस नहिं हैं अस प्रकट दिखाता॥
मेरो रंचहु कष्ट न सहहीं ❀ मो सुखको ही चिंतन अहहीं।
तदा संत कह्यऊ ता पाहीं ❀ कबहु परीक्षा अपि लिय आहीं?॥
कह्यौ गृहस्थ परीक्षा कैसी ❀ यहँ तो नित्य परीक्षा ऐसी।
पुन कह संत सुनो अब मेरी ❀ कहूँ वात इक तुव हित केरी॥
प्राण अन्त अवसर में जैसे ❀ रोगी गति सम तुम अपि तैसे।
कीजो अभिनय निज घर माहीं ❀ तासों तुव परिकर जो आहीं॥
तुव मृत्यू होवन मन जानें ❀ रंचहु हिय संशय नहिं आनें।
ता अवसर में तुव घर माहीं ❀ आवहुँगो निश्चयकर ताहीं २७३

दो० तब दिखाय दउँ प्रेम तिन, तिहँ अपि लीनों मान।
घर जाकर तत्काल ही, कह भइ व्यथा महान२७३

कहतहि अवनीमें गिर गयऊ ❀ यथा तथ्य सो अभिनय रह्यऊ।
तिय मातादिक हा हा भाखे ❀ अहो प्रभु तुम याको राखे॥
कहा भयो याको पल माहीं ❀ वैद्य बुलाये आतुर ताहीं।
तावत संतहु तहाँ सिधायो ❀ घर बारन निज सीस नवायो॥
कहन लगे पुन पुन प्रतिसंता ❀ संत दरस निश्चय दुख हंता।
पृथक पृथक सब बहु बच कहहीं ❀ अहो भाग्य हमरे किल अहहीं॥
जो या अवसर दर्शन भयऊ ❀ अब हमरे निश्चय दुख गयऊ।
मैया कह यह प्राणन प्यारो ❀ नैनन तारो जिय आधारो॥
करो कृपा यापे ततकाला ❀ यह जी उठे जु आप कृपाला।
तदा संत अस भाखत ताहीं ❀ एक उपाय अमिट मो पाहीं २७४

दो० किन्तु कठिन अतिशय अहै, कहत सकल ता पाहिं।
कहो कठिन कैसे अहै, कहत संत तब ताहिं॥२७४॥

यह जी उठही किन्तु आना ❀ को अपि अपनों देवे प्राना।
कही सबन अच्छा हे संता ❀ करहु उपाय जु हो दुखहंता॥
तब जल युत इक पात्र मँगायो ❀ हाथ राख कछु ध्यान लगायो।
पाछे मंत्रन पढ़कर कह्यऊ ❀ यह जल लेहु जु पीवन चह्यऊ॥
जो पीवे सो तो मर जावे ❀ यह उठ बैठे रुज बिनसावे।

घड़ी एक यदि नहिं को पीवै ❀ तौ पुन निश्चय यह नहिं जीवै॥
अब तो सबहि ठिठक रहि गयऊ ❀ सबन नेह कहुँ जातो रह्यऊ।
मैया तिय पर्यन्तहु जेते ❀ विविध बहाना देवत तेते॥
कोउ न वह जल पीवन चह्यऊ ❀ तब वो उठ तिन प्रति अस कह्यऊ।
काहे डरो, मोहिं कछु नाहीं ❀ तुम्हरो प्रेम जु है मो माहीं २७५

दो०-आज परीक्षा सबन की, भई सत्यही आहि॥
आतम ही प्यारो सबन, बिन आतम-प्रिय नाहिं २७५

ता आतमके प्रियपन सेती ❀ प्यारे सबी, बात है एती।
करी कृपा करुणा-निधि संता ❀ आतमज्ञान बिन नहिं दुख अंता॥
ताहित है नृप यावत प्रानी ❀ आतम माहिं प्रीति है मानी।
ममतालम्बी सुत वित नारी ❀ आदि अनेकन जगत मँझारी॥
तेती प्रीति न है इन माहीं ❀ आतम ही अति प्यारो आहीं।
किन्तु मूढ़ जन केचित अहहीं ❀ देह आतमा है अस कहहीं॥
यदि ते आतमको नहिं जानैं ❀ है आतमा देह इम मानैं।
तदपि तहाँ जस प्रिय है देहा ❀ तथा न सुत वितादि में नेहा॥
किन्तु जु प्रेम देह में आहीं ❀ आतमहीते निश्चय ताहीं।
यदि देहातमवादी जोऊ ❀ तनक विचार करै हिय सोऊ२७६

दो०-तौ जिम आतम प्रिय अहै, तथा न प्रिय यह देह।
देहातमवादी प्रती, मुनि भाखत वच एह॥२७६॥

अहै अहंतास्पद यह देहा ❀ तनक विचार कियेतें एहा।
ममतास्पद हम मानत ताहीं ❀ किंतु न आतम सम प्रिय आहीं॥
यदि प्रिय है तौ आतम सेती ❀ हिये विचार बात है एती।
तनु त्यागन अवसर के माहीं ❀ अतिहि कष्ट होवत है ताहीं॥
तदपि आस जीवन अधिकाई ❀ यह प्रतच्छ जग देत दिखाई।
यथा कोइ इक जरठ महाना ❀ सर्वेन्द्रिय शक्ती जिहँ हाना॥
अरु घर में अपि बहु अपमाना ❀ यदपि खवावत, श्वान समाना।
अस बूढे प्रति अपि को कहही ❀ अब तो मृत्यु निकट तुव अहही॥
इम सुन कहत अहै ता पाहीं ❀ जीवन आश अधिक जिहँ आहीं।
बहुतन मार मरूँगो प्यारे ❀ किम ऐसे वच वदन उचारे २७७

दो०-अतिहि जीर्ण या देहमें, इतो प्रेम तिहँ जोउ।
आतमही से मानिये,तिहँ बिन प्रिय नहिं होउ२७७

तातै सब जीवन को प्यारो ❀ निजातमाही अहै उचारो।
पुत्र कलत्रादिक चर कहाऊ ❀ अचर धाम द्रव्यादिक रहाऊ॥
इम यावत चर अचर लखायो ❀ सो सब आतमहीते भायो।
तत्त्व दृष्टि से जोउ निहारो ❀ तो जीवातम जोउ उचारो॥
आपेक्षिक प्रीती तहँ अहही ❀ आत्यंतिक अनुराग जु रहही।
सो तो केवल कृष्णहि माहीं ❀ यहि सिद्धान्त कहत मुनि याहीं॥
सब जीवातम आतम जोई ❀ है परमातम कृष्णहि सोई।
यथा प्रीति पुत्रादिक माहीं ❀ तहँ कारण यह तनुही आहीं॥

देह माहिं जो रहत सनेहा ❀ तहँ हेतू जीवातम एहा।
जीवातम में प्रेम महाना ❀ तहँ परमातम कृष्ण निदाना२७८

दो०-सोई इक कारण अहै, निश्चय लख नरनाथ।
श्रीमुख भगवत वचन हैं, सिद्ध करत यहि गाथ २७८

यह सम्पूर्ण जगत है जोऊ ❀ ताहिं व्याप्य मैं पृथकहि होऊ।
एक अंश से रहौं सदाई ❀ कृष्ण अपन मुख यह दरसाई॥
ताते आत्यन्तिक जो प्रीती ❀ केवल कृष्ण हिये, यहि रीती।
प्रीति पराकाष्ठा जो अहही ❀ सो केवल कृष्णहि में रहही॥
राखी मिस्री किहँ थल माहीं ❀ ता ढिग जलपात्रहु इक आहीं।
तामें इक ढेली पर गयऊ ❀ ताकी सुधि किहँ अपि नहिं रहाऊ॥
किहँ जन माँग्यो पीवन पानी ❀ तव वहि पात्र दियो तिहँ आनी।
जल पीकर पुन अपि तिहँ चाह्यो ❀ तव अपरहु जल ताहि पिवायो॥
पीवत ही भाखत है सोई ❀ प्रथम समान अहै जल जोई।
वाहि कूपको जल मुहिं दीजे ❀ तव ते तिहँ प्रति कहत सुनीजे२७९

दो०-प्रथम पियो पानी जु तुम, यह जल अहै तयाहि।
लाये एकहि कूपते, पृथक स्वाद किम आहि २७९

यथा न रहि सुधि तिहँ जल माहीं ❀ परी जु मिश्री ढेली ताही।
तथा जगत के जीव जु अहहीं ❀ भगवत भक्त हीन ते रहहीं॥

१ कारण।

अरु माया सों तिनको ज्ञाना ❀ रहि आच्छादित प्रकट पछाना।
तिनमें परमातम के रूपा ❀ राज रह्यो जो कृष्ण अनूपा॥
एक मात्र भक्तिहिते जोऊ ❀ ह्वै प्रकाश नहिं अन पथ कोऊ।
किम तादृशपन से प्रभु केरो ❀ ह्वै अनुभव,अस निज हिय हेरो॥
कारण यह इक मायिक अहहीं ❀ पुन भक्तिहुते हीनहु रहहीं।
किन्तु अहैं व्रजवासी जेऊ ❀ मायातें अतीत हैं तेऊ॥
अरु पूरण भक्ती युत अहहीं ❀ तिन अनुभव यथार्थहि रहहीं।
ताते निज पुत्रादिक माहीं ❀ जो सनेह है तिनको ताहीं २८०

दो०-तिनते अमित अधिक अहै, सोऊ सहज सुभाय।
प्रेम कृष्ण में प्रकट ही, सुनत नेह उपजाय २८०

सोउ जगत हित धर अवतारा ❀ है अचिंत्य करुणा आगारा।
मायावृत जु जीव संसारा ❀ तिन मूढ़न निज अविद्या द्वारा॥
जीव समान देह धर भासे ❀ सत्य स्वरूप न हिये प्रकासे।
वा मायाकृत देह समाना ❀ है माया उपाधिवत भाना॥
किन्तु न मायोपाधि शरीरा ❀ सच्चिद्घनमय वपु कह धीरा।
वादी कह परमातम जोऊ ❀ इन्द्रिय ग्राह्य न होवत सोऊ॥
यह श्रीकृष्ण सांवरे गाता ❀ इन्द्रिय ग्राह्य अहै साक्षाता।
कह मुनि कृष्ण कृपा जो ताकी ❀ है अचिंत्य निर्हेतुक पाकी॥
ताहि कृपा सों जग हित सोऊ ❀ भासत तिन देही सम जोऊ।
किन्तु स्वयं निज इच्छा सेती ❀ इन्द्रिय ग्राह्य वात है एती २८१

दो०-कर करुणा करुणायतन, अपनावैं जन जोउ।
ताहिं स्वयं ही दरस दें, नहिं तौ लखै न सोउ२८१

सो० अहैं ग्राह्य घनश्याम, तिनही के इन्द्रियन सौं।
अप्राकृत छविधाम, प्राकृत इन्द्रिन नहिं लखैं॥४७॥

शब्दादिक इन्द्रिय हैं जेती ❀ यथ विषय कर सकहीं तेती।
तथा कृष्ण तिन विषय न आहीं ❀ वच सिद्धान्त कहैं तुम पाहीं॥
या विध भागवतअमृत माहीं ❀ श्रीनारायन के वच आहीं।
नित अव्यक्त अपी भगवाना ❀ दीखत जब, कर कृपा महाना॥
निज शक्तिहिते आप दिखावैं ❀ प्राकृत इन्द्रिन दृष्टि न आवैं।
बिन उन कृपा मनोरथ कोऊ ❀ देखन रंच समर्थ न होऊ॥
याको भाव प्रकट यहि कह्यऊ ❀ जब जापर प्रभु इच्छा रह्यऊ।
तब तिहँ नेत्रन माहिं प्रकासा ❀ देत कृष्ण चिन्मय छविरासा॥
तासौं तिहँ नैनन साक्षाता ❀ प्रकट दरस होवत सुख दाता।
या प्रसंगको सार प्रमाना ❀ नेत्र विषय न कृष्ण भगवाना२८२

दो०-एक भक्त अनुकूल अरु, द्वितिय भक्त प्रतिकूल।
इम द्वै विध के भक्त हैं, दोउ भक्ति हन शूल२८२

तहां अहैं जु भक्त अनुकूला ❀ तिन प्रति कृष्ण परम मुद मूला।
निजकी कृपादृष्टि कर दाना ❀ ताते ते माधुरी महाना॥

सकैं विलोक कृष्ण प्रभु केरी ❀ अपरन हित जु असंभव हेरी ।
कंसादिक प्रतिकूल जु अहहीं ❀ ते कृष्णहिं न विषयकर रहहीं॥
जिम किहँ रसन पित्त रुज सेती ❀ है दूषित तिहँ शक्ति न एती ।
मिष्ट अन्नके स्वादहिं जानै ❀ मिष्टहुको करुवो पहिचानै ॥
तिम तिन प्राकृत इन्द्रिन तेऊ ❀ प्रभु माधुरी न गह सक वेऊ ।
तदपि जु दर्शन ध्यानावेशा ❀भयऊ तिन तिहँ फल मिथिलेशा ॥
सब अपराध शमन ह्वै गयऊ ❀ जग जन दुर्लभ मोक्षहु लह्यऊ ।
यही अहै तिन हित कल्याना ❀ या प्रसंगको तत्त्व बखाना २८२

दो०-ब्रजवासिन श्रीकृष्णको, वैभव ज्ञान न आहिं ।
तथा अपर अनुकूल जे, भक्त अहैं जग माहिं २८३

तिनैं तथा जु भक्त अनुकूला ❀ इन सबहिन मोहन मुदमूला ।
यद्यपि भासत जीव समाना ❀ तदपि जु पूर्णरूप भगवाना ॥
तामैं देही देह विभागा ❀ हे नृप!नहिं कदापि अणुभागा ।
ताहित श्रुति शास्त्रज्ञ जु रह्यऊ ❀ देही इव, देही नहिं कह्यऊ ॥
आपेक्षिक प्रेमास्पद रहहीं ❀ आतम देह सुतादि जु अहहीं ।
किन्तु विचार किये मन माहीं ❀ अस निश्चय होवत है ताहीं ॥
अति आपेक्षिक प्रेम महाना ❀ ताके कृष्णहि स्थान प्रमाना ।
यहि प्रसंग मुनि श्रेष्ठ बखानैं ❀ वस्तुत कृष्णरूपको जानैं ॥
ते जड़ जंगम जगत स्वरूपा ❀ देखत श्रीहरि रूप अनूपा ।
भगवत रूप विना जग माहीं ❀ तिनैं न दीखत वस्तू ताहीं२८४

दो०-तहँ यहि इक कारण अहै, जेतो जगत स्वरूप ।
तिन कारण कारण अहै, भगवत कृष्ण अनूप २८४

जड़ जंगम को हेतु प्रधाना ❀ केवल एक कृष्ण भगवाना ।
जिम जलमें शीतलपन अहही ❀ चाचिकपन जु तेजमें रहही ॥
इम यावत वस्तू जगमाहीं ❀ तिन जु असाधारण गुण आहीं ।
कृष्णहि एक मात्र तिन हेतू ❀ कारण वृन्दन कारण तेतू ॥
तो पुन कृष्ण विना जग माहीं ❀ कहा वस्तु है कहु मो पाहीं ।
भाव यही सब कृष्ण स्वरूपा ❀ कारण कार्य एकही ऊपा ॥
वा बुद्धीन्द्रिय आदिक माहीं ❀ है सत्ता आतम की ताहीं ।
सो जीवातम अंश बखाना ❀ अंशी एक कृष्ण श्रुति माना ॥
ताते जो कछु देत दिखाई ❀ कृष्ण भिन्न कहु कहा लखाई ।
कछु अपि नहिं, केवल इक सोई ❀ सेव्य कृष्णही निश्चय होई २८५

दो०-जब सबहिनको सेव्य है, किम व्रजवासिन नाहिं ।
भल अविद्यावश जगत जन, तत्त्व न जानत आहिं २८५

किन्तु अहें जु भक्त अनुकूला ❀ जिनके हिये भक्ति मुद मूला ।
तथा जु हैं यावत व्रजवासी ❀ सहजै जिन जिय प्रीति प्रकासी ॥
तिनको सहज प्रेम प्रभु माहीं ❀ सोउ महान, होय सक ताहीं ।
कृष्णहिके पद पंकज केरो ❀ एक मात्र निज आश्रय हेरो ॥

१ उपमा ।

ते माया सहजें तर जावें ❀ भगवत तत्त्व तिनैं दरसावें।
ताते मुनि अव इह थल कहहीं ❀ तिन हरिजन उत्कर्ष जु अहहीं॥
जिनको यश सुन्दर मनहारी ❀ अस जो कृष्णचन्द्र सुखकारी।
जिन पद आश्रय शिव नित अहही ❀ विधि आदिक नित निजजियचहही॥
तिन पदपल्लव नौका केरो ❀ जिन आश्रय आपन उर हेरो।
सोउ अनन्य भावसों होई ❀ सुपनहु नहिं अन्याश्रय कोई२८६

दो०-ते अथाह भवासिन्धु को, कछु अपि गणहीं नाहिं।
तरहिं वत्सपद सम सहज, नित प्रमुदित चित आहिं२८६

सो० नित्यधाम सुखठाम, श्रीवन वैकुण्ठादि जे।
चिन्मय सोह ललाम, तिन भक्तन आस्पद यही८८

नहिं दुर्विपर्य कबहु सुखठामा ❀ अपर न उपजत तिन उर कामा।
रंचहु आसक्ती है नाहीं ❀ कहुँ अन्यत्र विषय थल माहीं॥
वां अस भक्तन पद पद माहीं ❀ मुक्ती प्रापत संशय नाहीं।
अरु आपत तिन हित नहिं लेशा ❀ सदा बसत हे सुखमय देशा॥
हे नृप वयकुमार घनश्यामा ❀ जो चरित्र किय जन सुखधामा।
सो पौगंड अवस्था माहीं ❀ गायो घोष बालकन ताहीं॥
यामें जो किय प्रश्न उदारा ❀ सो सब में तुम पाहिं उचारा।
वयसन संग श्याम वन माहीं ❀ जेमन लगे दुवंपे ताहीं॥

१ कामक्रोधादिक।

सख्य सुरस लीला दरसाई ❀ अरु किय अघको वध जु कन्हाई।
विधिको निजते अपर स्वरूपा ❀ दरसाये जिन महिम अनूपा२८७

दो०-किय ब्रह्मास्तव महत अति, सर्व भाव उर लाय।
याहिं सुनै कीर्तन करै, सर्व अर्थ सो पाय॥२८७॥

सो० श्रीहरि लीला गाय, तत्त्व ध्याय मन भाय जो।
कलि को कलह नसाय, वसन्त प्रभु को पाय पद४६

क०—प्रभु केरो पद पाय, नित्य अचल सुहाय,
जाहिं पाय विलसाय, प्रभु के विलाससों।
विषय विकार जाय, माया न भुलाय आय,
अहंपद को जराय-भक्ति के प्रकाससों।
दुख दारिद्र मिटाय, सुखदाय ही सदाय,
स्वयं प्रभुहु को भाय, मिलैं सहुलाससों।
वसन्त जो जन गाय, प्रभु लीला रसदाय,
ताकी प्रशंस महाय, मिले छबिरासलों ॥ १ ॥

इति श्रीकृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे षोडश सोपान समाप्त।

कह मुनि गोपन मनसा मानी ❀ भे गोपाल कृष्ण सुखदानी।
गोचारन युत गो गोपाला ❀ विचरत वयसन मिल नँदलाला॥
आगे पीछे अरु चहुँ ओरा ❀ चरत धेनु मन मोद न थोरा।
व्रजभूषण बलदाऊ केरो ❀ प्रिय दर्शन जिन चाह घनेरो॥

घण्टा मंजिर कण झँकारा ❀ इत उत विचरत धेनु उदारा।
किंकिणि जाल युक्त ते आहीं ❀ हेममाल शोभित गर माहीं ॥
मोतिन गुच्छ पुच्छ में सोहैं ❀ मोर पिच्छ रचना मन मोहैं।
केशरसों चित्रित जिन अंगा ❀ देखतही हिय उपज उमंगा ॥
शिरोमणी द्वै शृंगन माहीं ❀ रत्नमाल अपि सोहत ताहीं।
अरु सींगनमें वेष्टित[1] अहही ❀ हाटकरश्मि प्रभा बड़ रहहीं २८८

दो०-रक्त तिलक के पीत पुच्छ, अरुण चरण के गाय।
के सुरभी कैलास सम, सबन नेह अधिकाय २८८

एनन आर मंद गति सेती ❀ चरत घास छवि बाढ़त केती।
किन लालाई मिश्रित श्वेता ❀ अहै रूप त्वर मन हर लेता ॥
श्याम हरित के पीत स्वरूपा ❀ के बहुरंगी सोह अनूपा।
ताम्र धूम्र रंगी घनश्यामा ❀ के कपिला सब मंगल धामा ॥
किनके सींग वक्र अपि सोहैं ❀ के मृगशृंगी हियो विमोहैं।
सबकी प्रीति अहै घनश्यामा ❀ श्याम प्रीति इन माहिं ललामा॥
हरित घास अरु मृदुल महाना ❀ बनमें जहँ तहँ है प्रकटाना।
इह विधके बन अपि बहु आहीं ❀ गोप वृंद गौवनको ताहीं ॥
ले जावैं निज हिय हुलसावैं ❀ जिम तिन भावैं घास चरावैं।
श्याम तमाल विपिन के माहीं ❀ यमुना तट गौ चरहीं ताहीं२८९

[1] लपेटी हुई २ स्वर्ण की रस्सी।

दो० श्रीवन उपवन विविध हैं, तिनिमें सुरभी वृंद ।
निज इच्छा अनुसारही, चरहिं घास सानंद॥२८९॥

श्रीगोवर्द्धन गिरिपै जावैं ❀ कबहु तरहिटी में सुख पावैं ।
इम गो गण तृण चर सुख लहहीं ❀ नैन नंदनंदन में रहहीं ॥
अरु गोपाल वृंद जे आहीं ❀ मिल गोपाल लाल सों ताहीं ।
आपुस में बहु हँसैं हसावैं ❀ कृष्ण संग इम बहु सुख पावैं॥
कुमुद विपिन में वयसन संगा ❀ धेनु चरावन गै सउमंगा ।
तहाँ तोप प्रति कह नँदलाला ❀ अहो सखा सुन वचन रसाला ॥
है अभिलासा आज हमारी ❀ तू सब सखन सयानों भारी ।
तू अरु में मिल वेणु बजावैं ❀ श्रीदामा मध्यस्थ बनावैं ॥
तू अपनी सबही चतुराई ❀ आज प्रकट कर मो मनसाई ।
तोपहु कान वचन सनमानै ❀ सकलसखा अतिशय हरषानै२९०

दो०-दोऊ वेणु बजावहीं, परम सयानों तोप ।
तिहँ वंशीमें सप्तसुर, गाये प्रद संतोप॥ २९० ॥

कृष्णहु तथा बजाई मुरली ❀ जो है सप्त सुरनसों जुरली ।
कान गान वंशी में कीनों ❀ सबहिन के मनको हर लीनों॥
तिहँ धुनि में सब मग्न गुवाला ❀ तोपहु को भो तोपं विशाला ।
श्रीदामा मँद मँद मुसकाई ❀ कह्यो तोप प्रति सुन वच भाई॥

---

१ गौ । २ संतोप ।

तुहिं बड़ मद हो मोहिं समाना ❀ निश्चय नहिं नँदनंदन काना।
आज तोर वह मद कहँ गयऊ ❀ अस सुन तोपरोप कछु भयऊ॥
अरु भाख्यो किहँ इनें सिखाई ❀ जो तू मुहिं इम भाखत भाई।
तब तहँ मधुमंगल अस कह्यऊ ❀ तोर वचन सम्यक ही रह्यऊ॥
या मोहन को गुरु तू अहही ❀ किन्तु आज गति औरहु रहही।
गुरु गुड़ चेला शक्कर भयऊ ❀ तू काहे इतरावत रह्यऊ॥२९१॥

दो॰–तदा तोप कह कृष्ण प्रति, पुन तू वेणु बजाइ।
मैं हुँ बजावौं वेणुको, को होवै अधिकाइ ॥२९१॥

अरु कह तोप सखन के पाहीं ❀ अबके पुन अपि सुनिये याहीं।
सुवल सखा जो परम सयानों ❀ रागभेद तिहँते नहिं छानों॥
सो मध्यस्थ मोर मत मानें ❀ तुमहू सब हो परम सयाने।
इम कह पुन द्वौ वेणु बजावें ❀ विविध तार सबहिन हरषावें॥
तहां कृष्ण निज विरद विचार्यो ❀ प्रेमिन निकट सदा जो हार्यो।
तिहँ प्रभु अपनीं वंशी माहीं ❀ गायो राग त्रुटी रहि ताहीं॥
तदा तोप भाखे जबताईं ❀ चतुर सुवल कह्यऊ तबताईं।
सुनो सखा सब मोरी बानीं ❀ करो न्याय सब सत्य प्रमानी॥
तब मधुमंगल भाख्यो ताहीं ❀ सत्य अहै गुरु समरथ आहीं।
पलमें जो चाहें सो करहीं ❀ ईश्वर हू गुरुते बहु डरहीं २९२

---

१ अनखाचनपन।

दो०-ताहित गुरु जो तोप है, तिहँ निज प्रभुता चाह ।
रागन को आज्ञा करी, हनौ जु मो उत्साह॥२९२॥

तौ तुम सत्रहिन को अति आसू ❀ निश्चय लखौं करौं मैं नासू ।
रागनने ये वच सन्मानों ❀ ताहित उलट पुलट मैं मानौं ॥
वा है शिष्य सुशील कन्हाई ❀ गुरुभक्ती पूरण दिखराई ।
गुरु को हास्य न होवे जाते ❀ जान बूझ चूक्यो है ताते ॥
क्यों रे काना कहे न काहे ❀ यही बात ना निज मन चाहे ।
अस सुन हँसे सखा समुदाई ❀ कह्यौ कृष्णहू कछु मुस्कयाई ॥
मधु मंगल ब्राह्मणको[१] अहही ❀ ताहित वचन सत्यही कहहीं ।
या विध स्वयं एव भगवाना ❀ हैं जो श्री नँदनंदन काना ॥
सखन प्रेमवश तिन मिल ताहीं ❀ बहु विध लीला कर वन माहीं ।
आप हार निज सखा जितावैं ❀ बहु मनुहारन तिनैं मनावैं२९२

दो०-सबही विध तिन चित्तकी, रक्षा करहीं कान ।
तत्सुखमें निज सुख लखैं, शुद्ध सख्य तिन मान२९३

सो० तथा सखाहू ताहिं, कृष्ण मोद में मोद निज ।
मानत हैं मन माहिं, इम तत्सुख तिन प्रकट है५०

सख्य भाव सों आपुस माहीं ❀ भल कछु अपि करहीं ते ताहीं ।
किन्तु हिये में दुहुँ दिशि जोऊ ❀ अहै प्रेम लख सकै न कोऊ ॥

[१] अर्थात्-ब्राह्मण बालक ।

निज पुनीत चरितन प्रकटावैं ❀ सत्य सख्यपन जो बुध गावैं ।
या प्रकार जगतारन लीला ❀ करत रहैं व्रजमें शुभशीला ॥
पुन तहँ ते धेनू गण संगा ❀ गये कामवन सहित उमंगा ।
हरित घास तृण चरहीं ताहीं ❀ जस इच्छा उपजे मन माहीं ॥
तहां कृष्ण निज वेणु बजायो ❀ पृथक पृथक गौ नामन गायो ।
सुनतहि निज निज नामन ताहीं ❀ धाय आईं नँदनंदन पाहीं ॥
एकहि वेर सबनके अंगा ❀ मृदुल हाथ फेर्यो सउमंगा ।
यहगति तहँ किहँ अपि नहिं जानी ❀ गोवें आनंद सिंधु समानी २९४

दो०–या विधि नितही जावहीं, विविध विपिन के माहिं ।
धेनु चरावैं मुदित ह्वै, आपहु खेलैं ताहिं ॥ २९४ ॥

नंदगाम कबहू बरसाना ❀ इन उपवन जावें मुद माना ।
सुंदर कोकिल बनके माहीं ❀ कोकिल वृंदन कल धुनि जाहीं ॥
विविध बेलिसों व्याप्य विशाला ❀ अस कुशवन रमणीय रसाला ।
परम पुनीत भद्र वन आहीं ❀ रमणिय भांडिर वनके माहीं ॥
तथा लोहवन बड़ रुचिकारी ❀ इत्यादिक थल सब मनहारी ।
रुचि अनुसार सबन के माहीं ❀ क्रमसों धेनु चरावन ताहीं ॥
जावैं श्रीगोपाल उदारा ❀ मिल गोपन जिन मोद अपारा ।
प्रायः श्रीयमुना के तीरे ❀ जहाँ सतत वह त्रिविध समीरे[1] ॥

---

१ वायु ।

विचरैं प्रमुदित कृष्ण कन्हाई ❀ वेणु बजावैं सब मन भाई ।
दिन भर रहैं विपिन के माहीं ❀ सांझ समय ब्रजमें आजाहीं२९५

दो०-किन्तु विपिन जब जाइँ हरि, धेनु चरावन हेतु ।
तबतें गोपिन हिय विषे, मिलन हेतु ब्रजकेतु, २९५

प्रतिपल उत्कंठा अप्रमाना ❀ बढ़त रहै अस नेह महाना ।
पल पल गिनत चैन नहिं लहहीं ❀ एकहि श्रेष्ठ मिलन ते चहहीं ॥
जिम जिम समय समीप पछानैं ❀ तिमतिम मिलन आस त्वर मानैं।
कृष्णहु जब ब्रज निकट सिधावैं ❀ गोपिन मनहर वेणु बजावैं ॥
सुन वंशी धुनि गुन मन माहीं ❀ अब आये प्रिय ब्रजके पाहीं ।
तब सब गृह कृत तजके धावैं ❀ एक अपर को आशु बुलावैं ॥
अरी वीर वलवीर पधारे ❀ धरै धीर को वीर निहारे ।
इम आयुस में मगन सनेहा ❀ तज तजकें गृह कृत अरु गेहा ॥
सबही निज निज द्वारन आवैं ❀ वंशी रव दिशि नैन चलावैं ।
कृष्णहु अतिहि निकट जब आवै ❀ वेणु बजावै मोद बढ़ावै ।२९६।

दो०-तनक दृष्टि नँदनंदपै, गोपिनकी जब जाइ ।
तिहँ अवसर तिन मोद जो, को तिहँ सकही गाइ२९६

पुन वाही क्षण माहिं कन्हाई ❀ गोपन गोवन में छिप जाई ।
नहिं विलोक ते ब्रजकी बाला ❀ विरह तप्त ह्वै परम विशाला ॥
इम जब जब देखैं नँदनंदा ❀ तब ते पावहिं परमानंदा ।
तदपि खटक हियको नहिं जावै ❀सबहिनहियो अतिहि अकुलावै॥

ताको कारण यह जो काना ❁ गो रज आवृत वदन सुहाना ।
बिथुरे बाल वदन लग अहहीं ❁ ताहित दरस स्वाद नहिं लहहीं॥
अरु निज मनमें कहिं ब्रजवाला ❁ सदा वक्रगति है नँदलाला ।
दिनभर विरह तप्त हम अहहीं ❁ त्रिन प्रिय दर्शन चैन न लहहीं ॥
यह हमरी गति जानहि सोऊ ❁ मो दर्शन बिन व्याकुल होऊ ।
ताहित निज कर अलक सँवारो ❁ मैंहूँ गोपिन ओर निहारो॥२९७॥

दो० या विध विविध तरंग तिन, पुन पुन उपजैं ताहिं।
कृष्णहु अब आयो निकट, निरख रूप बल जाहिं॥

कोटिन कंद्रप सम जिहँ शोभा ❁ अस को है जु देख नहिं लोभा ।
पीत वसन कटि कामर कारी ❁ नटवर वेष सबन मन हारी ॥
गोरज मंडित[1] मुख द्युति भारी ❁ कुंतल[2] पटपद[3] सम छविधारी ।
हेम मुकुट मस्तक पै सोहै ❁ मोर पिच्छ तापै मन मोहै ॥
कानन कुंडल कंचन केरे ❁ हेमांगद भुज सोह घनेरे ।
वनमाला आदिक बहु माला ❁ सोहत हैं गरमें नँदलाला ॥
लकुट मनोहर है कर माहीं ❁ वंशी अधरन सोहत आहीं ।
ताहिं बजावें प्रीति बढ़ावैं ❁ विरह जन्य सब व्यथा मिटावैं॥
नेह सनी है दृष्टि रसाला ❁ तिहँ अवसर में श्रीनंदलाला ।
दृष्टिहिसों सबहिन मिल काना ❁ मो सबहिन आनंद महाना२९८

१ शोभित २ केश ३ भौंरा ।

दो०-मनहुँ स्वयं श्रीकृष्ण प्रिय, तिनसों कंठ लगाय।
मिले तथाहि रंच अपि, लखी न गति समुदाय२६८

या विध वात्सलता जिन धारी ❀ तिन गोपिन गति अकथ अपारी।
सबहिन निज निज भावनुसारा ❀ मिले कृष्ण युत नेह अपारा॥
व्रजवासिन को अहै जु नेहा ❀ को वरणन कर सकही एहा।
सबहिन सुख देवत व्रजमाहीं ❀ आये गो गोपन मिल ताहीं॥
निज निज गोवन युत सब ग्वाला ❀ तथा श्यामसुंदर नँदलाला।
निज निज सदनान्तर में गयऊ ❀ मिल मातुन तिनको सुख दयऊ॥
वात्सल मग्न माय तिन जेती ❀ कर लालन पालन मुद तेती।
पुन वन वृत्त सुतन के पाहीं ❀ पूछहिं ते अपि भाखैं ताहीं॥
यशुमति वात्सल सिंधु अपारा ❀ उमड़यो अति जब कृष्ण निहारा।
देखत ही स्तन दूध चुचायो ❀ लियो अंक भर आपन जायो॥

दो०-स्तन पय पान करावहीं, मुख मयंकमें नैन।
त्राटक कर तिनतें अधिक, लगैं सुदृढ़ छवि ऐन२६९

देह रंच सुधि रही न ताहीं ❀ कछुक समय अस गति रहि वाहीं।
ता पाछे जब तन सुधि आई ❀ पय पीवत तृप्ती दरसाई॥
स्तन तें मुख हटाय हरि सोहैं ❀ वह छवि निरखत ही मन मोहैं।
जो सनकादिकके हिय माहीं ❀ बड़ प्रयास कबहुक तिहँ ठाहीं॥
आवे, सो यशुमति के गोदी ❀ राज रह्यो है होय विनोदी।

अब यशुमति आनंद निहारो ❀ ब्रह्मानंद कनिष्ठ विचारो ॥
तब यशुमति आरतो उतारो ❀ अरु तहँ राइ नौनहु वारो ।
किय उबटन आदिक सुत केरो ❀ तब निज हिय संशय अस हेरो ॥
मो लाला के इक इक अंगा ❀ परम मनोहर दाय उमंगा ।
पुन पट भूषणसों वड़ सोहै ❀ ताहित अवश सबन मन मोहे३००

दो०-जो कोई अपि देखही, मो जायो यह कान ।
दृष्टि दोष तिहँ लागही, अस निश्चय हिय ठान३००

कियो डिठौना यशुमति माई ❀ पुत्र सनेह मग्न हुलसाई ।
ता पाछे बहु सरस मिठाई ❀ अरु पक्वान्न महा रुचिदाई ॥
मोहनको रुचि युक्त जिमाये ❀ जेंवन सुख यशुमति बलजाये ।
ता पाछे नँदनंदन पाहीं ❀ वन वृतांत पूछे मुद आहीं ॥
कृष्णहु शनै शनै सब कहहीं ❀ सुनत यशोमति आनँद लहही ।
इम नितही जब निज गृह माही ❀ वनतें आवे मोहन[१] ताहीं ॥
तब यशुमति की यहि कृति रहही ❀ वात्सल मग्न अकथ सुख लहही ।
कृष्णहु नितही वनमें जावें ❀ मिल गोपन तहँ धेनु चरावें ॥
साँझ समय निज भवन मँझारा ❀ आवें नितकृत यही विचारा ।
या विधि नित पवित्र कर लीला ❀ जो सहजहिं भवतारनशीला२०१

१ मज्जन शृंगार पत्रावली, काजर इत्यादि, वस्त्र भूषण पहिरावन ।

दो०-गोपालक श्रीकृष्ण प्रभु, जो सहजहि सरल सुभाय।
गो गोपिन गोपन मुदित, लीला कर तिन भाय२०१

सो० कह मुनि मैथिल राय, कृष्ण चरित पावन परम।
आशु नेह प्रकटाय, देवें परमानंद जो ॥ ५१ ॥
कह वसंत नहिं तंत, घोपकंत भगवंत विन।
तिहँ लीला जु लसंत, दें अनंत सुख संत वच५२

इति श्रीकृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे सप्तदश सोपान समाप्त।

कह नारद इक समय, सुहाये ❀ सवल कृष्ण गोचारन आये।
ताल विपिन गोपालन संगा ❀ नष्ट करन धेनुकको अंगा ॥
तिहँ धेनुक भयसों सब गोपा ❀ गे न विपिन किहँ थलपै रोपा।
कृष्णहु रह्यो गोप हितकारी ❀ एकहि दाउ गयो बलधारी ॥
नीलाम्बर कटि वद्ध सुहायो ❀ जाको शेष पुराणन गायो।
पक्व फलन हित धर मन कामा ❀ तिहँ बनमें विचरत बलरामा ॥
निज भुज बल कंपायो ताला ❀ फल समुदाय गिरे तिहँ काला।
किय गर्जन निर्भय साक्षाता ❀ वल अनन्त विक्रम विख्याता ॥
फलके पतन शब्द सुन काना ❀ सोयो भयो जु दुष्ट महाना।
क्रोधावृत है आतुर धायो ❀ महाभयंकर सुर दुखदायो॥२०२॥

दो०—आयो सन्मुख युद्ध हित, खर बलराम समीप।
पश्चिम पग सत्वर हन्यो, दाउ वक्ष, कर टीप२०२

फिर फिर शब्द करत खर धायो ❀ श्रीबलदेव निकट सो आयो।
तब बलराम पकर लिय ताहीं ❀ पश्चिम पाद, युगम कर माहीं॥
पटक्यो तालवृक्ष बलशीला ❀ खरको एक हाथ कर लीला।
ता कारन वह द्रुम गिर गयऊ ❀ कितेक अपरहु टूटत भयऊ॥
भयो पतित खर भुवितल माहीं ❀ मैथिल यह अद्भुत भो ताहीं।
पुन दैत्येन्द्र उठ्यो ततकाला ❀ रुषा ग्रहण किय रोहिणिलाला॥
योजन सीम हटा ले गयऊ ❀ जनु गजको गज कर्षत भयऊ।
पुन बलदेव पकर कर लीनों ❀ बहुत भ्रमाय फेंक तिहँ दीनों॥
पृथवी पृष्ठ पतित सो भयऊ ❀ खर शिर भग्न आशु ह्वै गयऊ।
तत्र पाछे पुन उठके सोऊ ❀ अतिशय क्रोधवन्त ह्वै जोऊ२०३

दो०—शृंग चतुर कर शिर अपन, रूप भयंकर धार।
गोप समूह भगाय दिय, तीक्ष्ण सींग निकार२०३

आगे होय गोप सब भागे ❀ मद उत्कट खर पाछे लागे।
तब सब आय असुरको मार्यो ❀ श्रीदामा निज दंडन ताड़्यो॥
तैसे पुन सुबल मुष्टि इक मारी ❀ स्तोक पाश खर गरमें डारी।
मारी अर्जुन गेंद सकोपा ❀ पेटके हनी वरूथप गोपा॥

१ पिछलो २ जल्दी से ३ कूदके ४ क्रोध करके ५ थप्पड़।

तेजस अर्धचन्द्र दृढ़ मारी ❀ जय जय श्री वलभद्र उचारी।
इम सब सखन कोप उर धारी ❀ पाय दाउवल हिये मँझारी॥
किय ताड़ना सवन मिल वाको ❀ श्रीवलदेव भरोसो पाको।
चैंटी कहा हस्तिसे भिरही ❀ श्वानसिंह सन्मुख रह थिरही?
कठपुतरी जिम खेल मचायो ❀ वालक को तौं खेलहि भायो।
जव खरको वाढ्यो मद पीना ❀ तव वल,खर वध मनसा कीना॥

दो०-खर शृंगन सों कर्ष कर, कियो निधन तिहँकाल।
वरसाये सुर सुमन, कहि, जयजय रोहिणिलाल ३०४

सुन वहुलाश्व मुक्ति खर पाई ❀ वल कर परसन यह प्रभुताई।
गोपन निर्भय तिहँ वन माहीं ❀ ताल सुफल वहु खाये ताहीं॥
करत चाव आपुस में जेऊ ❀ परम प्रफुल्लित चित हैं तेऊ।
राम श्याम तिन लख हरषावैं ❀ कर लीला तिन मोद वढ़ावैं॥
या प्रकार वल कृष्ण उदारा ❀ मिल श्रीदामादिक व्रजवारा।
गे वृन्दावन गो गण साथा ❀ गावत गोप सुयश व्रजनाथा॥
कह नृप खर किम मुक्ती पाई ❀ धेनुक पूर्वजन्म कह गाई।
किम खर देह प्राप्त सो भयऊ ❀ कहो तत्त्वते, मो मन चह्यऊ॥
कह मुनि पुत्र विरोचन जामां ❀ वलि, वलि पुत्र साहासिक नामा।
दश सहस वामा ले संगा ❀ रमत गंधमादन सउमंगा ३०५

१ मृत्यु २ जन्मा।

दो०-नूपुर वृंदन बजन रव, अरु गावै सब ताहिं ।
तासों कोलाहल बड़ो, भयो विपिन के माहिं ३०५

मुनि गिरि दरि में सुमरन करही ❀ ध्यान कृष्णको निज जिय धरही ।
तहँ दुर्वासा मुनिको ध्याना ❀ भयो विभंग शब्द सुन काना ॥
तपसों कृर्पविग्रह[1] जिहँ अहही ❀ दीर्घ[2] शमश्रू[3] सोहत रहही ।
पद पंकज पादुक[4] बड़ सोहैं ❀ तेज तपस्यासों मन मोहै ॥
वृद्ध शरीर दण्ड कर माहीं ❀ अनल समान कांति जिहँ आहीं ।
क्रोध पुञ्ज जाको है देहा ❀ रुद्र अंश भाख्यो भव एहा ॥
जेहिं शाप भय सब जग कंपे ❀ ताते सभय वन्द पद संपे ।
ध्यान भंगते कोपित रह्यऊ ❀ अस दुर्वासा मुनिवर कह्यऊ ॥
काहि प्रमत्त भयो मन माहीं ❀ कहा गर्व गंजन कहुँ नाहीं ।
भक्त पुत्र ह्वै विपयन प्रीती ❀ करी तियनपै सुदृढ़ प्रतीती ३०६

दो०-ये नश्वर इक पलक में, हैं दुखदाई अन्त ।
इनकैं वश ह्वैकैं करी, कबहु न संगति सन्त ३०६

सो० पुन तैं मेरो ध्यान, कियो भंग यहँ आयकें ।
गर्दभ सम नहिं भान, तोको योग्य अयोग्यको ५३

बिन दुख भोगे होय न ज्ञाना ❀ ज्ञान भये सब मिटै अज्ञाना ।
ताते तुम रासभ ह्वै जावो ❀ निज दुष्कृति फल अब त्वर पावो ॥

१ दूबला शरीर २ लम्बी ३ डाढ़ी ४ खड़ाऊँ ।

सुन मुनि शाप ताप भी भारी ❀ गियो आशु मुनि चरन मँझारी ।
त्राहि पाहि कह बारम्बारा ❀ करो कृपा तुम परम उदारा ॥
तब दुर्वासा वचन उचारा ❀ ब्रज के ताल अरण्य मँझारा ।
पाय मुक्ति कृष्णाग्रज हाथा ❀ तब तू होवे फेर सनाथा ॥
हरि प्रहलादहि यह वर दीना ❀ मो कर वंश न हो तुव हीना ।
श्रीप्रभु अस विचार उर माहीं ❀ असुर हनन कीनों तहँ नाहीं ॥
भक्तन वत्सलता दिखराई ❀ परम कृपानिधि जन सुखदाई ।
धर भक्तन हित बहु अवतारा ❀ करत रहत लीला विस्तारा २०७

दो०-भक्त सतत प्रफुलित हृदय, गाय गवावत तेउ ।
स्वयं अभय अपरन करें, अस प्रभाव लख लेउ ३०७

सो० तातें रे मन मान, यदि चह नरतन सफल हो ।
करो कृष्ण गुन गान, वसन्त बिन उन लखन सुख ५४

इति श्रीकृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे अष्टादश सोपान समाप्त ।

कह नारद सुनिये भूपाला ❀ परम मनोहर कथा रसाला ।
दुराराध्य विधि आदिक तेही ❀ भये प्रकट ब्रज रसिकन नेही ॥
कीरति यशोमति गोद सुहावें ❀ ब्रजवासिन मन मोद बढ़ावें ।
जिनकी लीला ललित महाना ❀ गुप्त रहस तिन करुणा जाना ॥

---

१ गर्दभ २ कठिनता से आराधना करने योग्य ।

अष्ट सिद्धि नवनिधि व्रजमाहीं ❀ पौरि पौरि ठाड़ी रह ताहीं।
वेप बदल यावत सुरवृन्दा ❀ आवत व्रज लेखन आनन्दा ॥
जिन उन लीला नहिं अनुरागा ❀ निश्चय लखौ तिन्हें हतभागा।
अब विवाह गाथा मैं गावौं ❀ युगल कृपा मन मोद बढ़ावौं ॥
भये सगाई योग्य नृपाला ❀ कीरति सुता नन्द को लाला।
विधिहिं[1] मनावत सब व्रजवासी ❀ कहत यही जोरी सुखरासी२०८

दो०-या व्रज बस हम हे दई, कियो सुकृत यदि कोइ।
तौ व्रजपतिके सुवन की, राधा दुलहिनि होइ२०८

सो०-ले ले अञ्चल छोर, दई मनावत हैं सकल।
पसरी व्रज सब ओर, यह मधुरी गाथा सुखद५६

सुनत सकल व्रजके नर नारी ❀ लह्यो मोद बड़ हिये मँझारी।
जो विधिना होवै अनुकूला ❀ तौ यह जोरी बन मुद मूला ॥
यशुमति श्री गिरिराज मनावैं ❀ बहु विधि कर अर्चा हुलसावैं।
मांगत वर भाखत व्रजरानी ❀ हे गिरिराज आप सुखदानी ॥
याचत हौं वर जो हिय चाहा ❀ भानुभवन हो मो सुत व्याहा।
भइ गिरिवानी हे व्रजरानी ❀ सुन बानी तुवहित सुखदानी॥
बड़े सदन है श्याम सगाई ❀ सुन यशुमति निज हियहुलसाई।
व्रजगोपिन प्रति यशुमति माई ❀ प्रेम विवश भाखत पुलकाई ॥

---

१ विधाता।

कौन दिवस वह धन्य कहावे ❀ जो राधा मो सदन सुहावे ।
तब उपनन्द वाम अस भाखा ❀ नारायन पुजवे अभिलाखा।३०९

दो०-श्रीगिरिवर के वचन को, सुमर धीर हिय धार ।
पूज्यो श्रीपति प्रेमसों, परम कृपालु विचार॥३०९॥

सो० पूजा कर गिरिराय, यशुमति आई निज भवन ।
कही कथा हुलसाय, नन्दराय प्रति जो भई॥५७॥

कुँवरि नाम गुण सुन्दर रूपा ❀ सुनत नन्द आनन्द अनूपा ।
मोहनहू सुन संकुचित भयऊ ❀ आशु सैन मन्दिरमें गयऊ ॥
यहां नन्द कह यशुमति पाहीं ❀ सुनो महरि ऋषिवच ये आहीं ।
जब किय नाम करण ऋषिराई ❀ कह्यो गर्ग तब मोहिं सुनाई ॥
श्रीराधा वृषभानु दुलारी ❀ तुव लाला के प्राण अधारी ।
राधा प्राणाधार कन्हाई ❀ इम आपुस इन नेह महाई ॥
इनके गृहहू ऐसे अहहीं ❀ यह जोरी या व्रज मिल रहहीं ।
किन्तू गुप्त राख यह गाथा ❀ समय आय प्रकटै व्रजनाथा ॥
अब वो समय आय नियरायो[1] ❀ ताते यह प्रसंग प्रकटायो ।
सुन यशुमति हिय बड़ हुलसाई ❀ भाखत धन्य धन्य व्रजराई॥३१०॥

दो०-कथा पुरातन मो प्रती, अहे सुनाई आज ।
मो हियको संदेह अब, भयो नष्ट व्रजराज॥३१०॥

१ समीप आयो ।

सो० अब तुम करौ उपाय, श्याम सगाई हेतु त्वर ।
कर करुणा गिरिराय, ऋपि वानी आपि सत्य हो ५८

लाल निकट गवनी व्रजरानी ❀ यह सोचत मन माहिं सयानी ।
सोय गयो निद्रा वश जाई ❀ ब्यारू हू नहिं कियो कन्हाई ॥
रोहिणिसों कह यशुमति माई ❀ तुमहिं जगावौ कुँवर कन्हाई ।
मोसों खिजिहैं जगेहु नाहीं ❀ ताते तुमहि जगावो ताहीं ॥
रोहिणि श्याम जगायो जबही ❀ यशुमति मुदित होय हिय तबही ।
दूध भात मिश्री युत लाई ❀ दियो कौर मोहन मुख धाई ॥
पुन प्रसाद गिरिवर को जोऊ ❀ मेवा सरुचि पवायो सोऊ ।
श्रीगिरिराज प्रसाद जु पायो ❀ बढ्यो हिये आहलाद सवायो ॥
मैया यह कहँते तू लाई ❀ लागत है स्वादिष्ट महाई ।
कह यशुमति बल जाउँ कन्हाई ❀ अर्यो भोग गिरिवरको जाई ३११

दो०-ताहीते घनश्याम तुहिं, आवत नूतन स्वाद ।
जिहँ विधि स्वाद दियो नयो, तिहँ विधि देहिं प्रसाद ३११

सो० औरहु सांवल गात, घनी बात सुनि आइहौं ।
ज्यों न सुनै तुव तात, तुहिं समुझाय सुनावहौं ५९

अब बीड़ी ले सोवहु जाई ❀ मोरहिं तुमको देहुँ सुनाई ।
जननी की ठोढ़ी गह काना ❀ बाल सुभाव सुवचन बखाना॥

---

१ पिता ।

कौन बात अस नूतन मैया ❀ अबहिं सुनावो मो सुख दैया ।
कह यशुमति कनुवा सुन लीजे ❀ पुन तिन वचनन हिये गुनीजै॥
मैं गिरिवर पूजा करि आई ❀ कुण्ड दोहनी तीर सिधाई ।
छाँह देख विरमी मैं ताहीं ❀ वहत समीर सुसीतल जाहीं ॥
तहँ ढाढिनी कहूंको जाती ❀ निरखी मैंने सुभग सुहाती ।
वसनहार कीरतिके महलन ❀ वाको निकट बुलाई पूछन ॥
लई भेदकी सवही वाता ❀ मैं निज नाम छिपायो तातां ।
वानें अपि मुहिं नहिं पहिचान्यो ❀तिहँ जो मो प्रति वचनवखान्यो२१२

दो०-सो सुन आई लाज मुहिं, कहत कृष्ण कहु सोउ ।
यशुमति कह सुन लाल तुव, माखन चोरी जोउ३१२

सो० गइ कीरति के कान, तिम वृषभानहू सुनलई ।
अव घर घर वरसान, पसर गई यह बात तुव॥६०॥

ये वामा जे रहिं मो साथा ❀ सुनि आई तेऊ तुव गाथा ।
ताते वेटा चल कुल रीती ❀ नाम वापको राख सुनीती ॥
कहत कन्हैया सुन मो माता ❀ याको उत्तर देवहुँ प्राता ।
साख भरेंगे सवही ग्वाला ❀ अरु अग्रज वलदेव दयाला ॥
इम कह सेजा पोढ़े जाई ❀ सुख पूर्वक तह रैन विहाई ।
भोरहि उठे प्रसन्न महाई ❀ वदन प्रछालन कियो कन्हाई ॥

१ हे लाला ।

माखन मिश्री खाइ सनेहा ❀ मैया प्रति भाखे वच एहा ।
मैया अब सब लेहु बुलाई ❀ करलें मोकों साहु सचाई ॥
जूठ ग्रस्यो है मोकों ऐसे ❀ ग्रसे चन्द्रको राहू जैसे ।
बालक तरुण जरठ जुरि आईं ❀ यशुमति भवन इकत्रित छाईं ३१२

दो०-बैठीं सादर मुदित सब, कीनों परम सनेह ।
कान बात सुन कालकी, हम न बनावत एह ३१३

सो०-औगुन बरनें ढेर, रावल नृपकी ढाढिनी ।
कृष्ण कहत तहँ टेर, ढाढिनि कहौ कि और कोड १

में काहूसे डरहुँ न लेशा ❀ मो साधुता लखौ उर देशा ।
मुहिं का परी करहुँ जो चोरी ❀ वृथा कलंक लगावत गोरी ॥
एक दिना ग्वालिन घर माहीं ❀ गयो सखनमिल सखि रहिनाहीं ।
वह सखि नितही मोहिं बुलावै ❀ जबहिं मिले बहु लाड़ लड़ावै ॥
कबहु कबहु यदि राड़ मचावै ❀ तोहु प्रेम पूरित मन भावै ।
गयो भवन अन्तर मैं जबही ❀ छींके पै दृष्टी गइ तबही ॥
धरी कमोरी माखन केरी ❀ चैंटी वृन्द जात में हेरी ।
झट उतार नवनीत कमोरी ❀ चैंटी बीनन माहिं लगोरी ॥
तावत सखिं आई घर माहीं ❀ रही संग यह ढाढिनि ताहीं ।
लाड़ भावसों तिहँ सखि कहाऊ ❀ राज सुवन चोरी कर रहाऊ३१४

दो०-कहा चाल सिखई तुम्हें, रानी यशुमति माय ।
छोटे वय नीके नहीं, बडे कुलच्छण आय ॥३१४॥

सो०-सत्य कहूँ मैं मात, ता दिन तें वह ढाढिनी।
धर मरोर निज गात, चोर नाम मेरो धरत ॥६१॥

और कोउ कारण किल नाहीं ❀ सत्य कहत मैं तुम्हरे पाहीं।
एक मात्र गोपिन को मैंहीं ❀ प्राणाधार अहौं लख तैंहीं ॥
मैं हूँ तिनके लाड़ प्रभावा ❀ बड़ो मोद पावौं सत गावा।
अहै परस्पर प्रीती ऐसी ❀ गो वत्सन की होवत जैसी ॥
यद्यपि माखनचोरहु भाखैं ❀ तद्यपि अन्तर मुहिं अभिलाखैं।
नहिं देखैं पलमात्रहु मोकौं ❀ अति व्याकुलहौं सत कहुँ तोकौं॥
हँसी माहिं तस्कर मुहिं कहहीं ❀ उनके कहन मधुरता रहहीं।
किन्तु ढाढिनी चोर बतावै ❀ तासौं कहा हियो डरपावै ॥
सत्य कहौं नेकहु डर नाहीं ❀ भल वो जांच करैं व्रजमाहीं।
यदि तू कहे सखी मो पाहीं ❀ ले उराहनौ आवत आहीं ३१५

दो०-सो का मिथ्या है सकल, कहत श्याम मा पाहिं।
तव तहँ सखि बैठी रहीं, ते भाखत हैं ताहिं ॥३१५॥

सो० सत्य श्याम के वाक, हम तौ आवत दरस हित।
दरस न उपजत थाक, मिस उराहनैं आवहीं ॥६३॥

यदपि करत ऊधम घनश्यामा ❀ किन्तु चहत हम सो उरधामा।
बालक को ऊधम मन भावै ❀ बालक ऊधम मोद बढ़ावै ॥

---

१ शरीर।

ताते चोर नाम जो कहहीं ❁ सोउ हास्य रस झलकत अहहीं।
हमरे लाड़ हेतु घनश्यामा ❁ आवत है हम गोपिन धामा ॥
यदपि सबन को प्रेम पियारो ❁ प्रेमहि के वश जग विस्तारो।
तदपि बाल को निज वशकारी ❁ एक प्रेमही वस्तु निहारी ॥
ताते हमरे लाड़हि हेतू ❁ हमरे घर आवत ब्रजकेतू।
तब पुन कृष्ण कहत मा पाहीं ❁ अब निश्चय भो तुव मन माहीं॥
औरहु इक कारण पहिचानो ❁ सत्य सत्य निज उर में आनो।
एक दिना वह ढाढिनि जोई ❁ मिली गैल मुहिं भाखत सोई ३१६

दो०-अरे चोर चोरी करत, लाज न मानत लेश।
जब वानें ऐसी कही, मैं चुप साधि विशेश ॥३१६॥

सो०-ग्वालनि कीनी कूट, ससध्यानें की जानकर।
गयो तम्बूरा फूट, भटकत गियों जु काँखतें॥ ६४॥

ता दिनतें वह बहु रिसियाई ❁ जहँ देखत तहँ गारी गाई।
लरै बाँवरी औरन सेती ❁ मेरो नाम वृथा ही लेती ॥
यद्यपि शैल शिखर पै जाई ❁ बैठ गयो मैं मौन रहाई।
मैंने तो बहु बरजे ग्वारा ❁ तदपि लगो मुहिं वृथा जँजारा॥
अब लिख पठिये तहँ इक पाती ❁ भलो मनुष ले जाय सुहाती।
भेद यथार्थ जाय समुझावै ❁ वृषभानू की शंक मिटावै ॥
राज काज में भूलत अहहीं ❁ बड़े बड़े जे न्यायी रहहीं।
किन्तु हँसी की बातें जोई ❁ कहँ सत्य मानत हैं कोई ॥

का की हम चोरी करि आये ❀ दाम कौन को हम हर लाये ।
राजकुँवर को लेवत नामा ❀ रञ्च शंक नहिं है उर धामा॥२१७

दो०-व्रजभर में पूछौ भलै, मो साधुता ललाम ।
का के दीनों आहड़ौ, कहा बिगार्यों काम ॥३१७॥

सो०-मोर जनक व्रजराय, रानी मेरी माय है ।
चोरी करै बलाय, झूँठ बकत तिन बकन दो ॥६५॥

गोप बाल यावत व्रज माहीं ❀ तिनमें बड़ साधू मैं आहीं ।
सुन सुन श्याम वचन मनहारी ❀ अंचल ओट हँसत व्रजनारी ॥
बातन बड़ो चतुर घनश्यामा ❀ ढाहत खाई कोट ललामा ।
बहुर कृष्ण भाखत है ताहीं ❀ राज नीति के अंग जु आहीं॥
तिन पालनहू का अपराधा ? ❀ कर लेवन इक अंगहि साधा ।
यदि मैं घाट बाट कर लेवों ❀ राजनीति नीकी विधि सेवों॥
तौ यामें कछु दोष न कहिये ❀ राजनीति की पटुता लहिये ।
या प्रकार मोहन की बानी ❀ परम चतुरतासों जो सानी ॥
सुनके पूत सपूत पछान्यो ❀ ब्याह भरोसो निज मनआन्यो।
परम प्रसन्न द्विजन बहु दाना ❀ दैन लगीयशुमति मनमाना२१८

दो०-श्याम गये वनके विषे, गाय चरावन काज ।
यशुमति श्रीपति प्रेमसों, पूज्यो ले बहु साज॥३१८॥

सो०-गोवर्द्धन गिरिराय, सुरभी मनवाञ्छित प्रदा ।
तिन्हैं सनेह मनाय, माँगत राधा दुलहिनी ॥६६॥

गोकलेश की ढाढिनि जोई ❀ यशुमति अहै बुलाई सोई ।
कह्यो ताहिं बरसानें जावो ❀ सब विधि कीरतिको समुझावो ॥
मेरी दिसितें ह्वै अति दीना ❀ कहियो बात तुम बहुत प्रवीना ।
रानी अब विलम्ब. जिन कीजै ❀ मांगत गोदी ओट सु दीजे ॥
राधा मोहन की सुठ जोरी ❀ रची विधाता अंस मति मोरी ।
आपुस में जो होइ बदी ही ❀ तथा कियो विधिना मनकाँही ॥
अब काहे ताहें तज दीजे ❀ काहि न बचन सत्य निज कीजे।
पुन उनको रुख ले मृदु बानी ❀ मधुर रीति कहियो रससानी ॥
जासौं हमरे उर बड़ प्रीती ❀ जान लेहि हिय बढ़े प्रतीती ।
बरसानें वह ढाढिनि आई ❀ कीरति आपुन निकट बुलाई३१९

दो०-दिय विचार सन्मान बहु, भोजन सरस कराय ।
बूझत रानी कीरती, कुशल वृतान्त सुनाय ॥३१९॥

सो० बड़ रनवास निवास, किहँ प्रकार आवन भयो ।
यशुमति हिये हुलास, कहा नयो उपज्यो अहै॥६७॥

बड़ उदार यशुमति के पाहीं ❀ बैठन उठन सतत तुव आहीं ।
ताते मुहिं विश्वास तुम्हारो ❀ रानी जियकी बात उचारो ॥
कह ढाढिनी दई मुहिं आज्ञा ❀ आप भवन आवन बड़भाज्ञा ।
अरु निज काज हेतु मुहिं कह्यऊ ❀ परम मोद जाके जिय रह्यऊ ॥
कीरतिजीसों विनती मेरी ❀ करहु जाय कोमल बच टेरी ।
प्रथम बचन केरी सुधि दीजे ❀ बहुत दीन ह्वै विनती कीजे ॥

हे कीरतिजी होउ कृपाला ❀ अति आतुर है व्रजनृप बाला।
हमरो तुम्हरो जो सम्बन्धा ❀ आदिहि ते वन रह्यो सुछन्दा।
श्रीपति तुमको बहु यश देवें ❀ लीजे मान कह्यो लख भेवें।
कह कीरति यशुमति जो भाखे ❀ हमरो हिय अरि वहि अभिलाखे॥

दो०-राजभवन की बालिका, राजभवन में जाय।
अहै उचित मो हिय रुचत, औरहु सबन सुहाय३२०

सो० किन्तू सुन चित लाय, जो को जावत विपिन में।
देख श्याम गति आय, तिहँ मुख रीति अनीति सुन६८

भ्रमित होत मति सबहिन केरी ❀ या शंकाते करत अबेरी।
ढाढिनि कह सुन कीरति रानी ❀ यशुमति लला सकल गुनखानी॥
वदन निरखि शशि कलाहु फीकी ❀ सब विधि लायकता[२] जिहँ नीकी।
वंशि बजावन श्याम समाना ❀ है नहिं भयो न होइहैं आना॥
गोधन पालन निपुन न दूजो ❀ कियो एक विधिना अस सूझो।
तावत इक गोपी तहँ आई ❀ अंचल ओट दिये मुसकाई॥
कहन लगी ढाढिनि के पासा ❀ गोरी कारो जन उपहासा।
यदपि समंधिन को नहिं लाजू ❀ हमें त्रास अति सभ्य समाजू॥
कह ढाढनि गोरहु ते कारो ❀ जगत रीति प्रत्यच्छ निहारो।
कारो हू है जग उजियारो ❀ कारो हू मन मोहन हारो॥३२१॥

१ अन्ये २ लायक।

दो०-कारौ चख तारो सबन, कारौ जीवन सूर ।
कारौ जो जग होय नहिं, कारौ किम ह्वै दूर ॥३२१॥

सो०-अहै जु बिगरो काज, ताहिं सुधारै श्याम जग।
यह उज्ज्वलता राज, तौ चल कारे केर मग॥६९॥

कोटि बात की एकहि बाता ❀ मन दै सुनौ बाम संघाता ।
महरि वचन मानौ, नहिं टारौ ❀ होय सुजस सतगुनौ विचारौ॥
राधा नाम रूप पै वारी ❀ भुवितल भूषण एक निहारी ।
कीरति कूख भई बड़ भागा ❀ जो प्रकटी अस सुता सुरागा ॥
उत ब्रजरानी जायो काना ❀ मोहन मदन रूप अ[illegible]
पशु पच्छीहु थकित हों तबही ❀ युगल वदन निरखत हैं जबही॥
युग युग अविचल रह यह जोरी ❀ सहजहि करत सबन मन चोरी ।
प्रति दिन यशुमति कीरति रानी ❀ लाड़ मग्न मन रह सुख खानी॥
ढाढनि वच कीरति मन मानै ❀ तौहू कछु संशय हिय आनै ।
कीरति उर संशय पहिचानी ❀ गोपेश्वर शंकर सुखदानी॥३२२॥

दो०-कृष्ण राधिका युगलको, यथातथ्य जो रूप ।
और भाव तिन हृदय के, जानत रीति अनूप ॥३२३॥

सो०-अन्तरंग में संग, पलहु न बिछुरैं, को लखै ।
लीला मोद सुरंग, आये कीरति के निकट ॥७०॥

१ कृष्ण २ अज्ञान ३ समूह ।

जन्म समय राधा के आये ❀ पुन अत्र आय मोद मनसाये[1] ।
कीरति किय प्रणाम पहिचानी ❀ सादर कहत प्रेममय बानी ॥
प्रथमहु तुम्हरो परचो पायो ❀ बड़े भाग्य अब दरस दिखायो।
कछु सन्देह वस्यो मन माहीं ❀ आशु मिटावन तुम सम नाहीं॥
ताहित संशय करहुँ प्रकासा ❀ मेटौ वह पूरौ मो आसा ।
नन्दराय को सुवन सलोना ❀ वाके संग व्याह को होना ॥
मो मनमें सो खटकत अहही ❀ वाकी माय सदा अस चहही ।
खटकन कारन और नहीं है ❀ एक बात मो हिये सही है ॥
सोउ प्रकट अब तुम्हें सुनावौं ❀ सकल भेद तुव करुणा पावौं ।
कछु कछु लक्षन चोरी केरे ❀ सुनत अहौं व्रजजनके टेरे ।३२३।

दो०-प्रथम वचन यशुमति प्रती, भाखे सहज सुभाउ ।
खटकत वे अब हृदय में, कीजि कौन उपाउ ॥३२३॥

सो०-यशुमति के हिय चाह, सागर बढ़यो अगाध अति ।
कर उपचार अथाह, कुँवरि सगाई हेतु वह ॥७१॥

बिन केवट नौका जल धारा ❀ भ्रमत अहै नहिं लहै किनारा ।
मो मन गति अपि ऐसी अहही ❀ पार करौ अब मन अस चहही॥
सत्य वचन मेरो रहि जाई ❀ यशुमति मन भायो है आई ॥
अरु व्रजराज सुवन के माहीं ❀ औगुन कोउ लखै नहिं ताहीं॥

१ इच्छा से ।

वर कन्या के भाग्य बड़ाई ❀ कर करुणा मुहिं देहु सुनाई ।
जासों मो संशय मिट जावै ❀ औरहु मोद अधिक उपजावै ॥
या प्रकार कीरति की वानी ❀ सुन गोपेश्वर कछु चुप ठानी ।
भाखत कीरति प्रति सुन रानी ❀ मेरे इष्टदेव की वानी ॥
कीरति वृषरवि नन्द यशोदा ❀ वर कन्या कारन लह मोदा ।
बाढ़ै त्रिभुवन सुजस अनन्ता ❀ ब्रजवासिन के भाग्य महन्ता३२४

दो०-श्रीराधा सौभाग्य को, को कर सकै त्रयलोक ।
उत ब्रजपति को लाड़लो, शुभ लक्षण को ओक३२४

सो०-या जोरी सम नाहिं, त्रिभुवन में निश्चय कहौं ।
सत्य कहत तुम पाहिं, दुहूँ ओर बहु सुख बढ़ै ॥७२॥

अविचल राज दुहुन ब्रज माहीं ❀ ह्वैगो रंचहु संशय नाहीं ।
सत्य वचन सुन कीरति रानी ❀ मन दै करो काज सुखखानी ॥
चोरी यह चोरी नहिं मानो ❀ जउ कहत उन भेद न जानो ।
ब्रज गोपी बहु लाड़ लड़ावैं ❀ विविध मनोरथ हिय उपजावैं ॥
चतुर कान तिनकी रुचि राखै ❀ तादृश प्रीति स्वयं अभिलाखै ।
खाय छिपाय सरुचि नवनीता ❀ गोपिन हिये भाव युत प्रीता ॥
बहु पटु श्याम भाव तिन जानै ❀ तातै तिन घर जाय, न मानै ।
यासौं प्रीति रीति को ज्ञाता ❀ या सम नाहिं अपर जगजाता॥
कहु चोरी याको किम कहिये ❀ औरहु सुगुन श्यामको लहिये ।
अरु यह चोरी रह लघु काला ❀ पाछै छुट जैहैं सुन बाला ३२५

दो०-एक बात मैं कहत हौं, सुन सावध दे कान।
मन को चोर सदा रहै, नन्द लाड़लो कान ॥३२५॥

सो०-सुन बानी रस सान, कीरति को संशय गयो।
उपज्यो मोद महान, कहन सगाई दृढ़ कियो॥७३॥

कीरति कुँवरि दरस शिव पायो ❀ तासों मोद न हिये समायो।
दै असीस जय शब्द उचारे ❀ विदा माँग थल आन पधारे॥
धर योगी को रूप जु आये ❀ शंकर गोपेश्वर सुखदाये।
ते जब गये तदा ब्रजरानी ❀ योगी वचन सुमर हरषानी॥
वृद्धी वड़ी सबन बुलवाई ❀ यशुमति वचन सुनत पुलकाई।
इत यशुमति मति निश्चय ठानो ❀ श्याम सगाई आई मानो॥
उत कालिन्दी तट मनहारी ❀ वृषभानु पुर बड़ रुचिकारी।
सोह विलोक लोक में को है ❀ जो बरसानों देख न मोहै॥
स्वयं श्याम छविनिधिहु विलोके ❀ किल निज मनको सकै न रोके।
तिहँ बरसाने वृषरवि पाहीं ❀ आयो ऋषिवर गर्ग जु आहीं३२६

दो०-गूढ़ भाव सम्पन्न मुनि, त्रिकालज्ञ मतिवान।
ज्योतिर्विद्याचारि जो, दैवी गुन की खान ॥३२६॥

तेज तपस्यासों मुनिराई ❀ है प्रतीत रवि सम द्युतिराई।
शुक्ल वस्त्रधारी ऋषि सोहै ❀ मानो अपर विष्णु मन मोहै॥
पुस्तक कुश। प्रभृति कर धारे ❀ आये जनु पद्मज तनुवारे।

धर्मराज इव दंडांधि सोहैं ❁ वयोवृद्ध तप द्युति मन मोहैं ॥
शिष्य वृन्दमें सोहत कैसे ❁ तारन माहिं सुधाकर जैसे ।
या प्रभाव को लख मुनिराजा ❁ सहसा उठ्यो भूप समाजा ॥
सिरसों सद्य प्रणम्यत भयऊ ❁ बाँध अंजली सनमुख रह्यऊ ।
मुनिको सिंहासन पधराये ❁ पाद्य आदि उपचार मँगाये ॥
विधिवत किय पूजन सनमाना ❁ पूर्वक प्रेम प्रदक्षण ठाना ।
भाखत सहित विनय वृषभानू ❁ हे श्रीगर्ग भर्ग सम भानू २२७

दो०-संतनको परि अटन है, गृही शान्ति कर हेत ।
अन्तर तम हर सन्तजन, दर्शन रवि सम देत ३२७

हम सब गोप तीर्थमय कीनों ❁ जो आकर मुनि दर्शन दीनों ।
आप मूल तीरथ चल जावें ❁ तीर्थन तीर्थी कर किल आवें ॥
हे मुनि मो कन्या जब जाई ❁ नामकरण किय आपहु आई ।
ता अवसर इक गुप्त प्रसंगा ❁ मो प्रति कह्यौ आप सउमंगा ॥
अब मो कन्या योग्य विवाहा ❁ तातें लग्न करन चित चाहा ।
याते नँदराय गुन वृन्दा ❁ अरु प्रभाव कहिये सानंदा ॥
तिम तिहँलाल सुलक्षन भाखौ ❁ सतवक्ता तुम गुप्त न राखौ ।
अन्तर भेदहु तुम जिय जानौ ❁ हे प्रभु तुमतें कहा छिपानौ ॥
सुन अस वचन गर्ग ऋषिराई ❁ कह वृषरवि प्रति हिय हरषाई ।
नन्दराय तुव मित्र महाना ❁ कहा न तिहँ प्रभाव तुम जाना२२८

१ हाथ में दण्ड धारने वारे २ तेज ३ पवित्र ४ जन्मी ।

दो०-मोसे पूछत हो यदा, सुनो, कहौं तुम पाहिं।
नन्दराय वैभव निरख, कंसहु शंकित आहिं ३२८

सो० सर्व सुहृद जो आहिं, वयोवृद्ध मति विशद अति।
सदा मुदित मन माहिं, बहु निर्मान समान मति ७४

प्रजा हेतु जो परम उदारा ❀ सब प्रकार सुख देवनहारा।
मूर्तिमान सब गुणन भण्डारा ❀ श्रीनारायन प्रेम अपारा॥
या भव नंद विभव है जैसे ❀ आपहु बड़ प्रभाव युत तैसे।
आप दोउ या ब्रजके माहीं ❀ युगलचन्द्र सम राजत आहीं॥
आप योग्य है जस नन्दराई ❀ तस न आन देख्यो भव आई।
दोउन योग्यपनों बड़ नीको ❀ सत्य कहौं भावै मो जीको॥
तिहँ नँदराय सुवन गुन वृन्दा ❀ को कह सक, मूरति आनन्दा।
मुहिं तिहँ गुण अरु कर्म प्रभाऊ ❀ लागै सम श्रीपति[१] सुरराऊ॥
जिहँ छवि छटा सोह अस राजै ❀ कोटिन कन्द्रप द्युति अपि लाजै।
मृदु अरु मधुर वचन सुन जाके ❀ बड़ बुद्धिवन्तन मति थाके ३२९

दो०-अंग अंगकी छवि छटा, परम सुडौल रसाल।
मुनि मनहू को कर हरन, अस है छवि नँदलाल ३२९

सो०-जिहँ सम नहिं भव माहिं, तिहँ माधुर्य कहा कहौं।
इन सम जोरी नाहिं, है तौ आप सुता अहै॥७५॥

१ नारायण भगवान।

निरख विधाता हू यह जोरी ❀ भइ अतिशय जाकी मति भोरी।
निज सब पटुता तिहँलग फीकी ❀ निज कृति निरख,न अस छविनीकी
लख जोरी यह नित्य नवीना ❀ सतत यही चिन्तन लवलीना ।
शिशुपनते जिन अमित प्रभावा ❀ परिजन पुरजन मोद बढ़ावा ॥
ताते यह जोरी अति नीकी ❀ लगै मोहिं,कहुँ मैं निज जीकी ।
मेघ श्याम सोहे नँदलाला ❀ विद्युत गौर वर्ण नव बाला ॥
जिम घन बिजुरी सोह रसाला ❀ हेम बेलि जिम श्याम तमाला ।
तथा युगल, ये हैं छबि धारी ❀ कोटिन रति कन्द्रप मनहारी ॥
औरहु गुप्त बात तुम पाहीं ❀ कहि राखी सुमिरो मन माहीं ।
जो दोउन के ग्रह अस आहीं ❀ मिल जोरी ये आपुस माहीं३२०

दो०-करिहैं बहुबिधि रसमयी, केलि परम रसदाय ।
प्रीति परस्पर होय अस, चन्द्र चकोरि लजाय ॥३२०॥

प्रेमसिन्धु इनहीते प्रकटे ❀ है निर्बन्धे[1] कहूँ नहिं अटके ।
घेरे सो व्रजभरको आई ❀ कछु कछु अपरस्थलहू जाई ॥
मध्य गहन अति श्रीवन माहीं ❀ ज्ञानी ध्यानी डूबें ताहीं ।
या विधि रस समुद्र विस्तारो ❀ सुधा स्वाद लागै जहँ खारो ॥
इनहीते प्रकटे सो आई ❀ सुनो सत्य वच वृषिरविराई ।
ताते मेरो मत येहि अहई ❀ या जोरीते बहु सुख रहई ॥

१ निर्बन्धन ।

तव सम्बन्धि योग्य नँद जैसे ❀ जोरी राधा कृष्णहु तैसे ।
ताते सुता नंद गृह देवौ ❀ अलभलाभ वृषरवि तुम लेवौ ॥
अपर सकल अपि लख यह जोरी ❀ ह्वैं कृतार्थ किल,यह मति मोरी।
जो इन रूप माधुरी माहीं ❀ भये मग्न निकसे पुन नाहीं३३१

दो०-भवकी अतिदृढ़ शृंखला, तोर सहजही जेउ ।
मोद महोदधि मग्न ह्वै, भव दुख नासैं तेउ ॥३३१॥

अस सुन वृषभानू मन माहीं ❀ भयो प्रमोद कहै को ताहीं ।
पुलकावलि रोमन भइ भारी ❀ गदगद स्वर कह वचन उचारी॥
धन्य धन्य हो हे मुनिराया ❀ मेरे मन बहु मोद बढ़ाया ।
मो कन्या गुण कर्म प्रभावा ❀ त्रिकालज्ञ मुनि मुहिं समुझावा ॥
भो कृतार्थ तव दर्शन आजू ❀ तथा मोर गृह सकल समाजू ।
अब मोरी यह मनसा अहई ❀ कन्या लग्न करन मति चहई ॥
आप सहज ही यहाँ पधारे ❀ गुप्त भेद हू कह्यौ विचारे ।
ताते हे कृपालु महराजा ❀ आपुहि के कर है यह काजा ॥
यह मो मन पूरहु अभिलासा ❀ जान मोहिं निज अपनों दासा ।
अस सुनकें मुनि गर्गाचारी ❀ कह्यौ भानु प्रति हिये विचारी३३२

दो०-हे वृषभान सुजान अति, यदि ह तुव अभिलास।
तौ भल साज सजावहो, पूरहुँगो तव आस ॥३३२॥

---

१ समुद्र ।

कह मुनि नारद मैथिल राई ❀ युगल सगाई सुन सुखदाई ।
जाहिं सुने भव गोपद होई ❀ राधाकृष्ण भक्ति लह सोई ॥
गर्ग वचन सुनकें वृषभाना ❀ पठये दूत जु परम सयाना ।
बहु पटु ज्योतिर्विद्या माहीं ❀ महाभाग ऋषिवर जे आहीं ॥
तिन्हें बुलावन हित अति सादर ❀ गयो दूत सुन वच युत आदर ।
गालव व्यास पराशर गौतम ❀ अरु देवेज्यं अंगिरा सत्तम ॥
ये ऋषि मुख्य तुरन्त सिधाये ❀ युगल विवाह सुनत हरषाये ।
आये मुनि लख कियो प्रणामा ❀ श्रीवृषभानु मुदित उरधामा ॥
अर्घ्य आदि उपचार मँगाई ❀ किय पूजन विधिवत हुलसाई ।
कर प्रदक्षणा सवन सनेहा ❀ कहे वचन वृषरविवर एहा२२२

दो०-करुणा पूरित सकल मुनि, जगत पूज्य तुम होउ ।
पूर्ण ज्ञान विज्ञान मय, सुनो विनय मम जोउ २२३

यह मो कन्या सवन सुहावै ❀ अधिक कोटि सुतते मुहिं भावै ।
ताते तुम अरु गर्गाचारी ❀ ज्योतिष शास्त्र निपुण बहुभारी॥
कहु विचारकें जातक जोऊ ❀ जाते मोहिं मोद बड़ होऊ ।
सुन वृषरवि वच मुनि तहँ रह्यऊ ❀ तिनिमें गर्ग मुनी अस कह्यऊ ॥
भाख्यो साधु भानु मतिवन्ता ❀ किन्तु सुनो जु यथारथ तन्ता ।
जे प्राकृत जन्में जग माहीं ❀ तिनहित जातक दर्शन आहीं ॥
ये साक्षात नंद सुत केरी ❀ हैगी प्राण रूप अस हेरी ।

१ चतुर । २ बृहस्पति । ३ श्रेष्ठ वार्ता ।

जो याको इक वेरहु नामा ❀ उचरैं प्रीति सहित नर वामा ॥
वाको परा प्रीति यह देवै ❀ सतत इष्टको सो जन सेवै ।
तव गालव मुनिवरनें कह्यऊ ❀ जो तप तेज-पूर्ण तहँ रह्यऊ ३३४

दो०-तव कन्या साक्षात यह, सब जग करे पुनीत ।
याके नाम प्रभावसों, शुक मुक्तीकर मीत ॥३३४॥

कह वृहस्पति सुरगुरु बुधवाना ❀ सुनौ भानु वड़भाग सुजाना ।
यह कन्या जग पावनकारी ❀ है हैं अस हम कहत विचारी ॥
इन्द्रादिक नित अर्चन करही ❀ विश्वभूत है घोप विचरही !
कहत व्यास सुनिये गोपेशा ❀ आप अग्रे कहुँ धर उर देशा ॥
तव पुत्री को नाम उचारे ❀ यदि इक वेर ताहिं भवतारे ।
हरि आराधक जे जग माहीं ❀ तिन सर्वस्व यही है ताहीं ॥
कहे पराशर वृपरवि पाहीं ❀ धन्य धन्य तुम या भव माहीं ।
जो तव गृह प्रकटी यह कन्या ❀ है हरि प्रिया प्रेम रस सन्या ॥
ताते तुव सुभाग्य क कोऊ ❀ कहन समर्थ न इह भुवि होऊ ।
कह गौतम सुन भानु उदारा ❀ सत्यहि मो वच घोप भुवारा३३५

दो०-तरसत सूर्यादिक अमर, याके दर्शन हेतु ।
तद्यपि मुखपंकज रुचिर, देख न सक छविकेतु ३३५

कह अत्री प्रभु पद अनुरागी ❀ हे वृपभानु सुनौ वड़ भागी ।
हरि इनके दासादि समाना ❀ हे गो पराधीन इम माना ॥

१ आगे ।

कहा अपर मैं भाखौं तोहीं ❀ अस निश्चय सूझी हिय मोहीं।
कह अंगिरा सुनो व्रजपाता ❀ यह जो तव कन्या साक्षाता ॥
विश्व पुनीत कारिणी हैहैं ❀ महाभाग्यनिधि तुहिं सुख दैहैं।
किल यहि हारहैं मन हरि केरो ❀ सत्य सत्य मैं तुम प्रति टेरो ॥
कह नारद निर्मल मन वारे ❀ जे मुनिवर तिन वचन उचारे।
ते सुनकें वृषरवि मन माहीं ❀ महाश्चर्य आयो है ताहीं ॥
मनमें कह मो भाग्य महाना ❀ आज न मानौं अपन समाना।
जो अस कन्या मो घर माहीं ❀ प्रकटी जिहँ सम त्रिभुवन नाहीं॥

दो०-मुनिन माहिं तहँ जो रह्यौ, व्यास जनक धीमान।
रुचिर फलक में लिख दियो, लग्न चक्र वृविवान ३ ३६

सो०-पुन नवग्रह के ठाम, सांकेतिक थापन किये।
तट राधिका ललाम, मूर्तिवन्त ह्वै ते सकल ॥७६॥

बद्धाञ्जलि ठाड़े ह्वै दीना ❀ पृथक पृथक प्रमुदित स्तुति कीना॥
प्रथम सूर्य जिहँ प्रफुलित अंगा ❀ करत स्तुति मन महद उमंगा ॥
वृन्दावनेश्वरी प्रभु प्यारी ❀ जगदीश्वरी सबन सुखकारी।
सदा रासमंडल की शोभा ❀ तव लावण्य सतत हरि लोभा।
नमहुँ पाद पंकज युत प्रीता ❀ बसौ नित्य कृपया मो चीता ॥
कहत शुक्र जे ग्रह सूर्यादी ❀ करहिं कृपा यहि देहि प्रसादी ॥

१ व्रजराज वृषभानु २ बुधिवान ३ समीप श्री प्रियाजी के।

श्रीवृषभानु सुता पद कंजू ❀ तिहँ पावौं सन्तत सुख मंजू ।
कहत शनी भव मंडनि राधे ❀ श्रीवृषभानु सुता गतबाधे ॥
तव पद रज जब करिहौं स्नाना ❀ तब मन्दहू अमन्द प्रमाना ।
कहत राहु उर धर अनुरागा ❀ श्रीराधा पद पद्म परागा ३३७

दो०-तिहँ रजसों मो असुर तन, कब पवित्र ह्वै जाय ।
कहत केतु वह धन्य दिन, प्रकटी राधा आय ३३७

कहत सोम बहु सौम्य स्वरूपा ❀ छवि विलोक श्रीप्रिया अनूपा ।
नाम मात्र उचरै जो याके ❀ पाप ताप नासै वह ताके ॥
अहैं प्रफुल्लित वदनी श्यामा ❀ सुशोभना हरि सेव्या वामा ।
ताहिं नमौं मैं सहित सनेहा ❀ सदा बसौ मोरे उर गेहा ॥
भोम कहै वन्दौं साक्षाता ❀ भानु सुता पद कंज सुहाता ।
इनकी पद पंकज रज चहहीं ❀ अच्युत आदिक सुर जे अहहीं ॥
बुद्ध कहत वृषरविकी कन्या ❀ तिहँ पद पद्म करन हित धन्या ।
तामें मो प्रीती दृढ़ होवै ❀ जाते अविचल सुख जन जोवै ॥
देह गेह को नेह जु आहीं ❀ तामें रंचकहू सुख नाहीं ।
कहत गुरू निजको धन लेखौं ❀ या ब्रज में जब राधा पेखौं ३३८

दो०-इनके पद पंकज युगल, ध्यावत हैं दिन रात ।
सनकादिक मुनिवर सतत, जिन्हैं न आन सुहात ३३८

परम वल्लभा यह हरि केरी ❀ प्रकटी जग तारन अस हेरी ।
कह नारद अस स्तुति बहु कीनी ❀ सुन्दर सरस नेह रस भीनी ॥

बार बार वन्दत सब देवा ❀ जानु यथार्थ अहै जो भेवा।
श्रीवृषरवि पद पद्मन माहीं ❀ वन्दें मनसों पुन पुन ताहीं॥
स्तुति अवसान समय सब देवा ❀ निज निजथानविराज रहेवा॥
कृष्ण योगमाया परभावा ❀ गुप्त भेद तिन हिय प्रकटावा॥
या विध नवग्रह कृत स्तुति सुनकें ❀ महदाश्चर्य हियो निज गुनकें॥
दिये दान द्विजगण अति नाना ❀ कियो याचकन बहु सन्माना॥
स्वर्ण माल पट वस्त्रन युक्ता ❀ तीन लक्ष गो युत मणि मुक्ता॥
बहु मूल्य बहु वस्त्रहु दीनें ❀ विप्रन प्रति युत नेह नवीनें३३९

दो०-स्वर्ण रजत भाजन दिये, विप्रन प्रति युत प्रीत।
औरहु जो कछु दान किय, को कह सकै हे मीत॥३३९॥

अन्नदान की महिम बड़ाई ❀ शतगिरि अन्न दिये हरषाई।
पूर्णशील सम्पन्न मुनीसा ❀ देवत बहु विध मुदितअसीस॥
वृषरवि प्रभृति मुदित बहु भारी ❀ तथा मुदित सबही नरनारी।
देख महोत्सव सकल सराहैं ❀ देव वृन्दअपि निरख उमाहैं॥
ता अवसर वृषरवि के पाहीं ❀ कहतगर्गऋषि प्रमुदित आहीं।
अहो भानु अब देरि न कीजे ❀ हृदय भावको अब कहिदीजे॥
या विध गर्ग वचन सुन काना ❀ वागदान किय मुद वृषभाना।
तिहँ अवसर जय जय धुनि छाई ❀ सुरन सुमन वृष्टी झर लाई॥
भयो अहै सुख जो तिहँ काला ❀ कहन सकै भल बुद्धि विशाला।
सब वृषरविको देत बधाई ❀ सखीवृन्दकीरति ढिंगआई ३४०

१ चाँदी

दो०-विविध भाँति कीरति प्रती, देत बधाई वाम।
विधिनानें कीनी भली, राधा पायो श्याम ॥३४०॥

सो०-श्यामहु पूरण काम, पाय राधिका को भयो।
यह जोरी सुखधाम, निरख परम सुख हम लहैं।७७।

अब वृषभानू पुरके माहीं ❀ घर घर धूम होय रहि ताहीं।
राधा की मोहन के संगा ❀ भई सगाई मोद अभंगा ॥
कीरति यशुमति दोउन आसा ❀ पूर्ण करी श्रीपति सुखरासा।
ता अवसर नन्दीश्वर[1] देशा ❀ स्वयं सारदा गोपी वेशा ॥
यशुमति के मन्दिर में आई ❀ शुभवृतान्त तिहँ दियोसुनाई।
व्रजरानी वड़ आदर कीनों ❀ अतिप्रफुलितमुख वाकोचीनों॥
चौकी पै वाको बैठायौ ❀ वाके वचन सुनन मनचाह्यौ।
यशुमति धाम विलोकी वामा ❀ नयो रूप मन हरन ललामा॥
है उत्कंठित सबरो गामा ❀ सुन सुन धावत आवत भामा।
कह गोपी वड़ भागिनि वाला ❀ कहांबसतत् निपुनविशाला२४१

दो०-समाचार देख्यो सुन्यो, कहु हम पाहिं कृपाल।
तुम्हरे सरस वचन श्रवन, हम उत्कण्ठित वाल॥३४१॥

सो०-कहत यशोमति पाहिं, सुमति नगर मो वास नित।
वृषभानू पर माहिं, राति रही हौ एकही ॥७८॥

---

१ नन्दगाम

घर घर मंगलचार महाना ❀ होय रह्यो मनहर वरसाना ।
तुव सुतके विवाहकी वाता ❀ निश्चयसों ह्वै रहि सुखदाता ॥
वली भाग्य व्रजरानी तेरो ❀ वैठी कहा वधाई टेरो ।
वहु दिनतें तुहिं आस जु रह्यऊ ❀ सो दिन आज प्राप्त ह्वै गयऊ ।
कीरति वृपरवि आपुन पाहीं ❀ सव परिवार जोर घर माहीं ॥
वात प्रकट सव प्रति कहि दीनी ❀ घर घर भई प्रचार नवीनी ।
आज कालही तुव लालाको ❀ तिलक वेगही ह्वै सुन ताको ॥
भयो दाहिनें आज विधाता ❀ करो दूर संशय हे माता ॥
चट दे उठी गाइ व्रजरानी ❀ कहा देउँ याको सुखदानी ।
या विधि इत सोचत उर माहीं ❀ उत घेर्यो वड़ प्रीतिहु ताहीं ३४२

दो०-उभै सिन्धु आनन्द में, पुन पुन गोता खाय ।
तव वोली रोहिणि महरि, सावधता उर लाय३४२

सो० टीको आवन हेतु, मंगल साज सजावहो ।
जा मंगल सुखकेतु, किये परिश्रम विविध विधि ७९

करुणा श्रीगिरिराज निहारी ❀ अवस आसके पूरणहारी ।
रोहिणि वचन सुनत व्रजरानी ❀ सावधान भइ मोद समानी ॥
तिहँ वामाको वहु पहिराये ❀ पट भूपण वहु मुल मनभाये ।
औरहु व्रजवनितन वहु दीनें ❀ सिमटे केऊ भार नवीनें ॥
देत असीस चली वह नारी ❀ दिय लुटाय मन प्रमुदित भारी।
गोपिन प्रेम निहार महाई ❀ सारद सुमती गई विकाई ॥

कह मुनि वरसानेके माहीं ❀ वृषभानू प्रमुदित अति आहीं।
पण्डित वर निज निकट बुलाये ❀ तिनतें निर्मल सुदिन सुधाये॥
पुरजन गुरुजन वृन्द बुलाये ❀ सभा बनाय कहत समुझाये।
कह्रा प्रथम देवें सो भाखो ❀ उचित कहत संकोच न राखो॥३४२

दो०-वृषभानू के वचन सुन, कहत सकल युत मोद।
सुन भैया जबतें भई, राधा तुम्हरे गोद॥३४३॥

सो०-तबतें तुव घर माहिं, रिद्धि सिद्धि नवनिद्धि नित।
वैभव तुम सम नाहिं, स्वयं धनद प्रभृतिनहुको॥८०

जिहँके प्रकटत विभव अनन्ता ❀ तहाँ उचित अनुचितको अन्ता॥
यहँ तो जिहँ विध उठें तरंगा ❀ तिहँ विध करो मोद रंग रँगा॥
मर्यादाको यहँ नहिं काजू ❀ जिम भावे तिम करो सु छाजू।
वृषभानू सुन वचन उदारा ❀ रोम रोम आनन्द अपारा॥
वसन रतन जिन मूल न होई ❀ शकट भराय भेज दिय सोई।
पुन सुठ गोवृन्दनके वृन्दा ❀ हय गय श्रृंगारित सानन्दा॥
मागद वन्दीजन अरु चारन ❀ भाट नाइ चल सुजस उचारन।
मंगल ठाठ विचित्र कराये ❀ विप्र वेद उचरत हरषाये॥
जहँ तहँ होवत मंगल गानों ❀ पञ्चशब्द बाजेन बजानों।
अस शोभा अरु मोद महाना ❀ निरखें सुर चढ़ि गगन विमाना॥

दो०-निकसे जब मिल नगरतें, भै शुभ सगुन अनन्त।
नंदगाम सन्मुख चलत, सुर सुमनन वरसन्त॥३४४॥

सो०-मिल गोपन ब्रजराज, उच्च अथाई राज रह।
शुभद घरी ससमाज, किय प्रवेश नेगिन तहाँ॥८१॥

दइ असीस भूदेवन ताहीं ❁ नन्द नम्यो द्विज चरणन माहीं॥
जब वृषभानु नगरतें आये ❁ श्याम सगाई करन मुदाये॥
तब ता समय नन्दके द्वारे ❁ नौबत गहकि बजी तिहँ वारे।
सुनत दूरतें धाये आये ❁ गोपवृन्दके वृन्द सुहाये॥
प्रेम भरिमें श्रीव्रजपाता ❁ नहिं सम्हार सकहीं निजगाता।
भीज भीज आनँद जल माहीं ❁ कहत विप्रसों या विध ताहीं॥
अहो विप्रवर रावल राजा ❁ लिय अपनाय हमें, कर काजा।
उनके गरुवे गुन अधिकाई ❁ कहा गाय मैं देहुँ सुनाई॥
निरख घरी शुभ चौक रचायो ❁ प्रमुदित यशुमति वधुन बुलायो।
कृष्ण कंजदल नैन सुहाई ❁ मनहर किय शृंगार बनाई॥२४५॥

दो०-फिरत बुलावो नगर में, सुनत सबन उर माहिं।
आवन उत्कण्ठा बढ़ी, को कह सकही ताहिं॥२४५॥

सो०-गाम गामतें गोप, अरु गोपिनके वृन्द बहु।
आवत उर बड़ चोप, लाल गीत गावत मधुर॥८२॥

नन्दराय को भवन सुहावे ❁ शोभा सिन्धु सदृश मन भावे।
जनु सावन सरिता उमगाई ❁ धाय मिलत किहँ थलन रुकाई॥
तरुण वृद्ध अरु बालक वृन्दा ❁ आये नन्द सदन सानन्दा।
बाजन धुनी अपर धुनि गाना ❁ जनु नव घनकी गाज सुहाना॥

केसरसों निज अजिर लिपायो ❀ पुन तहँ मोतिन चोक पुरायो।
मणि चौकी बैठार्यो काना ❀ यां छवि को मोरे उर ध्याना॥
नेगी श्री वृषरवि के जेते ❀ लिय बुलाय भीतरमें तेते।
तिन, निआसिका मोहन पाहीं ❀ आय सुनाई मुद मन माहीं॥
नन्द सुवनको टीको कीनों ❀ वेद विधी सों हर्ष नवीनों।
पाछे रावलपतिको जोऊ ❀ रह्यो पुरोहित प्रमुदित होऊ३४६॥

दो०-सकल साज सुन्दर सुभग, दिय गिनाइ तिन पाहिं।
भूम भूम गावत मुदित, गोरी गारी ताहिं॥३४६॥

सो०-अरु भाखत हैं वाम, आज सरिस दिन आजही।
विधि ने रच्यो ललाम, विविध यतनको फल मिल्यौ॥

नन्द यशोमति उर आनन्दा ❀ को कह सक भल हो कविचन्दा।
होय रही नभ जै जै वानी ❀ जै जै धुनि व्रज भूमि समानी॥
इत उत विविध बाजने बाजे ❀ जनु मृदु मधुर धुनी घन गाजे।
पुन पुरजन अरु सब परिवारा ❀ समध्याने के मनुज उदारा॥
नन्दराय ज्योनार रचाई ❀ विविध भोग सामिग्रि सजाई।
जेंवत हुलसत कछु बतरावें ❀ दुहुँ दिशिके बड़ भाग्य बतावें॥
गिरिवर अनुग्रह महरि मनावे ❀ पूर्ण आस पुन पुन जिय आवे।
नन्दराय ह्वै अति आधीना ❀ जवहि जिमाय विदातिन कीना॥
लियो मोल हमको वृषभाना ❀ नयो नेह किय नन्द वखाना॥
इम कह व्रजपति बैठ अथाई ❀ बकुचा[1] खोल दियो हरषाई३४७॥

---

[1] गठरी।

दो०-निज कर पहरावत सवन, बोल बोल तिन नाम।
सुन्दर भूषणहु तिने, पहिराये सुललाम ॥३४७॥

सो०-वहुत द्रव्यहू दीन, पुन तुरंग जवेमान दिय।
शुद्ध नेह रसलीन, विदा किये हित मानकों॥८४॥

फूल फूलके गोपन वृन्दा ❀ मिलते कृष्णसों युत आनंदा।
तुव वन गई, कहें का मैया ❀ भई सगाई नृपघर सुख देया॥
अव तू हमसे वदिहै काहे ❀ निज सम अपरनको नहिं चाहे।
चोरी हु छिप गई कन्हैया ❀ जासों डरपत ही तुव मैया॥
गोप वालकन की अस वानी ❀ सुन तिन प्रति भाखत व्रजरानी।
यों न कहो भूलहु सव लाला ❀ ज्यों त्यों भई सगाइ रसाला॥
भई विधाता जव अनुकूला ❀ भयो काज यह सव सुखमूला।
सुनलो सजन सदन के लोगा ❀ चोर नाम तज देहु अयोगा॥
जो रुचि सो लीजै सव ग्वाला ❀ सुन अस धाये व्रजके वाला।
पट भूषन तिनकों पहिराये ❀ झगर लेत सव हिय हरषाये३४८

दो०-मेवा आदिक वस्तुसों, लइ निज गोद भराय।
वहु विध मंगल भै उदय, ता दिनतें व्रजमाय३४८

सो०-यशुमति मन आनन्द, को कह सकै तिहँ समयको।
छूटे सव जग द्वन्द, जिम योगीश्वर जनन को॥८५॥

१ शीघ्रगती वारे।

वहु मूल्य ओढ़नी सुहाई ❀ मोद मग्न यशुमती पठाई ।
श्री वृषभानु कुँवरिकी गोदी ❀ भरी मोदकनसों है मोदी ॥
इत उत मंगल भये महाना ❀ कहँ लग वरनें लघु मतिवाना।
दिन दिन वाढ़त सुख अधिकाई ❀ शिव विधिहू को दुर्लभ गाई ॥
हे नृप सत सिद्धान्त वखानौं ❀ राधा कृष्ण एकही मानौं ।
एकहि द्विधा रूप दरसावैं ❀ रसिकन के मन मोद वढ़ावैं ॥
पलहु न विछुरन इनको होई ❀ तत्त्व देश में जानत कोई ।
लीला देश माहिं जो भासे ❀ सो तिन इच्छासे हि प्रकाशे॥
तहँ अपि रसिकन हित रसलीला❀करत युगलवर यहि जिन शीला।
साधारन जनहू सुन काना। ❀तर विन श्रम भवसिंधु महाना२४९

दो०-भगवत लीला तत्त्व को, जानत जे जिय माहिं ।
तिनको भवके द्वंद जे,कवहु परस सक नाहिं ३४९

सो०-कह वसन्त कर गान, युगलेश्वर के सुगुन नित।
लीला रस कर पान,लगैं अपर रस विरस चित ८५

॥ इति श्री कृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे एकोन्विंशति सोपान समाप्त ॥

कह नारद सुन मैथिल राई ❀ अव आगे की कथा सुहाई ।
तत्पश्चात तत्र शुभ काला ❀ श्री वृषरवि युत मोद विशाला॥
शास्त्र विचक्षण विप्र वुलाये ❀ तिन प्रति कह वृषरवि हरषाये ।
हे द्विजगण भाखौ मो पाहीं ❀ शुभ विवाह वासर जो आहीं ॥

भाख्यो मुनिन आज दिन जोऊ ॐ तिहँ ते पोड़श दिन जो होऊ।
हेत विवाह परम शुभ आहीं ॐ जहँ लत्तादि दोष-लव नाहीं॥
यह हम प्रथमहि सवन विचारा ॐ जो अब तव तट कह्यो मुरारा।
अस सुन नंदभवन के माहीं ॐ लग्न पत्रिका पठई ताहीं॥
अश्व अलंकृत करि वर याना ॐ कंचन वहु पट रुचिर महाना।
श्रीफल संयुत पठये ताहीं ॐ श्री वृषभानु मुदित मन माहीं३५०

दो॰-तदनन्तर उत्सव बढ्यो,दोउन के गृह माहिं।
इत श्री वृषभानू भवन,नंद सदन उत आहिं॥३५०॥

पुन दोउन घर दोउन अंगा ॐ सुष्ठु तेल वपनादि उमंगा।
करन लगीं ब्रजतिय युत प्रीती ॐ गावत रसमयि वहु विधिगीती॥
दिन विवाह के सब गोपाला ॐ तथा गोपिगण मोद विशाला।
विविध भांति शृंगारन करहीं ॐ यथातथ्य को कवी उचरहीं॥
जिनहिं देख रति काम भ्रमाये ॐ हमते अधिक कहांते आये।
जिनके तट हम छविनिधि दोऊ ॐ अहो सकल विध लज्जितहोऊ॥
या विध गोपि गोप सब ताहीं ॐ ले वहु भेंट दुहुन घर जाहीं।
सुर गण जय जय धुनि उच्चरहीं ॐ प्रमुदित पुष्प वृष्टि वहु करहीं॥
गोपिन गीत मनोहर करकें ॐ भो सुरलोक अलंकृत वरकें।
चकित देव अगंना सिधावें ॐ लख छवि सुनरवविस्मयपावें३५१

दो॰-याहि समय नंदरायजी. आये साज वरात।
नाना वाहन मनहरन,देखतही वन आत॥३५१॥

गोपि गोप कर विविध शृंगारा ❀ राज रहे जिन सोहँ अपारा ।
वहु प्रकार बाजे वज रह्यऊ ❀ जनु घन गर्जन अस,सवकह्यऊ॥
विप्र वृन्द धुनि वेद उचरहीं ❀ जिहँ सुन सवके मन अपहरहीं।
मागध सूत वंदिजन जेते ❀ वंश प्रशंस गाय रह तेते ॥
सवके उर प्रमोद वड़ छायो ❀ मनहुँ प्रमोद रूप धर आयो ।
सुन्दर समलंकृत हय सोहैं ❀ तापै बैठ कृष्ण मन मोहैं ॥
मनहर दूलह सोह विलोकी ❀ कोटि कन्द्रपन की छविरोकी ।
रुचिर मोर मन मोह चढ़ावै ❀ तहँ सेहरो सोह वड़ पावै ॥
मरवट पानन चिती भई है ❀ भाल देशपै, सोह नई है ।
नयनन काजर रतिगन मोहै ❀ अरुणअधरमनहरछवि सोहै३५२

दो०-वदन मयंक मयंक छवि, अति फीकी जहँ लाग ।
जे निरखत ते मानहीं, या भव निज वड़ भाग॥३५२॥

सो०-मंद मंद मुस्कान, चंचल नयनन निरखनों ।
छवि समुद्र लख कान, रहे कौन किहँ धैर्य वर॥८७॥

सोहत गर वहु रतनन माला ❀ जगमगात अति सोह विशाला।
खीमखाप को जामा सोहै ❀ मोतिन झालर युत मन मोहै ॥
जिहँ छवि निरख चकित ह्वै नैना❀ चमकत विजुरी सम छविऐना।
कर पंकज पंकज छवि सोहै ❀ जिहँ सौरभ सब दिशि मनमोहै॥

१ शामिन २ घोड़े ३ चन्द्रमा ४ लाज ।

चरण कमल नूपुर ध्वनिकारी ❀ चमक दमक जिनकी हैं न्यारी।
या विध राज अश्व पै सोहै ❀ कर दर्शन विरक्त मन मोहैं ॥
या विध नखशिख सोइ अपारी ❀ पूर्ण रूप को कहै उचारी ।
चारहुँ ओर सोह व्रज गोपी ❀ मूर्तिवंत जनु छवि यहँ ओपी ॥
या प्रकार मनहरन बराता ❀ आई वृपरवि पुर साक्षाता ।
श्रीवृपरवि मिल गोप समाजा ❀ बहु प्रकार सज मंगल साजा३५३

दो०-जा आगे निज पुरि विषे, सबको लिय पधराय ।
यथा योग्य सत्कार किय, दिय जनवास सुहाय३५३

सो०-मिले परस्पर माहिं, नन्दराय वृषभानु है ।
सो सुख कह सक नाहिं, बड़े बड़े कवि अनुभवी८८

मिलीं यशोदा कीरति दोऊ ❀ अकथ प्रेम बाढ्यो कह कोऊ ।
कृष्ण कमल मुख जो छविऐना ❀ कीरति पुन पुन निरखत नैना॥
मनमें कहत मिली भल जोरी ❀ कहा कहों मो मति भइ बौरी ।
यह घनश्याम ललाम सुहावै ❀ वह गोरी विजुरीसी भावै ॥
या विध सबसों मिल हरपायें ❀ कीरति वृपरवि बड़ सुख पाये।
सकल देवगण तियन समेतू ❀ अंतरिक्ष ठाड़े सुख हेतू ॥
समय समय पुष्पन बरसावें ❀ प्रफुलित चित जय जय ध्वनि गावें।
दुहूँ ओर बाढ्यो बहु शर्मा ❀ योग्य विवाह करहीं शुभ कर्मा॥
जस शास्त्रज्ञ विप्र कह नीती ❀ करहीं लोक वेद तस रीती ।
वस्तु विवाह साज बहु साजे ❀ वर वधू आ मंडप में राजे ३५४

दो०-यदा अग्नि परिक्रम करन, उद्यत मे तहँ दोउ ।
नंदनंदन वृषभानुजा, परम प्रफुल्लित होउ ॥३५४॥

अग्नि देव तव आगे ठाढ़ो ❀ दर्शन करत नेह हिय बाढ़ो ।
कहत नाय शिर संपुट पानी ❀ मृदु स्वर सरस सलोनी बानी ॥
हे नंदनंदन परम पुनीता ❀ तव पद पद्म नमहुँ युत प्रीता ।
हे वृषभानुसुता सुखदाई ❀ तुव पद कंज नमहुँ शिर नाई ॥
कहा तुच्छ मैं योग्य तुम्हारी ❀ करहु जु परिक्रम आप हमारी ।
आप युगल पद पद्म परागा ❀ धरौं सदा निज शिर युत रागा ॥
अस सुन कृष्ण कहत तिहँ पाहीं ❀ सुनौ अग्नि सुर मो वच आहीं ।
वृन्दावन पशु पक्षि परागा ❀ अपि वन्दौं मैं युत अनुरागा ॥
तौ पुन कि तुम देव शरीरा ❀ तुव हिय वसत प्रीति हे धीरा ।
इम कह श्रीयुत श्रीवन नायक ❀ किय परिक्रमा भक्त जन सायक ॥३५५

दो०-यही शील अति प्रकट है, श्रीप्रभु को सुखदाय ।
सदा भक्त को मान दें, धन धन श्री ब्रजराज ॥३५५॥

परम महोत्सव सब मनहारी ❀ देखत दम्पति मुद नरनारी ।
के नाचैं के गावैं गीता ❀ के बजाहिँ वेणू युत प्रीता ॥
करन कार्य अतिशय हुलसावैं ❀ के अति आतुरता युत धावैं ।
के आवें जावें के ताहीं ❀ मग्न महोत्सव में सब आहीं ॥
के नंदहिं बड़ भाग बखानैं ❀ के वृषरवि धन धन्य प्रमानैं ।
के कहिं भली बनी यह जोरी ❀ जिनहिं निरख विधि की मति बोरी ॥

के तहँ वर वधु दर्शन हेतू ❁ आवत हुलसावत चित तेतू।
अनिमिष दर्शन करहीं केऊ ❁ रहत अतृप्त मुदित हिय तेऊ॥
के कहिं या इन युग्म समाना ❁ त्रिभुवन में हैहैं को आना?।
के कहिं ना ना इन सम नाहीं ❁ निश्चय लोक चतुरदश माहीं२५६

दो०-के नखशिख माधुर्य छवि, निरख भुलें सुधि काय।
वार वार बलि जात हैं, केइ दृग दृगन मिलाय॥२५६॥

या प्रकार के निज निज कामा ❁ भूले मग्न श्याम अरु श्यामा।
अघर महोत्सव मग्न महाना ❁ जिन सूझै नहिं अपन न आना॥
सर्व उत्सव उदधी के माहीं ❁ परम निमग्न रंच सुधि नाहीं।
सुमन सुमन सुर वृष्टी करहीं ❁ महदाश्चर्य हिये निज धरहीं॥
तँह नर नारिन विस्मय दाई ❁ दियो दान बहु वृषरवि राई।
गौ दश लक्ष अलंकृत दीने ❁ पंचलक्ष पट वस्त्र नवीनें॥
अष्ट कोटि कंचन वर मुद्रा ❁ सुभग विचित्र वितान अक्षुद्रा।
दासी दास वृन्द अगणंता ❁ दिय विप्रन प्रति मोद अनंता॥
मुदित विप्र बहु आशिष दीना ❁ हर्षित गवन अपन गृह कीना।
तब नंदादि परम पुलकाई ❁ निजगृह जावन कियमनसाई२५७

दो०-रह्यो कछुक दिवस तहां, करके विनय महान।
दुहु ओर आनंद में, बीतें, नहिं दिन भान॥२५७॥

१ अमूल्य

सो०-प्रेम मग्न व्रजनाह, कह न सकत वृषभानु प्रति ।
जान लई हिय चाह, कह्यो भानु तव नन्द प्रति॥८६॥

होवै हिय इच्छा जस आपू ❀ तामें हमको मोद अमापू ।
लीजै सुधि नित आप हमारी ❀ औरहु कछु विध विनय उचारी॥
वर वधु सों मिलके युत नेहा ❀ विदा किये नंद व्रजपति गेहा ।
वृषभानू मिल गोपन वृंदा ❀ कछुक दूर पहुचावन नंदा ॥
गये तहाँ मिलकें सुख लह्यऊ ❀ कछुक नेह की बातहु कह्यऊ ।
नंदराय पहुँचे निज गामा ❀ आये वृषभानू निज धामा ॥
द्वितिय दिवस पुन वृषरवि राई ❀ दंपति निज गृह लिये बुलाई ।
कियो परम उत्सव बड़ भारी ❀ मंगल गीत गाई व्रजनारी ॥
नित नव केलि करैं मिल दोऊ ❀ राधा कृष्ण मुदित चित होऊ ।
रसिकन रस वर्द्धन के कारन ❀ अपर जनन दुस्तर भव तारन३५८

दो०-या प्रकार नृप तोहिं प्रति, भाख्यो युगल विवाह ।
अति समास विधिसों कह्यो, कारन अहै अथाह ।३५८।

सुनै सुनावै जो युत प्रेमा ❀ परा प्रीति पावै पद खेमा ।
याते अधिक अपर किं अहई ❀ हे नृप जाहिं भक्त जन चहई ॥
करै पाठ यह कथा जु कन्या ❀ लहै योग्य पति या भव धन्या ।
वाचे जो जन यह प्रेमा ❀ पावे पतिव्रत तिय प्रद खेमा ॥
या विधि जस मनसा मन धारे ❀ तस पावै नर विना विचारे ।
करत केलि बहुविध जन हेतू ❀ सब प्रकार सुख प्रद भव सेतू॥

१ नन्दरायजी २ राधा कृष्ण ।

नित्य एक रस अविचल धामा ❀ बसैं सदा श्रीश्याम रु श्यामा।
नित्य केलि करहीं रसरूपा ❀ सेवत सखि, लह मोदअनूपा॥
जहाँ न विधि आदिक गति अहई ❀ शंभु प्रभृति जाको नित चहई।
अस श्रीराधाकृष्ण रसाला ❀ छविनिधि रसनिधि परम विशाला॥

दो०-एक प्रान द्वै देह जिन, केवल लीला हेत।
तनक भेद नहिं युगल तनु,युगल नेह रस केतु२६०

है विवाह तिन लौकिक संग्रह ❀ भये प्रकट या व्रज द्वौ विग्रह।
भक्तन नेह बढ़ावन कारन ❀ अपरन गोपद इव भवतारन॥
जो कोउ गाय युगलवर लीला ❀ भवतारन जिहँ सहज सुशीला।
ते भव तर पावैं प्रभु धामा ❀ अविचल निर्मल परम ललामा॥
यदपि आन साधन जग अहहीं ❀ वेद प्रणीत विबुध जन कहहीं।
तदपि श्रीप्रभु गुन बिन गाये ❀ करिहौ किन को कोटि उपाये॥
कवहु न भव दुख कर सो हाना ❀ यह अपेल सिद्धांत बखाना।
सब युग में प्रभु भक्ति प्रधाना ❀ कलि में किल साधन नहिं आना॥
ताते सब विहाय प्रभु भक्ती ❀ धरौ सतत धरकें अनुरक्ती।
ज्ञानि ध्यानि जो पद लह नाहीं ❀ भक्त सुगम जावैं तिहँ माहीं२६१

दो०-ताते रे मन गाउ नित, युगल केलि रसदाय।
बसंत लागैं विरस सब;युगल दरस रस पाय २६२

॥ इति श्री कृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे विंशति सोपान समाप्त ॥

---

१ स्वरूप। २ त्याग करकें।

दो०-नित निकुंज छविपुंज में, युगल लाड़ली लाल।
करत केलि सखिवृन्दा मिल, रसिकन करन निहाल ३६२

छंद
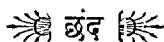
एक काल रसाल लाड़लिलाल वन भांडिर गये।
लख सोह छबिनिधि दुहुनकी रति काम शत लज्जित भये ॥
घन दामिनी जिम सोह अति गरबाहिं आपुस में दिये।
हंस गतिसों विहर तिहँ वन दोउ अति प्रमुदित हिये ॥ १ ॥
अहै जस गोलोक भुवि तस ओकद्युति यहँ तनु कियो।
पद्मरागादिक खचित अरु स्वर्ण वर्णहि धर लियो ॥
तदा श्रीवन सघन हर मन देह चिन्मय त्वर कर्यो।
काम पूरित वृक्ष वृंदन कल्पतरु आदिक वर्यो ॥ २ ॥
सेवती चम्पा चमेली जुही कुन्द कदम्ब हैं।
कमल बहु भांतिन निवारी जाति नूतन अम्ब हैं ॥
मोरछलि वासंति वेला मोंगरा बहु सोहहीं।
इन सघन विधि कुंज सुन्दर युगल वर मन मोहहीं ॥ ३ ॥
भानुतनया[१] रत्नमयि सोपान सुन्दर मनहरा।
विविध तट तिन निकट सोहन हेम मंदिर रुचिकरा ॥
शैलवर गिरिराज राजत रत्नमयि सब शिल महा।
उच्च सुवरण शृंग मनहर रुचिर कर शोभित रहा ॥ ४ ॥

---

१ श्रीयमुनाजी।

जेहिं थल झरणें झरत बहु बहु गुहा मंडित महा।
पुंज पंकज गुंजें मधुकर, सोहं गिरि अद्भुत रहा॥
तहँ निकुंज सुहावनों मनभावनों अति सुन्दरा।
ऊर्ध्व महल रु सुभग प्रांगण[1] सभा मंडप वरवरा॥ ५॥
धर वसन्त मधुर्य सोहत मयुर मधुकर धुनि करा।
कोकिला कूजंति कलरव अपर पारावत[2] खरा॥
महल कंचन जटित रत्नन ललित अति कुंजन बने।
ध्वज फहर वर अति विचित्रहु द्वारपालक अति घने॥ ६॥
ताल सरवर वलि विकीरण[3] मधुप मत कूजत धुनी।
स्वर्णरचित रु चित्र लिखितं नगर महल महन गुनी॥
या प्रकार मनोज्ञ अतिशय युगल वर आनंदप्रदा।
युगल इच्छा प्रकट रहि जहँ केलि मनसा मंह तदा॥ ७॥
कृष्ण मंद मुसुक्याय प्यारी संग ले कुंजन गये।
सोह प्यारी को कहे रति, अमित लज्जित ह्वै हिये॥
नील अंबर गौर वपु वर कृष्ण मनहर सोहहीं।
चन्द्रिका शिर भाल बिन्दी सकल सखिगन मोहहीं॥ ८॥
गर माल पुष्पन हरत मन तिन गंध अलिगन[4] गुंजहीं।
कर कमल सुन्दर कमल वर सोह जनु छवि पुंजहीं॥
नयन काजर अयन[5] छवि सम मयन[6] रति लख लाजहीं।
अरुणता अधरन सुहाई वदन छवि बहु भ्राजहीं॥ ९॥

१ आंगन २ कबूतर ३ विस्तृत ४ भ्रमर ५ धाम ६ कामदेव।

वक्ष बहु सुन्दर मनोहर कंचुकी सोहत अती।
　　चरन मृदुतर भक्त दुखहर बजत नूपुर बहु गती॥
कृष्ण छवि घन सजल सम मन मोह करन बिराजहीं।
　　निरख छवि की घटा, अतिशय कोटि कंद्रप लाजहीं॥१०॥
पीत अम्बर गहन पुष्पन धार गर सोहत भरी।
　　भुज बिशाला छवि रसाला कर कमल बंशी धरी॥
मोर मुकुट सुहात शिर पै बाल घुँघरारी अहैं।
　　नयन चञ्चल कान कुंडल सोह विद्युत सम रहैं॥११॥
या विधि प्रिया प्रियतम सजल घन दामिनी जिम सोहहीं।
　　गरबाहिं दे कछु हँसत मुख लख काम रति शत मोहहीं॥
हेम बेलि तमालसों तिम युगल छवि मनहारिणी।
　　ललितादि सखि सेवा करैं सब मुदित रुचि अनुसारिणी॥१२॥
बहु सुमन सौरभ[1] युक्त तासों रच्यो सिंहासन महा।
　　युगल लाड़लिलाल राजे सखिन बड़ आनँद लहा॥
बहु प्रकार रसाल लाड़लिलाल तहँ क्रीड़ा करी।
　　गुप्त रसमइ सखिन सुखदइ रसिकजन निज उर धरी॥१३॥
पुन प्रिया कर अपन करहिं मिलाय पिय तहँ ते चले।
　　मधुर भाषन करत वर बन यमुन तट देखत भले॥
कुंजवर श्रीमल्लता तामें निकुंज जु मनहर्यो।
　　करन मोद महान मोहन जाय तिहँ घाटी दुर्यो॥१४॥
तब किशोरी भोरि अपि अति महत पटुना जिहँ हिये।
　　द्रुम शाख लख मुसकान प्यारी पीत पट कर गह लिये॥

१ सुगन्धि।

पुन राधिका धावन चली हरिहाथ से छिटकै गई।
झनक नूपुर अति सुहावनि कुंजमें छिपती भई ॥१५॥
कृष्ण जब पहुँच्यो नहीं इक हस्त मात्र दिखी दई।
प्रेमसों प्यारेको प्यारी धाय गरबाहीं लई ॥
हेम बेलि तमालसों जिम यथा घन में दामिनी।
तिम मिले तहँ प्रिया प्रीतम को कहे शोभा घनी ॥१६॥
जिम कसोटी खान पन्ना गिरि लिपट शोभा करैं।
तथा हरि श्रीरूप अद्भुत निरख सखि मुदिता धरैं ॥
तहाँ निर्जन वन सुहावन रास रँग बहु विधि करैं।
सखिन मिलि गावैं सुनावैं गीत बहु मुदिता धरैं ॥१७॥
कृष्ण कर मुरली मनोहर प्रिया कर वीणा धरैं।
नृत्य गान करैं विविध विधि रहस लीला मुद भरैं ॥
अति रमण वृन्दाविपिन वर पक्षिगन कल रव करैं।
द्रुम विविध फूलें मनोहर निरख तिन मुदिता धरैं ॥१८॥
सौरभ समन्वित बेलि सुंदर तिन निकुंजन में चरैं।
छवि अलौकिक निरख तिन द्वौ काम रति निज मद हरैं॥
अस युगल विचरन निरख श्रीवन सोह निज मन भावनी।
ललिता विशाखा सखिन मिल बहु करी केलि सुहावनी॥१९॥
यमुन जल निर्मल रुचिर में वारिलीला के लिये।
प्रविश दोऊ सखिन संयुत कॅलि किय प्रमुदित हिये ॥
कर प्रतारन करत जल में उठत बूँद हसन कियो।
लच्छ दल वर कमल धावत कृष्ण राधासों लियो ॥२०॥

१ अन्तर। २ जलक्रीड़ा। ३ पत्ता।

लियो प्यारी छीन पिगसों बंशी बेत्र सुहावनों ।
श्रीतपट अपि छीन विहँसन मुदित मुख राधा घनों ॥
कहत जय हरि राधिके बंशी बसन मुहिं दीजिये ।
कहत तब प्यारी कमल मम दे प्रथम पुन लीजिये ॥ २१ ॥

मुसुक्याय प्रभु पंकज दियो मन राधिका हर्षित कियो ।
मुदित चित बंशी बसन अरु बेत्र तब राधा दियो ॥
इम परस्पर रहसे लाला करहिं यमुना तट सदा ।
मिल सखिन को पार पावै किहँ कवी पूरण बदा ॥ २२ ॥

केलि रस शृंगारमणि अस नित्य पिय प्यारी करैं ।
व्रज केलि कारन व्रजहि में द्वौ आन सुन्दर वपु धरैं ॥
यह गुप्त केलि समास विधिसों भूप तोहिं सुनाइहै ।
नित्य गावै सुरुचि ध्यावै नित्य तिहँ सुखदाइ है ॥ २३ ॥
रस अलौकिक पाय जन जब रसिक गुरु करुणा लहै ।
नित निकुञ्ज निवास पावै, लीन रस सागर रहै ॥
लावण्यनिधि द्वौ युगलवर पद पद्म मोर प्रणाम है ।
ऋतुराज है सेवा करौं नित नित अचल श्रीधाम है ॥ २४ ॥

॥ इति श्रीकृष्णायने तृतीय श्रीवृन्दावन द्वारे एकविंशति सोपान समाप्त ॥

कह मुनि एक समय घनश्यामा ❀ गे गोचारन संग न रामा ।
वारि विषावृत थल जो रह्यऊ ❀ कालीदह जिहँ संज्ञा कह्यऊ ॥
गो गोपन मिलि तिहँ थल आये ❀ प्यास लगी तिन पानि पिवाये ।
पीवत जल गो गण अरु गोपा ❀ विगत प्रान है गे तहँ रोपा ॥
आर्द्र हृदय श्रीहरि साक्षाता ❀ वृजिनार्दन भगवत विख्याता ।

१ शोभा की खान । २ बसन्त ऋतु । ३ प्रेम मे भीजे हुए । ४ दुष्टों को दण्ड देने वाले ।

आशु अपन उरमें अकुलाये ❀ दृष्ट्यामृतसे सकल जिवाये ॥
यह गति गोपन रच न जानी ❀ जनु जागे वड़ नींद उड़ानी ।
परम कृपालु भक्त भयहारी ❀ नाग निकासन मनसा धारी॥
वयसन प्रति कह मँद मुसकाई ❀ गेंद खेल खेलन मन आई ।
सुन भे मुदित सखा मन माहीं ❀ कृष्ण भेद जान्यो किहँ नाहीं॥

दो०-करत खेल तिन संग मिल, पहुचत नहिं तिन पाँयं ।
आप हार जितवैं सखन, सहज शील श्रुति गाय ॥

खेलत खेल. मुदित छविरासा ❀ यमुना कूदन उर अभिलासा ।
खेल करत निज करते ताहीं ❀ गेर्यो गेंद यमुन जल माहीं ॥
गेंद निकासन जन सुखकारी ❀ चढ़े कदम्ब वृक्ष की डारी ।
बाँध पीत पट कटि श्रीकाना ❀ कालिदह कूदे भगवाना ॥
कूदत ही घूर्णित भइ वारी ❀ देख गोप व्याकुल भे भारी ।
हाहाकार करन सब लागे ❀ भूले सुधि, निज सखानुरागे ॥
कृष्ण कृष्ण कह व्याकुल भारी ❀ गिरे सकल सख मही मँझारी।
वारि विहीन मीन गति जैसे ❀ भइ साक्षात सखन गति तैसे॥
प्रति पल चेत अचेतन होवें ❀ कृष्ण न निरख उच्च स्वर रोवें।
मैथिल नृप गोपन गति जोऊ ❀ कहन शक्ति मोमें नहिं सोऊ३६३

दो०-भृंगिभूत निज भवन लख, काली क्रोधित होइ ।
शतफण डस श्रीकृष्ण भुज, लपटा सब तन सोइ३६४

१ कालीनाग २ दान ३ चक्कर खाती भयो भौंरी की तरह ।

सो०-कोउ न त्रिभुवन आहिं, जाके बन्धन करन हित।
सो प्रभु बन्धन माहिं, अहै अगम गति कृष्ण की ९०

निज शरीर कर दीर्घ महाना ❀ निकसे अहि तनुतें व्रजमाना।
अति द्रुत पकड़ पूँछ तिहँ केरा ❀ बिनश्रम बहु भ्रमाय चहुँफेरा॥
पटक दियो वाको जल माहीं ❀ गो अहि शतधनु जलमें ताहीं।
पुन उठ सर्पराज लिलिहाना ❀ आयो तहँ जहँ परम सुजाना॥
बड़ मद हो वाके मन माहीं ❀ निज समान को जानत नाहीं।
मद भञ्जन हरि दहिनें हाथा ❀ गह्यो सुदृढ़ सावध अहिनाथा॥
सहजहि फेंक दियो जल माहीं ❀ गरुड़ सर्प इव खेलत आहीं।
तब पसार शतमुख अहि आयो ❀ निगलन हित हरिके त्वर धायो॥
त्योंहीं पूँछ पकर प्रभु लीनी ❀ शतधनु अतिशय कर्षण कीनी।
अरु वाको इक मुष्टिक मारी ❀ केशव तीन लोक बलधारी३६४

दो०-तिहँ हरि मुष्टि प्रहारते, भो मूर्च्छित गत भान॥
नाग्नित शत मुखथित भयो,सन्मुख कृपानिधान३६५

तब नटवर शतफण चढ़ि गयऊ ❀ जे फण मणिसों सोहत भयऊ।
नटवत नृत्य विविध कर ताहीं ❀ नटवर वेष रुचिर अति आहीं॥
गावत सप्त सुरन कर रागा ❀ अमित तालयुत बड़अनुरागा॥
ताण्डव नृत्य कृष्ण तहँ कीना ❀ वर्षत सुरगण सुमन नवीना॥
दुन्दुभि आनक वंशि बजाते ❀ हर्षित वीणा मिल स्वर गाते।

१ शीघ्र। २ चाटता हुआ।

तिन सुर ताल मिलावत नाचैं ❀ फणि मस्तक पै प्रमुदित राचैं ॥
इम काली शिर भञ्जन कीनों ❀ कृष्ण खेलही,यह कृति चीनों।
तब तहँ नागपत्नि मिल आई ❀ भय विह्वल दुखमें लपटाई ॥
कृष्णदेव पद पंकज नत्वा ❀ गद्गद गिरा कहत हार मत्वा।
वन्दैं कृष्णचन्द्र महराजा ❀ नमःस्वामि गोलोक विराजा३६५

दो०-नमहिं अखड अगणित पती, पुन परिपूर्णतमाय
श्रीराधापतये नमः,नमहिं व्रजाधीशाय ॥ ३६६ ॥

वन्दैं नन्दसुवन व्रजपाना ❀ वन्दैं यशुदा कुँवर सुजाना।
पाहि पाहि पन्नग को देवा ❀ तुम सम रक्ष त्रिभुवन नेवा ॥
आप परात्पर अस श्रुति गायो ❀ लीला हित इह भूमि सिधायो।
जाको गाय अधम भव तरहीं ❀ भक्त गाय उर आनँद भरहीं ॥
कह मुनि इम कियस्तुति अहिवामा❀ कालिय गर्व नष्ट गति पामा।
हे श्रीकृष्ण पाहि अहि कह्यऊ ❀ भगवन पूर्ण काम नित रह्यऊ॥
पाहि पाहि कह बारम्बारा ❀ शरण सुखद हे नन्दकुमारा।
सन्मुख प्रणत आय जब रह्यऊ ❀ ता प्रति प्रणतपाल अस कह्यऊ॥
रमणक द्वीप नाग तुम जावो ❀ मो वचनन हियमों पतियावो।
अब न गरुड़को भय अहिनाथा❀ मो पद चिन्ह तुम्हारे माथा३६६

दो०-अद्य ध्वंसते पायऊ, निर्भय पद अहिराज।
निसंशय प्रमुदित हिये,विचरौ, तुव सिध काज ३६७

१ नाग। २ नहीं।

सो०-कह मुनि अर्चन कीन,युत वन्दन परिक्रम किये।
प्रभु आज्ञा शिर लीन,गमनोद्यत अति आशु भो॥

तावत प्रभु वाके शिर राखे ❀ कोटिन कमल,कंस अभिलाखे।
नंदहिं कहन धाय के बाला ❀ गिरे कालिदहमें नँदलाला ॥
सुनत नंद आकुल अति भयऊ ❀ जनु प्रति अँग वृश्चिक चढ़ि गयऊ
करत यशोमति विविध विलापा ❀ को वर धीरज सुनत कलापा॥
हा व्रजधन मो दृगन प्रकासा ❀ बिन तव किम मो जीवन आसा।
हा सुकुमार कहा यह भयऊ ❀ काहि विधाता यह दुख दयऊ॥
मैं भोरी कछु विधि नहिं जानौं ❀ देवार्चन कछु दोष पिछानौं ।
करौ क्षमा अपराध हमारो ❀ मिले मोहि मो प्रान अधारो॥
गयो आज वन बिन जल पाना ❀ कछुक रोष वस नेंक न माना।
अहह तात यह दुख मुहिं भारी ❀ नखतेशिखलग देह प्रजारी[२]६७

दो०-योग्य गुप्त राखन मर्मी[१], जो निज उरके माहिं ।
जड़ता वश मैं खोइ सो,व्यथा सहन ह्वै नाहिं ॥३६८॥

सो०-निदरत हैं मुहिं लाल, सर्पनि कीशनि जगत में ।
किहिं विधि नयन विशाल,निरखौं निज नयनन हितें

विविध विलाप करत व्रजवासी ❀ आये यमुना कूल उदासी ।
तहँ न निरख पंकज मुख लाला ❀ तिन उर व्याप्यो शूल विशाला॥

१ चीज़ी । २ जलाइ देता है ।

सो संताप कह्यो नहिं जाई ❀ सुमरतही दुख व्यापत आई ।
कह्यो वृतांत ग्वालगन सारो ❀ जिहँ विधि वारि गिर्यो ब्रजप्यारो॥
भो दुख दून इँधन जिम आगी ❀ गोपिन हिय विरहागनि जागी
उर शिर पीटैं रुवत महाना ❀ विना कृष्ण जिन गति नहिं आना
सगरी सुधि भूलीं तिहँ काला ❀ कूदत सरितामें ब्रजबाला ।
भिया गती भइ जो नृप ताहीं ❀ सो रंचक अपि कह सक नाहीं॥
अस कह मुनि गग चेतन भयऊ ❀ स्वयं विरह स्वरूप ह्वै गयऊ ।
हा कृष्ण, हा कृष्ण पुकारा ❀ द्वय घटिका अस दशा निहारा३६८

दो०-शनै शनै सावध भयो, प्रेम पुंज मुनिराय ।
कह मैथिल प्रति धीर धर, दाउ वचन सुखदाय ३६९

कहत राम उर शोक न आनों ❀ याको भेद सकल मैं जानों ।
कमल फूल कारण हरि गयऊ ❀ अपरौं गुप्त भेद अपि लह्यऊ॥
या विधि बल के कहतहि ताहीं ❀ भो बड़ शब्द कालिदह माहीं।
निर्गत वारि कृष्णको देखा ❀ जन समूह मन मोद विशेखा ॥
नाग नाथ निकसे ब्रज प्राना ❀ यथा उग्यो उदयाचल भाना ।
तीन कोटि पंकज अपि लाये ❀ अहि शिर सोहत सबन दिखाये॥
कृष्ण विरह पन्नग डस जेऊ ❀ मूर्च्छित ब्रज नर नारी केऊ ।
जनु आयो गारुड़ि घनश्यामा ❀ कर्षे लियो विष ग्रद दुख धामा
भे सावध सबही ब्रजलोका ❀ व्यथा विगत भइ कृष्ण विलोका
सुमन सुमन वरषत सुरवृन्दा ❀ भाखत जय जय जय ब्रजचंदा३६३

दो॰ नाग कूल लग कृष्णको, अति प्रमुदित पहुँचाय ।
कमल राख शिर नाय के, गो हरि आज्ञा पाय ३७०

युक्त कुटुंब कहत हरि गाथा ❀ रमणक द्वीप वस्यो अहिनाथा ।
तट पै निरख लाल महतारी ❀ धाय मिली उर आनँद भारी ॥
उर लगाय लिय कुँवर कन्हाई ❀ स्तनन स्रवत पयधार महाई ।
नंद कृष्ण आलिङ्गन दीनों ❀ प्रमुदित मन मुख चुंबन कीनों॥
सकल गोप भे पुन श्रुत प्राना ❀ पुन पुन मिल मन मोद महाना ।
गोपिन उर आनन्द भो ऐसे ❀ विगत प्रान प्रीतम मिल जैसे ॥
मंद मंद मुसुकाय कन्हाई ❀ प्रिया ओर ताकत सुखदाई ।
सो सुख अकथ कह्यो नहिं जाई ❀ या विधि सबसों मिले कन्हाई॥
पुत्र पाय यशुमति व्रजरानी ❀ सुत हित हेतु दान किय दानी।
विप्रनप्रति बहु विधि दिय दाना ❀ याचकगण तोष्यो[१] विधि नाना॥

दो॰-कह व्रजपति सुनिये सकल, मो मनकी अभिलास ।
काटिय निशि यहिं कूलपै, प्रात चलैं सहुलास ३७१

सो॰-बहु पक्वान मिठाइ, लिय मँगाइ कह अनुचरन ।
समोद कृष्ण जिमाइ, आपहु जेंवत मुदित मन ६३

पाय प्रसाद शयन तिन कीनों ❀ व्यथा विगत मन मोद नवीनों।
शकट भराय नंद सब पुञ्जा ❀ पठये आशु कंसके सञ्झा[२] ॥

१ संतुष्ट किये २ गृह में ।

भाख्यो सब संदेश बुझाई ❀ चरंन कंस प्रति माथ नमाई।
सुनत वचन निश्चय तिहँ भयऊ ❀ विस्मय हिय अतिशय ह्वै गयऊ॥
तब मधुपति सब सुभट बुलाई ❀ कह्यो वृतांत सकल समुझाई।
किये उपाय हनन हित नाना ❀ चल्यो न इक, आश्चर्य महाना॥
अब का करनों करो विचारा ❀ निज निज संमति कहो अवारा।
तब इक धुंधक कह सुन कंसा ❀ कृष्ण न नर, कर कालहिं ध्वंसा॥[1]
यदि मो सम्मति मधुपति मानो ❀ तिनके प्रीति माहिं सुख जानो।
ताते करो प्रीति हठ करके ❀ कल बल छल बल सकल प्रहरके॥

दो०-इनमें तें तहँ एकहू, चलै न हे नृपराज।
ताते संधिहि कीजिये, त्वर परिहर सब लाज।२७२

सो०-कहत नीति अस वाक, दे शत पै नहिं कलह कर।
जो न सुनत वच कांक,[2] सो सम रावण नास है ६४

कवित्त
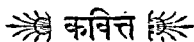
यदपि मैं कहत डरत नाथ तव प्रति,
कहे बिन अपि नहिं मोसों रह्यो जाइ है।
निरभय चलहु शरण दुख हरण के,
त्राहि त्राहि कह, प्रभु तुव ओट आइहै॥
यदपि किये विविध अपराध आप नाथ,
क्षमा करहिंगे श्याम, संत वृंद गाइहैं।

१ भृत्यन। २ सुन्दर (हितकर)

प्रणत पालन पन राखहिंगे आपन को,
तेरी तो भलाई मुहिं यामें दरसाइ हैं ॥२॥
कह मधुपति बड़ रोष अभिमान युत,
शठ तत्र उद्यम लखेउ विधि नीकी है।
समुझन रह्यो बड़ भट अब लग तोहिं,
तू तो अति कांयर शूरपद्धति फीकी है॥
सहजही निशिचर वंश बल शीलवंत,
तू तो भयो वेणू बन, करील समान है।
जड़ देइ शठ तोहिं पालेउ विविध विधि,
देत सिख मूढ़ जनु, पंडित महान है ॥ ३ ॥
ग्वाल बाल सन मिलो धर ताके पांव शिर,
अस उपदेश सुन, खल, हाँसी आत है।
पाई तेरी गति पुरुषारथ की सुन शठ,
उठ जाय बैठ आँख ओटने लजात है।
तू तो बड़ अघरूप कृतघ्न महान अति,
तेरी यह गँवारता गँवारन सुहात है।
मृत्यु सन्निपात बश कंस नृप भयो अब,
हित अनहित नहिं जान, इतरात है ॥ ४ ॥
कीनों तब धुंधक विचार निज मन अस,
मूढ़ प्रति उपदेश लेशहु न भल है ।
यदपि लगाय कोटि मन उबटन[1] तो हूँ,
भवत कबहुँ नाहिं अंगार[2] उज्ज्वल है॥

१ साबुन। २ कोयला।

कारी कामरी समान खलेके खलता पर,
चढ़ै न सुरंग दूजो, श्रमहु निष्फल है।
सेवक धरम श्रहे दारुण महान अति,
कहे बुध जन ताहि कीजिये सफल है ॥५॥
श्रस निज उर में विचार जोर युग हाथ,
माथ नाय मधुनाथ प्रति श्रस गाय है।
मद वश जोउ कछु कहाउ कीजिय क्षमा,
तुम सम किम हो वलिष्ठ व्रजराय है॥
दीजिय रजाय मोहि सपदि[१] सिधाउँ श्रव,
परिकर युत श्ररि मारौं मन भाय है।
भय इन गोपनते रंच नहिं कीजिये जु,
श्राप भय संतत कंपित तिन काय हैं ॥६॥
तब अति सादर कहत मधुपति सुन,
तुम्हरेइ बल गरजन मन भाय है।
मानुष जनम पाय भय लाय हिय माहीं,
सो तो वाद[२] खोय पुन, श्रंत पछुताय है॥
कर शशहु साहस गजेंद्रहिं मार डार्यो,
टिटिहर सिंधु सोख, श्रंड निज पाय है।
ताते साहस न तज सज उर चाह बड़,
कीजिय अपन कृति, दक्ष सो कहाय है॥७॥
सैनप सबल रण रंग में सुजान अति,
स्वामी भक्ति माहिं रति, परम प्रधान है।

१ शीघ्र। २ वृथा।

अस नृप पावै पराजय किम अरिहुं ते,
रिपुकर भेद सब, कियो तुम गान है ॥
धन धन मति तव भयो मोद उदभव,
कीजे न विलंब लव, करौ शत्रु हान है।
धुंधकहुँ नाय शिर चल्यो नृप आज्ञा पाय,
ज्वाला मुख उगलत, गगन, महान है ॥८॥

दो०-देख नींद वश ब्रज जनन,कीन प्रकट बड़ आग।
चहुँ दिशि दव लागी महत,प्रलयागनि जनुजाग ३७३

व्याकुल विहंग वृन्द वनचर आदि सब,
बहु कष्ट पाय बड़ कोलाहल करहीं ।
भभकत ज्वाला दिशि विदिश महान अति,
चटकत तरु तरु मिल गिर परहीं ॥
जागे सब ब्रजजन देख दावानल बड़,
अति घबराय हाय, अब सब जरहीं ।
श्याम के सखन कह्यौ श्याम प्रति सुन प्रिय,
आपुहि के द्वारा यह दव अब टरही ॥६॥

सो०-सदा सहाय हमारि, बहु विपातिन तें मित्र किय।
अहें आप आधारि, सब ब्रजवासी जीव जे ॥९५॥

सब ब्रजवासी चहुँ दिशि धाये ❀ आग विलोक हिये अकुलाये।
बिना कृष्ण जिनकी गति नाहीं ❀एक कृष्णही जिन गति आहीं॥
ते ब्रज जन अब कृष्ण पुकारैं ❀ अरु बलदेवहु नाम उचारैं ।
हाय आग य कहँ ते आई ❀ तुम निज इष्टहिं लेहु बुलाई ॥

जब जब व्रज पै विपति परी है ❀ वानें रक्षा तवहि करी है।
या अवसर प्रलयागनि जागी ❀ हम न प्रथम देखी अस आगी॥
आशु बुलावौ मिल दोउ भैया ❀ अपन इष्टको जो सुख देया।
कह मुनि सुन प्रभु तिनके वैना ❀ कह्यौ सवन प्रति मूंदौ नैना॥
अस कह कृष्ण अग्नि किय पाना ❀ है योगेश परात्पर काना।
अरु त्वर असुर ध्वंस हरि कीनों ❀ जन दुख हरन,विरद निज चीनों॥

दो०—नन्दादिक व्रज गोप सव, विस्मय हिय हरषाय।
स्नेह सिन्धु में मग्न मन, निरख निरख द्वौ भाय॥३७४॥

गावत गुन गोपाल सनेहा ❀ आवालांत चरित किय जेहा॥
श्याम सनेह सिन्धुके माहीं ❀ जिन मन मग्न मीन सम आहीं॥
या विधि प्रातकाल व्रजनाथा ❀ आये व्रज में ले सव साथा।
व्रजपति धन्य धन्य निज मानै ❀ पुत्र पाय हिय अति हरषाने॥
परम कौतुकी श्रीघनश्यामा ❀ वाँध सुदृढ़ प्रीतिमयि दामा।
कर लीला भक्तन सुखदाई ❀ यद्यपि पूरण काम सदाई॥
भक्तन हित नाना वपु धारें ❀ कर क्रीड़ा किल्विष सव टारें।
भक्तन निज सर्वस्व समर्पै ❀ भक्तन ही को सन्तत तर्पै॥
कालि केवल भक्तिहि इक आहीं ❀ जिहँवल विन श्रम भव तर जाहीं।
भक्ति त्याग सुख स्वप्न न लहहीं ❀ यह निष्कर्ष सकल मुनि कहहीं॥

दो०—रे मन सव की आस तज, भज श्रीनन्दकुमार।
नित्य अखण्डित मोद सज, अज वसन्त वच्च पार॥३७५॥

सो०-गावै यह सोपान, परम प्रेमसों नेम धर ।
करै कृष्ण तिहँ त्रान, अग्नी अरु अहि विषहुते ९६

॥ इति श्रीकृष्णायने तृतीय श्रीवृन्दावन द्वारे द्वाविंशति सोपान समाप्त॥

कह नारद सुन नृपति सुजाना ❀ द्वार लीला जहँ तत्त्व महाना ।
ऋतु हेमन्त प्रथमही मासा ❀ अगहन पूरन जन मन आसा॥
व्रज कुमारिका मुदित महाना ❀ पुण्यद मास हिये निज जाना ।
ह्वै वर हमरो नन्दकुमारा ❀ अस मनोर्थ धर हिये मँझारा ॥
कियो मंत्रे मिल गोप कुमारी ❀ किम ह्वै मनसा पूर्ण हमारी ।
तिन सखि वृन्द माहिं इकस्यानी ❀ सब प्रति भाखत मधुरी बानी॥
कात्यायनी सुखद व्रज देवी ❀ होहिं तासु पद पङ्कज सेवी ।
करै पूर्ण सो आश हमारी ❀ देवै वर, वर कुंज विहारी ॥
अस सम्मत कर युत उत्साहा ❀ देवी पूजन हित जिन चाहा ।
खाय हविष्य अन्न सुकुमारी ❀ भई सकल गौरी व्रत धारी ॥

दो०-अरुणोदय शुभ समय में, जाग्रत ह्वै सब गोपि ।
एक अपरहिं बुलावहीं, मन में धर बड़ चोपि।३७८।

सो०-यमुना मज्जन जाहिं, कर गहि आपुस में सकल।
श्याम सोह निधि माहिं, मग्न श्याम गुन गावहीं ९७

---

१ रचा । २ सलाह । ३ उत्कण्ठा । ४ स्नान के लिये ।

यमुना तट पै जाय नहाहीं ❀ प्रहर प्रयन्त रहैं जल माहीं ।
शीत भीत[1] ते चीत न लावै ❀ प्रीति प्रतीति कृष्ण मन भावै॥
या विधि नेह मगन सब कन्या ❀ एक आश नँदनंद न अन्या ।
बार बार यह कहैं मनाई ❀ हम वर पावैं कुँवर कन्हाई ॥
जलते बहर निकस सब आईं ❀ शुद्ध पीत पट पहिरि सुहाईं ।
रचि सिकता[2] कर गौरि स्वरूपा ❀ पूजन करहिं सविधि तहँ भूपा! ॥
प्रथमहि तिहँ मज्जन करवाई ❀ चन्दन सुमन सुमाल चढ़ाई ।
सुरभि[3] धूप अरु दीप दिखायो ❀ विधि अनेक नैवेद्य धरायो ॥
कोंपल फल तन्दुल समुदाई ❀ अर्पहिं देविहिं नेह महाई ।
पुन गौरी सन्मुख व्रज गोरी ❀ ठाढ़ीं भइ युगल कर जोरी ३७५

दो०-करहिं प्रार्थना विविध विधि, वृहद विनय युत ताहिं ।
वर पावन व्रजराज सुत, अपर आश उर नाहिं ३७७

सो०-महामाय सुखदाय, कात्यायनि वांछित प्रदा ।
महायोगिनी माय, हे अधीश्वरी देविवर ॥ ९८ ॥

वार बार हम दण्ड प्रणामा ❀ करहिं आप पद पद्म ललामा ।
नन्द गोप सुत पति हम पावैं ❀ करहु अनुग्रह विलम न लावैं॥
पूजन कर पुन श्याम सनेहीं ❀ पुन उतार नीराञ्जन लेहीं ।
पूर्ण भरोस आपमें अहईं ❀ देहु कृष्ण वर, वर यहि चहईं ॥

१ भय । २ श्रीयमुना की रेत । ३ सुगन्धित ।

यहि विधि अगहन मास प्रयन्ता ॐ व्रज कुमारिका आस इकंता ।
पूजि गौरि युत प्रीति सनेमा ॐ पावन मन भावनको. प्रेमा ॥
पुन जब पूरणमासी आई ॐ जान वृतान्त दिवस हुलसाई ।
अहो आजको दिवस महाना ॐ जोउ मास लग पूजन ठाना ॥
आज अवश पावें वरदाना ॐ परम दयामयि देवि सुजाना ।
या विधि उठें तरंग अनेकू ॐ नन्दसुवन बिन आस न एकू३७६

दो०-ऐसी गोपकुमारिका, अपर दिवसते ताहिं ।
उठीं सवेरे स्नान हित, चलीं अंधेरे माहिं ॥३७८॥

सो०-ऊँचे स्वरसों गान, करहीं गोविंदकेर गुन ।
ले ले बहु विध तान, जावत मग, पग डगमगत ७९

जब पहुँचा कालिन्दी तीरा ॐ तब उतार प्रथमहि सब चीरा ।
गईं यमुनमँह मज्जन हेतू ॐ विहरन लगीं सलिल सुखसेतू॥
जान कुमारिन मन अभिलासा ॐ पूरन करन अपन जन आसा।
प्रातहि उठ प्रभु सखन बुलायो ॐ कह्यो यमुन तट चलन सुहायो॥
आज एक कौतुक रचवावन ॐ पुन चालि हैं गोवत्स चरावन ।
योगेश्वर ईश्वर भगवाना ॐ सखन सहित तहँ कीन पयाना॥
सकल भावके हैं हरि ज्ञाता ॐ सकल देव द्वारा फल दाता ।
गोप कुमारिन प्रेम स्वरूपा ॐ लख्यो नेमसो अतिहि अनूपा॥

---

१ व्रत के अन्तका २ पानी ।

ताहित भये प्रसन्न कृपाला ❀ अपनन पै जो सहज दयाला ।
अहे प्रेम लाजान्तर भारी ❀ इनकी लाज मिटाऊँ अवारी३७७

दो०-अपरहु एक विचार किय, श्रीव्रजराज कुमार ।
ये जलमें न्हावत नगन, शिक्षा देहुँ अवार ३७९

इत्यादिक कारन हिय माहीं ❀ धार कृपा आगार तहाहीं ।
पहुँचे यमुना तट पे जाई ❀ जहँ मज्जन कर गोपनँजाई ॥
तट पै पट विलोक नटनागर ❀ द्रुत उठाय, निज भक्त उजागर ।
चढ़े कदम्ब वृक्ष मुसकाई ❀ सखहु हँसे लख चरित कन्हाई ॥
प्रति शाखन लटकाये चीरा ❀ हँसत कहत कौतुकि बलवीरा ।
सुनहु कुमारी बात हमारी ❀ यहां आय पट लेहु अवारी ॥
यामें तनक शंक नहिं कीजे ❀ कहों सत्य हांसी न गुनीजे ।
करन वृतिनसों अनुचित हांसी ❀ अहे ज्ञात यह बात प्रकासी ॥
अरु हम मृषा कबहु न उचारें ❀ जानत सकल सखाहु हमारे ।
सब मिल आवौ पट ले जावौ ❀ अथवा इक इक यहां सिधावौ३७८

दो०-जैसो तुम सबके हिये, उपजे सुष्टु विचार ।
तैसेही कीजै सकल, कहत सत्य निरधार ॥३८०॥

सो०-यदि मानौ वच मोर, तो जानहुँ विश्वास तुव ।
कपट रहित चित तोर, ना तौ छलमायि मानिहौं१००

१ धाम २ गोपकन्या ३ मिथ्या ४ सुन्दर ।

कह सुनि हांसि गिरा हरि केरी ❀ सुन सखि एक एक कहँ हेरी ।
परी दृष्टि इक सखिकी ताहीं ❀ बैठे नन्द सुवन हरि जाहीं ॥
वानैं अपर कुमारिन पाहीं ❀ ऊंचे टेर कह्यो द्रुम ठाहीं ।
देखोरी छवि छैल बिहारी ❀ लेकें चीर कदम की डारी ॥
बैठो अहै सोह अस नीकी ❀ कोटिन कन्द्रप छवि जहँ फीकी।
सीस मुकुट पटुका जरतारी ❀ केसर खौर भाल पै धारी ॥
कुञ्चित अलकैं झलकैं न्यारी ❀ नाक बुलाक सोह वड़ भारी ।
भृकुटी कुटिल धनुप आकारी ❀ नैनन अञ्जन रेख सँवारी ॥
रूपरास मृदुहास निहारी ❀ किहं इह भव है धीरज धारी ।
ललित वदन चितवन चितहारी ❀ कुंडल लोल मनोज्ञ महारी ३७९

दो०-गोल कपोलन निरखकैं, लोल हियो ठहराय ।
कर लकुटी उरमाल छवि, कापै वरनी जाय ३८१

रत्न जटित कटि किङ्किनि सोहे ❀ धुनि कर नूपुर मनहर मोहे ।
नख शिखलौं श्रृंगार सुहायो ❀ देखनहार हियो ललचायो ॥
या छवि पै जावौं वलहारी ❀ देखोरी देखो छवि प्यारी ।
जाको ध्यान धरत रहिं आली ❀ सा यह स्वयं अहै वनमाली ॥
अहो आज यह प्रकट निहारी ❀ सत्य सत्य सबके मनहारी ।
पूर्ण भयो व्रत आज पियारी ❀ पुण्य वेलि है फली हमारी ॥
निरखत रूप अनूपम आली ❀ मगन मीन वत छवि वनमाली।

१ चंचल ।

अरु सब गोरी विहँसन लागीं ❀ प्रेम पयोधि[1] माहिं दृढ़ पागीं ॥
लोक लाज नहिं जात बिसारी ❀ असमंजसता भइ जिय भारी ।
लोक लाज अरु कान्हर प्रीती ❀ निज मन तोलहिं नीति अनीती॥

दो०-तोल करत गरुवी भई, प्रीतम केरी प्रीत ।
लोक लाज पोरी[3] रही, करी प्रीति परतीति ॥३८२

सो०-तबै देह को भान, भूलीं सबहि कुमारिका ।
रोम रोम झलकान, झलकत मोहन प्रेमकी १०१॥

सबन हिये अस भयउ तुरन्ता ❀ सोई करें कहे जो कन्ता ।
पुन पुन एक अपरको देखे ❀ जलते निकसन कोइ न लेखे॥
करहिं कटाक्ष अनेक प्रकारा ❀ कुँवर कानपै वदन मँझारा ।
कृष्ण वचन[2] सुन मन हर गयऊ ❀ विकसित वारिजें[4] सम मुख भयऊ॥
गर लग शीतल जल के माहीं ❀ ठाड़ीं गोप कुमारी ताहीं ।
कम्पित काय[5] सकल सुकुमारी ❀ पूर्ण प्रीति जिन हिये मँझारी॥
तिन नन्दनँदन प्रति कहि वानी ❀ सकुच सकुच प्रीती रस सानी
करहु न हमसों यह अनरीती ❀ हम तो तुमसों राखहि प्रीती ॥
नन्द दुलारे प्राण पियारे ❀ देहु कृपा करि चीर हमारे ।
हमतो नित ही या व्रज माहीं ❀ श्लाघा[6] करहिं सबन के पाहीं॥३८१॥

दो०-जो जस हम गावत रहीं, सो दिखाय दिय आज।
तुम्हरे योग्य न कर्म यह, तुम हो सुत व्रजराज३८३

१ स्नेह का समुद्र । २ वचनहार । ३ हलकी । ४ कमल । ५ शरीर । ६ बड़ाई ।

शीत सतावत काँपत देहा ❀ कहा कहैं हम, उर है नेहा ।
सुनो श्यामसुन्दर मनहारी ❀ तुव दासी हम गोप कुमारी ॥
जो कुछ आज्ञा करो कन्हाई ❀ सो हम करिहैं शंक न राई ।
किन्तु कृपा अब या विध कीजै ❀ जामें हँसी न होवन दीजै ॥
देहु चीर बलवीर हमारे ❀ ना तो अब हम कहहिं पुकारे ।
जाय नन्द बाबासों भाखैं ❀ नेकुक लाज न तुम्हरी राखैं ॥
जो तुम चहौ अपन भल काना ❀ देहु वसन हमरे तज माना ।
गोपकुमारिन वचन बखाने ❀ तिहँ सुन श्याम नैंक मुसुकाने॥
मन्द मन्द बोलत तिन पाहीं ❀ प्रमुदित नंदनँदन मनमाहीं ।
यदि सत्यहि तुम मोरी दासी ❀ तो मो वचनन है विश्वासी ॥

दो०-हुत यह अपन दुकूल सब, लेहु लाजको त्याग ।
हरि वच सुन मन हर गयो, प्रकट्यो नव अनुराग ॥

सो०-निज कर निजके अंग,लिय छिपाइ जलते निकस।
हिये प्रेमरस-रंग,नैन नाय हरि ढिंग गईं ॥ १०२ ॥

कपट विहीन प्रीति रस सानी ❀ जान सखिन मोहन सुख मानी ।
सबके बसन काँध निज धरिकैं ❀ कहत प्रीति रस वचन उचरकैं ॥
कर व्रत धर तटपै निज चीरा ❀ किय मज्जन रवितनया तीरा ।
सो यह देवन हेलन भयऊ ❀ ताते व्रत फल वृथाहि गयऊ ॥
सो तुम निज अपराध क्षमावन ❀ जोड़ जुगल कर नमहु सुभावन ।

१ थोगेमी भी २ वस्त्र,३ यमुना ४ अपराध ।

पुन लेवहु तुम वसन अवारी ❀ तुम्हरे हित,हित वानि उचारी॥
कह मुनि अस सुन मोहन वानी ❀ व्रज कुमारिका अस अनुमानी।
जा हित हम कीनों व्रत भारी ❀ जाहिं मिलन आशा उर धारी॥
तिन आज्ञा यदि हम नहिं मानें ❀ लोक लाज नेसुक हम ठानें।
तौ मनमोहन प्राण पियारो ❀ हठ करि रुसहीं, हिये विचारो॥

दो०-फिर हम किम व्रत फल लहैं, तातें जो कह प्रेष्ठ।
सोई कृत कर्तव्य है, यही मतो है श्रेष्ठ॥ ३८५॥

सो०-अस विचार हिय माहिं, कर सम्पुट कर तिन सखिन।
शिर नवायके ताहिं, करहिं नमन अस वचन कह॥

होइँ कन्त घनश्याम हमारे ❀ वार वार इम टेर उचारें।
व्रज कुमारिका सवहिन केरी ❀ शुद्ध प्रीति प्रभु जवही हेरी॥
तव मृदु हँसन सहित मदमूला ❀ गोप कुमारिन दिये दुकूला।
अहो प्रेम गोपिन अवलोको ❀ निज कुतर्क मेधा यहँ रोको॥
टर्‌यो लाजते कियो विहीना ❀ अरु वहु भाँति हाँसि रस कीना।
विविध कला कर चित्त डुलायो ❀ नेक न डर्‌यो, रह्यो इक पायो॥
प्रतिपल वढ़त रही दृढ़ प्रीती ❀ शुद्ध हृदयसों करी प्रतीती।
निज निज वसन पहरि व्रजवाला ❀ उत्सुक मिलन हेतु नँदलाला॥
हेरि हरी हियरो हरि लीनों ❀ थकित भई गति मति अस चीनों।
इक टक ठाढ़ीं श्याम निहारें ❀ भूलीं सुधि तन मन परि वारें॥

१ प्यारो २ कार्य ३ बुद्धि।

दो०-लाज सनी कछु कहत ह, प्रति पल मिलनोत्साह ।
बढ़त रह्यो जिन जिय विषे, नेंकहु आन न चाह ३८६

सो०-यही रीति जिन आहि, अस जे गोपिकुमारिका ।
निज पद परसन चाहि, सुन तिनकी अति प्रीति प्रभु

देन हेतु व्रतको फल पूरन ❀ तिन प्रति कह्यौ यशोदा नन्दन।
सुनौ मोद युत कहौं जु वानी ❀ तुम्हरी शुद्ध प्रीति मैं जानी ॥
ताते जोउ मनोर्थ तुम्हारो ❀ सोऊ निश्चय लखौ हमारो ।
किय व्रत धार हिये अभिलासा ❀ किय अर्चन मेरो सहुलासा ॥
सो आसा तुम्हरी अब प्यारी ❀ त्वर पूरण करिहौं, नहिं बारी ।
जिन सनेह मेरे पद माहीं ❀ तिनको काम, काम हित नाहीं॥
जे मो प्रेम पियूर्ष निमग्ना ❀ तिनकी है न आन थल लग्ना ।
भुन्यों अन्न ना उगे बहोरी ❀ तिम जिन प्रीति सुदृढ़ है मोरी॥
तिनको पुन रहि आन न कामा ❀ पूर्ण काम है लह सुख धामा ।
गवनहु तुम सब गोप कुमारी ❀ भइ अभिलाषा सिद्ध तुम्हारी॥

दो०-शरद रजनि जो आवही, मोहिं मिलो तिहँ माहिं ।
जाहित कात्यायानि सुरी, पूजी पुजवौ ताहिं॥३८७॥

सो०-कह मुनि हरिकी वानि, सुन निज पूर्ण मनोर्थ लख ।
अमित मोद रस सानि, प्रभु पद निज उर धार कर ॥

---

१ प्रसून २ देवी ।

जावन हित कीनों मन माहीं ❀ हरि ढिंगते पग चालत नाहीं।
बार बार सौन्दर्य बिलोकें ❀ भवन गवन सम्मति को रोकें॥
तदपि कुमारी जस तस करिकें ❀ निज निजग्रह गईं हरिउर धरिकें।
यह लीला सुन निज मन माहीं ❀ जिनको शंक करें तिहँ ठाहीं॥
भगवतकी [१] लीला जे अहहीं ❀ विविध रहस्य गुप्त तहँ रहहीं।
ते रहस्य, किल जानें सोऊ ❀ श्रद्धा पूर्ण अहे जन जोऊ॥
अरु सत्संग माहिं जिहँ प्रीती ❀ कपट विहीन अहे परतीती॥
जिन कबहू सतसंगति माहीं ❀ पल भर भी कीनों थित नाहीं॥
नहीं शुद्ध चितसों पल एकू ❀ कियो ध्यान प्रभु को सविवेकू।
प्रत्युत भगवत संगिन केरी ❀ कराहिं उदर भर निन्द घनेरी॥३८७

दो०-श्री भगवत से विमुख ह्वै, पाप कर्म रतिवन्त।
निजही को लख चतुरवर, वृथाभिमान धरन्त ॥३८८

सो०-किम तिन तर्क न होइ, है मलीन तिन केर मन।
यदि शुध चितसों सोइ, करे संग तत्त्वज्ञको॥ १०५॥

तो सब गुप्त रहस्य पछानी ❀ लीलामृत लह मोद महानी।
प्रथमें तो गोपीं अरु काना ❀ अहें एकही रूप प्रमाना॥
यह प्रसंग गोपिकाद्वारे ❀ रास अंत मुनि श्रेष्ठ उचारे।
ताते यहँ विस्तारहुँ नाहीं ❀ जाननहार जानलें ताहीं॥

१ और भी २ लीला के तत्व जानने वाले को ३ इसी ग्रंथ का पाँचवाँ द्वार।

किन्तु कृष्ण अरु गोपिन केरो ❀ रञ्चहु अन्तर कहुँ नहिं हेरो ।
केवल क्रीड़ा हेतु अनेकू ❀ देह धारि क्रीड़हिं सविवेकू ॥
जे जन मोहित भगवत माया ❀ भगवत तत्त्व, न तिनदरसाया।
ते प्रभु को प्राकृतवपु मानैं ❀ या थल शंक तेउ नहिं आनैं ॥
जस कुमारिका हैं व्रज केरी ❀ तस कुमार वय हरिकी हेरी ।
तिनकी यह लीला अविकारा ❀ स्वतःसिद्ध है करो विचारा३८८

दो०-अष्ट वर्ष अन्तर करी, यह लीला है जोउ ।
जनु बालक अरु बालिका,खेलत प्रमुदित होउ३६०

सो०-यथा सप्तवय केर, मिल बालक अरु बालिका ।
खेल करत को हेर,तिहँ उर रञ्च न शंक है ॥१०६॥

तिम यदि प्राकृत बालक मानौ ❀ तो अपि शंक हृदयत हानौ ।
अरु जे भगवत भावन युक्ता ❀तिन उर उपज न शंक अयुक्ता॥
भगवतसे अन्तर किहिं केरो ❀ कहौ आप कछु निजहिय हेरो।
पुन भगवत ताही को कह्यऊ ❀ सकल मनोर्थ पूर्ण कर रह्यऊ ॥
यथा भाव प्रभुको जे भजहीं ❀ तथा भाव हरि भजें,न तजहीं ।
श्रीभगवत गीता प्रभु वचना ❀ जो जन जेहिं भाव कर रचना॥
भजै मोहिं मैं तिहँ अनुसारा ❀ भजहुँ ताहिं,अस प्रकटउचारा।
नाना भाव धार बहु भक्ता ❀ भज्यो ईशको है अनुरक्ता ॥
सारतदनु प्रभु परम कृपाला ❀ किये पूर्ण तिन भाव विशाला।
ते इतिहास प्रकट अति अहहीं ❀ शास्त्रन माहिं,पढ़ैं जे चहहीं३६१

दो०—बाल भाव धर प्रीति किय, नन्द यशोदा आदि ।
वाल रूपसों सुख दियो, श्रीप्रभु अमित अनादि ॥

सो०—सख्य भावको धारि, श्रीदामादिक प्रेम किय ।
तिनसों अमित प्रकारि, सख्य सबंधी खेल किय ॥

इन भावन युत भावुक जेऊ ❀ किय प्रभु पूर्ण भाव तिन केऊ ।
तहाँ शङ्क को नाहिं उठावै ❀ प्रत्युत आनन्दित ह्वै जावै ॥
यथा स्वयं जो ईश कहाई[1] ❀ अमित अण्डपति भव विधि राई[2]।
जाके डर कालहु भय पावै ❀ भयहु स्वयं भीति उर लावै ॥
सो प्रभु यशुमतिके ढिग रोवै ❀ कर कम्पत भय युत कछु जोवै ।
अरु यशुदा कर लकुटी देखी ❀ भाजत फिर्यो मातु भय लेखी॥
तिम ऊखलसों आप बँधायो ❀ यहाँ हेतु किल प्रेम लखायो ।
तथा सखन मिल धेनु चरावन ❀ जावें श्रीयमुना तट पावन ॥
तहँ आपुस में विविध प्रकारा ❀ करहिं खेल निज रुचि अनुसारा।
जिहँ प्रभुकी दुस्तर है माया ❀ विधि इन्द्रादिहु नाच नचाया॥

दो०—जिहँ माया प्रभुताइ अस, ऋषि मुनि भूले वाहिं ।
वह माया हरि ढिंग सभय, कर-कृत सावध ताहिं ॥
सो प्रभु तिन ग्वालन निकट, हारैं नहिं दैं दाव ।
तब ते व्रजके सब सखा, डाट कहैं यह न्याव॥३९३॥

---

१ शिव २ बड़ाई ।

सो०-हमें दाउ दुत देहु, काहेको इतरावही ।
जिम तू हमसों लेहु,तथा हमैं दे ऐंठ तज ॥१०८

कहा भयो सुत है व्रजराजू ❀ डरैं न तुमसे नेंकहु आजू ।
इत्यादिक वचनन सुन काना ❀ औरहु अधिक मोद मन माना ॥
यहाँ करो शंका तुम भाई ❀ अस प्रभु किम इनतें भय पाई ।
सह्यौ अनादर सादर आपू ❀ जिहँ प्रताप है अमित अमापू ॥
तहाँ शंक निजको है नाहीं ❀ प्रत्युत प्रेम महोदधि माहीं ।
गोता मार महा सुख पावैं ❀ यदि को अपर शंक तहँ लावैं ॥
ताको अपी झिरकके कहहीं ❀ श्रीप्रभु प्रेमहिके वश रहहीं ।
यहि ईश्वर की ईश्वरताई ❀ जिहँ भय कंपित सुर सुरराई॥
सो प्रेमिन के भय में रहई ❀ अरु तिनको सुख देवन चहई।
भावुक जनके भावनुसारा ❀ लीला करन हेतु अवतारा ॥

दो०-तौ कहु किन भावुक जनन, पूरहिं सब अभिलास ।
अरु किन प्रेमिन की नहीं,पूरहिं जो तिन आस३९४

देखौ ईश्वर वर प्रभुताई ❀ किहँ अपि भाव भजैं सुखदाई ।
सुष्ठु भाव वारन अपनायो ❀ शत्रु भाव वारेन हटायो ॥
अस नहिं किय, सब भावनवारे ❀ पहुँचे परम कृपामय द्वारे ।
जस शिशुपाल आदि जे रह्यऊ ❀ भगवत में रिपुभावन कियऊ॥
तद्यपि मुक्ति धाम तिहँ दीना ❀ अस उदार करुणा रसभीना ।
ते प्रभु शुद्ध भावना धारी ❀ भक्त आशधर हिये मँझारी ॥

तिनकी किम नहिं पूरण करिहैं ❀ किम नहिं पूर्ण कृपा तहँ धरिहैं।
राग द्वेष प्राकृत जन माहीं ❀ वर्तत है, प्रभुमें लव नाहीं ॥
ता हित जो जिहँ भावन युक्ता ❀ भज भगवत ते होवहिं मुक्ता।
यही हेतु प्रभू पूरणताई ❀ अहैं प्रकट ऋषि वृन्दन गाई३९०

दो०—अब कहु किन अभिलास को, पूर्ण करैं श्रीकन्त।
अरु किनकी करहीं नहीं, किम अस योग बनन्त ३९५

सो०-यदि ऐसो वर्ताव, करहीं कृष्ण कृपालु प्रभु।
किनकी आश पुराव, किनकी नहिं पूरण करहिं१०६

तौ फिर ईश प्रभाउ जु कह्यऊ ❀ पूर्ण रूपसौं जांतु न रह्यऊ।
परिपूरणतम भगवत जोऊ ❀ अहै कृष्ण निश्चय कर सोऊ॥
यही महत्त्व अहै भगवन्ता ❀ सकल भाव पूरक, दुखहंता।
तौ फिर गोपिनको पति भावा ❀ पूर्ण करन किम अनुचित गावा॥
अरु जे भाव पूर्ण कर ताहीं ❀ अपि अनेक कारण तिन माहीं।
जस या लीला रहस लखायो ❀ लाज प्रेम अन्तर बड़ पायो ॥
जस इक खंड्गकोषके माहीं ❀ युगल खड्ग रह सकही नाहीं।
जहाँ लाज तहँ अहै न प्रेमा ❀ जहाँ प्रेम तहँ लाज, न नेमा।
यथा नीम तरुको कृमि जोऊ ❀ मिश्री स्वाद न जानत सोऊ।
शक्कर स्वादवन्त कृमि अहई ❀ सो न नीम रस मोदित रहई३९१

१ कदाचित भी २ मियान ३ ननदार ४ कीड़ा।

दो०-तथा प्रेम अरु लाज को, वड़ो अन्तरो जान।
वह भगवत सन्मुख करै,वह कर विमुख निदान३९६

सो०--जीवेश्वर में जान, सुहृद आवरण[1] लाजही।
करी लाज जिहँहान,तिहँतिहँ पल भगवतमिलन११०

लीला विविध अहें प्रभु केरी ❀ विविध रहस्य तहाँ बुध हेरी।
किन्तु ग्रहणकर निज अधिकारा ❀ विन अधिकार ग्रहण न उचारा॥
जस प्रस्तुत लीला के माहीं ❀ लाज तजन रहस्यही आहीं।
तेउ लाज हैं तीन प्रकारा ❀ लोक वेद कुल नाम उचारा॥
पूर्ण प्रेम में वाधक तीनों ❀ यह निश्चय प्रेमी जन चीनों।
किन्तु प्रेमको लेशहु नाहीं ❀ केवल प्रेम शब्दके माहीं॥
जान अपनको प्रेम महाना ❀ करहीं त्रिविध लाजको हाना।
यह अपि निश्चय जानो ताहीं ❀ लेशहु लाज-त्याग सक नाहीं॥
जहँ जहँ स्वार्थ सधै तिहँ केरो ❀ वा निज वड़पन जिहँथल हेरो।
तिहँ तिहँ थल हपनै वस[2] होई ❀ कर जल्पन[3] या विधि की सोई३९२

दो०-मुहिं कदापि नहिं बाँधही, लोक वेद कुल कान।
किन्तु समय जब आवही,तज न सकै लव मान॥

सो०-तिहँ थल अस कह सोउ,परहित मरियादा अपी।
राखन उचितहु होउ,कहा मोर विगरत अहै॥१११॥

१ पड़दा २ अभिमान के वस ३ बकवाद।

पुन यदि को भाखत है ताहीं ❀ तुम इन मरियादन कैं मांहीं ।
हो आसक्त तुम्हें नहिं साहै ❀ सुन अस माया छन्दन मोहै॥
तब किहँ थल हठ बससो ताहीं ❀ निज बड़पन प्रकटन जो चाहीं।
तज मरियादा अस जन जेऊ ❀ निश्चय लहैं नर्क दुख तेऊ॥
जिम जिम प्रेम अवस्था बाढ़े ❀ तिम तिम लाजान्तरको काढ़े।
जब जन पूरण प्रेम अवस्था ❀ पावत है तब ताकी संस्था॥
या विधकी सुंतही किल होई ❀ ताको ही बाधक ना कोई ।
यदि आभास मात्र रहि जाई ❀ तो वह स्वयं ईश सुखदाई॥
है प्रतक्ष अथवा अप्रतक्षा ❀ दे मिटाय,निज जन कर रक्षा।
जिम गोपिन लाजान्तर ध्वंसा ❀ कियो प्रकट ह्वै लख निज अंसा॥

दो०-साधारण जन जगत के, तिन हित यही विचार ।
अहै त्रिविधकी लाज जो, किल तिनके हितकार३९७

सो०-कारण तहँ यह आहि, जिन मनुजन प्रभु ज्ञान नहिं।
नरकादिक भय नाहिं, तिनको किम कल्यान ह्वै॥

भय बिन अघते बचै न कोई ❀ बिन भय भक्ति न हरिकी होई।
सदाचार भय बिन है नाहीं ❀ ताते भयही हित प्रद आहीं॥
प्रथमैं जब भय हियमें आवै ❀ क्रमसों पर निर्भय सो पावै ।
लोक लाज कुल लाज बखानी ❀ तीजी वेदलाज है मानी॥

१ छलछंद २ आपुही ३ लाज ४ नाममात्र ।

इन तीनहूँ को जो जन धारे ❀ इतं उतं लह आमोद महारे ।
पाप कर्म हैं जगमें जेते ❀ असदाचार अहैं पुन कते ॥
इन सबहिनतें सहजहि दूरा ❀ है सकही अस अनुभव पूरा ।
अरु सुकर्म करनेच्छा होई ❀ सदाचार पाले पुन सोई ॥
या विध जब सुकर्म नर करहीं ❀ यावत पाप कर्म परिहरहीं ।
तब विशुद्ध हियमें प्रभु भक्ती ❀ उपजतहै अनुपम जिहँ शक्ती॥

दो०-जब भक्ती हिय उदय ह्वै, तब क्रमसों तिहँ ठाहिं ।
निम्न लिखित उपजत अहैं, भक्ति भूमिका ताहिं ॥

सो०-रति पुन प्रेम सनेह, प्रणय राग अनुराग अरु ।
महाभाव लख लेह, रूढ़ और अधिरूढ़ नव १६३

जिम जिम जीव लहै इन भाई ❀ तिम२ तिहँ गाते अचरज दाई ।
अरु तीनों ही सहजहि छूटें ❀ लोक प्रलोक आश तिहँ टूटें ॥
एकहि आश रहै प्रभु केरी ❀ इष्ट विना गति आन न हेरी ।
तहँ कहँ रहै लाज कहु भाई ❀ किन्तु यह गति सुलभ न राई॥
याते प्रथमें तीनहुँ लाजू ❀ धार सिद्ध कर आपन काजू ।
जब यह दशा प्राप्त जिहँ होवै ❀ तब परब्रह्म एकरस जोवै ॥
यथा घोपवाला की गाथा ❀ अहै प्रकट ते भई सनाथा ।
जिन रंचक अपि ही नहिं राखी ❀ स्वयं ईश भो तिन अभिलाखी॥

१ लोक २ परलोक ३ आनन्द ४ नीचे लिखे हुये ५ व्रजकुमारिका ।

किल श्रीकेशव लीला माहीं ❀ गुप्त रहस्य अनेकन आहीं ।
निज अधिकार गहे जन जोऊ ❀ इष्ट मनोरथ पावे सोऊ॥३९५॥

दो०—अपर हेतु सो प्रकट है, या लीला के माहिं ॥
गोपिन मिष जग जनन को, दिय शिक्षा अस ताहिं॥

सो०—नग्न बहावन नीर, अहै दोष नरनारि को ।
धार अंग निज चीर, न्हाय नदी तिहँ पुण्य है॥११४॥
तज कुतर्क धर प्रेम, श्रीसतगुरु सुख तत्त्व लख ।
वसन्त जो नित नेम, गावै हरि गुन प्रभु लहै॥११५॥

॥ इति श्रीवसन्तकृष्णायने तृतीय वृंदावन द्वारे त्रयो विंशति सोपान समाप्त ॥

कह मुनि एक समयमें ताहीं ❀ रसनिधि श्रीवृन्दावन माहीं ।
वयसनसों मिलकें नँदलाला ❀ धेनु चरावन मोद विशाला ॥
वंशि बजावत आनँद पूरी ❀ गवने श्रीवनतें बहु दूरी ।
तहाँ चरावत प्रमुदित गैया ❀ सखन संग बलराम कन्हैया ॥
ज्येष्ठ मास आतपं अति भारी ❀ ग्वाल वृंद व्याकुलता धारी ।
शीतल कुंज कदंबन छाहीं ❀ जावत जहँ आतप तप नाहीं॥
श्याम सबल सबाल सुखपाई ❀ राजत भे तहँ अवलि लगाई ।
वृन्दावन के तरु समुदाई ❀ श्रीवन अवनि सरस सुखदाई॥

१ इच्छित २ बहाने ३ धूप ४ पंक्ति ।

शाखन सों परसत रह वाहीं ❀ मनहु चूम आनँद लह ताहीं ।
छाजैं छत्र सरिस क्षिति छाये ❀ हरित पत्र फल फूल सुहाये ३९६

दो०-पादप वृंदन सोह लख, लिय बुलाय सख वृंद ।
तत्त्व समन्वित मृदुल वच, कह तिन प्रति व्रजचंद

अहो अंशु अर्जुन श्रीदामा ❀ स्तोक कृष्ण वरुथप सुखधामा ।
देवप्रस्थ हे सुबल विशाला ❀ तेजमान हे ऋषभ गुपाला ॥
ये श्रीवन के पादप देखौ ❀ बड़भागी इनकों अति लेखौ ।
पर उपकार हेतु इन केरो ❀ है जीवन यह सत्य निबेरो ॥
शीत घाम बरषा अरु वातौ ❀ सहत आप वारत पर गातौ ।
सब जीवन ते तरुगण केरो ❀ धन्य जन्म है, यहि मत मेरो ॥
इन समीप जो अरथी आवै ❀ सो कैसेहु निराश न जावै ।
दल फल फूल मूल त्वच सेती ❀ अंकुर दारु छाय सुख देती ॥
रस सुगन्ध भस्महु समुदाई ❀ पर उपकार हेतु है भाई ।
बड़े कृपालु वृक्ष वन केरे ❀ पूरहिं जन मन काम घनेरे३९७

दो०—तन मन धन वच प्रेमसों, अपरन हेतु लगाहिं ।
जन्म सफल तिनको अहै, या भारत भुवि माहिं४०१

सो०-अरु ये तरु जे आहिं, या विध शिक्षा देत हैं ।
पर हित सम कुछ नाहिं, ताते निज स्वारथ तजौ११६

१ वृक्ष २ वायु ३ शरीर ४ काष्ठ ।

भल तुमको दुखहू दें आना ❀ तद्यपि तुम तिन चहु कल्याना ।
भारत भुवि में जन्म जु पायो ❀ ताको लाभ यही दरसायो ॥
कह मुनि या विध वयसन पाहीं ❀ वृक्षन वर्णन कर मुद आहीं ।
सकल सखा सुन वच हरषाये ❀ अहो श्रेष्ठ वच सत्य सुनाये ॥
पुन आनंद मग्न घनश्यामा ❀ सखन सहित अरु युत वलरामा ।
तरु छाया छाया ले गैया ❀ निरखत नमित शाख द्रुम छैया ॥
गवने श्रीकालिन्दी तीरा ❀ अति स्वादिष्ट मिष्ट जिहँ नीरा ।
सुरभिन सों पयपान कराई ❀ आपहु कियो पान रुचिदाई ॥
अरु गोपन अपि कीनों पाना ❀ शीतल जल निर्मल मन माना ।
कूलं कलिन्दी काननं माहीं ❀ लगे चरावन गौवन ताहीं ॥३९८॥

दो०—भई दुपहरी ऐनं में, गये न मोहन मैनं ।
　　बीतो समयो चैन में, चारत सुख युत धैन ॥४०२॥

गोप समूह क्षुधितं कह ताहीं ❀ नंद सुवन संकर्षन पाहीं ।
हम सबको अब भूख सतावै ❀ बिना अन्न आराम न आवै ॥
तब तिनको पठये बल ताहीं ❀ आंगीरस द्विज मखं करें जाहीं ।
ते सब गोप यज्ञ में गयऊ ❀ वाक्य विमल, वंदन कर कह्यऊ ॥
सवल गोप बालक घनश्यामा ❀ आय चरावन गौ इह ठामा ।
ससखन क्षुधित राम अरु श्यामा ❀ तिन तुमप्रति वच कहे ललामा ॥

१ प्यारे २ श्री यमुनाजी के तट पै ३ वन ४ गृह ५ कामदेव ६ भूखे ७ यज्ञ ।

निज घरते भोजन नहिं आयो ❀ भई दुपहरी भूख सतायो ।
ताते विप्र वृंद सुन लीजै ❀ है श्रद्धा तौ भोजन दीजै ॥
आप अखिल धर्मन के ज्ञाता ❀ क्षुधित खवाये बहु फल जाता ।
या विध गोपन वचन बखाना ❀ मानौ द्विजन सुनेउ नहिं काना॥

दो०—निज मन करहिं विचार अस, अनुचित भाखत आहिं
मख भोजन तिन उचित नहिं, जे मख दीक्षित नाहिं॥

आन जु भोजन करही कोई ❀ तौ मख विघ्न अवश कर होई ।
क्षुद्र स्वर्ग अभिलाषा धारी ❀ क्लेशित कर्म करत हंकारी ॥
अज्ञ ईश भक्ती नहिं जानें ❀ निजही को विद्वान पछानें ।
देश काल ऋत्विज अरु तंत्रा ❀ अगिनी द्रव्य देवता मंत्रा ॥
धर्म यज्ञ औरहु यजमाना ❀ इन सबहिन में है भगवाना ।
सोइ कृष्ण परब्रह्म प्रमाना ❀ ताको द्विजन मनुज कर माना॥
मख मद सिंधु डूब द्विज रह्यऊ ❀ हां वा नाहिं कछुहु ना कह्यऊ ।
ग्वाल वाल तब भये निरासू ❀ मुरि आये हरिबल ढिंग आसू॥
क्षुधित दीन है गिरा सुनाई ❀ कहा कहैं हम जो गति पाई ।
भाख्यो आप वचन अनुसारा ❀ विप्रन तौ कछुहू नउचारा ४००

दो०—होवै कबहू निज हिये, कार्यार्थी न निरास ।
विनय दीनता प्रेमधर, भिक्षुक होवै दास ॥४०४

१ पैदा होना है २ मूर्ख ३ शीघ्र ।

सो०-या विध शिक्षा लोक, करत, कृष्ण भाखत वचन।
सुनो गोप तज शोक, हत उत्साह न होउ मन११७

कह मुनि ग्वाल गिरा सुन काना ❀ कछु मुसक्याय फर कह काना।
सखा जाउ पुन अपि तुम ताहीं ❀ शंक लेश अपि राखहु नाहीं ॥
जाय तहां द्विज नारिन पाहीं ❀ कहु आये बल युत हरि याहीं।
सुनत नाम मेरो ते आसू ❀ देवहिं भोजन सहित हुलासू ॥
परम सयानीं हैं द्विज नारी ❀ मो पद प्रीति सुदृढ हिय धारी।
श्याम वचन सुन ते गोपाला ❀ आये पुन आशू मखशाला ॥
द्विज वामा निज भवन ललामा ❀ मन कामा इक हरि छवि धामा।
अस सुन्दरिन पाहिं तिन कहाऊ ❀ नंद सुवन समीपही रहाऊ ॥
धेनु चरावत हिय हुलसावत ❀ मन भावत बातन बतरावत।
आये निकस बहुत ही दूरी ❀ सखन सहित भूखे हैं भूरी ॥

दो०-तुम्हरे तट हम सबनको, भेज्यो है ता हेतु।
जे विरंचे व्यंजन विविध, देहु हमैं, हम लेत॥४०५॥

कृष्ण कथा प्रथमें सुन राखी ❀ तबते दर्शनकी अभिलाखी।
आये निकट सुनतहीं वामा ❀ अकथ प्रमोद लह्यो उर धामा॥
जिहँ विध राज रहीं द्विज नारी ❀ तिहँ विध उठीं त्वरा कर भारी।
भोजन चार प्रकार सुस्वादू ❀ भर भर थार अमित अह्लादू॥
गवनीं तहँ जहँ अहैं कन्हाई ❀ जिम सरिता सागर पहँ जाई।

१ कामना २ बहुत ३ बनाये।

अस तिन निरख कंत सुत भाई ❀ रोकन लगे सबन बरियाई ॥
किन्तु तदपि ते रुकीं न ताहीं ❀ श्यामहिं लग्न मग्न मन माहीं।
सबै त्याग दारुण जग लाजू ❀ आई तहँ जहँ सुन ब्रजराजू ॥
कूल कलिन्दी तट पे सोहै ❀ नूतन कुंज अशोक विमोहै।
वहत त्रिविध वायू सुखकारी ❀ गुंजत भृंगपुंज मनहारी ॥४०३॥

दो०–घन सम सांवल गात जिहँ,मोर मौलि ललचात।
उर सुहात वनमाल बहु, पीताम्बर फहरात॥४०६॥

सो०–नटवर वेष उमंग, अंग लसत पत्रावली।
मोहि विलोक अनंग, दर्शनते भय भंग ह्वै॥११८॥

इम नख शिख शृंगारित काना ❀ निरख नारिगण मुदित महाना।
मनमें कहत अहो हम जैसो ❀ सुनत रहीं निरख्यो अपि तैसो॥
हम बड़भागिन निश्चय आजू ❀ किय दर्शन,सिध भै शुभकाजू।
सुन गोविन्द प्रीति तिनकेरी ❀ मृदु मुस्काय सबन कहि टेरी॥
हे बड़ भागिनि सब द्विज वामा ❀ भल आईं मो ढिंग या ठामा।
आय समीपहु बैठो सबही ❀ कहौ जु हम करहीं सो अबही॥
मो दर्शन हित तुम मो पाहीं ❀ आई हो यह अनुचित नाहीं।
जे रसपूर्ण भक्त मतिवाना ❀ मो सनेह रँग रँगे महाना ॥
ते निष्काम धरैं मो प्रीती ❀ केवल प्रेम प्यास अस रीती।
प्राणपियारो मैं तिन केरो ❀ ते मुहिं प्राणहुते प्रिय हेरो४०४

१ हठसों २ शीघ्र ३ मुकुट ३ पुण्य काम।

दो०-प्राण बुद्धि मन देह धन, तिय सुत आदिक जेउ ॥
आतम ते प्यारे लगें, नहिं तो रुचैं न तेउ ॥४०७॥

सो०-हमको निश्चय जान, हम आतम के आतमा ।
ताते योग्य प्रमान, मोमें प्रीति जु कीन तुम ११६

अब गवनहु मखभवन मँझारा ❀ मान विमल यह वचन हमारा ।
तुम्हें संग ले द्विज समुदाई ❀ सविधि यज्ञ कर पूरणताई ॥
कृष्ण वचन सुन सब द्विज वामा ❀ कर संपुट कर वचन ललामा ।
तथा सरस युतविनय बखानें ❀ हे मोहन सोहन, किम मानें ॥
जो जन मुहिं भजही इकबारा ❀ तिहँ न तजहुँ, अस आप उचारा ।
यह निज वानी सत्य करीजे ❀ हमें चरणतें दूर न कीजे ॥
हम कुलकान महान तियागी ❀ आप पाद पंकज अनुरागी ।
किम कोमल मुख कुलिश समाना ❀ कहो वचन, हम अचरज माना ॥
यदि हम जावें मान न पावें ❀ पति पितु प्रभृति कलंक लगावें ।
यह तो घर वारन गति सूझे ❀ अपर जनन की कहु को बूझे ४०४

दो०-पद अरविंद मकरंद की, प्यासी दासी आहिं ।
काहे दुख देवहु हमें, होन निठुर भल नाहिं ॥४०८॥

सो०-द्विज नारिन वच कान, सुन गुन प्रीति अनूप अति ।
बोले युत मुस्कान, दरसावत रस रीति तिनि १२०

१ वज्र २ कमल ।

हे द्विजवाम वृन्द सुन लीजे ❀ वचन तत्त्वमय हिये धरीजे।
पति सर्वस नारीको कह्यऊ ❀ पतिहित्याग सुखकिनहु न लह्यऊ॥
वह पति सरुज¹ सुलक्षण हीना ❀ अधम अपंग² अबुध अति दीना।
ऐसहु पति तज पर पति चाहे ❀ निजके सकल सुकृत वह दाहे³॥
अन्त नर्क दुख यमपुर वासा ❀ सहे अनंत दुसह तहँ त्रासा।
मारत ताड़त जिहँ पति प्यारो ❀ वह पतिव्रत कुल भूषण प्यारो॥
पतिव्रत धर्मा तिय जग माहीं ❀ करे पुनीत देश भर ताहीं।
तापै रहैं मुदित त्रयदेवा ❀ यह प्रताप पतिव्रत तिय एवो॥
और सुनो जो तुव उर शंका ❀ ताहित अमिट मोर वच अंका⁴।
तुम्हरे पति पितु बांधव वृंदा ❀ भूल न करहिं तुम्हारी निन्दा॥

दो०-प्रत्युत तुमहिं प्रशंस सब, मो प्रसादं⁵ जन जेउ।
ताको जो कारण अहै, सुनो सुन्दरी तेउ॥४०६॥

सो०-मोर रचित सब लोक, अरु तिहँ वासी विबुध⁶ अपि।
मैं प्रेरक उर ओक⁷, ताते शंक न करहु लव॥२१॥

यथा दूरते उपजत नेहा ❀ तथा न संग रहनतें एहा।
सुमरन दर्शन अरु मो ध्याना ❀ तथा मोर सुन्दर गुन गाना॥
इनतें उपज प्रेम मो जैसो ❀ निकटवर्ति नहिं होवत तैसो।
ताते गवन भवन अब कीजे ❀ मो माहीं मन नित्य धरीजे॥

१ रोगयुक्त २ नेत्रहीन ३ जलाती है ४ निश्चय ५ कृपा ६ देववृन्द ७ धाम।

जाय पतिन मिलकें मखशाला ❀ यज्ञ पूर्ण करहौ तुम बाला ।
कह मुनि सुनि श्रीप्रभु के वैना ❀ द्विजनारी गवनी निज ऐना ॥
देवईश दुर्लभ प्रभु रूपा ❀ धार हिये, गुन गाय अनूपा ।
प्रथमैं इक द्विज आपन वामा ❀ आवत भइ जो प्रति घनश्यामा॥
रोक दियो तिहँ भवन मँझारी ❀ तिहँ तिय हिय हरि मूरति धारी।
जस हरि छवि सुन निजजिय राखी❀धर तस ध्यान मिलन अभिलाखी॥

दो०-पंचतत्त्वमय देह तज, दिव्य देह को धारि ।
सबसों प्रथमैं जा मिली, करुणा कृष्ण निहारि४१०

सो०-रे मन अब तो मान, निरख कृपा श्रीकृष्ण की ।
वसंत धर हिय ध्यान,हरि मूरति, बंधन नसैं१२२

यदि यह दाव वृथा तू खोवैं ❀ तो तू हाय हाय कर रोवै ।
कोइ न रक्षक तुम्हरो होई ❀ निश्चय जान कहत मैं जोई ॥
जन्म अनन्त भटक नर देही ❀ प्रभु कृपया पाई तुम एही ।
तियन विलोक अलौकिक भक्ती ❀ श्रीप्रभु माहिं परम अनुरक्ती ॥
निजको भक्तिहीन लख तेऊ ❀ निजातमहिं निंद्योअति तेऊ ।
बहुज्ञता[1] रु क्रियाँ[2] चतुराई ❀ सुकुल जन्म विद्या अतराई ॥
ये सब हमरे धिक धिक आहीं ❀ जो प्रभु प्रीति रंच अपि नाहीं ।
भगवत माया निश्चय करके ❀ कर मोहित योगिन मन हरके ॥

१ बहुत जानना-२ संध्यादि अनुष्ठान ।

हैं हम त्रैवर्णन गुरु जेऊ ❀ स्वार्थ माहिं मोहे अपि तेऊ।
अहो तियन अपि या जग आहीं ❀ भाव दुरन्त लख्यो प्रभु माहीं४०७

दो०-जो अभिद्य दारुण महत, काल पाश गृह केरि।
ताहिं तोड़ श्रीकृष्ण में, मगन प्रीति रस ढेरि ४११

न इनको द्विजाति संस्कारा ❀ नहिं निवास भयऊ गुरुद्वारा।
नहिं तप आत्म मिमांसो नाहीं ❀ नाहिं शोच नहिं क्रियाहु आहीं॥
तदपि उत्तमश्लोक मँझारी ❀ सुदृढ़ भक्ति,निज नेन निहारी।
हम संस्कारादिक संयुक्ता ❀ भये न तदपि कृष्ण अनुरक्ता॥
ननु हम स्वार्थ मूढ़ गृहसक्ता ❀ सतत प्रमत्त रहें भवभक्ता।
अहो कृपा हमरी सुधि लीनी ❀ गोप वाक्य चेतावनि कीनी॥
नहिं तो पूर्णकाम घनश्यामा ❀ पति कैवल्य प्रभृति सब कामा।
ईशतव्यं हमपै किम याच ❀ अहै विड़ंवन निश्चय साचे॥
देश काल ऋत्विज अरु देवा ❀ मंत्र तंत्र सब धर्म सुभेवा।
पृथक द्रव्य मख तिम यजमाना ❀ ये जिनके स्वरूप हैं माना४०८

दो०-वहि प्रकट या पुहुमि पै, सुन्यो पूर्व निज कान।
तदपि मूढ़ हम नहिं लख्यो,रहे यज्ञ अभिमान४१२

अहो धन्य हम निजको कहहीं ❀ तिय हमरी हरि भक्तनि अहहीं।
भा जिनके दृढ भक्ति प्रभावा ❀ हम सबको प्रभुमें दृढ़ भावा॥

---

१ क्षत्री, वैश्य, शूद्र २ महान ३ न टूटने योग्य ४ विचार ५ पवित्रता ६ श्रीप्रभु ७ पामर जीव ८ पदार्थ।

करहिं प्रणाम कृष्ण पद अबही ❁ जिहँ माया माहिन जग सबही।
भ्रमत कर्म पथमें बहु भाँती ❁ बिन जिन कृपा न पावें शाँती॥
जिहँ माया वश मोहित चीता ❁ जेहिं प्रभाव नते रीता।
अस हम जे तिनके सब दोषा ❁ करें क्षमा, देवहिं संतोषा॥
लख निज चरण शरण जन दीना ❁ सदा देहिं दृढ भक्ति नवीना।
या विध पश्चातापहिं करहीं ❁ धन्यधन्य तिय भक्ति उचरहीं॥
बहु इच्छा प्रभु दर्शन भयऊ ❁ कंस भूप भयतें नहिं गयऊ।
कह नारद श्रीकृष्ण विहारी ❁ सबल गोप तिह विपिन मँझारी॥

दो०-द्विज नारिन प्रद जे तहाँ, भोजन विविध प्रकार।
यथा योग बांटन लगे, परम मोद उर धार॥४१३॥

सो०-बहु विध करत प्रशंस, यमुना तट द्रुम छाहँ तर।
कछुक परस्पर हंस, किय भोजन अति मुदित ह्वै॥
इह विध गोपन माहिं, राजत खावत छवि निरख।
वसँत मग्न तहँ आहिं, तिहँ वन ध्यानावेशमें १२४

॥ इति श्रीवसन्तकृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे चतुर्विंशति सोपान समाप्त ॥

कह नृप मैथिल कहु मुनिराई ❁ अपर चरित हरिके सुखदाई।
कृष्ण सुयश सुन तृप्ति न थोरी ❁ ताहित पुनपुन कहत निहोरी॥

१ खाली।

जिहँ दर्शन सुपने नहिं पावें ❀ शिव विधि मुनि बहु यत्न लगावें।
जिहँ. चरित्र भवसागर माहीं ❀ दृढ बोहित सम,नर तर जाहीं॥
मिल गोपन कर केलि अनंता ❀ अहो भाग्य ब्रज शिशुन महंता।
दरस परस अरु हास्य विनोदा ❀ करहिं कृष्णसों, ह्वै मन मोदा॥
जिन गोपन इक प्रीतिहि धारी ❀ किल सब साधन दिये विसारी।
ताते निश्चय भो मुनिराई ❀ कृष्ण प्रीति बिन सुख नहिं राई॥
तुव प्रसादें मेरो मन लागो ❀ युगल चरित अनुरागहिं पागो।
कह मुनि धन्य धन्य हे भूपा ❀ हरि यश प्रीती परम अनूपा॥

दो०-सुन नृप अपर चरित कहौं, राम श्याम इक काल।
वयसन गे भांडिर विपिन, तट कालिन्दि विशाल॥

सो०-केलि करत घनश्याम, सुवाद्य वाहक लच्चणा।
हेरत सुरभि ललाम, विचरत विपिन विलच्चणा॥

करत केलि मन मेलि गुपाला ❀ परम मोद मन मग्न विशाला।
ताहि समयको जो आनंदा ❀ करत कथन को कवि मतिमंदा॥
तहँ प्रलंब दानव इक आयो ❀ गोपरूप में, कंस पठायो।
नहिं जान्यो गोपालन ताहीं ❀ अंतरयामि लख्यो पल माहीं॥
किये युगल दल सखन सुचाऊ ❀ भये प्रधान कृष्ण बलदाऊ।
मिली न एक गोपकर जोरी ❀ रह्यो ताक खेलौं किहँ ओरी॥

---

१ नाव २ अनुग्रह ३ पद्धी नामक खेल ४ मुखिया।

कृष्ण ओर को सखा पिछानो ❀ प्रलंब ताहिंसों जाय मिलानों ।
किय संकेत युगल मिल ताहीं ❀ जो खेलत हारे या माहीं ॥
सो दूसर दल पीठ चढ़ाई ❀ भांडिर वट लग सो ले जाई ।
जय बलराम हार हरि पाई ❀ निज निज जोरी सबन उठाई॥

दो०–प्रमुदित दानव दाउ को, द्रुत निज पीठ चढ़ाय ।
पद्दि अवधित दूर गो, करी प्रकट निज काय ॥

सो०–कृष्णाग्रज तनु गौर, कज्जल गिरि सम रजनीचर ।
सोहत शशि नभ ठौर, विद्युत घनमें सोह जिम ॥

नील पटांबर बल तनु माहें ❀ गरमें माल सुगंधित मोहे ।
कुंडल लोल मनोहर धारी ❀ दैत्य पृष्ठ सोहत बड़ भारी ॥
महा भयंकर दानव रूपा ❀ निरख राम बलवंत अनूपा ।
तिहँ शिरपै इक मुष्टिक मारी ❀ इन्द्र वज्र सम दृढ़तर भारी ॥
फूट्या माथ दैत्य को ताहीं ❀ यथा वज्रसों गिरि फट जाहीं ।
सहसा पतित भयो भुवि सोऊ ❀ भयो निधन भुवि कंपित होऊ॥
आशु दिव्य वपुधारी भयऊ ❀ यक्षराज पुरिमें सो गयऊ ।
सुरन सुमन तव तहँ वरपाये ❀ जय बलराम कहत हरपाये ॥
जय जय शब्द भयो तिहँ काला ❀ नभ अरु भुविमें परम विशाला ।
या प्रकार केशव बलरामा ❀ अद्भुत परम चरित्र ललामा ॥

---

१ श्रीकृष्णके बड़े भाई २ मरगया ३ कुबेर ।

दो०-करत रहत श्रीधाम में, निज जनके सुखदाय।
गावै जो नित नेमसों, सत्य अचल सुखपाय॥४१६॥

कह मैथिल रण दुर्मद जोऊ ❀ पूर्वकाल दानव को होऊ।
श्रीवलराम हाथ ते पाई ❀ मुक्ति असुर तनुने मुनिराई॥
कह नारद शिव अर्चन हेतू ❀ यक्षराट शुभवन सुखकेतू।
तिहँ वन सुमन करन हित रक्षा ❀ राखै भड़त प्रबल बहु यक्षा॥
तदपि धनद वन फूलन कोऊ ❀ ले जावै छिपकें मुद होऊ।
तदा यक्षपति दीनों शापू ❀ महा कोप कर, उर संतापू॥
जो हो या वन पुष्पनहारी ❀ मानुष सुर वा को तनुधारी।
सो तत्काल असुर वपु पावै ❀ चैन न लह बहु दुःख समावै॥
हूहू पुत्र विजय जिहँ नामा ❀ विचरत तीर्थ भूमि निष्कामा।
सो तिहँ विपिन चैत्ररथ आयो ❀ पथि विष्णु पद गात सुहायो॥४१२

दो० वीणा पाणि वजाय सो, तोरे कुसुम अजान।
सो तिहँ हित भो असुर तन, गंध्रव वपु भो हान ४१७

तदा शरण कहि आनत आयो ❀ यक्षराट तट सद्य सिधायो।
वंदन करत विनय बहु कीना ❀ अंजलि बाँध शनै है दीना॥
तब कुवेर नृप प्रमुदित भयऊ ❀ वर तत्काल तेहिं प्रति दयऊ।
हे शांतात्मन् श्रीपति भक्ता ❀ मानद शोक तजो अस उक्ता॥

१ मार्ग में २ हाथ में ३ फूल।

द्वापरान्त होवै निस्तारो ❀ श्रीकृष्णाग्रज बल, जब धारो ।
मनहर भांडिर वनके माहीं ❀ श्रीबलदाउ हाथतें ताहीं ॥
कालिन्दी तप रमण सुहायो ❀ पाउ मुक्ति तुम,सत्य लखायो ।
कह नारद मुन मैथिल राया ❀ सो हूहू नन्दन यह गाया ॥
असुर शरीर त्यागकें सोऊ ❀ अलकापति वर गति गत होऊ ।
स्तेय दोष है अतिशय भारी ❀ तस्कर सह दुख दुसह अपारी४१४

दो०-बिन आज्ञा किहँ वस्तुको, गृहण करै यदि कोइ ।
तिहँ अपि चोरी कहत बुध,ले न श्रेय वह जोइ४१७

सो०-बसन्त ह्वै निष्काम, श्याम केलि में मग्न रह ।
नित्य अचल सुखधाम, दाम बिना तू सद्य लह१२७

॥ इति श्रीकृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे पञ्चविंशति सोपान समाप्त ॥

कह मुनि सुन हे मैथिलराई ❀ परिपूरणतम कृष्ण कन्हाई ।
देववृन्द शासक इक सोई ❀ मद भञ्जक या सम नहिं कोई ॥
मदके उपजत ही शुभकर्मा ❀ आशु नष्ट होवत, यह मर्मा ।
आश्रित जन यदि उर अभिमाना ❀ होय उदय तो कृपानिधाना ॥
वा मद दूर करनके हेतू ❀ रचना रच आशू सुख देतू ।
वहि इक रचना सुनो नृपाला ❀ एकादशि व्रत किय व्रजपाला ॥
निराहार नारायन नामा ❀ कियो जाप सुन नेह ललामा ।
अरु अर्चन विधि पूर्वक कीनों ❀ विप्रन विविध दानहु दीनों ॥

या प्रकार मों दिवस बितायो ❀ निशि कीर्तन कर बड़ सुख पायो।
वेला अतिक्रम भय हिय आयो. ❀ निशीथही न्हावनको चाह्यो।४१५

दो०-ताते गे मज्जन करन. श्रीकालिन्दी कूल।
आतुर ह्वै जल प्रविश किय, वेला रहि प्रतिकूल४१८

प्रविशत नन्दहिं जलपति दूता ❀ वरुण लोक ले गे मुद हूता।
तब गोपन कोलाहल भयऊ ❀ हा हा नंद कहाँ चलि गयऊ॥
कही जाय तिन प्रभु के पाहीं ❀ को तुव पितुको हर गो आहीं।
जलही में न्हावत व्रजराई ❀ त्वर तहँ दीख न पड़े कन्हाई॥
वरुण दूत हरिगे हरि जानी ❀ सबको दिय आश्वास महानी।
अपनन को नित अभय प्रदाता ❀ वरुण-विलोक कृष्ण साक्षाता॥
अभय आय किय दंड प्रमाणा ❀ जय हो जय निज जन सुखधामा॥
शुच सिंहासन पै पधराये ❀ किय पूजन मन मोद बढ़ाये॥
ठाड़ो सन्मुख सम्पुट पानी ❀ निज सम अपर धन्य नहिं मानी॥
गद गद कंठ कहत प्रभु पाहीं ❀ पयोनिधि पुलकित भो उरमाहीं॥

दो०-जन्म सफल मो आज भो, पायो पावन योग।
धन्य कहों निज भाग्यको,धन्यो जु अस संयोग४२०

सो० गोलोकाधिप आप, अगणित अंडन पति प्रभो!।
आप अनंत प्रताप,शिव विधि पूजित पद पदम१२८

१ आसुरी वेला २ वरुण ३ धैर्य ४ वरुण ५ श्रीगोलोक के स्वामी।

आप चरण दुख हरण प्रमाने ❀ शरण जनन सुख करण बखाने।
अस जे चरण हिये निज धारें ❀ गोपद इव भवसिंधु सम्हारें ॥
जय भगवाना कृपानिधाना ❀ चह कल्याना प्रेम निधाना।
प्रकृती पर परब्रह्म साक्षाता ❀ हर अज्ञानज तम रवि भाना ॥
सर्वभाव वन्दौं शिरनाई ❀ जय हो जय मेरे सुखदाई।
किहँक मूढ़ मो अनुचर जाई ❀ लायो हरि तुव पितु ब्रजराई ॥
क्षमहु कृपानिधि हेलन सोऊ ❀ रही न सुधि तिहँ नेकहु जोऊ।
अरु जिहँ भृत्य करे अपराधू ❀ सो स्वामीको होवत आदू ॥
ताते यह हेलन क्षमो आहीं ❀ बिना आप क्षमिहैं को ताहीं।
ले जावौ ब्रजराजहिं आसू ❀ ब्रजवासी सब हैं अभिलासू४१७

दो० कह सुनि तब प्रभु प्रसन भै, लोकपाल पै ताहिं।
पितु ले श्रीवन गमन किय, महामुदित मन माहिं४२१

निज सुहृदन को नेह वढ़ायो ❀ नंद विलोक सवन सुखपायो।
नंद सकल ब्रजवासि बुलाये ❀ तिन प्रति कहत वचन हरषाये ॥
मैं जो वरुण लोक लख आयो ❀ तिहँ विभूतिको अंत न पायो।
तिहँ जलेश या कनुवा केरी ❀ पूजा करी नैन निज हेरी ॥
अतिहि दीन ह्वै प्रार्थन कीनी ❀ किय प्रशंस बहु हती नवीनी।
भाखत भयो कन्हैया पाहीं ❀ तुम साचात परेश्वर आहीं ॥
मैं तो प्रथम चकित चित माहीं ❀ लाला किम आयो या ठाहीं।

१ अपराध २ दास ३ वरुण ४ वरुण।

पुन जल्पति के या विध बैना ❀ परम चकित भो निज उर ऐना॥
मनमें ऊहत कहा इन कह्यऊ ❀ या प्रकार मन सोचत रह्यऊ।
आय अचानक ब्रज को देख्यो ❀ मो आश्चर्य अंत नहिं लेख्यो॥

दो०-तब गोपन विहँसत कह्यो, हम सबके मन माहिं।
उपज्यो हठ या रीति को,किहँ विध हट सक नाहिं॥

सो०-जबतें या ब्रज धाम, जायो मन भायो सुवन।
तबतें वचन ललाम,वहु ऋषि वृन्दन वदनतें॥१२६॥

सुनें सदा वैकुंठ जु धामा ❀ जहँ श्री[१] श्रीपति वसत ललामा॥
अतिशय दुर्लभ दर्शन ताको ❀ वहाँ पहुँच सक योगिहु नाको॥
तिहँ विकुंठके देखन कारन ❀ कहें कृष्ण प्रति,आश निवारन।
दे दिखाय वैकुंठ उताला ❀ चाहत हम देखन सब ग्वाला॥
यदि तू स्वयं अहे भगवाना ❀ जो यामें नहिं संशय आना।
अस सम्मत कर गोप गुवाला ❀ जिनके उर है चोप विशाला॥
देखें कब वैकुंठ ललामा ❀ ते अब भाखत प्रति घंश्यामा।
हे ज भूषण कहिं तुम पाहीं ❀ सो सुन सावध धर हिय माहीं॥
गर्ग ऋषी हम प्रति कहि वानी ❀ यह जो कृष्ण अहै छविखानी।
सो नारायण सम तुम जानो ❀ यह मेरे जिय अहै प्रमानो॥४२०

दो०-मृषा नाहिं ऋषि के वचन,हमहु लखे निज नैन।
मारण आये मर गये,महा असुर दुखदैन॥४२३॥

१ लक्ष्मी २ नारायण ३ शीघ्र ४ उत्कंठा।

औरहु चरित अलौकिक देखे ❀ हो नारायन सम हम लेखे ।
किन्तु अबहि ब्रजपति निज नैना ❀ आयो देख वरुणके ऐना ॥
तिहँ तो औरहु तुम्हैं चढ़ायो ❀ हो साक्षात ईश अस गायो ।
अब यदि तू ऐसोही अहही ❀ तो हमरो मन या विध चहही॥
जो वैकुंठ धाम हम सुनहीं ❀ तिहँ देखन हम सबही गुनहीं ।
देहु दिखाय हमहुँ तिहँ देखें ❀ कहा अहै कौतुक तहँ पेखें ॥
अस सुन ब्रजवासिनके प्यारे ❀ जन हितकारे नन्द दुलारे ।
निज मन चाह्यो इन अभिलासू ❀ पूर्ण करों अबही अति आसू ॥
प्रकट कहत तिन गोपन पाहीं ❀ भैया तुम्हरे वच सत आहीं ।
एकहि वस्तु यथा जिहँ भावा ❀ तदनुसार तिहँ हगरथ आवा॥२०

दो०-हिय विचार अनुसार प्रभु,सब समर्थ जिहँ आहिं।
अस हरि वैष्णवि शक्ति निज,विस्तारी ब्रजमाहिं॥२४

सो०-युवा वृद्ध अरु बाल,सब ब्रजवासी निरखहीं ।
सोह विकुंठ विशाल,पूर्व न देख्यो चकित कह॥१३०॥

चतुर द्वारते भीतर गयऊ ❀ तहँ इक ज्योतिर्मण्डल रहाऊ ।
तिहँ विलोक पुन देख्यो ताहीं ❀ रूप अनूप चतुर्भुज आहीं ॥
चक्र गदा दर अरु अरविंदा ❀ चतुर बाहु में धर सानंदा ।
कीट कटक केयुर वनमाला ❀ आदि आभरण सोह विशाला॥

१ दृष्टिगोचर २ शंख ३ कमल ४ कंकड़ ५ बाजूबन्द ६ गहने।

अगणित कोटि भानुकी शोभा ❀ शेष सेज थित सबमन लोभा ।
ब्रह्मादिक सुर चँवर ढुरावैं ❀ चतुर वेद बहु विध यश गावैं॥
सनकादिक ऋषि जय जय भाखैं ❀ नैन टकटकी इक गति राखैं ।
गदा धारि प्रभु पार्षद रह्यऊ ❀ तिन विलोक गोपनको कह्यऊ॥
करौ सबहि मिल दंड प्रणामा ❀ ठाड़े रहौ पृथक या ठामा ।
ते बोलन लग आपुस माहीं ❀ चकित चितैं चित डगमग आहीं॥

दो०-तब तिनको पार्षद तहां, या विध शिक्षा दीन ।
रहौ मौन भाखौ मती, दर्शन करौ नवीन ॥४२५॥

सो०-देख्यो कबहु विकुंठ, या थल तुम किम आयहो ।
याकी गती अकुंठ, देवेश्वर राजत यहां ॥१३१॥

चकित होय गहि मौन, अस शिक्षागत गोप सब ।
कह उच्चासन जौन, कहा हमारो कृष्ण यह॥१३२॥

हम ब्रजवासिन पृथक बिठाई ❀ निज सुहृदता सकल भुलाई ।
पुन अब वदत वदनते नाहीं ❀ ताते अब चलिये ब्रजमाहीं ॥
यह तो हमरो सखाहु नाहीं ❀ देखो कस स्वरूप यह आहीं ।
हमरो कृष्ण भुजा धर दोऊ ❀ पुन मुरालि लकुट कर होऊ ॥
यह विकुंठ हमरे किहँ कामा ❀ जहां न मिलन मोद घनश्यामा॥
जिहँ ब्रजमें हम संग सदाई ❀ करत केलि हमरे मन भाई ॥

१ मत ।

मिलैं परस्पर अंतर त्यागे ❁ भाइन सम हमसों अनुरागे।
वचन विलास होय सुखकारी ❁ पल विछोह नहिं करै विहारी॥
संग संग डोलत रह पाछे ❁ अति मनोज्ञ कटि काछनि काछे।
ताते व्रज समान नहिं लोका ❁ जहां सकल विध रहत अशोका॥

दो० अस विचार मनमें करत, महामग्न सुधि नाहिं।
तिन सबको कौतुकि तदा, दरसाइ व्रज ताहिं ४२६

व्रजमें निजकों निरखकें, सबही मुदित महान।
कहत अहैं वैकुंठहू, जातु[१] न व्रजहि समान॥४२७॥

सो० अहै तोर कह काम, अपर धामते मोर मन।
व्रज वस लह घनश्याम, तज वसंत भटकन सकल १३३

॥ इति श्रीवसन्तकृष्णायने तृतीय वृंदावन द्वारे षड्विंशति सोपान समाप्त॥

कह मुनि एक समय व्रज गोपा ❁ पूरित रत्न शकट चढ़ि रोपा।
वृषभानू उपनन्द सुनन्दा ❁ आम्बिक विपिन आय सानंदा॥
सरसति न्हाय देविको ध्यायो ❁ किय पूजन विधिवत मनभायो।
दान दिये विप्रन मन भाई ❁ सोये सरिता तट रुचिदाई॥
सर्प एक आयो निशि माहीं ❁ निगल्यो नंदराय पग ताहीं।

---

१ कदापि।

दो०-कथा सुरस रस भंग भो, प्रश्न करत तत्काल।
सपदि पाप मोशिर लगो, माया विविश कृपाल॥

क० कह मुनि सुन विद्याधर गुन मन निज,
मोह रु कपट हरि तट नहिं जाये हैं।
गुण कृत पट दोष कहत श्रुति विबुध,
ते सकल हरि बल माया उपजाये हैं॥
वही माया सतत डरन प्रभु कृष्ण ढिंग,
रह कर जोर आज्ञा माहीं चित लाये हैं।
निज माया माया वश मान, जान अस तहँ,
अंधजन को दिवस अंधकार छाये हैं॥११॥

दो०-यथा रज्जु में उरग भ्रम, है कल्पित अज्ञान।
तिम माया वश मोह कर, श्रीप्रभु में हठ ठान॥४१

क० यदपि सतत सब विधि मृषा आहि यह,
देखत नयन सुधि सृष्टि को पसारो है।
तदपि न जान्यो जाय सत्य ताको तत्व जोउ,
बिन प्रभु कृपा जीव भ्रम न निवारो है॥
जाके भृकुटि विलास पात्र माया बहु त्रास,
उद्भव स्थिति विनास करत विस्तारो है।
कोटिन ब्रह्मंड नाचैं ताके अनुराग राचैं,
कोउ प्रभु कृपा पावैं भक्त सो सचारो है॥१२॥

१ शीघ्र २ मिथ्या।

कृष्ण कृष्ण तब नन्द पुकारे ❀ भइ बड़ व्यथा न देह सम्हारे ॥
जरती लकड़ी गोपन लीनी ❀ धाय हनन अहिके शिर कीनी।
तद्यपि नाग चरण नहिं त्यागा ❀ जिम न तजत मणि मुखते नागा।
यदा लोकपावन प्रभु आये ❀ पद ताड़न किय अहि तनु पाये।
तब अजगर निज वपुको त्याग्यो ❀ तत्पल विद्याधर वपु पाग्यो ॥

दो०-सद्य युगल कर जोरकर, सन्मुख ठाड़ो होय ।
सविनय कियो प्रणाम तिहँ, महत मुदित मन सोय॥

कह गंधर्व सुनो मो स्वामी ❀ अजगर तन न भयो विश्रामी।
अनिक प्रकार कष्ट तहँ पाये ❀ आप कृपा अब सर्व गँवाये ॥
केशव कह्यो कहो निज नामा ❀ अहे कवन तू को तव ग्रामा ।
किहिं कारन पन्नग तनु पायो ❀ कहो कवन दुष्कृति लपटायो॥
कह विद्याधर सुनो कृपाला ❀ सब उर वासी दीनदयाला ।
छवि गुण सुखरासी अघनासी ❀ ब्रजवासी जीवन धनरासी ॥
रस समुद्र श्रीवन शशि आपू ❀ कलुष निकंदन अमित प्रतापू ।
सब विधि करुणानिधि श्रीस्वामी ❀ भक्त मानप्रद अंतरयामी ॥
जाणे प्रभु अतिशय कर दाया ❀ वाको निज माया लपटाया ।
नाम सुदर्शन गंध्रव मोरा ❀ नाक निवास कहत अब ब्योरा ॥

दो०-विद्याधर मुहिं महत मद, निज सम लखों न आन।
सुनों जहाँ पंडित तहाँ, करों वाद हठ ठान ॥४२९॥

कवित्त

ब्रह्म के विवाद माहीं, मो सम जगत नाहीं,
'अस मम मन ताहीं, रह्यो अभिमान है।
निरगुण मत भाय, और न कछु सुहाय,
आप केलि सुखदाय, भावै न, अज्ञान है॥
प्रभु एक काल माहीं, अष्टावक्र ऋषि पाहीं,
गयो अहमिति आहीं, नाहीं शिरनायो है।
आपकी कथा पुनीत, श्रोता सावधान चीत,
सुन रहे सप्रतीत, महा मोद पायो है॥ ६॥

दो०-बिन विश्वास सुनौं तहाँ, आप चरित सुखमूल।
कैसे उपजे प्रीति मन, उठैं तर्क प्रतिकूल॥४३०॥

सो०-रहे जु श्रोता आन, आप चरित मन मग्न सब।
मैंहीं हित अभिमान, तिहँ सुखते वंचित रह्यो॥

क० भक्ति आपकी त्रिताप ध्वंसक मुक्तिद पुन,
भव निधि तारक प्रशंस मुनि गाई है।
सुनि यह मोते तहँ रह्यो नहिं गयो प्रभु,
छुह्यो निज मति हठ कुतर्क चलाई है॥
निज जड़ता के वश किय प्रश्न ह्वै अवश,
आपके यशामृतकी सुधि नहिं पाई है।
कहो मुनि किम भगवत मोह वश ह्वै के,
मानी रति नारिन सों संशय महाई है॥१०॥

कृष्ण कृष्ण तब नन्द पुकारे ❀ भइ बड़ व्यथा न देह सम्हारे ॥
जरती लकड़ी गोपन लीनी ❀ धाय हनन अहिके शिर कीनी।
तद्यपि नाग चरण नहिं त्यागा ❀ जिम न तजत मणि मुखते नागा।
यदा लोकपावन प्रभु आये ❀ पद ताड़न किय अहि तनु पाये।
तब अजगर निज वपुको त्याग्यो ❀ तत्पल विद्याधर वपु पाग्यो ॥

दो०-सद्य युगल कर जोरकर, सन्मुख ठाड़ो होय।
सविनय कियो प्रणाम तिहँ, महत मुदित मन सोय॥

कह गंधर्व सुनौ मो स्वामी ❀ अजगर तन न भयो विश्रामी।
अनिक प्रकार कष्ट तहँ पाये ❀ आप कृपा अब सर्व गँवाये ॥
केशव कह्यो कहौ निज नामा ❀ अहे कवन तू को तव ग्रामा।
किहिं कारन पन्नग तनु पायो ❀ कहौ कवन दुष्कृति लपटायो॥
कह विद्याधर सुनौ कृपाला ❀ सब उर वासी दीनदयाला।
छवि गुण सुखरासी अघनासी ❀ व्रजवासी जीवन धनरासी ॥
रस समुद्र श्रीवन शशि आपू ❀ कलुष निकंदन अमित प्रतापू।
सब विधि करुणानिधि श्रीस्वामी ❀ भक्त मानप्रद अंतरयामी ॥
जाणे प्रभु अतिशय कर दाया ❀ वाको निज माया लपटाया।
नाम सुदर्शन गंधर्व मोरा ❀ नाक निवास कहत अब ब्योरा॥

दो०-विद्याधर मुहिं महत मद, निज सम लखौं न आन।
सुनौं जहाँ पंडित तहाँ, करौं वाद हठ ठान ॥४२९॥

कवित्त

ब्रह्म के विचार माहीं, मो सम जगत नाहीं,
'अस मम मन नाहीं, रह्यो अभिमान है।
निरगुण मत आश्रय, और न कछु सुहाय,
आप केलि सुखदाय, भावे न, अज्ञान है॥
प्रभु एक काल माहीं, अष्टावक्र ऋषि पाहीं,
गयो अहमिति आहीं, नाहीं शिरनायो है।
आपकी कथा पुनीत, श्रोता सावधान चीत,
सुन रहे समतीत, महा मोद पायो है॥ ६॥

दो०-बिन विश्वास सुनौं तहाँ, आप चरित सुखमूल।
कैसे उपजे प्रीति मन, उठैं तर्क प्रतिकूल॥४३०॥

सो०-रहे जु श्रोता आन, आप चरित मन मग्न सब।
मैंहीं हित अभिमान, तिहँ सुखते वंचित रह्यो॥

क० भक्ति आपकी त्रिताप ध्वंसक मुक्तिद पुन,
भव निधि तारक प्रशंस मुनि गाई है।
सुनि यह मोते तहँ रह्यो नहिं गयो प्रभु,
छुह्यो निज मति हठ कुतर्क चलाई है॥
निज जड़ता के वश किय प्रश्न ह्वै अवश,
आपके यशामृतकी सुधि नहिं पाई है।
कही मुनि किम भगवत मोह वश ह्वै के,
मानी रति नारिन सों संशय महाई है॥ ७॥

दो०-कथा सुरस रस संग भो, प्रश्न करत तत्काल ।
सपदि पाप मोशिर लगो, माया विविश कृपाल ॥

क० कह मुनि सुन विद्याधर गुन मन निज,
मोह रु कपट हरि तट नहिं जाये हैं ।
गुण कृत पट दोष कहत श्रुति विबुध,
ते सकल हरि बल माया उपजाये हैं ॥
वही माया सतत डरत प्रभु कृष्ण ढिंग,
रह कर जोरे आज्ञा माहीं चित लाये हैं ।
निज माया माया वश मान, जान अस तहँ,
अंधजन को दिवस अंधकार छाये हैं ॥११॥

दो०-यथा रज्जु में उरग भ्रम, है कल्पित अज्ञान ।
तिम माया वश मोह कर, श्रीप्रभुमें हठ ठान४३२

क० यदपि सतत सब विधि मृषा आहि यह,
देखत नयन बुधि सृष्टि को पसारो है ।
तदपि न जान्यो जाय सत्य ताको तत्व जोउ,
बिन प्रभु कृपा जीव भ्रम न निवारो है ॥
जाके भ्रूकुटि विलास पावै माया बहु त्रास,
उद्भव स्थिति विनास करत विस्तारो है ।
कोटिन ब्रह्मंड नाचैं ताके अनुराग राचैं,
कोउ प्रभु कृपा पावैं भक्त सो सचारो है ॥१२॥

१ शीघ्र २ मिथ्या ।

दो०—विना भक्त माया वच्यो, असकहुँ देख्यो नाहिं ।
योगी ज्ञानी बहुत भे, किय मायावश ताहिं ४२३

क० मोह कि व्यापे कृष्ण को तम कबहुँ रविको,
दुख आतप शशिको अगति समीर को ।
अनल शीतलताको पारद श्यामलता को,
शूरप कायरताको अस्थिरता सुधीर को ॥
जाके नाम लेतहीं छुटत माया छल सब,
सो कि माया वश होय नन्द को कन्हाई है ।
जस नटवर माया मोहित सकल जन,
आप नहिं मोहे तामें ताकी गति पाई है ॥१३॥

दो०—जाके भ्रूभँग मात्र सों, माया अंड निकाय ।
कर निर्मित बहु भाँतिके, जस जस आज्ञा पाय ॥

क० भक्त हित निज इच्छा, धार वपु आयो प्रभु,
करत विविध [1] विध लीला सुखकारी है ।
सत्त्वरूप भव भावते विराग पाय दृढ़,
सानुराग भजत जु जन दुखहारी है ॥
कामीजन देखत सकल जग नारि मय,
जानें सतिको असति भयो अघ भारी है ।
मूढ़ को गरल सम सुविद्या प्रतीत होत,
लगै मधुरहुँ कटु पित रुज धारी है ॥१४॥

---

१ समूह ।

दो०-गुण को अवगुण कर लखैं, जब जिय बस अज्ञान।
नेत्र दोषते होत जिमि, युगल चंद्रको भान॥४३१॥

क० ऐसेहि विषय भूत लाग्यो जिन जन उर,
तेउ कृष्ण माथ दोष धरत अभागी हैं।
जिम सन्निपात वश बकत अवश मन,
तिम माया वशते जल्पन अनुरागी हैं॥
पाप बुद्धि निज पाप प्रभु पै लगाइ भल,
वे तो शुद्ध परब्रह्म आतमानुरागी हैं।
अस प्रभुको भजत काम व अकाम धर,
तेउ त्रिभुवन माहिं परम सभागी हैं॥१५॥

दो०-सुनौ यशोमति लाल अब; लखे सत्य मुनि वाक।
माया प्रेरित बुद्धि मम, भयो न चेत मनाक४३६

क० कीन प्रश्न पुन मुनिवर पाहीं मूढ़ मैंने,
अज जो कहत ईश कैसे जन्म लयो है।
कह्यौ कृपाकर, पुन मुनिवर इह भांति,
भगवान सकल शक्तिन धार रह्यो है॥
जब जब अवनि दुखित होत अतिशय,
द्विज धेनु सुर भक्त बहु दुख लह्यो है।
तब तब निज इच्छा प्रकट करत वपु,
करत चरित्र शुभ अस श्रुति कह्यौ है॥१६॥

१ थोरासा।

दो०-अनल भानु श्रीगंग सम, है समर्थ नंदलाल।
अचल ओट जे गहत हैं, निर्मल होत विशाल ४३७

क०-करन अकरन करन अन्यथाउ कर्म,
अहै जो समर्थ श्रुति ताहिं ईश कह्यो है।
तापै अन धरन महान अनुचित अहै,
गुप्त भेद बिन प्रभु कृपा नहिं लह्यो है॥
प्रथम विश्वास धर गावै गुन गोविंद के,
सतसंग माहीं जाग्यो मन नित रह्यो है।
तापै करुणा निधान करत कृपा महान,
परम मुदित होय ताको कर गह्यो है॥ १७॥

दो०-यद्यपि पुन पुन ऋषि कहे, चरित अलौकिक आप।
सुन, प्रतीति नहिं प्रकटि उर, उदय भये बड़ पाप॥

क०-तब मुनिवर मोहिं खलवर जान दियो,
घोर शाप, हियो दुखी, करुणा निधान है।
लागत न तोहिं उपदेश कछु मंदमत,
हृदय तुम्हार बसि दुष्टता महान है॥
ताते शठ जाउ तुम अजगर देह पाउ,
वचन मृषा न मम, कृपा भगवान है।
प्रभु के विमुखन की गति अनुभव कर,
बिन दुख, सुख नहिं रंचक प्रमान है॥१८॥

दो०-शठ अहि तनु बहु दुख सहसि, तब तुहिं ह्वै विश्वास।
बिन ताडन ह्वै ना कबहु, शठन बोध सुखरास॥

क०–भव त्रास दुख रास नास न होवे कबहु,
बिन गुन गाय व्रजराय सुखदाय के ।
जैसे बिन भानु कबहु न होत दिन द्युति,
निशि न प्रकाश होत बिन निशिरायके ॥
सुनी प्रभु भयउ उरग ततकाल तहँ,
भई बड़ चिंता चित अहि वपु पायके ।
यतन किये अनेक नेंक न भयउ काज,
करकें विवेक पुन वस्यो व्रज आयके ॥ १९ ॥

दो०–मुनिवर करुणा आपको, भयो दर्श प्रभु आज ।
छुट्यो श्राप कुमती गई, भये सिद्ध सब काज ४४०

सो०–प्रभु अब आप प्रताप, लख्यो भयो उर ज्ञान तब ।
अस कह गत संताप, प्रभु पद पंकज शिर धर्यो ॥

करी प्रदक्षण प्रमुदित भारी ❀ जयहो जयहो वदन उचारी ।
जय भुवनेश शेषपति स्वामी ❀ जय अशेष पद अंतरयामी ॥
जय व्रजपति नंदन जन रंजन ❀ जय शरणागत भव भय गंजन।
जय शिव विधि वंदित व्रजधामी ❀ जय राधापति सब सुखधामी ॥
जय वांच्छित प्रद परम कृपाला ❀ जयजीवन धन यशुमतिलाल।
जय मम तम अज्ञान विनासी ❀ जयसमदृक सम्यक सुखरासी॥
कह मुनि अस कह वंदन कीना ❀ विद्याधर प्रीती रस भीना ।
दिव्य देह धर गा हरि लोका ❀ सर्व उपद्रव वर्जित ओका ॥

नंदादिक लख विस्मित भयऊ ❀ नेह निमग्न हियो जिन रह्यऊ।
अविक बनते सबहीं तेऊ ❀ प्रमुदित भवन गये यह भेऊ ॥

दो०-नृप तव प्रति भाख्यो सुभद, कृष्ण चरित चितलाय।
सर्व पाप हर पुण्य कर, भजौ श्याम सुखदाय ४४२

सो०-भज वसंत व्रजराय, मनुज काय दुर्लभ महा ।
भव रुज बड़ दुखदाय, तिहिं हित धन्वन्तरि सदृश॥

॥ इति श्रीकृष्णायने तृतीय वृन्दावन द्वारे सप्तविंशति सोपान समाप्त ॥

कह मुनि एक काल के माहीं ❀ गिरिवर देश सबल हरि ताहीं।
सु० विलापन खेल रचायो ❀ सकल सखा मिल मोद बढ़ायो ॥
गोप रूप व्योमासुर आयो ❀ खेलकरत लख शिशु समुदायो।
तिनै चुराय कामवन माहीं ❀ आवत राख गुहा हैं जाहीं ॥
दरी द्वार बड़ पाथर राख्यो ❀ मयसुत मायावी बड़ भाख्यो ।
श्याम सत्य तस्कर तिहँ जान्यो ❀ तासों हिये क्रोध बड़ आन्यो॥
कियो ग्रहण ततकालहि ताहीं ❀ बहु भ्रमाय पटक्यो भुविमाहीं ।
तब तिहँ असुर देह द्रुत धार्यो ❀ इक मुष्टिकसों प्रभु तिहँ मार्यो॥
निकस जोति तिहँ तनुते ताहीं ❀ लीन भई माधव मुख माहीं ।
जय जय शब्द भयो भुवि भारी ❀ या विधि मुक्ति पाइ विबुधारी॥

दो०-नभतें वर्षा सुमन कर, हर्षित सुर समुदाय ।
बड़ प्रसन्न भै देव नर, परमानन्द समाय ॥४४३॥

कह नृप व्योमासुर को आहीं ❀ कुशलपात्र भो अति त्वर याहीं।
कह मुनि शिवपुरिको भूपाला ❀ नाम भीमरथ दानि विशाला॥
धनी यज्ञ कर्ता बहु मानी ❀ श्रीपति भक्त द्विजन सुखदानी।
राज्य पुत्रको दे सो गयऊ ❀ गिरि मलयाचल में जा रह्यऊ॥
तप आरम्भ तहाँ तिहँ कीनों ❀ एक लक्ष हायन मन दीनों।
तिहँ आश्रम पुलस्त मुनि आयो ❀ शिष्य वृन्द तिहँ संग सुहायो॥
दरस करत हू उठयो न मानी ❀ कियो न वन्दन सम्पुट पानी।
महदपराध निन्द्य दुखदानी ❀ परम कृपालु ऋषि जिय जानी॥
दियो शाप वाको ततकाला ❀ दैत्य होइ दुख भोग कराला।
शाप सुनत व्याकुल वड़ भयऊ ❀ कम्पित गात,जोर कर रह्यऊ४२७

दो०-मुनिवर पद पंकज गिर्यो, शरण शरण सुख गाय।
दीनन वत्सल ऋषि तदा,कह तिह प्रति समुझाय४४४

द्वापरान्त भारत भुवि माहीं ❀ पुण्यद ब्रजमंडल शुभ ठाहीं।
पति गोलोक कृष्ण सुखदाता ❀ त्राता निज जन वड़ विख्याता॥
तिनके हाथ मुक्ति तुव होवै ❀ योगिन इच्छित पद तु जोवै।
कह नारद सुन नृप चितलाई ❀ सोउ भीमरथ यहि नरराई॥
मयदानव को सुत भुवि भयऊ ❀ मुक्ति कृष्ण करते तिहँ लह्यऊ।
एक समय ब्रजमंडल माहीं ❀ असुर अरिष्ट वली वड़ आहीं॥
आय नाद किय गगन मँझारी ❀ सींगनसों भुवि तटन विदारी।
गोपि गोप गो गण समुदाई ❀ तिहँ विलोक भागे भय पाई॥
दैत्य निकन्दन श्रीभगवाना ❀ दीनों अभय सबन विधि नाना॥
पकर सींगसों खेंच्यो जाई ❀ केलि करन रुचि महज कन्हाई॥

दो०-दैत्यहु खैंच्यो कृष्ण को, बड़ गर्वित मन माहिं।
तदा पकड़ खर पूंछ प्रभु, बहु भ्रमाय दिय ताहिं४४५

जिम पट रजक[1] शिलापै मारै ❀ तिम भुविपै हरि असुर पछारै।
पुन अरिष्ट क्रोधित उठ आयो ❀ तप्त ताम्र चख आतुर धायो॥
श्रीप्रभु पकर पटक दिय ताहीं ❀ कर जिम पवन पुष्प गति आहीं।
वृषभ रूप तव तिहँ तज दयऊ ❀ नूतन विप्र रूप तिहँ भयऊ॥
परम प्रसन्न नयन जल छायो ❀ कृष्ण स्वरूप निरख ललचायो।
सप्रणय प्रभु पद पंकज माहीं ❀ पुन पुन किय प्रणाम मुद आहीं॥
गद गद गिर अतिशय ह्वै दीना ❀ प्रेम सहित बहु प्रार्थन कीना।
जय गोलोक स्वामि गोपाला ❀ जय व्रजजन सुखप्रद नँदलाला॥
जय निज जन वत्सल भयहारी ❀ जय करुणामय सब सुखकारी।
स्तुति कर पुन प्रभु पद शिरनायो ❀ नाम गाम निज ठाम सुनायो४२९

दो०-पूर्वनाम वरतन्तु मम, ब्राह्मण वपु के माहिं।
करत हुतो विद्याध्ययन, श्रीगुरु वृहस्पति पाहिं४४५

गुरु देखत मैं गुरु मुख आगे ❀ पांव पसार रह्यो भ्रुवि आगे।
तदा क्रोध कर श्रीगुरु कह्यऊ ❀ वृष[2] सम वसुधा सोय जु रह्यऊ॥
गुरु हेलन तुम कियो महाई ❀ ताते तुव तनु वृष ह्वै जाई।
श्रीगुरु शाप हेतु मैं आयो ❀ वंगदेश में वृष वपु पायो॥
तहां संग असुरन को भयऊ ❀ असुर स्वभाव ताहि हित लह्यऊ॥

१ धोबी २ वैल।

आप प्रसाद मुक्ति मैं पाई ❀ असुर भाव मो गयो बिलाई ॥
नमहुँ नन्दनन्दन व्रजधामी ❀ वन्दौ वासुदेव सुरस्वामी ।
प्रणत क्लेश नाशक पर रूपा ❀ नमो नमो गोविन्द अनूपा ॥
कह मुनि पुन प्रभु पद शिरनायो ❀ शिष्य बृहस्पति नेह बढ़ायो ।
चढ़ि विमान सुरपुर के माहीं ❀ करत प्रकाश गयो सो ताहीं ४३१

दो०—हे नृप श्रीगुरु जानिये, देव देव साक्षात ।
तन मन धनसों सेव कर, लहौ मुक्ति विख्यात॥४४७॥

सो० महा दुखद कलि जान, गुरु हेलन किञ्चित अपी ।
संगति कर सुखखान, ताते उर दृढ़ भाव धर॥१३७॥

जिहँ गुरुते सद्बुद्धि उपावै ❀ लोक वेद ज्ञाता बन जावै ।
बिन गुरु प्रभुकी भक्ति न जानै ❀ बिन जानै कहु किम मन आनै॥
प्रेम भक्ति बिन कष्ट अनन्ता ❀ पावत जीव,कहत श्रुति सन्ता।
गुरु प्रसाद पावै प्रभु प्रेमा ❀ अगम सुगम है, लह पद खेमा॥
गुरु मुख प्रभु चरित्र सुन धारै ❀ सो नर निश्चय व्यथा विदारै।
बिन गुरु गति कदापि नहिं पावै ❀ सिद्ध श्रुतिज्ञ यदपि है जावै ॥
श्रीगुरु शरण होय कर सेवा ❀ लह प्रभु भक्ति मुक्ति पद मेवा ।
गुरु भक्ती बिन नर नहिं पावै ❀ भुक्ति मुक्ति बिन श्रुति असगावै
गुरु प्रशंस प्रभुते हू भारी ❀ बिन गुरु कबहु न मिल गिरिधारी।
ताते नर नितहीं गुरु सेवै ❀ चार पदारथ करतल लेवै ॥

दो० या विध नृप तुम प्रति कह्यो, श्रीवृन्दावन द्वार ।
कृष्ण प्राप्ति कर पाप हर, दाता पुण्य अपार ४४८

सो०-सर्व काम प्रद आहि, सन्तत सुमरो भूप यह ।
पुन अवका मन माहिं, श्रवणेच्छा वहुलाश्व कहु १३८

धर उर वड़ उत्साह, वसन्त श्यामसनेहि नित ।
कर अध्ययन अचाह, लहैं श्यामपद सुगम अति १३९

कवित्त

वृन्दावन द्वार रस सागर अपार अति,
गुरुदेव गोपीश्वरी कृपासों कह्यो है ।
जिम जिम गोता मार रतन अनंत लहै,
यामें नाहिं शंक लव अनुभव आयो है ॥
श्याम के सनेहिन को यहि सर वस अहै,
विन याके कबहु न हियो हुलसायो है ।
कहत वसन्त यदि शुद्ध नेह चाह उर,
तज सब ओर गाथ हिये क्यों न लायो है ॥२०॥

॥ इति श्रीवसन्तकृष्णायने तृतीय वृंदावन द्वारे अष्टविंशति सोपान समाप्त ॥

दो० अट्ठाइस सोपान है, श्रीवृन्दावन द्वार।
तामें चौपाई दशरु, बत्तिस अरु शतचार ॥ १ ॥

अडतालिस अरु चार सौ, दोहे हैं तिहँ माहिं।
इकशत उनतालीस है, सुभग सोरठा ताहिं॥ २ ॥

सो० छन्द अहैं चौबीस, श्लोक एक संकट हरण।
लखौ कवित बाईस, इति भो द्वार तृतीय यहँ॥१॥
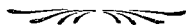
॥ इति श्रीश्यामस्नेहीसुरितिस्थापक भक्तशिरोमणि द्विजकुलकमलदिवाकर
श्रीयुत रसन्तरामकृत सकलकलि कलुष निकन्दन परात्परानन्द
सम्पादन श्रीकृष्णायने तृतीय श्रीवृन्दावन द्वार समाप्त ॥

❁ श्रीराधावनान्तर्विहारिणेनमः ❁

श्रीवसन्त कृष्णायन

का

चतुर्थ गिरिराज द्वार।

जिसमें–

सोपान (१) मङ्गलाचरण, इन्द्रयज्ञ की तैयारी, श्रीकृष्ण के व्रजराज प्रति इन्द्रयज्ञ निषेध विषयक वचन (२) नन्दराय ने पञ्चायत की और सब व्रजवासीन का एक मत (३) श्रीगोवर्द्धन पूजा के लिये अनेक सामिग्री लेकर जाना (४) श्री गिरिराज को प्राकट्य, पूजन; अन्नकूट की रचना (५) व्रजवासीन का गिरिराज से वर मांगना (६) प्रसाद बाँटना, खाना; निज-निज भवन में जाना, (७) इन्द्र का कोप, मूसल धारा मेह, श्रीकृष्ण का गिरिवर उठाना, तहाँ व्रजवासीन को बसाना, यशोदा वात्सल्य, सखन को परिहास (८) देवराज दर्पदलन, व्रजवासीन का निज-निज सदन गमन (९) गोपन की पञ्चायत, नन्दराय के मुख से गर्गगीत सुन संशय निवृत्ति (१०) इन्द्र प्रार्थना, निजकृत अपराध क्षमा कराना, सुरभी कामधेनु कृतगोविन्दाभिषेक आदि विषय वर्णित हैं।

रचयिता—

श्रीमद्भागवतामृत रसास्वादी, परम भागवत, सिन्धु देशावतंस श्रीश्यामस्नेही स्तुति संस्थापक, सारस्वतकुलोद्भव

श्रीयुत वसन्तरामजी महाराज

प्रकाशक—

श्यामस्नेही श्यामाचरण

आगा का टंडा, हैदराबाद (सिंध)

सम्वत् १९९२ वि०।

नाम-धुनि

व्रजपति माधव मोहन नाम ।
पतित पावन राधेश्याम ॥
वसन्त विहारी राधेश्याम ।
रसिक प्राण-धन श्यामाश्याम ॥
जय नन्दनन्दन जय घनश्याम ।
कीरति नन्दनि राधेश्याम ॥
वृन्दावन धन सुन्दर श्याम ।
वसन्त विहारी पूरण काम ॥
जन मन मोहन जय नन्दलाल ।
क्लेश निकन्दन जय गोपाल ॥
राधा माधव जन प्रतिपाल ।
कीरति नन्दनि यशुमति लाल ॥
जब बोलो जब हरी हरी ।
मनहर मुरली अधर धरी ॥
राधा कृष्णा गोविन्दे ।
जागन दे ना सोवन दे ॥
राधावल्लभ चितके चोर ।
वंक विहारी बन्धन तोर ॥

॥ श्रीराधावसन्तबिहारिणेनमः ॥

अथ
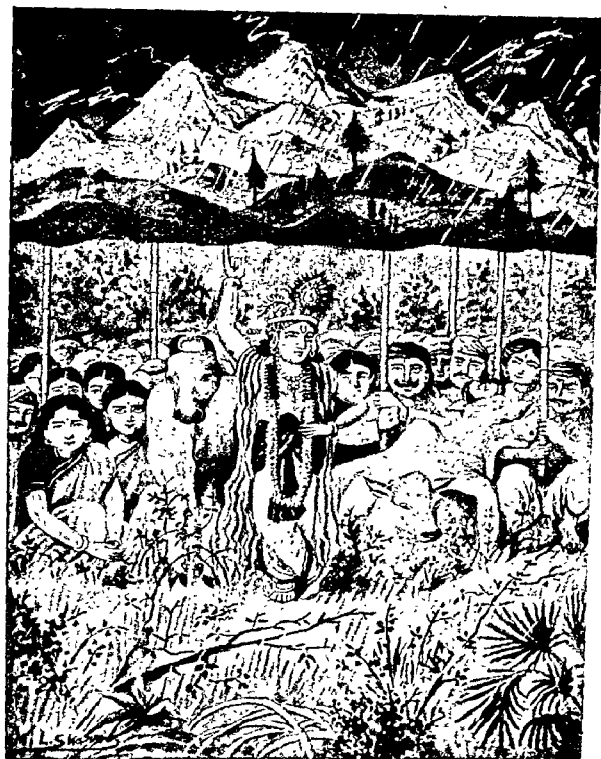
❀ श्रीबसन्तकृष्णायन प्रारम्भ ❀

॥ चतुर्थ श्रीगिरिराज द्वार ॥

मंगलाचरण

धृत्वा छत्र समं महाद्रिरि वरं गोवर्द्धनाख्यं परम् ।
येनाकारि महेन्द्र दर्प दलनं गो गोप रक्षा कृतो ॥
तं प्रेमामृत सागरं व्रजपतिं गा गोप संशोभितम् ।
सेवे श्याम मनोहरं सुमधुरं गोलोक धामाधिपम् ॥ १ ॥

जिन्होंने छत्र के समान गिरिराज गोवर्द्धन को धारन किया और गो गोपन की रक्षा के लिये देवराज इन्द्रका दर्प (मद) दलन किया, उन प्रेमरूप अमृत के समुद्र व्रजेश्वर गो गोपादिकन से सुशोभित सुंदर गोलोक धामाधिपति श्यामसुंदर को भजता हूं ॥ १ ॥

मदध्वंसक जनरक्षक शूरा ❀ कृष्ण सदृश को प्रेम प्रपूरा ।
प्रीति रीति ज्ञाता परिपूरन ❀ व्रजजन दुख सहजे कर चूरन॥
जहँ लीला प्रेमिनहित प्राना ❀ अपरन हित दायक कल्याना ।
अस मो प्रभु गोवर्द्धनधारी ❀ जन सुखकारी सब दुखहारी ॥
तिहँ पद पङ्कज करहुँ प्रणामा ❀ अखिल अर्थदायक सुखधामा ।
वन्दों श्रीगोपेश्वर स्वामी ❀ व्रज रस रसिक मौलि बड़ नामी॥

जिन करुणा गिरिधरन प्रसंगा ❀ वर्णन करों प्रेम रस रंगा ।
कह नारद सुन मैथिलराई ❀ अब गिरिराज द्वार सुखदाई ॥
जिम ब्रज वासिन गिरि पुजवायो ❀ सुरपति को अभिमान मिटायो ।
धर गिरिराज काज ब्रज कीनों ❀ सुर समाज लख भो मद हीनों ॥

दो०-वह गाथा गोविन्दकी, कहौं महत उत्साह ।
जिहँ सुन सहजहि अघ नसैं, पावैं त्वर ब्रजनाह॥१॥

सो०-आयो कार्तिक मास, ता दिनते ब्रजवासि सब ।
हिय धर परम हुलास,विविध नेम व्रत करन लग ॥

कार्तिक वदी सप्तमी माहीं ❀ न्हाये राधाकुण्ड जु आहीं ।
अष्टमि दिन मानसि गंगा में ❀ स्नान कियो मिल हरि बलरामें॥
पुन प्रदक्षिणा किय गिरिराजू ❀ करत विविध विध सब शुभकाजू।
देवी देव बसत बृज माही ❀ कियो दरस ब्रजवासिन ताहीं ॥
नवमीको, निज निज घर आये ❀ हिय हुलसाये परम सुहाये ।
दशमी दिन ब्रजराज बुलाये ❀ सकल गोप,सुनतहि सब आये॥
तिन प्रति नंदराय कह भैया ❀ सुनो वचन मोरे सुखदैया ।
कहा भूल गे वासव यागा ❀ जामैं अपन सबन अनुरागा ॥
कहा इन्द्र मख करौ कि नाहीं ❀ सुनतहि कहत आशु अतिताहीं।
अहो नन्द भल यादि दिवाई ❀ हम तो भूले, सुधि नहिं राई २

दो०-याहीते हम सबनके, मान्य भूप हैं आप ।
समय समय रक्षा करौ, हरो हमारे ताप ॥ २ ॥

सो०-आप बिना को आन, रक्षा कर हे नन्द नृप ।
टेढ़ो अहै महान, इन्द्र देवता स्वर्ग को ॥ २ ॥

⁂ कवित्त ⁂

यदि हम वाको यज्ञ करहिं न तौ अवस,
कुपित हृदय नहिं मेह बरसावहीं ।
कछु चिंता हीं अब, यदपि समय लघु,
उद्यम कर महान, सामग्री सजावहीं ॥
इम कह गोप सब गयऊ तहँते त्वर,
पूजाकी तैयारी माहीं हिये को लगावहीं ।
कोई तो सामग्री लावै कोई मिठाई करावै,
कोई घी तुलावै कोई बूरो मँगवावहीं ॥ १ ॥
कोई गीत गावै कोई वाद्यहु बजावै कोई,
भट्टी खुदवावै कोई कढ़ाई मँजावहीं ।
झज्जर करछी कोई कोई कौंचा डोरी पुन,
कोई पौना पौनी लाय सामग्री सजावहीं ॥
खाँड को गलावै कोई छानै है भरै है कोई,
तबाय छुनाय घीको गोलन भरावहीं ।
कोई खजला खुरमा मोदक मठरी फेनी,
पापड़ पापड़ी सेव, समई बनावहीं ॥ २ ॥
कोई इमरती बूँदी घेवर सकलपारे,
पेठे पाक आदि बहु मिठाई बनावहीं ।
सुनारन बुलवावैं भूषणन घनवावैं,
दरजी बुलाय बहु कपड़ा बोनावहीं ॥
निज निज रुचि बहु बसन विविध भाँति,
बनवावैं देख देख हियो हुलसावहीं ।
होम हेतु बहु विध सामग्री सजावै कोई,
आँगन लिपावै कोई सुपेदी करावहीं ॥ ३ ॥

कोई निज बालक को, रोवत ही छोड़ गई,
नाहिं गोद कर कोई, लाड़सों खवावहीं ।
कोई काहू को बुलावै, राय तिनने मिलावैं,
या प्रकार व्रजभर, शोर मन भावहीं ॥
भवन भवन इम, धूम मच रही बहु,
तब रोहिणी यशोदा, अस बतरावहीं ।
कहा व्रजभर यह, शोर चहुँ ओर अति,
देखन अपन महलन पर जावहीं ॥ ४ ।

दो०-तावत श्रीव्रजरायजी, त्वर निज आँगन जाय ।
लगे पुकारन सुनहु वच, हे कनुवा की माय ॥ ३ ॥

इन्द्रयाग के दिन रहि नाहीं ❀ बनी न सामग्री घर माहीं ।
याते अब अति आशु तैयारी ❀ यथा योग्य करवाउ अबारी ॥
नंदराय वच सुन निज काना ❀ यशुमति उर भो मोद महाना ।
तिहँ अवसर निज पुरोहितानी ❀ बुलवाई निज घर व्रजरानी ॥
अरु दुज विप्रानी बहु पाचक ❀ बुलवाये जे अतिहि अयाचक ।
सब भंडार दिये खुलवाई ❀ थल थल पै भट्टी खुदवाई ॥
पुन कढ़ाय तिन पै चढवाई ❀ सबन हिये आतुरता छाई ।
विविध पदार्थ बनाये ताहीं ❀ पहुँचावंत भंडारे माहीं ॥
पृथक पृथक, रोहिणी सयानी ❀ देत उठाय हाथ व्रजरानी ।
यशुमति अपि बड़ सावध होई ❀ न्यारे न्यारे राखत सोई ॥ ३॥

दो०-माखन दूध दही तथा, रबड़ी खोत्रा आदि।
पसर रहे चहुँ ओर ते, सबहिन को बड़ स्वाद ॥४॥

सो०-ताते यशुमति माय, मन ही मन अस कहत है।
कहुँ कनुवा यहँ आय,इन वस्तुन को छी न ले॥३॥

ताहीं समय क्षुधा जिहँ लागी ❀ अस श्रीकृष्ण खेल अनुरागी।
खेलत खेलत इक गोपी के ❀ गयो भवन तहँ देख्यो नीके॥
वे गोपी गृह कारज माहीं ❀ अति अनुरक्त अहै थल ताहीं।
देख दूरते मोहन पाहीं ❀ कहन लगीं मधुरे बच ताहीं॥
खेलौ आज बाह्य तुम काना ❀ भीतर मत अइयो हम प्राना।
आज हमारे घर के माहीं ❀ देवार्चन सामग्री आहीं॥
अहैं अछूती सबही जेऊ ❀ लाल न छी लीजो तुम तेऊ।
सुन अस वचन कृष्ण छविवंता ❀ अपर गोपि गृह गये तुरंता॥
वानें अपि वाही विधि कह्यऊ ❀ तब मोहन तहँते अपि गयऊ।
कह नारद इम मिल बलरामा ❀ डोले ब्रजभर गोपिन धामा।४।

दो०-परन्तु ता दिन दुहन को, कियो न किहँ सन्मान।
तब आये निज भवन में,तहँ अपि देख्यो आन॥५॥

सो०-होवत मंगल गान, और बधाई बट रही।
कहुँ बहु विधि पकवान,उतर रहे हैं देख अस॥४॥

१ लगी हुई हैं।

मैयापे कह कृष्ण कन्हैया ❀ मुहिं तो भूख लगी है मैया ।
तब यशुमति कह मोहन पाहीं ❀ लाला तुम यहँ अइयो नाहीं ॥
देवभोग की वस्तु अछूती ❀ धर राखीं हैं हमनें पूती ।
तिनहिं न छीजो कृष्ण कन्हाई ❀ इम सुन कहत कृष्ण मुसकाई ॥
मैया मैं तो लउँ इनमेंते ❀ तू मुहि रोकत कहु काहेते ।
तब मैया कह सुन प्रिय काना ❀ धरी देवहित वस्तू नाना ॥
अहैं अमनियाँ वस्तू सबही ❀ जो तू हठकर लेवै तबही ।
रिस ह्वैगो वह देव महाना ❀ तब मैयाप्रति कृष्ण बखाना ॥
वह सुर कहु कहँते आवैगो ❀ अहै कौन यह किम खावैगो ।
वाको उदर बड़ो कितनों है ❀ अरु मुखहू वताय जितनों है ॥

दो०-तब यशुमति रिसियाय कें, कहन लगी है कान ।
तू जा बाहर खेल कर, सुर प्रति अस न बखान ॥

जाय पूछ तू निज बाबाते ❀ मुहिं अवकाश नाहिं लव जाते ।
घनें काम करनें हैं मोकों ❀ लाला कहा बताऊँ तोकों ॥
मातु वचन सुनकें रिसियाई ❀ चल्यो बाह्य अनखाय कन्हाई ।
यहाँ इन्द्रप्रति कह ब्रजरानी ❀ अहो देव द्वौ बालक जानी ॥
नित प्रसन्न राखियो द्वौ लाला ❀ तुम सदैव हो परम कृपाला ।
इनको बोलन बुरो न मानें ❀ ये तुम्हरो प्रभाव नहिं जानें ॥
तासों तुमप्रति ऐसे कहहीं ❀ हमतो नित तुव करुणा चहहीं ।

१ पवित्र २ समय ।

इनमें यशुमति अस कह रही ❀ इत जो महा कौतुकी अहही ॥
अस केशव तिहँ थलमें आये ❀ जहँ व्रजराज विराज सुहाये ।
जिहँ थल चौकिन फर्स बिछायो ❀ चहूँ ओर सोहत अधिकायो ॥

दो०-गिलम गलीचे गिलगिले, तिनपै बिछे सुहाइँ ।
अरु दिवाल गिरि लग रही, चहुँ दिशि मन हर जाइँ॥

झाड़ हंडिया गोला ताहीं ❀ अरु फानूस लटक रह चाहीं ।
चित्रकारि जहँ चित्र विचित्रा ❀ देखत मन लग जावे तत्रा ॥
जरी चँदोवा इक तन रह्यऊ ❀ बीच चौकमें सोहत भयऊ ।
सुभग सुराहीदार जु मोती ❀ झालर लटकत झगमग जोती ॥
पचरँग रेशम दाम बँधी हैं ❀ भुविमें सुवरण मेख ठुकी हैं ।
तिन अमेटमा मेखन माहीं ❀ रस्सा बन्ध रहे हैं ताहीं ॥
चन्दोवाके नीचे अहही ❀ काम कारचोबी को रहही ।
वाके नीचे मखमल केरे ❀ उनी गलीचन फर्स घनेरे ॥
मध्यभाग में अहे बिछाई ❀ एक मृदुल गद्दी छवि छाई ।
पृष्ठ भाग में तकिया अहही ❀ दोउ ओर अपि सोहत रहही॥

दो-०अस गद्दी पै मुदित अति, राज रहे व्रजराज ।
उपनन्दादिक गोपकी, सोहत जहाँ समाज ॥ ८ ॥

❀ कवित्त ❀

कपिड़ा दरजी सीवैं कोई किनारी लगावैं,
कोई गोटा तोल रहै को किरन टाँकही ।

कोई तौ हिसाब करै सुनार गहनों गढ़ै,
कहूँ जड़िया जड़त सूधो अरु बाँकही ॥
होत गहनें ऊजल कहूँ पहुँची गुलीबंद,
जौमालादि गहनें जो पोय रहै सांकही ।
कोई धाम माँग रहे कहूँ माली फुलवारी,
आय आय पूछत हैं सब राव राँकही ॥५॥
कहूँ हलवाई मोदी पसारी ठाड़े मांगहीं,
मेवा दूध दही फल मिठाई की साई जी ।
ऐसी धूम मच रही सब घबराये से हैं,
को काहू की बातहू को सुनें न पाई जी ॥
ता समय घनश्याम बाबाकेरी गोद माहीं,
बैठो जाय सकुचाय सोहन महाई जी ।
कलाबतू तारकशी सलमा सितारे केरो,
काम हो रह्यो है ऐसी टोपी जु सुहाई जी ॥६॥
कृष्ण के माथ प सोहै तामाहिं सुराईदार,
मोतिन की झालरहू लटक सुहात है ।
ता ऊपर पन्नान को है जड़ाऊ सिरपचे,
झलकत सोह अस मन को लुभात है ॥
कानन कुंडल युग मीनाकार चल रहे,
कपोलनपै अलकावली छिटकात है ।
इन अलकावली में जाको मन अटकत,
सटकत फिर नहीं आनंद अघात है ॥ ७॥
माथे पै केसरकेरो तिलक सोहत अति,
भाल खौर लग रह्यो नाक में बुलाक है ।

कंठमें कौस्तुभमणी मुक्तानकी माल गर.
काछनीहूँ काछ रहे, शोभा अमनोक है ॥
खीनखापकेरो सुठ जाँघिया पहर रहै,
तापै मोती पन्नानको, काम परिपाक है ।
क्षुद्रघंटिका कमर; पदपंकज नूपुर,
पहुँची हाथन माहीं जड़ाऊ विपाक है ॥ ८ ॥
कड़े नवरत्नकेर बाजूबंद चमकत,
दमकत अंगुरिन मुंदरी सुंदरी है ।
छोटे से रुमाल ओढे ऐसे व्रजराज सुत,
बाबाकेरी गोद माहीं बैठे सभा भरी है ॥
बाबाकी ठोड़ी पकर पूछत है प्रेमसेनी,
जनु कछु जानै नाहीं बाल लीला करी है ।
जाके लीलाकेरो भेद ब्रह्मादि न पाय सके,
गर्वके गंजन हेतु लीला सु बिस्तरी है ॥ ९ ॥

श्रीभगवत लीला के माहीं ❀ गूढ तत्त्व बहु विध रह ताहीं ।
पूर्ण रीति ताको को जानै ❀ कविवर मति अनुसार बखानै ॥
भक्त धार विश्वास महाना ❀ महा मोद युत करहीं गाना ।
सहज सार तिनके हिय आवै ❀ पाय तत्त्व प्रभु प्रेम समावैं ॥
जो प्रभु सबको श्रेयं धरत हैं ❀ कर्मवाद अनुसरण करत हैं ।
तामें द्वै अभिप्राय प्रमाना ❀ इक वासव मद हनन पछाना ॥

१ कल्याण ।

दूजो आशय जे ब्रजवासी ❀ सदा सरलपन रहे प्रकासी ।
तिन हिय परिचय लेवन हेतू ❀ अहें जु ब्रजवासी मो हेतू ॥
बात असंगतसेहु असंगत ❀ मेरी कही हर्ष युत मानत ।
इन है कारण श्रीभगवाना ❀ कर्मवाद अनुसरण प्रमाना॥८॥

दो०-षडैश्वर्य सम्पन्न प्रभु, सर्वात्मा प्रतिपाल ।
सब घट ज्ञाता पूर्ण पर, सोइ नंदको लाल ॥ ९ ॥

सो०-परंतु या थल माहिं, बाल चरित करनें चहैं ।
पूछत बाबा पाहिं, ह्वै अजान सम नम्र बड़ ॥ ५ ॥

हे बाबा का सम्भ्रम भयऊ ❀ मोसों कहो सुनन मन चहयऊ ।
यदि कहु यह सम्भ्रम है जोऊ ❀ नाहिंन वृथा, यज्ञ इक होऊ ॥
तौ कहु कौन देवको यज्ञा ❀ को याको आचारी प्रज्ञा[४] ।
कहा विधी को है अधिकारी ❀ कहा प्रयोजन कहौ उदारी[३] ॥
या मखको फल कहा प्रमाना ❀ अरु सामिग्री कहा बखाना ।
यदि तुम कहौ कि बालक पाहीं ❀ गुप्त बात को भाखे नाहीं ॥
तौ जु नीति शास्त्र अस कह्यऊ ❀ तहँ रहस्य या विधिको रह्यऊ ।
उदासीनप्रति भाखे नाहीं ❀ तथा न कहे विपक्षी पाहीं ॥
गुप्त बात जो हियकी रहही ❀ इनप्रति कहत अयोग्यहि अहही ।
मैं तो हृदय तुल्य हौं जाते ❀ कहन योग्य हो सब विध ताते॥

१ जाननें २ जो नहीं बन सके ३ गर्मागर्म उद्यम ४ बुद्धिमान ।

दो०-सर्वात्मा साधुन के, जेउ कर्म भव माहिं ।
नहिं छिपायवे योग्य हैं, यही हेतु तहँ आहिं॥१०॥

सो०-साधुन को नहिं होय, कोइ परायो वा अपन ।
शत्रु मित्र नहिं कोय, उदासीनहु को नहीं ॥ ६ ॥

तिनमें उदासीन हैं जोऊ ❀ रिपु सम किल वर्जित हैं सोऊ ।
किन्तु सुहृदजन आतम ममाना ❀ तिनतें नहिं दुराव कछु माना ॥
मो विन सुहृद न तुम्हरो जाते ❀ कहौं वृत्त सब मो मनि ताते ।
एक जान कर कर्महिं करहीं ❀ अपर अजानहु तस आचरहीं ॥
तहाँ जानके कर्म जु कीनों ❀ वाकी सिद्धि शीघ्र अस चीनों ।
फलहू को पावत वह प्रानी ❀ ताते कर्म करै पहिचानी ॥
किन्तु अजान कर्म जो कीनों ❀ वाको फल तादृश नहिं चीनों ।
तापै इक दृष्टान्त सुनाऊँ ❀ आप हृदयकी शंक मिटाऊँ ॥
बाबा एक रसायन ज्ञाता ❀ वाके युग्म शिष्य मनभाता ।
जब बाबाजी को अभिलासा ❀ तीर्थ करन की है जिज्ञासा ॥

दो०-तब सुवरण निज हाथसों, बिन श्रम लेत बनाय ।
चलै जात वहु तीर्थपै, भगवत में मन लाय॥११॥

सो०-तहँ अपि साधू सन्त, दीन दुखिन को मोद युत ।
भोजन वस्त्र अनन्त, बाबाजी देवत रह्यौ ॥ ७ ॥

१ छिपाव २ वृत्तान्त ।

वाको बड़ो शिष्य गुरुमाहीं ❀ बड़ी भक्ति राखत हो ताहीं ।
अरु नीकी विध करतो सेवा ❀ तापे बाबाजी मुद एवा ॥
वाको क्रिया रसायनकेरी ❀ सब बताय दइ प्रीति घनेरी ।
शिष्यहु लेगो बनावन ताहीं ❀ रहै शंक पूछै गुरु पाहीं ॥
या प्रकार वानें विधि नीकी ❀ क्रिया रसायन सबही सीखी ।
छोटो चेला धूर्त स्वभावा ❀ जबहि बनाय रसायन बावा ॥
दूरहिते देखे सब सोऊ ❀ या विध आँच देत हैं जोऊ ।
या प्रकार बूँटीहु निचोरें ❀ इम देखत रह होरें होरें ॥
अरु विचार कर निज मन माहीं ❀ अब मैंहु बनाय लउं याहीं ।
कहा प्रयोजन पूछनको है ❀ क्रिया सकल समझ्योहूं जो है ॥

दो०-बाबाजी तो मर गये, समय पाय थल ताहिं ।
पृथक पृथक मैं झगड़कें, चेला आपुस माहिं॥१२॥

सो०-बड़े शिष्य बड़ चाह, गुरुको भंडारो कियो ।
यश वस बड उत्साह, छोटेनें चाह्यौ करन ॥८॥

युग सहस्र विप्रनको नोतो ❀ भोजन कारन दिय मुद होतो ।
बनियाकी दुकान से आई ❀ सब वस्तु उधार मँगवाई ॥
ब्राह्मणभोजन जब ह्वै गयऊ ❀ दाम तकादो तबही भयऊ ।
सो घमंड में चकनाचूरा ❀ स्वर्ण बनावन प्रेम प्रपूरा ॥
जबहि बनावन बैठो आई ❀ भट्टा बड़ो आंचको ताहीं ।

१ प्रमत्त ।

हरप हिये सो अहे चितायो ❀ अव तामें तांवोहु गलायो ॥
पुन जे जे वूटी तहँ राखी ❀ तिनें निचोरनको अभिलाखी ।
कवहु इक वूँटीहिं निचोरे ❀ कवहू अपर निचोरे डोरें ॥
कवहु उठावे कवहू राखे ❀ कहा भयो कवहुक अस भाखे ।
या विध वड़ो परिश्रम कीनों ❀ भयो न[1]हाटक, भो दुख पीनों॥

दो०-तव चेलाजी हाथमें, लइ कटारी एक ।
निजको मारन के लिये,करत विचार अनेक॥१३।

सो०-पुन सो आधी राति. गुरुभैया के पास गो ।
अरु भाखत यह वात, मोकों ठीक वताय दे ॥ ६ ॥

नहिं तो मैं अव निजको मारों ❀ तोपे यह हत्या किल डारों ।
कह गुरुभैया सुन हे भाई ❀ यह विद्या गुरुतें नहिं पाई ॥
विन गुरु विद्या लहै न कोई ❀ नाहिं फलवती होवहि सोई ।
धर धीरज सामग्री लावो ❀ मो समीप आयकें वनावो ॥
देखों आप वनावो कैसे ❀ पुन मैं दउँ वताय है जैसे ।
वूँटी जवहि निचोरन लागो ❀ तव गुरुभैया कह हट आगो॥
देख ! निचोरन की यह रीती ❀ इम कह दइ निचोर युत प्रीती ।
तव तत्काल हेम वन गयऊ ❀ छोटे को हिय हर्षित भयऊ ॥
जिम रसायनी वावाजीके ❀ चेलाकी गति सुन ली नीके ।
तिम विन जान कर्म कर कोऊ ❀ अंत अवस पछतावे सोऊ ।१३।

१ सोना ।

दो०-हे बाबा यह यज्ञ जो, अई सुनायो मोहिं ।
तामें संशय एक है, पूंछत हौं पितु तोहिं ॥ १४ ॥

जा मख कारण करत प्रयासा ❀ ब्रजभरमें पुरुपार्थ प्रकासा ।
सो तुम करौ शास्त्र विधि द्वारा ❀ वा लौकिकी रीति अनुसारा ॥
यासों मो प्रति प्रकट बतावौ ❀ गुप्त बातहू कहि समुझावौ ।
निज आत्मज वच सुन ब्रजराई ❀ भाखत सुन हे पुत्र कन्हाई ॥
मेघरूप वासव भगवाना ❀ मेघहि प्रिय मूरति तिहँ माना॥
है प्रसन्न जब सुरपुरनाथा ❀ तब वारिद बरषावे पाथा[१] ॥
जो जलही जीवन आधारा ❀ सब प्राणिन एकही सहारा ।
सो हे सुत हम सब वाहीके ❀ जल बरसाये मैं जलहीसे ॥
जो उत्पन्न अन्न ताही सों ❀ करें यज्ञ उत्साहित जीसों ।
वाहि यज्ञ कर मेघनराई ❀ होवै शक्र प्रसन्न कन्हाई॥१४॥

दो०-केवल गोगण धन अपन, जीवें सो तृण खाय ।
अरु कबहू बिन मेहके, घास नहीं उपजाय ॥१५॥

हम सब या वर्षाके हेतू ❀ करहीं शचिपति मख सुखसेतू ।
जो मख शेप अन्न बच जाता ❀ सो हमरे जीविका प्रदाता ॥
धर्म अर्थ अरु मुक्ती पावन ❀ करहिं जीविका हम मन भावन॥
व्यवसायी[२] जनको साक्षाता ❀ है अमरेश शीघ्र फलदाता ।

१ पानी । २ पुरुपार्थी ।

या मखको पुरखा जु हमारे ❀ करते रहे मोद मनवारे ।
जो जन काम लोभ भय देशा ❀ वश ह्वै करै न यज्ञ सुरेशा ॥
निज कुल धर्म त्याग दे कोई ❀ ताको श्रेय न कबहू होई ।
कह नारद बहुलाश्व मुनीजे ❀ कृष्ण कथा चित संतत दीजे ॥
नंद और व्रजवासिन वानी ❀ सुनी श्याम हियमें अस आनी ।
प्रमद महान वज्रीको भयऊ ❀ गर्व हनन मेरी कृत रहयऊ॥१५॥

दो०-नाकनाथ को दृपनों, करौं याहि मिथ दूर ।
अस विचार स्वर्गेशपै, कीनों क्रोध प्रपूर ॥ १६ ॥

सो०-कह बाबा के पाहिं, आप चडे भूले अहैं ।
इन्द्रादिक जे आहिं, निज कर्मन सुख भोगहीं॥१७॥

जब तिन पुण्य क्षीण ह्वै जावें ❀ तब ते मृत्युलोकमें आवें ।
इनको सेवन करतो जोऊ ❀ नहिं मुक्तीको कारण सोऊ ॥
परमेष्ठीपद विधिको कहयऊ ❀ सो अपि जा प्रभुतें डर रहयऊ ॥
तो कहु जे अज अहैं बनाये ❀ मनुज देवता सब समुदाये ॥
तिनकी कहा चलै प्रभु पाहीं ❀ कर्म विवश प्राणी जग माहीं ।
कर्मनहीते जन्मत प्रानी ❀ कर्मनहीते होवत हानी ॥
सुख दुख भय अरु श्रेय प्रदाता ❀ आपन कर्महि हैं जनत्राता ।
सुकृत और दुष्कृत जग माहीं ❀ इनबिन अपर फलद को आहीं॥
नहिं सामर्थ काहुको अहही ❀ कर्म बिना जो फलप्रद रहही।
कर्मनको फल देवनहारो ❀ है ईश्वर जो वेद उचारो ॥

दो०-सोउ कर्म अनुसार ही, फल को देवनहार ।
जो प्राणी नहिं कर्म कर, तिनें न फल दातार ॥१७॥

सो०-जब सर्व या भव माहिं, किये कर्म फल भोगहीं ।
कहा प्रयोजन आहि, कहौ इन्द्रसे आपको ॥११॥

प्राणीको जु कर्म फल अहहीं ❀ करन अनेश्र इन्द्रहु वहहीं ।
तौ कछु अपि कर सकै सो नाहीं ❀ लइ कर्मानुसार फल आहीं ॥
निज स्वभाववश है यह मानी ❀ है स्वभाव की कबहु न हानी ।
करैं कर्म प्रकृती अनुसारा ❀ यह जो दीखत है संसारा ॥
देव दनुज अरु मनुज प्रयंता ❀ है स्वभाव थित कर्म करंता ।
ऊंच नीच तन धारण होई ❀ कर्मनहीं से जानौ सोई ॥
कर्मनहीसे स्वागत देहा ❀ कर्मनहीसे नेह अनेहा ।
शत्रु मित्र निज कर्मन जानौ ❀ उदासीनहु कर्म पछानौ ॥
कर्महि गुरु कर्महि जगदीशा ❀ तौ फिर कहा करै सुरईशा ।
यासों प्रकृतीथित जो प्रानी ❀ कर्महि को पूजे हित मानी ॥१७॥

दो०-अनायास जिहँ कार्यकी, जासौं सिद्धी होय ।
वही देव वाको अहै, पूजै नेह समोय ॥१८॥

सो०-ये जो शैल महान, अरु महान उदधी अहैं ।
जलसौं भरे पखान, कहा शक्रको पूजहीं ॥१९॥

ये वासव अर्चा कर नाहीं ❀ इनमें यत नहिं बरसत आहीं ?॥
यासौं हे पितु सुरपति यागा ❀ करन उचित नहिं निष्फल लागा
एकहिं सेव सेव जो आना ❀ वाको कबहु न है कल्याना ।
जिम व्यभिचारिणि वामा जोऊ ❀ निज पति तज भज परपति सोऊ
वह संतत दुख भोगत जैसे ❀ तज निज सेव्य सु जानहु तैसे।
चतुर वर्ण के कर्म जु कहाऊ ❀ पृथक पृथक ते सबहीं रहाऊ ॥
यथा वेद शास्त्रादिक केरो ❀ पाठनपठन विप्र वृति हेरो ।
भुवि अरु प्रजा जननकी रक्षा ❀ है क्षत्री कर्तव्य सुदक्षा ॥
अरु व्यापार वैश्यको कर्मा ❀ निज निज कर्म लहैं बड़ शर्मा ।
शूद्र कर्म इक यही बखाना ❀ तीन वर्ण की सेवा ठाना ॥१८॥

दो०-हे पितु हस्तो वैश्य है, गोरक्षा व्यापार ।
खेती तथा जु ब्याज ये, अहहीं च्यार प्रकार ॥१९॥

सो०-वैश्यनके हित चार, कर्म शास्त्र अनुसार ये ।
चह द्वौ लोक सुधार, करै जीविका इनहिंसौं ॥१३॥

सत रज तम ये गुण हैं तीनों ❀ थिति उत्पति लय कारण चीनों ।
रजगुणसे यह सकल पसारा ❀ रच्यो जाय, जिहँ कह संसारा॥
ता रजगुण से प्रेरित होई ❀ सबै थल जल घन बरसत जोई।
ता जलसौं जीवैं सुख पावैं ❀ धर्म अर्थ मुक्तीहु उपावैं ॥
को अपि देव न घनको प्रेरे ❀ यही बात देखहु हिय हेरे ।
तौ फिर कहा करै अमरेशा ❀ जाको मख कर रहे सुदेशा ॥

हे पितु अपनो पुर नहिं कोई ❀ नहिं है देश ग्राम घर जोई ।
गौवन पालन यही हमारी ❀ अहे जीविका सब सुखकारी ॥
जहँ जहँ गौवन हित सुठ घासा ❀ सुखसों कर सक जहाँ निवासा ।
वह थल भावै जंगल होई ❀ वा होवै बड़ पर्वत कोई ॥१९॥

दो०-वाही थलमें झोंपड़ी, रचकर कियो निवास ।
है ही नहिं जब ठाम निज, कहा इन्द्र की आस ॥२०॥

सो०-जिहँ थल वर्षा होय, अरु सुठ हरियाली जहाँ ।
रोक न सकहीं कोय, निज इच्छा चल बसहिं तहँ ॥१४॥

फिर काहेको कर हम यज्ञा ❀ काहि कहावें निजको अज्ञा ।
कहा प्रयोजन सिद्धहु होई ❀ नाते तजौ यज्ञ यह जोई ॥
गौ ब्राह्मण गोवर्द्धन शैला ❀ कीजै इनको यज्ञ अमैला ।
यदि चहु सो मख किहँ विधि कीजै ❀ वाको उत्तर पिता सुनीजै ॥
इन्द्र यज्ञ सामिग्री जेती ❀ करो यज्ञ याहीसों चेती ।
नइ सामिग्री कछु ना चाहिये ❀ करकें यज्ञ परम सुख लहिये ॥
कृष्णकेर छोटे मुखसेती ❀ बड़ी विचित्र बात जो केती ।
सुन व्रजराज चकित चित भयऊ ❀ कृष्ण वदनहीं निरखत रह्यऊ ॥
या विध अनिमिष टकटकि लागी ❀ जनु योगी त्राटक अनुरागी ।
कहत नन्द हे लाल कन्हाई ❀ यह तुहिं बुद्धि कहाँते आई ॥२०॥

दो०-छोटे से मुखसे कहत, लम्बी चौड़ी बात ।
पुरखा पंगतिसों सदा, करत यज्ञ विख्यात ॥२१॥

अस जो रीति सदा चलि आई ❀ तू तिहँ मेटन कहत कन्हाई ।
पुन पर्वत पूजा करवावे ❀ ऐसी मति तुहिं कौन सिखावे॥
या मख को कर बूढ़ो भयऊ ❀ श्वेत बालहू मुहिं आ गयऊ ।
कोउ न कछू कहेगो तोहीं ❀ किन्तु दोष देवेंगे मोहीं ॥
अस सुन कृष्ण कहत पितु पाहीं ❀ या गिरिको तुम जानहु नाहीं।
मैं जानौं याकी जु प्रशंसा ❀ कहि नहिं सकौं तदपि कहुँ अंस॥
कहत नन्द तू जाने कैसे ❀ कहँते श्रुति पढ़ि आयो ऐसे ।
तापै कृष्ण कहत पितु पाहीं ❀ किम जानी सु सुनावौं ताहीं ॥
अहै पुनीत मानसी गंगा ❀ तहाँ स्नान करवे सउमंगा ।
सहसन वैष्णव साधू आवें ❀ कर प्रदक्षणा सीस नवावें॥२१॥

दो०-मैं जब गाय चरावनें, जावौं तिहँ थल पास ।
देख देख विस्मय लहौं, पूछन की ह्वै आस ॥२२॥

सो०-या गिरिको जु प्रभाव, मैं तिनतें पूछ्यो करूँ ।
बड़े प्रेम अरु चाव, तब ते मोहिं सुनावहीं ॥१५॥

या ब्रजको देवता यही है ❀ सब देवनमें बड़ो सही है ।
आन तीर्थ को फल तब पावे ❀ जब याके दर्शनको आवे ॥
या गिरिराज परस फल जोऊ ❀ कहा कहैं कह सकत न सोऊ ।
यापै इक इतिहास सुनावें ❀ हे लाला तू सुन हरषावे ॥
सो इतिहास बड़ो प्राचीना ❀ सुनत भक्ति रस उपज नवीना ।
विजय नाम इक ब्राह्मण भयऊ ❀ तट गौतमी वास कर रह्यऊ ॥

स्वर्ण मोल लेवैको सोई ❀ आयो मधुपुरिमें मुद होई।
पापमोचनी मथुरा माहीं ❀ यमुना स्नान कियो थल ताहीं॥
लियो मोल सुवरण मनभायो ❀ पुन सो द्विज इह थलमें आयो।
मुदित मानसी गंग नहायो ❀ गिरिको कर प्रदक्षिणा आयो॥२२

दो०-पुन गोवर्द्धन की शिला, गोलाकार उठाय।
शनै शनै निज भवनको, चल्यो जाय सुख पाय॥२३

जव ब्रजते वाहर सो आयो ❀ वनमें इक राक्षस तिहँ पायो।
महा भयंकर रूप कराला ❀ द्विजसमीप आयो जनु काला॥
सन्ध्या समय विप्रको सोऊ ❀ खावन हित धायो मुद होऊ।
ब्राह्मणकी बुद्धी चकराई ❀ डरतो भयो थाह नहिं पाई॥
तहँते भूसुर भाजन लागो ❀ ता पाछे राक्षसहू भागो।
भाजत भाजत जब थक गयऊ ❀ तब वाके कर शिला जु रह्यऊ॥
अतिहि खेंचके वाको मारी ❀ वह शिल रहि गिरिराज अकारी।
सपरस होतहि वाको देहा ❀ भयो दिव्य, अघ सब भे खेहा॥
सोहत दिव्य देह तिहँ ऐसी ❀ भगवत पार्षदकी हो जैसी।
दिव्य देहधारी हरषाई ❀ विप्र पाद वन्दन किय आई॥२३॥

दो०-चरणन पर गिरकैं बहुर, कह्यो विनय युत ताहिं।
धन्य धन्य भूदेव तुम, पर उपकारी आहिं॥२४॥

सो०-अहो महा मतिवान, असुर देहतें मुक्त किय।
शिला परस फल मान, जो मेरो कल्यान भो॥१६॥

तुम्हरे बिन, को समरथ होऊ ❀ राक्षस तनु छुड़ाय सक जोऊ।
सुन अस वचन विप्र ता पाहीं ❀ कहते सुनौ मुहिं अचरज आहीं॥
मो सामर्थ न, शिला प्रभावा ❀ कहौ आप यदि जानहु भावा॥
येह गिरिराज अहै साक्षाता ❀ भगवत रूप परम सुखदाता॥
याके दर्शनु तें सुख पावै ❀ है कृतार्थ सब दुःख नसावै।
या प्रकार गिरिराज प्रभावा ❀ धन्य विप्र तुम दर्शन पावा॥
ताते अधिक नहीं बड़भागा ❀ यदि विश्वास नहीं जिय जागा।
तौ प्रतक्षही मोहिं निहारो ❀ पापरूप मों भयो नितारो॥
ब्राह्मण सुनत सिद्ध की वानी ❀ चकित होय पूछत सुखमानी।
पूर्व जन्म कहँ भयो तिहारो ❀ राचस वपु किम लह्यो उचारो२४

दो०-तब वह बोल्यो द्विज सुनौ, पूर्व जन्म की बात।
भाखत निज वृतान्त को मैं, हे विप्र लजात॥२५॥

सो०-धनिक वैश्य मो बाप, नगरी है उज्जैन शुभ।
मुहिं कुसंग की छाप, बालकपनही ते लगी॥१७॥

आबालात द्यूत[1] रत भयऊ ❀ वेश्या लंम्पटता पटु[2] रह्यऊ।
मद्यपान करिहों दिनराती ❀ सब प्रकार जीवन को घाती॥
जेते अघ हैं या भुवि माहीं ❀ ते ते किये बार बहु ताहीं।
कहा पाप में अपन सुनावों ❀ मैं भाखत हिय माहिं लजावों॥

१ जूवा २ स्यानो।

इकदिन मृगवध हित वन गयऊ ❀ नाग दंशते मृत्यू भयऊ।
तब ततकाल दूत यमकेरे ❀ बाँध मोहिं ले गे यम डेरे॥
मो पापी को रविसुत देखा ❀ कोपित है तिरछे चख पेखा।
दूतन द्वारा मार दिवाई ❀ डार्यो मुहिं बहु नर्कन जाई॥
देव बरष चतुराशीलाखा ❀ मुहिं तिन नरकन माहीं राखा।
पुन यम भारत भूमि पठाये ❀ अयुत वर्ष यहँ अपि दुख पाये २५

दो० शूकर आदिक अधम तन,पाये अनगिन याहिं।
असह कष्ट पुन अंत नहिं,पायो या भुवि माहिं।२६।

सो० किहँक पथिकके माहिं,कर प्रवेश ब्रज आयऊ।
भगवत पार्षद ताहिं,लगे मारने मोहिं अति।१८।

तब मैं आतुर है त्वर भागा ❀ यहाँ आयकें बस्यौ अभागा।
बहुत दिनन भूखो मैं रह्यऊ ❀ आज देख तुहि खावन चह्यऊ॥
तावत तुम मोकों शिल मारी ❀ मिटे आशु जे सब अघभारीं।
अब मैं जावौं श्रीगोलोका ❀ सर्व उपद्रव रहित, अशोका।
तावत तहँ विमान इक आयो ❀ सिद्ध विप्र पदपै शिर नायो।
पीछे बैठ विमान सिधायो ❀ श्रीगोलोकधाम को पायो॥
या प्रकार गिरिराज बड़ाई ❀ वैष्णव साधुन निज मुखगाई॥
हे बाबा मैं सुन हिय धारी ❀ तुम्हरे सन्मुख अबहि उचारी॥
महिमा श्रीगिरिराज महाना ❀ सुनतहु पाप वृन्द कर हाना।
ताते मैं गिरि महिमा जानूँ ❀ और कहा मैं तुमहिं बखानूँ।२६।

१ यमराज। २ मुसाफिर।

दो० हमको हमरे गौनको, अरु सखान के वृंद ।
सबको यहि सुख देत है, मेटत सबही द्वंद ॥२७॥

बिन जानें गिरिराज बड़ाई ❀ राक्षसहू उत्तम गति पाई ।
किन्तु महत्त्व जान जो सेवै ❀ को जाने वाको का देवै ॥
चिरंकालसे अर्चन कीनों ❀ कहो कहा फल सुरपति दीनों ।
खेतादिक कर्महिसों होई ❀ कहा करेगो इन्द्रहु जोई ॥
छोटे मुख मोहन जो कह्यऊ ❀ गूढ़ाशय पूरित सो रह्यऊ ।
नंदराय सुन बौरो भयऊ ❀ इत उतमें सो झाँकत रह्यऊ ॥
तब सुनन्दनें भाख्यो ताहीं ❀ सुनौ कृष्ण बच मिथ्या नाहीं ।
श्रीगोवर्द्धन महिमा जोई ❀ मैंहू सुनी पुराणन सोई ॥
है गोलोकधाममें याको ❀ नित्य वास यह निश्चय पाको ।
सुन सुनन्दकी ऐसी बानी ❀ नंदराय के तौ मनमानी २७

दो०-वृद्ध गोप तब व्रजहिके, तिनैं बुलाये नंद ।
भाख्यो सब प्रति नम्र ह्वै, कह्यौ जु आनँदकंद ॥२८॥

सुनत श्यामकी सुन्दर बानी ❀ किन गोपनके तौ मनमानी ।
किन्तु कहन लागे के ताहीं ❀ सुनौ नन्द हम मानैं नाहीं ॥
इन्द्रार्चन या व्रज के माहीं ❀ अहै पुरातन जानहु नाहीं ।
बड़े बड़े पुरखा जु हमारे ❀ कहा नहीं ते जाननहारे ॥
तुमहूँ कहौ जु जूँठ बखाने ❀ यदि तू निज बेटाकी मानैं ।
भल मानैं हम तौ नहिं मानैं ❀ हमतो रीति पुरातन ठानैं ॥

मचल रह्यो है आज कन्हाई ❀ कह, मो देवहिं पूजों जाई।
कलको हमरे लाला जेते ❀ मचल जाइँ भाखें सब तेते ॥
अबके हमरे देवहिं मानो ❀ तो फिर कहु कहँ रहै ठिकानो।
हम तो प्रती वर्ष के माहीं ❀ वंदलो करौ सुरार्चन ताहीं २८॥

दो०-ताते अपने कानकों, या हठतें दे टार।
है जो यज्ञ पुरातनी, ताको करौ विचार ॥२९॥

नंदराय असमंजस माहीं ❀ बोल न निकसत है कछु ताहीं।
तब प्रेरक सबहिन घट केरो ❀ अस समर्थ गोपन प्रति टेरो ॥
सुनौ बात इक बार हमारी ❀ पुन आपन हिय माहिं विचारी।
जो उत्तर देवहु हम मानें ❀ निश्चय हम अपनी नहिं ठानें ॥
ठीक पुरातन मख यह अहही ❀ जाहिं प्रेमसों तुम कर रहही।
किन्तु बतावौ एकहि बाता ❀ देख्यो कबहु इन्द्र साक्षाता॥
तब सबनें कहि देख्यो नाहीं ❀ पुन श्रीकृष्ण कहत तिन पाहीं॥
या मखको जो देव प्रधाना ❀ श्रीगिरिराजहि निश्चय माना॥
यदि उनको पूजौगे आपू ❀ देखोगे उन प्रबल प्रतापू।
देवैंगो दर्शन साक्षाता ❀ औरहु पूछौं हौं इक बाता।२९।

दो०-यह जो सामिग्री विविध, इन्द्रहिं भोग धराय।
करत प्रार्थना ता प्रती, कबहुक पायो आय ? ३०॥

सो०-तबके भाखत ताहिं, कहुँ देव पावत अहें ?
भाव धार उर माहिं, यही अहैं उन पावनों ॥१९॥

है जो देव तिहारो काना ❀ कहा प्रकट दे दर्शन दाना ।
स्वयं आय सामिग्री पावै ? ❀ तापै प्रभु अस वचन सुनावै ॥
सुनौ गोप गिरिवर साक्षाता ❀ दे दर्शन सुंदर सुखदाता ।
भोग धरी सामिग्री जेती ❀ पावैगो निश्चय सब तेती ॥
तब आपुमभैं कहनें लागे ❀ अहो हमारे भाग्यहि जागे ।
जो गोवर्द्धनको साक्षाता ❀ दर्शन है दुर्लभ सुखदाता ॥
अरु सामिग्री भोग धरावैं ❀ तिनैं आय वे आपुहि पावैं ।
तौ फिर कृष्ण कहै अनुसारा ❀ करन योग्य है यही विचारा ॥
कहन लगे अब मोहन पाहीं ❀ यदि अस है तो मानत आहीं ।
इतनेमें किन गोपन कह्यऊ ❀ यह सब सामिग्री जो रखऊ२०

दो०-सो सब पावै देव तौ, हम भूखे रहि जाइँ ।
हम नहिं पूजें देव सो, हम तौ इन्द्र मनाइँ ॥ २१ ॥

जो केवल भावहिसों लेवै ❀ सकल पदारथ हमकों देव ।
तब तिन ब्रजवासिनके पाहीं ❀ कहत कृष्ण सुंदर वच ताहीं ॥
सुनौ सुनौ जी वचन हमारो ❀ श्रीगिरिराज प्रभाव विचारो ।
जितनी सामिग्री वो पावै ❀ उनतेहु दशगुनी बढ़ावै ॥
औरहु तुम्हरी जो अभिलासा ❀ पूरण करै शीघ्र अस आसा ।
तब तौ जय जय धुनी उचारा ❀ सबहिन मिल किल कियो विचारा
भल गिरिराज पूजनों चहिये ❀ इष्ट मनोरथ जिहँत लहिये ।
पुन के भाखत मोहन पाहीं ❀ सुरपतिको मख करहीं नाहीं ॥
तौ वह अवस कुपति ह्वै जाई ❀ ता अवसर कहु कौन बचाई ।
तापै कृष्ण कहत अस ताहीं ❀ श्रीगिरिराज प्रभाव जु आहीं२१

दो०-ता आगे या इन्द्रकी, कहा चलै, कुछु नाहिं।
आपुहि रचा करहि सो, श्रीगोवर्द्धन आहिं॥ ३२॥

कबहु न चिन्त अपन उर माहीं ❀ सब विध गिरिवर समरथ आहीं।
दस अस सुनतहि गोपनवृंदा ❀ मैं सम्मत जस कह नँदनंदा॥
अब व्रजराज कहै तिनपाहीं ❀ सब सम्मिलित भये हो याहीं।
मोकों दोष न दीजो कबहू ❀ मोरे वचन सुनत हो सबहू॥
तापै सकल गोप अस कहहीं ❀ सुनो नंद हम सब जे रहहीं।
ते तुव लालाकेर चरित्रा ❀ सोचत हैं जब हिये पवित्रा॥
तब ऐसे मानत मन माहीं ❀ यह को अद्भुत प्रकट्यो आहीं।
गर्ग ऋषिहु तुमते अस कह्यऊ ❀ यह शिशु नारायण सम रह्यऊ॥
या वय में छोटे मुख द्वारा ❀ कहा कहा इन अहै विचारा।
तातें हमरो है विश्वासा ❀ याको कियो सकल सुखरासा॥३२

दो०-शास्त्रन मत गंभीर अति, परामर्श व्रजराय।
निजलाला मुखतें सुन्यो, मोद न हिये समाय॥३३॥

सो०-भयो कृतारथ आज, इम मानत मनमें कहत।
इष्टदेव मम काज, किये सिद्ध सहजहि सकल॥

धन्य धन्य नारायण देवा ❀ दासनपे नित करुणा एवा।
मोपै अनुकम्पा जो कीनी ❀ अहै असाधारणही चीनी॥

१ एक राय २ इकट्ठे ३ विचार

प्रथम जरठ वय में सुत भयऊ ❀ सुंदर मनहर जिहँ छवि रहाऊ।
पुन जे बाधा गनी न जावें ❀ सुनत कहत जी बहु अकुलावें॥
तिन विघ्ननतें मो सुतकेरी ❀ किय रक्षा नीकी विधि हेरी।
अनुपम आप कृपाके द्वारा ❀ आज वही लाला सुकुमारा॥
जो मोरे नयननको तारो ❀ भयऊ अस सुयोग्यता वारो।
जनु इक परम विवेचनशीला ❀ वड़ पंडितकी भांति सुरीला॥
इमसों मिल शास्त्रीयविचारा ❀ करन लगो या सभा मँझारा।
या घटनासे यह अपि आसा ❀ भई और तापे विश्वासा॥२३॥

दो॰ निज उत्तराधिकारको, अरु निज घरको एह।
वड़ आदर्श स्वरूप में, निर्वाहित कर लेह॥२४॥

सो॰-जा अवसर के माहिं, यहँ पंचायत हो रही।
इक दासी थल ताहिं, जावत भइ कछु वचन सुन२१

हर्षित चित यशुमति प्रति कहाऊ ❀ आज वड़ी पंचायत भयऊ।
को भाखत है हां यह कीजे ❀ कोउ कहत मत करो सुनीजे॥
आई है सगाइ लालाकी ❀ कहुँते अपी वात है पाकी।
नहिं तो पंचायत किम भेऊ ❀ करौ न करौ कहत किम तेऊ॥
कह व्रजरानी दासी पाहीं ❀ जाय पूँछ व्रजराजहिं ताहीं।
आज सगाई लाला केरी ❀ कहँते आई है तुव नेरी॥
जहँते आई होय सगाई ❀ करो आशु अति हिय हरषाई।

१ शास्त्र सम्बन्धी २ निबाह।

दासी आय नंदप्रति कह्यऊ ❀ व्रजरानी इम पूँछत भयऊ ॥
कनुवाकेरी आज सगाई ❀ कहिये कौन गामतें आई ।
कहुँते अपि आई ले लीजै ❀ या हित पंचायत किम कीजै ३४

दो०-सुन दासी मुख वचनकों, विहँसे तहँ जन वृंद ।
कहन लगे नारिनको, इन्हीं वात आनंद ॥३५॥

सो० दासी प्रति व्रजराज, कहत, कहौ यशुमति प्रती ।
यह पंचायत आज, नाहिं सगाई के लिये ॥२२॥

रह्यौ मचल तुव लाला आजू ❀ कहत नाहिं पूजौ सुरराजू ।
पूजौ गिरिराजहिं मुद होई ❀ अब जो तू कह कर हम सोई ॥
दासी जाय , यशोदा पाहीं ❀ भाखी वात नंदकी ताहीं ।
पुन यशुमति तिहँ हाथ कहायो ❀ यदि कनुवा हठहींपै आयो ॥
तौ तुम मोर ओर ते कहियौ ❀ जस लाला कह तस सब चहियौ।
लालाको हठ पूरौ कीजै ❀ यह मो विनय सबन कहिदीजै॥
नित पूजा पावे सुरराई ❀ एक वेर पाई ना पाई ।
अस सुन नंद कहत प्रति ताहीं ❀ जाय कहौ व्रजरानी पाहीं ॥
अहै रिसैला वड़ सुरराई ❀ याकी राय कहा तुहिं आई ।
यदि वह कोप करै का कीजै ❀ दासी कह यशुमति सुन लीजै ३५

दो०-नंदरायके वचन सुन, दासी मुखतें ताहिं ।
कहत यशोमति जाय कहु, व्रजराजा के पाहिं ॥३६॥

यदि ऐसे ही होय तौ, पुन पुजियो सुरराय।
यशुमति वच दासी तहां, कहै नंद प्रति आय ॥३७॥

सो०-ता पंचायत माहिं, सहजहि हो गै एक मत।
अब पूछत प्रभु पाहिं, कहा करैं हम प्रति कहौ ॥२३॥

॥ इति श्रीवसन्तकृष्णायने चतुर्थ गिरिराज द्वारे प्रथम सोपान समाप्त ॥

भैया कान्हा जिहँ विध भाखै ❀ तिहँ विधि हम पूजा अभिलाखैं।
याकी पूजा विधी कहा है ❀ तिहँ जानन हम हिये चहा है॥
तब श्रीकृष्ण कह्यौ तिन पाहीं ❀ कहि चुक्यो मैं प्रथमहिं ताहीं।
जो सामिग्री संग्रह कीनी ❀ इन्द्र यज्ञ कारण जु नवीनी॥
तासौं गिरिवर पूजन कीजै ❀ पूर्णभाव सब हिये धरीजै।
सब गोअन को दूध दुहावौ ❀ कर इकत्र या थल मंगवावौ॥
गुलाब जामन पूवा पूरी ❀ मोहनभोग जलेबी रूरी।
मोदक खुर्मा और इमरती ❀ घेवर बालूसाई चुक्ती॥
खीर आदि मीठी अरु फीकी ❀ सिखरन आदि वस्तु बहु नीकी।
युत उत्साह पाक बनवावौ ❀ श्रुतिपाठी भूदेव बुलावौ ॥२८॥

दो० हवन करावौ सहित विधि, भोजन तिन्हैं कराय।
अन्नदान गौदानहू, दैं दक्षिणा मिलाय ॥ ३८ ॥

सो०-भोजन को अधिकार, श्वान श्वपचअरु पतित लंग।
ताते होय उदार, भोजन करवावैं सबन ॥ २४ ॥

अन्नदान की वड़ी वड़ाई ❀ सब दाननतें उत्तम गाई ।
अन्नदान सम अपर न दाना ❀ पात्र परीक्षा यहां न माना ॥
नहीं समयको नियमहु यामें ❀ सकल दान फल प्रापति तामें ।
ताते ऊँच नीच हो कोई ❀ भोजन करवावौ मुद होई ॥
सब गौअनको घास खवावौ ❀ मिल आपुसमें मोद वढ़ावौ ।
या विधि गिरिवर पूजा कीजे ❀ इह परलोक सुजस बहु लीजे ॥
बहु मूल्य आभूषण धारौ ❀ सुन्दर वस्त्रन तन सींगारौ ।
सौरभमय चन्दनहु लगावौ ❀ सब निज निज निकेत सजवावौ॥
पाछे गौ अग्नी भूदेवा ❀ श्रीगिरिवरकी कीजे सेवा ।
भेरी शंख घंट सहनाई ❀ दुन्दुभि ढोल बजैं मनभाई २७

दो० वेदपाठ करते चलैं, विप्र वृन्द हुलसाय ।
गिरिवर की परदाक्षिणा, करैं सकल समुदाय ॥३९॥

सो० मेरो मत यह आहि, तुम सबहिन सन्मुख कह्यो।
अब तुम्हरे मन माहिं, जोउ रुचै सोई करौ ॥२५॥

किन्तु पिता गोवर्द्धनजीको ❀ गौ भूसुर मख प्रिय मो जीको।
कह नारद मैथिल सुन लीजै ❀ भगवत चरित; प्रेम रस पीजै ॥

इन्द्र गर्व ध्वंसन अभिलाखा ❀ जेउ वचन नँदनंदन भाखा ।
सबको प्रेरक सबहिनकेरी ❀ चहे भलाई श्रुती निवेरी ॥
तिहँ समर्थ भगवतकी बानी ❀ सुन सबहिनके मनमें मानी ।
करन लगें उद्यम बड़ चाहा ❀ एक एकतें बड़ उत्साहा ॥
या प्रकार एकादशि माहीं ❀ भइ पंचायत कही जु ताहीं ।
द्वादशि दिन सामिग्री भयऊ ❀ घर घर मंगल गावत रहयऊ ॥
जहँ तहँ बहु बाजन बाजें ❀ जनु प्रमोद घन सबहि बिराजें ।
धन तेरस रजनी जब आई ❀ गोप समाज जुट्यो हरषाई ॥

दो०-नँद उपनंद सुनंद अरु, आनँद अरु अभिनंद ।
इनतें लेकें औरहू, मिले सहित आनंद ॥ ४० ॥

सो०-राम कृष्ण के साथ, किय अर्चा यम दीपकी ।
पुन बाहर ब्रजनाथ, धरवायो वा दीपको ॥ २८ ॥

नरकाचौदश को ब्रजराई ❀ अरु शावत गोपन समुदाई ।
कर उवटन मिल दाउ कन्हाई ❀ तेल फुलेलहु अतर लगाई ॥
न्हायो अरु दिय विप्रन दाना ❀ दीपमालको मोद महाना ।
अमावास्य दिन सब ब्रजवासी ❀ निजनिज भवन सजावन आसी॥
को लीपे पोते है कोऊ ❀ चित्रावली कढ़त मुद होऊ ।
को हिरमिच गेरूके रंगा ❀ रंगें किंवारन सहित उमंगा ॥
आशय यह सबही ब्रजवासी ❀ बाल बालिका दास रु दासी ।
लगे सिंगारन विविध प्रकारा ❀ को वर्णन कर सकत उदारा ॥

साँझ समय नर नारिन वृंदा ❀ पट भूषण पहरें सानंदा ।
मंगल गीत गावनें लागे ❀ थल थल बाजे बजत सुरागे ॥

दो०-बड़ो शोर चहुँ ओर है, कछुहु सुन्यो नहिं जाय ।
झनर मनर करतीं त्रिया, डोलत सखिन बुलाय ॥

कवित्त

चलौ चलौ नन्दलाल केरो करैं दरसन,
विलम न करौ इम सखिन सुनायो है ।
अस जब हूला दियो सुनत सयन हियो,
कियो दियो लियो पियो सबहि भुलायो है ॥
सखिन के यूथ यूथ चारिहूँ दिशाते आये,
नंदराय जे भवन मोहन सुहायो है ।
कर दरसन मन हरन, करन सुख,
भरन बरन सखि हिय हुलसायो है ॥ १० ॥

दो०-ता अवसर ब्रजराज घर, मोहन को सींगार ।
अहै अनिर्वचनी तदपि, कछुकहि करौं उचार॥४२॥

है शिरपै चीरा पचरंगी ❀ अतिहि मनोहर सुष्टु सुरंगी ।
तापै मुकुट झुकैमा सोहै ❀ अहै लटक अलबेली मोहै ॥
पुन तहँ हीरा पन्ना केरो ❀ है शिरपेच जड़ाऊ हेरो ।
माणिक मणिकी अहै कलंगी ❀ जगमगात जनु है बहुरंगी ॥

१ जो जबान से कह न सकें ।

तापै मोतिन तुर्रा अहई ❀ फूल चमेलिन झुर्रा रहई ।
गुंजा मणिके झब्बा सोहैं ❀ लटकत अटकत मन तहँ मोहैं ॥
कानन कुंडल मकराकारी ❀ अलकें सोहत घूँघर वारी ।
दोउ कपोलन लटुरी आवैं ❀ चित्त विहंग तहाँ फस जावैं ॥
मोर चन्द्रिका की छवि न्यारी ❀ देखनहार जाइँ बलिहारी ।
केसर खौर तिल है न्यारे ❀ बैंदी बेसर चिबुक सितारे ॥

दो०-मोती सुराइदार जे, वाको सुष्टु बुलाक ।
लटक रह्यौ है नाक में, को कह सोह मनाक ॥४३॥

सो०-मुखसों पान चबात, नैनन अंजन सोह अति ।
मंद मंद मुसकात, करत सखन सों बात अपि२७

ता अवसरकी सोह महाना ❀ लखुमति मो, नहिं जात बखाना ।
भौंहन माहिं डिठौना सोहै ❀ जोइ विलोके निश्चय मोहै ॥
कौस्तुभ मणि सोहत गर माहीं ❀ गज मोतिन माला अपि ताहीं ।
पहुँची गजरे अहैं कलाई ❀ मोतिनके जिन छवि अधिकाई॥
अरु अमेठमा कड़े सुहाऊ ❀ अंगुरिन में मुद्रिका जड़ाऊ ।
युग्म भुजा में बाजूबंदा ❀ दमकत हैं मानो द्वौ चंदा ॥
जाली की कटि काछनि काछे ❀ पहर रहे पीताम्बर आछे ।
कलावतू की अहैं किनारी ❀ झलमलात आकर्षणकारी ॥

१ धोरीसी ।

चहुँदिशि हीरा प्रभृतिन सेती ❀ वनी वेल बूँटी छवि देती ।
छड़ी हाथमें सोहत भारी ❀ वंशी अधरनपै है धारी॥४४॥

दो०—कटि तट में है किंकिणी, चलत वजत कर मोह ।
वसन्त अस छवि धर हिये, जिहँ सम नाहीं सोह ॥

मोतिन झालरदार जरीको ❀ दुछोरमा पटुका लग नीको ।
दोउ छोर ताके लटकाये ❀ सुष्ठु दुशाला को छुटकाये ॥
पट पीताम्बरको चटकाये ❀ चरण नूपुरनको खटकाये ।
गोल कपोलनको अटकाये ❀ नेत्रनके पलकन झटकाये ॥
रूप माधुरीको गटकाये ❀ निज भक्तन को मन भटकाये ।
अग्रज भैयाको सटकाये ❀ दौड़ दौड़ वावापै आये ॥
हे वावा है आज दिवारी ❀ वड़ी सोह या घोप मँझारी ।
मैं तो जहाँ जहाँ चलि गयऊ ❀ देख सजावट अचरज भयऊ ॥
एक खिलौना ऐसो देख्यो ❀ जो आपन घरहू नहिं पेख्यो ।
वही खिलौना देहु मँगाई ❀ सुनत प्रसन्न भयो व्रजराई ॥

दो०—ईश्वर अज आदिकनको, अहै कृष्ण साक्षात ।
देखौ व्रजजन प्रेमवश, वालरूप सुखदात ॥४५॥

सो०-यथा सकल व्रज माहिं, अहै दिवारी मनहरन ।
तथा नंद घर आहि, जोउ सजावट कछु सुनौ ॥

कवित्त

ब्रजराज के सदन-शोभा बरिणे कवि को,
चित जो चंचल तहां-अचल दिखायो है ।
काहे न अचल होय-चित जो चंचल अति,
जहां आय परब्रह्म-आप प्रकटायो है ॥
मणिमय महलन-माहीं नील पीले हरे,
सफेद रंगन केरे-झाड़ लटकाये हैं ।
फानूस हंडी विविध-लग रहे जहां तहां,
झगमग झगमग-मन को लुभाये हैं ॥११॥
छज्जेन छतन पर-गोखान मोखान माहीं,
झरोखान आरेन में-दीपक जगाये हैं ।
दिवारन देहरी पै-द्वारन भीतरा अरु,
तिवारी अटारी पर-प्रकाश छुवाये हैं ॥
चौबारेन पर इम-बाहर भीतर देख,
दीपन की पंगति जु-नक्षत्र सुहाये हैं ।
गोखन के खिरकन-खोहन अधांदनि में,
चहुँओर इम दिया-बरत लुभाये हैं ॥१२॥
जहां जहां दृष्टि जाय-दीपक दिखाय भाय,
इम दीपदान केरी-झलामली भावही ।
सखिन सहित तहां-वृषभानुनंदनीजू,
षोडश शृंगार किये-मुदित सिधावही ॥
श्यामाजू के आयबेते-दुगुनो चौगुनो अरु,
नौगुनो सहस गुनो-प्रकाश बढ़ाये हैं ।

दीप कहा अहैं जनु--चतुरमालीनें कहें,
जरीकेरे पाँदानको--ढाँक से सजाये हैं ॥१३॥

दो०--वा दम्पती विहारकी, सम्पति इन्द्र निहार ।
पारिजाति के पुष्प जनु, बरसाये बहुधार ॥४६॥

वा पुखराज मणी के ओला ❀ दीपदान इम कियो सुडौला ।
पुन हठरी पूजन तिन कीनों ❀ बड़ उत्सव वाको अपि चीनों ॥
ता रजनी सबही ब्रजवासी ❀ कियो जागरण परम हुलासी ।
प्रातःकाल भयो जब ताहीं ❀ कहत नंद निज लाला पाहीं ॥
कहा करें उद्यम पूजाको ❀ तब कहें कृष्ण नंद बाबाको ।
सुनौ पिता पूजन विधि जोई ❀ मोहिं सुनावों तुम प्रति सोई ॥
मुहिं वैष्णावन सिखाई अहई ❀ मोपै तिन बड़ करुणा रहई ।
ताते सुनौ सकल ब्रजवासी ❀ यथा कहत हौं मैं सहुलासी ॥
प्रथम भात को रचिये कोटा ❀ आय जाय गिरिवर तिहँ ओटा ।
श्रीगिरिराज बदन के आगे ❀ सब सामिग्री धरौ सरांगे ॥४३॥

दो०--होय जितेन्द्रिय, मंत्र जो, सहस शरिपा आहि
करत उचारण आप सब, स्नान करावें ताहि ॥४७॥

सो०--धेनु दूध की धार, अरु पंचामृत सों अपी।
नहवावें युत प्यार, पुनि सुगंधि जलसों गिरिहिं ३०

• १ महित स्नेह के

दिव्य वस्त्र माला अरु आसन ❀ अलंकार आदिक सुठ वासन ।
इन वस्तुन गोवर्द्धनजीको ❀ तुम शृंगार करौ बड़ नीको ॥
पुन सब कीजै दीपक दाना ❀ प्रदक्षिणा बन्दन कर नाना ।
करौ स्तुती कर सम्पुट हाथा ❀ श्रीगिरिवरकी, प्रीती साथा ॥
पुन पुष्पांजलि दीजै ताहीं ❀ करहु आरती मुद मन माहीं ।
घंट मृदंग मधुर स्वर बाजैं ❀ जय२धुनि सब निजमुख गाजैं ॥
नाचैं गोपी अरु गोपाला ❀ या विधि पूजन करौ विशाला ।
कृष्ण वचन सुन श्रीव्रजराई ❀ भृत्यनसौं भाखत हरपाई ॥
यावत गोरस अरु पकवाना ❀ अहैं मिठाई मेवा नाना ।
तिम फल फूल हु जितनें अहहीं ❀ जे पूजा सामिग्री रहहीं ॥४४॥

दो०-ते सबही लै साथ मैं, श्री गिरिवर के पाहिं ।
ले जावन सबहिन कहौ, सुन लै जावत ताहिं ।४८।

कवित्त

कहै मुनि प्रथमहि-व्रजराज को समाज,
सकल सामिग्री युत-चलत सुहावहीं ।
षटरस सामिग्री जु-सहसन छकड़ान,
भर भर प्रमुदित-गिरिवर जावहीं ॥
विविध प्रकार अहैं-नाम कहां लग कहैं,
तदपि कहूँ कछुक-मोरे मन, भावहीं ।
खट्टे मीठे फीके अरु-सलोने हूँ भक्ष्य भोज्य,
चोष्य लेह्य अनेकन-वस्तु ले सिधावहीं ॥१४॥

पकौड़ी तलेमा दाल-गरम गरम सेव,
कचौरी आदिक बहु-लेत जात संग में ।
दूध दहीहुके नाना-विधि के व्यंजन अहैं,
मिठाई मेवा विविध-लिये सु उमंग में ॥
मठरी मोहन भोग-सेव गुलाबी बरफी,
पेड़ा नुकती त्रिकोण-संग प्रेम रंग में,
खुर्मा मिश्री इमरती-जिलेबी खजला कंद,
घेवर बावर ओला-साथहि उछंग में ॥१५॥
इदरसे मिंगीपाग-पेठेपाक गोलापाक,
केसर मखानें पाक-लिये संग जावहीं ।
चिरौंजी को पाक अरु-गुलाब जामन अहैं,
चन्द्रकला गुपचुप-मन को लुभावहीं ॥
बालूसाई चांदसाई-मोतीचूर के मोदक,
मोदक मगद केरे-हिय हुलसावहीं ।
बेसन के लड्डू अरु-कांगनी के लड्डू आदि,
विविध प्रकारन के-लड्डू हु सुहावहीं ॥१६॥
खांड़ के खिलौना सेंठ-इलायची दानें अरु,
तिनगनी गिदौड़ाहु-संग लिये जात हैं ।
रेवड़ीहू बहुविधि-विविध माजूम अहैं,
दहीबड़ा सेमई सुहार मन भात हैं ॥
अहैं पापड़ी नरम-गुझेमा गूंजिया थूली,
सलौनी विविध वस्तु-हिय हुलसात हैं ।
चंदिया खिजूर ठोर-टिकिया बेढ़ई और,
बेसन की पूरी संग-जात हरषात हैं ॥१७॥

मीठे पूआ अरु अहै-नौन के पूआहू नहां,
दूध दहीं सिखरन-आदि वस्तु भाइ है।
खाजा अरु नवनीत-नौन मिर्च पड़ा हूआ,
मट्टाहू विविध विध-रबरी मलाई है॥
ऐसे ही अनेक विध-सखरे विंजन अहैं,
सबहिन स्वाद षट्-संग में सुहाइ है।
तसमै लुचई बड़ी-सुन्दर फुलकिया हू,
अहै केसरिया भात-स्वेत भात लाइ है॥१८॥

मीठो भात धोवा दाल-चना मूंग मोंठ उर्द,
मटर की दाल अहैं-कढ़ी आदि संग में।
मुरबा अनेक अरु-अमरस खीचड़ीहू,
रायते आचार बहु-ले जात उछंग में॥
चौरा उरद मटर-मूंग सेम बंबूल की,
फली है विविध संग-लिये हैं उमंग में।
करीलके फल अरु-पत्राफल जिमीकंद,
वाराही शर्करकन्द-लिये प्रेम रंग में॥१९॥

बेसन आलुन दाल-कर बहु झोल, अहैं
शाकहु अनेक विधि-साथ में सुहाइ है।
पिंडौर करौंदा मेथी-कचनार ग्वारफली,
रतालु सेंगरी मूली-रामतना भाइ है॥
नौनग्वा कोयला खीरा-पेटा सेम चूका सोया,
तोरई पालक नींबू-सूलेहरा लाइ है।
आम अदरख सौंठ-फली संहजना केरी,
आंवरे विहसोंडे टेंटी-संग लिये जाइ है॥२०॥

मिर्च ककोरा करौंदा-कमरख किसमिस,
खिजूर जंभीरी अरु-महूआहू लाइ हैं ।
मौलसिरी मिट्ठा खट्टा-मखान जामुन अरु,
बादाम छुहारे दाख-नारंगी सुहाइ हैं ॥
नारियल नासपाती-चिरौंजी इमली बेर,
चकोतरा अंजीरहू-सब मनभाइ हैं ।
सीताफल तालफल-सुधाफल अंगूरहू,
सहतूत सौंफ सेव-पेंचू लिये जाइ हैं ॥२१॥
कटहर बड़हर-सफरी पीलू आदिक,
अनेकन पदारथ-कापै कहे जात हैं ।
व्रजराज ससमाज-सकल सामिग्री लिये,
गिरिराज रुचि हेतु-जात हुलसात हैं ॥
गोपी गोप निज निज-शृंगार विविध विध,
कर मनहर अति-जात मुसकात हैं ।
आगे आगे धेनु गण-विविध शृंगार जिन,
अनेक प्रकार अंस-सुरभी संघात हैं ।२२॥
गोप गण निज निज-विविध वरण धेनू,
मुदित हृदय सेती-लिये जात साथ है ।
तिनमें मोहन केरी-श्याम रंग धेनु जेऊ,
जिनको शृंगार श्याम-कियो निज हाथ है ॥
तिनको विलोक मन-मोहित मुदित अति,
अचल अचल सम-विचित्रही गाथ है ।
नहिं अचरज यामैं-करै कोऊ जन अपि,
विविध ब्रह्माण्ड रचै-सोइ यह नाथ है ॥२३॥

ग्वाल गन बीच बीच-सोहत महान अति,
चलत गौवन संग-शृंगार सुहात है।
खीनखाप के छुटना-अतलस अँगरखा,
माथे पै मंडील, तापै-कलंगी विभात है॥
फूलन तुररा अरु-मोरन चन्द्रिका सुठ,
लहराय रही लख-हियो ललचात है।
मोतीन की लड़ी दोऊ-ओर पड़ी अहै तापै,
कलाबतू की गुथेमा-फुँदना दिखात है॥२४॥
तापै माल गुंजान की, कानन कुण्डल कल,
कञ्चन मूंगान माल-गरे छवि छाई है।
बाहुन में बाजूबन्द-हाथन में कड़े अरु,
अँगुरीन छाप छल्ला-सोहत. महाई है॥
सेला कांख माहीं सोहै-दुशाला हाथन माहीं,
गेंडादार छड़ी कर-फूलन सुहाई है।
गेरू सेलखड़ी अरु-मनसिल हरताल,
इनको तिलक खौर-भाल, मन भाई है॥२५॥
सिन्दूर को बिन्दा दिये-नैन सुरमा लगाय,
दरपण माहीं मुख-लख हरषात हैं।
बंशी अलगोजा सुठ-विविध प्रकार सेती,
बजावत यूथ माधि-प्रमुदित जात हैं॥
यूथन के ग्वाल वृन्द-नये वस्त्र धार तन,
भूषण रंग बिरंगे-अंगन सुहात हैं।
पुकारत सुरभीन-कहूँ, गौवन के यूथ,
मिलन आपुस माहीं सोह सरसात हैं॥२६॥

एक ओर श्याम गऊ-एक ओर श्वेत धेनु,
मध्य' लाल रंग केरी-क्रमसों सिधाइ हैं।
जनु जान्हवी जमुना-सरस्वती तीनों मिल,
त्रिवेणी की धार सम-चलत सुहाइ हैं॥
गोप वृन्द निज निज-यूथन को नाम ले ले,
पुकारत मोद जिन-कह्यो नहिं जाइ है।
हीयो हीयो कारी धोरी-काजर धूमर रामा,
धूमला धवला श्यामा-नाम मन भाइ हैं॥२७॥

दो०या विधि गौ वछरन सहित,जावत,जिन जिय चाह।
एक नंद नंदनहि को, निरखत युत उत्साह॥४६॥

श्याम के सखान केरे-झुण्डन के झुण्ड हेरे,
तिनिके प्रकार पांच बुधजन गाये हैं।
एक तो सखाही अहैं-सुहृद सखा अपर,
तीसरे नरम सखा-तीन ये बताये हैं॥
चौथे प्रिय नर्म सखा-पांच दास्य भाव सखा,
पांचहु प्रकार सखा-हिय हरषाये हैं।
विविध शृंगार कियो-श्याम मन हर लियो,
गौवन के संग जय-धुनि युत जाये हैं॥२८॥
या प्रकार सखा सब-गौवन सों मिल मुद,
जावत गावत गीत-साथ में कन्हाई हैं।
तीन के पीछे सुनन्द-उपनन्द आदि गोप,
बड़े बड़े शृंगारित-सोहत महाई हैं॥

तिन गोप वृन्द माहीं–नन्दराय को शृंगार,
कह्यो कापै जाय, तोहू-कहीं कछिदाई है।
चहचहे रंग केरी-पाग पेचदार सुठ,
घेरदार जरी केरी-जामा मनभाई है॥२९॥
जामें मोती पन्ना अरु–पिरोजाकी वेल बनी,
ठनी अस जाहि देख, चित ललचायो है।
धानी रंगको पटुका–जामैं टप्पेदार चौड़ी,
है किनारी चारौं ओर. कटिपै सुहायो है॥
गरे में सेला है जामें–कलाबतू कोर सुठ,
दुहूं ओर लग रही, सेला मन भायो है।
गुलेनार को दुशाला–कंधान पैं गेर राख्यो,
नैनन सहित मन, तहां अटकायो है॥ ३० ॥
शिरपेच है जड़ाऊ–तुररा कलंगी सुठ,
लटकत देत छवि, मोद अधिकायो है।
माथे पर मनोहर–सुभग तिलक छाप,
कानन में मोतीनको, चौकड़ा सुहायो है॥
गरेमें सोने को तोड़ा–अरु मोती केरी माला,
बांह मांही बाजूबंद, चितको चुरायो है।
नौरतन मनोहर–कलाई कड़े जड़ाऊ,
अंगुरीन में मुन्दरी, चित ललचायो है॥ ३१ ॥
कारचोबी केरो काम–जामें अस मखमली,
जोड़ा है पांवन माहीं, छवि अधिकाई है।

एक ओर श्याम गऊ-एक ओर श्वेत धेनु,
मध्य' लाल रंग केरी-क्रमसों सिधाइ हैं।
जनु जान्हवी जमुना-सरस्वती तीनों मिल,
त्रिवेणी की धार सम-चलत सुहाइ हैं॥
गोप वृन्द निज निज-यूथन को नाम ले ले,
पुकारत मोद जिन-कह्यो नहिं जाइ हैं।
हीरो हीरो कारी धोरी-काजर धूमर रामा,
धूमला धवला श्यामा-नाम मन भाइ हैं ॥२७॥

दो०या विधि गौ वछरन सहित, जावत, जिन जिय चाह।
एक नंद नंदनहि को, निरखत युत उत्साह ॥४६॥

श्याम के सखान केरे-झुण्डन के झुण्ड ढेरे,
तिनिके प्रकार पांच बुधजन गाय हैं।
एक तो सखाही अहँ-सुहृद सखा अपर,
तीसरे नरम सखा-तीन ये बताये हैं॥
चौथे प्रिय नर्म सखा-पांच दास्य भाव सखा,
पांचहु प्रकार सखा-हिय हरषाये हैं।
विविध शृंगार कियो-श्याम मन हर लियौ,
गौवन के संग जय-धुनि युत जाये हैं ॥२८॥
या प्रकार सखा सब-गौवन सों मिल मुद,
जावत गावत गीत-साथ में कन्हाई हैं।
तीन के पीछे सुनन्द-उपनन्द आदि गोप,
बड़े बड़े शृंगारित-सोहत महाई हैं॥

तिन गोप वृन्द माहीं–नन्दराय को शृंगार,
कह्यो कापै जाय, तोहू–कहीं कविताई है।
चहचहे रंग केरी-पाग पेचदार सुठ,
घेरदार जरी केरी-जामा मनभाई है॥२६॥
जामें मोती पन्ना अरु–पिरोजाकी बेल बनी,
ठनी अस जाहि देख, चित ललचायो है।
धानी रंगको पटुका–जामें टप्पेदार चौड़ी,
है किनारी चारौं ओर, कटिपै सुहायो है॥
गरे में सेला है जामें–कलाबतू कोर सुठ,
दुहूं ओर लग रही, सेला मन भायो है।
गुलेनार को दुशाला–कंधान पैं गेर राख्यो,
नैनन सहित मन, तहाँ अटकायो है॥ ३० ॥
शिरपेच है जड़ाऊ–तुररा कलंगी सुठ,
लटकन देत छवि, मोद अधिकायो है।
माथे पर मनोहर–सुभग तिलक छाप,
कानन में मोतीनको, चौकड़ा सुहायो है॥
गरेमें सोने को तोड़ा–अरु मोती केरी माला,
बांह मांही बाजूबंद, चितको चुरायो है।
नौरतन मनोहर–कलाई कड़े जड़ाऊ,
अंगुरीन में मुन्दरी, चित ललचायो है॥ ३१ ॥
कारचोबी केरो काम–जामें अस मखमली,
जोरा है पांयन मांहीं, छवि अधिकाई है।

एक ओर श्याम गऊ-एक ओर श्वेत धेनु,
मध्य' लाल रंग केरी-क्रमसों सिधाइ हैं।
जनु जान्हवी जमुना-सरस्वती तीनों मिल,
त्रिवेणी की धार सम-चलत सुहाइ हैं॥
गोप वृन्द निज निज-यूथन को नाम ले ले,
पुकारत मोद जिन-कह्यो नहिं जाइ है।
हीयो हीयो कारी धोरी-काजर धूमर रामा,
धूमला धवला श्यामा-नाम मन भाइ हैं॥२७॥

दो०-या विधि गौ बछरन सहित, जावत, जिन जिय चाह।
एक नंद नंदनहि को, निरखत युत उत्साह॥४६॥

श्याम के सखान केरे-झुण्डन के झुण्ड ढेरे,
तिनिके प्रकार पांच-बुधजन गाय हैं।
एक तो सखाही अहैं-सुहृद सखा अपर,
तीसरे नरम सखा-तीन ये बताये हैं॥
चौथे प्रिय नर्म सखा-पांच दास्य भाव सखा,
पांचहु प्रकार सखा-हिय हरषाये हैं।
विविध शृंगार कियो-श्याम मन हर लियो,
गौवन के संग जय-धुनि युत जाये हैं॥२८॥
या प्रकार सखा सब-गौवन सों मिल मुद,
जावत गावत गीत-साथ में कन्हाई हैं।
तीन के पीछे सुनन्द-उपनन्द आदि गोप,
बड़े बड़े शृंगारित-सोहत महाई हैं॥

तिन गोप वृन्द माहीं–नन्दराय को शृंगार,
कह्यो कापै जाय, तोहू-कहीं कछिदाई है।
चहचहे रंग केरी-पाग पेचदार सुठ,
घेरदार जरी केरी-जामा मनभाई है॥२६॥
जामें मोती पन्ना अरु–पिरोजाकी बेल बनी,
ठनी अस जाहिं देख, चित ललचायो है।
धानी रंगको पटुका–जामें टप्पेदार चौड़ी,
है किनारी चारौं ओर, कटिपैं सुहायो है॥
गरे में सेला है जामें–कलाबतू कोर सुठ,
दुहुं ओर लग रही, सेला मन भायो है।
गुलेनार को दुशाला–कंधान पैं गेर राख्यो,
नैनन सहित मन, तहां अटकायो है॥ ३० ॥
शिरपेच है जड़ाऊ–तुररा कलंगी सुठ,
लटकत देत छबि, मोद अधिकायो है।
माथे पर मनोहर–सुभग तिलक छाप,
कानन में मोतीनको, चौकड़ा सुहायो है॥
गरेमें सोने को तोड़ा–अरु मोती केरी माला,
बांह मांही बाजूबंद, चितको चुरायो है।
नौरतन मनोहर–कलाई कड़े जड़ाऊ,
अंगुरीन में मुन्दरी, चित ललचायो है॥ ३१ ॥
कारचोबी केरो काम–जामें अस मनमनी,
जोड़ा है पांवन माहीं, छबि अधिकाई है।

एक ओर श्याम गऊ-एक ओर श्वेत धेनु,
मध्य' लाल रंग केरी-क्रमसों सिधाइ हैं।
जनु जान्हवी जमुना-सरस्वती तीनों मिल,
त्रिवेणी की धार सम-चलत सुहाइ हैं॥
गोप वृन्द निज निज-यूथन को नाम ले ले,
पुकारत मोद जिन-कह्यौ नहिं जाइ है।
हीयो हीयो कारी धोरी-काजर धूमर रामा,
धूमला धवला श्यामा-नाम मन भाइ हैं॥२७॥

दो०या विधि गौ बछरन सहित,जावत,जिन जिय चाह।
एक नंद नंदनहि को, निरखत युत उत्साह॥४६॥

श्याम के सखान केरे-झुण्डन के झुण्ड हेरे,
तिनिके प्रकार पांच-बुधजन गाय हैं।
एक तो सखाही अहैं-सुहृद सखा अपर,
तीसरे नरम सखा-तीन ये बताये हैं॥
चौथे प्रिय नर्म सखा-पांच दास्य भाव सखा,
पांचहु प्रकार सखा-हिय हरषाये हैं।
विविध शृंगार कियो-श्याम मन हर लियो,
गौधन के संग जय-धुनि युत जाये हैं॥२८॥
या प्रकार सखा सब-गौधन सों मिल मुद,
जावत गावत गीत-साथ में कन्हाई हैं।
तीन के पीछे सुनन्द-उपनन्द आदि गोप,
बड़े बड़े शृंगारित-सोहत महाई हैं॥

तिन गोप वृन्द माहीं–नन्दराय को शृंगार,
कह्यो कापै जाय, तोहू-कहीं नचिदाई है।
चहचहे रंग केरी-पाग पेचदार सुठ,
घेरदार जरी केरी-जामा मनभाई है॥२६॥
जामें मोती पन्ना अरु–पिरोजाकी बेल बनी,
ठनी अस जाहि देख, चित ललचायो है।
धानी रंगको पटुका–जामें टप्पेदार चौड़ी,
है किनारी चारौं ओर. कटिपै सुहायो है॥
गरे में सेला है जामें–कलाबतू कोर सुठ,
दुहुं ओर लग रही, सेला मन भायो है।
गुलेनार को दुशाला–कंधान पै गेर राख्यो,
नैनन सहित मन, तहां अटकायो है॥ ३० ॥
शिरपेच है जड़ाऊ–तुर्रा कलंगी सुठ,
लटकत देत छवि, मोद अधिकायो है।
माथे पर मनोहर–सुभग तिलक छाप,
कानन में मोतीनको, चौकड़ा सुहायो है॥
गरेमें सोने को तोड़ा–अरु मोती केरी माला,
बांह मांही बाजूबंद, चितको चुरायो है।
नौरतन मनोहर–कलाई कड़े जड़ाऊ,
अंगुरीन में मुन्दरी, चित ललचायो है॥ ३१ ॥
कारचोबी केरो काम–जामें अस मनभलो,
जोड़ा है पांयन माहीं, छवि अधिकाई है।

कंचन की छड़ी हाथ-जड़ित सोहत अति,
या प्रकार नखशिख, सोह सरसाई है ॥
विविध शृंगार किये-नन्दराय मोद हिये,
गोपन के बीच चल, प्रीति न समाई है।
बड़े बूढ़े गोपवृन्द-मिल नन्दसों सानन्द,
गवनत जय धुनि, करत महाई है ॥ ३२ ॥
यशोदा रोहिणी जू को-कछुक शृंगार कहौं,
जाय रहीं जिन जिय, आनन्द महाई है।
बूंटादार खीनखाप-केरो घेरदार सुठ,
दामन सुहात जामें, काम रुचिदाई है ॥
दुहेरी मगजी चौड़े-पनेकी संजाफदार,
मोतीन लामनहु की, सोह अधिकाई है।
चुन्नी पन्ना पिरोजा की-कारचोबी बेल अरु,
सलमासतारे केरी, बीजबेल भाई है॥ ३३ ॥
गोखरू लगो है अरु-घोटा केरी छड़ी सुठ,
बीचमें सोहत अति, मन हर जावहीं।
जालीदार कलाबतू-केरो चौम नाड़ो तामैं,
झब्बा लटकत बहु, मोतीन सुहावहीं ॥
सुन्दर सोसनी सारी-तामैं चहूं ओर सोहे,
कलाबतूकी किनारी, बिजुसी सुहावहीं।
अतलसकी सुंदर-फरेमा चोली अंगन,
कहूं से नाहिन पोली, छबि सरसावहीं ॥ ३४ ॥
कैसी अहै चोली वेह-जामें बेल बूंटा अरु,
सलमासतारेन को, काम रुचिदाई है।

जामें चहूं ओर अहै-कलाबतू केरी डोर,
दोऊ छोर पीठ ओर, बांधे कसकाई है ॥
बजनें बाजू बिछुआ-चुकटी जड़ाऊ पाय-
जेब, पगपायलहू, सोहत महाई हैं।
चौरासी कड़े रुचिर-महावर नीकीविध,
चरनकमल माहीं, दोउन लगाई है ॥ ३५ ॥
कटिमें किंकिनी सोह-महँदी से रंगे भये,
हाथन में हीरा केरी, पहुंची जड़ाई हैं।
तैसे ही गजरा धरा-कंकन पछेली छल्ल,
छल्ला मुँदरी आरसी, सोहत महाई है ॥
गरे में हँसली कंठा-हमेल कंठश्री चौकी,
जयमाल चम्पाकली, बड़ रुचिदाई है।
मोतीनकी दुलरी तिलरी चौलरी सुंदर,
येहू गरे में दोउन, परम सुहाई हैं ॥ ३६ ॥
कानन में कर्णफूल-झूमका गोखरू अरु,
पीपल पत्ता सुभग, सोह मनहारी है।
पाटीपाड़ सिंदूरसों-मांगभर नीकी विधि,
फूलनसों गूंथी बेनी, बड़ रुचिकारी है ॥
माथे पर बेनाबंदी-सीस फूल झमके है,
केसर कुंकुम खौर, बीच बेंदी धारी है।
नैन अंजन लगाय-पान मुखसों चबाय,
छोटीसी नथ सुहाय, माल बहु भारी है ॥ ३७ ॥

---

१ जड़ित

तामें लटकायौ सित-मोतीनको झलका हू,
दोऊ महतारी वर, महामोद पावहीं ।
झनर मनर सेती-जावन गावन गीत,
साथ में अनेक गोपी, प्रमुदित जावहीं ॥
सवन श्रृंगार बड-मोहन हृदय हर,
को कवीवर उचर, थाह नहिं पावहीं ।
पुलकत विहँसन-वन छवि निरखन,
कान गुन विचारत, गिरिराज ध्यावहीं ॥ ३८ ॥

दो०-या विधि ब्रजवासी सकल,नर नारी अरु बाल ।
पूजन श्री गिरिराज को,जाय रहे नरपाल ॥५०॥

सो०-अब मैं या थल माहिं, जावन क्रम वर्णन करौं ।
सुन सावध नृप ताहिं,बड़ो मोद है याहु मैं ॥३१॥

॥ इति श्रीकृष्णायने चतुर्थगिरिराजद्वारे द्वितीय सोपान समाप्त ॥

सबसों आगे धोंसा बाजे ❀ अश्वन पै तिन छवि अति छाजै ।
ता पाछे जावत हैं हाथी ❀ हैं निशान पचरंगी साथी ॥
रथ समूह की पंगति जैसी ❀ अरु अश्वन गाडीनहु तैसी ।
हैं पालकी नालकी वृन्दा ❀ सकटन पंगति चल सानंदा ॥
इम पँगतिन की पंगति जावें ❀ देखनहार हिये हुलसावैं ।
ता अवसर श्री वर वृषभाना ❀ संग कीरती कियो पयाना ॥

१ श्वेत

गामन के हु गोप वहु आये ❀ गावत साज बजावत भाये ।
श्रीवृषभानु सुता के संगा ❀ सखिन यूथ चल रहस उमंगा ॥
ललिता गोपीश्वरी विशाखा ❀ चंद्रावली आदि वहु शाखा ।
कर षोड़श सींगार सुहावैं ❀ श्रीराधा के संग सिधावैं ४५ ॥

दो०-गोपी गण गावत चलत,सुन सुन मोद महान ।
एक ओर मंडल सखिन, सोहत वड़ छविवान॥५१॥

सो०-गोप मंडली जोउ, अपर ओर कर शोर वहु ।
जावत गावत सोउ, यह शोभा देखै बनै ॥३२॥

विप्र मंडली स्वस्ती वाचन ❀ करत वेद धुनि सब मन राचन ।
गोप केउ नाचैं के गावैं ❀ के वहु विधि के साज बजावें ॥
राम श्याम सखं मंडल माहीं ❀ खेलत हँसत चलत मिल ताहीं ।
योगेश्वरन हृदय में जोई ❀ वहु श्रम आवत कबहुक सोई ॥
गोप वाल मिल हँसत हँसावें ❀ वहु विधि तिन के मनहिं रिझावें।
साथहि सबहिन की सुधि लेवें ❀ थके भये को स्वारी देवें ॥
बूढ़ी नवे वरस की ताहीं ❀ उत्सव नयो जान मन माहीं ।
पूरी अरु गुलगुला बनाके ❀ धरि डलिया मन मोद वढाके ॥
चली इकाकी संग न कोई ❀ बड़ी भीड़में आ गइ सोई ।
जब ता भीड़ माहिं वह वृद्धा ❀ मरन लगी, जिहँ हिय बड़ श्रद्धा ४६

दो०-दौड़ कृष्ण वाके निकट,पकड़ लियो तिहँ हाथ ।
वहिर निकास्यो भीड़तें,दिय बिठाय रथ माथ।५२।

सो०-अरु भाखत तिहँ पाहिं, री मैया या भीड़ में।
काहे आई आहि, तब बोलत है डोकरी ॥ ३३ ॥

अरे नन्द के पूत कन्हाई ❀ तैंनें नइ पूजा जु लगाई।
ताहि देखवे में हूं आई ❀ लख्यो छाक यह मो हित लाई॥
याविधि सुधि लेवत सबही की ❀ रक्षा करत चलत सब जीकी।
इम पहुँचे गिरिराज समीपा ❀ जो गोवर्द्धन अतिशय दीपा॥
बड़ उत्सव के कारण ताहीं ❀ बड़ी सजावट ह्वै रहि आहीं।
चतुर ओर गिरिवरके अहहीं ❀ चौपर के बजार लग रहहीं॥
जहाँ बजाज सराफ पसारी ❀ परचूनी जौहरि मनिहारी।
दूध दही वारे हलवाई ❀ मेवा वारे विविध सुहाई॥
रँग भरिया सुनार भड़भूजा ❀ बिसायती छीपी रंगरेजा।
मोची कुंभनकार कसेरा ❀ पटवा दरजी और ठठेरा ॥४७॥

दो०-सबहिन निज निजकी अहैं, सुभग दुकान लगाइ।
ब्रजवासी वा सोहको, निरखत चल हरषाइ॥५३॥

सो०-ता अवसर ब्रजराय, सब दुकानवारेन को।
आज्ञा दइ चितलाय, सुनौ भूप बहुलाश्वजी ३४

जो कोई ब्रजवासी होई ❀ वा होवै परदेशी कोई।
सौदा लेवै रुचि अनुसारे ❀ बिना मोल देवौ तिन प्यारे॥
मेरे नाम दाम लिख लीजौ ❀ सहित सनेह वस्तु तिन दीजौ।
इम कहिकें आगे को जावें ❀ गिरिवरकी जय जय धुनि गावें॥

तहँ बाजीगर खेल मचावैं ❀ नाच जमूराको नचवावैं ।
कहँ प्रवीन नट बहु विधि नाचैं ❀ चढ़ु रन मणिअपि तिहँ थल राचैं॥
हास्यकार सब जनन हँसावें ❀ केउ रीछि बंदर नचवावें ।
इम बहु खेल दृष्टि पथ आवें ❀ श्रीव्रजराज देखते जावें ॥
रामश्याम निरखत हुलसावें ❀ परितोष तिन सबन दिवावें ।
इम व्रजवासी मोद बढ़ावें ❀ सबन रिझावें हँसत हँसावें ४८॥

दो०--स्वस्ती वाचन द्विजनसों, श्रीव्रजराज कराय ।
बासव पूजा वस्तु सब, दिय द्विजादि समुदाय ५४

सो०--आगे कर गोवृंद, श्रीगिरिराज परिक्रमा ।
करत भये सानंद, या विधि गावत जावहीं ३५॥

मानसि गंगा श्रीहरदेव ❀ गिरिवरकी परिक्रमा देव ।
कुंड कुंड चरणामृत सेव ❀ अपनों जन्म सफल कर लेव ॥
या विधि कहत चलत हरषाई ❀ सबहिन उर है मोद महाई ।
स्वर्ग अप्सरा नाचत ताहीं ❀ हे नृप गिरिवर उत्सव माहीं ॥
रम्भा आदि अप्सरा वृन्दा ❀ रह्यौ न गो, आई सानन्दा ।
अरु अनेक राजर्षि सिधाये ❀ शतशः विप्रर्षी मुद आये ॥
सहसन द्विज गन लाये साथा ❀ उत्सव दर्शन चह गिरि नाथा ।
उमा सहित शिव तहां पधारे ❀ महा मोद निज मन में धारे ॥
कह बसन्त चक्रेश्वर नामा ❀ मानसि गंगा पै सुख ठामा ।
अवलगहू राजत साक्षाता ❀ ध्यान मग्न रह सांवल गाता ॥

दो०-या विधि उत्साहित हृदय, लघु बड गोपी ग्वाल ॥
नन्दराय वृषरवि प्रभृति, कर जय धुनी रसाल ५५

हँसत हँसावत गीतहु गावत ❀ नाचत बहु विधि वाद्य बजावत।
देवत गिरि परिक्रमा सिधाये ❀ गिरिवर के सन्मुख सब आये ॥
रत्न शिलासों जटित सुहावै ❀ चहुँ दिशि स्वर्ण शिखर मनभावै।
अस गोवर्द्धन सोह निहारी ❀ भो आनन्द नन्द उर भारी ॥
कहन लगो हे लाल कन्हाई ❀ अब का करनों देहु बताई।
कह हरि श्रुति वित विप्र बुलावौ ❀ वेद विधी पूजन करवावौ ॥
स्वयं कृष्ण गिरि मख के माहीं ❀ फैंट बांध ठाड़े हैं ताहीं।
या थल असुक वस्त्र धर दीजे ❀ या थल असुक पदार्थ धरीजै ॥
इम भाखत इत उत फिर रहहीं ❀ ता अवसर छबि, को कवि कहहीं।
नन्दराय भूदेव बुलाये ❀ चतुर वेदपाठी तहँ आये ॥५०॥

दो०-तिन प्रति प्रीतीयुत कहत, नन्दराय व्रजराज।
गोवर्द्धन पूजन सविधि, करवावौ तुम आज ५६॥

सो०-विहँसे[1] विप्र कह ताहिं, अहो सुनौ व्रजराज जू।
यह नंइ पूजा[2] आहि, तुव लाला प्रकटाइ है ॥३६॥

ता कारन याकी विधि जोई ❀ तुव लालाही जानत होई।
तब बोले सबहिन प्रति काना ❀ मैंहि बताउँ, सुनौ दै काना ॥

१ विहँस को भाव मानौ कहत हैं कि तेरो लाला तौ है निर्भय, हमतो इन्द्र सं डरपै हैं हम पूजा करवावैं तौ इन्द्र हम पै रुष्ट होय हमारो अनिष्ट करेगौ, ता कारन तेरे लाला को लगाई नई पूजा को तेरौ लालाही करवावै।

२ नई पूजा को भाव-चिरकाल से तिरोधान भई को अब पुनर्प्रादुर्भाव भयो है।

प्रथमें होम करौ मन लाई ❀ सुनतहि वेदी द्विजन वनाई।
तापै नवग्रह आदिक थापे ❀ वेदी छवि कहि जाय न कापे ॥
विप्र स्वस्तिवाचन पढ़ रहहीं ❀ अपर सुनत बहु आनँद लहहीं।
साम वेद की ऋचा उचारें ❀ अपर अग्नि में आहुति डारें ॥
या विधि चतुर ओर ते आयो ❀ स्वाहा स्वाहा शब्द सुनायो।
तब श्रीकृष्ण प्रगत सुखदाई ❀ जिहँ किहँ विध यह भक्त भलाई॥
तिन व्रज जन विश्वास बढ़ावन ❀ श्रीगिरिराज महिम प्रगटावन।
आपुहि अपर रूप से ताहीं ❀ प्रकटै गिरि गोवर्द्धन माहीं॥५१॥

दो०-स्वयं राम व्रजराज अरु, मैया वृज जन वृन्द।
कर दर्शन मन हरन छवि, प्रणमत युत आनन्द॥

सो०-दरस करत समुदाय, जके थके से रह गये।
भाखत आपुस माय, हे मैया हो सुनहु तुम॥३७॥

हैं कन्दरा मनोहर भारी ❀ मुख समान हो लेहु निहारी।
तौहू ये गिरिराज कृपाला ❀ शशिसम मुख छवि धरत रसाला॥
अपरहु अचरज नैन निहारौ ❀ माय वृत्तही भुजा विचारौ।
ते गिरिराज युग्म भुज धारी ❀ आज सोह सहजहि मनहारी॥
द्युतिमंत रतन बाजू सोहैं ❀ उभय बाहु इम सब मन मोहैं।
यह अपि है आश्चर्य सुरंगा ❀ केवल ग्रीवा मात्रहि अंगा॥

१ कृष्ण २ गुफा ३ प्रकाशवारे।

हँसत हँसावत गीतहु गावत ❀ नाचत बहु विधि बाद्य बजावत।
देवत गिरि परिक्रमा सिधाये ❀ गिरिवर के सन्मुख सब आये ॥
रत्न शिलासों जटित सुहावै ❀ चहुँ दिशि स्वर्ण शिखर मनभावै।
अस गोवर्द्धन सोह निहारी ❀ भो आनन्द नन्द उर भारी ॥
कहन लगो हे लाल कन्हाई ❀ अब का करनों देहु बताई।
कह हरि श्रुति वित विप्र बुलावौ ❀ वेद विधी पूजन करवावौ ॥
स्वयं कृष्ण गिरि मख के माहीं ❀ फेंट बांध ठाड़े हैं ताहीं।
या थल अमुक वस्त्र धर दीजै ❀ या थल अमुक पदार्थ धरीजै ॥
इम भाखत इत उत फिर रहही ❀ ता अवसर छवि, को कवि कहही।
नन्दराय भूदेवं बुलाये ❀ चतुर वेदपाठी तहँ आये ॥५०॥

दो०-तिन प्रति प्रीतीयुत कहत, नन्दराय व्रजराज।
गोवर्द्धन पूजन सविधि, करवावौ तुम आज ५६॥

सो०-विहँस[1] विप्र कह ताहिं, अहो सुनौ व्रजराज जू।
यह नइ पूजा[2] आहि, तुव लाला प्रकटाइ है॥३६॥

ता कारन याकी विधि जोई ❀ तुव लालाही जानत होई।
तब बोले सबहिन प्रति काना ❀ मैंहि बताऊँ, सुनौ दै काना ॥

१ विहंस को भाव मानौ कहते हैं कि तेरो लाला तो है निर्भय, हमतो इन्द्र से डरपै हैं हम पूजा करवावैं तो इन्द्र हम पै रुष्ट होय हमारो अनिष्ट करेगो, ता कारन तेरे लाला को लगाइ नई पूजा को तेरो लालाही करवावै।

२ नई पूजा को भाव-चिरकाल से तिरोधान भई को अब पुनर्प्रादुर्भाव भयो है।

प्रथमैं होम करौ मन लाई ❀ सुनतहि वेदी द्विजन बनाई ।
तापै नवग्रह आदिक थापे ❀ वेदी छवि कहि जाय न कापे ॥
विप्र स्वस्तिवाचन पढ़ रहहीं ❀ अपर सुनत वहु आनँद लहहीं ।
साम वेद की ऋचा उचारें ❀ अपर अग्नि में आहुति डारें ॥
या विधि चतुर ओर ते आयो ❀ स्वाहा स्वाहा शब्द सुनायो ।
तव श्रीकृष्ण प्रगात सुखदाई ❀ जिहँ किहँ विध चह भक्त भलाई ॥
तिन ब्रज जन विश्वास बढ़ावन ❀ श्रीगिरिराज महिम प्रगटावन ।
आपुहि अपर रूप से ताहीं ❀ प्रकटै गिरि गोवर्द्धन माहीं ॥५१॥

दो०-स्वयं राम ब्रजराज अरु, मैया बृज जन वृन्द ।
कर दर्शन मन हरन छवि, प्रणमत युत आनन्द ॥

सो०-दरस करत समुदाय, जके थके से रह गये ।
भाखत आपुस माय, हे मैया हो सुनहु तुम ॥३७॥

ई कन्दरा मनोहर भारी ❀ मुख समान हो लेहु निहारी ।
गोहू ये गिरिराज कृपाला ❀ शशिसम मुख छवि धरत रसाला ॥
अपरहु अचरज नैन निहारो ❀ प्राय वृत्तहीं भुजा विचारो ।
। गिरिराज युग्म भुज धारी ❀ आज सोह सहजहि मनहारी ॥
द्युतिमंत रतन बाजू सोहैं ❀ उभय बाहु इम सब मन मोहैं ।
ह अपि है आश्चर्य सुरंगा ❀ केवल ग्रीवा मात्रहि अंगा ॥

१ कृष्ण २ गुफा ३ प्रकाशवारे ।

हँसत हँसावत गीतहु गावत ※ नाचत बहु विधि वाद्य बजावत।
देवत गिरि परिक्रमा सिधाये ※ गिरिवर के सन्मुख सब आये ॥
रत्न शिलासों जटित सुहावै ※ चहुँ दिशि स्वर्ण शिखर मनभावै।
अस गोवर्द्धन सोह निहारी ※ भो आनन्द नन्द उर भारी ॥
कहन लगो हे लाल कन्हाई ※ अब का करनों देहु बताई।
कह हरि श्रुति वित विप्र बुलावौ ※ वेद विधी पूजन करवावौ ॥
स्वयं कृष्ण गिरि मख के माहीं ※ फेंट बांध ठाड़े हैं ताहीं।
या थल असुक वस्त्र धर दीजै ※ या थल असुक पदार्थ धरीजै ॥
इम भाखत इत उत फिर रहहीं ※ ता अवसर छवि, को कवि कहहीं।
नन्दराय भूदेवं बुलाये ※ चतुर वेदपाठी तहँ आये ॥५०॥

दो०-तिन प्रति प्रीतीयुत कहत, नन्दराय व्रजराज।
गोवर्द्धन पूजन सविधि, करवावौ तुम आज ५६॥

सो०-विहँस[1] विप्र कह ताहिं, अहो सुनौ वृजराज जू।
यह नई[2] पूजा आहिं, तुव लाला प्रकटाइ है ॥३६॥

ता कारन याकी विधि जोई ※ तुव लालाही जानत होई।
तब बोले सबहिन प्रति काना ※ मैंहि बताऊँ, सुनौ दै काना ॥

१ विहँस को भाव मानौ कहते हैं कि तेरो लाला तौ है निर्भय, हमतो इन्द्र से डरपे हैं हम पूजा करवावैं तौ इन्द्र हम पै रुष्ट होय हमारो अनिष्ट करेगौ, ता कारन तेरे लाला को लगाई नई पूजा को तेरौ लालाही करवावै।

२ नई पूजा को भाव–चिरकाल से तिरोधान भई को अब पुनर्प्रादुर्भाव भयो है।

देखन ही में आवत जोई ❀ मानो इम निश्चय मन होई ।
तौहू अति मृदु मधुर सुअंगा ❀ धरा रहे अस उपज उमंगा ॥
श्रीगिरिराज आज छवि जैसी ❀ पूर्व न कबहू निरखी ऐसी ।
हे भैया हो अस हम जानें ❀ निरखप्रकट किम नाहिं मन मानें५२

दो०-या गोवर्द्धन को अहै, स्थावर[१] विग्रह[२] लक्ष ।
ताप कोइ न कोइ अन[३], जंगम देह प्रतक्ष॥ ५८ ॥

सो०-अस कह रह जन वृन्द, तावत विप्रन के प्रती ।
कहत अहैं नँदनन्द, या मन मोहन रूपको॥३८॥

हे विभो पूजौ युत प्रीती ❀ षोड़श उपचारन की रीती ।
हे पितु है सामिग्री जेती ❀ या थल आशु मँगावौ तेती ॥
श्याम वचन सुनकें व्रजराई ❀ सब सामिग्री तहाँ मँगाई ।
तब द्विजवृन्द मधुर स्वर द्वारा ❀ स्वस्ती वाचन कियो उचारा ॥
पुन श्रीकृष्ण हाथ पूजा को ❀ है संकल्प करायो पाको ।
पाद्य अर्घ्य आचमनहु ताहीं ❀ अहे करायो विधि युत वाहीं ॥
पाछे पञ्चामृतसों स्नाना ❀ अहे करायो प्रमुदित काना ।
ता अवसर शंखादिक बाजे ❀ बजन लगे घनसम धुनि गाजे ॥
विप्र वेद मन्त्रन पढ़ते हैं ❀ कृत्य तथाहि कृष्ण करते हैं ।
अपर सकल जे हैं व्रजवासी ❀ हरिसम पूजन करत हुलासी॥५३॥

१ अचर २ शरीर ३ दूसरो ।

दो०--पञ्चामृतसों स्नान जब, कृष्ण करायो आहि।
तब सब ब्रजवासी उठे, स्नान करावन चाहि ५९

सो०-पञ्चामृत सों स्नान, अहे करायो ब्रज जनन।
जय जय धुनि कर गान, मोद न हिये समावहीं३९

घृत दधि मधु पय प्रभृतिन धारा ❀ सरिता सम वह पञ्चप्रकारा।
पाछे मानसिगंगा वारी ❀ तासों नहवायो रुचिधारी॥
सहसधार यमुनाजलसेती ❀ नहवायो प्रमुदित चित चेती।
पुन केसर चन्दन अरु तुलसी ❀ लिय मिलाय जलमेंहिय हुलसी॥
ता जलसों नहवायो काना ❀ अरु नन्दादि करायो स्नाना।
वा अवसरकी सोह अनोखी ❀ देखन योग्य अहे अस चोखी॥
धाय आय कोऊ नहवावै ❀ कोउ भरे भे वट तहँ लावै।
कोउ खेल देखन अभिलासा ❀ दौरि दौरि आवत सहुलासा॥
कोउ काहु प्रति कह त्वर आवो ❀ गिरि पूजन करकें सुख पावो।
कोउ कहत भल जायो काना ❀ अस सुख दिय जिहँ समन हि आना॥

दो०--या प्रकार गिरिराजको, नहवावन पश्चात।
पोंछत अंगोछानते, अंग सकल हुलसात॥ ६०॥

सो०-पाछे सुन्दर एक, सिंहासन मणि स्फटिक को।
अपरहु जटित अनेक, बीच बीच बहु रंग मणि४०

अस मनहर सिंहासन लाये ❀ मखमल गद्दी तहाँ बिछाये।
बड़ो तूर्ल[1] सोहत पिठ ओरा ❀ आस पास द्वै तकिया जोरा॥

[1] तकिया

ह्यो विराजमान गिरिराजू ❀ छवि का कहौं अनोखी आजू ।
खेतेशिख लग वस्त्राभूषण ❀ धारण करवाये गतदूषण ॥
ा विधि पूजन करलिय जवही ❀ बोले बालते हरि तवही ।
हे पितु निज निज व्यञ्जन जेते ❀ अर्पन करौ सवहि मिल तेते ॥
तव दइ आज्ञा श्रीव्रजराजू ❀ भैया अव विलम्ब किहिं काजू ।
श्रीगिरिराज समीप सजावौ ❀ निज निज सामा क्रमंशः लावौ ॥
गाथा अन्नकूटकी भूपा ! ❀ प्रकटावत है प्रेम अनूपा ।
सुनौ श्रवण दे पावन प्रेमा ❀ इत उत हित दायक यह नेमा॥५५

दो०-व्रजवासी सव पूर्व दिशि, सामिग्री निज केरि ॥
पांच सेरसे शतंश मन, लगे लगावन ढेरि ॥६१॥

वाही थल वृषरवि राजाको ❀ अन्नकूट लाग्यो वड़ बाँको ।
पर्वतहूते करँ भर ऊचो ❀ सोहत अहै मनोहर सूचो ॥
पश्चिम दिशिमें व्रजराजाको ❀ अन्नकूट सोऊ वड़ बाँको ।
ठीक वीच गोवर्द्धन सोहै ❀ कञ्चनको जगमग मन मोहे ॥
वाके वीच वीच रूपेके ❀ शिखर सोह, वरनें अस केके ।
हीरा पन्ना माणिक जिनमें ❀ होय प्रकाशित चमकत तिनमें ॥
टौल शैलके जहँ तहँ रहहीं ❀ तस लघु अन्नकूट बहु अहहीं ।
वीसन कोसन लग चहुँओरा ❀ प्रतिथल लग रह ढेर अथोरा ॥
जो जो सामिग्री कहि काना ❀ सो सो वनवाई व्रजराना ।
पूरव पश्चिम दुहुँ दिशि माहीं ❀ वाकी सोह अकथ अति आहीं॥५६

१ श्रीकृष्ण २ नम्बर वार ३ सौ मो म के ४ हाथ ५ स्वच्छ ।

दो०-इत उतमें दुहुँ ओर को, सौ सौ मनके आहिं।
सौरभमय सुठ वासमति, तन्दुल ढेर सुहाहिं ॥६२॥

और रायसुनियाते आदी ❀ चाँवल विविध भांति वड़ स्वादी ॥
तेउ चमेली फूल समाना ❀ अहें खिलैमा चाँवल नाना ॥
मनहर ढेर लगे वहु भारी ❀ इनके चहूँ ओर रुचिकारी ।
नाँद सहस्रन खीरनकेरी ❀ अरु कूंडेहु भरे भे हेरी ॥
इनके आस पास छवि लहहीं ❀ घट सहस्र सिखरनके अहहीं ।
दूध मलाईवार अघौटा ❀ घरे कड़ाव मनोहर जोटा ॥
अहें कँगूरादार दही के ❀ हंडा चिने भये वड़ नीके ।
हैं पौंडान सरस वड़ गंडा ❀ दोऊ ओर जरीके झंडा ॥
श्याम स्वयंही वन गें पंडा ❀ रीति भांति सव सिखवत चंडा ।
एक ओर शशिकला पगैमा ❀ अरु मठरी हे घरी लगैमां ॥५७॥

दो०-अपर ओर खजला तथा, घेवर पापड़ आद ।
फेनी खुर्मा पसर रह, जिनको वड़ो सवाद ॥६३॥

ते सव अस चमकत हैं ताहीं ❀ द्रक शिलान पड़े जनु आहीं ।
अहें सकलपारे अरु ओला ❀ सुठ इलायची दानें गोला ॥
ये वा थल कंकर, पत्थरसे ❀ पड़े भये हैं जनु वहु अरसे ।
कहुँ कहुँ घट फूटे भे अहहीं ❀ दूध दही मट्ठा तहँ वहहीं ॥

१ अच्छी तरह से २.पास हो ।

जनु गिरिते झरना झर रहहीं ❀ या प्रकार की शोभा लहहीं ।
चाँवर श्वेत कोट जनु नाहीं ❀ युग्म रूप कैलासहि आहीं ॥
श्रीगोवर्द्धन दर्शन कारन ❀ किय कैलास युग्म वपु धारन ।
गोवर्द्धन उत्सवको चाह्यौ ❀ जब कैलासपती शिव आयौ ॥
तौ कैलास, कहौ नहिं आवे ? ❀ जनु या विधि अस्तित्व लखावै ।
एक ढेर सौ मनको अहही ❀ केसरिया चाँवरको रहही ॥५८॥

दो०–ता तट कढ़ी कढ़ाव बड़, दही बड़ा ता पाहिं ।
मोदक मोतीचूरके, बेसनहू के आहिं ॥ ६४ ॥

औरहु बहुविध मोदक लाये ❀ शिखर सदृश तिन ढेर लगाये ।
चतुर ओर सोहत कंगूरा ❀ गूंझा महूं छाक प्रपूरा ॥
पूरी अरु पापरी परी है ❀ मनहु पथरियासी सुधरी है ।
तली चनाकी दाल पकौरी ❀ है बूंदी निमकीन अथौरी ॥
मिश्री के ढेला बहु अहहीं ❀ ते कंकर से लुढ़कत रहहीं ।
बीच भातके खांड सनी है ❀ जनु बालू रेतसी जमी है ॥
जहँ तहँ शर्बत कढ़ी बहत है ❀ पीत धार सम सोह रहत है ।
जनु द्वौ ओर सुमेरू ठाढ़ो ❀ गिरि उत्सव विलोक है बाढ़ो ॥
मूंगनको जो ढेर लगायो ❀ ढेर हरे पन्नान सुहायो ।
धोवा मूंग उरद की दाल ❀ बनी खाईसी बड़ी विशाल ॥

दो०–है खिचरी की शिखर बड़, बड़ी मँगोरी आद ।
और कचरियाहू अहैं खावत बाढ़े स्वाद ॥ ६५ ॥

सो०—तिनपै भाजी साग, घास जड़ी बूटी सदृश ।
उपजी है अस लाग, इनके आगे सुनहु नृप ॥४१॥

सुहनभोगकौ शैल बनायो ❀ सहजै सबके मन को भायो ।
मालपूआ के तहँ कंगूरा ❀ गुलगुलान के गोला रूरा ॥
पिस्ता अरु बादाम चिरौंजी ❀ जनु कंकर पत्थर सम सौंजी ।
तिनमें ते झरना की नाईं ❀ घीकी धार बहत है ताईं ॥
पञ्च रसन सरिता या रीती ❀ बहि रहि है स्वादिष्ट सुप्रीती ।
कह बसन्त संक्षिप्त बखाना ❀ अन्नकूट विस्तार महाना ॥
सो अपि वृषरवि नन्दहि केरो ❀ अन्नकूट या थल में टेरो ।
अस जब सब सामिग्री धारी ❀ कृष्ण नन्द प्रति कह्यौ उचारी ॥
गेरौ तुलसीदल या माहीं ❀ घंट बजावौ मृदु धुनि याहीं ।
अरु आचमन सनेह करावौ ❀ हाथ जोर हिय ध्यान लगावौ ॥

दो०—गिरिवरकी बिनती करौ, ह्वै प्रतक्ष गिरिराय ।
अपनों नेह निहारकैं, जेमेंगे हरषाय ॥ ६६ ॥

सो०—नन्दराय ब्रजराज, कृष्ण कहे अनुसार किय ।
मैं प्रसन्न हूँ आज, श्रीगिरिराज कही तदा ॥४२॥

अपर देव सम हे ब्रजराई ❀ तुमसों भेद न राखत राई ।
यह जो अन्न धरा मो पाहीं ❀ तुम्हरे देखत पावौं याहीं ॥

१ सुन्दर ।

जनु गिरिते झरना झर रहहीं ❁ या प्रकार की शोभा लहहीं ।
चाँवर श्वेत कोट जनु नाहीं ❁ युग्म रूप कैलासहि आहीं ॥
श्रीगोवर्द्धन दर्शन कारन ❁ किय कैलास युग्म वपु धारन ।
गोवर्द्धन उत्सवको चाह्यौ ❁ जब कैलासपती शिव आयौ ॥
तौ कैलास, कहौ नहिं आवै ? ❁ जनु या विधि अस्तित्व लखावै ।
एक ढेर सौ मनको अहही ❁ केसरिया चाँवरको रहही ॥५८॥

दो०-ता तट कढ़ी कढ़ाव बड़, दही बड़ा ता पाहिं ।
मोदक मोतीचूरके, बेसनहू के आहिं ॥ ६४ ॥

औरहु बहुविध मोदक लाये ❁ शिखर सदृश तिन ढेर लगाये ।
चतुर ओर सोहत कंगूरा ❁ गूंझा मट्ठे छाक मपूरा ॥
पूरी अरु पापरी परी है ❁ मनहु पथरियासी सुधरी है ।
तली चनाकी दाल पकौरी ❁ है बूंदी निमकीन अथौरी ॥
मिश्री के डेला बहु अहहीं ❁ ते कंकर से लुढ़कत रहहीं ।
बीच भातके खांड सनी है ❁ जनु बालू रेतसी जमी है ॥
जहँ तहँ शर्बत कढ़ी बहत है ❁ पीत धार सम सोह रहत है ।
जनु द्वौ ओर सुमेरू ठाढ़ो ❁ गिरि उत्सव विलोक है बाढ़ो ॥
मूंगनको जो ढेर लगायो ❁ ढेर हरे पन्नान सुहायो ।
धोवा मूंग उरद की दाल ❁ बनी खाईसी बड़ी विशाल ॥

दो०-है खिचरी की शिखर बड़, बड़ी अँगोरी आद ।
और कचरियाहू अहैं खावत बाढ़े स्वाद ॥ ६५ ॥

सो०—तिनपे भाजी साग, घास जड़ी बूटी सदृश।
उपजी है अस लाग, इनके आगे सुनहु नृप ॥४१॥

मुहनभोगकौ शैल बनायो ❀ सहजै सबके मन को भायो।
मालपूआ के तहँ कंगूरा ❀ गुलगुलान के गोला रूरा[1] ॥
पिस्ता अरु बादाम चिरौंजी ❀ जनु कंकर पत्थर सम सौंजी।
तिनमें ते झरना की नाईं ❀ घीकी धार बहत है ताईं ॥
पञ्च रसन सरिता या रीती ❀ बहि रहि है स्वादिष्ट सुप्रीती।
कह बसन्त संक्षिप्त बखाना ❀ अन्नकूट विस्तार महाना ॥
सो अपि वृषरवि नन्दहि केरो ❀ अन्नकूट या थल में टेरो।
अस जब सब सामिग्री धारी ❀ कृष्ण नन्द प्रति कह्यौ उचारी ॥
गेरौ तुलसीदल या माहीं ❀ घंट बजावौ मृदु धुनि याहीं।
अरु आचमन सनेह करावौ ❀ हाथ जोर हिय ध्यान लगावौ ॥

दो०—गिरिवरकी विनती करौ, ह्वै प्रतच्छ गिरिराय।
अपनों नेह निहारकैं, जेमेंगे हरषाय ॥ ६६ ॥

सो०-नन्दराय ब्रजराज, कृष्ण कहे अनुसार किय।
मैं प्रसन्न हूँ आज, श्रीगिरिराज कही तदा ॥४२॥

अपर देव सम हे ब्रजराई ❀ तुमसों भेद न राखत राई।
यह जो अन्न धरा मो पाहीं ❀ तुम्हरे देखत पावौं याहीं ॥

१ सुन्दर।

जनु गिरिते झरना झर रहहीं ❀ या प्रकार की शोभा लहहीं ।
चाँवर खेत कोट जनु नाहीं ❀ युग्म रूप कैलासहि आहीं ॥
श्रीगोवर्द्धन दर्शन कारन ❀ किय कैलास युग्म वपु धारन ।
गोवर्द्धन उत्सवको चाह्यौ ❀ जब कैलासपती शिव आयो ॥
तौ कैलास, कहौ नहिं आवै ? ❀ जनु या विधि अस्तित्व लखावै ।
एक ढेर सौ मनको अहही ❀ केसरिया चाँवरको रहही ॥५८॥

दो०-ता तट कढ़ी कढ़ाव बड़, दही बड़ा ता पाहिं ।
मोदक मोतीचूरके, बेसनहू के आहिं ॥ ६४ ॥

औरहु बहुविध मोदक लाये ❀ शिखर सदृश तिन ढेर लगाये ।
चतुर ओर सोहत कंगूरा ❀ गूँझा मट्ठे छाक प्रपूरा ॥
पूरी अरु पापरी परी है ❀ मनहु पथरियासी सुघरी है ।
तली चनाकी दाल पकौरी ❀ है बूंदी निमकीन अथौरी ॥
मिश्री के ढेला बहु अहहीं ❀ ते कंकर से लुढ़कत रहहीं ।
बीच भातके खांड सनी है ❀ जनु बालू रेतसी जमी है ॥
जहँ तहँ शर्बत कढ़ी बहत है ❀ पीत धार सम सोह रहत है ।
जनु द्वौ ओर सुमेरू ठाढ़ो ❀ गिरि उत्सव विलोक है बाढ़ो ॥
मूँगनको जो ढेर लगायो ❀ ढेर हरे पन्नान सुहायो ।
धोवा मूँग उरद की दाल ❀ बनी खाईसी बड़ी विशाल ॥

दो०-है खिचरी की शिखर बड़, बड़ी अँगोरी आद ।
और कचरियाहू अहैं खावत बाढ़े स्वाद ॥ ६५ ॥

सो०—तिनपे भाजी साग, घास जड़ी बूटी सदृश ।
उपजी है अस लाग, इनके आगे सुनहु नृप ॥४१॥

सुहनभोगकौ शैल बनायो ❀ सहजै सबके मन को भायो ।
मालपूआ के तहँ कंगूरा ❀ गुलगुलान के गोला रूरा ॥
पिस्ता अरु बादाम चिरौंजी ❀ जनु कंकर पत्थर सम सौंजी ।
तिनमें ते झरना की नाईं ❀ घीकी धार बहत है ताईं ॥
पञ्च रसन सरिता या रीती ❀ बहि रहि है स्वादिष्ट सुप्रीती ।
कह बसन्त संक्षिप्त बखाना ❀ अन्नकूट विस्तार महाना ॥
सो अपि वृषरवि नन्दहि केरो ❀ अन्नकूट या थल में टेरो ।
अस जब सब सामिग्री धारी ❀ कृष्ण नन्द प्रति कह्यौ उचारी॥
गेरौ तुलसीदल या माहीं ❀ घंट बजावौ मृदु धुनि याहीं ।
अरु आचमन सनेह करावौ ❀ हाथ जोर हिय ध्यान लगावौ॥

दो०—गिरिवरकी विनती करौ, ह्वै प्रसन्न गिरिराय ।
अपनों नेह निहारकैं, जेमेंगे हरषाय ॥ ६६ ॥

सो०—नन्दराय ब्रजराज, कृष्ण कहे अनुसार किय ।
मैं प्रसन्न हूँ आज, श्रीगिरिराज कही तदा॥४२॥

अपर देव सम हे ब्रजराई ❀ तुमसों भेद न राखत राई ।
यह जो अन्न धरा मो पाहीं ❀ तुम्हरे देखत पावौं याहीं ॥

१ सुन्दर ।

इम कह देखत सकल समाजू ❀ भोजन करन लगे गिरिराजू ।
जहँ लग वस्तु धरी हैं ताहीं ❀ चहुँ दिशि निज कर फेंकत आहीं॥
इक कर मुखमें भर लिय भाता ❀ अहे उठायो दूसर हाथा ।
तासों दाल कढ़ी के हंडा ❀ ओज लेय मुख माहिं प्रचंडा ॥
तिन हँडान को कर कर रीते ❀ जहँ के तहँ धर दें युत प्रीते ।
लिय टोकरा उठाय उताला ❀ जामें मीठो भात रसाला ॥
मुख में भर लेवत है भाता ❀ सब टोकरा धरत थल ताँ ता ।
भर भर हंडा और तवेला ❀ पीवत अहे खीर अलवेला॥६१॥

दो०-पुन पुआनकी जेट भर, गुपचुप मुख धर लेय ।
तथा गंज फुलकानको, अपन वदन धर देय ॥६७॥

अब तो सहसन कर हैं जामें ❀ अस स्वरूप धर लिय अभिरामें।
लेत स्वाद सब व्यंजन केरे ❀ भरत भात मुख में अस हेरे ॥
पीवें घट सिखरन ऊपर सों ❀ है अचरज गोपन को उरसों ।
मोहन भोग थार गटकावें ❀ मुख मटकावें चख चटकावें ॥
जिम जिम श्रीगिरिराज कृपाला ❀ प्रमुदित भोजन कराहिं रसाला ।
तिम तिम मोटो बड़ो शरीरा ❀ होवत अरु बाढ़त है धीरा ॥
कबहु कचौरी की बहु झाला ❀ मुख भर ले गिरिराज दयाला ।
नाँद रायते की ऊपर सों ❀ ओज लेत है हर्षित उरसों ॥
कबहु ढेर के ढेर उठावे ❀ वेढ़ई पूरी मुख में पावे ।
संग पापड़न विविध अचारा ❀ साथ मुरब्बा पावत प्यारा॥६३॥

१ श्रीगिरिराज २ तिम तिसस्थानपै ३ प्रसन्नतासों ।

दो०--कबहुक लड्डू गटकही, पेड़ा संग उठाय।
फैनी खजला दूध मैं, जेंवत अहै मिलाय ॥ ६८ ॥

सो०-विन तोरैं मुख माहिं, गूंझा धर ले मुदित ह्वै।
मट्ठा छाकहु आहिं, पावत रुचिसों हँसत मुख॥४३॥

दही खीचरी कचरी पावें ❀ कबहु पापरी घीचरि खावैं।
भाजी साग मिठाई मेवा ❀ फलफलारि खावत गिरि देवा॥
चाटत हैं अचार ऊपर सों ❀ मठा मुरब्बा आदिक करसों।
स्वाद लेत सब व्यंजन न्यारे ❀ किन्तु लगत हैं सबही प्यारे॥
करत अहैं व्रजराजः बड़ाई ❀ धन्य धन्य हो वृषरविराई।
युगल चन्द्र राजत ब्रज माहीं ❀ शुद्ध सनेह रूप द्वौ आहीं॥
सकल गोप गोपीन बड़ाई ❀ कहँ लग कहौं धन्य हो भाई।
व्यंजन सरस अनेक बनाये ❀ सबही मो मनको बड़ भाये॥
या विधि ब्रजवासिन प्रभुताई ❀ करतहु खावत हैं हरषाई।
बीच बीच में मानसि गंगा ❀ राधाकुण्ड प्रेष्ठ घनरंगा॥६३॥

दो०-कुसुम सरोवर ते तथा, श्री यमुना जलकेर।
भर भर घट पीवत अहैं, उर अचरज द्वै हेर॥६९॥

सो०-आगेतें जब दोउ, पर्वत रीते ह्वै गये।
छोटे ढेर जु होउ, ब्रजवासिन के अपर तहँ॥४४॥

---

१ श्रीकृष्ण को प्राणप्रिय

दूर दूर पै धरे रहे जे ❀ हे नृप हमने प्रथम कहे ते ।
तिनिपैं चहुँ दिशि पैंकत हाथा ❀ परम प्रसन्न अहैं गिरिनाथा ॥
इतके ढेर हाथ पहुँचावैं ❀ कबहुक उनके ढेरहिं पावैं ।
इत उत पैंकन लागे हाथा ❀ तब जो भई सुनो सो गाथा ॥
डरप गये भोरे ब्रजवासी ❀ भाजत भैं हिय होय उदासी ।
छोरा छोरी गोद उठाई ❀ धीरज सब की गई चुराई ॥
जितमें मुख कीनों गिरिराई ❀ उतही तें भाजें डर पाई ।
कहुँ कोई छोरा वा छोरी ❀ आय न जाय झपेटा को री ॥
तब गिरिराज पुकारत भयऊ ❀ भाजो मत भाजो मत कह्यऊ ।
भोग लगावो भाजो नाहीं ❀ ज्यों ज्यों हाथ पसारत जाहीं ६४

दो०-कोउ गिरत कोउ परत है, को उठ भाजत आसु ।
कोउ बुलावत अपर को, शीघ्र आउ मो पास ७०

सो०-भाजत काहूकी तहाँ, पाग पिछौरी जोउ ।
गिरी परी है सुधि नहीं, भाजत भयजुत सोउ ४५

छोरा छोरिन को तज ताहीं ❀ घोड़ा घोड़िन त्याग वहांहीं ।
या प्रकार भाजत ब्रजवासी ❀ रञ्च न अनुसन्धान प्रकासी ॥
ता अवसर श्रीकृष्ण कृपाला ❀ ब्रजवासिन कह वचन रसाला ।
काहे डरौ काहि तुम भाजो ❀ निर्भय होय जलद सम गाजो ॥
तुम भोरे हो सब ब्रजवासी ❀ ताते डरपौ होय उदासी ।

१ जल्दी २ सुधि

डरको यहँ को कारण नाहीं ❀ प्रत्युत हर्ष हेतु या माहीं ॥
सुनौ कहत हौं गुप्त न राखौं ❀ सत्य सत्य ही तुम प्रति भाखौं ।
जे जन यहां सकें नाहिं आई ❀ अवस होय निज सदन रुकाई ॥
श्री गिरिराजहिं भोग धरावन ❀ तिन हिय अभिलासा है पावन ।
मनही मन गिरिराज पुकारें ❀ गिरिराजहु तिन वच उर धारें ।६५।

दो०—तिनतें लेवन भोगकों, दूर दूर निज हाथ ।
फैंकत हैं काहे डरौ, औरहु है इक गाथ ॥ ७२ ॥

जो सामिग्री यहां सजाई ❀ अहै अनेकन की मनभाई ।
पूर्ण प्रीतिसों सबन बनाई ❀ हृदय भाव ज्ञाता गिरिराई ॥
तासौं सामिग्री सबकेरी ❀ स्वीकृत करनी है अस हेरी ।
वह सामिग्री कोसन माहीं ❀ घिरी धरी है, देखहु ताहीं ॥
ता कारन गिरिराज कृपाला ❀ दूर दूर निज हाथ विशाला ।
फैंकत है, तुम डरपौ काहे ❀ तुम पै करन कृपाही चाहे ॥
जो दर्शन ब्रह्मादि न पावें ❀ शेष महेश सदा गुन गावें ।
सो दर्शन तुम सबको आजू ❀ अतिहि सुलभ दै दिय गिरिराजू॥
तुमही पै करुणा के कारन ❀ अस स्वरूप गिरिवर किय धारन ।
फिर तुम काहे डरपौ भाई ❀ आवौ आवौ धैर्य दृढ़ाई ॥६६॥

दो०—कृष्ण वचन सुन धैर्य युत, सुरि आये सह प्रीत ।
सौम्य रूपसों तिन सबन, भो दर्शन गई भीत ७३

१—भय ।

सो०-अब तिन उर डर नाहिं, जान लियो जो हेतु हो।
ते भाखत मन माहिं, एक हेतु प्रत्यक्ष है ॥ ४६ ॥

अपर हेतु को है या माहीं ❀ आपुहि प्रकटैगो थल याहीं।
वहि विशाल वपु से गिरिराजू ❀ हेतु सँवारन भक्तन काजू ॥
ता अवसर गिरिराज उदारा ❀ एक एक के भवन मँझारा।
भुजा पसार भोग ले लेवैं ❀ देनहार बरबूते देवैं ॥
आनो आनो बारम्बारा ❀ जासों श्रीगिरिराज पुकारा।
तासों बस्यो अहे तहँ गामा ❀ कह आनोर वाहि को नामा ॥
इक बुढ़िया वृषरवि गृह माहीं ❀ रही हती, वानें ता ठाहीं।
विनती करो भोग ले लीजे ❀ हे गिरिराज कृपा यह कीजे ॥
सुन विनती निज हाथ पसारा ❀ वाको भोग कियो स्वीकारा।
इम जो कोसन दूरी रह्यऊ ❀ तिनतें लेवत खावत भयऊ ६७॥

दो०-जिन जिन जिय आसा लगी, पूरैं हमरी आस।
सामिग्री आरोगहीं, गोवर्द्धन लख दास ॥ ७४ ॥

सो०-श्रीगिरिराज उदार, तिन तिन इच्छा पूर्ण की।
निज जनपै जो प्यार, दरसायो सबहिन प्रकट।४७।

इति श्रीव्रसन्त कृष्णायने चतुर्थ गिरिरिज द्वारे तृतीय सोपान समाप्त।

अहे छिपायो रूप विशाला ❀ प्रकटायो तहँ रूप रसाला।
ता अवसर की सोह महाना ❀ कहि न सकौं कछु करौं बखाना॥

अहै मुकुटकी झूमन प्यारी ❀ अलकनकी घूमन मनहारी ।
पलकनकी है चलन नियारी ❀ हलन कुंडलन की रुचिकारी ॥
वेसर की झूलन हियहारी ❀ भौंह मरोरन अचरज कारी ।
नेत्रन को जोरन जयकारी ❀ अहै कटाक्षन मोरन प्यारी ॥
होठन की फरकन मन भाई ❀ भुजदंडन सटकन जयदाई ।
हारन की रुरकन रुचिकारी ❀ कौस्तुभ मणिकी झलकन प्यारी॥
अहै थौंद की थलकन न्यारी ❀ चहूँ ओरकी मलकन प्यारी ।
कसन अंगदन की हियहारी ❀ अहै फसन पहुँचीकी न्यारी॥६८॥

दो०-गसन कड़ूला की सुभग, लसन मुद्रिका मोहि ॥
लटकन तुराकी मृदुल, पटकन करन विमोहि ७५

अँगुरिनकी चटकन बड़ प्यारी ❀ कटकन मनियानकी नियारी ।
सामिग्री की गटकन सोहै ❀ गोपिन मनकी अटकन मोहै ॥
है रुचिप्रद सखान की मटकन ❀ भक्तन की चरणन में भटकन ।
अस छवि देख देख जन वृन्दा ❀ नेह सिन्धु डूवत सानन्दा ॥
ता अवसर मोहन पितु पाहीं ❀ कहत वचन विहँसत मनमाहीं ।
हे बावा या विधि को भोजन ❀ पावत इन्द्रहु देख्यो किहँ जन ॥
नन्दराय बोले रे काना ❀ प्रापति भयो प्रमोद महाना ।
किन्तु इन्द्रको भय है भारी ❀ तौसौं कछू वैर उर धारी ॥
करै उपद्रव कारण येही ❀ धेनु चरावन को तू नेही ।
जाय अकेलो बनके माहीं ❀ धेनुचरावन खेलन ताहीं ॥ ६९ ॥

दो०-वात्सल्य रससों पूर्ण वच, सुनकें पितु प्रति भाख।
हे बावा नहिं चिन्त मुहिं, भल हों शत्रू लाख॥७६॥

मेरी बड़ी सहाय करै हैं ❀ पूर्ण कृपा गिरिराज धरै हैं ।
रहै सदा मेरेही संगा ❀ मोकों मानत है निज अंगा ॥
श्रीगिरिराज प्रभाव महाना ❀ दृष्टि मात्र सों कर जग हाना ।
कालहु इनते डरपत अहही ❀ जाको नष्ट करन यह चहही ॥
पलमें नास करै बिन यासा ❀ दृष्टिहि ते यह करै विनासा ।
इन्द्र बापुरो कहु किहँ लेखे ❀ सभय होय जब यह तिहँ देखे ॥
ताते मेरी चिन्त न कीजै ❀ नित आशीर्वाद मुहिं दीजै ।
कृष्ण वचन सुनकें ब्रजराई ❀ हिय विचार किय, सत्य लखाई॥
तब चित ते चिन्ता की हाना ❀ श्रीगिरिराज भरोसो माना ।
तिम औरहु ब्रजवासिन चीता ❀ भयो तोष गिरिराज प्रतीता७०॥

दो०-कहत यशोदा रोहिणी, श्रीगिरिराज उदार ।
देख देख निश्चय अहै, श्यामहि के उनहार ॥७७॥

सो०-कनुवा को सो रूप, बोलनहू मो लाल सम ।
श्याम समान अनूप, चलन उठन बैठनहु लख।४७।

कहत रोहिणी अरी यशोदा ❀ ब्रज देवता यही प्रद मोदा ।
याहिं भूल गे हम ब्रजवासी ❀ आज नये सिर प्रकट प्रकासी ॥
सो अपि श्यामहु नें प्रकटायो ❀ भलो भाग जो दर्शन पायो ।
कोउ कहत अखिलाण्डपती है ❀ या सम बली न, येहि गती है॥
तबही तो सुरपति की पूजा ❀ खावत है निर्भय, अस सूझा ।
साधारण सुरको नहिं कामा ❀ खाय शक्र¹ अर्चा ब्रजधामा ॥

१—सन्तोष।

तब किहँ अपर सखी अस कहाऊ ❀ कनुवाकी करुणा यह भयऊ ।
पुन का अपरा सखी बखाना ❀ काहि विचार करत हो आना ॥
यह तो स्वयं कानही अहही ❀ अणु मात्रहु अन्तर नहिं रहही ।
अपरा सखी कहत है ताहीं ❀ इन दोउन में अन्तर नाहीं ७१॥

दो०-हमको तौ ये युग्म छवि, दीखत एकहि रूप ।
सब प्रकार सों जांच किय, दोनों रूप अनूप॥७८॥

सो०-अपरा कह गिरिराय, श्यामहिको प्रतिबिम्ब है ।
देखौ चित्त लगाय, अंग उपांगन को सरुचि ॥४८॥

अपरा कहत जूंठ मत भाखे ❀ प्रतिबिम्बहु कहुँ भोजन चाखे[1] ।
यह तो आपुही है घनश्यामा ❀ द्वितिय देहसों प्रकट ललामा ॥
अपरा कहत अरी सुन लीजै ❀ मो वचनन कछु ध्यानहु कीजै ।
का सखि कहत उभय इक रूपा ❀ अङ्ग उपाङ्गहु दुहुन अनूपा ॥
का प्रतिबिम्बहि है अस कहही ❀ किन्तु बात कछु औराहि अहही ।
श्रीगिरिवर को भक्त कन्हाई ❀ ध्यान लगावत नित मनलाई ॥
जाको हृदय माहिं धर ध्याना ❀ होय रूप तिहँ ध्येय[2] समाना ।
कीट भृंगि के न्याय समाना ❀ ध्येय रूप है, कर जो ध्याना ॥
या कारन गिरिराज स्वरूपा ❀ अहै मनोहर श्याम अनूपा ।
एकहि से लागत हैं मानो ❀ ध्यानहि को फल प्रकट पछानो ॥

१—अर्थात् खावै । २—ध्यान योग्य जाको ध्यान कियो जाय ।

दो०--ध्येय रूप गिरिराज है, कान करत नित ध्यान।
तासों श्यामहु सोह अति, श्रीगिरिराज समान।७९।

ललिता कहत सुनो हे प्यारो ❀ जो तुव दृगन बसत बनवारी।
नन्द अंगुरियां गह चलही जो ❀ कहा खाय रह वहि पूजाको ?॥
अपरा सखी हँसत-मुख कहहीं ❀ देख अनोखो दृश्य जु अहही।
स्वयं आगुहा श्री गिरिराजू ❀ आपुहि पंडा बन गे आजू॥
स्वयं देवता स्वयं पुजारी ❀ नीक लखो द्वौ इक आकारी।
हे नृप यावत सब ब्रजवासी ❀ या विधि अचरज युत कर हासी॥
श्रीगिरिराजहु सुन सुन बाता ❀ विहँसत खावत हिय हरषाता।
यावत भोग धर्यो ब्रजवासी ❀ सबही खाय गयो सहुलासी॥
गोपी गोप कहत मनमाहीं ❀ भोग शेष कछु रह्यऊ नाहीं।
नेंकहु हमें मिल्यो न प्रसादू ❀ जो जानत कैसो हो स्वादू७३॥

दो०--यदि श्रीकृष्ण प्रसाद सम, होतो यामें स्वाद।
तो हम जानत येहु हैं, कृष्णहि नहिं कछु वाद॥८०॥

तब जिन हास्य प्रकृति ही रह्यऊ ❀ मधुमंगल आदिक सख कह्यऊ।
हे बाबा श्री श्री गिरिराजू ❀ कितेक दिनके भूखे आजू॥
जो सामिग्री कोसन माहीं ❀ खाय गये सब, नेंकहु नाहीं।
के ब्रजवासी हिय पछतावें ❀ अरु या विधि के वचन सुनावें॥
यदि हम जानत ऐसे भैया ❀ या विधि को गिरिराज खवैया।
कोसन धरी सामिग्री पावै ❀ नेंकहु उनमें ते न बचावै॥
तो यामेंते आधो लावत ❀ आधो घरही माहिं छिपावत।

जब या विधि मधुमंगल कह्यऊ ❀ सुन हँस परे, जेउ तहँ रह्यऊ ॥
कृष्ण सखन मनकी सब जानी ❀ हाथ जोर भाखी अस बानी ।
हे गिरिराज ! कृपा बड़ कीनी ❀ अस न इन्द्रकी कबहू चीनी॥७४

दो०-किन्तु सामिग्री सकल, भोजन कीनी आप ।
तासों कोपित होयकें, इन्द्र न वर्षे आप ॥ ८१ ॥

सो०-अरु गोवन के हेतु, तृण आवश्यक्ता अवस ।
सो आपुहि सुखसेतु, वर्षा करो जु भय मिटें ॥४९॥

इन ब्रजवासिन देहु प्रसादू ❀ जब प्रसाद को पावहिं स्वादू ।
तबही तुव प्रताप ये जानें ❀ ये प्रसादिया भक्त पछानें ॥
कृष्ण वचन सुन श्रीगिरिराई ❀ मुख प्रक्षालन किय हरषाई ।
करन लगे कुल्ला जब ताहीं ❀ तब तृण अन्न सकल थल माहीं ॥
एक संगही प्रकट्यो भूपा ! ❀ सकल खेत भर गये अनूपा ।
वन प्रदेश तृणासों भरगयऊ ❀ औरहु सुन जो अचरज भयऊ ॥
ता थल महाप्रसादहु केरे ❀ विविध गंज लग गे अस हेरे ।
जेते रीते पात्र जु रह्यऊ ❀ तिहँ खिन ते सबही भर गयऊ ॥
किन्तू तिनमें ते भुवि माहीं ❀ उफन उफन गिर परहीं ताहीं ।
अब तौ ब्रजवासिन आनन्दा ❀ को कह सक,भल हो कविचन्दा७५

दो०—सब निज उरमें कहत हैं, याको महत प्रताप ।
आगे कबहु सुन्यो नहीं,नहिं निरख्यो हे आप॥८१॥

१ पानी

सो०-कृष्ण वचन अनुसार, सत्यहि अमित प्रभाव है।
हम व्रजवासि गँवार, इन प्रताप नहिं लख सकै॥५०॥

ताते वृथा अपन उर माहीं ❀ करत रहे संशय बहु ताहीं।
के प्रत्यक्ष परस्पर भाखैं ❀ श्रीगिरिवरतैं क्षमाभिलाखैं॥
कह मधुमंगल तिनके पाहीं ❀ सुनौ वचन साँचे जे आहीं।
चमत्कार बिन कबहु न होई ❀ नमस्कार, कर शंक न कोई॥
ये इम आपुसमें बतरावैं ❀ कृष्ण अपन पितु को दिखरावैं।
यह गिरिवर कुल्लान प्रतापू ❀ हे पितु अब देख्यौ तुम आपू॥
शक्र प्रथम जब जल बरसावै ❀ चारमासमैं धान उपावै।
याके इच्छाहीते होई ❀ या प्रभाव को जानत कोई॥
सुने वचन प्रत्यक्ष निहारा ❀ व्रजवासिन मन विस्मय भारा।
ता अवसर मोहन मुदमूला ❀ श्रीगिरिवरको दिय ताम्बूला॥७६

दो०-जावित्री जाफल लवँग, अरु इलायची आद।
थार भरे आगे धरे, बढै पानको स्वाद॥ ८३॥

सो०-तब व्रजजन सानन्द, पूंगीफल[1] के ढेर बहु।
पानन डोली वृन्द, श्रीगिरिवर आगे धरीं॥५१॥

श्रीगिरिराजहु एकहि संगा ❀ चर्वण[2] करगे सहित उमंगा।
कृष्ण कहत आरती उतारो ❀ जय जय रव[3] निजवदन उचारो॥

१ सुपारी २ चाव गे ३ धुनि।

अस सुन निज उर करत विचारा ❀ करहिं आरती केहिं प्रकारा ।
सब अंगन आरति नहिं होई ❀ तब इक विप्र कह्यो, किय सोई ॥
इक बड़ ऊंचो चक्र बनायो ❀ सहस बतिन सों अहे सजायो ।
पंखा सम घुमायकें वाको ❀ किय आरती प्रेम जिन पाको ॥
तिहँ अवसर तहँ विविध प्रकारा ❀ बाजे बज रह घन अनुसारा ।
जय जय शब्द करत मिलसबही ❀ देव पुष्प बरसावत तबही ॥
गोपी गीत गात हुलसाई ❀ ता अवसर छवि कही न जाई ।
कहत कृष्ण अब भेंट धरीजे ❀ निज अभिलास मांगहू लीजे७७॥

दो०-तब व्रजराज सुवर्णकी, मुद्रा हैं जा माहिं ।
अस थैलीको खोलकर, कियो ढेर गिरिपाहिं॥८४॥

सो०-पुन वृषभानु आद, सबहिन किय तहँ भेंट बहु ।
देवत सबन प्रसाद, कृष्ण पुजारी हैं तहाँ ॥ ५२॥

मनमानतो उचित है जाको ❀ देत प्रसाद तथाही ताको ।
सकटन रथनमाहिं भर लेवें ❀ अरु छकरान माहिं धर देवें ॥
छबरा भाल हंडा भर भरकें ❀ निज निज भवन ओरते सरकें ।
धर निज सदन फेर तहँ आवें ❀ उत्सव निरखन मन ललचावें ॥
ता पाछे श्रीकृष्ण कन्हाई ❀ आज्ञा श्रीगिरिवरकी पाई ।
तब टोकरा भाल भरवाये ❀ ब्रजवासिन के कन्ध धराये ॥
जिहँ थल ठाढ़े डोला याना ❀ तिहँ थल आपन कीन पयाना ।
तहँ वृद्धा गोपिन के वृन्दा ❀ तिन्हें प्रसाद दियो सानन्दा ॥

तब ते गोपी मोहन पाहीं ✿ कहत अहें प्रमुदित मनमाहीं ।
ऐ नन्दलाल भेंट मो लीजे ✿ यशुमतिसुत मो वचन सुनीजे ॥

दो०-मो भेंटहु निज हाथ सों, लेहु प्रथम तत्काल ।
ऐ गुपाल ऐ श्यामघन, ऐ दामोदरलाल ॥ ८५ ॥

सो०-या विधि विविध प्रकार, पृथक पृथक ले नाम सब ।
चारों ओर पुकार, लेहु भेंट इम कहत हैं ॥ ५३ ॥

कोउ कहत लाला यहँ आवौ ✿ को कह लाला वा दिशि जावौ ।
तब तौ लेत लेत घबराये ✿ मोहननें निज सखा बुलाये ॥
कही सखनसों इन सबहीते ✿ लेहु भेंट तुम सावध चीते ।
आप और आगेको गयऊ ✿ परदा खोल खोल तिन कहाऊ ॥
आज लाजको काज कहा है ✿ यह गिरिराज बिराज रहा है ।
तुम्हें दरस देवन के काजू ✿ प्रकट भयो है श्रीगिरिराजू ॥
जो इच्छहु मांगहु ततकाला ✿ मैं हूं कहि दउँगो हे बाला ।
ता अवसर प्रसाद ले लेही ✿ भेंट कृष्ण हाथनमें देहीं ॥
के मोहर के देत रुपैया ✿ के बड़आहु देत मुद पैया ।
छल्ला मुदरी और अंगूठी ✿ के देवत हैं मुदित अनूठी॥७९॥

दो०-तिनें कृष्ण निज हाथ में, पहरत विहँसत भाख ।
मो हाथन नहिं आवहीं, तो किम गिरिवर आख[1]॥८६॥

[1] यहाँ तौ श्रीगिरिराज के हाथन में कैसे आवेंगी

सो०-तब वे मोहन पाहिं, कह हे लाला पूर्व हम ।
सत्य जानतीं नाहिं, इतो वड़ो है देवता ॥ ५४ ॥

कोइ कहत मोहनके पाहीं ❀ आई भूल भेंट घर माहीं ।
मेरी भेंट चढ़ाय कन्हाई ❀ तुम्हें देहुँ तुम्हरे घर आई ॥
कोइ कहे तुम देवौ मोहीं ❀ देहुँ दिवाय सासतें तोहीं ।
इम अनेक विधि भाखत अहहीं ❀ कृष्णहु मन रक्षा कर रहही ॥
को कह यह वर मोहिं दिवावौ ❀ हे लाला कहुँ भूल न जावौ ।
प्राणप्रेष्ठ लह कष्ट न कोई ❀ कवहु वाल बाँकौ नहिं होई ॥
जो जो मनकी हैं अभिलासा ❀ आशु पूर्ण हों, यहि दृढ़ आसा ।
इम वहु विधि माँगें वरदाना ❀ किन्तु कृष्णविन आस न आना ॥
इनको समाधान कर काना ❀ या विधि उतमें जाय वखाना ।
मैं हीं हूं गिरिराज पुजारी ❀ जोउ मनोरथ हिये मँझारी ॥ ८० ॥

दो०-सो मोपै कहु आप सव, मैं कहि दउँ गिरिपाहिं ।
तव गोपी वोलीं लखा, हम यहि माँगत आहिं ८७

हमरो प्रेम कृष्णके संगा ❀ वन्यो रहे नित अचल अभंगा ।
समाधान तहँ सबकौ कीनों ❀ शुद्ध भाव सबहिन चित चीनों ॥
भेंट धरी श्रीगिरिवर पाहीं ❀ मुहर रुपैयादिक जे आहीं ।
ता अवसर बहुला गौ प्यारी ❀ ताहिं मँगाय कृष्ण वनवारी ॥
ताके चारों खुर जे रह्यऊ ❀ गंगाजलसों धोवत भयऊ ।
पुन अहिफननें पूजा कीनी ❀ पूजा विधी पुरातन चीनी ॥

शिरपै सुन्दर तिलक लगायो ❀ वस्त्राभूषणहू पहिरायौ ।
फूलन माल गरे पहिराई ❀ पुन कराय भोजन मनभाई ॥
किय प्रदक्षिणा मुद मन माहीं ❀ हाथ जोर ठाढ़े भै ताहीं ।
तब गिरिराज कह्यौ व्रजराई ❀ तुमपै हौं मैं मुदित महाई ॥८१॥

दो०-मो सेवा पूजा करी, भक्ति भावतैं आप ।
वाको यह प्रत्यक्ष फल, देख्यो मो परताप ॥८८॥

तुव लाला यह अहै कन्हाई ❀ मैंने याको दई बड़ाई ।
शास्त्र विधी चर्चाहु कराई ❀ मैं हीं या उर रह्यौ समाई ॥
नहिं तौ शास्त्रनको कह जानै ❀ है बालक यह खेल पछानै ।
यह सब मो प्रताप पहिचानौ ❀ मोहिं नित्य या संग प्रमानौ ॥
तुमपै कछुहु कष्ट यदि आवै ❀ तौ निज जिय रंच न अकुलावै ।
शीघ्र याहि ते तुम कहि दीजो ❀ दूर होइँ दुख: शंक न कीजो ॥
यासों अहै मित्रता ठानी ❀ ता कारन एकहि अस मानी ।
मोमें इनमें भेद न कीजे ❀ मोरे वचन सत्य लख लीजै ॥
सदा सुखी रह यह तुव लाला ❀ मोद बढ़ावै मिल गोपाला ।
अरु जो तुव हिय हो अभिलासा ❀ मांगो वहि वर तुम मो पासा ॥

दो०-तव भाखत व्रजराज तहँ, श्रीगिरिवर के पाहिं ।
आप कृपा सबकछु अहै, एक आस हिय माहि ॥८९॥

ये है मो लाला सुख साजू ❀ इन रक्षा करियो गिरिराजू ।
कहत यशोदा वात्सल मग्ना ❀ एक कृष्णही में जिहँ लग्ना ॥

हे गिरिराज कन्हैया केरी ❀ भूख बढ़ाय देउ बहुतेरी।
कारण यह कछु खावत नाहीं ❀ यासौं कृष तनु रहत सदाहीं॥
कह रोहिणी सुनौं गिरिराजू ❀ सबके सिद्ध करत हो काजू।
हे महराज अपन मुख द्वारा ❀ कृष्ण मित्र मो, आप उचारा॥
तुम्हरो तो है सुन्दर देहा ❀ अरु पुष्टहु है निरखत एहा।
याकौ तन सूखौ सो रहही ❀ नहिं जानत को कारण अहही॥
बहु प्रयास कर कर हम हारे ❀ अबतो हैं हम शरण तिहारे।
यदि यासौं यारी तुम राखौ ❀ याकों निज समान अभिलाखौ॥

दो०—नेंकहु अच्छी कीजिये, या कनुवाकी काय।
तब इक अपर सखी कहै, मन्द मन्द मुसकाय॥९०

कहुँ अपनो सो मत कर दीजौ ❀ याकौ ध्यान हियेमें कीजौ।
इतनौ भोग नित्य जो खावै ❀ तो फिर कहिये कौन बनावै॥
यह कनुवा तो मैया हाथा ❀ खावत अहै प्रकट यह गाथा।
अपर हाथकी रुचेहु[1] नाहीं ❀ तब इक और सखी कह ताहीं॥
हम चाहत चित जो ये खावैं ❀ नित्य बनाय बनाय खवावैं।
श्री वृषभानु कहत गिरिराजू ❀ पूर्ण करत हो सबके काजू॥
मो उर अहै एकही साधा ❀ राधाको कछु होय न बाधा।
कह्यौ तबहि तहँ कीरति रानी ❀ हे महराज सुनौ मो बानी॥
मो लाली नित कुसम सरोवर ❀ फूल लैन जावै सुमनोहर।
अरु नहायवे मानस गंगा ❀ जावत है हियं धार उमंगा॥८४॥

१ इच्छा

दो०- मानै नहिं नेकहू अपी, कहि कहि हारी चीत।
अरु या थल श्रीकुंडकी, कुञ्जन खेलै नीत॥६१॥

सो०-आप कृपाकी खान, नैंक आप रच्छा करैं।
या विधि वच सुन कान, ललितादिक विहँसन लगीं॥

इम सब व्रजवासी वर याचैं ❀ राधाकृष्ण माहिं जे राचैं।
तासौं उनहीको सुख माँगें ❀ निजसुखमें ते नाहिं अनुरागें॥
कारण तत्सुख सुखी पछानौ ❀ याते इन सम आन न मानौ।
अब श्रीकृष्ण कहत गिरिराजू ❀ तोहिं पुजायौ है मैं आजू॥
मोहिं कहा देवैगो भाई ❀ श्रीगिरिराज कह्यौ हरपाई।
जो माँगै सोई तुहिं देवौं ❀ कहत कृष्ण मैं तौ यह लेवौं॥
कोटिन गौ नित रहिं मो आगे ❀ कोटिन गौ रहिं पश्चिम भागे।
कोटिन गौ दुहुं दिश रहिं नीता ❀ गौवन मध्य वसौं युत प्रीता॥
अरु यावत मेरे व्रजवासी ❀ मो मैया मो हित सुखरासी।
वलदाऊ भैय्या है मेरौ ❀ मो गैया कोटिन हैं हेरौ॥८५॥

दो०-अरु मो वावा ये सकल, नितही रह सानन्द।
मो रुचिकर वर येहि है, मेटौ इन सब द्वन्द॥६२॥

सो०-तवही श्रीगिरिराज कह, तथाअस्तु ऐसेहि हो।
सुनो सकल तुम आज, निज इच्छित वर दिय तुम्हैं॥

इति श्रीकृष्णायनें चतुर्थ गिरिराज द्वारे चतुर्थ सोपान समाप्त।

या विधि ब्रजवासिन वर पाये ❀ सबही निज निज हिय हरषाये ।
सब ब्रजवासिन मिल घनश्यामा ❀ श्रीगिरिवरको कियो प्रणामा ॥
अरु कर जोर कह्यो गिरि पाहीं ❀ कहँ पहुचावें भेंट जु आहीं ।
यहां प्रसाद शेष बहु अहही ❀ याको कहा करैं, गिरि कहही ॥
बाँट देहु इन विप्रन सबही ❀ जेती भेंट अहै सो अबही ।
है प्रसाद सो सबहिन दीजै ❀ कोउ न रीतो रहि अस कीजै ॥
तुम सब रहो प्रसन्न सदाई ❀ तुम्हरे कष्ट नष्ट ह्वै जाई ।
यह उत्सव प्रतिवर्ष सनेहा ❀ करते रहौ, वचन मो एहा ॥
अस कह श्रीगिरिराज कृपाला ❀ अहे छिपायो रूप रसाला ।
गिरिमें श्रीगिरिराज समायो ❀ गोवर्द्धनको यश जग छायो ॥८६

दो०-कृष्ण कहत है पितु सुनौ, प्रथमें द्विज बैठाय ॥
भोजन इनें कराइये, पुन दूजे समुदाय ॥ ६३ ॥

सो०-ता अवसरके माहिं, पंगत बैठी मुदित मन ।
पनवारे दे ताहिं, छप्पन व्यञ्जन परसहीं ॥५७॥

ब्रजवासी ऋषि मुनि हरषाई ❀ वेद धुनी कर जेंवत भाई ।
राम श्याम तिन मुदित जिमावें ❀ मोदक खीर आदि ते पावें ॥
राम कृष्णकी विजय मनावें ❀ गोपी गद गद मंगल गावें ।
मोहनकी आज्ञाको पाई ❀ गौवन गोप खवावत जाई ॥
गौ नहिं खावत तब हरि पाहीं ❀ कहत गोप, गौ खावत नाहीं ।
यामें हाथ लगाय कन्हाई ❀ तब गौ खावेंगी हरषाई ॥

दो०- मानैं नहिं नेकहू अपी, कहि कहि हारी चीत।
अरु या थल श्रीकुंडकी, कुञ्जन खेलै नीत॥६१॥

सो०-आप कृपाकी खान, नेंक आप रक्षा करें।
या विधि वच सुन कान, ललितादिक विहँसन लगीं॥

इम सब व्रजवासी वर याचैं ❀ राधाकृष्ण माहिं जे राचैं।
तासौं उनहीको सुख माँगें ❀ निजसुखमें ते नाहिं अनुरागें॥
कारण तत्सुख सुखी पछानौ ❀ याते इन सम आन न मानौ।
अब श्रीकृष्ण कहत गिरिराजू ❀ तोहिं पुजायौ है में आजू॥
मोहिं कहा देवेगो भाई ❀ श्रीगिरिराज कह्यौ हरषाई।
जो मांगै सोई तुहिं देवौं ❀ कहत कृष्ण मैं तौ यह लेवौं॥
कोटिन गौ नित रहिं मो आगे ❀ कोटिन गौ रहिं पश्चिम भागे।
कोटिन गौ दुहुं दिश रहिं नीता ❀ गौवन मध्य बसौं युत प्रीता॥
अरु यावत मेरे व्रजवासी ❀ मो मैया मो हित सुखरासी।
बलदाऊ भैय्या है मेरौ ❀ मो गैया कोटिन हैं हेरौ॥८५॥

दो०-अरु मो बाबा ये सकल, नितही रह सानन्द।
मो रुचिकर वर येहि है, मेटौ इन सब द्वन्द॥६२॥

सो०-तबही श्रीगिरिराज कह, तथाअस्तु ऐसेहि हो।
सुनौ सकल तुम आज, निज इच्छित वर दिय तुम्हें॥

इति श्रीकृष्णायनें चतुर्थ गिरिराज द्वारे चतुर्थ सोपान समाप्त।

या विधि ब्रजवासिन वर पाये ❀ सवही निज निज हिय हरषाये ।
सब ब्रजवासिन मिल घनश्यामा ❀ श्रीगिरिवरको कियो प्रणामा ॥
अरु कर जोर कह्यौ गिरि पाहीं ❀ कहँ पहुचावैं भेंट जु आहीं ।
यहां प्रसाद शेष बहु अहही ❀ याको कहा करैं, गिरि कहही ॥
बाँट देहु इन विप्रन सबही ❀ जेती भेंट अहै सो अवही ।
है प्रसाद सो सबहिन दीजै ❀ कोउ न रीतो रहि अस कीजै ॥
तुम सब रहौ प्रसन्न सदाई ❀ तुम्हरे कष्ट नष्ट ह्वै जाई ।
यह उत्सव प्रतिवर्ष सनेहा ❀ करते रहौ, वचन मो एहा ॥
अस कह श्रीगिरिराज कृपाला ❀ अहै छिपायो रूप रसाला ।
गिरिमें श्रीगिरिराज समायो ❀ गोवर्द्धनको यश जग छायो॥८६

दो०–कृष्ण कहत है पितु सुनौ, प्रथमैं द्विज वैठाय ॥
भोजन इनैं कराइये, पुन दूजे समुदाय ॥ ८३ ॥

सो०–ता अवसरके माहिं, पंगत वैठी मुदित मन ।
पनवारे दे ताहिं, छप्पन व्यञ्जन परसहीं ॥५७॥

ब्रजवासी ऋषि मुनि हरषाई ❀ वेद धुनी कर जेंवत भाई ।
राम श्याम तिन मुदित जिमावैं ❀ मोदक खीर आदि ते पावैं ॥
राम कृष्णकी विजय मनावैं ❀ गोपी गद गद मंगल गावैं ।
मोहनकी आज्ञाको पाई ❀ गौवन गोप खवावत जाई ॥
गौ नहिं खावत तब हरि पाहीं ❀ कहत गोप, गौ खावत नाहीं ।
यामैं हाथ लगाय कन्हाई ❀ तव गौ खावैंगी हरषाई ॥

हाथ छुवाय गोप पुन ताहीं ❀ गै जब, गौ खावत मुद आहीं ।
इम जे जीव मात्र तहँ रह्यऊ ❀ भोजन तिन सबहिनको दयऊ ॥
यहँ कुल्ला भूसुरन कराये ❀ सुभग सुवासित पान खवाये ।
यथा योग्य दक्षिणाहु दीनी ❀ बढ़ीं सबन हिय प्रीति नवीनी॥८७

दो०-अपन पासतें भेंट दी, आचार्यनको ताहिं ।
विप्रन ब्रजवासी जनन, बहु आदर किय आहिं।९४

निजके उपजीवी जे कह्यऊ ❀ राय सुभाट जगादिक रह्यऊ ।
तिनैं बुलाय बुलाय बधाई ❀ देत अहैं वे लेत मुदाई ॥
कह सुनि अस दाता बहु थोरे ❀ दें बुलाय मँगतन निज ओरे ।
यथायोग्य इम कर सन्माना ❀ गावत गीत बजाय निशाना ॥
हँसत हँसावत उद्यत भयऊ ❀ करन हेतु परिक्रमा जु चह्यऊ ।
तब ब्रजवासी कह ब्रजराजू ❀ अबहु प्रसाद बच्यो है आजू ॥
याकौ कहा करें सो भाखौ ❀ जहाँ चहौ ताहीं तुम राखौ ।
ग्वाल मंडली युत तब काना ❀ ठाड़े भै अस वचन बखाना ॥
यह जु प्रसाद शेष अब लूटो ❀ बिन विलम्ब यापै सब टूटो ।
ग्वाल मंडली सुन ततकाला ❀ लूटन लगी सुनौ भूपाला ॥८८

दो०-कोइ कढ़ी कोई तहां, खोवा दूध मलाइ ।
कोइ कचौरी हाथ ले, भाजत मृदु मुसुकाइ ॥९५॥

कोइ बड़ा बेढ़ईं अरु मठा ❀ लै भाजत अरु करहीं ठट्ठा ।
दालभातके गप्पा मारें ❀ को सिखरन चपटा मुख डारें ॥

भाजत कोई रपटें ताहीं ❀ अपर निरख विहँसत हैं वाहीं ।
खीर कढ़ाव माहिं इक जाई ❀ अहै गढ़ायो मुख हरषाई ॥
तहां दूसरेने पिठ वाकी ❀ अहै जमायो घूंसा ताकी ।
और कहत यह खीर अनूंठी ❀ सारे तुह्मने कर दई जूंठी ॥
तू भी आ जा अस तिहँ कह्यऊ ❀ तव दोऊ मिल पीवत भयऊ ।
कोई मोहन भोगहिं खावे ❀ वदन गाढ़कें चुटकि बजावै ॥
कोई टांग पकरकें वाकौ ❀ जाय घसीट दूर लग पाकौ ।
कोई भैर दुपट्टामाहीं ❀ पूरिन गंज निरख कहुँ नाहीं॥८९

दो०-कोई मालपूआनके, गंजहिं दावत काँख ।
कोइ कचौरिनसों भरत, झोरी, इत उत झाँख।९६।

कोई लडुआ गडुआ माहीं ❀ भरत अहै बहु विहँसत ताहीं ।
कोई पोट बाँध घर जावै ❀ तवहि कृष्ण तिहँ वचन सुनावै ॥
घर ले जावन ठहरी नाहीं ❀ लूट लेहु भल या थल माहीं ।
अस कह वाकी गठरी लीनी ❀ पाग पिछोरि गांठकी छीनी ॥
कोई शिरपै तस्मै केरो ❀ धर हंडा भाज्यो किहँ हेरो ।
वानें एक लठ दै मारी ❀ हंड़ा फूट गयो तिहँ वारी ॥
तासों खीर गिरी तिहँ तनमें ❀ वसन वदन मूँछन आँखनमें ।
नाक कान आदिक भर गयऊ ❀ ता अवसर अस भासत रह्यऊ ॥
मानौ दसौं द्वारनें खाई ❀ देख देख सब हँसत ठठाई ।
भई छीन झपटी बहु ताही ❀ काहूको कछु सुधि रहि नाहीं॥९०

दो०-पाग पिछौरा काहुके, धोती दुपटा चीर।
वाके वानें छीन कें, पहरे अपन शरीर ॥ ६७ ॥

सो०-वानैं वाके छीन, निज तनपै पहरे अहैं।
आपुसमैं असकीन, प्रेम लड़ाई भइ तहां ॥ ५८ ॥

लड्डू अरु पेड़नकी ताहीं ❀ फेंकाफेंक भईं अस आहीं।
मनहुँ फलनकी वर्षा होई ❀ देखनहार चित्र सम जोई ॥
कृष्ण कृपा काहूको तेऊ ❀ लागत नहिं यह अचरज भेऊ।
या विधि ग्वाल मंडली ताहीं ❀ हाँसी करत परस्पर माहीं ॥
ता अवसर मनमोहन काना ❀ सहजहि ब्रजवासिनके प्राना।
अहै बजाई वंशी प्यारी ❀ सबहिन चित्त चुरावनहारी ॥
सुनत शब्द सबही उठ धाये ❀ आशु श्यामसुन्दर तट आये।
दइ आज्ञा तब तिनको ताहीं ❀ जल पीकर आवौ पुन याहीं ॥
मानसिगंगापै सब गयऊ ❀ हाथ पाँव मुख धोवत भयऊ।
कर जलपान मुदित चित जेऊ ❀ पहर वस्त्र आभूषण तेऊ ॥ ९१ ॥

दो०- ठाढ़े भै श्रीकृष्ण ढिंग, ता अवसरके माहिं।
सुरगण भिक्षुक भेषसों, आये आतुर ताहिं ॥६८॥

सो०-तहँ उच्छिष्ट प्रसाद, पावन लगे प्रमोदसों।
सहरावत हैं स्वाद, धन्य धन्य निजकों कहैं ॥५९॥

काहि न प्रकट रूप सुर आये ❀ छिपे वेषही माहिं सिधाये।
अस शंका उपजे उर माहीं ❀ तो ताको उत्तर यह आहीं ॥

देवन निज हिय कियो विचारा ❀ प्रकट जाइँ यदि घोष मँझारा ।
तौ हम वासव अनुचर अहहीं ❀ वाके हिये शोक बड़ रहहीं ॥
ता बिन हम किम व्रजमें जावें ❀ ताहित गुप्तहि तहाँ सिधावें ।
अपर हेतु शचिपति है भूखौ ❀ क्षुधित सहजहि होवत रूखौ ॥
तौ हमकों किम आज्ञा देई ❀ ताहित छिपकें व्रज आयेई ।
तृतिय हेतु जावें व्रज माहीं ❀ शक्र जान लेवे यदि ताहीं ॥
तौ निकास देवैगो सोई ❀ चौथो हेतु सुरन मन जोई ।
सुनौ कहत हों मैं थल याहीं ❀ प्रकट रूप जावें व्रजमाहीं ॥९२॥

दो०-तौ रिपुपत्ती[१] मानकें, पिटवावैगो कान ।
बड़ी कठिन पर जायगी, रंच न चलै सयान॥८९॥

सो०-ताहित गुप्त स्वरूप,किय पयान व्रजमाहिं तिन।
पायो मोद अनूप, जूंठ खाय व्रज जननकी ॥ ९० ॥

चले सकल मिल श्रीघनश्यामा ❀ करत अहैं परिक्रमा ललामा ।
या प्रकार श्रीकृष्ण कृपाला ❀ कर प्रदक्षिणा मोद विशाला ॥
व्रजकी ओर किशोर पधारे ❀ उत्सव मोद विलोक अपारे ।
ऋषि मुनि गन्धर्व विस्मित भयऊ ❀ रविरथ जहँ को तहँथित रह्यऊ ॥
या विधि मोद मगन व्रजवासी ❀ जय२ धुनि जिन वदन प्रकासी।
सब निज निज निकेतमें गयऊ ❀ कृष्णचरित सुमरत सुख लह्यऊ॥

१—इन्द्रकी पक्ष करनेवाले ।

हे भूपति बहुलाश्व उदारा ❀ कृष्ण चरितको रहस अपारा ।
जानत सोई स्वयं जनावे ❀ बड़ विद्वानहु रंच न पावे ॥
ताते अगम सुगम हरिलीला ❀ परिपूरणतम करुणा शीला ।
प्राकृत जीव सदृश दरसाई ❀ तदनुसार निज चरित लखाई॥१३

दो०—चहौ तत्त्व अरु स्वादको, गहौ चरण घनश्याम ।
रहौ रसिकजन संगमें, लहौ रहस्य ललाम ॥१००॥

सो०—वसन्त आन न चाह, श्यामाश्याम बसौ हिये ।
इकरस होय निबाह, गुन गावौं गद गद सदा ॥६१॥

॥ इति श्रीकृष्णायने चतुर्थ गिरिराज द्वारे पञ्चम सोपान संपन्न ॥
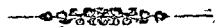
कार्तिक शुक्ला पड़वा माहीं ❀ कर पूजन गिरिवरको ताहीं ।
कृष्ण[१] गोप गोपिन ले संगा ❀ या विधि ब्रज आये स उमंगा ॥
युत प्रमोद ता रजनी माहीं ❀ कियो शयन ब्रजवासिन ताहीं ।
प्रातः यम द्वितिया दिन भयऊ ❀ शास्त्र प्रसिद्ध सुखदही कह्यऊ ॥
ता दिन रामश्याम मन भायो ❀ बहिन भवनतें न्योतो आयो ।
कार्तिक सुदी दूज दिन जोई ❀ बहिन हाथ भोजन कर कोई ॥
सो यमलोक माहिं नहिं जावै ❀ कार्तिक मास महातम गावै ।
यमद्वितियाको उत्सव याहीं ❀ पूर्ण भयो श्रीब्रजके माहीं ॥

१—श्रीकृष्ण ।

कह मुनि हे बहुलाश्व नृपाला ❀ कियमख गिरिको यहँ नँदलाला।
सुन्यो जयन्त जनकनें जवहीं ❀ महाकुपित भो चितमें तवहीं॥९४

दो०-अहो कृष्णके कहनतें, ब्रजवासी समुदाय।
मो पूजाको तज दियो, पूज्या है गिरिराय॥१०१॥

सो०-मेरो वड़ अपराध, किय नन्दादिक ब्रजजनन।
अब मैं करौं उपाध, देखों को राखत इन्हें॥ ६२॥

अस कोपित सोचत उरमाहीं ❀ ता अवसर तिहँ रूप जु आहीं।
महा भयंकर, कहा बखानौं ❀ भ्रकुटी ऊपर चढ़ी पछानौ॥
क्रोधानलकी मुखतें ज्वाला ❀ निकस रही हैं बड़ी कराला।
लाल लाल हैं जाके नैना ❀ निकसत नाहिं वदनतें वैना॥
वेर वेर अधरन फरकावे ❀ रदननसों काटत जनु खावे।
कारन क्रोध भालके माहीं ❀ बेल तीन पर गे हैं ताहीं॥
अस स्वरूपसों सभा मँझारा ❀ बैठे आय सहित हंकारा।
महा प्रलयके करनेंहारे ❀ बड़े बड़े जिन तन भयकारे॥
अस घन सांवर्तिकगण वृंदा ❀ लिय बुलाय निज तटसानन्दा।
सादर क्रोधयुक्त तिनपाहीं ❀ कहत अहै,सावध सुन ताहीं॥९५

दो०-हे वारिद गण देखिये, वड़ अचरजकी वात।
धेनु चरावनहार ये, बनवासी विख्यात॥ १०२॥

आज पाय धन बल प्रभुताई ❀ भे मदान्ध,दिय मोहिं भुलाई।
एक कृष्ण बालक वच लागी ❀ मो सुरपतिके भे सब त्यागी॥

तासों तिन मो किय अपमाना ❀ मो पूजा त्वर फलप्रद माना ।
तिहँ तज गिरिको पूज्यो जाई ❀ इम ब्रजवासिन बुद्धि भ्रमाई ॥
जिम को ब्रह्मविद्याको पावै ❀ संग दोषते मति भ्रम जावै ।
तव तिहँ त्याग विना दृढ़ताके ❀ नाममात्र सदृश नौकाके ॥
कर्मरूप यज्ञोंके द्वारा ❀ इच्छें होवन भवनिधि पारा ।
ब्रजवासिन यह गति किय काना ❀ * बात बनावन जो बड़ स्याना ॥
अहै बड़ोहि छछोरा जोऊ ❀ जड़ अज्ञानी है पुन सोऊ ।
निज को बड़ विद्वान प्रमानै ❀ है मनुंष्य, जिहँ कृष्ण बखानैं ॥९६

दो०-हे सांवर्तक गण सुनौ, परम सहायक आप ।
बड़ो भरोसो मोहिं है, तुम्हरो महत प्रताप ॥१०३॥

यह सुन सांवतर्क गण ताहीं ❀ हाथ जोर कह वज्री पाहीं ।
हम तौ अहैं आपके दासा ❀ जो आज्ञा, हम कर सहुलासा ॥

* श्लोक—वाचाल वालिशं स्तब्धमज्ञंपण्डितमानिनम् ।
कृष्णं मर्त्य मुपाश्रित्य गोपा मे चक्रुरप्रियम् ॥

सरस्वती टीकाकारकी टीका—(वाचालम्१) वाणी विषयमें परिपूर्ण अर्थात् शास्त्रयोनी है (वालिशम्२) शिशुवत् अभिमान रहित पूर्णब्रह्म है (स्तब्धम्३) कृष्णके समान ऐसा कोई नहीं है जाकूं नमस्कार करी जाय (अज्ञम्४) श्रीकृष्णके समान कोई ज्ञाता नहीं है किन्तु सर्वज्ञ है (पण्डितमानिनम्५) बड़े बड़ें विद्वज्जन श्रीकृष्णको मान करै हैं (कृष्णं मर्त्यम्६) आप सदानन्द परब्रह्म हैं तथापि भक्त वात्सल्य करके मनुष्यरूप से प्रतीत होय हैं ॥ ५ ॥

१—इन्द्र

और कौन अवसरके माहीं ❀ आवैं काम, कहौ हम पाहीं ।
कह नाकेश भरोसो आपू ❀ तुह्मरे बल गर्जत गततापू ॥
कारण यह तुम सब जगकेरी ❀ कर सक प्रलय,शक्ति असहेरी ।
तौ यह व्रज भुविको इक खंडा ❀ तिहँ ध्वंसन नहि बात प्रचंडा ॥
जाय घोष घेरौ चहुँ ओरा ❀ बरसावौ वर्षा बड़ घोरा ।
श्रीमदसौं उन्मत्त महाना ❀ हैं व्रजवासी मूढ़ अयाना ॥
एक कृष्णके हैं बहकाये ❀ सोऊ भल तिन करै सहाये ।
तुम तौ इनको धन मद जोई ❀ करौ नष्ट जावौ मुद होई॥९७॥

दो०-और पशुन ध्वंसन करौ, जासौं इन अभिमान ।
विन विलम्ब अरु सहज ही, निश्चय होवै हान॥१०४

तुम आगे चल व्रजको घेरौ ❀ व्याकुल हैं लख बल तुमकेरौ ।
मैं हूं बड़े बड़े बलवाना ❀ देव समूह मरुद्गण नाना ॥
आवौं द्रुत इनकों ले साथे ❀ चढ़िके ऐरावत करि माथे ।
इन व्रजवासिन करिहौं ध्वंसा ❀ करौ न शंक आप उर अंसा ॥
मैं ऊपरते तुह्मरी रक्षा ❀ करत रहूँगौ है प्रत्यक्षा ।
अब मैंने दइ आज्ञा जोई ❀ जावौ तुम आशू मुद होई ॥
मो प्रीती प्रकटावन हेतू ❀ मोहिं कृतार्थ करौ यशकेतू ।
आप विश्व संहारक जासौं ❀ व्रज संहार सहजही तासौं ॥
मानौ भुवनकोशको आजू ❀ कम्पित करौ, अभय हो गाजू ।
व्रज ध्वंसन हित याहि प्रकारा ❀ जल बरसावौ मूसल धारा॥९८

१—इन्द्र २–घड़ी ३–थोरीसी ।

दो०-जासों ब्रजको खोजहू, बाकी रहै न कोइ।
तब मानूंगो आपनें, किय सहाय, कहि जोइ॥१०५

इम आज्ञा दीनी अमेरेशा ❀ अरु घनपति बुलाय तिहँ देशा।
किय आज्ञा साँवर्तक नामा ❀ प्रलयकाल जिनसों लै कामा॥
तिनैं मुक्तकर कहु तिन पाहीं ❀ जाउ डुबाउ आज ब्रज थाहीं।
कहूँ खोज ब्रजकी नहिं रहही ❀ अस उद्यम अब करनों अहही॥
मेघमाल साँवर्तक नामा ❀ जाय मेघपति इनके ठामा।
कही पाकशासनकी बानी ❀ कियो मुक्त मघवा वच मानी॥
ज्यों छूटी साँवर्तकनामा ❀ मेघमाल स्वर्पतिके कामा।
चतुर ओर घनघोर महाई ❀ घुमड़ उठी छाई अँधियाई॥
हाथ हाथसों दीसत नाहीं ❀ अस तम छायो चहुँदिशिमाहीं।
पूरब पश्चिम दक्षिण उत्तर ❀ चमकत बिजुरी उपजावत डर९९

दो०-जलद तड़तड़ावन लगे, या विधि गरजत आहिं।
जनु धरणी फट जायगी, बिन बिलम्बही ताहिं।१०६।

तीव्र पवन नें जिनको प्रेरा ❀ अस बहु घटा उठीं चौफेरा।
रंग रंग की घटा नई हैं ❀ नभ मंडल में छाय गई हैं॥
ब्रज पै आय अचानक पानी ❀ अरु ओला बरसे दुखदानी।
थूनीं सम मोटी जल धारा ❀ वसी निरन्तर घोष मँझारा॥

१ इन्द्र २ इन्द्र ३ इन्द्र ४ इन्द्र

अल्प समय ही में भुवि माहीं ❀ जल ही जल है गयऊ ताहीं।
ऊँचो नीचो खन्दक खाई ❀ कूआ खेत तलाव तलाई॥
काहू की सुधि परै न ताहीं ❀ यह गति भइ है ब्रज के माहीं।
वर्षा वेग प्रचंड समीरा ❀ तासों पसुन पाइ बहु पीरा॥
थर थर काँपत है तिन देहा ❀ खान पान को विसरो नेहा।
यावत गोपी गोपन वृन्दा ❀ जाड़े सों व्याकुल लह द्वन्दा॥१००

दो०—हिय घबराय महान अति, गये कृष्ण के पाहिं।
ता अवसर गौवृन्द गति, को अपि कह सक नाहिं॥१०७

निज निज सासन सेती ताहीं ❀ निज निज बछरन दावत आहीं।
लम्बी कर कर निज ग्रीवा को ❀ शिर नीचे सूझत तिन नांको॥
मुँदी भई आंखें हैं जिनकी ❀ पूंछ लटकती जावत तिनकी।
ठाड़ीं जहँ की तहँ दुख पाई ❀ जल धारा की चोट महाई॥
परत देह पै सही न जाई ❀ बड़ो क्षोभ पायो अकुलाई।
बड़े पुष्ट तिन पृष्ठ जु अहहीं ❀ काँपत बड़ घबराहट रहहीं॥
खोजत आश्रय भाजत जेऊ ❀ कृष्ण शरण आईं गौ तेऊ।
पल अन्तर पुन घोष मँझारा ❀ कदली खंभ सदृश जल धारा॥
परन लगीं तब तो ब्रजवासी ❀ हिये विचारत होय उदासी।
बिना समय है आजहि मानो ❀ विश्व प्रलय है जाय पछानो॥१०१

दो०—इम निज मन में मानहीं, जेते पुरजन आहिं।
रुकै नहीं जलधार यह, दुखी भये मन माहिं॥१०८॥

सो०-निज निज बछरा वाल, निज बछन चिपटाय कँ।
यावत गौ अरु ग्वाल, निज २ सिरसों ढाँपही ॥६३॥

अस गतिवन्त सकल ब्रजवासी ❀ आतुर गये निकट सुखरासी[1]।
कृष्ण कृष्ण हे कृष्ण उचारें ❀ बिना आप कहँ जाय पुकारें ॥
आप सुखद हो सदा हमारे ❀ को है रक्षक बिना तुम्हारे।
आप समक्ष कष्ट हम पावें ❀ यह अचरज हमरे हिय आवै ॥
इन्द्रहि को यह कोप महाना ❀ निश्चय अहै, न कारण आना।
ता कोपानल सों ब्रजवासी ❀ जर रहि हैं देखो सुखरासी[2] ॥
शक्र कोप ते राख कन्हाई ❀ ब्रज पालन क्यों देर लगाई।
यह ब्रज असमय परलय द्वारा ❀ नष्ट होय रहि, कहा विचारा ॥
अविलम रक्षा करो हमारी ❀ एक आस अब अहै तुम्हारी।
ये बिजुरी की पंक्ती देखो ❀ चम चमाट कर रहि तिहँ पेखौ १०२

दो०-यथा भरो भो क्रोध सों, अहै जु कोई नाग।
लपलपाय जिह्वा अपन, जनु उगलत है आग॥१०६॥

ओला लगातार गिर रहहीं ❀ जिनसों पथ द्रुम टूटत अहहीं।
देखौ तड़तड़ात घन वृन्दा ❀ कर रहि निरखत उपजत द्वन्दा ॥
है बड़वानल अग्नी जोऊ ❀ ज्वलित होय भभकत जन सोऊ।
देखौ तौ इन गौवन आपू ❀ या वर्षा कारन लह तापू ॥

१ श्री कृष्ण के समीप २ श्रीकृष्ण ।

होय विकल निज बछुरा जोऊ ❀ निज तनसे ढाँपत हैं सोऊ।
गेरत हैं नैनन ते आँसू ❀ करत अहैं प्रार्थन तुम पासू ॥
ये प्यारी गौ अहैं तिहारी ❀ इन प्रार्थन सुन करुणाधारी।
कहत अहैं गौ तुम्हरे पाहीं ❀ हमरे रक्षक आपुहिं आहीं ॥
दावानल तें प्राण बचाये ❀ किन्तु आजको दुःख महाये।
जब अकाल परलय तें राखौ ❀ तौ हम जीवैं,हिय अभिलाखौ १०३

दो०-नहिं तौ आश्रय अपर नहिं-सत्य कहत तुम पाहिं।
रक्षक आन न आप विन, एक आपुही आहिं ॥११०॥

महा प्रलय के योग्य जु मेहा ❀ यह साक्षात मूर्ति ब्रज गेहा।
अस यह जो अनर्थ को मूला ❀ आप समक्ष न है प्रद शूला ॥
गौवन आँसुन गेरन कारन ❀ ब्रजजन प्रभुप्रति कियो उचारन।
अब पुन कहत कृष्ण के पाहीं ❀ सत्यहिं तुव भरोस इक आहीं ॥
नहिं तौ इन्द्र यज्ञ ब्रज माहीं ❀ बहु पुरखन तें चल्यो जु याहीं।
एक आपके वच अनुसारा ❀ तज्यो;विशेष न कियो विचारा॥
सो पूरण भरोस हिय माहीं ❀ इनके कहे श्रेय ही आहीं।
गर्ग वचन श्रीपती समाना ❀ है यह नँदनन्दन जो काना ॥
सो प्रतक्ष हम नैन निहारे ❀ बड़े बड़े राक्षस तुम मारे।
पुन जब पूज्यो श्री गिरिराजू ❀ हम ब्रजवासिन सजबहु साजू १०४

दो०-प्रकट होय तब दरस दिय, पूजा फल इन नैन।
ब्रजवासिन सबहिन लख्यो, पायो उर बड चैन॥१११

सो०-तव गिरिवर हम पाहिं, कह्यो जु यह मोहन अहै ।
मो इन अन्तर नाहिं, मो स्वरूप मो मीत है ॥६४॥

इनपै करुणा नित्य नवीनों ❀ बनी रहै मेरी, सुख दीना ।
जो जो कार्य अहै इन कीनों ❀ मो अनुकम्पाही सों चीनों ॥
अब यदि तुम पै को दुख आवै ❀ यह तुरन्त ही ताहि नसावै ।
इन वचनन पूरण विश्वासा ❀ सब दुख नासन पूरण आसा ॥
ता हित हम ब्रजवासी जेते ❀ प्रार्थन करत आपको तेते ।
यदपि आप नँदनन्दन वीरा ❀ हमरे सम हो जाति अहीरा ॥
किन्तु आप पै कृपा अनन्ता ❀ करत रहत हैं नित श्री कन्ता ।
जाको श्रीपति दें सन्माना ❀ तिहँ आदर किम नाहिं दें आना ॥
ता हित हमें आपके माहीं ❀ पूर्ण भरोसो निश्चय आहीं ।
या विधि सुन ब्रजवासिन बानी ❀ स्वयं कृष्णकी मति अकुलानी१०५

दो०-जो शिलान के मेहसों, चोट लगीं जिन देह ।
तासों तिनें अचेत लख, स्वयं दुखी तिन नेह।११२

सो०-किय विचार उर माहिं, बिन ऋतु जल ओला परन
पवन प्रचंड जु आहिं; ये जितनों कछु ह्वै रह्यो ॥६५॥

सो शतभग[१] मख पूजन जोई ❀ भयो नष्ट, है कोपित सोई ।
यदि कोपित भयऊ, डर नाहीं ❀ अब मैं पलट दऊं मति याहीं ॥
वा अपनों ऐश्वर्य महाई ❀ या सुरेन्द्र[२] को देहुँ दिखाई ।
जासों दउँ बताय मैं वाको ❀ मैं पूरण पुरुषोत्तम पाको ॥

१ इन्द्र २ इन्द्र ।

ब्रज में प्रकट भयो हूं जाते ❀ अहो इन्द्र अस मत कर ताते ।
किन्तु करों में या विधि जोई ❀ लीला सौष्ठव[1] होय न कोई ॥
अरु ब्रजवासिन गिरिवर माहीं ❀ होय अटल निष्ठाहू नाहीं ।
यामें मो आशय है येही ❀ यावत ब्रजवासी मो नेही ॥
तिनें जतानों अहे कि देखो ❀ सुरपति कृत कर्तव्यहिं पेखो ।
या शचीश[2] नें पूर्ण प्रयासा ❀ किय हमरे ध्वंसन अभिलासा १०६

दो०—अरु कृपाल गिरिराज नें, हमरी सर्व प्रकार ।
पूरण रक्षा की अहे, जय गिरिराज उदार ॥११३॥

याते या वासव मद जोऊ ❀ है लोकशपने को सोऊ ।
अरु श्रीमद को जो अँधियारो ❀ दूर करोंगो, है उजियारो ॥
बड़ अचरज की बात यही है ❀ सत गुन प्रकृती सुरन कही है ।
तौहू इनको है अभिमाना ❀ किन्तु बात यह उचित न माना ॥
रज गुन प्रकृतिवन्त की नांई ❀ जब घमंड देवन है जाई ।
तौ वे असत नरन के माहीं ❀ गिनवे योग्य अहैं किल ताहीं ॥
ताते असत नरन को जोऊ ❀ मान भंग मो द्वारा होऊ ।
सो मानौ करुणा ही अहही ❀ नहिं तौ मुहिं सब समही रहहीं ॥
यासौं या घमंड को नासौं ❀ इन्द्र पाहिं निजपनों प्रकासौं ।
मो व्रत ही ध्वंसन अभिमाना ❀ किम न करौं वासव मद हाना १०७

१ सुन्दरता २ इन्द्र ।

दो० जो कछु होय सु होवही, कहा करै स्वगेंश।
कहा करै खद्योत लघु, उदय जु होय दिनेश॥११४

सो०-यह व्रज मेरी आहि, या व्रज को मैं हूं शरण।
सतत वास जिहँ माहिं, नाथहु व्रजको मैं अहों॥६६॥

अपनें आत्मयोग कर याकी ❀ अवस करूंगो रच्छा पाकी।
यथा छतौना बालक कोई ❀ लेहि उठाय सहजहि सोई॥
वा जिम सहजहि हस्ति उठावै ❀ पुष्प गुच्छ को, कष्ट न पावै।
ता विधि केशव कियो विचारा ❀ गिरिधारन निज हिये मँझारा॥
यहां सकल ब्रजवासी जेऊ ❀ बड़ घबराय रहे हैं तेऊ।
स्वयं गये गिरिवर के पाहीं ❀ या प्रकार भाखत हैं ताहीं॥
हे गिरिराज सुनौ दै काना ❀ इन ब्रजजन सामिग्री नाना।
का इक बेरहि खाय अघाये ❀ यदि प्रति वर्षहु या विधि चाये॥
तौ हलके होवौ ततकाला ❀ आशु उठाय लऊं मैं बाला।
यदि कछु खावन की नहिं आसा ❀ तौ जस आपुहि की अभिलासा१०८

दो०-या प्रकार के कृष्ण वच, श्री गिरिवर के पाहिं।
ब्रजवासिन के हिय विषे, भाव माधुरी आहिं॥११५॥

सो०-तिहँ रच्छा के हेतु, हे नृप निश्चय जानिये।
आप सदा सुख सेतु, को समर्थ श्रीकृष्ण सम॥६७॥

श्रीगिरिवर प्रति कह घनश्यामा ❀ कह ब्रजवासिन वचन ललामा ।
हे भैया हो श्रीगिरिराजू ❀ तुम्हरी रक्षा करि हैं आजू ॥
आज तुमहूँ कछु देहु सहारौ ❀ इम गोपन प्रति वचन उचारौ ।
आप आशु गिरिराज उठायो ❀ तनकहु परिश्रम नाहिं लखायो ॥
जिम बालक छत्राक उठावे ❀ तिम गिरिवर कर कृष्ण सुहावे ।
जा अवसर गिरिराज उठायो ❀ सबमें सन्नाटौसो छायो ॥
लगै विचार करन उर माहीं ❀ यह नभ किम ठहरौ,का आहीं ।
कहा भयो अस चकित विचारैं ❀ बहु अचरजमय वचन उचारैं ॥
ता अवसर काँपत कैलासा ❀ है भयभीत सुमेरु प्रकासा ।
दिग्गज आकासी गंगामें ❀ डूबतभे,अस गतिभइ तामें[१] १०९

दो०-यशुमति भय कातर भई, छाय गई मुख माथ।
उदासीनता महत अति, देख न सक यह गाथ ११६

सो०-यह गति लख घनश्याम, मातु यशोदाकी तहाँ ।
कहि कहि वचन ललाम, समुझावत भै नेहसों॥६८॥

भैया तू जिन शंक उठावै ❀ बाबा तू चिन्ता किम लावै ।
हे ब्रजवासी तज सन्देहा ❀ मोरे वचन सुनो श्रुत नेहा ॥
मो करते यह गिरिवर कबहू ❀ नहिं गिरही जानौ तुम सबहू ।
आप स्वयं देख्यौ निज नैना ❀ यह गिरिराज परम सुखदैना ॥

१—अर्थात् श्रीगिरिराजके उठानेके प्रसंग में ।

देह धार प्रकट्यो साक्षाता ❀ आरोगी पूजा मन भाता ।
अस प्रतापवारो गिरिराजू ❀ ठहरौ अधर गगनमें आजू ॥
तौ यामें आश्चर्य कहा है ❀ अपन शक्तिसों ठहर रहा है ।
दीखत बड़ो अहै यह मैया ❀ जड़ प्रतीत गिरि हेतु कहैया ॥
परन्तु याकी जो प्रभुताई ❀ अहै अलौकिक कही न जाई ।
वाद विवाद न उचित कहावे ❀ मो वचनन मन नाहिं पतियावे ११०

दो०-तौ देखौ कैसौ अहै, हलकौ यह गिरिराज ।
याको मो इक बालनें, सहज उठायो आज ॥११७॥

मोहिं निमित्तमात्रही जानौ ❀ स्वेच्छाचारी गिरिवर मानौ ।
वाम हाथसों अहै उठायो ❀ यह हरिवंश पुराण बतायो ॥
या विधिके वच हैं ता माहीं ❀ घनसों मिल्यो जु गिरिवर आहीं ।
वाकौ वाम हाथ घनश्यामा ❀ धारन किय तव सोह ललामा ॥
घरकीसी शोभा ह्वै गयऊ ❀ यामें नृप ! यह आशयं रह्यऊ ।
जव गिरिराज उठायो काना ❀ वाम हाथपे सोह महाना ॥
तब गिरिके नीचे जु गढ़ैला ❀ अस प्रतीत होवत तिहँ बेला ।
जनु वड़ उत्तम तनौ सिमानौ ❀ अस सोहत गिरिराज पछानौ ॥
ताहि उठाय कहत भगवाना ❀ हे मैया बाबा जन नाना ।
आवौ तुम सब परिकर संगा ❀ गौ बछरा लावौ स उमंगा॥ १११

दो०-औरहु सामिग्री सकल, ले आवौ ततकाल ।
मो करते गिरि गिर परै, देहु शंक यह टाल ॥११८॥

कारण यह जानौ या माहीं ❀ अपनें आपुहि उठके याहीं ।
ओला परत, बात मिल मेहा ❀ तासौं हम सबहिन युत नेहा ॥
रच्छा कीनी है गिरिराजू ❀ आवौ तज विलम्ब स समाजू ।
नन्दनँदन वच सुन ब्रजवासी ❀ निज निज गोधन ले सहुलासी ॥
निज निज घर उपकरन[1] समेता ❀ प्रविशत भे जनु प्रविश निकेता ।
यदि को शंक करै थल याहीं ❀ किम रहि सक सब गिरिवर माहीं ॥
तौ भाखत हरिवंश पुराना ❀ या प्रकार वच कह भगवाना ।
हे ब्रजवासि शंक मत कीजै ❀ आवौ सब, सब वस्तुहु लीजै ॥
देखौ श्रीगिरिराज प्रतापू ❀ कियो आज अनुग्रह अमापू ।
कितनौं है या थल अवकासा ❀ तीनलोक भल कर यहँ वासा ११२

दो०-तौ कहु ब्रजवासीन के, बसन योग्य थल नाहिं ? ।
कृष्ण वचन नैनन निरख, बसे सपरिकर ताहिं ११६

सो०-कहत कृष्ण तिन पाहि, कोइ कष्ट मत पाइयो ।
भवन ठाठ सब याहिं, विद्यमान आनन्द युत॥६६॥

ताते चिन्त नैंक नहिं कीजे ❀ गिरिवरको हि आसरौ लीजे ।
ब्रजवासी सब भै सानन्दा ❀ सुन सुन वचन मधुर ब्रजचन्दा॥
सुन्दर कोमल तृण जहँ आहीं ❀ बाहरके परकोटा माहीं ।
गौ स्वच्छन्द चरत हुलसाई ❀ दृष्टी नन्दसुवन चल जाई ॥

१ मय चीज वस्तु ।

ता आगे गोपन निज केरे ❀ अँहँ जमाइ अखाड़े डेरे।
इम ब्राह्मण अरु नगर निवासी ❀ क्रमशः भे निज रुचि थल वासी॥
कहूं प्रिया वृषभानु दुलारी ❀ ललितादिक सब सखी पियारी।
युग्म ओर सख मंडल राजे ❀ नन्दलाल छवि निरखत छाजे॥
आगे रहै यशोमति मैया ❀ श्री व्रजराज और बल भैया।
ता अवसर यशुमति व्रजरानी ❀ कहत कन्हैया प्रति अस बानी ११३

दो०-इन सबहिन के कहन तें, तू उद्धत ही होइ।
बाबा परबावानतें, चल्यो इन्द्र मख जोय।।१२०॥

सो०-सो खंडन किय कान, अस न उचित है अपनको।
है अपराध महान, देख वाहिको फल यही ॥७०॥

अब व्रज में बसवो नाहिं नीको ❀ अन थल बसैं तौहु भय जीको।
करै जु श्याम घटाको फीको ❀ कृष्ण श्यामघन है अस नीको॥
ता आनंदघन अंग सुहावैं ❀ निरख-निरख यशुमति बल जावै।
ता प्रति अस कह यशुमति रानी ❀ सरस सुखाकर पंकज पानी[१]॥
वात्सलभाव पूर्ण हैं दोऊ[२] ❀ श्यामअंग पोंछत मुद होऊ।
अरु भाखत है पुनि अपि ताहीं ❀ अहो होत अचरज मनमाहीं॥
लाला तुव भुज मंडल जोऊ ❀ अतिशय मृदुल मनोहर सोऊ।
नूतन नवनीतहुसे अहही ❀ शीतल अति निर्मल पुन रहही॥

१—कमल समान हाथ २—दोऊ हाथ सों।

श्रीगिरिवर प्रति कह घनश्यामा ❀ कह व्रजवासिन वचन ललामा ।
हे भैया हो श्रीगिरिराजू ❀ तुम्हरी रक्षा करि हैं आजू ॥
आउ तुमहुँ कछु देहु सहारौ ❀ इम गोपन प्रति वचन उचारौ ।
आप आशु गिरिराज उठायो ❀ तनकहु परिश्रम नाहिं लखायो ॥
जिम बालक छत्राक उठावे ❀ तिम गिरिवर कर कृष्ण सुहावे ।
ज्ञा अवसर गिरिराज उठायो ❀ सबमें सन्नाटौसो छायो ॥
लगे विचार करन उर माहीं ❀ यह नभ किम ठहरौ,का आहीं ।
कहा भयो अस चकित विचारें ❀ वहु अचरजमय वचन उचारें ॥
ता[१] अवसर काँपते कैलासा ❀ है भयभीत सुमेरु प्रकासा ।
दिग्गज आकासी गंगामें ❀ डूबतभे,अस गतिभइ तामें १०९

दो०-यशुमति भय कातर भई, छाय गई मुख माथ।
उदासीनता महत अति, देख न सक यह गाथ ११६

सो०-यह गति लख घनश्याम, मातु यशोदाकी तहाँ ।
कहि कहि वचन ललाम, समुझावत भे नेहसों॥६८॥

भैया तू जिन शंक उठावै ❀ बाबा तू चिन्ता किम लावै ।
हे व्रजवासी तज सन्देहा ❀ मोरे वचन सुनो युत नेहा ॥
मो करते यह गिरिवर कबहू ❀ नाहिं गिरही जानौ तुम सबहू ।
आप स्वयं देख्यौ निज नेना ❀ यह गिरिराज परम सुखदेना ॥

१—अर्थात् श्रीगिरिराजके उठानेके प्रसंग में ।

देह धार प्रकट्यो साक्षाता ❀ आरौगी पूजा मन भाता ।
अस प्रतापवारो गिरिराजू ❀ ठहरौ अधर गगनमें आजू ॥
तौ यामें आश्चर्य कहा है ❀ अपन शक्तिसों ठहर रहा है ।
दीखत बड़ो अहै यह मैया ❀ जड़ प्रतीत गिरि हेतु कहैया ॥
परन्तु याकी जो प्रभुताई ❀ अहै अलौकिक कही न जाई ।
वाद विवाद न उचित कहावै ❀ मो वचनन मन नाहिं पतियावै ११०

दो०-तौ देखौ कैसौ अहै, हलकौ यह गिरिराज ।
याको मो इक वालनें, सहज उठायो आज ॥११७॥

मोहिं निमित्तमात्रही जानो ❀ स्वेच्छाचारी गिरिवर मानौ ।
वाम हाथसों अहै उठायो ❀ यह हरिवंश पुराण बतायो ॥
या विधिके वच हैं ता माहीं ❀ घनसों मिल्यो जु गिरिवर आहीं ।
वाकौ वाम हाथ घनश्यामा ❀ धारन किय तब सोह ललामा ॥
घरकीसी शोभा है गयऊ ❀ यामें नृप ! यह आशय रह्यऊ ।
जब गिरिराज उठायो काना ❀ वाम हाथपै सोह महाना ॥
तब गिरिके नीचे जु गढ़ैला ❀ अस प्रतीत होवत तिहँ वेला ।
जनु बड़ उत्तम तनौ सिमानौ ❀ अस सोहत गिरिराज पछानौ ॥
ताहिं उठाय कहत भगवाना ❀ हे मैया बाबा जन नाना ।
आवौ तुम सब परिकर संगा ❀ गौ बछरा लावौ स उमंगा॥१११

दो०—औरहु सामिग्री सकल, ले आवौ ततकाल ।
मो करते गिरि गिर परै, देहु शंक यह टाल ॥११८

कारण यह जानौ या माहीं ❀ अपनें आपुहि उठके याहीं ।
ओला परत बात मिल मेहा ❀ तासौं हम सबहिन युत नेहा ॥
रक्षा कीनी है गिरिराजू ❀ आवौ तज विलम्ब स समाजू ।
नन्दनँदन वच सुन ब्रजवासी ❀ निज निज गोधन ले सहुलासी॥
निज निज घर उपकरन[1] समेता ❀ प्रविशत भे जनु प्रविश निकेता ।
यदि को शंक करै थल याहीं ❀ किम रहि सक सब गिरिवर माहीं॥
तौ भाखत हरिवंश पुराना ❀ या प्रकार वच कह भगवाना ।
हे ब्रजवासि शंक मत कीजै ❀ आवौ सब, सब वस्तुहु लीजै ॥
देखौ श्रीगिरिराज प्रतापू ❀ कियो आज अनुग्रह अमापू ।
कितनों है या थल अवकासा ❀ तीनलोक भल कर यहँ वासा ११२

दो०-तौ कहु ब्रजवासीनके, बसन योग्य थल नाहिं ?।
कृष्ण वचन नैनन निरख, बसे सपरिकर ताहिं ११६

सो०-कहत कृष्ण तिन पाहि, कोइ कष्ट मत पाइयो ।
भवन ठाठ सब याहिं, विद्यमान आनन्द युत॥६६॥

ताते चिन्त नेंक नहिं कीजे ❀ गिरिवरको हि आसरौ लीजे ।
ब्रजवासी सब भे सानन्दा ❀ सुन सुन वचन मधुर ब्रजचन्दा॥
सुन्दर कोमल तृण जहँ आहीं ❀ बाहरके परकोटा माहीं ।
गौ स्वच्छन्द चरत हुलसाई ❀ दृष्टी नन्दसुवन चल जाई ॥

१ मच चीज़ व तु ।

ता आगे गोपन निज केरे ❀ अहैं जमाइ अखाड़े डेरे ।
इम ब्राह्मण अरु नगर निवासी ❀ क्रमशः भे निज रुचि थल वासी ॥
कहूं प्रिया वृषभानु दुलारी ❀ ललितादिक सब सखी पियारी ।
युग्म ओर सख मंडल राजे ❀ नन्दलाल छबि निरखत छाजे ॥
आगे रहे यशोमति मैया ❀ श्री व्रजराज और बल भैया ।
ता अवसर यशुमति व्रजरानी ❀ कहत कन्हैया प्रति अस बानी ११३

दो०-इन सबहिन के कहन तें, तू उद्धत ही होइ ।
बाबा परबाबानतें, चल्यो इन्द्र मख जोय ।१२०॥

सो०-सो खंडन किय कान, अस न उचित है अपनको ।
है अपराध महान, देख वाहिको फल यही ॥७०॥

अब व्रज में बसवो नाहिं नीको ❀ अन थल बसें तौहु भय जीको ।
करै जु स्याम घटाको फीको ❀ कृष्ण स्यामघन है अस नीको ॥
ता आनंदघन अंग सुहावै ❀ निरख-निरख यशुमति बल जावै ।
ता प्रति अस कह यशुमति रानी ❀ सरस सुखाकर पंकज पानी[1] ॥
वात्सलभाव पूर्ण हैं दोऊ[2] ❀ स्यामअंग पोंछत मुद होऊ ।
अरु भाखत है पुनि अपि ताहीं ❀ अहो होत अचरज मनमाहीं ॥
लाला तुव भुज मंडल जोऊ ❀ अतिशय मृदुल मनोहर सोऊ ।
नूतन नवनीतहुसे अहही ❀ शीतल अति निर्मल पुन रहही ॥

१—कमल समान हाथ २—दोऊ हाथ सों ।

बिना पराक्रम गिरिवर केरौ ❀ कैसे सह्यौ जु बोझ घनेरौ।
अहो धराधिनाथ गिरिराजू ❀ स्वीकृत कर प्रार्थन मो आजू ११४

दो०-तुम जो सत्यहि देव हो, तौ मो लाला हेतु।
होय जाउ हलको अतिहि, अरु कोमल सुखकेतु १२१

जासों खेद न है कनुवाको ❀ है लघु बाल स्वयं तुम ताकौ[1]।
व्रजरानी के वच सुन काना ❀ मधु मंमल तहँ वचन बखाना॥
मैया तू या विधि मत भाखै ❀ निज वात्सलही यापै राखै।
कहा प्रयोजन है री मैया ❀ पावै खेद जु आप कन्हैया॥
मैया तू बाँवरी दिखाई ❀ होय खेद नहिं कबहु कन्हाई।
मैया देख शक कर कोपा ❀ प्रलय काल सम बादर रोपा॥
घन घट्टासों है व्रज घेरी ❀ यामैं कहा हान हमकेरी।
मेरे जान बात यह नीकी ❀ जो नहिं करत इन्द्र निज जीकी॥
ऊधम इन्द्र करत यदि नाहीं ❀ तौ मैया कहु सत मो पाहीं।
गिरि उठायवे में जु अनोखी ❀ शोभा लाल आज है चोखी ११५

दो०-सो शोभा किम दीखती, अरु इन नैनन द्वार।
कैसे यह माधुरि सुधा, पीवत प्यास अपार॥१२२

सो०-तब यशुमति कह मान, अरे मूर्ख हे साहसिक।
कहूँ बोझ से मान, होय माधुरी को कहा॥७१॥

१—देखौ।

खीभ हेतु व्याकुलता होई ❀ वा शोभा दीखै ? कहु सोई ।
मधुमंगल के बचनन द्वारा ❀ पाय दुःख यशुमती उचारा ॥
देखौ गिरि उठायवेहीमें ❀ माधुरि अनुभव याके जीमें ।
सावधान रहु फिर मत भाखे ❀ निज अनुभव निज मन नाहिं राखै॥
यामें कछु न दोष तुव आहीं ❀ जाती प्रकृति मिटत कहुँ नाहीं ।
तू ब्राह्मणको है या कारन ❀ तुव हिय वज्रपनों किय धारन ॥
यथा प्रथम भृगु ऋषि की गाथा ❀ सुनी अहै मैं कहि मुनिनाथा[1] ।
गो बैकुंठ लोकके माहीं ❀ रमा सहित राजत प्रभु ताहीं ॥
शेषसेज पै सोये दोऊ ❀ ब्राह्मण भृगू वज्र हिय जोऊ ।
अतिह अचानक विष्णू वक्षा ❀ मारी लात अहेतु अदक्षा ॥११६

दो०-जस भृगु ब्राह्मण वज्र हिय, तस तू, संशयनाहिं ।
ताहित व्याकुलता बदल, मान मोद मन माहिं१२३

तब मधुमंगल हँस अस कह्यऊ ❀ मा तू तौ बाँवरी हि रह्यऊ ।
तू कछु जानत हो हे मैया ❀ हे गोष्ठेश्वरि ! सुन सुखदैया ॥
करौं जु जप तप मैं दिनराती ❀ वाकौ बड़ प्रभाव विख्याती ।
अरु ब्राह्मणपनकेर प्रभावा ❀ मैं काहू प्रति नाहिं जनावा ॥
सो मैया तू जानत नाहीं ❀ आज प्रकट कहि दउँ तुम पाहीं ।
मैया अस है सक जो काना ❀ मेरौ सत्य मित्र प्रिय माना ॥

---

१ कोई एक मुनि ।

वाकौं दुख देवैं गिरिराजू ❀ कबहु न दुख दे सक, कहुँ आजू ।
नाहिं तौ मो तपकेर प्रभावा ❀ अरु द्विजपन शक्ती जु जनावा ॥
कहां जायगो सो री मैया ❀ ताते खेद न लहे कन्हैया ।
मधुमंगल की सुनकें बानी ❀ ता प्रति कह यशुमति ब्रजरानी ११७

दो०-अरे ढीठ सब थल विषे, सूजत हाँसी तोहिं ।
जरे जाइँ मो प्रान अरु, कछू न सूझै मोहिं ॥१२४॥

सो०-सावधान हो जाउ, चर वर चर वर मत करै ।
काहेको अकुलाउ, मो वश मेरे प्रान नहिं॥ ७२ ॥

मो अस गति देखत अपि तोकों ❀ लगी अहै हांसी, दुख मोकों ।
तब ब्रजराज कहत ब्रजरानी ❀ कहा करत यह उचित न मानी ॥
अरी अपन मनको समुझाओ ❀ या ब्राह्मणको क्यों धमकाओ ।
हे यशुमति भवमें यह रीती ❀ जे जाननहारे हैं नीती ॥
ते अस दुष्कर कर्मनमाहीं ❀ हाँसी अरु उत्साह जु आहीं ।
तासों साहस तेउ बढ़ावें ❀ जासों सहज कार्य निभ जावें ॥
यह ब्राह्मण अवसरको ज्ञाता ❀ ब्राह्मण सहज पूज्य सुखदाता ।
लालाको इनके वचमाहीं ❀ है विश्वास तथा कहुँ नाहीं ॥
तासों नहिं धमकाओ प्यारी ❀ भली करैगो प्रभू हमारी ।
कह नृप हे मुनिराज सुनावो ❀ मो हियको सन्देह मिटावो११८

दो०-गिरिवर लियो उठाय हरि, किन्तु गहैला माहिं।
परही पानी अवसही, किम रच्छा भइ ताहिं ॥१२५॥

सो०-नारद ऋषि नृप पाहिं, कहत सुनौ बहुलाश्वजी।
जहँ समर्थ प्रभु आहिं, तहँ अस शंक न सम्भवे७२

इति श्री कृष्णायने चतुर्थे गिरिराज द्वारे षष्ठ सोपान समाप्त।

रजनी दिवस एक सम मानी ❀ मूसल धार बरस्यो तहँ पानी।
हान न भइ रंचहु ब्रजकेरी ❀ कारण तहां कह्यौ यह टेरी॥
सात दिवस दिनरात बसायो ❀ ओला मेह अन्त नहिं आयो।
हे नृप किय आज्ञा भगवाना ❀ अये सुदर्शन!हित ब्रजमाना॥
ऐसी करौ घोष या माहीं ❀ सावधान है रहियो ताहीं।
या मो ब्रजको बाल न बाँको ❀ है सक अस प्रयतनको ताकौ[१]॥
तब तो आज्ञा पाय सुदर्शन ❀ ऐसो कार्य कियो, प्रभु परसन।
श्रीब्रजमंडल ऊपर राजे ❀ सातरात दिन तहाँ विराजे॥
प्रलय प्रमान बरस्यो जल ताहीं ❀ ऊपरही सुखाय दिय आहीं।
ब्रज अवनीको नीक प्रकारा ❀ गीलोहू न भयो तिहँ बारा ११९

दो०-अरु श्रीयमुना जल अपी, बढ़यो न अंगुल एक।
या विधि जल शोषण कियो,ऊपरही सविवेक१२६

---

१ विचारी।

जा अवसर गिरिराज उठायो ❀ गिरिवरधर श्रीकृष्ण कहायो ।
ता अवसर छवि कही न जावै ❀ अहै अलौकिक मोद बढ़ावै ॥
जिन जिनको भो दरसन ताहीं ❀ अस आनन्द लह्यो उर माहीं ।
मूक मिठाई सम सो रह्यऊ ❀ वा माधुरी मग्न ते भयऊ ॥
रसालाप[1] आपुसमें करहीं ❀ तहँ या विधिके वच उच्चरहीं ।
श्रुवि अवतंस[2] रूप जो काना ❀ है याको लावण्य महाना ॥
सोउ अनौखो आज निहारौ ❀ अब लग नाहिं निरख्यो मनहारौ ।
कोउ कहत भैया छवि याकी ❀ पूर्व न लखी बात कहुँ पाकी ॥
कहँते सोह आइ इन पाहीं ❀ यह अचरज होवत मन माहीं ।
को कह भूल गयो तू भैया ❀ गिरिवरनें जो वचन कहैया १२०

दो०-कृष्ण मित्र मेरौ अहै, मो इन अन्तर नाहिं ।
यह शोभा वानैं दई, क्यों अचरज मन माहिं॥१२७

सो०-कोउ कहत सुन लेहु, मुख शोभा या कानकी ।
आज अनौखी एहु, परत दिखाई मो नयन ॥७४॥

शैल उठावन श्रमहू होई ❀ किन्तु रंच नहिं भासत सोई ।
मृदु मुसकान कहत जनु बाता ❀ है अभाव श्रमको साक्षाता ॥
तिम डहडहे कमल सम नैना ❀ जनु ते कह यहँ नहिं श्रमऐना ।
वस्तुत आज अपूरव शोभा ❀ दरस करत किहँ मन नहिं लोभा ॥

---

१ प्रेमभरी बोलन २ भूषण ।

एक औरहू भाखत ताहीं ❁ देखौ इन चतुराइ जु आहीं ।
एक हस्तपंकजके द्वारा ❁ अधरन वंशि वजाय सुढारा ॥
सुन्दर मनहर राग निराले ❁ जाय निकासत व्रज जन पाले ।
इम प्रिय वर्णन जो हिय भावै ❁ रसानन्द प्रकटतही जावै ॥
गिरि उठायकें छटा त्रिभंगी ❁ इक पग ठाड़े मृदुल सुअंगी ।
व्रजवासिनको मो श्रम जोई ❁ रंचहु कष्ट हिये नहिं होई ॥१२१

दो०-तासों द्योतन कर रहे, मोहिं न रंच प्रयास ।
औरहु गिरिधारन किये,बाढ्यो अहै हुलास ॥१२८॥

तावत मधुमंगल तहँ कहही ❁ अहो कृष्ण यदि मीतहि अहही ।
तौ इक बात मान ले मेरी ❁ यह जो मनहर मुरली तेरी ॥
ताहिं बजावै मत थल याहीं ❁ आशय अहै यही या माहीं ।
कहुँ मुरली निनादसें भाई ❁ गिर न परै करतें गिरिराई ॥
वा मुरली रव है मनहारी ❁ कहूं पिघल गै पाथर भारी ।
तो हे प्रियवयस्य फिर को है ❁ जासों तू रक्षा कर सोहै ॥
कारण वंशीकेर प्रतापू ❁ सुन्यो अहे या विधि हम आपू ।
याके शब्द सुनत गिरिधारी ! ❁ पिघल जाइँ पर्वतहू भारी ॥
सरिता जल स्तम्भन ह्वै जावै ❁ वा उलटे प्रवाह वहि आवै ।
तासों या अवसरके माहीं ❁ मत बजाय वंशी जो आहीं॥१२२

दो०-मित्रवर्ग जो अपर हे, कह प्रति साँवल गात ।
रे नटखट तोकों सदा,सूझहिं ऐसी बात ॥१२९॥

ये कुसुमासव गिरि है जोऊ ❀ बड़ उपद्रवतें रक्षक सोऊ ।
वंशि बजावै गिरि पिघलावै ❀ का पिघले पत्थरन उठावै ? ॥
वा उन पिघले पत्थर सेती ❀ हमें मार गेरैगो हेती ! ।
नहिं नहिं ऐसी बात न कबहू ❀ है सकही निश्चय कहि सबहू ॥
कोइ गोप बोलौ हे भैया ❀ गुप्त कोप जिहैं हृदय रहैया ।
देखौ ऐसे सुरपति केरी ❀ घृणा योग्य, मूढ़ता घनेरी ॥
सर्व सुहृद जो अहै कन्हाई ❀ तासों राखत वैर महाई ।
तब इक अपर गोप अस कह्यऊ ❀ बड़ अचरज मोरे हिय रह्यऊ ॥
नहिं जानें या वासव केरौ ❀ हरी नाम किहँ ब्राह्मण टेरौ ।
आशय यह हरि नाम जु अहही ❀ नन्दसुवनको उचितहु रहही १२३

दो०–है गोत्रोन्नेता[1] प्रकट, देखौ यह घनश्याम ।
इन्द्र गोत्रक्षय[2] कर अहै, सोचौ निज उर धाम १३०

सो०–ग्रहण करै नाकेश, शतकोटी जो वज्र है ।
हमरो ब्रजराकेश[3], सो शतकोटी[4] देय है ॥७५॥

पालै सुरपति पूर्वदिशाको ❀ कृष्ण पूर्ण कर सब आशाको ।
जब सब बात अहै विपरीता ❀ फिर नहिं जानें हम किहँ रीता ॥
या निर्लजनें जो हरि नामा ❀ धारण कियो मुदित उर धामा ।
कर समानता मोहनसेती ❀ तातें निन्द्य,[5] बात है एती ॥

१ पर्वतको उठायवे वारो २ पर्वतको नाश करवे वारो ३ ब्रजचन्द्र ४ सैकड़ान किरोड़ जे हैं तिन्हैं दे देय हैं ५ निन्दा करवे योग्य ।

पुन तहँ अपर गोप इक कहही ❁ मो मन बड़ अचरज यह रहही ।
प्रलय पवन अरु प्रलय समाना ❁ घन घट्टा ये अहैं महाना ॥
प्रलय सदृश दुर्दिन दुखदाई ❁ प्रलय वारि वर्षत दरसाई ।
सो हमको सब भ्रमही भयऊ ❁ वा काहूनें टोना कियऊ ॥
वा ये इन्द्रजालकी विद्या ❁ है विस्तारी घोष अविद्या ।
वस्तुत यह सब झूंठी बाता ❁ दीखत हैं देखौ प्रख्याता ॥१२४॥

दो०—कारण यह या थल विषे, भइ न काहुकी हान ।
तासौं सत्यहि सब मृषा, भय नहिं रंच प्रमान॥१३१

सो०-सखी श्यामला नाम, इतनेहीमें आयकें ।
करकैं दृष्टि ललाम, भानुनन्दिनी ओरकों ॥७६॥

हास्य करत भाखत है ताहीं ❁ सुनौ लाड़िली मो वच आहीं ।
मेरौ कह्यौ मान तू प्यारी ❁ जब लग गिरिधार्यौ गिरिधारी॥
तब लग निज नैननके कौना ❁ नाहिं चलावै अहैं जु टौना ।
कहुँ ऐसी न होय हे प्यारी ❁ इन नैनन विलोक बनवारी ॥
यदि वाकौ मन तुव दिशि आवै ❁ शैलओरतें चूकहि जावै ।
अरु जो नेकहु श्रीगिरिराजू ❁ झुक्यो कहूँ है महत अकाजू ॥
यासौं मान कह्यौ तू मेरौ ❁ यामें सबहिनकों हित हेरौ ।
वचन श्यामलाके सुन काना ❁ हँसी करत है अस जिय जाना ॥
तब मुसुकाय मंद मृदु श्यामा ❁ कहत श्यामला प्रति,सुन वामा! ।
निज मद मो माथे जिन पटकै ❁ येही तो तेरी हैं लटकैं ॥१२५॥

दो०–निज मन को समझाय ले, तूही सखी सयान।
तुम्हरे नैना चपल बड़, निज वश कर यह मान॥१३२

तावत एक सखा कह ताहीं ❀ श्री वृषभानुनन्दिनी पाहीं।
तू श्यामला वचनपै नेंकू ❀ मत दै ध्यान होय सविवेकू॥
देखौ तौ यह मित्र हमारौ ❀ वाकौ कछुहु न अहै विचारौ।
की मैनेहीं शैल उठायो ❀ देखौ मुख आकृति, हुलसायो॥
गिरिवर धर्यो वाईं कर माहीं ❀ दहिनें कर वंशी जो आहीं!
वाकौ मोद निमग्न बजावै ❀ निज ग्रीवा सानन्द फिरावै॥
हे नृप ब्रजवासिन मनमाहीं ❀ भाव माधुरी है जो ताहीं।
तिहँ वर्द्धन अरु सुदृढ़ करावन ❀ माधुरीको स्वाद हू बढ़ावन॥
या प्रकार प्रभु रचना कीनी ❀ निरखत विस्मय, बात न चीनी।
जो मोहन अवलग ब्रजवासी ❀ देख रहे बिन श्रम सहुलासी १२६

दो०–अकस्मात तिन देख लिय, बहुत पसीना देह।
तब भाखत भै गोप सब, अति आतुर युत नेह १३३

चलौ आशु सब विलम न कीजै ❀ लाला ओर दृष्टि निज दीजे।
सकल अंग में अहै पसीना ❀ बड़ो परिश्रम भो अस चीना॥
अब थक गयो अहै घनश्यामा ❀ या विधि भाखत वचन ललामा।
निज निज लठिया लेकर धाये ❀ लईं लगाय नीचे गिरिराये॥
तब मधुमंगल या विधि कह्यऊ ❀ वाह वाह कहु का है गयऊ।
कहा खुजावौ गिरि शिरमोरा ❀ जो लठिया लगाईं चहुँ ओरा॥

यह तो श्यामाको बल आयो ❀ तबहि कृष्ण गिरिराज उठायौ ।
यहँ प्रमाण को काम कहा है ❀ प्रतक्ष ही जो दीख रहा है ॥
वाम अंग श्री राधाजीको ❀ वाम हस्त पै गिरिवर नीको ।
अहै उठायो बिना प्रयासा ❀ औरहु मुख छबि अधिक प्रकासा ॥

दो०-ताते कृष्ण बिना नहीं, को अपि समरथ जोउ ।
श्रीगिरिवर धारण करै, रंच प्रयास न होउ ॥१३४॥

सो०-इम राधा सुन कान, मधुमंगलके वचनकों ।
मुखपै अंचल तान, मन्द मन्द विहँसन लगी ॥७७॥

फिर मधुमंगल भाखत भैया ❀ हँसौ घर बसौ नित सुख पैया ।
रोयो घर खोयो यह नीती ❀ जानत हूं तापै परतीती ॥
कहत कृष्ण मधुमंगल पाहीं ❀ अरे ढीठ तू मानै नाहीं ।
कहा लगाय रखी तैं हांसी ❀ कह मधुमंगल मो गर फांसी ॥
सदा नियत छूटैहू नाहीं ❀ कहा करों वयस्य ! कहु ताहीं ।
बस बस अब, हे कृष्ण कन्हाई ❀ लडुवन की ठहरन दै भाई ॥
बड़ी भूख लग रहि है आजू ❀ देहु प्रसाद अहो गिरिराजू ।
यहां सखा सब हँसें हँसावैं ❀ वहाँ गोप सब लठिया लावैं ॥
गिरिवर नीचे मुदित लगावैं ❀ अरु आपुसमें इम बतरावैं ।
मेरो तौ बल अधिकहि रहही ❀ मेरी जो यह लठिया अहही १२८

दो०-याहि सहारे है खड़ो, महाराज गिरिराय ।
पृथक पृथक इम गोप ते, झगरत निज मन भाय ॥

सो०—सुनकें उनकी वात, विहँसत मोहन मनहिं मन।
तिन प्रति साँवल गात, कहत, रहौ सावध सकल ॥

यदि तुम थामे रहु गिरिनाथा ❁ तौ सूधौ कर लउँ निज हाथा ।
तव तिन कह्यऊ हां हां भैया ❁ थाम रहे हम, चिन्त तजैया ॥
जव गोपन ऐसे तहँ कह्यऊ ❁ कृष्णोच्छा गिरि नीचै भयऊ ।
ल्हुड़क पुड़क हो सवनं पुकारा ❁ मरे मरे हे कृष्ण पियारा ॥
शीघ्रहि ऊँचौ कर गिरिराजू ❁ नाहिं तौ हम सव मरे हि आजू ।
तव ज्यों कौ त्यों थाम्यौ काना ❁ अरु तिन प्रति अस वचन वखाना ॥
क्यों रे तुम सव कह रहि अवही ❁ गिरि थाम्यौ है हम मिल सवही ।
गोप कहन लग प्रति घनश्यामा ❁ मधुमंगल वच सत्यहि जामा ॥
आप विना को समरथ नाहीं ❁ जोउ उठावै गिरि कौं याहीं ।
ता अवसर छवि मोहनकेरी ❁ भीतर वाह्य एक रस हेरी ॥१३९

दो०—वाहर संघन घटा अहै, नील वर्ण मन हार ।
भीतर अद्भुत है छटा, श्याम वर्ण सुकुमार ॥१३६

वाहर चमक अहै चपलाकी ❁ भीतर दमक सखी जनताकी ।
वाहर इन्द्र धनुष आकारा ❁ भीतर मोरपंख शृंगारा ॥
वाहर मेह जड़ी दरसाई ❁ भीतर लड़ी लुनाई[1] भाई ।
वाहर वादरकी घनघोरा ❁ भीतर मुरलीकी मृदुशोरा ॥

---

१ लावण्यता की ।

बाहर है झींगर झनकारा ❁ भीतर है नूरन सनकारा ।
या विधि भीतर बाहर शोभा ❁ को अस देखनहार, न लोभा ॥
किन्तू बाहर सूरज नाहीं ❁ भीतर एक अधिकता आहीं ।
जो श्रीकृष्ण कंठमें राजै ❁ कौस्तुभमणि सम सूर्य विराजै ॥
इम अनेक विधिको आनन्दा ❁ होय रह्यो पावत जन वृन्दा ।
तिहँ गिरिकेर गढ़ैला माहीं ❁ सकल गोप गोपिनके ताहीं १३०

दो०-सर्व उपद्रव नष्ट हैं, ते व्रजवासी वृन्द ।
ता अवसरको रसमयो, जानत भे सानन्द ॥१७८॥

सो०-अपर वासना त्याग, वाहीमें एकाग्र मन ।
कर रह दृढ़ अनुराग, कहा भाग्य इनके कहैं ॥७९॥

ब्राह्मण अरु यावत ब्रजवासी ❁ हैं आश्चर्ययुक्त सहुलासी ।
श्रीराधा अरु गोपिन वृन्दा ❁ स्नेहासक्त अहैं सानन्दा ॥
मधुमंगल आदिक सख जेऊ ❁ मग्न हास्य रसमें हैं तेऊ ।
सुबलादिक जे सखा सयाना ❁ रस उत्साह पूर्ण ते माना ॥
प्रीतीनिष्ठ सखा हैं आना ❁ निज निज काज निमग्न महाना ।
किन्तु भाव वात्सलसों माता ❁ तिहँ चित चैन नहीं साक्षाता ॥
भूख लगी होगी लालाकौं ❁ भयौ विचार उदय यशुदाकौं ।
अहैं मसाले विविध प्रकारा ❁ सुभग सुगंधित नूतन प्यारा ॥
सम कर्पूर सेत है जोई ❁ लाई माखन लौंदा सोई ।
धर्यो कृष्ण कर कंज यशोदा ❁ अरु भाखत है हिय बड़ मोदा १३१

दो०-बंशि बजानों छोड़ दे, अब तौ मेरे लाल।
पेट न भरे जु रात दिन, भल बजाय गोपाल? ॥१३८॥

सो०-तब मोहनके पाहिं, हँसत कह्यौ सखिजन तहाँ।
कछु समुझत मनमाहिं, किहँ बल गिरिवर धर लियो॥

हे लाला हमरो नवनीता ❀ जो चुराय खायौ युत भीता।
ता माखन बल धर गिरिराजू ❀ अचल होय ठाढ़े हो आजू॥
इत्यादिक गिरि धरन प्रसंगा ❀ अहैं सबन हिय महत उमंगा।
विविध बात बतरावत ताहीं ❀ बीते सात दिवस पल माहीं॥
तब तौ स्वयं शक्र तहँ आयौ ❀ जाकौ हियौ अतिहि घबरायो।
पुन जब देख्यो या ब्रजमाहीं ❀ हान भई लवलेशहु नाहीं॥
तब जो आकुलता तिहँ होई ❀ को वर्णन कर सकहीं सोई।
कछु सावध ह्वै भाखत ताहीं ❀ जाउ मेघगण निजथल माहीं॥
इन्द्राज्ञा जब घन गण पाई ❀ तुरतहि भवन गये हरषाई।
सात दिवस लग घोष मँझारा ❀ भूख प्यास कर गई किनारा १३२

दो०-आशय यह ब्रजके विषे, कृष्ण कृपा परताप।
लगो न ब्रजवासीनको, भूख प्यासको ताप॥१३९॥

सो०-देखत ही रह नैन, मोहन मुख मधुरी छवी।
सात दिवस युत चैन, पल सम बीते सबनको॥८१॥

नष्ट भयो वासव अभिमाना ❀ भ्रष्ट भये संकल्प जु नाना।
किये निवारण घन गण ताहीं ❀ तेऊ ब्रजतें हट गै आहीं॥

भास्कर[१] उदय भयौ ततकाला ❀ घन तम[२] हट गो हे भूपाला ।
बंद भये वर्षा अरु वाता ❀ तब भाख्यौ तहँ साँवल गाता ॥
हे भैया शचिपति भय गयऊ ❀ मेहादिक जो कछुहू रह्यऊ ।
सो सब बंद भयौ है अवही ❀ बाहर जाय विलोको सबही ॥
यमुना अरु तलावको पानी ❀ नेंकहु नहिं बाढ़्यौ,अस जानी ।
निकसौ गिरिवरतें अब आपू ❀ सुमरत श्रीगिरिराज प्रतापू ॥
कृष्ण वचन सुन गोपन वृन्दा ❀ आगे कर गोधन सानन्दा ।
निकसे गिरितें मुदित महाना ❀ घर उपकरन संग लइ नाना १३३

दो०—जावत भे निज निज सदन,कहत कृष्ण तिन पाहिं ।
मोसों श्रीगिरिराज कह,तुमप्रति भाखत ताहिं॥१४०

सो०—अहो कृष्ण मो भीत, मुहिं मेरे अस्थानपै ।
तज वासवकी भीत, थापन कर तज विलमको॥८२

सवन कही वस्तू रहि नाहीं ❀ करहु विराजमान जस चाहीं ।
व्रजवासिन वच सुनत कन्हाई ❀ यथास्थान राख्यौ गिरिराई ॥
जवहि विराजमान किय काना ❀ भइ तहँ जय जय धुनी महाना ।
तबहि आशुअति यशुमति मैया ❀ अरु नँदबाबा कहत कन्हैया ॥
वात्सल्य प्रेममग्न द्वौ धाये ❀ वक्ष लगाय अतिहि हरषाये ।
कियौ गाढ़ आलिंगन ताहीं ❀ आनन्दाश्रु वहत चख माहीं ॥

१—सूर्य २—बादरनको अंधकार ।

दोउन सूंघ्योशिर हरि केरौ ❀ बार बार सबअंगन हेरौ।
तब तौ सब ब्रजवासी धाये ❀ प्रेमाकुल है वक्ष लगाये॥
वयोवृद्ध देवहिं असीसा ❀ लाला जीवौ कोटि वरीशा।
यशुमति रोहिणि अरु ब्रजराई ❀ बलिनमाहिं वर श्रीबल भाई॥१३४

दो०-बार बार है नेह वश, आलिंगन कर कान।
विविध असीसा दे रहे मंगल अवसर जान॥१४१॥

को कह कोटि वरस तुम जीवौ ❀ को कह नित चिरजीव रहीवौ।
को कह कड़ुवे नीम[1] समाना ❀ बड़ो होउ, आसीस बखाना॥
नभतें अमर वृन्द हरषाई ❀ फूलनकी वरसा बरसाई।
गंध्रव गोविंदको यश गावैं ❀ स्तुती करंत चारण हरषावैं॥
सिद्ध साध्य निज हिय पुलकाई ❀ जय जय हो की धुनी मचाई।
शंख दुन्दुभी आदिक बाजे ❀ देव बजावत गगन विराजे॥
स्वर्ग अप्सरा आन न राचैं ❀ ता थेई ता थेई नाचैं।
ता पश्चात कृष्ण बलरामा ❀ द्वौ भैया जिन सोह ललामा॥
ग्वाल बाल जे अपनें प्यारे ❀ मित्रवर्ग मिल मोद अपारे।
वंशिबजावत गीतहु गावत ❀ बरसावत आनन्द सुहावत॥१३५

दो०-उमगावत हैं प्रेमको, नन्दगाँवके माहिं।
प्रविशत भे आल्हाद युत. को कवि कह छवि ताहिं॥१४२

१—अर्थात् नीमके वृक्ष।

सो०-तिम गोपिन के वृन्द, बैठ बैठ सकटन सुभग।
गावत गुन सानन्द, व्रज प्रवेश करती भई ॥८३॥

इति श्रीकृष्णायने चतुर्थ गिरिराज द्वारे सप्तम सोपान समाप्त।

कह नारद सुन मैथिल राई ❀ या प्रकार व्रजजन समुदाई।
सायं समय घोषमें गयऊ ❀ निज निज सदन प्रवेशहु कियऊ॥
इन्द्र उपद्रव से कछु हानी ❀ भइ तौ नाहिं, अस संशय आनी।
देखे निज निकेत व्रजवासी ❀ नहिं विलोक, हिय भये हुलासी॥
किय भोजन सबहिन हुलसाई ❀ किन्तु हिये आश्चर्य महाई।
सात दिवस इक छुगनी ऊपर ❀ किम गिरिराज उठायो मनहर॥
या विचार में नींद न आई ❀ या मिस गायौ सुजस कन्हाई।
यथास्थान गिरि कों भगवाना ❀ थापन कर व्रज कियो पयाना॥
सिंह पौर पे पहुँचे आई ❀ यहां रोहिणी, यशुमति माई।
कंचनमय इक थार सजायौ ❀ जव वंशीस्वर श्रवणन आयौ १२६

दो०-तवहि बधाये गवन लग, मिलकें ब्रज की वाम।
थार माहिं मुख चार को, दीपक धर्यौ ललाम॥१४२

सो०-सिंह पौर पै आय, राम श्याम द्वौ भाय कौ।
रोम रोम पुलकाय, ओहे उतारो आरतौ॥८४॥

मोहर बहुत निछावर कीनी ❀ राम कृष्ण छवि अहै नवीनी ।
फिर इक इक हाथन द्वौ मैया ❀ इक इक हाथ पकर द्वौ भैया ॥
भीतर महलन में ले गयऊ ❀ राई नौंन उतारत भयऊ ।
अहै सकल शृंगार बढ़ायौ ❀ किय सब तन उबटन सुखदायौ ॥
निज निज हाथन अतर लगायौ ❀ मीड़ मीड़ के स्नान करायौ ।
पौंछ्यौ अंग अंगोछन सेती ❀ हलको कियौ शृंगार सुचेती ॥
रत्न जटित चौकी द्वौ भैया ❀ अहैं बिठाये, लेत बलैया ।
खट्टे मीठे और सलौने ❀ हैं चरपरे आदि अनहौनें[1] ॥
या विधि भोजन विविध प्रकारा ❀ ले आंई धर थार मँझारा ।
भोजन अपनें हाथ करायौ ❀ नेत्र झुकत, यशुमति लख पायौ ॥

दो०-मैया कह लाला कहा, झोटा लेत दिखाउ ।
हां मैया मुहिं नींद अब, आवत अहै, सुवाउ १४४

झट मुख माजन मातु करायो ❀ अरु थोरो सो दूध पिवायो ।
ता पाछे कुल्ला करवायो ❀ फेर पान बीराहु खवायो ॥
सुभग चित्रसारी के माहीं ❀ दिय पौढ़ाय तल्प[2] पै ताहीं ।
औरहु सब प्रबन्ध कर आंई ❀ सुखसों द्वौ सोये, हुलसाई ॥
ता रजनी जागरण करायौ ❀ बड़ी भोर आई, सुखपायौ ।
बाँटे लड्डू और बतासे ❀ गाय बधाये हिये हुलासे ॥

१—भाव यह कि ऐसे स्नेहावेश से बने हैं जो फिर ऐसे पदार्थ बनना ही असम्भव है या सौं "अनहोने" शब्द कह्यौ है २—पलंग ।

या विधि रजनी अहै बिताई ❀ सबहिन हिय आनन्द मनाई।
भयो सवेरो गोपन वृन्दा ❀ निज निज घरमें उठ सानन्दा॥
नित्य कृत्य कर शिर पागोटा ❀ घेरदार जामा बड़ जोटा।
फेंटा बाँध हाथ लइ लाठी ❀ बैठे जाय अथांही भ्फाठी[1] ॥१३८

दो०-जो कोई आयौ नहीं, तिहँ अपि लियौ बुलाय।
तावत श्री व्रजराजहू, तिन तट पहुँचे आय॥१४५॥

सबहिन बीच विराजे आई ❀ किय सन्मान गोप समुदाई।
अब तौ नन्दराय दिसि ताँकें[2] ❀ है कछु कहनों तासौं ताँकें[3] ॥
सेना बुत्ती होवन लागी ❀ एक बात है तिन उर जागी।
सोई समभ्फ गये व्रजराई ❀ भोरे हैं अरु चतुर महाई॥
या विधि निज हिय कियौ विचारौ ❀ कछुक दारमें दीखत कारौ।
वह गोपन सों आज कहा है ❀ सेना बुत्ती होय रहा है॥
तब सब गोप एक मुख होई ❀ कह व्रजराज पाहिं सुन सोई।
भैया नन्दराय ! सब माहीं ❀ अहै बड़ौ तू, सांची आहीं॥
राजाहू तू अहै हमारौ ❀ हम सबहिन आसरौ तिहारौ।
आज आपसों पूंछत बाता ❀ सांचहि कहि दीजौ हे ताता॥१३९

दो०-नन्द कहत गोपन प्रती, कहौ कहा है बात।
सांची ही कहि देउंगो, शपथ सांवरे गात॥१४६॥

---

१ मोटी (बहुत लम्बी चौड़ी) २ निहारैं ३ उन गोपन की आपुस में।

सो०-सुनौ कान दै बात, कहत गोप व्रजराज प्रति ।
शपथ काहिको खात, हमैं भरोसो तुववचन ॥ ८५ ॥

इतनोही तौ बात हमारी ❀ यह जो लाला है गिरिधारी ।
यामैं संशय अहै हमारौ ❀ कैसे भो यह पुत्र तुम्हारौ ॥
अहै कौन कहँते व्रज आयौ ❀ कौन बलाय आय प्रकटायौ ।
सांचौ सांचौ भेद जु होई ❀ आज सुनावौ हमप्रति सोई ॥
बाबा झूठ हमहुँ कहिं नाहीं ❀ कछु बिचार देखौ हिय माहीं ।
या लालाके बालपनेते ❀ अहैं अनोखे कारज जेते ॥
कहु हम ग्वालनके घर माहीं ❀ अस बालकजनम्यौ किम आहीं ।
याकी सात बरष वय चीनों ❀ सात दिवस गिरिधारण कीनों ॥
यथा उठाय कुसुम करिनाथा ❀ तथा उठायौ एकहि हाथा ।
अपर गोप भाखत रे भैया ❀ सात बरषकौ आज कन्हैया १४०

दो०-वा दिनको सुमरण करौ, सौवड़कौ जब लाल ।
जब लग आंखहु नहिं खुली भयो पूतना काल १४७

महा भयंकर घातक जेहा ❀ देख्यो हतो पूतना देहा ? ।
षष्ठकोश हो लम्बौ चौरो ❀ जो देखै सो होवै बौरो ॥
वाके स्तन पीये वा प्राना ❀ नेंकन देरिलगी किय हाना ।
अरु जब तीन मासकौ काना ❀ कहा कियौ सुन अपने काना ॥

याके वधकी जिहँ अभिलासा ❀ उतकच[1] किय गाढ़ेमें वासा ।
वाकौ जान लियो गिरिधारी ❀ एक पांवसों ठोकर मारी ॥
यदि शत नर मिल वा गाढ़ाको ❀ आय हलावैं हलै न आकौ[2] ।
ता गाढ़ाके टूक अनेकू ❀ यानें कर दिय श्रम नहिं नेकू ॥
एक वरषको जब यह भयऊ ❀ आंगनमें जो खेलत रह्यऊ ।
तृणावर्त ले गो नभ माहीं ❀ वाकी नाड़ घोटकर ताहीं ॥१४१

दो०—वज्रशिलापै आशुही, पटकौ या विधि कान ।
गिरे बाद नहिं सांस लिय, मरौ हरौ तिहँ प्रान॥१४८

जा दिन याकी माखन चोरी ❀ दही माँट जब यानें फोरी ।
या ऊधमतें यशुमति मैया ❀ ऊखलसों दिय बाँध कन्हैया ॥
ता दिन बड़े पुरातन दोऊ ❀ यमलार्जुन तरु अति दृढ़ जोऊ ।
बाँधे जाइँ बड़े मातंगा ❀ नहिं हिलाय सकहीं तरुअंगा ॥
ते द्रुम नहिं जानें तुव लाला ❀ दिय गिराय किहँविधि व्रजपाला ॥
जब यह पांच वरषको भयऊ ❀ वत्स चरावन वनमें गयऊ ॥
इन वध हेतु बकासुर आयौ ❀ चौंच फार तिहँ मार गिरायौ ।
उन्हीं दिनन वत्सासुर आयो ❀ बछरन में निज रूप छिपायौ ॥
दोऊ पांव पकरकें पाकौ ❀ घूम घुमाय चहूँदिसि वाकौ ।
कैथ वृक्षपै ऐसो मारो ❀ शतशः कैथतरहु संहारौ ॥१४२

१ शकटासुर २ थोरोसो ।

दो०-इम सहजहि ध्वंसन कियौ, वत्सासुरको कान ।
डरें सदा जाकौ निरख, बड़ें बड़े बलवान ॥१४६॥

सो०-गये ताल वन माहिं, धेनु चरावन कृष्ण बल ।
करत वास वन ताहिं, बली धेनुकासुर सदा ॥ ८६ ॥

जाके डर सुर समरथ नाहीं ❀ जो जावहीं तालवन माहीं ।
जाय जीवतो घर नहिं आवे ❀ अस समर्थ वो असुर कहावे ॥
वाकौ बलकर ध्वंस करायौ ❀ सोउ मनहुँ तहँ खेल रचायौ ।
तिम बल हाथ असुर बल धामा ❀ प्रलम्बासुर हो जाकौ नामा ॥
मरवायौ सहजहिं तुव काना ❀ लगी मूंज वन आग महाना ।
कहा तहाँ बचते गौ ग्वाला ❀ सबहिन आंख मिचाई लाला ॥
मुख पसार अग्नि किय पाना ❀ ग्वालबाल गौवनके प्राना ।
या विधि लिये बचाय कन्हाई ❀ कहो कौन कर इन समताई ॥
काली अहि यमुनादह माहीं ❀ अतिहि विषैलौ वसत तहांहीं ।
ताहि दमन कर यह तुव लाला ❀ फण फणपै कियनृत्य विशाला १४३

दो०-वाको मद मर्दन कियौ, निज आज्ञासौं ताहिं ।
अहै निकास्यौ यमुनतें, असप्रताप जिहँ आहिं॥१५०

या प्रकार यमुनाको पानी ❀ विष वर्जित किय, निजबल मानी ।
या विधिके हैं अमित प्रसंगा ❀ है अचरजमय यह वनरंगा ॥
हम व्रजवासिनकौ जु सनेहा ❀ यामें दुस्त्यज सहजहि एहा ।
जिम गोपीन हियेकी प्रीती ❀ अनुपम इकरस सुदृढ़ प्रतीती ॥

पति पितु सुत भ्रातादिक अहहीं ❀ लोक वेद नातो जो कहहीं ।
सो सब तोर दियौ हियसेती ❀ एकहि कृष्ण लगन मन जेती ॥
याहिके अनुराग सु रंगी ❀ होय रहीं बाँवरी सु अंगी ।
ब्रज बारन देखौ कस नेहा ❀ एक श्यामही तिन उर गेहा ॥
पहिरन खेलन खावन पावन ❀ सोवन आदि कर्म हैं जीवन ।
तिन्हैं त्याग मोहन अनुरागा ❀ रहैं मग्न इक श्यामहिं पागा१४४

दो०-गौवें जबहीं निरखहीं, मन मोहन छविरास ।
नहिं निगलें उगलें नहीं, परा रहै यूं घास ॥१५१॥

सो०-ठाड़ीही रहि जाँइ, चित्र सदृश ते अचलही ।
श्याम नेह सुख पाइ, या विधि गौवें निज हियें॥८७॥

वर[१] धेनु जे ब्रजके माहीं ❀ शतश गोप वश कर सक नाहीं।
तिनपै केवल हाथ फिरावैं ❀ तौ ते सरल प्रकृति ह्वै जावैं ॥
कोकिल मोर चकोर विहंगा ❀ आदि अनेकन पक्षि सुरंगा ।
निजकी गति मतिको बिसराई ❀ चित्र सदृश ह्वै देख कन्हाई ॥
याहीको त्राटक सम देखैं ❀ भूलेहू अन्यत्र न पेखैं ।
हरिणी हरिण निहारहिं काना ❀ चूकें निज छलांग, सुधि हाना[२]॥
जावहिं विछुट झुंडसे जेऊ ❀ इक टक मोहन निरखैं तेऊ ।
औरन की हम कहा बखानैं ❀ निज अन्तर की ठीकहि जानैं ॥

१ मर्खनी २ जिनको और कुछ भी सुध नहिं ।

स्वयं हमहुं लख श्याम ललामा ❀ पुत्र कलत्र आदि धन धामा।
वाणिज्य व्यवसाय सनेहा ❀ त्याग सर्वथा निज उर गेहा१४५

दो०-याही को दिनरात हम, लाड़ लड़ावन माहिं।
बने रहे सब बाँवरे, कहा बात यह आहिं ॥१५२॥

जिम हम सबहिनकी जो प्रीती ❀ है दुस्त्यज अरु सुदृढ़ प्रतीती।
तिम मनमोहनके उर नेहा ❀ है हमरौ प्रतत्वही एहा॥
सोउ सहज अरु सुदृढ़ महाना ❀ है दुस्त्यज इम हमनें माना।
याकौ कारण हम नहिं जानें ❀ द्वौ दिसि अहै प्रेम अप्रमानें॥
कहत नन्द गोपन के पाहीं ❀ ब्रजजन प्रेम जु मोहन माहीं।
दुस्त्यज सहज सुदृढ़ जो होऊ ❀ तिम लालाको तुममें जोऊ॥
या सनेहको भाव यही है ❀ औत्पात्तिक याहिको कही है।
गुण उत्पति के संग जु होई ❀ तुम औत्पत्तिक जानौ सोई॥
यथा विष्णुपद[1] पदकौ परसे ❀ कटिपीरा[2] मिटही अरु हरसे।
आशय यह जन्महिंके साथा ❀ यह गुण रहत प्रकट जग गाथा॥

दो०-तथा परस्पर प्रीति जो, जन्महि से दरसाय।
गुणसौं नहिं सम्बन्ध तिहँ, सहजहि हिय प्रकटाय॥

नन्द वचन सुन पुन तिन कह्यऊ ❀ तुव लाला कृत, सुन जे रह्यऊ।
कहा कहैं हम याकी बाता ❀ जेती हैं सब अचरज दाता॥

१—जो पैर के बल जन्मे २ त्रक दर्द।

जो कछु बीती बीतन दीजे ❀ अबकी नई बात उर लीजे ।
जो सबके ऊपर ह्वै गइ है ❀ ऐसी बात न कबहू भइ है ॥
कहँ यह सात बरसकौ मानौं ❀ सात दिवस कहँ गिरहिं उठानौं ।
सो अपि एक वाम कर केरी ❀ छुगनी अंगुरी पै हम हेरी ॥
यासों दै बताय ब्रजराजू ❀ सांची ही कहियौ तुम आजू ।
गोपन वचन सुनै जब नन्दा ❀ बिहँसत नन्द कहत सानन्दा ॥
कहा भूल गै गिरिवर बानी ❀ अबही तुम्हरे निकट बखानी ।
याकों मो अंगहि पहिचानौं ❀ मो इन अन्तर भेद न मानौं १४७

दो०–गिरिवरको जु प्रभाव है, जानौ तुम विधि नीक ।
शक्रसदृश देवेशकी, चली न शक्ती ठीक ॥१५४॥

अस गिरिराज वचन विश्वासा ❀ कहा नहीं, है शंक विनासा ।
पूजन समय कह्यौ सब पाहीं ❀ यदि को कष्ट परै ब्रज माहीं ॥
तौ तुम या मोहन प्रति भाखें ❀ ये विध्वंस करें, नाहिं राखें ।
मो करुणा यापै रह नीता ❀ कारण यह, यह मेरो मीता ॥
अब प्रथमहु की बात सुनावौं ❀ तुम सबहिन हिय शंक मिटावौं ।
एक मास कौ भौ जब लाला ❀ माह वदी गुरुवार विशाला ॥
मधुपुरिसे ऋषि गर्ग पधारे ❀ कियौ सु पूजन विविध प्रकारे ।
अरु सविनय भाख्यौ मैं ताहीं ❀ ये द्वै मो लाला जो आहीं ॥
इनकौ नामकरण करि जावो ❀ या विधि मेरौ हिय हुलसावौ ।
तब ऋषिवर श्रीगर्ग बखाना ❀ यदुन पुरोहित मैं, जग जाना १४८

दो०-जो मैं नामकरण करौं, अरु सुरारि[1] सुधि पाय।
तौ अनर्थ वड़ होवही, कहि मैंने मुनिराय॥१५५॥

गुप्त स्थान पधारैं आसू ❀ और काहु प्रति है न प्रकासू।
मो विनती मानी सानन्दा ❀ वा अवसर मुहिं कहि हे नन्दा॥
यह जु आपको लाल सुहावै ❀ कृष्ण वर्णते कृष्ण कहावै।
वासुदेव अपि याकौ नामा ❀ होय लाल यह सब गुण धामा॥
इन गुण यश श्री कर्म प्रभावा ❀ अहै बहुत आश्चर्य जनावा।
गो गोपन कुल आनँदकारी ❀ ब्रज के सब दुख ध्वंसनहारी॥
यही होयगो निश्चय जानौं ❀ और अधिक मैं कहा वखानौं।
इन लक्षन भान अस चीता ❀ नारायन सम होय प्रतीता॥
तुम याहीकों लाड़ लड़ावौ ❀ याहीते सब विधि सुख पावौ।
मेरौ गर्ग वचन विश्वासा ❀ ताते रंच न शंक निवासा॥१४९

दो०-गर्ग गीत ब्रजराज मुख, सुन्यो जु गोपनवृन्द।
नष्ट भयौ संशय सकल, उपज्यौ उर आनन्द॥१५६

सो०-ब्रजवासिन के भाग, वसन्त को अस, कह सकै।
जिनकौ दृढ़ अनुराग, अकथ अलौकिक कृष्णमें॥८८

इति श्रीकृष्णायने चतुर्थ गिरिराज द्वारे अष्टम सोपान समाप्त।

---

१ कंस।

कह मुनि सुन वहुलाश्व नृपाला ❀ अब आगेकी कथा रसाला ।
दीपमालिकाके दिन गोपा ❀ इन्द्र यज्ञके उद्यम रोपा ॥
कार्तिक सुदि पड़वा तिथि माहीं ❀ गिरिवर पूजा भइ है ताहीं ।
कार्तिक सुदी दूज दिन काना ❀ वहिन भवन में कियौ पयाना॥
ता दिन सुरपतिनें सुधि पाई ❀ मो पूजा ब्रज जनन मिटाई ।
भयो कुपित जल प्रलय समाना ❀ वरसायौ ब्रजपै मनमाना ॥
कार्तिक सुदी तीज जब आई ❀ लिय उठाय गिरिराज कन्हाई ।
कार्तिक सुदि नवमी लग सोई ❀ धार रहे गिरि विनश्रम होई ॥
कार्तिक सुदि दसमी ब्रज माहीं ❀ भइ पंचायत गोपन ताहीं ।
शुक्लपक्ष शुभ कार्तिक मासा ❀ तिथि एकादशी पुण्य प्रकासा१५०

दो०-तादिनकी गाथा कहों, सुनौ एक चित होय ।
मघवा[1] मद मर्दन भयौ, खुले नैन अब दोय॥१५७

मनमें कह मुहिं बड़ अभिमाना ❀ ता वश किय अपराध महाना ।
कृष्ण कृपा मद मर्दन भयऊ ❀ मो घमंड कहुँ जातो रहाऊ ॥
हा हा प्रभुनें मेरे कारन ❀ कीनों बड़ो परिश्रम धारन ।
अब अपराध अपन अति आसू ❀ क्षमा करावौं जा तिन पासू ॥
यह विचार कर पद्मज पाहीं ❀ जाय दुःख रोयो सब ताहीं ।
कह अज बड़ अपराध तुम्हारो ❀ क्षमा करावो देरि न डारो ॥

१ इन्द्र ।

व्रजमें वत्सहरणके काला ❀ कहा कहौं निज मुख स्वरपाला ।
बूढ़ी डाढ़ी पे मैं धूरी ❀ डार चुक्यौ, मदवश मतिदूरी[1] ॥
विधिके वचन श्रवण कर काना ❀ शुनासीर[2] पछताय महाना ।
लेकैं सुरभीको निज साथा ❀ चल्यौ स्वर्गतें द्रुत सुरनाथा॥ १५१

दो०-भक्त भाव रक्षक सदा, अहैं कौतुकी कान ।
जान्यौ अपनें हृदयमें, इन्द्रगर्व भो हान ॥ १५८ ॥

अब पछताय अपन उर माहीं ❀ आवत है व्रजमें मो पाहीं ।
इम प्रस्थान[3] इन्द्रकौ जान्यौ ❀ अस विचार निज उरमें आन्यौ ॥
अबही तौ गोपन समुदाई ❀ जिनके हिय आश्चर्य महाई ।
जो मनुष्यसे ह्वै सक नाहीं ❀ अस लीला विलोक उर माहीं ॥
मो विषयक शंका उपजाई ❀ बाबा प्रति, सो सकल सुनाई ।
यथा कथंचित गोपनकेरौ ❀ गर्गगीतसों कियौ निबेरौ ॥
अब यदि इन सामनें सुरेशा ❀ आवै मो तट या ब्रज देशा ।
निज अपराध क्षमावन चाही ❀ करही स्तुति प्रणाम मो पाहीं ।
तौ माधुर्य नाट्यमयि लीला ❀ स्वाद विलक्षण देवन शीला ।
उद्घाटन ह्वै जावै सोऊ ❀ तिहिं सम्पूर्ण रहस है जोऊ॥ १५२

दो०-अब प्रकाशमें कृष्ण कह, सुनौ गोप समुदाय ।
आज खोय गई हैं कहूँ, मेरी श्यामा गाय ॥ १५९ ॥

१—बुद्धिहीन होगया २ इन्द्र ३ स्वर्गतें रवानौं होनौं ।

सो०-तुम सब या थल माहिं, रहौ वचन मो मानकर ।
जब लग आवहुँ नाहिं, श्यामा गौकों खोजकैं ॥८६॥

श्रीगिरिराज तरहटी माहीं ❀ बड़ी सचिक्करण सुन्दर ताहीं ।
श्रीगिरिराज शिला मनहारी ❀ जाय तहाँ राजे गिरिधारी ॥
जोउ अनन्त ब्रह्मण्डन स्वामी ❀ कारणके कारण परधामी ।
गोपेश्वर मन मानस माहीं ❀ हंस समान विराजत आहीं ॥
सनकादिक योगीश्वर नीता ❀ गावैं गुन संतत युत प्रीता ।
ब्रह्मादिक जिहँ भेद न पावैं ❀ नेति नेति कह वेद बतावैं ॥
ते प्रभु आज शिलापे राजे ❀ जिनैं देख शतकन्द्रप लाजें ।
श्रीगिरिवरकी सोह निहारें ❀ व्रज महिमाको हिये विचारें ॥
या विधि प्रभु विविक्तथल सोहैं ❀ योगीश्वर ईश्वर लख मोहैं ।
ता सुन्दर थल शचिपति आयौ ❀ कृष्ण देखहिय बड़ो लजायौ १५३

दो०-सम अपराधी नम्र ह्वै, पाद कंज भगवान ।
गिरि गो दंड समान त्वर, कर सम्पुट द्वौ पान[1] १५०

सो०-शिरसों किरिट उतार, सूर्य सदृश जिहँ चमकही ।
जय जय वदन उचार, प्रभु पाँवनमें पटक दिय ॥६०

लाज समन्वित[2] जोइ, सन्मुख निज द्वौ जोर कर ।
कृष्णास्तव मुद होइ, भाखत गद गद वचनसों ॥६१

१—हाथ २-भराहुआ ।

छन्द

छुन्द—देव देव दयानिधान सुजान सम्यक[1] नेहके ।
परम ईश्वर पूर्णप्रभुवर श्रेय कर जन देहके ॥
पुरुष सत्तम नाशकर तम मित्र अरि सम आपको ।
श्रीपरात्पर प्रकृतिपर वर आशु मो हर पापको ॥ १ ॥
रच्छ रच्छ अदच्छ[2] तुव तट है प्रतच्छ कुदास जो ।
देह बहु धरि लीन सुधि हरि धर्म गो श्रुति स्वासजो ॥
तिम प्रकट भे भक्त वृन्दन कर अनुग्रह आपजी ।
असुर कंसादिकन बध हित, महत है परतापजी ॥ २ ॥
मायया मोहित भयो चित मद उद्धत[3] यह बाल है ।
दोषभाजन जान प्रभु नहिं त्याग उचित विशाल[4] है॥
जिम जनक निज पुत्र हेलन छमै,तिम करुणा करौ ।
पाद पद्मन प्रेम निशदिन देहु, मो शिर कर धरौ ॥ ३ ॥
शैलवर धर गोप हित कर दुःख हर गोपालजी ।
सरस वृन्दाविपिन बस,कर ललित लीला लालजी ॥
मोहनों यह सोहनों यह, रूप अतिहि अनूप है ।
कोटिमन्मथ[5] वृन्द मन्मथ[6] अस अलौकिक रूप है ॥ ४ ॥
भक्त पोषक कष्ट शोषक मोद वर्द्धक अपर नहिं ।
गोप पति निजभक्त गति,पद प्रेम दैं अनुचर इहिं ॥
राधिका पति सखिन रति गो वृन्द गति रत्नाकरौ ।
नन्द नृपकुल दीपसम फुल[7] निन निराकुल[8] दुखहरौ॥५॥

---

१ अच्छी तरहसे २ मूर्ख ३ अभिमान करके ढीठ ४ सुन्दर ५ कामदेव ६ मनको मथनेवाला ७ प्रकाशित ८ आनन्द स्वरूप ।

कृष्णचन्द गुविन्द दै मकरन्द निज पद पद्मकी ।
स्वामि अन्तरयामि दै सुख धामि सेवा सद्मकी ॥
अंड अगणित पति परात्पर आप परिपूरणतमा ।
धाम श्रीगोलोक बस भगवत स्वयं परमातमा ॥ ६ ॥
करत लील[1] सुशील प्रद वर पील[2] अम्बर धरत हो ।
चरत ब्रजमें सुरभि रजमें भक्ति स्त्रजमें[3] वरत हो ॥
धर अधर वंशी लकुट कर गति त्रिभङ्ग विराजते ।
सबलराम अकाम सब पर धाम घोषहि राजते ॥ ७ ॥
नमन पुन पुन पाद पद्मन प्रीति युन नितही प्रभो ।
करत,धर निज माथ दीजै साथ अनुचर लख विभो ॥
भक्ति निज पद कञ्ज दीजै शक्ति तुव गुन उचरौं ।
सबल नमहु बसन्त पुण्यद पाद पद्मन, सुख वरौं ॥ ८ ॥

कह मुनि कृष्णास्तव नाकेशा ❀ गायो नेह धार उर देशा ।
तब मँद मुस्कन युत भगवाना ❀ वासव प्रति अस वचन बखाना ॥
हे मघवन ! करुणा अभिलासा ❀ तुम्हरौ यज्ञ कियौ मैं नासा ।
यामैं कारण रह्यऊ जोऊ ❀ सुन सावध मति अब तू सोऊ ॥
इन्द्रपनेंकी लक्ष्मी सेती ❀ भो मदान्ध अति,मति नहिं चेती ।
मो सुमरण भुलाय तैं दीनौं ❀ नेंकहु निज हिय भय नहिं कीनौं ॥
सो मैं अपनों स्मरण करावन ❀ किय खंडन मख तुव मनभावन ।
आशय यह प्रभुता मद माहीं ❀ जे जन अन्ध, लखैं मुहिं नाहीं ॥

१ लीला २ पीताम्बर ३ उत्पतिस्थान (जहाँ भक्ति है तहां)

तिनपै करुणा करन विचारौं ❀ दंडहि दैन उचित उर धारौं।
तासौं त्वर ता सम्पतिसेती ❀ करौं भ्रष्ट तिन, तब लैं चेती ॥

दो०—शक्र तुम्हारौ श्रेय है, जाउ अपन अधिकार।
तज घमंड अभिमान तज, मो आज्ञा उर धार१६१

सो०—दंड प्रदाता नाहिं, हौं स्वतन्त्र, को मो सदृश।
या विधि हियके माहिं, लहर उठीं, मद जन्म लिय६२

मद प्रकटत फूलै उर माहीं ❀ मुहिं फूलन कबहू रुच नाहीं।
मुखकौ मूंद रहत जबलगही ❀ कली भली जानौं तबलगही ॥
कली फूलकी जबही फूलो ❀ देहुँ डारतें डार सुझूली[1]।
हे सुरेन्द्र मो प्रकृतिहि अहही ❀ देखौं जा उरमें मद रहही ॥
बिन विलम्ब कर देहुँ विनासा ❀ कारण यहि, करुणा अभिलासा।
याते मद भञ्जन मो नामा ❀ स्मरण राख तू निज उर धामा ॥
अति गम्भीर वचन सुन काना ❀ क्षमा कराय दोष मघवाना[2]।
सन्मुख कर जोरें थित रह्याऊ ❀ मोहन छवि निरखन मन चह्याऊ॥
सुरभी कामधेनु हरषाई ❀ निज सन्तान साथ तहँ लाई।
श्रीव्रजनन्दन चरणन माहीं ❀ कियो प्रणाम प्रेमयुत ताहीं१५५

दो०—ईश्वर गोपस्वरूप धर, नन्द सुवनके नाम।
तिनसों आज्ञा माँगके, करत स्तुती ललाम॥१६२

१— जो कली डार में सुन्दर झूल रही थी २ इन्द्र।

कृष्णचन्द गुविन्द दै मकरन्द निज पद पद्मकी ।
स्वामि अन्तरयामि दै सुख धामि सेवा सद्मकी ॥
अंड अगणित पति परात्पर आप परिपूरणतमा ।
धाम श्रीगोलोक बस भगवत स्वयं परमातमा ॥ ६ ॥
करत लील[१] सुशील प्रद वर पील[२] अम्बँर धरँत हो ।
चरत व्रजमें सुरभि रजमें भक्ति स्त्रजमें[३] वरत हो ॥
धर अधर वंशी लकुट कर गति त्रिभङ्ग विराजते ।
सबलराम अकाम सब पर धाम घोषहि राजते ॥ ७ ॥
नमन पुन पुन पाद पद्मन प्रीति युन नितही प्रभो ।
करत,धर निज माथ दीजै साथ अनुचर लख विभो ॥
भक्ति निज पद कञ्ज दीजै शक्ति तुव गुन उचरौं ।
सघल नमहु बसन्त पुण्यद पाद पद्मन, सुख वरौं ॥ ८ ॥

कह मुनि कृष्णास्तव नाकेशा ❀ गायो नेह धार उर देशा ।
तब मँद मुस्कन युत भगवाना ❀ वासव प्रति अस वचन वखाना ॥
हे मघवन ! करुणा अभिलासा ❀ तुम्हरौ यज्ञ कियौ मैं नासा ।
यामैं कारण रह्यऊ जोऊ ❀ सुन सावध मति अब तू सोऊ ॥
इन्द्रपनेंकी लक्ष्मी सेती ❀ भो मदान्ध अति,मति नहिं चेती ।
मो सुमरण भुलाय तैं दीनौं ❀ नेंकहु निज हिय भय नहिं कीनौं ॥
सो मैं अपनौं स्मरण करावन ❀ किय खंडन मख तुव मनभावन ।
आशय यह प्रभुता मद माहीं ❀ जे जन अन्ध, लखैं मुहिं नाहीं ॥

१ लीला २ पीताम्बर ३ उत्पत्तिस्थान (जहां भक्ति है तहां)

ता दिनतें भगवत घनश्यामा ❀ मैं प्रसिद्ध गोविन्द सु नामा ।
ता अवसर ता थलके माहीं ❀ मैं अरु तुम्बरु आदि ज्ञु ताहीं॥
गन्धर्व विद्याधर अरु चारण ❀ गये मुदित प्रभु सुयश उचारण।
सकल पापध्वंसक गुनवृन्दा ❀ हम सब मिल गाये सानन्दा ॥
सुर वामाहू हिय हरपाई ❀ कियौ नृत्य भगवत यश गाई।
अरु जो स्वर्गलोक के माहीं ❀ है अद्भुत नन्दनवन ताहीं ॥
सौरभमय बहु सुमन सुहावैं ❀ ते प्रभुपै हर्षित बरसावैं ।
ता अवसर त्रिभुवन के माहीं ❀ वड़ आनन्द भयौ है ताहीं१५७

दो०-अरु आश्चर्य भयो तहाँ, यावत गौ समुदाय ।
बह्यौ दूध तिन थननतें,व्रजभर सोउ दिखाय१६४

सरिता वहन लगीं रस नाना ❀ रसको स्राव तरुन प्रकटाना ।
भेषज विन जोते बिन बोये ❀ देन लगीं फल फूल समोये ॥
गिरि वृन्दन में जहँ जहँ देखौ ❀ तहँ तहँ मणी परी भइ पेखौ ।
प्रति थल कञ्चन रजतन खानी ❀ पिरौजान पुखराजन ठानी ॥
इम हीरा पन्नानहुँ केरी ❀ आकर[1] उत्पन भई घनेरी ।
अरु स्वभावहीसे जे क्रूरा ❀ राखैं वैर परस्पर पूरा ॥
ते सब विगत वैर ह्वै गयऊ ❀ यथा सिंह अरु गौ जे रह्यऊ ।
विल्ली चूहा नौला नागा ❀ अपर अहैं घुग्घू अरु कागा ॥

१ खान ।

सो०—कृष्ण कृष्ण घनश्याम, आप महायोगी अहैं ।
श्रीगिरिराज ललाम, अहे उठायौ योगबल ।६३।

जासों मो सन्तान अनन्ता ❀ तिन रक्षा किय हे भगवन्ता ।
लोकनाथ हैं श्रुति विख्याता ❀ हमरे नाथ आप सुखदाता ॥
नृप ! याको आशय यह जानौ ❀ सुरभी कहत कृष्ण प्रति मानौ।
मो सन्तान हान जिहँ चाही ❀ में अस इन्द्रनाथसों धाई' ॥
परम देव हो आप हमारे ❀ इन्द्र नाहिं को बिना तुम्हारे ।
गौ ब्राह्मण सुर साधुन कारन ❀ हैं समृद्धि हेतु जगतारन ! ॥
वन्दौं आप चरन सुखमूला ❀ निज जन हित जे नित अनुकूला।
पद्मज प्रेरणासों तुम पाहीं ❀ आई हूं हुलसित मन माहीं ॥
करन हेतु अभिषेक कृपाला ❀ करिहौं सो अभिषेक रसाला ।
विश्वात्मन् भुविभार उतारन ❀ लिय अवतार आप सुखकारन ॥

दो०—कह मुनि हे बहुलाश्व नृप, कृष्णाज्ञा को पाय ।
कामधेनु सुरभी तहाँ, निज हिय में हरषाय १६३

सो०—ऐरावत मातंग, वाकी सूंड मँझार तिहँ ।
भर निज दूध सुरंग, अरु आकाशी गंग जल६४

तासों इन्द्र सुरर्षिन संगा ❀ परम कृपानिधि श्रीवनरंगा ।
वाको किय अभिषेक ललामा ❀ धर्यो नाम गोविंद सुखधामा ॥

१ अघाई ।

ता दिनतें भगवत घनश्यामा ❀ भैं प्रसिद्ध गोविन्द सु नामा ।
ता अवसर ता थलके माहीं ❀ मैं अरु तुम्बरु आदि जु ताहीं॥
गन्धव विद्याधर अरु चारण ❀ गये मुदित प्रभु सुयश उचारण।
सकल पापध्वंसक गुनवृन्दा ❀ हम सब मिल गाये सानन्दा ॥
सुर वामाहू हिय हरषाई ❀ कियौ नृत्य भगवत यश गाई।
अरु जो स्वर्गलोक के माहीं ❀ है अद्भुत नन्दनवन ताहीं ॥
सौरभमय बहु सुमन सुहावैं ❀ ते प्रभुपै हर्षित बरसावैं ।
ता अवसर त्रिभुवन के माहीं ❀ बड़ आनन्द भयौ है ताहीं१५७

दो०-अरु आश्चर्य भयो तहाँ, यावत गौ समुदाय ।
बह्यौ दूध तिन थननतें,व्रजभर सोउ दिखाय१६४

सरिता बहन लगीं रस नाना ❀ रसको स्राव तरुन प्रकटाना ।
भेषज बिन जोते बिन बोये ❀ देन लगीं फल फूल समोये ॥
गिरि वृन्दन में जहँ जहँ देखौ ❀ तहँ तहँ मणी परी भइ पेखौ ।
प्रति थल कञ्चन रजतन खानी ❀ पिरौजान पुखराजन ठानी ॥
इम हीरा पन्नानहुँ केरी ❀ आकर[१] उत्पन भईं घनेरी ।
अरु स्वभावहीसे जे क्रूरा ❀ राखैं बैर परस्पर पूरा ॥
ते सब विगत वैर ह्वै गयऊ ❀ यथा सिंह अरु गौ जे रह्यऊ ।
बिल्ली चूहा नौला नागा ❀ अपर अहैं घुग्घू अरु कागा ॥

---

१ खान ।

ये सब जीव वैर जिन गयऊ ❀ एक ठौर मिल खेलत रह्यऊ ।
संग संग डोलैं सानन्दा ❀ बड़ो प्यार तिन जीवन वृन्दा १५८

दो०-या प्रकार अभिषेक के, अवसर, मोद महान ।
को कह सक, भावुक सुजन, लेवहिं स्वाद अमान १६५

या विधि इन्द्र अपन अपराधू ❀ क्षमा कराय होय सम साधू ।
गो गोकुलपति श्रीव्रजचन्दा ❀ कर अभिषेक सहित आनन्दा ॥
धर गोविन्द नाम प्रभु केरौ ❀ माँगत आज्ञा, नम्र घनेरौ ।
हे गोविन्द महिम का गावौं ❀ मुहिं आज्ञा होवै तौ जावौं ॥
शक्रहिं दिय आज्ञा भगवाना ❀ सावध रहियौ, करौ पयाना ।
तब सब देव यक्ष गन्धर्वा ❀ किन्नर चारण आदिक सर्वा ॥
अरु अपसरा वृन्द लै साथा ❀ चढ़िकैं ऐरावत करिनाथा ।
अमरावती पुरीमें गयऊ ❀ भगवत गुन सोचत सुख लह्यऊ ॥
कह वसन्त जिहँ थल व्रजमाहीं ❀ ऐरावत ठाड़ौ हो ताहीं ।
कुंड प्रकट ऐरावत नामा ❀ अबलग शैल तरहटी ठामा १५९

दो०-जहँ अप्सरा समूहनैं, कियौ नृत्य अरु गान ।
कुंड अप्सरा है तहाँ, अबलग प्रकट पक्षान॥१६६

सो०-जहँ सुरभी स्तुति कीन, सुरभीकुंड प्रकट तहाँ ।
गंध्रवकुंडहु चीन, जहाँ गान किय गंध्रवन॥९३॥

१—जौनम्र ह्वै कैं वा नाम रहित ।

जहँ गोविन्दा भिषेक भयऊ ❀ तहँ गोविन्दकुंड प्रकटयऊ।
श्री गिरिराज तरहटी माहीं ❀ अबलग चिन्ह प्रतज्ञाहिं आहीं॥
या विधि और चिन्ह साक्षाता ❀ गिरिवरमें हैं पुण्य प्रदाता।
कह मुनि गिरिवर दरसन जोई ❀ जनु साक्षात कृष्ण को सोई॥
कहा कहौं गिरिराज बड़ाई ❀ स्वयं पुजायौ कृष्ण कन्हाई।
श्री गिरिवर की कथा पुनीता ❀ जो जन गावै नित युत प्रीता॥
सो भगवत अनुकम्पा पावै ❀ नन्दसुवन तिहँ जन अपनावै।
सकल मनोरथ पूरण वाकै ❀ गिरिवर गाथा हिय बस जाकै॥
द्वार चतुर्थ पूर्ण भो याहीं ❀ गिरिधारन गाथा जिहँ माहीं।
यथा प्रेमसों सुनी नृपाला ❀ तथा धरौ हिय कथा रसाला१६०

दो०-हरि लीला को तत्त्व जो, जानै निज जिय माहिं।
तिनैं न आन सुहावही, सतत मग्न रह ताहिं॥१६७॥

सो०-पूर्ण भयौ यह द्वार, गुरुवर गोपेश्वर कृपा।
लहैं श्याम हिय धार, श्यामसनेही गाय यह॥६४

॥ कवित्त ॥

चार मुक्ति प्रद चारु-गिरिराज द्वार यह,
कह्यौ है उचार तिहँ, धार निज मनमें।
नूतन रहस लाल-लीला गिरिवर यश,
सुनै जोउ नेह युत, मिल सन्त गनमें॥

ये सब जीव वैर जिन गयऊ ❀ एक ठौर मिल खेलत रहाऊ ।
संग संग डोलैं सानन्दा ❀ बड़ौ प्यार तिन जीवन वृन्दा१५८

दो०-या प्रकार अभिषेक के, अवसर, मोद महान ।
को कह सकै भावुक सुजन, लेवहिं स्वाद अमान १६५

या विधि इन्द्र अपन अपराधू ❀ क्षमा कराय होय सम साधू ।
गो गोकुलपति श्रीव्रजचन्दा ❀ कर अभिषेक सहित आनन्दा ॥
धर गोविन्द नाम प्रभु केरौ ❀ माँगत आज्ञा, नम्र घनेरौ ।
हे गोविन्द महिम का गावौं ❀ मुहिं आज्ञा होवै तौ जावौं ॥
शक्रहिं दिय आज्ञा भगवाना ❀ सावध रहियौ, करौ पयाना ।
तव सब देव यक्ष गन्धर्वा ❀ किन्नर चारण आदिक सर्वा ॥
अरु अपसरा वृन्द लै साथा ❀ चढ़िकैं ऐरावत करिनाथा ।
अमरावती पुरीमें गयऊ ❀ भगवत गुन सोचत सुख लहाऊ ॥
कह वसन्त जिहँ थल व्रजमाहीं ❀ ऐरावत ठाड़ौ हो ताहीं ।
कुंड प्रकट ऐरावत नामा ❀ अवलग शैल तरहटी ठामा१५९

दो०-जहँ अप्सरा समूहनैं, कियौ नृत्य अरु गान ।
कुंड अप्सरा है तहाँ, अवलग प्रकट पक्षान॥१६६

सो०-जहँ सुरभी स्तुति कीन, सुरभीकुंड प्रकट तहाँ ।
गंध्रवकुंडहु चीन, जहाँ गान किय गंध्रवन॥६३॥

१—जौनम्र है कैं या नाम रहित ।

\# श्रीराधावसन्तविहारिणेनमः \#

श्रीवसन्त कृष्णायन

का

पञ्चम गोपिका द्वार ।

जिसमें

सोपान (१) मङ्गलाचरण, रासहेतु, (२) वंशी बजाना,गोपीनका आना
(३) क्रमशः पहुचना (४) विभ्रमबानी (५-६) कृष्ण प्रति गोपीवचन
(७) एक सखी संग अन्तर्धान होना (८-१०) विरह व्याकुलवार्तालाप
(११) खोज करते पुलिनमें पहुचना(१२-१६)गोपिका गीत (१७ १८)
कामपराजय,कृष्ण प्राकट्य,गोपीहर्ष,(१९-२३)गोपी कृष्ण प्रश्नोत्तर
कृष्ण पराजय, (२४) रासमण्डलरचना, प्रिया प्रियतमको नख-
शिखशृंगार, (२५) रासमण्डलमें पधारना,रासप्रारम्भ, वंशी
बजाना (२६) सखीस्वरूपमें शिवाशिवका आना, नृत्य भेद,
राग भेद, (२७) साजन के नाम, ताल भेद, स्वरभेद,
मूर्च्छनाभेद, (२८-२९) रासलीला (३०) वारि विहार (३१)
वन विहार, कुञ्ज रचना, कुञ्जविहार(३१) पृथक पृथक
ललितादिकनके कुञ्जनमें प्रियाप्रीतमका पधारना, शेष
रात्रिनिकुञ्जमें विराजना, सखीवृन्द सेवामें तत्पर
भोजनादि कराय शयन कराना, उषःकालमें
जगाना,मंगला आरती करना,सबका निजनिज
घरमें पधारना (३३-३६) रास-विषयक
शङ्का समाधान, रासलीला महात्म्य आदि
विषय वर्णित है,अन्त में समस्त रासलीला
का सात कवित्तोंमें संक्षिप्त विषय
वर्णन है ।

रचयिता—

श्रीनिकुञ्जकेलिरसास्वादी, रसिकअनन्यैकनिष्ठ, श्रीश्यामस्नेही
स्मृति संस्थापक, सारस्वत कुलावतंस
श्रीयुत वसन्तरामजी महाराज ।

प्रकाशक—
श्यामस्नेही श्यामाशरण
श्रीराधावल्लभजीका घेरा, श्रीवृन्दावन

सम्वत् १९९२ वि० ।

पावत इच्छित फल-इह भवमाहीं सोऊ,
परलोक माहीं सुख, लह छवि घनमें।
कहत वसन्त बिन-श्रद्ध सिधि नाहिं होत,
पढ़ौ श्रद्धायुत नेह, धार वचननमें॥

इति श्रीकृष्णायने चतुर्थ गिरिराज द्वारे नवम सोपान समाप्त।

दो०—श्रीगिरिराज दुवार के, मनहर नव सोपान।
शत सठ चौपाई दशक, श्लोक एक पहिचान॥१॥
शत सड़सठ दोहा अहैं, हैं कवित्त अड़तीस।
अरु सोरठा चुरानवें, अष्ट छन्द प्रद ईश॥२॥

इति श्रीश्यामस्नेही स्तुति संस्थापक, भक्त शिरोमणि, द्विजकुल कमल दिवाकर श्रीयुत वसन्तरामकृत सकल कलि कलुष निकन्दन परात्परानन्द सम्पादन श्रीकृष्णायने चतुर्थ श्रीगिरिराज द्वार समाप्त।

\# श्रीराधावसन्तविहारिणेनमः \#

श्रीवसन्त कृष्णायन

का

पञ्चम गोपिका द्वार ।

जिसमें

सोपान (१) मङ्गलाचरण, रासहेतु, (२) वंशी बजाना, गोपीनका जाना, (३) क्रमशः पहुचना (४) विभ्रमवानी (५-६) कृष्ण प्रति गोपीवचन (७) एक सखी संग अन्तर्धान होना (८-१०) विरह व्याकुलवार्तालाप (११) खोज करते पुलिनमें पहुचना (१२-१६) गोपिका गीत (१७-१८) कामपराजय, कृष्ण प्राकट्य, गोपीहर्ष, (१९-२३) गोपीकृष्ण प्रश्नोत्तर कृष्ण पराजय, (२४) रासमण्डलरचना, प्रिया प्रियतमको नख-शिखशृंगार, (२५) रासमण्डलमें पधारना, रासप्रारम्भ, वंशी बजाना (२६) सखीस्वरूपमें शिवाशिवका आना, नृत्य भेद, राग भेद, (२७) साजन के नाम, ताल भेद, स्वरभेद, मूर्च्छनाभेद, (२८-२९) रासलीला (३०) वारि विहार (३१) वन विहार, कुञ्ज रचना, कुञ्जविहार (३१) पृथक पृथक ललितादिकनके कुञ्जनमें प्रियाप्रीतमका पधारना, शेष रात्रिनिकुञ्जमें विराजना, सखीवृन्द सेवामें तत्पर भोजनादि कराय शयन कराना, उषःकालमें जगाना, मंगला आरती करना, सबका निजनिज घरमें पधारना (३३-३६) रास विषयक, शङ्का समाधान, रासलीला महात्म्य आदि विषय वर्णित हैं, अन्त में समस्त रासलीला का सार कवित्तोंमें संक्षिप्त विषय वर्णन है ।

रचयिता—

श्रीनिकुञ्जकेलिरसास्वादी, रसिकअनन्यैकनिष्ठ, श्रीश्यामस्नेही स्मृति संस्थापक, सारस्वत कुलावतंस

श्रीयुत बसन्तरामजी महाराज ।

प्रकाशक—

श्यामस्नेही श्यामाशरण

श्रीराधावल्लभजीका घेरा, श्रीवृन्दावन

सम्वत् १९९२ वि० ।

नाम-धुनि

गोविन्दा गोपाला भजमन गोविन्दा गोविन्दा ।
छोड़ जगतका फन्दा भजमन गोविन्दा गोविन्दा ॥
राधाकुञ्ज विहारी भजमन गोपिन प्राणआधारी ।
यह शिक्षा उर धारी भजमन गोपिन प्राण आधारी ॥
अज अच्युत अविनाशी भजमन श्यामसुन्दर सुखरासी।
वृन्दावनकेवासी भजमन श्यामसुन्दर सुखरासी ॥
मोहन मुरली धारी भजमन श्रीवृषभानुदुलारी ।
रसिकनके सुखकारी भजमन श्रीवृषभानु दुलारी ॥
मोहन रूप रसाला भजमन श्रीयशुमति नँदलाला ।
भक्तनके प्रतिपाला भजमन श्रीयशुमति नँदलाला ॥
केशव कृपानिधाना भजमन ब्रजवासिनके प्राना ।
मनहर मृदु मुस्काना भजमन ब्रजवासिनके प्राना ॥
रसिकनके मनहारौ भजमन राधावल्लभ प्यारौ ।
युगल रूप हियधारौ भजमन राधावल्लभ प्यारौ ॥
परम उदार कृपाला भजमन राधारमण रसाला ।
शरणागति प्रतिपाला भजमन राधारमण रसाला ॥

BRIJ BASI ART PRINTING WORKS, KARACHI.

॥ श्रीराधावसन्तविहारिणेनमः ॥

अथ

❋ श्रीवसन्तकृष्णायन प्रारम्भ ❋

॥ पञ्चमगोपिकाद्वार ॥

प्रथम सोपान

मंगलाचरण

श्रीवृन्दावन स्वामिनीमविचलाह्लादैक कल्लोलिनी ।
योगीन्द्रैर्मनसापि दुर्गमगतेः कृष्णस्य प्राणप्रियाम् ॥
विद्युत्कान्ति कलेवरेण विलसन्नीलाम्बरा शाटिकाम् ।
वन्दे श्रीवृषभानुजां व्रजवधू प्राणाधिकां राधिकाम् ॥ १ ॥

श्रीवृन्दावनकी स्वामिनी और अविचल (नित्य) आल्हादकी एकमात्र नदीरूपा और योगीन्द्र (शिवसनकादि) तिनके मन करके भी दुर्गम (दुष्प्राप्य) गति जिनकी ऐसे श्रीकृष्णकी प्राणप्रिया और बिजुरीकी सी कांतिवारे श्रीअंग करके अतिशय शोभायमान हैं नीलाम्बर जिनके ऐसी श्रीवृषभानुनंदनी और व्रजगोपिकानको प्राणसे भी परम प्यारी श्रीराधिकाजी को मैं वंदना करूँ हूँ ॥ १ ॥

गोवर्द्धने रम्यनगेकदाचिद्वृन्दावने श्रीयमुना तटे च ।
कुञ्जे निकुञ्जे प्रियया समेतं रासादि क्रीड़न्तमहं स्मरामि ॥२॥

सुंदर गोवर्द्धनपै कबहुं वृंदावनमें अथवा श्रीयमुना किनारे पै एवं कुंज तथा निकुंजमें प्रिया श्रीवृषभानुसुताके सहित रासादि क्रीड़ा करनेवारे श्रीनन्दनन्दनको मैं स्मरण करता हूँ ॥ २ ॥

समस्त बाधा संहर्त्रीं कोटिकाम मनोहराम् ।
परस्पर गलन्यस्त भुजां प्रेम विवर्द्धनीम् ॥ ३ ॥
वंशीवटस्य निकटे कालिन्द्याः स्वच्छ पाथसः ।
धारां परमगम्भीरां प्रेक्षमाणा मुहुर्मुहु ॥४॥
छटामेतादृशीं रम्यां श्रीराधाकृष्णयोः पराम् ।
प्रतिक्षण सह प्रेम्णा वन्दे स्वान्ते निधायताम् ॥ ५ ॥

सब बाधाओं को नाश करनवारी कोटि काम के मन को हरनवारी परस्पर गरबाहीं वारी प्रेम बढ़ाने वारी वंशीवट के समीप कालिन्दी के स्वच्छ जल की परम गंभीर धाराको बारंबार निरीक्षण करने वारी ऐसी श्रीराधा-कृष्णकी छबि को सहित स्नेह के प्रतिपल हृदय में धारन करके, नमस्कार करता हूं ॥ ३-४-५ ॥

राधाकृष्ण मनोज्ञ प्रेम सुधया तृप्तासदाऽऽमोददाः ।
यासां स्नेह वशात्प्रियाप्रियतमौ रासादिकाः क्रीडतः ॥
यासां प्रेमध्वजा वदन्ति सततं पारङ्गता भावुकाः ।
ता नित्यं व्रज गोपिकाः सुमुदितो नौमि प्रणामोचिताः ॥६॥

जे श्रीराधाकृष्ण के मनोहर प्रेमामृत करके तृप्त हैं सदा आमोद देनवारी जिनके स्नेह वश होकर प्रियाप्रियतम श्रीवृषभानुजा और श्रीनंदात्मज रासादिक क्रीड़ा करते हैं और जिनको पारंगत भावुक निरंतर प्रेमकी ध्वजा कहते हैं एवं वंदन करन योग्य ब्रजगोपिकान को आनंदित होकर नमस्कार करता हूं ॥ ६ ॥

१ ध्वजा ।

विजय पताक फहर रहि जाकी ❀ सब ब्रह्मंड माहिं अति बांकी ।
विधि वासव आदिक सब देवा ❀ भे जिहँ वश अस कंद्रप एवा ॥
जाको मद जो अति दृढ पीना ❀ ताको सहजहि भंजन कीना ।
अस श्रीकृष्ण नन्द सुत जोऊ ❀ रसिकराज भ्राजत हैं सोऊ ॥
वंदों ताके पद्म परागा ❀ सरुचि सुवासित अमल सरागा ।
जाके ध्यान काम निरमूला ❀ जाके ध्यान नष्ट सब शूला ॥
कह नारद प्रभु पद शिर नाई ❀ प्रमुदित चित प्रति मैथिलराई ।
सुन बहुलाश्व कथा हरि केरी ❀ सब अघध्वंसिनि रस निधि हेरी ॥
द्वितिय द्वार में तोहिं सुनाई ❀ गोपिन वर कारन सुखदाई ।
अब भाखों जिहँ विधि फल पायो ❀ श्रीप्रभु तिन मिल रास रचायो १

दो०—रास रचन के हेतु जे, प्रथम कहों तुम पाहिं ।
सावधान ह्वै सुनहु अब, शुद्ध सुरस या माहिं ॥१॥

नंद यशोदा आदिक जेते ❀ रस वात्सल्य मग्न रह तेते ।
तिनें दियो प्रभु परम कृपाला ❀ शुधवात्सल्य प्रमोद रसाला ॥
व्रजरानी यशुमति नंदराई ❀ कहा कहों इन भाग्य बड़ाई ।
जिनके गृह पर ब्रह्म साक्षाता ❀ पुत्र रूप ह्वै रह शिशु गाता ॥
परम अलौकिक सुख दिय जिनको ❀ देख चकित विधि आदिक तिनको ।
रस वात्सल्य समुद्र बहायौ ❀ नंदादिकन निमग्न करायो ॥
तस श्रीदामादिक व्रज माहीं ❀ सखा भाव प्रभुसों किय आहीं ।
गोचारन आदिक कर लीला ❀ सख्य सुरस सुख तिन शुभ शीला ।
दियो जाहिं श्रुति अंत न पावें ❀ नेति नेति कह सतत लखावें ।
या विधि सख्य सुरस सुख माहीं ❀ व्रज के सखन मग्न किय आहीं ।

दो०—सख्य सुरसको सिंधु वड़, उमड़ायो व्रज माहिं ।
सखा भाव वारेन को, दिय अलभ्य सुख ताहिं॥२॥

शांत भाव धारी जे आये ❀ तिनको अपि तिनके मन भाये ।
दियो अलौकिक सुख, कछु भाखौं ❀ लख उत्सुक[1] तुहिं, गुप्त न राखौं॥
एक काल ब्रह्मानँद आयो ❀ मूर्तिवंत ह्वै, दर्शन पायो ।
नंदांगन देहरी विराजे ❀ छविनिधि नंद सुवन छवि छाजे॥
कर दर्शन छवि माधुरि रूपा ❀ भो निमग्न मन परम अनूपा ।
नयन टकटकी अनिमिष लागी ❀ तव सो कह ह्वैकें अनुरागी ॥
वड़ दारुन भव भय धर जेऊ ❀ भल श्रुति जन्य कर्म कर तेऊ ।
कोऊ स्मृति साधन सिध होऊ ❀ भव वाधा ध्वंसन कर सोऊ ॥
भारत अरु पुराण के कर्मा ❀ करकें ऊपर पाइ भल शर्मा[2] ।
में तो यशुमति नँद पद माहीं ❀ वन्दौं अमित नेह युत ताहीं।२।

दो०—कहा कहौं इन भाग्यको, कहा कहौं आनन्द ।
जिन देहरि परब्रह्म प्रभु, लटकत है व्रजचन्द॥३॥

या विधि शांति भावना वारे ❀ आये वहु, वहु मुदिता धारे ।
तिनें शांति सुख उदधी माहीं ❀ कियो निमग्न कृष्ण प्रभुताहीं॥
या प्रकार सव रस प्रकटाये ❀ व्रजमें सवके सिंधु वहाये ।
रह्यो शेष इक सुरस शृंगारा ❀ रहे तृपित इह भावनवारा ॥

१ उत्कंठित २ सुख ।

तातें पूर्ण करन तिन भावा ❀ प्रकटन रस शृंगार प्रभावा ।
रच्यो रास रसरास महाना ❀ तथा कियो कन्द्रप मद हाना ॥
एक काल सैनायुत कामा ❀ विचरत विपिन संग निज वामा ।
पुष्पबाण धार्यो निज हाथा ❀ चतुर ओर है जय जय नाथा ॥
गंध्रवि किन्नरि स्तुति उच्चरहीं ❀ दिवि अप्सरा नृत्य बहु करहीं ।
गावत कामोद्दीपन रागा ❀ कंद्रप मुदित सुनत युत रागा[1] ॥४

दो०—ऋतु वसन्त आदिक जिते, रस शृंगार प्रधान ।
ते प्रसन्न तिहँ संग चल, कंद्रप मोद महान ॥४॥

जहँ जहँ पग धारे रति-नाथा ❀ तहँ सब सभय जोर जुग हाथा ।
महाधिराज राज कह ताहीं ❀ आय नमत ताके पद माहीं ॥
करहिं प्रशंस विविध विधि ताकी ❀ जय हो जय तव विजय पताकी ।
अरु जावें जिहँ जिहँ बन माहीं ❀ ते ते वन प्रफुल्लित ह्वै जाहीं ॥
जनु भयभीत करहिं सन्माना ❀ देवें पुष्प सुगंधित नाना ।
निज माधुरि अरु महद प्रभावा ❀ निज अनुरूप साज मन भावा ॥
स्तम्भन मोहन तापन शोसन ❀ चतुर येहि पंचम उद्दीपन ।
ये धनु कन्द्रप के पचरंगा ❀ उपजावें बहु काम तरंगा ॥
कर चिन्तन मन फूल्यो ऐसे ❀ फूल्यो लंकपती मन जैसे ।
कहा कहौं तिहँ समय नृपाला ❀ कन्द्रपके मन मोद विशाला ॥५

१ प्रेम ।

दो०-रोम रोम पुलकावली, गद गद स्वर तिहँ आहिं ।
मदयुत गवनत हंस गति, चरख कटाक्ष तिय माहिं ॥५॥

सो०-करन लग्यो तिहँ काल, निजमन चिंतन विविध विधि।
को है वीर विशाल, मो सम कोटिन अंडमें ॥१॥

चतुर ओर है मोर प्रभावा ❀ विधि इन्द्रादिक सुर डर पावा ।
तदा अपर किहँ लेखे आहीं ❀ दिगविजयी मैंहीं भवमाहीं ॥
फहर रहीं मो विजय पताकें ❀ मोर निकट वड़ वड़ वलि थाकें ।
मैंही अब ईश्वर सवही को ❀ मो तट सवन पराक्रम फीको ॥
पूछत पुन सैनाधिप पाहीं ❀ है को मो सम त्रिभुवन माहीं ।
या प्रकार फूल्यौ न समावै ❀ प्रति पल निज प्रभाउ मन लावै ॥
ताहि समय सुन मैथिलराई ❀ मैं तिहँ वन विचरत हरषाई ।
आवत लख्यौ धनुर्धर कामा ❀ मुहिं वड़ शंक भई उरधामा ॥
आन पंथ यावत मैं लीनों ❀ तावत ताहिं बुलावन कीनों ।
गयो यदा मैं ताके पाहीं ❀ कहन लगो मुहिं मद युत ताहीं ।६

दो०-मोरे वल नारद कहौं, को कंपित भव नाहिं ।
अचरहिं चर चरको अचर, करौं एक पल माहिं ॥६॥

मो प्रताप वासव सुर स्वामी ❀ भयो जार अहल्याको नामी ।
शत भग[1] पाये निज तन तवही ❀ मोर प्रताप जनावत अवही ॥

१ योनी ।

परमेष्ठी चतुरानन कह्यऊ ❀ चतुर वेद वक्ता जो रह्यऊ ।
मो परताप मार तिहँ जागो ❀ सो निज कन्या पाछे लागो ॥
मो प्रभाव निशिकर गुरु नारी ❀ भोगी भो कलंकता धारी ।
प्रसंग मोहनी के शिव भोला ❀ भो अधीर अतिशय मन डोला॥
कहु मो बाणन या भव माहीं ❀ किहँ उन्माद भयो है नाहीं ।
रह्यो होय को यदि तुम जानौ ❀ तौ मो तट तत्काल बखानौ ॥
वा ठहरन दो निज के संगा ❀ देखौ पुन अपि अपनो रंगा ।
तब मैं कहि नाना अस नाहीं ❀ अहै एक जानौ मैं ताहीं ॥ ७ ॥

दो०—नंद गोप गृह बाल इक, नाम कृष्ण जिहँ आहि
वह तुम्हरे है योग्य किल, रंचहु संशय नाहि॥७॥

अस सुन हँस्यो मनोज विशाला ❀ किम मो योग्य गोप कुलबाला।
कहा गँवार रसिकता जानै ❀ मो प्रभाव वो कहा पछानै ॥
सुन नृप मैं निज मन अस चाह्यौ ❀ दूर होय इन मद दुखदायौ ।
तब मैं कह्यौ यद्यपि है बाला ❀ गोप वंश अपि तदपि रसाला ॥
आप योग्य निश्चय इक सोऊ ❀ जब देखौ निश्चय तब होऊ ।
अस सुन मंद मंद मुसुकाई ❀ कह्यो मोहिं गवनहु मुनिराई ॥
तासों तुम मो रण ठहरावौ ❀ तिहँ प्रभाव मो आशु जनावो ।
काम वचन सुन कर ब्रज माहीं ❀ मैं आयौ नँदनंदन पाहीं ॥
सब वृतांत श्रीप्रभुहिं सुनायौ ❀ करहु स्वामि अब मो मन भायौ
दुर्मदांध वह भो रति कंता ❀ करहु आशु तिहँ बड़ मद अंता।८

दो०-अस सुन कृष्ण कृपालु प्रभु, कह्यौ,कहौ तिहँ पाहिं।
युद्ध युग्म विधिकी अहै, तू किहँ चह मनमाहिं ॥८॥

अहै किले की युद्ध बखानी ❀ युद्ध अदुर्ग[1] अपर है मानी।
अस सुन मैं पुन आयौ ताहीं ❀ जहँ मकरध्वज[2] राजत आहीं॥
ताकौ कृष्ण वृतान्त सुनायौ ❀ युद्ध प्रकार युग्म समझायौ।
वनमैं शैल कंदरा[3] माहीं ❀ योग समाधि धारके ताहीं॥
रहुँ निसंग निस्पृह मैं ताहीं ❀ तहँ तुम युद्ध करौ मो पाहीं।
यही दुर्गकी[4] युद्ध प्रमानी ❀ अब दूसरि को कहौं बखानी॥
थल विविक्त[5] सुन्दरि गण संगा ❀ काम केलिके साज सुरंगा।
कामोद्दीपन वस्तू ऐसी ❀ सकल अंड नाहिं मिलहीं तैसी॥
या प्रकार के मंडल माहीं ❀ करौं केलि अतिशय कर ताहीं।
तहँ मोसौं तुम युद्धहिं ठानौ ❀ यह अदुर्गकी युद्ध पछानौ॥९॥

दो०-सुन अस वच प्रमुदित महा, कहा कि दूसरि होय।
काम वचन पुनि कृष्ण प्रति, भाखे मैं कह जोइ॥९॥

मेरे वच राखन के हेतू ❀ परम कृपालु प्रणत सुखसेतू।
तथा काम मद ध्वंसन कारन ❀ रच्यौ रास प्रभु रस विस्तारन॥

१—विना किले की २—कामदेव ३—गुफा ४—किले की ५—एकांत

सुनौ नृपति अब अपरहु हेतू ❀ जासौं रच्यौ रास ब्रजकेतू।
पूर्व मनोरथ है जिन कीनों ❀ श्रुतिकन्या प्रभृतिन वर लीनों॥
तिहँ वर पूरन हेतु रसाला ❀ रच्यौ रास रसप्रद नंदलाला।
कात्यायनि देविहिं युत प्रेमा ❀ कीनो व्रत पूज्यो नितनेमा॥
या हित तिनको हरि वर दीनों ❀ ताहित रच्यौ रास रस भीनों।
श्रीप्रभुकी सब लीला माहीं ❀ तीन हेतु होवत है ताहीं॥
अन्तरङ्ग वहिरङ्ग रु शासन ❀ हैं यामें अपि यहि त्रय कारन।
अन्तरङ्ग भक्तन के हेतू ❀ अंतरंगि लीला सुखसेतू॥१०॥

दो०-करकें तिनको सुख दियो, अंतरंगि तिहँ जान।
वहिरंगिन उद्धार हित, अपि यहि लीला मान॥१०

गाय गाय यह रसमयि लीला ❀ सुख अलभ्य लह ते शुभशीला।
गोपद इव दुस्तर भव तरहीं ❀ इष्ट धाम लह मुदित विचरहीं॥
काम गर्व गञ्जन अपि हेतू ❀ रच्यौ रास रसनिधि ब्रजकेतू।
या प्रकार त्रय कारन यामें ❀ रच्यौ रास नंदनंदन तामें॥
औरहु इक कारन है ताहीं ❀ सुनत भक्ति बाढ़े मन माहीं।
प्रथमें पंच उपासक जेऊ ❀ करहिं विवाद परस्पर तेऊ॥
विष्णु भक्त निजको वड़ मानें ❀ शंभु उपासक अपन पछानें।
शाक्त[1] सौर्य[2] अरु गणपति भक्ता ❀ निजहीको मानें बड़ युक्ता॥

१—देवीभक्त २ सूर्यउपासक।

के कह कृष्णभक्ति वर आहीं ❀ राम उपासन के कह ताहीं ।
के नरसिंह भक्तिवर कहहीं ❀ के हनुमत प्रभृतिनको चहहीं ॥११

दो०-पुन माधव भक्तन विषे, मुख्यभाव हैं पांच ॥
शांत भाव ही श्रेष्ठ है, कहत अहैं हम सांच ॥११॥

सो०-के अस भाखत आहिं, दास भावना श्रेष्ठ है ।
सखा भाव सम नाहिं, अपर कहैं हम सत्य कह ॥२

के विशेष कह वत्सल भावा ❀ या विध निज निज मत प्रकटावा ।
इनके समभावनके कारन ❀ रस शृंगार भाव विस्तारन ॥
रच्यौ रास रसराज कन्हाई ❀ दिखराई शृंगार बड़ाई ।
याके पुष्टि करन हित कह्यऊ ❀ कहुं जो शुकादिकन मत रह्यऊ ॥
सबभक्तनमें उत्तम रह्यऊ ❀ जन प्रहलाद नामजिहँ कह्यऊ ।
केवल जिहँ रक्षाके कारन ❀ किय नरसिंह रूप प्रभु धारन ॥
तिहँते सत्तम मोहिं वखान्यो ❀ मोहीते प्रहलाद प्रमान्यो ।
उदर कयाधू जब प्रहलादा ❀ तहां भक्ति दायक अहलादा[१] ॥
भइ प्रापति मोते तहँ जबही ❀ जन प्रहलाद श्रेष्ठ भो तबही ।
मोते श्रेष्ठ युधिष्ठिर राजा ❀ हैं निश्चय प्रभु भक्त समाजा ॥१२

दो०—नृप मैं एक समय गयो, धर्मसुवन[२] के पाहिं ।
कह्यो ताहिं मैं धन्य तुम, हो वर भक्तन माहिं ॥१२

१—परमप्रेम २ युधिष्ठिर ।

आप अनुज अर्जुन जिहँ नामा ❀ तिहँ रथ हांकैं श्रीघनश्यामा ।
ले घोड़न कालिन्दि किनारे ❀ पानि पिवावैं मुदिता धारे ॥
धाड़ें तोत्रक[1] बालू माहीं ❀ अपन मुकुट राखें पुन ताहीं ।
पुन अश्वन जलमें ले जावैं ❀ भर भर अंजलि स्नान करावैं ॥
डोरी[2] दंत अग्र तहँ राखें ❀ स्नेह युक्त यह कृति अभिलाखें ।
पुन हय[3] तनु कर स्वच्छ महाई ❀ करांगुली नखसों हरषाई ॥
सब प्रकार रथ रुचिर सजावैं ❀ शत्रुनसेतीं विजय करावैं ।
औरहु आप निकट चिरकाला ❀ बसैं करैं बहु कार्य विशाला ॥
मोपै कर प्रभु कृपा महाना ❀ देंहि दरस हिय धरौं जु ध्याना ।
ता कारन मोते अपि आपू ❀ अहैं श्रेष्ठ किल हे निष्पापू ॥१२॥

दो०—तब प्रमुदित कह धर्मसुत, मोते वर यदुवृंद ।
मोपै कृपा करैं कबहु, तिन ग्रह रह यदुनंद[4] ॥१३॥

सो०—तिन सनेह बश होय, सब प्रकार तिहं कार्यकर ।
बाधा सबही खोय, अति अलभ्य सुख दें तिनें ॥३॥

कहा भाग्य कहुँ यदुवन केरो ❀ करुणा पात्र कृष्णके हेरो ।
नित समीप रह कर बहुलीला ❀ गो पद इव भव तारन शीला ॥
हे नृप सकल यादवन माहीं ❀ उद्धव सम बड़ भागी नाहीं ।
स्वयं प्रभू निज मुख अस कहाऊ ❀ भक्तन में उद्धव मैं रहाऊ ॥

१ चाबुक २ लगाम ३ अश्व ४ श्रीकृष्ण ।

या भुवि दय[1] उद्धव पै कीना ❀ निज सारूप्य साज युत दीना।
पुन तिहँते व्रज गोपि प्रधाना ❀ तिनकी कथा सुनौ निज काना॥
उद्धव पै बड़ करुणा करकें ❀ स्नेह सने तिन वचन उचरकें।
भेज्यो गोपिन तट व्रजमाहीं ❀ गोपिन शुद्ध नेह लख ताहीं॥
अतिशय चकित कहत नाहिं बनही ❀ धन्य धन्य भाखै निज मनही।
अहो गोपि अवला अपि अहहीं ❀ तद्यपि नेह सिंधु मुद वहहीं॥१४॥

दो०—गृहकी अति दृढ़ शृंखला[2], सबन सहज दइ तोर।
एक कृष्ण निज प्रान है, एक दृष्टि हरि ओर १४

करैं कृपा मोपै लख दासा ❀ पूर्ण करैं प्रभु मो अभिलासा।
होवौं गुल्मलता व्रज माहीं ❀ पावौं इन चरणन रज याहीं॥
इनके विचरत कबहुँक पावौं ❀ इन पद रज तव धन्य कहावौं।
मैं हूं अब अनुराग पछाना ❀ अब लघु लख्यो अपन विज्ञाना॥
ताते सबते गोपिन भक्ती ❀ अतिशय श्रेष्ठ कहत अनुरक्ती।
ता कारन अपि श्री भगवाना ❀ तिन वश है किय रास महाना॥
रस स्वरूप शृंगार प्रभावा ❀ गोपिन सुदृढ़ सनेह जनावा।
रच्यौ रास रस सिंधु बहायौ ❀ रस शृंगारिन नेह बढ़ायौ॥
इत्यादिक कारन नृप आहीं ❀ ताते रास रच्यौ व्रज माहीं।
कार्तिक अमावास्य दिन माहीं ❀ सप्त वर्ष वय हरिकी आहीं१५

१ दया। २ बंधन।

दो०—ता दिन श्रीहरिकृष्ण प्रभु, श्रुति स्वामी व्रजमाहिं।
कर्मवाद उत्थापना, करी सहजही ताहिं ॥ १५ ॥
सो०—पुन पड़वा तिथि माहिं, इंद्र याग किय भंग प्रभु।
परम महोत्सव ताहिं, किय गोवर्द्धन यज्ञ को ॥३॥

द्वितिया यम द्वितिया पहिचानी ❀ बहिन भवन जावन मन मानी।
अष्ट सखासों मिल गिरिधारी ❀ भगिनी गृह गवने मुदभारी॥
यदपि कृष्णको भगनी नाहीं ❀ सुता सुनंदा की रह ताहीं।
भुआ सुता को बहिन प्रमानी ❀ तातें ता घर गे सुखदानी॥
कालिंदी तट निकट सुहायौ ❀ निरख सबन के मनको भायौ।
तानें सबको कर सन्माना ❀ बैठायौं सबको मन माना॥
पुन तिहँ निज धनसों पकवाना ❀ निज करही कीनें विधि नाना।
श्याम सहित सब सखा जिमाये ❀ कृष्ण प्रभृति सबको हरषाये॥
पुना पान सोपारी दीनी ❀ बढ़ी प्रीति दुहुं ओर नवीनी।
पाछे कृष्णहिं टीको कीनों ❀ अति प्रफुलित चित श्रीफल दीनों

दो०—दई कृष्ण अपि बहिनको, स्वर्ण मुद्र बहु ताहिं।
मिलकें सखा असीस ले, गवनत भे गृह माहिं॥
सो०—कह्यो कछुक मुसक्याय, मधुमंगल ने कृष्णप्रति।
शतत्रय मठ सुखदाय, यदि तुम्हरी होती बहिन४

तौ हम बरस दिना पकवाना ❀ पावत तुमसों मिल विधिनाना।
या विधि सकल सखा हरषाये ❀ करत हास्य आपुस मन भाये॥

तिन मिल कृष्ण गये गृह माहीं ❀ गये निकट यशुमति के पाहीं ।
ले आसीस बहिन ते आयौ ❀ निरखमातु यशुमति सुखपायौ ॥
या विधि द्वितिया तिथि के माहीं ❀ बहिनभवन भोजन किय आहीं।
तिहँ दिन सुरपति कोपहु कीनों ❀ परब्रह्मको लघु बालक चीनों ॥
तृतिया से नवमी परयंता ❀ धर्यो गोवर्द्धन राधा कंता ।
दशमी तिथि में विस्मय गाथा ❀ गोपन कही सुनत ब्रजनाथा ॥
विप्र वचन ब्रजपति तिन पाहीं ❀ भाखे तेउ मुदित मन माहीं ।
ग्यारस में. गोविंदभिषेका ❀ ब्रह्मादिकन कियौ सविवेका ॥

दो०—द्वादशि दिन श्रीकृष्ण गे, वरुण लोक पितु हेतु ।
पूनम को ब्रह्मलोक[1] गे, नँद नंदन ब्रज केतु ॥१७॥

शरद ऋतू पूरण भइ याहीं ❀ पुन तहँ द्वितिय वरष के माहीं।
आठ वरष वय आश्विन मासा ❀ शरद पूर्णिमा रुचिर प्रकासा ॥
तिहँ दिन किय प्रारंभ कन्हाई ❀ महारास रस सिंधु महाई ।
जो ऐश्वर्य सकल सम्पन्ना ❀ अखिल वीर्य[2] संपत्ति प्रपन्ना ॥
यश समग्र श्री[3] संपन तैसे ❀ ज्ञान विराग पूर्णता वैसे ।
इन षट भग सम्पन्न कृपाला ❀ श्री भगवान कृष्ण नंदलाला ॥
स्तंभन मोहन रूप अनूपा ❀ बल विदग्धता[4] अनुपम रूपा ।
तस उत्पन्न करनि अभिलासा ❀ ये षट भग माधुर्य प्रकासा ॥

१ वैकुंठ २ पराक्रम ३ शोभा ४ चातुर्यता ।